[राजस्थान विश्वविद्यालय द्वारा डी लिट उपाधि के लिए स्वीकृत शोध-प्रबन्ध]

जाम्भोजी, विष्णोई सम्प्रदाय और साहित्य

[जम्भवाणी के पाठ-सम्पादन सहित]

(दो भागों में)

पहला भाग

लेखक

डॉ० हीरालाल माहेश्वरी

एम ए , एल् एल बी , डी फिल (कलकत्ता), डी लिट (राजस्थान)

प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

प्रस्तावना

आचार्य श्री परशुराम चतुर्वेदी

बी० आर० पब्लिकेशन्स,

६, प्रिटोरिया स्ट्रीट, कलकत्ता-१६

[सर्वाधिकार लेखक के स्वाधीन हैं]

मुद्रक
महेन्द्र प्रिन्टर्स,
मनिहारों का रास्ता,
जयपुर-३

श्री जाम्भोजी महाराज (विक्रम संवत् १५०८—१५९३)

समर्पण

राजस्थानी साहित्य की सिद्ध काव्यधारा के आदि स्रोत

जाम्भोजी

तथा

विष्णोई साहित्यकारों

को

|

सादर

प्रस्तावना

आचार्य श्री परशुराम चतुर्वेदी

१

जाम्भोजी का जन्म सवत् १५०८ की भादो बदि ८ को सोमवार के दिन कृत्तिका नक्षत्र म जोधपुर राज्य के अन्तगत नागोर नामक परगने के पीपासर गाव मे हुआ था और इनकी जाति पवार (परमार) वशी राजपूतो की थी। इनके पिता एक सम्पन्न व्यक्ति थे और उनका नाम लोहटजी रहा तथा इनकी माता हासा देवी भाटी कुल की थी। प्रसिद्ध है कि ये अपने माता पिता की इकलौती सन्तान थे और सम्भवत उनकी अधेडी अवस्था म उत्पन्न भी हुए थे। इस कारण इनके प्रति उनकी और अन्य आत्मियो की भी ओर स यथेष्ट स्नेह भाव प्रदर्शित किया जाना स्वाभाविक रहा। अपनी बाल्यावस्था के समय इनकी एक विशेषता यह रही कि ये, कदाचित कम बोलते थे, और इसलिए लोग इन्हें 'गूगा' अथवा कम से कम 'गहला' तक भी कहने लगे थे। परन्तु उन दिना कभी कभी ये कुछ ऐसे भी काय कर देते दीख पडते थे जिनसे सभी कोई चकित हो जाते थे और इसके आधार पर कुछ लोगो ने अनुमान किया है कि इसी कारण ये 'जाम्भा' (अचम्भा) भी कहे जाने लगे थे। जो हो, जब ये ७ वष मे अधिक अवस्था के हुए, इन्ह पशुचारण के काम म लगा दिया गया जिसके लिए ये आसपास के जगलो म भी जाने लगे।

कहत हैं कि ऐसी ही दशा मे जब ये लगभग १६ वष के थे इनकी भेंट बडा गुरु गोरखनाथ से हो गई जिस बात को विशुद्ध ऐतिहासिक तथ्य के रूप म स्वीकार कर लेना सब किसी के लिए सभव नही कहला सकता। इस सम्बन्ध म इतना और कहा जा सकता है कि ऐसी किसी न किसी घटना की चर्चा इनके समसामयिक हरिदास निरजनी (सवत १५१२-९५) एव जसनाथजी (सवत १५३९-६३) के विषय मे भी की जाती है, जो सभवत इन सभी के ऊपर पडने वाले गुरु गोरखनाथ अथवा उनके नाथ पथ के न्यूनाधिक प्रभाव मात्र को ही सूचित करती है। जाम्भोजी का "गोरख गरू अपारा"[1] कह दना, हरिदास निरजनी द्वारा 'गोरख हमारा गुर बोलिये'[2] वा "सिरी गोरख का हाथ"[3] तक भी कह दिया जाना कुछ अधिक महत्त्व नही रखता और न जसनाथजी की ओर से "सील सेज में ईसर गोरख भेटया, भलकत दीदारू" जसे किये गए किसी कथन का कोई वैसा ऐतिहासिक मूल्य ही ठहराया जा सकता है। वास्तव मे इस प्रकार की बातें हमे सत किनाराम सत चरणदास एव सत गरीबदास जसे लोगो की उपलब्ध रचनाओ के भी अन्तगत दखने को मिलती हैं जो सभी विक्रम की अठारहवी शताब्दी मे उत्पन्न हुये थे, किन्तु जिनम से

१ सबदवाणी, सबद ६३, पक्ति १०।
२ श्री महाराज हरिदासजी की वाणी, साखी ४, पृष्ठ ३५६।
३ वही, साखी ५, पृष्ठ ३५७।

प्रथम और द्वितीय द्वारा क्रमश गुरु दत्तात्रेय एव शुकदेव मुनि जसे पौराणिक महापुरुषो के प्रत्यक्ष सम्पर्क म आना तथा इसी प्रकार तृतीय का उन सत कबीर का शिष्य होना सूचित करता है [१] जिनका आविर्भाव पन्द्रहवी शताब्दी म ही हो चुका था। 'जम्भदेव चरित भानु' के रचयिता स्वामी ब्रह्मानन्द के अनुसार तो जाम्भोजी से उपयुक्त प्रकार मिलने वाले महात्मा कोई बाला गोरख यतीन्द्र नामक महापुरुष रहे, किन्तु उनका ऐसा भी कथन कदाचित प्रसिद्ध गुरु गोरखनाथ की ही ओर सकेत करता जान पडता है और इसका निर्णय तब तक नहीं किया जा सकता जब तक इस विषय म किसी ऐतिहासिक प्रमाण द्वारा पुष्टि न हो जाय।

जाम्भोजी न कोई विवाह नहीं किया, प्रत्युत कहा जाता है कि इन्होंने आजीवन ब्रह्मचारी बने रहन का सकल्प कर लिया था जिसके सामने इनके माता पिता को भी झुकना पड गया। इनके पिता लोहटजी का देहान्त सवत १५४० म हुआ तथा इनकी माता हांसादेवी भी उनके कुछ ही दिना पीछे चल बसी। तत्पश्चात वैसी दशा म इन्होंने अपने गृह तथा अपनी सारी सम्पत्ति का परित्याग कर दिया और ये 'समराथळ' नामक स्थान पर रहने लग गये। समराथळ पर ही रहते समय इन्होने, सवत १५४२ की कार्तिक बदि ८ को विश्नोई (वा विष्णोई) सम्प्रदाय का प्रवतन किया तथा उन दिनो वाले अकाल पीडितो की सहायता करन के साथ साथ अपने मत का प्रचार काय भी आरम्भ कर दिया। ये बहुधा जन समाज मे उपस्थित होकर सवसाधारण को ज्ञानोपदेश देते तथा कभी कभी उनकी शकाओ का समाधान कर देने का प्रयत्न करते और इसके साथ ही प्राय विविध वाणियो की रचना भी किया करते थे जो इस समय 'सबदवाणी' नामक रचना-सग्रह के अन्तगत सगृहीत समझी जाती हैं। अन्त मे सवत १५९३ की मार्गशीष वदि ९ को सभवत 'समराथळ' पर ही रहते समय इनका देहान्त हो गया।

जाम्भोजी के जीवन काल अर्थात सवत् १५०८ १५९३ के समय इनके प्रमुख कायक्षेत्र राजस्थान की दशा कुछ विचित्र सी थी और वह कम से कम उनके प्रारम्भिक दिनो मे, क्रमश बिगडती जाती हुई ही जान पडती थी। वहां वाले विभिन्न राज्यो के बीच, बहुधा साधारण सी बातों को भी लेकर पारस्परिक युद्ध आरम्भ हो जाया करते थ। उनम से एक दूसरे के ऊपर, कभी अपने आत्मसम्मान की रक्षा के कारणवश धावा बोल देता, तो कभी किसी वचन-पालन के व्याज से, अपने से अधिक शक्तिशाली शत्रु के विरुद्ध भी हथियार उठा लेता। महत्वाकांक्षा से बढकर उन्हे अधिकतर ऐसी अनेक बातें ही प्रेरित कर दिया करती जिन पर किसी न किसी प्रकार के काल्पनिक कर्तव्य का रग चढा हुआ रहता, जिसका एक स्पष्ट परिणाम इस रूप म दीखता था कि उनम से छोटे वा बडे सभी राज्य सदा युद्ध के लिए जागरूक बने रहते थे। इसी प्रकार जहा तक साधारण सामाजिक स्थिति के विषय म कहा जा सकता है, खेतिहर, व्यापारी, कारीगर एव कलाकार जस वर्गों की

१ देखें—'क्रमश विवकसार' पृष्ठ २, भक्तिसागर,' पृष्ठ ७९ ३२३ ४९३, ५१८ आदि तथा गरीबदासजी की बानी, पृष्ठ १४८।

आर्थिक दशा एक समान नही थी और न उनके अथवा धनी मानी एव साधु वर्ग तक के लिये ही कहा जा सकता था कि उनमे खान पान तथा अन्धविश्वास विषयक त्रुटियो का समावेश नही था। एक ओर जहा मादक एव निषिद्ध वस्तुओ का खुला व्यवहार होता दीख पडता था, वहा दूसरी ओर उन लोगो के ऊपर ऐसी कुप्रथाओ एव कुरीतियो का भूत भी सवार हो चुका था जिनके रहते किसी समाज का कभी कोई नतिक विकास हो ही नहीं सकता। इसके सिवाय यदि उस काल की धार्मिक स्थिति के लिए कहा जाय तो यहा पर भी धम के वास्तविक रूप का ज्ञान लगभग लुप्त सा हो चला था और उसका स्थान साधारण मान्यताओं ने ग्रहण कर लिया था। बाह्य साधनाओ को आवश्यकता से अधिक महत्व प्रदान किया जाता था और साम्प्रदायिक सकीर्णता का सवत्र बोलबाला हो गया था।

इस प्रकार की अनेक बातें सामान्यत उस काल के पूरे राजस्थान क्षेत्र के लिए कही जा सकती थी। उसके जिस भाग विशेष म जाम्भोजी का आविर्भाव हुआ था उसकी दशा इससे कुछ और गिरी ही समझी जा सकती थी। जिस प्रदेश के अन्तगत इन्होंने जन्म ग्रहण किया था, उसे भौगोलिक दृष्टि से साधारणत 'वागड' कहा जाता था। यह सारा का सारा भूभाग प्राय रेतीले मैदानों से पूर्ण था जिनम टीले बन गये थे और अन्यत्र छोटे-बडे जगल भी पाये जाते थे जिनमे पशुओ के झुड चरा करते थे तथा जहा ऊचे स्थानों पर कहीं-कहीं बस्तियां भी बन गई थी। इन छोटे छोटे गावो मे से अधिकाश जाट जाति के लोगो द्वारा आबाद थ। जाट लोग स्वभावत सीधे-सादे और अक्खड हुआ करते थे तथा उनकी जीविका प्रमुख रूप मे भोले भाले किसानो की जसी ही रहा करती थी। ये प्राय अपने ऊपर शासन करने वाले राजपूत राजा महाराजाओ की ओर से विभिन्न युद्धो मे भाग भी लिया करते थे तथा अपने सामाजिक एव धार्मिक विश्वासो और मान्यताओ की दृष्टि से, बहुत कुछ उनसे मिलते जुलते भी जान पडते थे। इनकी विशेषताए बहुधा इस बात म देखी जाती रही कि उनके जसे पढे लिखे एव सुसस्कृत न होने के कारण, ये लोग बहुत अधिक अन्धविश्वासी और परम्परा-पालक बन गये थे तथा इनमे मद्यसेवन एव स्त्री अपहरण जसे बहुत से दुर्व्यसना वाले अनक ऐसे दोष भी आ गये थे जिनके कारण इनकी जीवन पद्धति को 'नतिक' मानना कभी उचित नही कहा जा सकता था।

यहा पर यह उल्लेखनीय है कि उस काल वाले 'वागड-देश' की प्राकृतिक दशा तथा वहा के निवासियो की मनोवृत्ति आदि की ओर किया गया एक स्पष्ट सकेत, हमे सत कबीर की कतिपय पक्तियो मे भी मिलता जान पडता है। उन्होंने अपने एक पद के द्वारा बहिजगत एव अन्तजगत की तुलना करते समय, प्रथम के लिए जहा 'वागड देस' का रूपक बाधा है वहा द्वितीय को 'देस मालवा' कहा है और इस प्रसग में बतलाया है— 'वागड देश मे बराबर लुएँ चलती रहती हैं इसलिए तू वहां मत जा, क्योंकि वहा जाने पर जल जाने का भय है। वहां के पूरे समाज को ही मैं धर्म-विहीन पाता हूँ। जब उनके सिर पर धूल उडकर पडा करती है तो व उस अबीर की सज्ञा दिया करते हैं। वहा न तो कोई सरोवर है और

न पानी ही है। यहाँ पर न तो सद्गुरु हैं, न साधुवाणी है, न कोई कोकिला है और न कोई तोता ही है। यहाँ पर हंस (जीव) ऊँचे उड़ते हुए भी, मरा करते हैं।"[1] यहाँ पर, वहाँ वाले तत्कालीन जन साधारण के नैतिक स्तर की तो कोई चर्चा की गई नहीं दीख पड़ती किन्तु जो निम्न अन्य कुछ बातों का हमारे समक्ष उल्लेख होता है उनसे पता चलता है कि वस्तुस्थिति कैसी ही रही होगी। अतएव हम कह सकते हैं कि जिस 'बागड़' प्रदेश वाले भूखंड में जाम्भोजी का जन्म हुआ था वह कई दृष्टियों से अच्छा नहीं ठहराया जा सकता था तथा यह एक ऐसा क्षेत्र रहा जहाँ पर समुचित सुधार का किया जाना आवश्यक समझा जा सकता था। वहाँ के लिए इस बात की आवश्यकता थी कि कोई न कोई सच्चा पथ-प्रदर्शक (सद्गुरु) सच्चे मार्ग का प्रदर्शन करे तथा वहीं निर्मल सदुपदेशों (साधुवाणी) द्वारा उक्त स्थिति में उपयुक्त सुधार लाया जाय और तभी यह संभव था कि अपने को उच्च मानते हुए, मिथ्याभिमान के कारण अपने प्राण निछावर करने वालों तक का भी कल्याण हो सके।

जाम्भोजी के उपर्युक्त जीवनवृत्त, उनसे सम्बन्धित प्रमुख घटनाओं तथा उनके स्वभाव के ऊपर विचार करने से यह स्पष्ट होते देर नहीं लगती कि इनमें अनेक ऐसे गुण थे जिनके आधार पर इन्होंने उस ओर बहुत कुछ किया होगा। ये अपने बचपन से ही मितभाषी रहे तथा पशुचारण के अवसरों पर जंगलों में भ्रमण करते समय इन्हें एकान्तवास एवं आत्म चिंतन का कुछ न कुछ अभ्यास भी पड़ गया होगा। इनके विषय में लिखने वालों का कहना है कि जिन दिनों ये उक्त कार्य में लगे रहे, इनके यहाँ संयोगवश अनेक ऐसे व्यक्ति भी समय समय पर आ जाते रहे जिनके ऊपर विविध कठिनाइयाँ पड़ी रहा करती थीं तथा जिनकी सहायता ये सदा किसी न किसी रूप में करते रहे। इसके सिवाय, न केवल इन्होंने अपने माता पिता का देहावसान हो जाने के अनन्तर अपनी सारी सम्पत्ति का परित्याग कर दिया, अपितु जिस समय संवत १५४२ में वहाँ अकाल पड़ा, इन्होंने कष्ट में पड़े लोगों की सेवा-सहायता भी की। इस प्रकार, ज्ञान की गंभीरता, आत्मत्याग की भावना, हृदय की उदारता सहृदयता एवं कर्मठता जैसी अनेक बातें इनके जीवन की चिरसंगिनी बन कर काम देती आई थीं जिनका एक सुन्दर परिणाम यह हुआ कि न केवल इनका व्यक्तित्व क्रमशः निखरता चला गया, प्रत्युत इसके साथ ही इनकी लोकप्रियता भी बढ़ती चली गई तथा जो कोई इनके सम्पर्क में आये अथवा जिन्हें इन्होंने पूर्णतः प्रभावित किया उनके ये सभी कुछ हो गए। फलतः यह स्वाभाविक था कि इनके कार्य क्षेत्र वाले इन्हें एक आदर्श महापुरुष तथा कभी कभी अपने इष्टदेव के रूप तक में भी स्वीकार करते, और इस प्रकार

१ बागड देस लूवन का घर है।
बहां जिनि जाइ दाझन का डर है ॥ टेक ॥
सब जग देखौं कोइ न धीरा। परत धूरि सिरि कहत अबीरा ॥
न तहा सरवर न तहां पाणी। न तहा सतगुर साधू बांणी ॥
न तहा कोकिल न तहा सूवा। ऊंचे चढ़ि चढ़ि हंसा मूवा ॥ इत्यादि
—कबीर ग्रंथावली, का० ना० प्र० सभा, संवत २०१३, पद ६८, पृष्ठ १०९।

इनके द्वारा सुझाये माग के अनुसार एक सम्प्रदाय भी चल पडा।

जाम्भोजी द्वारा रचे गये किसी ग्र थ का पता नही चलता और न यही विदित हो पाता कि इ होने ऐसा करने का कोई प्रयास भी कभी किया था अथवा नही। हमे तो इनके विषय मे इतना तक भी ज्ञात नही कि इ होने कभी कोई शिक्षा भी प्राप्त की थी और न हम यही कह सकते हैं कि इनका कोई दीक्षा गुरु भी रहा था। इनकी जो रचनाएँ इस समय हमे उपल ध हैं, उनके अ तगत भी हम ऐसा कोई स्पष्ट सकेत नही मिलता जिसे सूत्र-वत पकडकर उसके आधार पर हम कोइ तक सगत अनुमान कर सकें। इनका गुरु गोरख नाथ के लिए 'गोरख गरू अपारा" कह डालना इस सदभ म कोई महत्त्व नही रखता और जसा इससे पूव हम देख चुके हैं, यह किसी प्रकार ऐतिहासिक दृष्टि से कभी सिद्ध भी नही किया जा सकता, प्रत्युत इसके विषय मे केवल यह अनुमान किया जा सकता है कि वसी कोई प्रचलित कथन पद्धति ही रही होगी अथवा यह भी हो सकता है कि नाथ पथ का विशेष प्रचार रहते आने के कारण उक्त प्रकार, उसके प्रभाव विषयक एक अभिव्यक्ति मात्र कर दी गई होगी। इसके सिवाय, इनकी रचनाओ मे लक्षित होने वाली वेदा त, योग शास्त्र अथवा अ य इस प्रकार की बातो के विषय म भी कहा जा सकता है कि वे भी बहुत अ शो तक इनके उन अनुभवो का परिणाम हो सकती हैं जि ह इ होंने स्वभावत अपने चि तन-शील एव सभवत बहुश्रुत भी होने के कारण, क्रमश अर्जित कर लिया होगा। यदि हम चाह तो इसके प्रमाण म इनकी उपलब्ध रचनाओ म से अनेक ऐसे अ श भी उद्ध त किय जा सकते हैं, जहा पर इ होने अपने श द चयन, वाक्य प्रयोग, कथन शैली आदि तक म प्रचलित परम्पराओ का अनुसरण किया है। हा, इतना अवश्य है कि इनकी पक्तियो को पढते समय जो हम इनके व्यक्तित्व की झलक दीख पडती है वह अपूव है।

जाम्भोजी के दाशनिक मत पर विचार करते समय हम, सवप्रथम, उन विभिन्न नामो के ऊपर अपनी दृष्टि डालनी पड जाती है जिनका इ होने परमतत्त्व अथवा परमात्म-तत्त्व के लिए, अपनी रचनाओं के अ तगत प्रयोग किया है। वे न केवल अनेक हैं, प्रत्युत वे अपने विविध रूपो मे, अनेक स्रोतो से उपलब्ध किये गये स भी जान पडते हैं। इ होने उसके लिए प्रधानत विसन (विष्णु) शब्द का ही प्रयोग किया है, कि तु केवल इसे ही इन्होने कदाचित पर्याप्त नही माना है और इस सम्ब ध मे, इ होने यह भी कह दिया है कि उस "मेरे साईं के 'सहसनाम' (सभवत असख्य नाम) हैं, वह वस्तुत 'सिंभू' (स्वयम्भू) है, कि तु वह कभी पहले पहल 'आदि मुरारी' के रूप मे उत्पन्न हुआ था"।

इस प्रकार, उसके नामो म, इ होने 'विसन' के अतिरिक्त 'ओम, 'पारब्रह्म', 'परमेसर' 'नारायण', 'हरि', 'राम', 'सतगुरु', 'कृष्ण', 'स्याम' 'लक्ष्मण', परसराम', 'रहीम', 'रहमान', 'करीम 'खुदाव द', 'अल्लाह' आदि के भी विभिन्न प्रयोग यथास्थल, मनमाने रूप म किये हैं। ये उसे किसी मत मता तर अथवा दृष्टि विशेष के प्रभाव मे आकर सीमित नही कर देना चाहते। ये उसे प्राय अनादिवत समझते जान पडते हैं, किन्तु फिर भी इ होने उसके द्वारा सारी सृष्टि का सृजन किया जाना तथा इस प्रकार, उसका अपने निरजन

निराकार के रूप में, प्रायः साकारवत् प्रकट हो जाना भी बतलाया है, जो उसकी एकमात्र सत्ता का द्योतक भी ठहराया जा सकता है। इस प्रसंग में इन्होंने स्वयं अपने विषय में कहा है कि "उस समय, जबकि 'आदि मुरारी' का आविर्भाव हुआ मैं 'निरालम्ब' रूप में भी था, मेरे, माँ-बाप कोई नहीं थे और मैंने अपनी काया का निर्माण स्वयं किया था मैंने ही स्वयं, समय समय पर, कच्छप, वाराह, नृसिंह, वामन जैसे अवतार धारण किये तथा विविध लीलाएँ तक भी की"। अतएव, काजी, मुल्ला, पण्डित आदि से ये स्पष्ट शब्दों में कहते दीख पड़ते हैं कि, "यदि तुम लोग 'दोजख' की अपेक्षा मुक्ति चाहते हो तो मेरा कहना करो, तुम्हारे लिए इन्द्रपुरी, वैकुण्ठ धाम अथवा मोक्ष सभी कुछ सम्भव हो सकेगा"[1]। इस प्रकार, ये उस परमतत्त्व को, एक ओर जहाँ रूपरेखा एवं वर्णादि से 'विवर्जित'[2] बतलाते हैं, वहीं दूसरी ओर उस एक मात्र को सर्वत्र प्रत्यक्ष रूप में अनुभूत होता हुआ भी ठहराते हैं जो इनके अद्वैतवाद का द्योतक भी समझा जा सकता है।

जाम्भोजी का आत्मा के विषय में यह कहना है कि "जिस प्रकार तिल के भीतर तेल रहता है अथवा फूल में गंध होती है, उसी प्रकार उसका प्रकाश पाँचों तत्त्वों में व्याप्त हुआ करता है"[3]। संसार के प्राणी सभी उत्सवों में रत जान पड़ते हैं किन्तु उन्हें यह पता नहीं चलता है कि यह सारा जगत बाजरे की भूसी के समान थोथा और निस्सार है[4]। इसी प्रकार यदि विचार किया जाय, तो अन्त 'माता पिता, भाई बहन परिवार, सगे सम्बन्धी कोई भी वास्तविक साथी नहीं है'[5]। 'इस कलियुग के भीतर तत्त्व का ज्ञान न हो पाने के कारण, सभी भ्रम में पड़े दीखते हैं। ब्राह्मण वेदों को काजी कुरान को और जोगी जोग को भुला बैठे हैं, तथा मुण्डियों के पास वो 'अकल' ही नहीं रह गई है और माता पिता तक भी, केवल भ्रम में पड़े रहने के ही कारण, अपनी सन्तानों के लिए, अनेक प्रकार की कामनाएँ करते रहा करते हैं[6]। इनका यह भी कहना है कि "जैसी खेती की जाती है, वैसी ही फसल भी तैयार हुआ करती है'। 'वर्षा होती है उस दशा में भी जैसा बीज रहा करता है, वैसे ही पौधे भी उगा करते हैं, अथवा उसमें अन्न पैदा हुआ करता है, इसमें पानी का कोई दोष नहीं है। उसी प्रकार, सर्वत्र अपनी करनी का ही दोष हो सकता है, क्योंकि उसी के अनुसार फल मिला करता है"[7]। ओछी करनी वाले बराबर आवागमन के चक्र में पड़े रहा करते हैं और उनका कभी छुटकारा नहीं हो पाता। आवागमन से छुटकारा पा जाना ही मुक्ति है जिसके लिए इन्होंने स्वर्ग में जाना, वैकुण्ठ पहुँचना अथवा देवों के साथ रहना जैसे भी कथन किये हैं तथा इन्होंने उसका स्पष्टीकरण, 'भिस्त'

१ सबदवाणी सबद ६३, पृष्ठ ३९८।
२ वही सबद २६, पृष्ठ ३३१।
३ वही सबद १०७ पंक्ति १३-१४।
४ वही, सबद ६६, पंक्ति १२-१३।
५ वही, सबद ३१ पंक्ति ९-११।
६ वही, सबद ८३, पंक्ति १५-१७।
७ वही, सबद २८, पंक्ति १५-१८।

कर घूमा करना और फिर घरबारी की ही भाँति सुई-तागे से 'करड' एवं 'मेखले' की सिलाई करना तथा झोली और कंधे का बोझ कंधे पर ढोना और वीर बतालों का जप करना अथवा मोह त्याग की बातें करना आदि सभी कुछ दिखावा मात्र है"[1]। इसी प्रकार, हम उन हिंदुओं के लिए भी कह सकते हैं, जो 'पाहन' की पूजा किया करते हैं और चेले बन कर अपने गुरुओं के पैरों पर गिरा करते हैं, भूत प्रेतादि में विश्वास करते हैं, उनके लिए बलि चढ़ाते हैं तथा ऐसे अनेक पाखंड किया करते हैं। ऐसे लोग इनकी दृष्टि में उन कुत्तों से भी बुरे कहे जा सकते हैं जो चोरों के आ जाने पर भोंका करते हैं और सभी को सजग कर देते हैं"[2]।

जाम्भोजी की उपलब्ध रचनाओं में हम कहीं पर उन प्रसिद्ध २९ नियमों को एकत्र गिनाया गया नहीं दीख पड़ता, जिनका पालन उनके द्वारा प्रवर्तित विष्णोई सम्प्रदाय के अनुयायियों के लिए परम कर्त्तव्य समझा जाता है। परन्तु यदि ध्यानपूर्वक देखा जाय, तो वे अथवा उनसे कुछ अधिक नियम तक भी यहाँ पर यथास्थल बतलाये गये मिलते हैं। ऐसे नियमों में केवल वे ही नहीं आते जिनकी आवश्यकता साधारण दैनिक आचरण के अवसरों पर पड़ सकती है तथा जिनमें इसी कारण, विधि निषेध के रूपों में, अनेक बातों का समावेश कर दिया जा सकता है, इनमें बहुत से ऐसे भी पाये जाते हैं, जिन्हें हम मुक्ति प्राप्ति के हेतु किन्हीं साधनों के रूप में भी स्वीकार कर सकते हैं। इसके सिवाय, इनमें कई ऐसे भी आ गये हैं जिनका उपयोग किन्हीं अवसर विशेष पर ही किया जा सकता है। जहाँ तक ऐसे सभी नियमों के निर्दिष्ट करने की बात है, हमें पता चलता है कि इनका अनुसरण जाम्भोजी के समसामयिक जसनाथजी द्वारा प्रवर्तित सम्प्रदाय के अंतर्गत भी किया गया पाया जाता है और वहाँ पर ३६ नियम प्रचलित हैं। इसके सिवाय हमें 'साध सम्प्रदाय' के अनुयायियों द्वारा स्वीकृत व १२ नियम भी मिलते हैं जिन्हें वे सर्वाधिक महत्त्व दिया करते हैं तथा जिनके पालन में किसी प्रकार की कमी का आ जाना उनके यहाँ कभी क्षम्य नहीं माना जाता। इन सभी विभिन्न नियमावलियों का यदि कोई सूक्ष्म तुलनात्मक अध्ययन किया जाय, तो यह स्पष्ट होते देर नहीं लगती कि इनमें से बहुत से तो वे ही हैं जिनकी गणना सामान्य नैतिक आचरण के सम्बन्ध में की जाती है। परन्तु इनमें अनेक ऐसे भी मिल जाते हैं जो केवल अपने पालन वालों के ही लिए विशेष रूप से निर्धारित प्रतीत होते हैं। ये उनकी विशेषताएँ सूचित करते हैं तथा इनकी दृष्टि से हम उनकी विशिष्ट मनोवृत्ति के समझने में भी सहायता मिलती है तथा इनके सहारे हम उनके विभिन्न सम्प्रदायों का समुचित मूल्यांकन भी कर सकते हैं। इनके द्वारा हम उनकी उन वास्तविक देनों का भी पता लगाने में कुछ सहायता मिल सकती है जिनकी दृष्टि से वे कभी प्रवर्तित किये गये थे।

जाम्भोजी आजीवन अविवाहित रहे और उन्होंने न तो किसी साधारण गृहस्थ का ही जीवन व्यतीत किया और न किसी सम्प्रदाय की जमी सम्पत्ति का संग्रह करके उसके

---

१ सबदवाणी सबद ४१ पंक्ति १ ६।
२ वही सबद ७१, पंक्ति १-७।

आधार पर कभी ऐश्वयशाली बन जाने का ही कोई प्रयत्न किया। उन्होने, अपने गृहादि का परित्याग करके, आध्यात्मिक साधना एव लोक सग्रह की वृत्ति अपनायी तथा तदनुसार ही वे बराबर जन कल्याण के काय मे लगे रहे और सव साधारण को एक आदश सात्विक जीवन यापन करने का सदुपदेश भी देते रहे। उनके विचार अत्यन्त व्यापक थे और उनम सब कही उनकी समन्वयात्मक दृष्टि का प्रभाव लक्षित हो रहा था और यही कारण था कि उनके अनुसार निर्मित की गई 'नियमावली मे, कतिपय साम्प्रदायिक सी दीख पडने वाली बातो के आ जाने पर भी, उसमे किसी प्रकार की सकीणता के ढूढने का प्रयास बहुत कम किया गया है। उनके द्वारा प्रवर्तित विष्णोई सम्प्रदाय भी आरम्भ से ही, जनसाधारण के उपयुक्त धार्मिक जीवन का ही प्रतिपादन करता आया और इस सम्बन्ध मे यह उल्लेखनीय है कि इसके प्रारम्भिक अनुयायियो मे भी अधिकाश वे ही लोग थे जो गृहस्थ जाटो वाले समाज के थे। जाम्भोजी ने कदाचित उन्ही के लिए सव प्रथम किसी 'अवजूवाट' अर्थात सीधे वा सहज माग के आदश की कल्पना भी की थी और उन्हें बतलाया था कि "जो कोई इस 'अवजूवाट' को अपना लेगा वह, देहावसान के अनन्तर, स्वग पहुच जायगा[1]।" उन्होने यही बात फिर अन्यत्र, राजन्यवग को भी सम्बोधित करके कही और उन्हें चेताया कि "हे राजेन्द्र, कूड माया-जाल मे न भूलो, प्रत्युत उससे पथक 'ओजू की वाट को अपनाओ"[2]। इस माग मे न तो किसी प्रकार के प्रपच का प्रलोभन आ सकता है और न किसी पाखड के कारण, विपथगामी बन जाने का भय ही बाधा डाल सकता है। इसके दोना पाश्व, क्रमश 'विचार' एव 'आचार' के द्वारा सुरक्षित हैं, जिस कारण यह ठीक सीधी ओर ही जाता है। "वाद विवाद के भ्रम जाल म पडे हुए लोग, आचार विचार के स्वाद को नही जान पाते,"[3] तथा जो सदाचारी आचार म लीन है और जिसकी सयम शील एव सहज म पूरी आस्था है, उसे कभी आवागमन की आशका भी नही हो सकती[4]।"

२

जाम्भोजी का जीवन काल सवत १५०८ से लेकर सवत १५९३ तक ठहरता है, जिस कारण, जहा तक पता है राजस्थान के क्षेत्र वाले हिन्दी के प्रमुख सत-कवियो म ये सबसे प्राचीन कहे जा सकते हैं। परन्तु आश्चय की बात है कि इनके विषय में, अभी तक हम पूरी जानकारी नही हो पाई थी और न इनकी यथेष्ट रचनाएँ ही उपलब्ध हो सकी थी। इनके द्वारा प्रवर्तित 'विष्णोई सम्प्रदाय' के प्रचार और प्रसार का, राजस्थान मध्य

१ 'अवजूवाट जे नर भया, काची काया छोडि कवलासे गया।'
—सबदवाणी, सबद २२ पक्ति ३ ४।

२ 'कूड माया जाल न भूलि रे राजिंद्र, अलगी रही ओजू की वाट्ट।'
—वही, सवद १०४, पक्ति ३ ४।

३ 'भरमी भूला वाद विवाद, आचार विचार न जाणत स्वाद।'
—वही, सवद २८, पक्ति ६६ ६७।

४ 'को आचारी आचारे लीणो, सजमे सीले सहज पतीना।
तिहि आचारी नै चीन्हत कौण, जिहि की चूक सहज आवागौण ॥
—वही सवद ५२, पक्ति १२-१५।

प्रदेश, पंजाब, हरियाणा और उत्तर प्रदेश में होना बतलाया जाता है तथा यहाँ तक भी कहा गया मिलता है, कि उसके कुछ न कुछ अनुयायी बिहार एवं नेपाल राज्य में भी पाये जाते हैं। इस कारण, उनकी संख्या भी कदाचित्, नगण्य नहीं हो सकती और न, बिना उनके विषय में पर्याप्त ज्ञान प्राप्त किये, उनके महत्त्व को किसी प्रकार कम ही माना जा सकता है। इसके सिवाय, इधर ज्ञात हुआ है कि विष्णोई सम्प्रदाय के अनुयायियों में बहुत से ऐसे भी हुए हैं जिन्होंने अनेक प्रकार के साहित्य की रचना की है तथा उसका बहुत सा अंश स्वयं इनकी जीवनी आदि से सम्बन्ध रखता है। किन्तु फिर भी न तो इनका कोई उल्लेखनीय परिचय अभी तक दिया जा सका था और न, ऐसे ग्रन्थों के आधार पर, इनकी विचारधारा अथवा इनके किसी प्रभाव की चर्चा ही हो पाई थी जिसके द्वारा इनकी ओर हमारा ध्यान जा पाता। हो सकता है कि यह उक्त प्रकार के साहित्य के प्रकाश में न आने से अथवा, इस कारण से भी, नहीं हो सका था कि उसके प्रति कोई न कोई साम्प्रदायिक भावना मात्र बना ली गई थी और उसे उतना महत्त्व प्रदान नहीं किया गया था जिसके फलस्वरूप हम आज तक जाम्भोजी की उन सुन्दर बानियों के अध्ययन से भी वंचित रहते चले आये जिनकी रचना उन्होंने अपने चिन्तनशील एवं कर्मठ जीवन में प्राप्त अनुभवों के आधार पर की है।

डॉ० हीरालालजी माहेश्वरी द्वारा प्रस्तुत किए गये ग्रन्थ 'जाम्भोजी, विष्णोई सम्प्रदाय और साहित्य' के प्रथम अध्याय के देखने से पता चलता है कि उन्हें इस विषय से सम्बन्धित एक विशाल साहित्य का परिचय प्राप्त हो गया है। उन्होंने यहाँ पर इसके अन्तर्गत ऐसी ४०० से भी अधिक रचनाओं का नामोल्लेख किया है तथा उनके वर्ण्य विषयों की ओर संकेत करते समय, कभी कभी, उनका कोई न कोई आलोचनात्मक विवरण तक भी दे दिया है जिसके आधार पर हमें इस बात के स्पष्ट हो जाते देर नहीं लगती कि हम, उन्हें तदनुसार, कई विभिन्न कोटियों में स्थान दे सकते हैं। उनमें बहुत सी ऐसी रचनाएँ हैं जिनका विषय प्रमुखतः जाम्भोजी का जीवन चरित कहा जा सकता है, किन्तु फिर भी, उनमें से सभी के अन्तर्गत उसका पूरा परिचय दिया गया नहीं पाया जाता और न उन्हें, किसी ऐतिहासिक दृष्टि से लिखा गया ही कहा जा सकता है। उनमें से कई में या तो जाम्भोजी के बचपन जैसे विषयों की चर्चा कर दी गई मिलती है अथवा कतिपय घटनाओं का वर्णन कर दिया गया दीखता है। इसी प्रकार, उनके भीतर वर्णित अन्य विषयों में, अनेक ऐसी कथाएँ आती हैं जिन्हें प्रासंगिक मात्र कहा जा सकता है अथवा स्वयं जाम्भोजी के विविध चमत्कारों वा लीलाओं के भी नाम लिये जा सकते हैं। इसके सिवाय, उनमें कभी कभी बहुत सी उन बानियों को भी स्थान दिया गया दीख पड़ता है जो उनकी अपनी रचनाएँ कही जा सकती हैं तथा जो वहाँ संगृहीत कर ली गई हैं अथवा वहाँ पर केवल ऐसे पद्य ही रखे गये हैं जो उनके सम्बन्ध में प्रशंसात्मक शैली में रचे गये हैं। इस प्रकार एकत्र की गई सभी रचनाएँ विभिन्न छन्दों वा काव्य रूपों में हैं और उन्हें पदों, साखियों व साधारण भजनों की श्रेणी अथवा कवितादि जैसे विविध

छन्दों की कोटि में भी रखा जा सकता है। बहुत से ग्रन्थों के विषय तो निरे साम्प्रदायिक से भी लगते हैं।

परन्तु यहां पर केवल उक्त अध्ययन सामग्री का ही विवरण देकर नहीं छोड़ दिया गया है। इसके लेखक ने इसके द्वितीय अध्याय के अन्तर्गत, इस ओर किये गये उस कार्य का भी संक्षिप्त परिचय दिया है, जो इस समय तक 'विश्नोई सम्प्रदाय' वाले लेखकों अथवा इतर लेखकों द्वारा सम्पन्न किया जा चुका है, और उस पर अपनी ओर से टिप्पणी लगाते समय, यहां उसका मूल्यांकन भी कर दिया गया है जिसके द्वारा वैसे प्रयत्नों की उपलब्धियों पर प्रकाश भी पड़ जाता है। इनमें से प्रथम वर्ग की पुस्तकों में से कई वैसी हैं जो हमारे सामने लगभग वैसे ही चित्र उपस्थित करती हैं जो उक्त प्रथम अध्याय वाले ग्रन्थों में पाये जाते हैं किन्तु थोड़ी सी ऐसी भी हैं जिन्हें किसी रूप में विवेचनात्मक भी ठहरा सकते हैं तथा जिनके लिए कहा जा सकता है कि वे आधुनिक प्रवृत्तियों द्वारा कुछ न कुछ प्रभावित होकर भी लिखी गई हैं। इस प्रकार की पुस्तकों की विशेषता अधिकतर इस बात में देखी जा सकती है कि ये किन्हीं 'जानकारों' द्वारा लिखित कही जा सकती हैं तथा इसी कारण इन्हें कुछ दृष्टियों से प्रामाणिक भी समझा जा सकता है। इनमें उतना अनुमान का धन्धा काम करता नहीं कहा जा सकता जितना किसी न किसी आग्रह का भाव आ गया माना जा सकता है। इसके विपरीत, जिन लोगों को इसके पहले 'इतर लेखक' नाम से सूचित किया गया है उनके विषय में, कहा जा सकता है कि यद्यपि उन्होंने अपनी कोई बात उक्त प्रकार से साधिकार नहीं कही है, फिर भी उनके ऊपर किसी प्रकार के आग्रह का दोष भी नहीं मढ़ा जा सकता।

पुस्तक के ले तृतीय अध्याय के अनन्तर इसका खण्ड १ समाप्त हो जाता है और फिर चतुर्थ अध्याय से लेकर इसके सप्तम अध्याय तक, जाम्भोजी उनकी वानी, विचार धारा एवं सम्प्रदाय के प्रसंग आते हैं, जो इसके खण्ड २ के विषय हैं। इसके उक्त तृतीय अध्याय में उस काल वाली युगीन परिस्थिति का एक सर्वेक्षण प्रस्तुत किया गया है जिसके परिप्रेक्ष्य में उन्होंने न केवल अपना जन्म ग्रहण किया था अपितु जिसमें रह कर उन्होंने अपना सारा कार्य भी सम्पन्न किया था। यहां पर उनके 'वागड़ देश' का भौगोलिक परिचय दिया गया है उनके आविर्भाव-काल की राजनीतिक स्थिति का दिग्दर्शन करा दिया गया है तथा इसके साथ ही, उन तत्कालीन सामाजिक एवं धार्मिक परिवेशों का भी एक चित्र उपस्थित कर दिया गया है जिनकी वस्तुस्थिति की ओर ध्यान देते हुए, उन्होंने उनमें समुचित सुधार लाने का प्रयास किया था। उस समय वाले जन समाज का स्वरूप कैसा था, उसकी नैतिक दशा कैसी थी तथा किस प्रकार के धार्मिक जीवन को उन दिनों महत्त्व दिया जा रहा था अथवा इन सारी बातों के फलस्वरूप, उस काल के लोग कहां तक पतनशील बनते जा रहे थे, इस बात का सूक्ष्म निरीक्षण कर लेने पर ही, उन्होंने उसके सुधार हेतु अपना कर्तव्य निर्धारित किया था। हमने इसका न्यूनाधिक उल्लेख, इसके पहले ही कर दिया है और यहां पर हम केवल इतना ही कह देना है कि इस पुस्तक के विद्वान लेखक ने यहां पर इस प्रसंग

की विवेचना बड़े ही अच्छे ढग से की है तथा उसे इस प्रकार हमारे सामने रखा है, जिससे हम जाम्भोजी के द्वारा निश्चित किये जाने वाले आदर्श तथा उसकी उपलब्धि के लिए नियोजित भावी कार्यक्रम की एक रूपरेखा भी समझ पड़ने लगे।

पुस्तक के चतुर्थ अध्याय में जाम्भोजी के जीवन-वृत्त की चर्चा की गई है और इसका परिचय देते समय भरसक उन्हें ऐसे ऐतिहासिक परिपेक्ष्य में ही दिखलाने का प्रयत्न किया गया है, जिसे आजकल की दृष्टि से यथासम्भव विश्वसनीय ठहराया जा सके तथा जिसके प्रति कम से कम आपत्ति की गुजायश भी पायी जा सके। यह साधारणत देखा जाता है कि जाम्भोजी जैसे धार्मिक महापुरुषों के जीवन वाली विविध घटनाओं का उल्लेख करते समय, उनके जीवनी-लेखक उनके सम्बन्ध में प्रचलित अनेक चमत्कारों वाली किम्वदन्तियों का वर्णन किये बिना नहीं रह पाते। प्रस्तुत पुस्तक की यह एक विशेषता जान पड़ती है कि यहां पर, जाम्भोजी के जीवन-वृत्त का परिचय देते समय—इसके लिए प्राय सदा केवल विष्णोई लेखकों की ही रचनाओं से सहायता ली गई दीख पड़ती है किन्तु ऐसा करते समय भी, उन चमत्कारपूर्ण घटनाओं के उल्लेख का लोभ संवरण करने की ही चेष्टा की गई है, जिनसे वे आधार ग्रन्थ अधिकतर भरे पाये जाते हैं। उनकी ओर कहीं-कहीं संकेत अवश्य कर दिया गया है किन्तु इसके साथ ही कभी-कभी, उनमें से कुछ के निरसन का भी प्रयास किया गया है। हा, इस सम्बन्ध में हमारा ध्यान, एक अन्य बात की ओर भी गये बिना नहीं रहता और वह जाम्भोजी एवं जसनाथजी के मिलन-प्रसग की है जिसका वर्णन जसनाथी सम्प्रदाय वाले साहित्य के अन्तर्गत कहीं कहीं बड़े विस्तार के साथ किया गया पाया जाता है। ये दोनों ही महापुरुष समकालीन थे तथा इनके निवास स्थान भी एक दूसरे से बहुत अधिक दूर न थे, जिस कारण इन दोनों के बीच कभी न कभी, भेंट हो जाने की बात प्राय असम्भव नहीं कहला सकती थी। इसके अतिरिक्त, जसनाथी सिद्ध रामनाथ ने इस प्रकार की घटना का वर्णन स्पष्ट शब्दों में किया है तथा वहां इसका परिचय देते समय दोनों के पारस्परिक सवाद की चर्चा तक भी दी गई मिलती है, जिसे देखते हुए इसका कोई न कोई समीक्षात्मक निराकरण कर देना आवश्यक था, परन्तु जहां तक हमें जान पड़ता है, इस विषय की ओर यहां पर कोई संकेत नहीं किया गया है।

इस पुस्तक वाले पंचम अध्याय के अन्तर्गत संत जाम्भोजी के दर्शन एवं अध्यात्म का विवेचन किया गया है। इसके लेखक ने, ऐसा करते समय अपने प्रत्येक कथन के लिए, किसी न किसी उपयुक्त आधार की ओर भी हमारा ध्यान आकृष्ट किया है तथा इस सबध में उस महापुरुष की उपलब्ध 'सबदवाणी' की पंक्तियों का हवाला तक भी दिया है। यहां पर न केवल उनकी प्रमुख विचारधारा तथा उनकी दृष्टि में उसके लिए सर्वथा उपयुक्त पाई जाने वाली साधना विशेष का ही उल्लेख किया गया है, अपितु कतिपय उन बातों का भी प्रसग लिया गया है जो उनके द्वारा प्रवर्तित विष्णोई सम्प्रदाय के अन्तर्गत, साम्प्रदायिक दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण मानी जाती हैं। इसके सिवाय, इसी प्रसग में यहां पर उन कई 'पाखडों' की जाम्भोजी द्वारा की गई आलोचना का भी परिचय करा दिया गया है, जो

उस काल में प्रचलित योग पंथ इस्लाम-धर्म एवं हिन्दू धर्म के भीतर आ गये थे तथा जिनके ऊपर, समय समय पर, संत कबीर जैसे कुछ धार्मिक महापुरुष भी, उसके पहले से ही, प्रहार करते आ रहे थे। जाम्भोजी ने भी अधिकतर उन्हीं की आलोचना शैली अपनायी तथा ऐसा करते समय, इन्होंने भी बहुत स्पष्ट शब्दों के प्रयोग किये।

पुस्तक का षष्ठ अध्याय, कदाचित सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण समझा जा सकता है क्योंकि इसी के अन्तर्गत उपलब्ध 'जम्भवाणी' संगृहीत की गई है तथा उसके पाठों से सम्बन्धित विषयों पर प्रकाश भी डाला गया है। इसके लेखक ने उसका संपादन करने से पूर्व उन कई प्रतियों की बहिरंग परीक्षा की है जो उसे विभिन्न स्थानों से मिल सकी हैं तथा जिन्हें उसने अपने विचार से अधिक विश्वसनीय एवं प्रामाणिक माना है। उसने उनमें से केवल ७ को चुनते हुए शेष ४१ के लिए कहा है कि ये भी सम्भवतः उन्हीं की 'शाखा' वाली ठहरायी जा सकती हैं तथा फिर उन्हीं की उसने अन्तरंग परीक्षा भी विस्तार के साथ की है। इसके सिवाय उसने उनके प्रतिलिपि-सम्बन्ध की चर्चा की है, तथा सबद प्रतीकानुसार' उनकी एक संख्या सूची भी दे दी है जिससे सारा चित्र सम्यक रूप से सामने आ जाता है। अन्त में अपने सम्पादन-सिद्धान्तों की एक संक्षिप्त रूपरेखा तथा कतिपय अपवादों का भी उल्लेख करके, उक्त 'पाठ संपादन-भूमिका' समाप्त की है, और इसके आगे उन १२३ बानियों का पाठ प्रकाशित किया गया है जो वास्तव में जाम्भोजी द्वारा रचित मानी जानी योग्य समझी गई हैं तथा उनमें पाये जाने वाले प्रमुख पाठभेदों की ओर संकेत कर देने के उद्देश्य से, उनके नीचे आवश्यक टिप्पणियाँ भी जोड़ दी गई हैं, जिससे यह सारा कार्य सुचारु रूप से सम्पन्न किया गया कहला सकता है और इसके लिए पुस्तक का लेखक हार्दिक बधाई का पात्र है। जम्भवाणी' वाले प्रस्तुत पाठ को देखने से पता चलता है कि यहाँ पर एकाध ऐसे 'सबद' अथवा उनकी पंक्तियों का समावेश हो गया है जिन्हें हम अन्यत्र दूसरे कवियों की भी रचनाओं में संगृहीत पा सकते हैं। इसके संपादक ने इस बात की ओर भी संकेत कर दिए हैं तथा कम से कम नाथों की कतिपय बानियों के साथ, वैसे स्थलों की तुलना भी की है।

इस पुस्तक के सप्तम अध्याय में 'विश्णोई सम्प्रदाय' का शीर्षक देकर उसका विवरण दिया गया है। इसके अन्तर्गत जाम्भोजी के विशिष्ट व्यक्तित्व, उनकी सबदवाणी, उसके छन्द विशेष, आदि के विषय में चर्चा की गई है, तथा 'साखी' एवं 'हरजस' में पाये जाने वाले अन्तर का उल्लेख करते हुए ऐसी अन्य जाम्भोजी की (जाम्भाणी) रचनाओं के विषय में भी कुछ विचार प्रकट किये गये हैं जिनकी ओर समुचित ध्यान दिया जा सकता है। इस अध्याय के पाँचवें प्रकरण अर्थात् 'सम्प्रदाय का स्वरूप' नामक उप शीर्षक से आगे जाम्भोजी द्वारा प्रवर्तित सम्प्रदाय की विस्तृत चर्चा का आरम्भ किया गया है और इसमें उसके क्रमिक विकास एवं वर्तमान रूप का एक दिग्दर्शन भी करा दिया गया है। इसमें उसके विभिन्न नाम और उसके 'विष्णोई' वा विश्नोई' नाम के 'मूल कारण' पर भी अच्छा प्रकाश डाला गया है तथा इसके अतिरिक्त, यहाँ पर उन विशिष्ट कार्यों की ओर भी हमारा

ध्यान आकृष्ट कर लिया गया है जिसके लिए वील्होजी एवं केसोजी जैसे प्रमुख विश्नोई कवियों को बराबर श्रेय दिया जाता आया है। इसी प्रकार इस अध्याय के ... भाग में, सम्प्रदाय की मान्यताएँ, उसके पवित्र स्थान, उसके मन्दिर, उसके मेले त्योहार और उसके ... ग्रन्थ २९ नियमों आदि का भी परिचय दिया गया है तथा इसके अनन्तर उसके ... वर्तमान उसके प्रभाव को प्रकट करने की भी चेष्टा की गई है। इस अध्याय के ... विवरण अत्यन्त रोचक जान पड़ते हैं और उनके आधार पर ऐसा अनुमान भी किया जा सकता है कि जाम्भोजी तथा उनके उक्त सम्प्रदाय का ... भी कुछ कम महत्व न होगा।

'विश्नोई साहित्य' का योगदान तो इस ग्रन्थ में और भी अधिक उल्लेखनीय ठहराया जा सकता है जिसके विषय में, इस पुस्तक भाग ... के छठे एवं सप्तम के भीतर, कुछ विस्तृत वर्णन किया गया है। अष्टम अध्याय में १ ६ विश्नोई साहित्यकारों तथा उनकी रचनाओं का परिचय और विवरण दिया गया है जिनमें से कुछ के सम्बन्ध में कोई स्पष्ट संकेत न मिलने के कारण, उन्हें 'अज्ञात' कहा गया है। इन उक्त कवियों एवं लेखकों में से कई लोग ऐसे हैं जिन्होंने विस्तृत साहित्य की रचना की है तथा जिनके विषय में कहा जा सकता है कि वे कतिपय प्रसिद्ध साहित्यकारों में भी स्थान पाने योग्य रहे होंगे। उनके द्वारा रचे गये ग्रन्थों के विविध विषय, उनकी रचना शैली एवं काव्य रूपों के ऊपर एक साधारण सी दृष्टि डालने पर भी हम इस बात का पता चलते देर नहीं लगती कि ऐसे क्षेत्र में उनमें से कुछ की योग्यता बहुत अच्छी रही होगी तथा वे कलाकार तक भी कहला सकते होंगे और इसके आधार पर, हम इस बात की आवश्यकता का भी अनुभव होने लग जाता है कि उन्हें शीघ्र प्रकाश में लाना चाहिए। ऐसे लोगों में विल्होजी उर्फ ऊदोजी नण (संवत १५०५ ९४), मेहोजी गोदारा (संवत् १५४० १६०१) वील्होजी (संवत १५८९ १६७३) केसोजी गोदारा (संवत १६३० १७३६) सुरजनदासजी पूनिया (संवत १६४० १७४८) तथा हरजी वणियाळ (संवत १७४५ १८३५) जैसे साहित्यकारों के नाम लिए जा सकते हैं जिन्होंने कुछ उल्लेखनीय रचनाओं का निर्माण किया है। इनके विषय में दिये गये परिचयों के द्वारा जान पड़ता है कि इनका कार्य अपनी ओर विशेष लोकप्रिय भी रहा होगा। यों तो यदि देखा जाय, तो कुछ अन्य ऐसे लोग भी मिल सकते हैं जिनकी कृतियों को अपने अपने ढंग से बहुत कुछ महत्त्व प्रदान किया जा सकता है तथा वे उपयोगी भी सिद्ध की जा सकती हैं।

इस सम्बन्ध में यहाँ पर यह भी ध्यान देने योग्य है कि पुस्तक के अष्टम अध्याय में दो चार ऐसे साहित्यकारों की भी चर्चा आ गयी पाई जाती है जिनके नाम-साम्य के आधार पर कुछ भ्रान्ति भी उत्पन्न हो सकती है। उदाहरण के लिए इसके अन्तर्गत किसी वाजिदजी (संवत १५३० १६००) का परिचय आया है जिन्हें हम उन प्रसिद्ध दादूपंथी वाजिन्दजी से अभिन्न ठहराने लग सकते हैं जिनकी गणना संत दादूदयाल के १५२ शिष्यों में की गई मिलता है तथा इसी प्रकार यहाँ किसी रदास धत्तरवाळ (संवत् १५३० १६००) का भी वर्णन किया गया मिलता है जिन्हें प्रसिद्ध संत रैदास मान लेने की प्रवृत्ति होती है। लेखक ने इन दोनों के विषय में लिखते समय, इन्हें उक्त नाम साम्य वालों से भिन्न बतला

दने का प्रयत्न किया है किन्तु जब तक इनकी सारी रचनाएँ प्रकाश मे नही आ जाती और ऐसे नामो वाले इनसे भिन्न कवियो की उपलब्ध रचनाओ के साथ, उनकी ठीक ठीक तुलना नही कर ली जाती तब तक अतिम निर्णय नही हो सकता। अभी कुछ दिनो पूर्व जिस समय श्री मगलदासजी स्वामी द्वारा सम्पादित 'श्री महाराज हरिदासजी की वाणी' का प्रकाशन हुआ था, और उसके उत्तर भाग म, परिचित कराये गये निरजनी सत कवियो म से, पीपादास का भी उल्लेख किया गया था, उन दिनो इस प्रश्न के ऊपर एक विवाद भी खड़ा हो गया कि क्या यह कवि प्रसिद्ध सत पीपाजी से कहीं अभिन्न तो नही ठहराया जा सकता ? तथा कभी कभी किसी एक रचना मे वस नाम के आ जाने के कारण, उसके विषय म यह समस्या उठायी जाने लगी कि वह, उनमें से किस की कही जा सकती है, जिसका समाधान कदाचित अभी तक नहा हो पाया है। अतएव, ऐसे नाम साम्य वाले कवियो के सम्बन्ध में कुछ निश्चय कर पाने के लिए, उनकी विशेषताओ का पता लगा लेना भी उचित होगा।

इस पुस्तक वाले अन्तिम अर्थात् नवम अध्याय के अन्तर्गत विष्णोई-साहित्य के महत्व उसकी देन तथा उसके मूल्याकन का प्रयास किया गया है और, ऐसा करते समय सर्व प्रथम, राजस्थानी-साहित्य की उन विशिष्ट प्रवृत्तियो एव रचना शैलियो के ऊपर विचार किया गया है, जो उस क्षेत्र म, जाम्भोजी के आविर्भाव काल के पहले से ही पायी जाती आ रही थी और उन्हे यहा पर उनके विभिन्न नामो के अनुसार निर्दिष्ट भी किया गया है। इसके लेखक की अपनी मान्यता यह जान पड़ती है कि जिस प्रवृत्ति विशेष का पता हम जाम्भोजी की उपलब्ध रचनाओ म चलता है तथा जिस रचना शैली का उनके द्वारा प्रयोग मे लाया जाना कहा जा सकता है, उनके आधार पर निर्मित किये गये साहित्य के विषय मे हम किसी एक नवीन प्रकार की काव्य धारा की भी कल्पना कर सकते हैं। लेखक ने उसका 'सिद्ध काव्य धारा' जैसा नामकरण किया है तथा उसका अनुमान है कि इसके कारण राजस्थानी साहित्य के इतिहास मे, एक नया मोड आ गया दीखता है और वह, सर्वप्रथम, जाम्भोजी की रचनाओ म ही स्पष्ट होता है। लेखक ने ऐसे नाम की सार्थकता प्रतिपादित करते हुए हमे बतलाया है कि इसका एक लक्षण ऐसी किसी अभिव्यक्ति में मिल सकता है जो सिद्ध विशेष के साथ सम्बन्धित हो और वह यहा अध्यात्म के क्षेत्र म पायी जाती है जो सर्वथा नवीन है। इसके सिवाय यहा पर इस बात की ओर भी हमारा ध्यान दिलाया गया है कि जाम्भोजी, उनके अनुयायी तथा स्वय जसनाथजी भी उन दिनो सिद्ध कहे जाते रहे जिस कारण उनकी रचनाओ को भी 'सिद्ध काव्य' ही कहना चाहिए। इस प्रकार, जहा तक राजस्थानी साहित्य के इतिहास की चर्चा का सम्बन्ध है, उस दशा मे, इस पर कोई आपत्ति नही की जा सकती।

परन्तु इस प्रकार की धारणा को उक्त सीमा के बाहर की भी दृष्टि से प्रश्रय देने लगने पर यह प्रश्न भी उठाया जा सकता है कि 'क्या तब हम सत जाम्भोजी की वाणी को किसी ऐसी कोटि विशेष मे रख सकते हैं जो सत कबीरादि की रचनाओ के विचार से कुछ सीमित, अथवा उक्त प्रकार से किंचित विलक्षण सी भी कही जा सकती है ? इसके अतिरिक्त, 'आचार विचार प्रधान कर्ममय जीवन' क्या सत कबीरादि के भी साहित्य की आधारभूमि

नहीं ठहराया जा सकता ?" यह एक अन्य भी ऐसा प्रश्न है जिसका समाधान होता साधार णत उक्त प्रकार की धारणा के बल पर सम्भव नहीं प्रतीत होता तथा कभी दशा म 'सत' एव 'सिद्ध' शब्दों के अर्थ की आपेक्षिक व्यापकता भी बाधा उपस्थित कर सकती है। वास्तव मे इस प्रकार की धारणा बनाने की आवश्यकता हम केवल तभी जान पडती है जब हम सत कबीरादि को किसी निर्गुणिया मात्र के नाम विशेष द्वारा अभिहित करने लग जाते है तथा इस प्रकार, हम जाम्भोजी जसे कतिपय सत जो प्रत्यक्षत सगुणवादपरक बातें भी करते देख पडते हैं, उनसे बहुत कुछ भिन्न से लगने लगते है। यदि हम ऐसा न करके सत काव्य की उस विशिष्ट धारा की ओर भी ध्यान दें जो कभी महाराष्ट्र की ओर ज्ञानेश्वरादि सतो के युग मे प्रवाहित हो रही थी तथा जिसका प्रमुख स्वर किसी परात्पर परमात्म तत्त्व के साथ सलग्न रहने के कारण उसे केवल निर्गुण अथवा सगुण पक्ष मात्र ही नहीं कहा जा सकता था, तो हमारी उक्त भ्रांति दूर हो जा सके। हम तो ऐसा लगता है कि वस्तुत उक्त प्रकार की प्रवृत्ति ही पीछे, उत्तरी भारत वाले सतो तक की रचनाओं के अन्तर्गत भी लक्षित होती आई तथा सत कबीर की वाणी म उसके, निर्गुण पक्ष की ओर, अपेक्षाकृत कुछ अधिक उन्मुख प्रतीत होने के कारण उन्हे 'निर्गुणवादी' मात्र समझ लिया गया, जो कदाचित उनके प्रति अन्याय भी कहा जा सकता है। ऐसी दशा मे 'तथ्य' यह हो सकता है कि मूलत एक ही सत काव्य मे एक ओर जहा सत कबीर, सत दादू, सत गुरु नानक जसे कई सत कवियो की रचनाओं का समावेश किया जाता है जिनमे निर्गुणवादी स्वर कुछ अधिक मुख रित प्रतीत होता है, वहा दूसरी ओर, उसमे सत जाम्भोजी, सत हरिदास निरजनी मन साहेराम एव सत चरणदास जसे अनेक सत कवियो वाली कृतिया को भी समान भाव के साथ, उचित स्थान दिया जाता है। इस दूसरे वग वाले सत कवि भी उसी परम तत्त्व को ही लक्ष्य करके अपनी रचनाएँ प्रस्तुत करते हैं, किन्तु इनके यहाँ निर्गुण पक्ष अथवा सगुण पक्ष म से किसी ओर भी अपेक्षाकृत अधिक झुकाव नहीं जान पडता। इस बात की ओर समुचित ध्यान न दे सकने के ही कारण सम्भवत स्व० डा० बडथ्वाल को इस प्रकार अनुमान करना पडा था कि, यदि हरिदास निरजनी की जसी रचनाओं का पूरा पता चल सके, तो हम इनके आधार पर नाथपथियो तथा सतो के बीच की किसी एक ऐसी कडी विशेष का भी परिचय पा सकते हैं जिसमे निर्गुण एव सगुण दोनो पक्षो को एक साथ स्थान दिया गया हो (Preface to the Nirgun School of Hindi poetry pp II & III)

जो हो, इतना स्पष्ट है कि 'जाम्भोजी, विष्णोई सम्प्रदाय और साहित्य' नामक प्रस्तुत पुस्तक बडे परिश्रम एव मनोयोग के साथ लिखी गई है तथा इसे एक सर्वथा सुव्यव स्थित रूप दिया गया है। हिन्दी वाले सत साहित्य के गम्भीर अध्ययन की ओर यह एक महत्त्वपूर्ण प्रयास है जो सराहनीय एव अनुकरणीय है। मुझे आशा है कि सत साहित्य के सभी प्रेमियो द्वारा इसका यथेष्ट स्वागत किया जायगा तथा इसे वाङ्मय के भण्डार म इसे एक चिरस्थायी स्थान प्रदान किया जायगा।

—परशुराम चतुर्वेदी

बलिया (उत्तर प्रदेश)
तारीख ३१ १२ ६९

मुखबन्ध

१

जाम्भोजी का जन्म संवत् १५०८ में पीपासर (नागौर राजस्थान) नामक गाव के एक सम्पन्न और प्रतिष्ठित राजपूत परिवार में हुआ था। इनके पिता लोहटजी ऊमट शाखा के पंवार तथा माता हाँसा (अपरनाम-केसर) छापर (बीकानेर राजस्थान) के मोहकमसिंह भाटी की बेटी थी। जाम्भोजी आजन्म ब्रह्मचारी रहे थे। संवत् १५४२ में इन्होंने पीपासर से चार कोस दूर स्थित सम्मराथळ नामक रेत के बहुत बड़े और ऊँचे टीले (धोरे) पर विष्णोई सम्प्रदाय का प्रवर्तन किया और संवत् १५९३ में वे यहीं पर वैकुण्ठवासी हुए थे। जाम्भोजी का भ्रमण व्यापक था किन्तु उनका विशेष कार्यक्षेत्र राजस्थान रहा था। ठेठ मरुभाषा में उन्होंने वाणी-कथन किया था। सम्प्रदाय में जम्भवाणी "सबदवाणी" नाम से प्रसिद्ध है तथा यह अत्यन्त पवित्र, स्वतः और अन्तिम प्रमाण मानी जाती है। विष्णोई सम्प्रदाय उत्तरी भारत के संत सिद्ध सम्प्रदायों में पहला सम्प्रदाय है। विष्णोइयों ने साम्प्रदायिक मान्यताओं और वैचारिक परम्पराओं को एक जीवन पद्धति के रूप में स्वीकार किया है। अतः विष्णोई समाज का सांस्कृतिक धरातल कुछ भिन्न और विशिष्ट है। इस सम्प्रदाय में अनेक महान कवि हुए हैं, जिन्होंने अनेक प्रकार की उत्कृष्ट रचनाएँ साहित्य संसार को प्रदान की हैं। इन रचनाओं की विषयवस्तु का फलक व्यापक रहा है। स्वानुभूति की अभिव्यक्ति के अतिरिक्त, वक्तव्य वस्तु का संचयन सम्प्रदाय, इतिहास, पुराण और लोकाचार क्षेत्रों में विशेष रूप से किया गया है। बहुत सी रचनाएँ रूप, प्रवृत्ति और गुण की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं। उल्लेखनीय है कि साहित्यिक दृष्टि से उत्कृष्ट कोटि की सभी रचनाएँ साम्प्रदायिक और धार्मिक वातावरण एवं आग्रह से सर्वथा मुक्त हैं।

प्रायः सभी रचनाएँ मरुभाषा में हैं कुछ पिंगल और खड़ी बोली में भी हैं। कवियों ने समय विशेष में लोगों में प्रचलित मरुवाणी में भावाभिव्यक्ति की है। इसी प्रकार, मरुप्रदेश में प्रचलित पिंगल (ब्रजभाषा) और खड़ी बोली को अपनाया गया है।

२

हिन्दी और राजस्थानी भाषा, इनके साहित्यों, साहित्यिक प्रवृत्तियों, वैचारिक परम्पराओं, काव्यरूपों तथा सम्प्रदाय, संस्कृति, समाज और इतिहास आदि क्षेत्रों में जाम्भोजी, विष्णोई सम्प्रदाय और उसके साहित्य की बहुत ही महत्त्वपूर्ण और महार्घ्य देन है। स्वतन्त्र रूप में भी राजस्थानी और हिन्दी की प्रमुख काव्यधाराओं के समानान्तर प्रवहमान विष्णोई काव्यधारा और सम्प्रदाय की वैचारिक परम्परा का विशिष्ट स्थान है। राजस्थानी और हिन्दी काव्य तथा राजस्थान और अन्य क्षेत्रों के भी, बहुत से संत सम्प्रदायों की पूर्ववर्ती और परवर्ती अनेक प्रकार की परम्पराओं को सम्यक् रूप में समझने, उनके समुचित मूल्या-

यन करने एव बोलचाल की मरुभाषा के समय विशेष के पान और रूप विकास के लिए, यह साहित्य और सम्प्रदाय, महत्वपूर्ण प्रामाणिक साधन है। साहित्य, चिंतन और संस्कृति के क्षेत्र म इनसे अनेक नई दिशाओं का बोध और संकेत, लुप्त और टूटी हुई कड़ियों का स धान, कतिपय समस्याओं का समाधान और अद्यावधि अनुपलब्ध प्रमाण मिलते हैं। आख्यान काव्य, लोगों की बोली के शुद्धाशुद्ध सप्रमाण प्रयोग विषयक रचनाओं का प्रणयन आदि कतिपय क्षेत्रों म तो इस साहित्य की देन अनुपम है। आख्यान काव्य-परम्परा का सूत्रपात विष्णोई कवियों की रचनाओं से होता है। यहा देशी भाषा म नाटकों का बीज वपन आख्यान काव्यों की मनोभूमि म हुआ है। विष्णोई समाज गतिशील और प्राणवान समाज है। इस सम्प्रदाय, प्रवर्तक की वाणी और साहित्य सम्बन्धी विवचन और प्रामाणिक जानकारी, सांस्कृतिक तथा सामाजिक जीवन के लिए परम उपयोगी है। सिद्ध सन्तों और उनकी वाणी परम्परा म विष्णोई साहित्य, जाम्भोजी और विष्णोई सिद्धों का गौरवपूर्ण स्थान है। प्रस्तुत प्रबन्ध म यथास्थान उपर्युक्त सभी का प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप मे संकेत-उल्लेख किया गया है।

३

अनेक क्षेत्रों म अनेक प्रकार की महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ, देन और वशिष्ट्य होते हुए भी अभी तक जाम्भोजी, विष्णोई सम्प्रदाय और इसके साहित्य का स्थूल रूप से परिचय मात्र भी साहित्य ससार को नहीं है। और तो और, राजस्थानी भाषा और साहित्य पर काय करने वाले विद्वानो के लिए भी यह विषय अद्यावधि सवथा अपरिचित और ओझल ही रहा है। इसके कतिपय प्रधान कारण ये हैं—१-सम्बन्धित सामग्री का प्रकाश म न आना २-यत्किंचित प्रकाशित सामग्री का भी सामान्यत उपलब्ध न होना तथा उनम अध्ययन-स्रोतों का उल्लेख न होने के कारण प्रामाणिकता पर सन्देह ३-पर्याप्त लगन और शोध का अभाव, ४-मूलभूत सामग्री के प्राप्ति स्रोतों विषयक अज्ञता तथा उसकी उपलब्धि म अनेकश कठिनाइयाँ ५-भाषा-दुरुहता ६-पूर्वग्रह और पिष्टपेषण प्रवत्ति ७-चारण, जन और लौकिक साहित्य की ओर विशेष ध्यान फलत इस ओर उपेक्षा भाव, ८-साहित्येतिहास विषयक खण्ड दृष्टिकोण, आदि।

४

विभिन्न गजेटियरों जनगणना, भू-व्यवस्था और प्रशासन सम्बन्धी रिपोर्टों म ही सर्व प्रथम एक विशिष्ट धममत और उसको मानने वाली जाति के रूप म विष्णोई समाज, सम्प्रदाय तथा उसके प्रवर्तक के नाते जाम्भोजी का परिचय दिया जाना आरम्भ हुआ था। स्पष्ट ही उनके मूल म सामाजिक और राजनीतिक दृष्टिकोण प्रधान था। इस परिचय के निद क्षेत्र और समय विशेष म विभिन्न लोगों म प्रचलित बातें और किंवदन्तियाँ इनके लेखकों का आधार रही थीं। राजस्थान के इतिहास विषयक ग्रन्थों म भी इन्हीं आधारों पर एतद्-विषयक नामोल्लेख मात्र किया गया। विष्णोई साहित्य का तो परिचय मात्र भी इनम नहीं मिलता। साहित्य के विद्वानों ने भी इन्हीं आधारों को अपनाया। सम्प्रदाय के व्यक्तियों द्वारा किए गए यत्किंचित कार्यों म साम्प्रदायिक दृष्टिकोण का ही प्राधान्य रहा। यही नहीं,

जाम्भोजी और विश्नोई सम्प्रदाय विषयक मोटी मोटी बातो मे भी इनमे परस्पर मतभेद मिलता है। अपने अपने संस्कार, रुचि और सामयिक वातावरण के अनुसार इन लेखको ने बातें कही हैं जिनमे भावना मुख्य है, तथ्य, प्रमाण और तर्क संगति सर्वथा गौण। यह सामग्री मात्रा यत सुलभ भी नही है। प्रमाण और तर्क संगत विचारणा का अभाव तो उपर्युक्त दोनो ही प्रकार के कार्यों म है। हिन्दी म केवल दो ही उल्लेखनीय ग्रन्थ है जिनम जाम्भोजी और विष्णोई सम्प्रदाय सम्बन्धी उल्लेख मिलता है—(१) आचार्य श्री परशुराम चतुर्वेदी कृत उत्तरी भारत की सन्त परम्परा तथा (२) प्रस्तुत पंक्तियो के लेखक का राजस्थानी भाषा और साहित्य (संवत १५००-१६५०)। इनमे भी विष्णोई कवियो और उनकी रचनाओ का कोई उल्लेख नही है। पर्याप्त सामग्री के अभाव और अप्रामाणिक सामग्री के आधार से लिखे जाने के कारण, इनमे प्राप्त यत्किंचित उल्लेख भी संशोधन की अपेक्षा रखते हैं।

५

यह निस्संकोच कहा जा सकता है कि इस सम्बन्ध मे सभी श्रेणी के परवर्ती लेखको ने, यहा तक कि सन्त साहित्य से किसी न किसी प्रकार सम्बन्धित शोध ग्रन्थ लेखको ने भी अपने पूर्ववर्ती लेखको के कथनो का अन्धानुकरण किया है। फलस्वरूप एतद्विषयक अनेक प्रकार की भूलो की उद्धरणी होती रही। इससे एक ओर जहा शोध ग्रन्थो की गरिमा को आघात पहुँचा है, वहा दूसरी ओर साहित्येतिहास के प्रवाह को समग्रता म न देख सकने की दृष्टि भी धूमिल हुई है। अब तक इनसे केवल इतनी ही जानकारी हो सकी है कि जाम्भोजी मरुप्रदेश म उत्पन्न हुए एक सन्त थे और उन्होने संवत १५४२ म विष्णोई सम्प्रदाय का प्रवर्तन किया था। दूसरे अध्याय के अन्तर्गत दिये गये विभिन्न सन्दर्भो और उनके सार से इस कथन की सच्चाई सिद्ध होगी।

६

अनेक प्रकार की मूलभूत हस्तलिखित सामग्री और प्रमाणो के आधार पर व्यवस्थित रूप मे लिखित प्रस्तुत प्रबन्ध के द्वारा इस अभाव की पूर्ति हो रही है। इसमे न केवल जाम्भोजी, उनके दर्शन, अध्यात्म विषयक विचार और विष्णोई सम्प्रदाय का ही, प्रत्युत सात महत्त्वपूर्ण हस्तलिखित प्रतियो के आधार पर जम्भवाणी का वैज्ञानिक सम्पादन और उसके विशाल साहित्य का भी विवेचन प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तुत प्रबन्ध म अध्ययन के चार विशिष्ट पहलू हैं—१-जाम्भोजी, २-जम्भवाणी, ३-विष्णोई सम्प्रदाय तथा ४-साहित्य। इन सबको समाविष्ट करने कारण, समग्रता में एतद्विषयक प्रामाणिक और वैज्ञानिक अध्ययन प्रस्तुत करने का है, क्योकि चारो ही पहलू अन्योन्याश्रित, परस्पर सम्बद्ध और अखण्ड इकाई के रूप म हैं। इस प्रकार, यह अपने ढग का प्रथम तथा सर्वथा मौलिक कार्य है।

७

एतद्विषयक आधारभूत सामग्री केवल हस्तलिखित रूप मे ही है और वह भी— १-सम्प्रदाय के संकोचशील विभिन्न पीठो (साथरियो और मन्दिरो) और २-अनेक स्थानों के विष्णोई

व्यक्तियों के पास, अस्त-व्यस्त, अनेक इतर रचनाओं के बीच असम्बद्ध और विशृंखल रूप में प्राप्त हुई है। ये सायरियाँ भी मरुप्रदेश में स्थित अनेक छोटे छोटे गाँवों में कुछ दूर, जन शून्य स्थानों में अवस्थित हैं जहाँ आवागमन की विशेष सुविधा नहीं है। दोनों प्रकार के स्रोतों और उनसे सम्बन्धित सामग्री का पता लगाना तथा किसी प्रकार प्राप्त कर अध्ययन करना बहुत कठिन कार्य है। यह कार्य पर्याप्त समय, श्रम, धन, साधन तथा सम्बन्धित व्यक्तियों से निकट परिचय और उनके विश्वास की अपेक्षा रखता है, यह कहने की आवश्यकता नहीं है। इस हेतु राजस्थान, मध्यप्रदेश, पंजाब, हरियाणा और उत्तर प्रदेश क्षेत्रों के अनेक गाँवों की, जहाँ विष्णोइयों की विशेष आबादी है समय समय पर मुझे अनेक बार यात्राएँ करनी पड़ी हैं। मेरे जन्मजात विष्णोई न होने और सम्बन्धित हस्तलिखित सामग्री के प्रति उनके स्वामियों की विशिष्ट धर्म भावना निहित होने के कारण, उसे देखने और अध्ययन करने में अनेकश कठिनाइयों और बाधाओं का सामना करना पड़ा है। फिर, अस्तव्यस्त और अनेक इतर रचनाओं में मिली होने के कारण, सम्बन्धित सामग्री को छाँटने, छँटी हुई को सम्यक रूप से जोड़ने और व्यवस्थित करने में भी बहुत समय लगा। एक स्रोत की समस्त सामग्री एक साथ तो कभी मिल ही नहीं सकी, इसके लिए सतत और अनेक बार प्रयास करने पड़े। फिर, यह भी नहीं कहा जा सकता कि वह सम्पूर्ण उपलब्ध हो ही गई है। यही नहीं ज्यों ज्यों अध्ययन में प्रगति हुई, त्यों त्यों बहुत से हस्तलेखों की तो पुनर्परीक्षा भी करनी पड़ी। इसके उपरान्त ही उनका सम्यक् अध्ययन करना सम्भव हो सका।

८

भविष्य में इस विषय से प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सम्बन्धित किसी प्रकार का कार्य करने वाले शोधार्थी को एक आधारभूमि प्राप्त हो सके इस हेतु इस अध्ययन सामग्री का यथासम्भव व्यवस्थित, पूर्ण किन्तु संक्षिप्त परिचय दिया गया है (–द्रष्टव्य–अध्याय १, अध्ययन-सामग्री)। प्रस्तुत प्रबन्ध के लिए भी ऐसा करना आवश्यक था। यह सामग्री यदि प्रकाशित या अप्रकाशित किन्तु सामान्यत सुलभ अथवा संस्था विशेष में व्यवस्थित रूप में सुरक्षित और सहज सुलभ होती तो इस अध्ययन में अनेक स्थलों पर उसका हवाला देकर ही काम चलाया जा सकता था। किन्तु इस अध्ययन-सामग्री के सम्बन्ध में ऐसी कोई सुविधा न होने से इसके सम्यक परिचय के लिए एक पृथक 'अध्याय' रखना पड़ा, जिसे परिशिष्ट की संज्ञा भी दी जा सकती है। यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि प्रस्तुत अध्ययन विषयक उल्लेख विवेचन तो दूर राजस्थानी साहित्य का मोटे रूप में भी परिचय अभी तक साहित्य संसार को नहीं दिया जा सका है। इस कारण, इस अध्ययन से सम्बन्धित अनेक विचार बिन्दुओं धारणाओं निर्णय निष्कर्षों और बातों के स्पष्टीकरण हेतु सभी स्थलों पर उल्लेख-विवेचन इस दृष्टि से किया गया है कि तद्विषयक सम्यक् और पूर्ण चित्र, समुचित पीठिका सहित सुधीजनों के समक्ष उपस्थित हो सके। विष्णोई काव्य विवेचन में उनके समुचित मूल्यांकन और प्रस्तुत की गई मान्यताओं के प्रमाणस्वरूप सम्बन्धित उद्धरण तथा अद्यावधि सर्वथा अज्ञात नवीन, रचयिता विशेष की सस्वर भिन्नता और प्रादेशिक रंग में रंगी होने

के कारण रचनाओं का सार देना भी आवश्यक था। प्रमाणस्वरूप महत्वपूर्ण हस्तलिखित प्रतियो, ताम्रपत्र, लिखत और पट्टे परवाना आदि के एक सौ बारह चित्र भी दिए जा रहे हैं। शोध की गरिमा, मर्यादा, प्रामाणिकता और विषय के साथ सम्यक् न्याय करने के लिए यह आवश्यक था। इन कारणो से प्रबन्ध आकार में बडा अवश्य लगता है किन्तु मेरी दृष्टि मे इसमे अनावश्यक, परिहार्य और भरती की कोई सामग्री नही है और न ही कही ऐसी कोई चेष्टा की गई है। बडा होने के कारण यह दो भागों म प्रस्तुत किया जा रहा है।

६

सुविधा के लिए प्रस्तुत प्रबन्ध तीन खण्डो मे विभाजित किया गया है जिनम नौ अध्याय हैं। साथ ही उल्लिखित चित्रसूची सहित ग्यारह परिशिष्ट हैं। इनमें, दो खण्डों के प्रथम सात अध्याय तथा प्रथम परिशिष्ट के ११२ चित्र (जाम्भोजी का आदि मे दिया गया चित्र इनके अतिरिक्त है) तो प्रथम भाग म और तीसरे खण्ड के शेष दो अध्याय, १० परिशिष्ट, सदभ ग्रन्थसूची और नामानुक्रमणिका दूसरे भाग मे है। इनकी सूची इस प्रकार है —

पहला भाग खड १ पृष्ठभूमि

अध्याय १–अध्ययन सामग्री

अध्याय २–जाम्भोजी विष्णोई सम्प्रदाय और साहित्य विषयक किया गया अब तक का काय—

१–विष्णोई लेखकों द्वारा किया गया काय

२–इतर लेखकों द्वारा किया गया काय

अध्याय ३–तत्कालीन स्थिति –क– राजनीतिक स्थिति, ख– सामाजिक स्थिति ग–धार्मिक स्थिति

खड २ प्रवतक, वाणी और सम्प्रदाय

अध्याय ४–जाम्भोजी का जीवनवृत्त

अध्याय ५–जाम्भोजी दशन और अध्यात्म

अध्याय ६–जम्भवाणी पाठ सम्पादन— क– भूमिका, ख– सम्पादित पाठ और पाठांतर (१२३ सबद)

अध्याय ७–विष्णोई सम्प्रदाय

परिशिष्ट १ चित्रसूची (कुल चित्र सख्या–११२)।

दूसरा भाग खड ३ साहित्य

अध्याय ८– विष्णोई साहित्य (काल क्रमानुसार १२६ साहित्यकारो तथा उनकी रचनाओं का परिचय और विवेचन)

अध्याय ९– विष्णोई साहित्य महत्त्व दैन और मूल्यांकन

परिशिष्ट २ से ११,– कुल सख्या १०, सन्दभग्रन्थ-सूची तथा नामानुक्रमणिका।

१०

पहले अध्याय मे आधारभूत हस्तलिखित सामग्री का परिचय दिया गया है। इसमे ३८३ हस्तलिखित प्रतियाँ १८ परवाने, ३, विगत, १ ताम्रपत्र, १ रुक्का और ६ लिखत-जुल ४०८ सदर्भ सम्मिलित हैं। इनके अतिरिक्त, जम्भवाणी के सम्पादन मे प्रयुक्त ४ और प्रतियाँ तथा १ ताम्रपत्र (चित्र सख्या ८३) का परिचय यहाँ न देकर सम्बंधित स्थलो पर दिया गया है। उल्लिखित कारणो के अतिरिक्त प्रस्तुत विषय के सदर्भ मे इस सामग्री को इस रूप मे देने के ये कारण भी हैं —१-इनसे विभिन्न रचनाओं के मूल पाठ निर्धारण और सम्पादन मे सहायता मिलती है। २-अनेक कवियो और रचनाओं के काल का पता चलता है— (क)- लिपिकाल से, (ख)- स्वय कवि की लिखावट मे होने से, (ग)-प्रति विशेष मे रचना विशेष के लिपिबद्ध होने से। ३-मुख्यत प्रस्तुत विषय से और गौणत बहुत से इतर कवियों और रचनाओं की महत्त्वपूर्ण जानकारी के लिए। ४-इतिहास के अधेरे और अर्द्ध अधेरे क्षेत्रों पर प्रकाश के लिए। अध्येताओ के लिए इस सूची का महत्त्व स्वय स्पष्ट है। साहित्य ससार को इस सामग्री का परिचय पहली बार इसी प्रबन्ध में मिल रहा है।

११

लगभग सवत १६०० तक की हिन्दी और राजस्थानी (तथा अन्य वतमान देशी भाषाओं की भी) रचनाएँ, हस्तलेखो के रूप मे ही हैं। अनेक गण्यमान्य विद्वानो ने विभिन्न हस्तलिखित प्रतियो (ताडपत्रीय, भोजपत्रीय की गणना भी इसी मे है) के आधार पर अनेक रचनाओं का सकलन-सपादन किया और उनका परिचय दिया है। नवीन, महत्त्वपूर्ण और प्राचीन प्रतियों की उपलब्धि से अनेक ज्ञात सम्पादित रचनाओ मे परिष्कार सशोधन-सुधार किया गया है तथा साथ ही सवथा नवीन रचनाओं की प्राप्ति भी हुई है। इससे निसन्देह इतिहास के क्षेत्र का विस्तार हुआ है। किन्तु हस्तलेखो के अध्ययन मे जरा सी असावधानी और प्रमाद से बहुत बडी हानि होने की सभावना भी रहती है। यह हानि और भी बडी होती है जब किसी प्रतिष्ठित विद्वान अथवा पूव निर्धारित योजनानुसार, सगठित रूप मे या सस्था द्वारा हस्तलेखो के नाम पर, बिना उनका प्रमाण दिए ऐसा काय होता है। इसके तीन उदाहरण पर्याप्त होंगे।

पुरातन प्रबन्ध सग्रह[1] मे मुनि जिनविजयजी ने चन्द के नाम से प्राप्त चार छप्पय दिए हैं, जिनमें से तीन नागरी प्रचारिणी सभा से प्रकाशित पृथ्वीराज रासो मे मिलते हैं। इनके आधार पर मुनिजी रासो को अपभ्रश की रचना मानते हुए, चन्द को महाराजा पृथ्वीराज चौहान का दरबारी कवि सिद्ध करने का प्रयास करते हैं[2]। रासो को हिन्दी के तथाकथित 'आदिकाल' की रचना मानने और चन्द को इस बात का कवि घोषित करने के मूल मे कल्पित अन्य सम्बन्धित कारणों के साथ मुनिजी द्वारा उद्धृत उल्लिखित छन्द और

१-प्रकाशक- सिंघी जैन ज्ञानपीठ कलकत्ता सन १९३६।
२-वही पृ० ९०

उनका वक्तव्य, विशेष रूप से रहे हैं। डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी ने मुनिजी के ही उक्त आधार पर प्रकारान्तर से अपनी बात कुछ विस्तार से कही है[1]। इसी को डॉ० विपिनबिहारी त्रिवेदी ने दोहराया है[2]। इस सम्बन्ध में ध्यातव्य है कि पुरातन प्रबन्ध संग्रह की कथा में पृथ्वीराज का देहान्त संवत् १२४६ में होना बताया गया है और ग्रन्थ के पृष्ठ ८७ पर यही तिथि छपी है, किन्तु जिस हस्तलेख (P संग्रह पत्र १२) के आधार पर जो अंश प्रकाशित हुआ है उसमें पृथ्वीराज का मृत्यु संवत् १४४६ लिखा है, यह 'प्रास्ताविक वक्तव्य' से पूर्व दिए हुए मूल प्रति के फोटो से स्पष्ट है। रचना और प्रति को इस प्रकार, २०० साल (१४४६-१२४६=२००) पुरानी बताने के प्रयास के मूल में क्या कारण रहे हैं, उनकी मीमांसा यहाँ उचित नहीं है। किन्तु इससे भलीभाँति सिद्ध होता है कि इससे 'हिन्दी' के 'आदिकाल', पृथ्वीराज रासो, रासो नामधारी अन्य रचनाओं आदि आदि को वैज्ञानिक ढंग से अध्ययन करने और सम्यक्रूपेण समझने में हिन्दी के छात्रों, शोध-कर्ताओं तथा विद्वानों की मेधा और शक्ति का दुरुपयोग ही हुआ है। इस ओर इंगित भी किया गया है[3] तथा अब तो अनुसन्धान शाला में विद्युत्चालित एपिडाइस्कोप (Epidiascope) नामक यंत्र से देखकर निश्चय किया गया है कि उक्त पी० संज्ञक प्रति बहुत बाद की है और उसकी पुष्पिका का संवत् जाली है[4]।

दूसरा उदाहरण बंगीय हिन्दी परिषद्, कलकत्ता से प्रकाशित मीरा स्मृति ग्रन्थ (प्रकाशन काल संवत् २००६) में छपी मीरा पदावली का है। इसके सम्पादक स्वर्गीय प्रोफेसर ललिताप्रसाद सुकुल ने डाकोर और काशी की जिन प्रतियों के आधार पर पदावली के पाठ देने का उल्लेख किया है, उनका न तो उन्होंने कोई परिचय दिया है और न ही कोई प्रमाण। डॉ० मोतीलाल मेनारिया[5] तथा प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक ने काफी पहले- सुकुलजी के स्वस्थ जीवन काल में ही इन शिथिलताओं का स्पष्ट रूप से उल्लेख किया था, जिनका कोई भी स्पष्टीकरण उन्होंने नहीं किया था। वस्तुतः उनकी सत्ता ही संदिग्ध है। आश्चर्य की बात है कि पदावली की अप्रमाणता सिद्ध हो जाने के बावजूद भी, उसको प्रमुख आधार बना कर, एकांगी दृष्टिकोण से मीरा पर शोध प्रबन्ध भी लिख डाला गया है[6], यही कारण है कि इसके लेखक के मीरा की भाषा विषयक तथा अन्य अनेक निष्कर्ष और मान्यताएँ भ्रामक एवं गलत हैं।

१-हिन्दी साहित्य का आदिकाल, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना, सन् १९५२

२-(क) चन्द वरदायी और उनका काव्य, हिन्दुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद, सन् १९५२।

(ख) रेवातट हिन्दी विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, सन् १९५३

३-डा० भोलाशंकर व्यास, प्राकृत पैंगलम्, भाग २, पृष्ठ ४६-४७, वाराणसी, सन् १९६२

४-द्रष्टव्य-मानस मयूख (त्रैमासिक शोधपत्रिका) वर्ष ३, प्रकाश ३, दिसम्बर, १९६६ (सम्पादकीय कार्यालय- दुर्गाकुण्ड, वाराणसी-५) में डा० वटेकृष्ण का 'पुरातन प्रबन्ध संग्रह के पृथ्वीराज रासो विषयक विवरण की प्रामाणिकता' नामक निबन्ध।

५-राजस्थान का पिंगल साहित्य पृष्ठ ६४ हितैषी पुस्तक भण्डार, उदयपुर, सन १९५२

६-डॉ० प्रभात मीराँबाई, हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर, बम्बई सन् १९६५

तीसरा उदाहरण नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस से प्रकाशित कबीर ग्रन्थावली का है[1]। बताया गया है कि इसका मूल आधार सवत् १५६१ की लिखी हस्तलिखित प्रति है। प्रकाशित पुस्तक में उक्त प्रति के अंतिम पृष्ठ का फोटो दिया गया है। उसमें जो सवत् लिखा हुआ है वह भिन्न हस्तलिपि में है और बाद की लिखावट है। अतः यह प्रति उतनी पुरानी सिद्ध नहीं होती। यद्यपि आचार्य क्षितिमोहन सेन,[2] डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी,[3] डॉ० रामकुमार वर्मा,[4] डॉ० माताप्रसाद गुप्त[5] इस ओर सकेत भी कर चुके हैं तथापि बिना किन्हीं ठोस तर्कों के, उक्त प्रति और उसमें के पाठ को पुराना मानने का आग्रह किया जाता है। अध्ययन की वैज्ञानिक सरणियों में ऐसी बातें बाधक हैं। इसका एक मात्र निर्णय पाठ-सम्पादन के द्वारा ही किया जा सकता है। प्रति विशेष का लिपिकार, भिन्न हाथ की लिखावट, उसमें का परम्परा विशेष का पाठ आदि तथ्यपरक बातें हैं जिनको भावुकता या किसी प्रकार के आग्रह से अन्यथा सिद्ध नहीं किया जा सकता।

सुधी पाठकों के अवलोकनार्थ इस कारण, मैंने विभिन्न महत्त्वपूर्ण हस्तलिखित प्रतियों, पट्टे परवानों आदि के अनेक चित्र दिए हैं। जो कथन या बात कही गई है, उसके प्रमाण स्वरूप उद्धरणों और उनके मूल स्रोतों का हवाला यथास्थान दिया गया है।

१२

प्रस्तुत अध्ययन की पूर्व पीठिका, महत्त्व दिग्दर्शन तथा एतद्विषयक अनेक प्रचलित भ्रान्त धारणाओं के निराकरण स्वरूप, इस विषय पर अब तक किए गए कार्य को बताना आवश्यक था। दूसरे अध्याय में इसका उल्लेख किया गया है। इससे स्पष्ट होगा कि विश्नोई साहित्य का तो नामोल्लेख ही अब तक नहीं हुआ है। जाम्भोजी और सम्प्रदाय सम्बन्धी अधिकांश सूचनाएँ भी गलत हैं।

मेरी समझ में प्रत्येक शोधकर्ता को यह बताना आवश्यक है कि जिस अध्ययन को वह प्रस्तुत कर रहा है उससे सम्बन्धित उससे पूर्व कितना और कैसा कार्य विभिन्न लेखकों द्वारा प्रस्तुत किया जा चुका है तथा उसका अध्ययन किस बिन्दु से आरम्भ होता है। यह अध्याय इस बात को ध्यान में रखकर भी लिखा गया है।

१३

तीसरे अध्याय में जाम्भोजी के समय- विक्रम की सोलहवीं शताब्दी तक, मरुप्रदेश या 'बागड' देश की राजनीतिक, सामाजिक और धार्मिक परिस्थितियों का परिचय दिया गया है। जाम्भोजी ने सामाजिक और धार्मिक क्षेत्र में युगान्तर और क्रान्तिकारी काम किया था। उस समय राजनीति, समाज और धर्म एक प्रकार से अन्योन्याश्रित ही थे। जाम्भोजी

१–सम्पादक–डॉ० श्यामसुन्दर दास, सवत् २००९
२–मिडिएवल मिस्टिसिज्म ऑफ इंडिया, पृष्ठ ८८, लंदन, सन् १९३५
३–कबीर पृष्ठ १९-२०, हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई, सन् १९४७
४–संत कबीर पृष्ठ ६-७, साहित्य भवन (प्राइवेट) लिमिटेड इलाहाबाद, सन् १९५७
५–कबीर-ग्रन्थावली, पृष्ठ २९ ३०, प्रामाणिक प्रकाशन, आगरा, सन् १९६९

के व्यक्तित्व और कृतित्व, सम्प्रदाय प्रवेतन की पीठिका और स्वरूप, चिन्तन और विचारो के पूर्वापर सम्बन्धो को सम्यक् रूपेण जानने-समझने के लिए इनका निदर्शन कराना आवश्यक था। राजनीतिक स्थिति परिचय के लिए अनेक ग्रन्थों का सहारा लिया गया है। सामाजिक और धार्मिक स्थिति का परिचय गौणत अनेक इतर रचनाओ और विशेषत विष्णोई रचनाओ के सदर्भ से दिया गया है। विष्णोई रचनाओं को विशेष आधार बनाने के कुछ मुख्य कारण ये हैं — १—वे प्रामाणिक रूप मे उपलब्ध हैं। २—वे सम्पूर्ण समाज म सम्पृक्त और तद्युगीन समष्टिगत मानव चेतना का पता देती हैं। ३—उनके रचयिता साधारण जनो मे से—विशेषत खेतिहर वर्ग म से थे और इस कारण उनमें लोकजीवन सहज रूप से मुखरित हुआ है। ४—अनेक रचयिता अन्य धर्म मतो को त्याग कर विष्णोई सम्प्रदाय के अनुयायी हुए थे, उनकी वाणी म दोनो प्रकार के सस्कारो की झलक मिलती है, जो सामूहिक रूप से इन स्थितियो की जानकारी के लिए बहुत उपयोगी है। उल्लेखनीय है कि विष्णोई रचनाओ से मरुप्रदेश मे स्थित और प्रचलित नाथ-पथ सम्बन्धी तो बहुत ही महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है जो अन्यत्र उपलब्ध नही है। इनसे पता चलता है कि नाथ पथ सर्वथा लोक विमुख, सामान्य और सहज जीवन से दूर तथा लोगो मे कौतूहल और भय का प्रतीक बन गया था। जाम्भोजी और विष्णोई सिद्धो ने एक ओर लोक को उनके इस कुप्रभाव से मुक्त किया तथा दूसरी ओर नाथ पथ का शोधन और उसको लोकोन्मुख करने का प्रयास किया था।

१४

वर्तमान म प्रचलित नाथो की अधिकाश वाणियाँ उन नाथो की रचना नही हैं जिनकी वे बताई जाती हैं। ऐसी सामग्री पर किया गया कार्य भी प्रामाणिकता के अभाव मे सर्वथा महत्त्वहीन होगा। यहा प्रसगवश, नाथो के नाम से प्रचलित विभिन्न हिन्दी वाणियो के सम्बन्ध म, प्राप्त नवीन सामग्री के आधार पर, विचारार्थ एक बात कहना चाहता हूँ। ऐसी अधिकाश वाणियो का सकलन-सग्रह पृथ्वीनाथ (देहावसान समय-लगभग सवत १६००) के पश्चात्-विक्रम की सत्रहवीं शताब्दी से आरम्भ हुआ लगता है। अन्य कई कारणों के अतिरिक्त, इसका एक मुख्य कारण अनेक सिद्ध सतों द्वारा हुई नाथो के विरुद्ध प्रतिक्रिया थी जिसके फलस्वरूप, आधार भूमि के रूप म देशभाषा मे नाथ वाणियो का सयोजन और आकलन किया गया। इस प्रतिक्रिया का प्रधान कारण नाथो का सहज जीवन से दूर लोकविमुख होना था। प्रबन्ध म यथास्थान इसका सकेत-उल्लेख किया गया है। एक और रोचक उदाहरण इस सम्बन्ध मे दिया जा सकता है। १८ वी शताब्दी और उसके बाद मे लिपिबद्ध पृथ्वीनाथ की रचनाओ की अनेक हस्तलिखित प्रतियाँ[1] उपलब्ध हुई हैं। इनसे पृथ्वीनाथ की छोटी

१ द्रष्टव्य-अध्ययन और अन्वेषण, नेशनल पब्लिशिंग हाउस दिल्ली, सन् १९६६ में प्रस्तुत लेखक के 'पृथ्वीनाथ और उनकी रचनाएं', नामक निबन्ध मे इनका परिचय तथा प्रो० कृपाशकरजी तिवारी, जयपुर के पास सुरक्षित, सवत १७१० मे लिपिबद्ध, एक हस्तलिखित प्रति, सख्या २०५।

यही २६ रचनाओं का पता चलता है। सभी प्रतियों में रचना विशेष का पाठ प्राप्त पाठ मूल का माना जाना चाहिए। उनके "मुक्ति रहस्य तिथ सकेत जोत ग्रन्थ" में पचास छ" हैं। प्राप्त सभी प्रतियों में ग्रन्थ का पाठ और छ" संख्या समान है। इनमें ४ ५ छ" के अतिरिक्त, यह सारा का सारा ग्रन्थ उसी रूप में गोरखवाणी[1] में 'ज्ञान तिलक' नाम से गोरखनाथ की रचना मानकर छापा गया है (पृष्ठ २०७–२१८ पर)।

पृथ्वीनाथ की अन्य रचनाओं के अनेक छद भी गोरखबानी में गोरख के नाम से मिलते हैं। अन्य अनेक सिद्धो द्वारा रचित छद गोरख के नाम से इसमें प्रकाशित हैं ही, सातवें अध्याय में इनका उल्लेख किया गया है। यही कारण है कि अब गोरखनाथ के दर्शन और साधना विषयक ग्रन्थो में ऐसी सामग्री को आधार न बनाकर उनके नाम से प्रसिद्ध संस्कृत ग्रन्थों का सहारा लिया जाने लगा है[2] जो उचित ही है।

धार्मिक स्थिति के अध्ययनोपरान्त यह पता लगता है कि मध्ययुग के चार प्रसिद्ध वैष्णवाचार्यों के प्रभाव से मरुप्रदेश प्रभावित नहीं हुआ था। दर्शन के क्षेत्र में यहाँ तो शकराचार्य से भी पूर्व प्रचलित उपनिषदों और गीता की विचार धारा ही मान्य रही थी तथा सभी स्मार्त मतानुयायी थे। गलदाश्रु भक्ति, स्वय को अधम पतित और तुच्छ मानने की भावना यहाँ के सिद्ध-सतो और भक्तो की वाणी में नहीं मिलती। डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी के शब्दों में–"कबीरदास की वाणी वह लता है जो योग के क्षेत्र में भक्ति का बीज पड़ने से अकुरित हुई थी"। "कबीर की भक्ति साधना का केन्द्र बिन्दु प्रेमलीला है[3]।" "यह प्रेम ज्ञान द्वारा सीत और श्रद्धा द्वारा अनुगमित था[4]।" इन तथा उल्लिखित बातो से जाम्भोजी और विश्णोई सिद्धों की वाणियो में कबीर आदि की वाणियों से मौलिक भेद है।

१५

चौथे अध्याय में प्रामाणिक हस्तलिखित सामग्री के आधार पर कालक्रमानुसार जाम्भोजी का जीवनवृत्त दिया गया है। अब तक राजस्थानी और हिन्दी साहित्य में जीवनियो को प्रस्तुत करने का कार्य बहुत कुछ एकांगी रहा है। हिन्दी साहित्य में प्राय सभी सिद्ध सतों का जीवनवृत्त अनिर्णीत है। सतो में कबीर पर अपेक्षाकृत अधिक कार्य हुआ है। किन्तु उनके जन्म और स्वर्गवास काल तक का पता भी शोधकर्ता निश्चित रूप से नहीं लगा पाये हैं उनके जीवन की प्रमुख घटनाओ का आकलन तो दूर की बात है। कबीर और अन्य कुछ प्रसिद्ध सतो के जीवनवृत्त विषयक उस सामग्री की ओर ध्यान ही नहीं गया है जो राजस्थान में उपलब्ध है। राजस्थान के अनेक क्षेत्रों में स्थित, विभिन्न धर्मावलम्बियो के मान्य

---

१ सपादक—डा० पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग, सवत २००३
२ अक्षयकुमार बनर्जी फिलॉसफी ऑफ गोरखनाथ, महन्त दिग्विजयनाथ ट्रस्ट, गोरखपुर
३ कबीर, पृष्ठ १५२ १८७, हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, सन १९४७
४ हिन्दी साहित्य की भूमिका, पृष्ठ १०५, हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर बम्बई, सन १९५९

और पवित्र स्थानों में प्राप्त, अनेक हस्तलिखित ग्रन्थियों में अनेक उल्लेख और याददाश्त के लिए रखे पन्ना, वहियों आदि में लिखित अनेक सन्तों के जीवन विषयक महत्वपूर्ण बातें और उनके सन्तों के उल्लेख मिलते हैं। इसी प्रकार, राजस्थानी की अनेक रचनाओं में भी प्रसंगानुसार अनेक संकेत-उल्लेख मिलते हैं, जो इस दिशा में सहायक हो सकते हैं। शनैः शनैः नष्ट होती जा रही इस सामग्री की ओर हमारा ध्यान प्रेरित होना चाहिए। रचयिता विशेष के जीवनवृत्त और काल निर्धारण के बिना साहित्येतिहास-लेखन का कार्य सुकर नहीं हो सकता। कवि का जीवनवृत्त, उसकी क्षेत्रीय सामाजिक पृष्ठभूमि, उसकी कृतियों का विकासक्रम, उसकी चेतना, चिंतन, विचार और दृष्टिकोण का सामूहिक रूप से प्रामाणिक आकलन-सचयन हमारे शोधकार्य और साहित्येतिहास की नींव है। जाम्भोजी के इस जीवनवृत्त में मैंने यथासंभव इसका ध्यान रखा है।

यहाँ मैंने सन्देहास्पद, मुखश्रुति से प्राप्त और अपेक्षाकृत आधुनिक और एकांगी सामग्री से प्राप्त जाम्भोजी विषयक कथनों का कोई उल्लेख नहीं किया है। उदाहरण के लिए, जसलमेर और फलौदी क्षेत्र में जाम्भोजी और प्रसिद्ध पाँच पीरों में से एक-रामदेवजी तँवर के मिलन, दोनों के सवाद और एक दूसरे के प्रति किये गये कार्यों का प्रवाद प्रचलित है। विष्णोई सिद्धों में कवि सुरजनजी (कवि संख्या ६६) ने अपनी दो रचनाओं-कथा औतार की[1] और कथा परसिध[2] में तथा परमानन्दजी वणियाळ (कवि संख्या ८८) ने एक साखी[3] में, बादशाह बाबर और जाम्भोजी के मिलने का उल्लेख किया है। जसनाथी साहित्य में भी इसी प्रकार जाम्भोजी और जसनाथजी की भेंट का उल्लेख मिलता है। किन्तु उल्लिखित कारणों से इन कथनों की प्रामाणिकता संदिग्ध है, अतः इस जीवनवृत्त में इन पर विचार नहीं किया गया है।

१६

पाँचवें अध्याय में स्व-सम्पादित जम्भवाणी (सबदवाणी) के आधार पर जाम्भोजी के दर्शन और अध्यात्म विषयक विचारों को स्पष्ट किया गया है। जाम्भोजी न केवल एक सम्प्रदाय प्रवर्तक ही थे, प्रत्युत वे मरुभाषा में अपने विचार व्यक्त करने वाले दार्शनिक भी थे। सबदवाणी में उनके एतद्विषयक विचार असम्बद्ध और विशृंखल रूप में हैं इन सबको सुनियोजित करके ही कोई विचार शृंखला मिलाई जा सकती है। इस अध्याय में इनसे सम्बन्धित सभी विचार बिन्दुओं का सम्यक्‌रूपेण स्पष्टीकरण करने का प्रयास किया गया है। जाम्भोजी के विचारों का विष्णोई कवियों और तत्कालीन समाज पर गहरा और

---

१ जदि आण बाबर पतिसाह। रतो होय मिल्यो तिण्य राह।
सेष सदो करणाटक माहि। परचा दे वक्साई गाय ॥ १९० ॥

२ जेतला पीर समार जाग लाप लेया मही पाय लाग।
भजियो काढ बाबर भाई, आवियो चय भुर अयाई ॥ ८७ ॥

३ जैसाण रावळ जतसी, अजमेर क्रमसी पुवार।
महमदखा हारणावाँ सेष सदो, इसकदर बाबर पतिसाह ॥ ३ ॥

-यापक प्रभाव पडा था। तत्कालीन एतद्विषयक विचारों को पूर्वापर सम्बन्ध से जानने के लिये भी इस अध्याय का महत्त्व है। इस सम्बन्ध में मेरा नम्र निवेदन है कि संस्कृत के पुराने आचार्यों के दार्शनिक, आध्यात्मिक मतों का पिष्टपेषण कर, उनके आलोक में ही मध्ययुगीन सिद्ध संतों और भक्तों को समझने का प्रयास न किया जाय, प्रत्युत उनकी स्वयं की दार्शनिक, आध्यात्मिक विचारधारा का स्वतन्त्र तथा तुलनात्मक रूप से अध्ययन भी किया जाय। यह समझना गलत है कि संस्कृत ग्रन्थों में निबद्ध दार्शनिक विचारधारा या धाराओं के किसी न किसी प्रकार के सीधे प्रभाव में मध्ययुगीन सिद्धों, संतों और भक्तों ने अपनी रचनाएँ प्रस्तुत की थी। उन्होंने तो समय और क्षेत्र विशेष के विशिष्ट संदर्भ में अपनी बातें कही थी। प्राप्त अनुभवों, अनेक क्षेत्रीय और युगीन परम्पराओं तथा तत्कालीन सामाजिक परिपार्श्व में वे स्वतन्त्रचेता और दार्शनिक भी थे। हमारे अनेक सिद्ध मतों के इस पहलू की गवेषणा अभी बाकी है।

१७

छठे अध्याय में चुनी हुई सात हस्तलिखित प्रतियों के आधार पर जम्भवाणी का वैज्ञानिक सम्पादन किया गया है। इसकी भूमिका में सम्पादन सम्बन्धी समस्त ज्ञातव्य प्रतियों की बहिरंग और विस्तृत रूप से अंतरंग परीक्षा, उनकी प्रतिलिपि परम्परा, सम्पादन सिद्धान्त आदि देकर पश्चात्, सम्पादित पाठ पाठान्तर और महत्त्वपूर्ण रूपान्तर दिये गये हैं। कहा जा चुका है कि जाम्भोजी, उनकी वाणी और विचार अनेक प्रकार से विष्णोई कवियों के प्रेरणा स्रोत, आधार और प्रभावक तत्त्व रहे हैं। तत्कालीन समाज के प्रायः सभी वर्गों के लोग भी इनके प्रकाश में, किसी न किसी रूप में आलोकित हुए हैं। सबदवाणी इनका मूलाधार है। अद्यावधि सबदवाणी का प्रकाशन सम्प्रदाय के विद्वानों ने ही किया है सभी का पाठ रा०गो०पी० या/और म०ब० प्रतियों की परम्परा का है। समय समय पर प्रकाशनकर्ता भी अपनी ओर से सुधार संशोधन करते रहे हैं। वर्ण विपर्यय, विराम चिह्न, शब्द रूप परिवर्तन तथा मुद्रण आदि की अनेक अशुद्धियाँ तो इनमें हैं ही। वाणी के प्रचलित पाठ का आधार मानने के कारण तो अध्येता की कठिनाइयाँ घटने की अपेक्षा बढ़ जाती हैं। इसका पता स्वीकृत पाठ के लिए गये विभिन्न पाठान्तरों से चल सकेगा। ऐसे कार्य में नवीन महत्त्वपूर्ण प्रति प्राप्त होने पर यत्किंचित सुधार-संशोधन की गुंजाइश रहती ही है, अतः अंतिम निर्णय दिया जाना कठिन है। सबदवाणी विषयक निष्ठावान सुप्रसिद्ध विष्णोई सिद्धों के कथनों के आलोक में भी उक्त सम्पादन को मैंने भली भाँति परखा है और मुझे प्रसन्नता है कि इस दृष्टि से भी स्वीकृत पाठ संगत लगता है।

१८

वर्तमान में वैज्ञानिक रूप से सम्पादित रचनाओं की महत्ता दिन पर दिन बढ़ रही है। कृति-विशेष का वैज्ञानिक पाठ-सम्पादन ही वह नींव है जिस पर साहित्यिक भाषा-शास्त्रीय, साहित्येतिहासिक तथा तुलनात्मक अध्ययन अनुशीलन का महल खड़ा होता है। सुधार और वैज्ञानिक रूप से सम्पादित पाठ को आधार न बनाने के कारण, उल्लिखित किसी

भी प्रकार का अध्ययन केवल आंशिक रूप से ही किसी सत्य या तथ्य का उद्घाटन करेगा। यह भी असम्भव नहीं कि कालान्तर में ऐसे अध्ययनों का महत्त्व केवल नाम गिनाने के लिए और ऐतिहासिक दृष्टि से ही रह जाय। राजस्थानी और हिन्दी की अनेक मध्ययुगीन रचनाओं के वर्तमान में प्रचलित पाठों के सम्बन्ध में ये बातें कही जा सकती हैं—( ) अधिकांश में उनकी एक परम्परा का पाठ है, (२) मिश्रित पाठ है, (३) जिस समय रचना-विशेष लिपिबद्ध की गई थी उस समय तक लोकरुचि के अनुसार उसमें पाठ मिश्रण हो गया था, (४) मुखश्रुति से प्राप्त पाठ ही लिपिबद्ध किया गया था। इन चारों प्रकार के दोषों से युक्त पाठ ही अधिकांश में आज चालू हैं। जहाँ तक उत्तरी भारत के सन्तों की वाणियों का सम्बन्ध है, कबीर, नानक और दरिया जैसे दो तीन सन्तों की वाणियों के अतिरिक्त किसी भी मुख्य या गौण सन्त की वाणी का वैज्ञानिक सम्पादन नहीं हुआ है। राजस्थानी और हिन्दी साहित्य के पिछले सैकड़ों वर्षों के अनेक काव्य ग्रन्थों के बारे में भी यही बात कही जा सकती है। जब सिद्ध सन्त विशेष की वाणी का पाठ ही संदिग्ध है तो उस पर किया गया कोई भी कार्य और दिए गए निर्णय निष्कर्ष इन पाठों के अनुपात से संदिग्ध ही रहेंगे। पृथ्वीराज रासो, कबीर, सूर (तीनों के नागरी प्रचारिणी सभा वाले संस्करण), मीराँ आदि पर जो शोध कार्य अद्यावधि किए गए हैं, उनका महत्त्व, बावजूद इसके कि इनके अध्येताओं ने, खूब सूझबूझ निष्ठा और लगन का परिचय दिया है, उनके विषय में आंशिक सत्य ही कहते हैं और कालान्तर में, यह निश्चित है कि उनका महत्त्व केवल ऐतिहासिक रह जायगा। अनेक स्रोतों से प्राप्त विभिन्न प्रकार की सामग्री के आधार पर जब इनका और ऐसे अनेक कवियों का सुसम्पादित वैज्ञानिक पाठ प्रस्तुत किया जायगा, तो इन अध्येताओं के निर्णय और निष्कर्षों की पुनर्परीक्षा आवश्यक होगी।

यह आश्चर्य है कि बहुत से कवियों की रचनाओं के वैज्ञानिक पद्धति पर सुसम्पादित संस्करणों के प्रकाश में आ जाने पर भी हमारे शोधकर्ता उनको आधार न बनाकर, बिना कोई मान्य और तर्कसंगत कारण दिए, उन्हीं संस्करणों के आधार पर शोधकार्य करते हैं, जिनमें उल्लिखित चार प्रकारों में से एक या अधिक या सभी दोष पाये जाते हैं। एम० ए० के पाठ्यक्रम में भी अधिकांशतः ऐसे ही ग्रन्थ निर्धारित हैं। संस्करण विशेष के पाठ की मान्यता या अमान्यता का उत्तर, केवल वैज्ञानिक पाठ सम्पादन ही हो सकता है, उसके लिए कोई अन्य कारण विशेष महत्त्व नहीं रखते। इसका किंचित पता डा० पारसनाथ तिवारी[1] और डा० माताप्रसाद गुप्त द्वारा सम्पादित कबीर ग्रन्थावलियों की भूमिकाओं से लग सकता है। डा० तिवारी का पाठ जहाँ कबीर वाणी का निर्णायक पाठ देने का प्रयास है, वहाँ डा० माताप्रसाद गुप्त का पाठ उन्हीं के शब्दों में-'उसकी एक परम्परा राजस्थानी परम्परा में सर्वाधिक प्राचीन है[2]। कबीर विषयक किसी भी प्रकार के अध्ययन में, एक परम्परा का होने से डा० माताप्रसाद गुप्त द्वारा प्रस्तुत किया गया पाठ मान्य नहीं हो सकता।

१-कबीर ग्रन्थावली, हिन्दी परिषद्, प्रयाग विश्वविद्यालय सन १९६१
२-कबीर ग्रन्थावली, पृष्ठ ३१, प्रामाणिक प्रकाशन, आगरा, सन १९६९

प्रकारान्तर से यह उन्होंने स्वीकार भी किया है। फिर डा० श्यामसुन्दर दास द्वारा सम्पादित कबीर-ग्रन्थावली का पाठ, जो एक परम्परा का ही नहीं अनेक प्रकार के मिश्रणों से भी युक्त है, ऐसे किसी अध्ययन का आधार बन ही कैसे सकता है ? ढोला मारू के अनेक दोहों का इसमें पाया जाना उक्त मिश्रण का बहुत बड़ा प्रमाण है। यह तो केवल एक उदाहरण है।

प्रस्तुत प्रसंग में एक और शिथिलता की ओर ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूँ। वह है—शोध विषयक कठिनाइयों से पलायन वृत्ति, प्राप्त प्रकाशित पाठ विषयक शोधकर्ता की मनमानी और पूर्वग्रह तथा भावुकता। अनेक उदाहरणों में से एक यहां प्रस्तुत है। डा० गोविन्द त्रिगुणायत ने अपने पी-एच० डी० के शोध-ग्रन्थ 'कबीर की विचारधारा'[1] में पृष्ठ ५१ पर लिखा है—'जहां तक बेलवडियर प्रेस के संग्रह ग्रन्थों का सम्बन्ध है, उनकी प्रामाणिकता संदिग्ध कही जा सकती है', विद्वान् लेखक ने इसके तीन कारण भी बताये हैं। किन्तु इसी प्रेस के संग्रह ग्रन्थ उनके डी० लिट० के शोध प्रबन्ध—'हिन्दी की निर्गुण काव्य धारा और उसकी दार्शनिक पृष्ठभूमि'[2] में एकाएक सर्वथा प्रामाणिक बन जाते हैं। उनके शब्दों में—"मेरी भी अपनी धारणा यही है कि संतों की बानियों का यदि कोई प्रामाणिक संस्करण उपलब्ध है तो वे बेलवेडियर प्रेस के ही हैं इसलिए हमने अपने आधार इन्हीं ग्रन्थों को बनाया है" (पृष्ठ ५६)। ऐसे विरोधी वक्तव्यों का कारण स्पष्ट है। कबीर पर कार्य करते समय उस समय में अपेक्षाकृत प्रामाणिक समझी जाने वाली कबीर-ग्रन्थावली मौजूद थी। किन्तु डी० लिट० विषयक कार्य में, इसके अतिरिक्त अन्य अनेक संतों की वाणियों की भी आवश्यकता थी। इनकी वाणियों के हस्तलेखों की खोज दुष्कर कार्य था, अतः जो वाणी जिस संत के नाम से छपी हुई सुलभ हो सकी, उसी को श्रद्धा और भावावेश में प्रामाणिक करने का प्रयास किया गया। इसका कारण केवल उनकी 'धारणा" ही है, किन्तु आज का शोधकर्ता इस 'धारणा' का कारण भी जानना चाहता है। निवेदन है कि इन बातों को गंभीरता से समझने की आवश्यकता है। प्रस्तुत वाणी-सम्पादन के मूल में उसका निर्णायक पाठ देने का प्रयास इन कारणों से भी रहा है।

१९

सातवें अध्याय में विष्णोई सम्प्रदाय का अनेकविध परिचय और स्वरूप विवेचन किया गया है। समग्र विष्णोई साहित्य के अध्ययनोपरान्त तथा प्रचलित परम्पराओं को ध्यान में रखते हुए सभी मान्य विष्णोई स्थानों पर जाकर समझने के पश्चात् ही यह लिखा गया है। इस अध्याय का विशेष महत्व सांस्कृतिक और सामाजिक दृष्टि से है, इसके अतिरिक्त विष्णोई साहित्य को भली भांति समझने में भी इससे पर्याप्त सहायता मिलती है।

विभिन्न सम्प्रदायों, उनके स्वरूपों और उनमें स्वीकृत विशिष्ट धर्म नियमों का तुलनात्मक अध्ययन हमारी सांस्कृतिक विरासत और चिन्तनधारा को स्पष्ट करने में सहायक हो सकते हैं।

१-प्रकाशक—साहित्य निकेतन, कानपुर, संवत् २०१४
२-प्रकाशक—साहित्य निकेतन, कानपुर, सन् १९६१

२०

आठवें अध्याय मे विष्णोई कवियो और साहित्य का विस्तृत परिचय तथा विवेचन प्रस्तुत किया गया है। इसके अन्तर्गत विक्रम की १५-१६ वी शताब्दी से लेकर २० वी शताब्दी तक के, अद्यावधि १२९ अज्ञात कविया और उनकी छोटी-बडी, विभिन्न प्रकार, रूप, रस और विषयो की लगभग पौने तीन सौ रचनाओ का परिचय और विवेचन किया गया है। इनम डेल्हजी, पदम भगत, अल्लूजी और रामलला का यत्किचित पता यद्यपि साहित्य ससार को था तथापि वह आंशिक और अपूर्ण ही था।

इन ज्ञात कवियो और इनकी अज्ञात कृतियो का विवेचन और तत्सबधी अनेक नवीन तथ्यो का उद्घाटन यहा किया गया है। सभी रचयिताओ के परिचयोपरान्त प्रत्येक रचयिता और रचना का महत्त्व-दिग्दर्शन और मूल्याकन किया गया है। इन १२९ रचयिताओ और उनकी रचनाओ सम्बन्धी जो नवीन तथ्य और सामग्री प्रकाश मे आई है सामूहिक रूप से वह राजस्थानी साहित्य के इतिहास को नवीन रूपरेखा प्रदान करेगी। यह काव्य धारा साहित्येतिहास की अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कडी है। साहित्य सम्बन्धी यह प्रस्तुत प्रबन्ध की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है। रचयिताओ और उनकी रचनाओ की खोज, विवेचन, मूल्याकन, महत्त्व-दिग्दर्शन तथा प्रस्तुतीकरण मेरा मौलिक प्रयास है। इनम पदम भगत कृत 'हरजी री व्यावलो और मेहोजी कृत 'रामायण' के, महत्त्वपूर्ण होने के कारण, इनकी विभिन्न प्रतियो मे प्राप्त पाठो के आधार पर, मूल पाठ विषयक निष्कर्ष भी प्रस्तुत किए गए हैं, जो पाठ-सम्पादन के अध्येताओं के लिए महत्त्वपूर्ण सिद्ध होंगे। इनम, मेरी दृष्टि म, डेल्हजी, पदम भगत, ऊदोजी नण, अल्लूजी कविया, आलमजी, मेहोजी, वील्होजी, कसोदासजी गोदारा, सुरजनदासजी पूनिया, गोकलजी, सेवादास, परमानन्दजी वणियाळ, रामलला, ऊदोजी अडीग और साहबरामजी राहड तो अनेक कोणो से, स्वतन्त्र रूप से अध्ययन के विषय हैं। इस अध्याय की महत्ता इसी से स्पष्ट है। प्रत्येक कवि के जीवनवृत्त-निर्धारण मे निम्नलिखित स्रोतो से प्राप्त सामग्री को परीक्षणोपरान्त आधार बनाया गया है —

१—कवि विशेष के निवास स्थान मे परम्परा से प्रचलित मान्यता,

२—अनेक कविया के वशजो और सम्बन्धियो से,

३—महलाणा (जोधपुर), दरीबा (भीलवाडा) के विष्णोई भाटो की बहियों और लिखतो से,

४—विभिन्न साम्प्रदायिक स्थानों और साथरियो के मेलो में एकत्र हुए अनेक क्षेत्रो के लोगो से,

५—विभिन्न विष्णोई क्षेत्र के लोगो से,

६—विष्णोई साधुओ, महन्तों, थापनों और गायणो से,

७—शिलालेखो और भित्तिलेखो से,

८—विभिन्न स्थानो से प्राप्त विष्णोई साहित्येतर हस्तलिखित प्रतियो से,

९—अध्याय १ के अन्तर्गत दी गई अध्ययन-सामग्री से,

१०—विभिन्न लिपिकारों, प्रति विशेष में लिपिबद्ध-रचना विशेष से या विवेचित कवि के सम्बन्ध में कवि-विशेष के कथन से।

२१

साहित्य के इतिहास में अभी तक महान कवियों का विवेचन ही किया गया है और गौण कवियों की उपेक्षा की गई है। वास्तव में गौण कवियों की परम्परा में और उनकी पीठिका पर ही महान कवियों का आविर्भाव होता है, उनका महत्त्व भी इसी कारण है। अतः गौण कवि भी इस दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं। साहित्येतिहास में उनकी उपेक्षा, एक परम्परा विशेष को खण्डित रूप में ही प्रस्तुत करती है। हिन्दी साहित्य के इतिहास में, रामकाव्य-परम्परा में इसके एक मात्र महान कवि तुलसी का ही विवेचन विस्तार से मिलता है। परम्परा है किन्तु कवि प्रमुखतः एक ही है। यह स्थिति इन गौण कवियों की उपेक्षा करने के कारण ही अधिक है।

इस कारण मैंने महान कवियों के साथ गौण कवियों को भी लिया है। अनेक कवि तो उच्च कोटि के कलाकार हैं।

कवि या रचना विशेष से सम्बन्धित एवं क्षेत्र में प्रचलित तथ्यों, घटनाओं, सूचनाओं और विवरणों को मैंने तभी स्वीकार किया है जब ऐसे उल्लेख अनेक अन्य क्षेत्रों में प्रचलित उल्लेखों से तथ्यात्मक दृष्टि से समान पाए गए या मिले हैं। इस स्रोत से प्राप्त सूचनाओं और तथ्यों को मैंने प्रबन्ध में यथास्थान—"प्रसिद्ध है, बताया जाता है, कहा जाता है, ऐसा प्रचलित है" इत्यादि शब्दावली से प्रकट किया है। प्रबन्ध में कई स्थलों पर अनुमान से भी बात कही गई है। इस अनुमान का प्रमुख आधार उपर्युक्त दस स्रोतों के अतिरिक्त, स्वयं कवि का अन्तर्साक्ष्य भी रहा है। मेरा यह दावा नहीं है कि कवियों से सम्बन्धित काल निर्धारण में रद्दोबदल सम्भव नहीं है। उपर्युक्त स्रोतों के अतिरिक्त, तद्विषयक यदि कोई और प्रामाणिक प्राचीन और महत्त्वपूर्ण हस्तलेख प्राप्त हों तो उन पर पुनर्विचार भी सम्भव है।

आठवें अध्याय में जिन साहित्यकारों को विष्णोई कवि माना गया है, उनको ऐसा मानने में मेरा कोई अनुराग, आग्रह, पूर्वग्रह या दुराग्रह नहीं है। अनेक स्रोतों से मुझे जो अनेकविध प्रमाण मिले हैं, उन पर समुचित विचार करने के पश्चात् ही मैंने उनको ऐसा माना है। अध्येताओं को यदि किसी या किन्हीं कवियों के बारे में और अधिक पुष्ट प्रमाण मिलें तो उनको ऐसा नहीं भी माना जा सकता।

२२

नवें अध्याय में राजस्थानी साहित्येतिहास के विशिष्ट सन्दर्भ में विष्णोई साहित्य का महत्त्वांकन और उसका सामूहिक रूप से मूल्यांकन किया गया है। इस विषय में सुधी पाठकों से इस अध्याय के अवलोकन का भी विशेष अनुरोध करता हूँ। ध्यातव्य है कि पृथक् रूप से तो प्रत्येक कवि और रचना का विवेचन और मूल्यांकन 'विष्णोई साहित्य' नामक द्वितीय भाग के अन्तर्गत यथास्थान किया ही गया है, इस अध्याय में तो प्रस्तुत साहित्य

धारा की समग्रता में महत्त्व-निर्धारण, उसकी देन और उसका मूल्यांकन किया गया है। ऐसा करने में मेरा दृष्टिकोण ऐतिहासिक रहा है। ऐतिहासिक पीठिका और पूर्व प्रवहमान काव्य परम्पराओं और प्रवृत्तियों के विशिष्ट सन्दर्भ में प्रत्येक कवि और रचना का विवेचन-मूल्यांकन प्रस्तुत किया गया है। मेरा विश्वास है कि साहित्येतिहास-लेखन में मेरे इस प्रयास से कुछ न कुछ सहायता अवश्य मिलेगी। दोनों भागों में कुल ११ परिशिष्ट दिए गये हैं जो प्रस्तुत अध्ययन से किसी न किसी प्रकार से सम्बन्धित है।

२३

ऐतिहासिक दृष्टि से—(१) उपासक सम्प्रदायों और सिद्ध सन्तों की परम्परा में (२) राजस्थानी साहित्य के इतिहास में तथा (३) यदि राजस्थानी साहित्य को हिन्दी साहित्य का अंग माना जाय, तो हिन्दी साहित्य के इतिहास में प्रस्तुत अध्ययन अनेक दृष्टियों से उसके कतिपय अंधेरे क्षेत्रों को आलोकित करता है।

२४

जहां तक देश के उपासक सम्प्रदायों तथा सिद्ध संत-'परम्परा' का प्रश्न है स्पष्ट है कि इनके अध्ययन में अभिव्यक्ति का माध्यम-भाषा का महत्त्व गौण है। मुख्य बात सम्प्रदायों के स्वरूप तथा अनेक धारा-अन्तर्धाराओं और रूपवाली सिद्ध संत परम्परा की है। यही कारण है कि विद्वानों ने इनसे सम्बन्धित अध्ययनों में प्रान्त, क्षेत्र और भाषा-विशेष का प्रश्न गौण रखकर इनमें निहित अन्तश्चेतना, मूलतत्त्व स्वरूप-स्पष्टीकरण और उनकी सांस्कृतिक देनों का ध्यान रखा है।

प्रस्तुत अध्ययन का इस क्षेत्र में यत्किंचित योगदान है। कितना, क्या और कैसा है, इसका निर्णय तो विद्वान् करेंगे किन्तु इस सम्बन्ध में एक दो-बातों की ओर पाठकों का ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूँ, और मूल प्रबन्ध में इनका थोड़ा-बहुत उल्लेख यथास्थान किया भी गया है। यह स्पष्ट है कि अभी तक अनेक छोटे मोटे उपासक सम्प्रदायों और संतों विषयक हमारी जानकारी बहुत ही कम है और अनेक सिद्ध-संतों के बारे में लोक प्रवादों, अनुश्रुतियों तथा उनकी वाणियों के नाम पर लोक में उनके नाम से प्रसिद्ध और प्रचलित वाणियों का ही सहारा लिया गया है। तथ्यों की अपेक्षा प्रवाद को और वैज्ञानिक दृष्टिकोण की अपेक्षा भावना को अधिक महत्त्व दिया गया है। इसका सोदाहरण स्पष्टीकरण पहले किया जा चुका है। इस अध्ययन के सन्दर्भ में पाठ सम्बन्धी एक अत्यन्त रोचक तथ्य का पता लगा है। अनेक सिद्ध-संतों की वाणी-संग्रह की प्रतियों में, उनके बहुत से लिपिकारों ने यह भी उल्लेख किया है कि लिपिबद्ध की जाने वाली वाणी का प्राप्ति-स्रोत और आधार क्या है? यह बताते समय, उन्होंने जहां विभिन्न प्रतियों से पाठ लेने का उल्लेख किया है वहीं यह भी कहा है कि उनमें की अधिकांश वाणियां उस समय के अनेक साधुओं के मुख से सुनकर उन्होंने लिपिबद्ध की हैं। इस प्रकार, ऐसी प्रतियों में— (१) लिखित और (२) मुखश्रुति से प्राप्त पाठ लिपिबद्ध किया गया मिलता है। अभी तक पाठ सम्पादन के विद्वान प्रति-विशेष को सम्पादन-कार्य में एक आधार बनाते समय मुखश्रुति में इस प्रकार प्राप्त

[illegible] का साक्ष्य पेश नहीं करते थे। नामदेव, कबीर, रैदास, पीपा, [illegible] आदि [illegible] और यहाँ तक कि दादूदयाल आदि प्रसिद्ध सन्तों को भी किसी के [illegible] में [illegible] ही [illegible] रूप से कह सकता है। इन सब ऐसे और सिद्ध सन्तों के [illegible] के [illegible] [illegible] को [illegible] से, [illegible] के [illegible] का भी [illegible]। किसी भी सिद्धान्त पर [illegible] सन्तों के [illegible] [illegible] [illegible] किसी भी प्रकार की [illegible] के [illegible] देने से [illegible] आवश्यक होता कि उनके [illegible] का आधार क्या है? इन सब ऐसे ही सन्तों के [illegible] में प्रचलित पाठ हो यदि शोध के आधार हों, तो [illegible] की ओर [illegible] बात [illegible] में [illegible] का [illegible] करना चाहिए। जब [illegible] [illegible] ही [illegible] की [illegible] हैं तो न तो वे [illegible] का [illegible] ही करते हैं और न [illegible] की प्रमाण पुरस्सर [illegible] का [illegible] हो। [illegible] कबीर [illegible] [illegible] 'कोर्स' या विद्यार्थियों के लिए [illegible] से [illegible] पुस्तकों का [illegible]। [illegible] है, क्योंकि [illegible] उद्देश्य शोध न होकर [illegible] और [illegible] विशेष रूप से होता है।

दूसरी बात यह है कि सिद्ध सन्त परम्परा विशेषतः उत्तर भारत की, के अध्ययन के सम्बन्ध में सामान्यीकरण (generalisation) की प्रवृत्ति अभी तक विशेष रूप से रही है। निश्चय ही इस प्रवृत्ति के मूल में पूर्वग्रह या आग्रह होता है। आधुनिक युग में सामूहिक रूप से सिद्ध सन्तों विषयक अध्ययन के [illegible] में जहाँ तक मुझे ज्ञात है आचार्य क्षिति-मोहन सेन ने सर्व प्रथम मध्ययुगीन धर्म साधना (बंगला, जिसका अनुवाद अंग्रेजी में Medieval Mysticism नाम से हुआ) में अनेक सन्तों के अनेक मतों और उनकी साधना का संक्षेप में एक साथ ही साजपूर्ण विवरण प्रस्तुत किया था। तत्पश्चात् डॉ० पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल (हिन्दी काव्य में निर्गुण सम्प्रदाय) ने [illegible] परम्परा और पद्धति का प्रश्न है, इसी को अपनाया। आचार्य श्री परशुराम चतुर्वेदी ने लगभग इसी पद्धति पर लिखित अपने ग्रन्थ (उत्तरी भारत की सन्त परम्परा) में अपने ढंग से महान योग दिया, उत्तरी भारत के अनेक सन्तों और उनकी परम्परा के सम्बन्ध में यह ग्रन्थ [illegible] समादृत रहा है। डॉ० गोविन्द त्रिगुणायत का शोध प्रबन्ध – निर्गुण सम्प्रदाय की दार्शनिक पृष्ठभूमि इसी ढंग का ग्रन्थ है। ये प्रयास अपने आप में महत्त्वपूर्ण कहे जा सकते हैं और सामूहिक रूप से उत्तरी भारत के सन्तों की वाणियों में व्याप्त अनुभव, साधना और युगीन सांस्कृतिक स्वरूप को भी स्पष्ट करते हैं। किन्तु इन तथा कबीर विषयक ग्रन्थों के अध्ययनोपरान्त सामान्य पाठक की दो धारणाएँ विशेष रूप से बनती हैं —१–कि उत्तरी भारत की सन्त-परम्परा के आद्य सन्त कबीर हैं, २–कि परवर्ती सिद्ध सन्तों ने कबीर और उनकी साधना और विचार-धारा की परम्परा के प्रभाव में अपनी वाणी कही। इसका स्वाभाविक परिणाम यह होता है कि यदि कबीर के व्यक्तित्व और कृतित्व को सम्यक्रूपेण समझ लिया जाय तो बाकी सिद्ध सन्तों के कार्यों, साधना, उद्देश्य और वाणी आदि विषयक अधिक समझने लायक कोई चीज नहीं है। कबीर विषयक विभिन्न अध्ययनों से जहाँ उनका अनेकविध

व्यक्तित्व कृतित्व, स्वरूप विश्लेषण और स्पष्टीकरण हुआ है वहां उपयुक्त धारणा को भी अनजाने ही बढ़ावा मिला है। मेरी समझ में सामान्यीकरण की यह प्रवृत्ति तथा कबीर विषयक उल्लिखित दोनों बातों में केवल आंशिक सच्चाई ही है। विशिष्ट धर्ममत, सम्प्रदाय उसके प्रवर्तक और उसकी वाणियों का पृथक् रूप से किया गया अध्ययन भी उतना ही उपादेय है। वह हमारी विश्रृंखल सांस्कृतिक विरासत, चिंतन प्रवाह और अनेक कोणों से उसकी महत्त्वपूर्ण उपलब्धि और देन का कहीं अधिक संश्लिष्ट चित्र प्रस्तुत कर सकता है, उसमें व्यापकता के स्थान पर गहराई अधिक होती है।

जैसा कि अन्य विद्वानों ने भी कहा है, हिन्दी में उत्तरी भारत की संत परम्परा के आद्य संत नामदेव हैं, कबीर नहीं।[1] यद्यपि नामदेव दक्षिण के थे तथापि उनकी हिन्दी वाणी, तथा परवर्ती काल में उत्तरी भारत में प्रचलित और प्रवहमान उसकी परम्परा का अध्ययन करने पर यह बात प्रमाणित होती है। सिद्ध-संतों की यह परम्परा उत्तरी भारत में दो रूपों में चली। परवर्ती काल में एक के प्रमुख संत कबीर हुए तथा दूसरी के मरु-अंचल में जाम्भोजी। उत्तरी भारत में मोटे रूप से, इस प्रकार सिद्ध-संतों की दो परम्पराएँ समानान्तर रूप से प्रायः कुछ आगे-पीछे चलती रहीं। इनमें जो समानताएँ मिलती हैं उनका प्रधान कारण क्षेत्र-विशेष में कबीर से पूर्व प्रचलित एतद्विषयक विचारधारा को अपने-अपने ढंग से अपनाना है, अथवा समानता है दोनों के अनुभवों की। विद्वानों से मैं इस बात पर अनेक संदर्भों में तटस्थता पूर्वक विचार करने का अनुरोध करता हूँ।

२५

राजस्थानी साहित्येतिहास के संदर्भ में इस काव्यधारा का, जिसे मैं सिद्ध काव्यधारा कहना चाहता हूँ (जसनाथी काव्य के साथ) महत्त्वपूर्ण योगदान है, स्वतन्त्र रूप में तो है ही। इस पूरे साहित्य के प्रकाश में आ जाने पर ही हम राजस्थानी साहित्य के इतिहास में उसका यथायोग्य मूल्यांकन और स्थान निर्धारण सम्यक्रूपेण कर सकेंगे। किन्तु एतद्विषयक प्रस्तुत किए गए परिचय और विवेचन से इसका महत्त्व आंकने में एक सुदृढ़ भूमिका इस प्रबन्ध में मिलती है। ग्रन्थ में यथास्थान मैंने ऐसी सभी सम्बन्धित बातों की ओर सप्रमाण ध्यान दिलाया है। अभी तक राजस्थानी के चारण, जैन और लौकिक साहित्य की चर्चा अपेक्षाकृत अधिक हुई है, अब सिद्ध संतों के साहित्य की भी विशेष रूप से होनी चाहिए। इसके अतिरिक्त सिद्ध काव्य का महत्त्व इन पाँच दृष्टियों से भी है - १ युगयुगीन लोकभाषा के स्वरूप परिचय के लिए, २ लोक और जन-जीवन को समग्रता में समझने के लिए, ३ सामाजिक - धार्मिक चिंताधारा और सांस्कृतिक स्वरूप- निदर्शन के लिए ४ अनेक काव्य परम्पराओं के ज्ञान और उनके पूर्वापर सम्बन्ध - निर्धारण के लिए, ५ अनेक काव्य रूढ़ियों, लोक कथाओं रचनाओं और कवियों विषयक जानकारी के लिए।

२६

इस सम्बन्ध में यह प्रश्न उठना भी स्वाभाविक है कि ऐसे प्रयासों का 'हिन्दी' साहि-

---

१ द्रष्टव्य संत नामदेव की हिन्दी पदावली, पूना विश्वविद्यालय, सन १९६४

त्य के इतिहास में क्या, कहां और कितना महत्व है। यह प्रश्न दो बातों के उत्तर की अपेक्षा रखता है — १ हिंदी और राजस्थानी का सम्बन्ध, २ राजस्थानी साहित्य की विशिष्ट परम्पराओं अर्थात जातीय विशेषताओं की हिंदी साहित्येतिहास में उपलब्धि और प्रवहमानता।

यह बताने की आवश्यकता नहीं है कि 'हिंदी' एकरूप भाषा नहीं है, वह कई बोलियों का समूह है। मध्यदेश के पश्चिमी हिंदी और पूर्वी हिंदी प्रभाग की आठ बोलियों के समुदाय को 'हिंदी' कहा जाता है। बांगरू, खड़ी बोली, ब्रज, कन्नौजी तथा बुन्देली— पश्चिमी हिंदी समुदाय की हैं और अवधी या कोसली, बघेली और छत्तीसगढ़ी - पूर्वी हिंदी की[1]। अतः हिंदी साहित्य का इतिहास उसकी इन बोलियों के साहित्य का इतिहास ही है। भाषाशास्त्रीय दृष्टि से जहां तक राजस्थानी या मरुभाषा और हिंदी का सम्बन्ध है, यह सर्वमान्य है कि दोनों पृथक पृथक भाषाएँ हैं। अतः इनमें लिखित साहित्य भी एक दूसरे से पृथक माना जाना चाहिए। इधर कुछ समय से कतिपय 'उत्साही हिंदीवादी' राजस्थानी भाषा की मान्यता के प्रश्न को लेकर, हिंदी और राजस्थानी (मरुभाषा) विषयक भाषाशास्त्रियों के उक्त सर्वमान्य निर्णय को ताक पर रखकर राजनीति की भाषा और शैली में बात करने लगे हैं। वे मरुभाषा की विभिन्न बोलियों के नाम पर उसकी सत्ता से भी इन्कार करते हैं। वे यह भूल जाते हैं कि बोलियों का अस्तित्व तो मरुभाषा की सत्ता और व्यापकता का निःसंदिग्ध प्रमाण है। मध्ययुग और वर्तमान में भी साहित्य निर्माण के समय यहाँ के साहित्यकार एक केन्द्रीय भाषा की ओर उन्मुख होते थे और होते हैं। उनकी इस केन्द्राभिमुखी प्रवृत्ति से मरुभाषा में आश्चर्यजनक एकरूपता रही है। नागौर और मेड़ता तथा इनके चारों ओर के क्षेत्र की भाषा ही अधिकांशतः कवियों की केन्द्रीय भाषा रही है। राजस्थान के दूर दूर और विभिन्न क्षेत्रों के अनेक कवियों की भाषा में कोई अन्तर नहीं है उनकी रचनाओं को सभी क्षेत्रों के निवासी समझते आए और समझते हैं। इन प्रयासों के मूल में यही केन्द्राभिमुखी प्रवृत्ति है।

'हिंदीवादी' राजस्थान को भी हिंदी भाषाभाषी क्षेत्र मानते हैं जो सर्वथा भ्रामक है। किस प्रान्त या प्रदेश में कौनसी भाषा बोली जाती है इसका निर्णायक तत्त्व क्या है? इसका एकमात्र निर्णायक तत्त्व यहां के किसान, किसानों से सम्बन्धित लोग और स्तर साधारण जन की भाषा है, क्योंकि सर्वाधिक संख्या इन्हीं लोगों की है। कुछ शहरों में रहने वाले कतिपय पढ़े-लिखे लोगों ने यदि किसी न किसी कारणवश 'हिंदी' को अपना लिया है तो इस आधार पर हिंदी यहां के निवासियों की मातृभाषा नहीं हो गई। इसी प्रकार राजनीतिक दृष्टि से व्यापक राष्ट्रीय हितों को ध्यान में रखते हुए और राष्ट्रभाषा के रूप में सम्मानार्थ राजस्थान ने यदि 'हिंदी (खड़ी बोली) को स्वीकार किया है, तो हिंदी यहां के लोगों की मातृभाषा कैसे हो गई? राजस्थानी या मरुभाषा की भाषा के रूप में यथोचित अथवा सत्ता न मानने या एकबारगी अस्वीकार करने के मूल में ऐसे 'हिंदी-

१–डा० सुकुमार सेन भाषा का इतिवृत्त, साहित्य सभा वर्द्धमान

वादियों' की सकुचित, और स्वार्थी मनोवृत्ति प्रतीत होती है। विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में पिछले आठ-दस सालों से हो रही एतद्विषयक यत्किंचित् चर्चा से इस बात की पुष्टि होती है। यहा मैं इस प्रश्न की गहराई में तो नही जाना चाहता किन्तु प्रणतिपूर्वक निवेदन करना चाहता हूँ कि वर्तमान सदर्भों में राजस्थानी भाषा की मान्यता का प्रश्न यहाँ के निवासियो की रोजी-रोटी का प्रश्न है। फिर, यदि स्वतंत्रता का फल, हिन्दी को राष्ट्रभाषा मान लिए जाने के कारण, 'हिन्दी' व्यवहार करने वालों को विशेष रूप से मिला है, तो उसका किंचित् लाभ तो ढाई करोड लोगों को भी मिलना चाहिए, जिनकी मातृभाषा मरुभाषा है। केवल भाषा-शास्त्रीय दृष्टि से ही नहीं, प्रजातन्त्रात्मक शासन प्रणाली में औचित्य के आधार पर भी इतने बडे भूभाग और उसके निवासियो की भाषा को भी उचित महत्त्व, गौरव और सम्मान प्रदान किया जाना चाहिए।

यहाँ राजस्थानी साहित्य की विशालता, विविधता, गुणवत्ता, प्राणवत्ता, महत्त्व आदि तथा पिछले लगभग एक हजार सालो से चली आ रही निर्विच्छिन्न परम्परा का उल्लेख करना अनावश्यक है। सभी विद्वान प्रकारान्तर से इस अतुल और अनुपम साहित्य-सम्पदा पर गर्व अनुभव करते हैं। राजस्थानी प्रत्येक दृष्टि से अत्यन्त समृद्ध और स्वय आत्म-निर्भर है। वह खडी बोली की अबोध बेटी नही, प्रत्युत उसकी बडी बहन है, अब उसने स्वय आत्म-निर्भर होने का निश्चय किया है। फलस्वरूप, यहा खडी बोली सम्बन्ध भाषा के रूप में ही रहे तो अच्छा है। ध्यान में रखना चाहिए कि 'हिन्दी' का हित और राजस्थानी का हित दो विरोधी बातें नही हैं। राजस्थानी का हित अन्ततोगत्वा व्यापक रूप से 'हिन्दी' का ही हित है। अब मैं उल्लिखित दूसरे प्रश्न को लेता हूँ। कतिपय विद्वान भाषाशास्त्रीय दृष्टि से तो राजस्थानी को हिन्दी से पृथक मानते हैं किन्तु राजस्थानी साहित्य को हिन्दी साहित्य के अन्तर्गत लेने की बात करते हैं। इस सम्बन्ध में मुझे दो बात कहनी हैं - राजस्थानी साहित्य की कुछ ऐसी विशेषताएँ हैं जो, हिन्दी' की किसी बोली के साहित्य में उस रूप में उपलब्ध नहीं है, इसके अनेक छन्द भी पृथक् हैं और शब्दावली भी। अर्थात जिन साहित्यिक परम्पराओं और काव्य-रूपों का प्रवाह राजस्थानी साहित्य में हुआ उसका प्राय 'हिन्दी में नही'[1]। इस प्रकार, भाषा, साहित्य, औचित्य-सभी दृष्टियों से राजस्थानी का स्वतन्त्र भाषा के रूप में महत्त्व है।

फिर भी, यदि राजस्थानी साहित्य को हिन्दी साहित्य के अन्तर्गत लेने की बात कही जाती है, तो मैं आज से लगभग दस वर्ष पूर्व इस सम्बन्ध में कहे गए अपने शब्दों को दोहराना ही उचित समझता हूँ - "हिन्दी बनाम राजस्थानी के सम्बन्ध में प्रश्न दो हैं- (१) क्या राजस्थानी साहित्य का मूल्याकन हिन्दी साहित्य के अन्तर्गत किया जाय अथवा (२) अन्य प्रमुख भारतीय आर्यभाषाओं की भाति स्वतंत्र रूप से। पूर्वग्रह को यदि छोड दें, तो सब प्रकार से दूसरी बात ही ठीक है। यदि पुरानी राजस्थानी या जूनी गुजराती के साहि-

१ द्रष्टव्य- लेखक का 'राजस्थानी साहित्य कतिपय विशेषताएँ' नामक निबन्ध, विश्वभारती पत्रिका, शान्ति निकेतन, जुलाई-सितम्बर, सन १९६७

त्य को आदि काल मे विवेचनीय समझा जाय, तो कोई कारण नहीं कि गद्य और पद्य की अनेक रचनाओं म उसके केवल बीसलदेव रास का ही उल्लेख किया जाय। जब सिद्धात रूप म एक बार यह मान लिया गया कि राजस्थानी साहित्य हिन्दी साहित्य के अ तगत विवेचनीय है, तब हि दी साहित्य के इतिहास की दीघ परम्परा म उसका समुचित उल्लेख न करना दुराग्रह की कहा जायगा"[1]।

राजस्थानी का मामला ठीक मैथिली की भाति ही है। मैथिली एक स्वतन्त्र भाषा है किन्तु हिन्दी के तथाकथित आदिकाल की सत्ता बनाए रखने के लिए विद्वान इसी प्रकार, विद्यापति का तो उल्लेख-विवेचन करत हैं किन्तु परवर्ती काल म एक भी मैथिली कवि या रचयिता का नहीं। यह कहना अनावश्यक है कि लगभग सात सौ सालों से रही मैथिली की भी गौरवपूर्ण साहित्य परम्परा है[२]।

हिन्दी साहित्य का इतिहास लेखन अत्यन्त ही कठिन काय है। यहा मैं इस बात मे विस्तार मे नही जाना चाहता कि क्या साहित्य का इतिहास लेखन अपने उचित अथ और सदभ मे सम्भव है भी या नही यहा तो अद्यपयन्त लिखे गए ऐसे ग्रन्थो को ध्यान म रखकर ही बात कह रहा हूँ। इनमे कतिपय ऐसी शिथिलताएँ दृष्टिगोचर होती है जिनके कारण न केवल हिन्दी साहित्य सम्बन्धी ही, प्रत्युत उल्लिखित अनेक ज्वलन्त समस्याओं का सम्यक समाधान और तदविषयक उठे हुए अनेक प्रश्नो का उत्तर नही मिल पाता। कुछ ये हैं— १ हिन्दी की परिभाषा न करना, २ सामान्यीकरण की प्रवत्ति, ३ महान् रचयिताओं का महत्त्व और गौण रचयिताओ की सवथा अपेक्षा ४ तटस्थ वैज्ञानिक दृष्टिकोण का अभाव तथा एकागी खण्डित और मनमाना दृष्टिकोण अपनाना, ५ इतिहास के अनेक अधेरे और अद्ध-अधेरे कोनो की ओर बिल्कुल ही ध्यान न देना, ६ अप्रामाणिक सामग्री को भी आधार बनाना, ७ विशिष्ट सदर्भों मे वाछित क्षेत्रीय परम्पराओ की उपेक्षा आदि।

२७

यह एक शोधप्रबन्ध है। शोध का लक्ष्य सत्यान्वेषण और उसकी प्रामाणिक स्थापना है। इसकी प्रक्रिया मूलत वैज्ञानिक है। ज्ञान क्षेत्र का सीमा विस्तार इसका प्राणतत्त्व है। इसके प्रस्तुत करने म मैंने शोध-तन्त्र की सीमा-मर्यादा और तत्त्वो का भरसक ध्यान रखा है। शोध प्रबन्ध के रूप मे इसके विषय म मेरा कुछ भी कहना अनुचित होगा इसका निर्णय शोधकर्ताओ पर है।

२८

इसम मैने जो मत व्यक्त किए हैं वे सम्यक अध्ययनोपरान्त ही किए गए हैं। जसा कि मैं निवेदन कर चुका हूँ, अपने निर्णय- निष्कर्षों, धारणाओ और विचारो के प्रति मेरा, किसी प्रकार का कोई आग्रह, पूवग्रह या दुराग्रह नहा है अन्यथा महत्त्वपूर्ण प्रमाण मिलने पर उनम परिवतन भी समव है। इस मुख्य ध और प्रब ध म जिन विद्वानो की मान्यताओ

---

१ राजस्थानी भाषा और साहित्य पृष्ठ ३७२, कलकत्ता सन १९६०
२ द्रष्टव्य डॉ० जयकान्त मिश्र ए हिस्ट्री आफ मैथिली लिटरेचर, वाल्यूम १, सन १९४९—तथा २, सन १९६६ तीरभुक्ति पब्लिकेशन्स, इलाहाबाद

और धारणाओं से मैंने असहमति प्रकट की है, उनके प्रति मेरी श्रद्धा और निष्ठा भावना है। इस सम्बन्ध में मैंने सिद्ध कवि परमानन्दजी वणियाळ (कवि संख्या ८८) के इस कथन को सदा ध्यान में रखा है —

आपणपौ न सराहियै, पर निंदिय न कोय।
मात सराहै पूत कूं, लोक न मानै सोय॥

फिर भी यदि कोई अन्यथा ध्वनि निकलती प्रतीत हो, तो उसको मेरी जडता, प्रमाद और अनता समझ कर विद्वान क्षमा करें।

२९

इस अध्ययन का शुभारम्भ संयोगवश हुई एक छोटी सी घटना से है। ९ अगस्त, सन् १९६१ को राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर में मेरी नियुक्ति हुई थी। तब मेरा अनुज चि० सोहनलाल और उसके मित्र श्री ओमप्रकाश गोदारा यहाँ एम० ए० (अर्थशास्त्र) में अध्ययन कर रहे थे। मैं अपने लिए मकान देखने हेतु श्री गोदारा के यहाँ गया। वहाँ सौभाग्य से मेरी भेंट श्री गोदारा के पिताजी श्री सोहनलालजी, अग्रज श्री अमरचन्दजी तथा सवश्री महीरामजी धारणिया, कृष्णचन्द्रजी, राजारामजी और रायमाहव कडवासरा से हुई एवं बात बात में बात जाम्भोजी, विष्णोई सम्प्रदाय और साहित्य पर चल पडी। इस विषय के अध्ययन का सवथा अभाव मेरी भाँति उनको भी बहुत खटक रहा था। इन सब सज्जनों ने मुझे इस अध्ययन की ओर प्रेरित ही नहीं किया, एतद्विषयक सभी प्रकार की सहायता करने का आश्वासन भी दिया। फलस्वरूप मैं इस ओर प्रवृत्त हुआ। पिछले नौ सालों से ये लोग अपना बहुमूल्य समय लगाकर अनेक प्रकार से मेरी सहायता तथा सहयोग प्रदान करते रहे हैं। सवश्री महीरामजी, सोहनलालजी और अमरचन्दजी ने स्वयं अनेक असुविधाओं का सामना कर मुझे सुविधाएँ प्रदान की हैं। इनके सतत सहयोग से ही यह काय इस रूप में सम्पन्न हो सका है। इनका बदला तो मैं किसी प्रकार चुका ही नहीं सकता था किन्तु सवश्री महीरामजी और सोहनलालजी को, अपने हृदय की कृतज्ञता ज्ञापन स्वरूप यह ग्रन्थ समपण कर, कुछ सन्तोष अवश्य अनुभव करना चाहता था। इन्होंने सदा मेरी भावनाओं का ध्यान रखा है किन्तु यह अनुरोध स्वीकार नहीं किया। ऐसी स्थिति में इनके प्रति यहाँ कुछ भी कहना कोई अथ नहीं रखता।

अध्ययन और तदसम्बन्धी भ्रमण में, इन नौ वर्षों में, अनेक व्यक्तियों से मुझे समय-समय पर अनेक प्रकार की सहायता मिली है, उन सबका नामोल्लेख करना यहाँ सम्भव नहीं है। सबसे अधिक मैं उन लोगों का आभारी हूँ जिन्होंने मुझे हस्तलिखित प्रतियाँ आदि दिखाकर अध्ययन का अवसर प्रदान किया। मैंने इस सन्दर्भ में अनेक लोगों से विचार विमर्श किया है। खेद है कि उनमें कई तो इस संसार में नहीं रहे, एसों में मुकाम के सा० गोपालदासजी लालासर के महन्त ननूरामजी, जागलू के महन्त केवलदासजी, पीपासर के साधु उम्मेदरामजी, दुनारावाली के धोकलरामजी का नाम मैं श्रद्धापूर्वक स्मरण करता हूँ। जम्भवाणी के पाठ सम्पादन में सुप्रसिद्ध विद्वान डॉ० माताप्रसादजी गुप्त से मुझे महत्त्वपूर्ण

सुझाव मिले थे। दुःख की बात है कि वे स्वर्गवासी हो चुके हैं। मैं दिवंगत आत्मा को प्रणाम करता हूँ।

रामडावास के महन्त श्री रामनारायणजी ने इस अध्ययन विषयक अनेक तरह से मेरी सहायता की है। इनसे विचार-परामर्श कर मैं बहुत ही लाभान्वित हुआ हूँ। सर्वश्री महन्त रणछोड़दासजी, पीपलदासजी, जाम्भा स्वामी तगारामजी, रणछोड़दासजी, रंगरता, रामप्रकाशजी, चन्द्रप्रकाशजी, सम्भराथल, ब्रह्मानन्दजी, गोगा (महराणा), वीरमरामजी तथा अन्य थापन बन्धु, मुकाम हरिराम गायणा, रामडावास, भागीरथ गायणा, २६ वी जी, (श्री गंगानगर) से भी मुझे सूचनाएँ मिली हैं।

श्री पूनमचन्दजी विष्णोई उपाध्यक्ष, राजस्थान विधान सभा, जयपुर तथा श्री रामनारायणजी, एडवोकेट, जोधपुर ने समय-समय पर इस कार्य में विशेष रुचि लेकर मेरा उत्साह वर्द्धन किया है।

श्रद्धेय डा० सुनीतिकुमार चटर्जी, डॉ० सुकुमार सेन, डा० सत्येन्द्र, डॉ० आनन्दप्रकाश दीक्षित, डॉ० लक्ष्मीधर मालवीय, डा० गोपीनाथ शर्मा, डा० ब्रह्मदत्त शर्मा जसलमेर के श्री हरिदत्त गोविन्द व्यास से मुझे अनेक सुझाव मिले हैं। राजस्थान विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के प्राध्यापक सहयोगियों— विशेषतः विज्ञान संकाय (महाराजा कालेज) के सभी प्राध्यापकों से तो विचार विमर्श करता ही रहा हूँ। सर्वश्री कृपाशंकरजी तिवारी, शम्भुसिंह मनोहर डा० जगदीशचन्द्र जोशी, डॉ० रामकुमार गुप्त, डा० मूलचन्द सेठिया को तो इस सम्बन्ध में मैंने काफी कष्ट दिया है।

मैं इन सबके प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

अनेक विष्णोई बहनों ने मुझे लोकगीत लिखाए और इस सम्बन्ध में सहायता की है, इनमें सब श्रीमती तुलसीदेवी गोदारा परमेश्वरी देवी भादू, चूनी सारण और छोटी गोदारी के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

विभिन्न हस्तलिखित प्रतियों के चित्र आदि लेने में सर्वश्री सुमेरजी माथुर, कंटपालजी और आर० बी० गौतम ने अपना बहुमूल्य समय लगाया है। टोंक के श्री मौलवी मोहम्मद इमरान साहब ने उर्दू फारसी के बहुत से ताम्रपत्र, पट्टे-परवाने आदि पढ़कर उनका हिन्दी रूपान्तर करने में सहायता दी है।

सर्वश्री हरिरामजी बोला रामजसजी जैलदार रामरखजी भादू, रामचन्द्रजी कासड सगीरामजी धारणिया, रजलालजी डेलू, मालारामजी राव, हरीरामजी ढाका बीरबलजी धारणिया, पृथ्वीराजजी कड़वासरा पुर के सोहनलालजी गोदारा, रामचन्द्रजी ठेकेदार ने भी अपना सहयोग प्रदान किया है।

मैं इनको तथा उन सभी विष्णोई बन्धुओं और बहनों को जिनका नामोल्लेख यहाँ नहीं कर पा रहा हूँ उनकी सहायता के लिए हार्दिक धन्यवाद देता हूँ।

मेरे शोध छात्रो-सवश्री भँवरसिंह सामौर, शंकरलाल गुप्त, गोपालसिंह राजावत और ओमप्रकाश ने इस काय हेतु अपना बहुमूल्य समय लगाया है। नामानुक्रमणिका सवश्री राजावत और ओमप्रकाश ने तयार की है। मैं इनके सुखी जीवन की कामना करता हूँ।

सवश्री रतनलालजी पचीसिया, नन्दलालजी राठी, मदनगोपालजी सारडा, हरि प्रसादजी माहेश्वरी, ऊधोदासजी मूँधना, भाई मूलचन्दजी बाहेती ने कलकत्ता, बम्बई, अहमदाबाद, दिल्ली आदि स्थानो से मेरे लिए सन्दभ-ग्रन्थ तत्परता से सुलभ किए हैं। श्रीमती डॉ० सन्तोष मुकुल, एम०बी०बी०एस० और श्री डॉ० रामकुमार गोन्दारा, एम०बी० बी०एस० ने इस दीर्घकाल मे मेरे और परिवार के सभी सदस्यों की शारीरिक व्याधियो के उपचार की ओर से मुझे सवथा निश्चित कर दिया था। सवश्री मुकुलजी, डा० के०सी० गुप्ता, ज्ञानप्रकाशजी पिलानिया और हनुमानप्रसादजी शर्मा सदा प्रोत्साहित करते रहे है। मेरी सुपुत्री चि० वीणा निरन्तर रूप से मेरे अनेक छोटे मोटे काय घर मे करती रही है। इसी प्रकार, कलकत्ता मे चि० राज राठी और चि० अशोक सारडा तथा दिल्ली मे चि० जग मोहन पचीसिया ने मेरी खूब सेवा की है। अपने आत्मीयों और परिजनो को धन्यवाद समपण करने मे मुझे सदा सकोच का अनुभव होता है, जो यहा भी है।

सन्त साहित्य के ममज्ञ आचाय श्री परशुरामजी चतुर्वेदी ने बिना किसी व्यक्तिगत परिचय के, मेरे जरा से अनुरोध पर प्रस्तुत प्रबन्ध की प्रस्तावना लिखकर मुझे गौरवान्वित किया है। अत्यन्त कायव्यस्त रहते हुए भी उन्होंने थोडे समय में ही अपनी सारगर्भित प्रस्तावना लिख भेजी है। इस सम्बन्ध मे वे लिखते हैं (ता० ३१-१२-६६ के पत्र में) —"इसके प्रस्तावना मात्र होने के कारण, मैंने इसे भरसक परिचयात्मक रूप ही दिया है तथा प्रसगवश, कहीं कहीं एकाध बार कुछ सुझाव तक भी दे डाले हैं। आपकी यह पुस्तक बहुत अच्छी है और मेरा आपसे अनुरोध है कि कृपा करके केवल जाम्भोजी वाली रचनाओं का एक पृथक् सस्करण भी आवश्यक शब्दाथ के साथ निकाल दें, जिससे उनका उपयोग अधिक से अधिक पाठकों द्वारा किया जा सके"।

मैं श्री चतुर्वेदीजी के बहुमूल्य सुझावों का हार्दिक स्वागत करता हूँ। ऐसी रचनाओं मे पाँच के सम्पादित सस्करण तयार हैं और शीघ्र ही पाठकों की सेवा मे प्रस्तुत किए जाएँगे, शेष पर काय चालू है। मैं श्री चतुर्वेदीजी के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ।

अनेक मित्रो एव शुभचिंतकों ने पुस्तक की अग्रिम प्रतियाँ खरीद और इस हेतु सहयोग प्रदान कर प्रकाशन काय को बहुत सुलभ बना दिया है। मैं उन सबको हार्दिक धन्यवाद देता हूँ।

प्रबन्ध मे कतिपय राजस्थानी शब्दों का प्रयोग जानबूझ कर ही किया गया है। उपयुक्त अथ और भाव बोध की दृष्टि से उनके पर्यायवाची शब्दों का खडी बोली मे अभाव भी एक मुख्य कारण है।

यदि पाठकों ने इसको कुछ भी उपयोगी समझा, तो मैं अपने श्रम को सार्थक मानूँगा। इस सम्बन्ध में मैं विद्वानों के सुझावों का सदा स्वागत करूँगा। अन्त में जाम्भोजी के शब्दों में यही निवेदन करना चाहता हूँ —

तउवा बाग ज हंसा टोळी, बुगला टोळी भी थागू ॥८७ ३१-३२
तउवा साग ज नागर बेली, कूकर बगरा भी सागू ॥८७ ३५-३६

सी- ९८ ए, मोती मार्ग,
बापूनगर, जयपुर-४
शनिवार, ३१ जनवरी, १९७०

-हीरालाल माहेश्वरी

विषय-सूची

पहला भाग

(खण्ड १ तथा २) पृष्ठ १-४७०

खण्ड १ पृष्ठभूमि पृष्ठ १-२१८

अध्याय १ अध्ययन सामग्री पृष्ठ १-१४२

इसमे निम्नलिखित सामग्री का परिचय दिया गया है

(क) हस्तलिखित प्रतियाँ-३८३

(ख) परवाने	—	१४ (क्रम सख्या ३६१ से ३६५ तथा ३७१ से ३८३)
(ग) विगत	—	३ (क्रम सख्या ३५७, ३५८, ३६०)
(घ) ताम्रपत्र	—	१ (क्रम सख्या ३६६)
(ङ) रुक्का	—	१ (क्रम सख्या ३५५)
(च) लिखित	—	६ (क्रम सख्या ३५२ से ३५४, ३५६, ३८४, ३८५)

कुल योग—४०८

विशेष—इसमे जम्भवाणी के सम्पादन मे प्रयुक्त ७ हस्तलिखित प्रतियो मे से ४—(प्रति जा० रा० गो० और पी०) की गणना नही की गई है।

अध्याय २ जाम्भोजी, विष्णोई सम्प्रदाय और साहित्य सम्बन्धी किया गया अब तक का काय पृष्ठ १४३-१६६

इसका विवेचन—१-विष्णोई लेखको द्वारा किया गया काय १४३-१५४

२-अन्य लेखको द्वारा किया गया काय १५५-१६६

अध्याय ३ तत्कालीन स्थिति पृष्ठ १६७-२१८

(विक्रम १६ वीं शताब्दी तक, मरुप्रदेश के विशेष सन्दर्भ मे)

(क) राजनीतिक स्थिति १६७-१८१

१-राजस्थान नाम— २-जागलू—३-सवालक, माड, मेदपाट—४-वागड, वागड-देश—५-वागड देश मे राजनीतिक उथल-पुथल राठौड—६-जागलू के साखले—७-पूगल के भाटी—८-भटनेर के भाटी—९-वागड देश के जाट, उनका विस्तार—१०-जोहियावाटी के जोहिये—११-मोहिलवाटी के मोहिल—१२-शेखावाटी के कायमखानी—१३-राजस्थान मे मुसलमानो का प्रवेश अजमेर,—१४-मुसलमान और नागौर—१५-

राठोड मंडोर, जोधपुर—१६-राठौडों का विस्तार—१७-मेवाड—१८-जसलमेर के भाटी—१९-आमेर के कछवाहा तथा अन्य राज्य—२०-दिल्ली सयद, लोदी, सूर, मुगल—२१-निष्कर्ष ।

(ख) सामाजिक स्थिति १८१-१९५

१-विभिन्न वर्ग—२-राजवर्ग—३-जाट, खेतिहर वर्ग—४-सम्बन्धित उल्लेख—५-कारीगर और मजदूर वर्ग—६-व्यापारी वर्ग ७-आंशिक या पूर्ण रूप से राज्याश्रित तथा विद्वत वर्ग-८-शकुन और ज्योतिष-९-कलाबाज वर्ग-१०-निम्न वर्ग ११-साधु वर्ग १२-स्त्री, बहु-विवाह, विधवा-विवाह, आचरण—१३-गोठ, 'जागर', 'जमला', चारी-डाके—१४-आचार-विचार, खान-पान—१५-अफीम—१६-मद्य-मांस, जीव-हत्या—१७-भांग और तम्बाकू—१८-जाटों का विशेष उल्लेख—१९-समग्रता में समाज, जाम्भोजी के कार्य

(ग) धार्मिक स्थिति १९५-२१८

१-पीठिका—२-सोलहवीं शताब्दी विष्णोई कवियों के धार्मिक स्थिति विषयक प्रासंगिक उल्लेख—३-हिन्दू धर्म (क) विष्णु—(ख) शिव—लकुलीश—रावल—नाथपंथ-रसेश्वर दर्शन—(ग) ब्रह्मा—(घ) सूर्य—(ङ) शक्ति धारण देवियाँ—(च) गणेश। ४-स्मार्त मत—धार्मिक सहिष्णुता—निष्कर्ष—५-जैन धर्म—६-मुसलमान धर्म—७-नाथ सम्प्रदाय—विष्णोई साहित्य के आधार पर निष्कर्ष—दक्षिणमुण्डी पात्र देव यात्रा-पंथ-सन्ध्या—अनुयायियों—बारह पंथ—नौ नाथ—राजस्थान में नाथ पंथ—(क) बालनाथ—कपिलानी पंथ—(ख) हांडीभड़ंग पावपंथी, सत्यनाथी—(ग) धूंधलीमल गरीबनाथ सत्यनाथी—(घ) जालन्धरनाथ पावपंथी—(ङ) हम्मीरदेव रावल पंथी—(च) गोपीचन्द, भरथरी, चपट बालगुदाई, लक्ष्मणनाथ पृथ्वीनाथ पावपंथी, वैराग्य पंथी—(छ) गोरखनाथ। ८-पाबू पूजा (कल्ट वर्शिप)—(१) गोगोजी—(२) तेजोजी—(३) रावल मल्लीनाथ—(४) पाबूजी राठौड़—(५) रामदेवजी तंवर—(६) महोजी मांगलिया—(७) हड़बूजी सांखला। ९-निष्कर्ष-विष्णोई सम्प्रदाय—प्रवर्तन की भूमिका।

खण्ड २ प्रवर्तक, वाणी और सम्प्रदाय पृष्ठ २१९-४७०

अध्याय ४ जाम्भोजी का जीवन-वृत्त पृष्ठ २१८-२५४

मल्लूखा राव सातल-(३) द्रोणपुर के राठौड राव बीदा से मोती मेघवाळ को छुडवाना-(४) सवत १५५३-५४ के अकाल म सहायता करना-(५) अन्य मतानुयायी और विष्णोई सम्प्रदाय-मुहम्मदखा नागौरी-(७) बादशाह सिकन्दर लोदी-(८) कर्नाटक का नवाब शेख सद्दो और मुल्तान का सधारी मुल्ला—(९) जसलमेर के रावळ जतसी-(१०) मेवाड के राणा सागा, झाली राणी-(११) बीकानेर के राव लूणकरण और कुंवर जतसी-(१२) मूला पुरोहित। (ख) घटनाए या बात जिनका काल अनिश्चित है-(१) भीत गाव के रावण, गोय द झोरड-(२) नाथूसर का ससो जोखाणी-(३) मेडतावाटी के पडवालो गाव के ऊदो और अतलो —(४) रिणमीसर का मगोवल और उसकी पत्नी लाहणी-(५) जागनू रा वरसिंह वणियाळ। वकुण्ठवास-प्रभाव और महत्त्व-वाणी (सबदवाणी)।

अध्याय ५ जाम्भोजी दर्शन और अध्यात्म — — पृष्ठ २५५-२७४

१- स्वयभू विष्णु - अनेक नाम - २- विष्णु नाम - ३- स्वयभू विष्णु की विभूतिया - स्वरूप वर्णन - ४- विष्णु की व्यापकता - ५- विष्णु मूलतत्त्व हैं - ६- अवतार धारण - ७- मूर्ति पूजा की निन्दा - ८- सदगुरु - ९- जाम्भोजी विष्णु हैं - १०- जाम्भोजी के यहाँ आने का कारण - ११- आत्मा - १२- माया- (क) जगत की नश्वरता - (ख) पार्थिव वस्तुएँ मिथ्या हैं - (ग) नाते-रिश्तो की असारता - (घ) सांसारिक मोह माया जाल है - (ङ) दुनिया का स्वरूप - (च) मानव माया जाल मे है - (छ) मृत्यु की अनिवार्यता। १३- शरीर-मन-इन्द्रिया - १४- सृष्टिक्रम - १५- पुनर्जन्म और कर्म सिद्धान्त - आवागमन - १६- स्वर्ग-नरक - १७- मुक्ति - १८- ज्ञान, भक्ति और प्रेम - १९- साधना, योग दिव्यदृष्टि - २०- आचार-व्यवहार - आत्मानुशासन के मुख्य नियम - २१- पाखड - (१) क- जोग पाखड - ख- मुसलमान पाखड- ग- हिन्दू पाखड (२) पाखडो का सामान्य रूप से सामूहिक वर्णन - (३) सम्भावित पाखड।

अध्याय ६ जम्भवाणी (सबदवाणी) पाठ - सम्पादन — पृष्ठ २७५ - ४१६

(क) भूमिका — — — — २७५ - ३०२

१- हस्तलिखित प्रतियाँ प्रतियो की बहिरंग परीक्षा - (१) जा० प्रति - (२) रा० प्रति - (३) गो० प्रति - (४) म० प्रति - (५) ला० प्रति - (६) पी० प्रति - (७) ब० प्रति। २-अन्य प्रतिया। ३-प्रतियो की अन्तरग परीक्षा- (क) जा०रा०गो०पी०म०ब० प्रतियाँ - (ख) रा० गो० पी० म० ब० प्रतिया - (ग) रा० गो० पी० प्रतियाँ - (घ) म० ब० प्रतिया - (ङ) ला० म० ब० प्रतियाँ - (च) जा० म० ब० प्रतियाँ,- ४- सबद प्रतीक तुलना मक सख्या-सूची- ५- प्रतियो का प्रतिलिपि सम्बन्ध- ६- सम्पादन-सिद्धान्त- ७- अपवाद।

(ख) जम्भवाणी पाठ (पाठान्तर और महत्त्वपूर्ण रूपान्तर सहित) — — ३०३-४१६

अध्याय ७ विष्णोई सम्प्रदाय — — पृष्ठ ४१७-४५०

१- प्रवतक जाम्भोजी व्यक्तित्व- २- जम्भवाणी (सबदवाणी)-(क) कथन, रूप परिमाण आदि- (ख) सबदवाणी और नाथ सिद्धो की वाणियाँ- (१) गोरखनाथ (गोरख

वाली)- (२) कारणोरीपाव, भरथरी- (३) छन्द-विशेष का भिन्न-भिन्न नामों के नाम से चलन- (अ) गोरख और पारवतीजी- (आ) गवरवाणी और जलधरीपाव, चरपटनाथ (४) विष्णोई कवियों की रचनाएँ और नाथ सिद्धों की वाणियाँ- (अ) कानू और भरथरी-(आ) हरिराम और गोपीचन्द- (५) निष्कर्ष- (६) जाम्भोजी के व्यक्तित्व और सबदवाणी का प्रभाव मूल स्वर- ३- साखियाँ- (क) मान्यता और रूप- प्रकार- (ख) संकलन-संग्रह- (ग) निष्कर्ष- (घ) अज्ञात कवि कृत साखी-(ङ) साखी-रचना, परिमाण और महत्त्व-(च) वर्ण्य-विषय। ४- हरजस- हरजस और साखी में अन्तर- ५-सम्प्रदाय का स्वरूप- ६- २९ धर्मनियम- ७-सम्प्रदाय विभिन्न नाम- ८- विष्णोई नाम मूल कारण- ९-सम्प्रदाय का क्रम-विकास- (क) जाम्भोजी महाराज का वैकुण्ठवास और पश्चात- (ख)समाधि-मन्दिर का निर्माण रणधीरजी की मृत्यु- (ग) मेहोजी का जांगलू प्रस्थान, पचायत का मुकाम-मन्दिर पर अधिकार- (घ) पचायत का 'चने को चोवा' करना- (ङ) सम्प्रदाय की स्थिति-(च)वील्होजी का आगमन और काय-(छ)केसोजी के काय-(१) स्थानों संबंधी-(२) पचायत संबंधी-(ज)१८वीं शताब्दी पूर्वार्द्ध -अन्य लोगों के काय और महत्त्व-(झ) मुसलमानी प्रभाव की कल्पना- (ञ) १८ वीं शताब्दी उत्तरार्द्ध से वर्तमान काल तक- (ट) पचायत। १०-जम्मा,जागरण और जागर - ११ - जम्मा, जागरण गेय सामग्री - १२ - हवन- १३ - मुख्य प्राचीन स्थान और साथरी - (१) पीपासर - (२) समराथल - (३) लोहावट-(४) जांगलू-(५) विछोवडो-जागनू-(६) रोटू-(७) जाम्भोलाव-(८) रिणसीसर-(९) भीयासर-(१०) गुडा-(११) रुडकली-(१२) रामडावास-(१३) ध्यान नाडी (रामडावास)-(१४) पुर-(१५) दरीबा-(१६) समला-(१७) लादीपुर-(१८) नगीना-(१९) रावतखेडा-(२०) लालासर-(२१) मुकाम-(क) मुकाम-मन्दिर की प्रबन्ध-परम्परा साधु थापन, (ख) पचायत-(ग) महासभा-(घ) राजाज्ञाएं और परवाने। १४ अन्य स्थान तथा २२ भण्डारे-१५-जाम्भोजी के उपदेशों का प्रभाव-(क) नियम-पालन में दृढ़ता और सोर-संग्रह वृत्ति-(ख) उल्लंघन पर 'खडाणे' (प्राणत्याग)। १६-विभिन्न राजाओं के परवाने आदि-जोधपुर, उदयपुर बीकानेर, अंगरेजी राज्य।-१७-पचायतों के काय और महत्त्व-व्यावहारिक जीवन-१८-'पुंह' (पुण्य)-(क) ३५ पुंह -(ख) २७ 'जुगाइयों की पुंह'-१९-६ राजवियों की विगत और 'चोईसा की लूरो -२०-थाट, जाम्भाणी दाग, 'सागड' दागना, दई गाय। २१ मन्त्र-२२-समाज-(क) थापन-(ख) गायणा-(ग) भाट-(घ) गामान्य गृहस्थ-(ङ) साधु-(च) अभिवादन प्रणाली-(छ) जातियाँ। २३-मावादी-२४-विष्णोई गांवों की संख्या-(१) राजस्थान-(२) पंजाब-हरियाणा-(३) उत्तर प्रदेश-(४) सिन्ध-हैदराबाद-(५) मध्यप्रदेश-तथा अन्यत्र। २५-जनगणना-२६-विभिन्न संस्कार आदि-(क) संस्कार-(ख) मान्य त्योहार-(ग) तिथियाँ-(घ) सूत-पछेवड़ी-(ङ) वेश-भूषा। २७-जोत-जात और हरजस-२८ कतिपय प्रमुख सामाजिक संस्थाएँ-(क) भारतवर्षीय विष्णोई महासभा-(ख) स्थानीय संस्थाएं (१) अखिल भारतीय जम्भेश्वर सेवक दल-(२) विष्णोई सभा, जिला फीरोजपुर-(३) विष्णोई सभा, हिसार-(४) श्री विष्णोई सेवा समिति

कानपुर।-२९ जम्भेश्वरीय सवत ।

परिशिष्ट १-चित्र-सूची (कुल चित्र-सख्या-११२) पृष्ठ-१-४९

(ग्सम प्रति सख्या (ग्रध्याय १, ग्रध्ययन-सामग्री) सामग्र—१६, २३, ४८, ५२, ६५, ६६, ६८, ८१, १०८, १४२, १५९, १६०, १९३, २०१, २०४, २०७, ~११, २२७ २६१, ३६२ ३६३, ३७५ से ३८५ ग्रौर ४०६ के ९२ चित्र तथा शेप २०, ताम्रपत्र एव विभि न स्थानो के हैं)

इस सूची की दो तालिकाएँ प्रस्तुत की गई हैं—एक वह, जिसमे पृष्ठ-सख्या-क्रम से चित्र ग्रौर प्रति सख्या तथा दूसरी वह, जिसम चित्र-सख्या-क्रम से पृष्ठ सख्या का विवरण दिया गया है।

तालिका-१ · पृष्ठ सख्या-क्रम :

पृष्ठ सख्या	चित्र सख्या	प्रति सख्या
३	१, ३१	२०१
४	२	२०१
५	३, २२	२०१, १६
६	४ ७	२०१
७	५, १३, १९	२०१, पी० प्रति, १६
८	६	२०१
९	८	२०१
१०	९, १०, ११, १२	जा०, रा० प्रतियाँ
११	१४, २३, ६७	पी० प्रति, ६८, ५२
१२	१५, १६, ७६	६५, ३८०
१३	१७, १८, २°	८१, २०१
१४	२०, ३७, ३८	१६ २३
१५	२१, २४	१६, ६८
१६	२५, २६, २७	६८, २०१
१७	२८	२०१
१८	३०	२०१
१९	३३, ७१	४८, १६०
२०	३२, ३६	४८
२१	३५ ३४	४८
२२	३९, ४०	२०१
२३	४१, ४२	२०१
२४	४३, ४४, ४५	१९३

पृष्ठ संख्या	चित्र संख्या	प्रति संख्या
२५	४६, ६०, ६१	१९३, १०८
२६	४७	२०१
२७	४८, ४९	२०१
२८	५०, ५२	२०७, २०१
२९	५१, ५३	२०७, ४०६
३०	५४, ५८	४०६, २२७
३१	५५, ५६	२०४, २११
३२	५७, ७४	२२७, ३८१
३३	५९, ६६	२२७, ५२
३४	६२, ६३, ६४	भक्तमाल की प्रति, २६१
३५	६५, ६८	१५९, १६०
३६	६९ ७० ९०	१६०, १४२
३७	७२, ७३	३८४, ३८५
३८	७५, ७६	३८३, ३७७
३९	७८, ८३, ८४, ८५	३७९, ताम्रपत्र, ३०२, ३६३
४०	८०	३८२
४१	८१ ७७	३७६, ३७८
४२	८२	३७५
४३	८६, ९२, ८७, ९३	२०१, ६६
४४	८८ ९१, ८९	१४२
४५	९८, १००, ९९, १०४, १०७ १११	लोहावट साथरी, विष्णोई मंदिर समेला, रुडकली, वरीगमाळी नाडी, विष्णोई मंदिर, पाँट वरीसाल नगाडा
४६	१०१	जाम्भोळाव
४७	१०२ १०३, १०५ ९६ ९७	समाधि मंदिर मुकाम, पीपासर साथरी, पिंड छियो बरो' रुडकली, जागळू साथरी, पिछोवडो'- जागळू ।
४८	१०८, १०६, ९५	विष्णोई मंदिर हिसार, लोदीपुर साथरी, समराथळ
४९	९४, ११०, १०९, ११२	पीपासर साथरी, विष्णोई मंदिर, टीबा (महराणा) विष्णोई मंदिर, रायसिंहनगर, सबथी महन्त रामनारायणजी, महात्मा श्रीरामदासजी ।

तालिका–२ : चित्र सख्या–क्रम :

चित्र सख्या	पृष्ठ सख्या	चित्र सख्या	पृष्ठ सख्या
१	३	४६	२५
२	४	४७	२६
३	५	४८–४९	२७
४	६	५०	२८
५	७	५१	२९
६	८	५२	२८
७	६	५३	२९
८	९	५४	३०
९ से १२	१०	५५–५६	३१
१३	७	५७	३२
१४	११	५८	३०
१५–१६	१२	५९	३३
१७–१८	१३	६०–६१	२५
१९	७	६२ से ६४	३४
२०	१४	६५	३५
२१	१५	६६	३३
२२	५	६७	११
२३	११	६८	३५
२४	१५	६९–७०	३६
२५ से २७	१६	७१	१९
२८	१७	७२–७३	३७
२९	१३	७४	३२
३०	१८	७५–७६	३८
३१	३	७७	४१
३२	२०	७८	३९
३३	१९	७९	१२
३४–३५	२१	८०	४०
३६	२०	८१	४१
३७–३८	१४	८२	४२
३९–४०	२२	८३ से ८५	३९
४१–४२	२३	८६–८७	४३
४३ से ४५	२४	८८–८९	४४

चित्र संख्या	पृष्ठ संख्या	चित्र संख्या	पृष्ठ संख्या
९०	३६	१०४	[illegible]
९१	४४	१०५	४७
९२-९३	४३	१०६	४८
९४	४६	१०७	४१
९५	४८	१०८	४८
९६-९७	४७	१०९-११०	४९
९८ से १००	४५	१११	४५
१०१	४६	११२	४६
१०२-१०३	४७		

विषय-सूची

दूसरा भाग

खण्ड ३ विष्णोई साहित्य पृष्ठ ४७१-१०५१

अध्याय ८ विष्णोई साहित्य पृष्ठ ४७१-९५८

(कालक्रमानुसार प्रमुख कवियों और उनकी रचनाओं का परिचय और विवेचन)

क्रम सं०	कवि-नाम	काल (विक्रम संवत)	रचनाएँ	पृष्ठ संख्या
१	२	३	४	५
१	तजोजी चारण-	१४८०-१५७५	१-छन्द, २-गीत, ३-साखी, ४-हरजस, ५-मरसिये—	४७३-४८३
२	समसदीन-	१४६०-१५५०	साखी—	४८३-४८५
३	डेल्हजी-	१४९०-१५५०	१-बुध परगास, २-कथा अहमनी—	४८६-५११
४	आघरे-	१५००-१५५०	साखी—	५११-५१२
५	पदम भगत-	१५००-१५५५	१-किसणजी रो ब्यावलो— विभिन्न प्रतियां- तीन परम्पराएँ-तीन समूह-प्रथम-द्वितीय-तृतीय-कथासार-विवेचन, २-फुटकर पद, आरती, हरजस-	५१२-५२२
६	वील्हजी चारण-	१५००-१५६०	१-बारामासो, २-कवित्त—	५२२-५२६
७	सुरजनजी(हजूरी)-	१५००-१५७०	साखी—	५२६-५२७
८	सिवदास	१५००-१५७०	साखी—	५२७-५२८
९	एकजी-	१५००-१५७०	साखी—	५२८-५२९
१०	अमियादीन-	१५००-१५७०	साखी—	५२९-५३०
११	जोधो गायक-	१५००-१५७०	साखी—	५३०-५३१
१२	केसोजी देडू-	१५००-१५८०	साखी—	५३१-५३२
१३	लालचन्द नाई-	१५००-१५८०	साखी—	५३२-५३३
१४	कान्होजी बारहट-	१५००-१५८०	१-बावनी, २-फुटकर छन्द, गीत, कवित्त, हरजस—	५३३-५३७

१५ मालोजी-	१५००-१६००	भूमगो—	५३७-५३८
१६ से २८ प्रज्ञात	१६ वीं शताब्दी	साखियाँ—	५३८-५४१
२९ प्रज्ञात-	१६ वीं शताब्दी	भगतोत्र (स्तोत्र)—	५४१-५४७
३० से ३४ प्रज्ञात	१६ वीं शताब्दी	साखियाँ—	५४७-५४९
३५ प्रज्ञात-	१६ वीं शताब्दी	छप्पय (कवित्त)—	५५०
३६ चोल्हजी चारण-	१६ वीं शताब्दी	छप्पय (कवित्त)—	५५०-५५२
३७ ऊदोजी नैण-	१५०५-१५९३/९४	जीवन-सम्प्रदाय में महत्त्व- २९ धर्मनियमों सम्बन्धी कवित्त-पाठ पाठान्तर आदि रचनाएँ- १ साखी, २-हरजस, आरती, ३-कवित्त, ३-प्रेम चितावणी- भावव्यंजना-(१) जाम्भाणी रूप-(२) नारी रूप में आत्मानुभूति और निवेदन-(३) मुक्ति हेतु प्रयास और चेतावनी-काव्य का लक्ष्य-महत्त्व और मूल्यांकन-(क) काव्य रूप-परम्परा में (ख) लोकरंजन मनोवृत्ति परिष्कार-(ग) भावधारा-(घ) अनुभूति, प्रेरक तत्त्व-	५५२-५७८
३८ अल्लूजी कविया-	१५२०-१६२०	जीवन-प्राप्त नवीन सामग्री के आधार पर निष्कर्ष-अन्त साक्ष्य, बहिर्साक्ष्य- रचनाएं-कवित्त गीत, योग, शान्तरसात्मक अध्यात्म-वीर रसात्मक-मरसिये-	५७९-५९१
३९ दीन महमद-	१५२५-१६००	हरजस—	५९२-५९३
४० रायचंद सुथार-	१५२५-१६१०	साखियाँ—	५९३-५९५
४१ कुलचन्दराय अग्रवाल-	१५०५-१५९३	साखियाँ—	५९५-५९७
४२ राव लूणकरण-	१५२६-१५८३	स्तुति-कवित्त—	५९७-५९९
४३ रेडाजी-	१५३०-१६२०	साखी—	५९९-६००
४४ वाजिन्दजी-	१५३०-१६००	साखी - दादूपंथी वाजिन्द से भिन्न-दादूपंथी वाजिन्द की ६८ रचनाओं की सूची—	६०१-६०३
४५ लखमणजी गोदारा-	१५३०-१५९३	साखी—	६०३-६०५
४६ आलमजी-	१५३०-१६१०	१-साखी, २-हरजस—	६०५-६११
४७ स्याम धतरवाळ-	१५३०-१६००	१-हरजस २-साखी—	६१२-६१५
४८ भावराज-	१५३०-१६००	साखी—	६१५-६१६
४९ दान सुन्दरी-	१५३५-१६००	साखियाँ—	६१६-६१८
५० मेहोजी गोदारा-	१५४०-१६०१	रामायण-कथासार- प्रचलित कथा और इसमें कुछ अन्तर-विवेचन—	६१९-६३५

५१ रहमतजी- १५५०-१६२५ हरजस— ६३५-६३६
५२ गुणदास- १५६०-१६४० साखी— ६३६
५३ लाखू- १५६०-१६५० साखी— ६३७
५४ अज्ञात- १५६६/१५६७ छप्पय (कवित्त)— ६३७-६३९
५५ वील्होजी- १५८९-१६७३ जीवनवृत्त-रचनाएँ—
(परिचय और विवेचन)-१-कथा घडावध, २-कथा औतारपात, ३-कथा गुगलिय की, ४-कथा पूल्हैजी की, ५-कथा दूणपुर की, ६-कथा जमलमेर की, ७-कथा झोरडा की, ८-कवत परसग का, ९-कथा ग्यानचरी, १०-सच अखरी विगतावळी, ११-साखियाँ, १२-हरजस, १३-विसन छत्तीसी, १४-छपइया (छप्पय), १५-दूहा मक्क अपरा-अवतार का, १६-छुटक साखी (दोहे)-महत्त्व और मूल्यांकन— ६३९-६८६
५६ दसुधीदास- १७ वीं शताब्दी सवया- ६८६
५७ आनन्द- १७ वीं शताब्दी १-कवत गोपीचन्द का, २-कवत करुवा पाडवा का महाभारत का, ३-फुटकर छन्द- ६८६-६८८
५८ अज्ञात- १७ वीं शताब्दी साखी— ६८८ ६८९
५९ नानिग- १७ वीं शताब्दी १-साखी, २-नोमाणी- ६८९-६९०
६० लालोजी- १७ वीं शताब्दी साखी-'आवेलो'- ६९०-६९१
६१ गोपाल- १७ वीं शताब्दी फुटकर छन्द- ६९१-६९३
६२ हरियो(हरिराम)-१७ वीं शताब्दी गोपीचन्द की साखी- ६९३-६९४
६३ दुरगदास- १६००-१६८० हरजस- ६९४-६९६
६४ किशोर- १६३०-१७३० सवया- ६९६-६९७
६५ अनात- १७ वीं शताब्दी गीत (डिंगल गीत)- ६९७-६९८
६६ अनात- १७ वीं शताब्दी कवित्त (छप्पय)- ६९८
६७ वालू- १६३०-१७३० साखियाँ- ६९९-७००
६८ केसोदासजी गोदारा-१६३०-१७३६ जीवनवृत्त-रचनाएँ
(परिचय और विवेचन)-१-साखिया, २-हरजस ३-कवित्त, ४-सवए, ५-चन्द्रायणा, ६-दूहा, ७-स्तुति अवतार की, ८-दस अवतार का छन्द, ९-कथा वाललीला, १०-कथा ऊद अतली की, ११-कथा सम जोखाणी की, १२-कथा मेड़ते की, १३-कथा चित्तौड की, १४-कथा इसकदर की, १५-कथा जती तळाव की, १६-कथा विगतावळी, १७-कथा लोहापागळ की, १८-पहळाद चिरत, १९-कथा भीव दुसासणी, २०-कथा सुरगारोहणी, २१-कथा वहमोवनी, २२-कथा अघलेखा की। महत्त्व और मूल्यांकन-कथाओं का महत्त्व-नारी-नाथ जोगी-समाज सबंधी

अन्य संकेत-विष्णोई समाज संघ की-आत्मनिवेदन-भाव और विचार-कतिपय लुप्त और अप्राप्य रचनाओं के संकेत-(१) महाराजा हरि चन्द्र-चरित या कथा पर किसी विष्णोई कवि के पृथक काव्य की सम्भावना,-(२) सबदवाणी के कतिपय (क) अप्राप्य और लुप्त तथा (ख) प्राप्त सबद, (३) जाम्भाणी विचारधारा उसकी धार्मिक पृष्ठभूमि का परिचय तथा सम्प्रदाय पर नाथपंथ या मुसलमानी प्रभाव की धारणा का निरसन- ७०१-७६४
६९ सुरजनदासजी पूनिया-१६४०-१७४८ जीवनवृत्त- रचनाएँ (परिचय और विवेचन)-१-साखियाँ, २-गीत, ३-हरजस, ४-मानो अगचेतन, ५-दस अवतार दूहा, ६-मरामध जिग का दूहा, ७-सुरजनजी के छन्द ८-कवित्त,- विचारधारा-इतिहासिक कवित्त-अर्द्ध इतिहासिक, पौराणिक-नाम गणनात्मक,-९-कवित्त-बावनी, १०-गयदृए, ११-कथा चतर, १२-कथा चितावणी, १३-कथा धरमचरी १४-कथा हरिगुण, १५-कथा औतार की १६-कथा परसिध १७-ग्यान महातम १८-ग्यान तिलक १९-कथा गजमोख २०-कथा उधा पुराण २१-भोगळ पुराण २२-रामरासो (कवित्त रामरास का)-महत्त्व और मूल्यांकन-स्वानुभूति, आत्मनिवेदन-कतिपय महत्त्वपूर्ण संकेत और उल्लेख- ७६४-८२५
७० मिठुजी- १६५०-१७५० १-हरजस, २ सवए- ८२५-८२६
७१ माखनजी- १६५०-१७५० हरजस-'सोहलो'- ८२६-८२७
७२ रामू खोड- १६७५/७६-१७०० साखी- ८२७-८२९
७३ रूपा वणियाळ- १६८०-१७५० साखी- ८२९-८३०
७४ दामोजी- १६८०-१७६८ १-कवित्त २-साखी- ८३०-८३१
७५ देवोजी- १७००-१७८० हरजस- ८३१-८३२
७६ हरिनन्द- १७००-१७८० १-हरजस, २-फुटकर छन्द- ८३२
७७ गोकलजी १७००-१७९० जीवनवृत्त-रचनाएँ-(परिचय और विवेचन)-१ इन्दव छन्द २ अवतार की विगति, ३-परची, ४-स्तुति होम की, ५-साखियाँ- ८३३-८३९
७८ रासानन्द- १७००-१८०० हरजस- ८३९-८४१
७९ मुकनजी (मुकनदास)- १७१०-१७९० १-फुटकर छन्द, २-हरजस- ८४१-८४३
८० सेवादास- १७२०-१७८० १-इन्दव छन्द २-चौजुगी, ३-पिसण सिंघार- ८४३-८४८
८१ चतरदास- १७००-१८०० भजन (गोपीचन्द विषयक)- ८४८
८२ अज्ञात- १८ वीं शताब्दी हरजस (भरथरी विषयक)- ८४९
८३ अज्ञात- १८ वीं शताब्दी हरजस (गोपीचन्द विषयक)- ८४९-८५०

८४ सुनामा- १७००-१८०० बारहखडी- ८५०-८५१
८५ अज्ञात- १७५० भजन- ८५१
८६ हीरानन्द- १७५०-१८०० हिंडोलणो- ८५१-८५२
८७ हरजी वणियाळ-१७४५-१८३५ १-साखियाँ, २-फुटकर छन्द- ८५२-८५७
८८ परमानन्दजी वणियाळ-१७५०-१८४५ जीवनवृत्त-रचनाएँ-
(परिचय और विवेचन)-१-प्रसंग-दोहे २-हरजस, ३-साखिया ४-विसन असतोत्र, ५-फुटकर छन्द, ६-साका (गद्य), ७-छमछरी (सवत्सरी)-काव्य का उद्देश्य और भावधारा-(१) हरि-(२) अनुभव,-दर्शन और अध्यात्म-ब्रह्म-विष्णु नाम-विष्णु स्वरूप-जाम्भोजी विष्णु हैं-अन्य देव पूजा, जीव, शरीर-माया (मन, जगत)-सृष्टि क्रम-पुनर्जन्म-कर्म सिद्धान्त-मुक्ति-भक्ति-ज्ञान-प्रेम-गुरु-साधु और सत्संग-आत्मानुशासन के मुख्य नियम-पाखण्ड-जाम्भोजी-सम्प्रदाय की श्रेष्ठता और महत्ता-उक्तियां और उपमाएँ-गद्य- ८५७-८८६
८९ गोविन्दरामजी
बागडिया- १७५०-१८५० जन्माष्टक (संस्कृत)- ८८९
९० रामलला- १७७५-१८५० १-रुक्मिणी मंगल,
२-हरजस,- रुक्मिणी मंगल का कथासार-कतिपय भ्रामक बातों का निराकरण-विवेचन— ८९०-८९६
९१ हरम्नन्दजी ढुकिया-१७७५-१८६० १-लघु हरि प्रहलाद चिरत
२-फुटकर कवित्त- ८९६-८९९
९२ अज्ञात- १७७५-१८५० कवित्त (छप्पय)- ८९९-९००
९३ गंगाराम(गंगादास)-१७८३-१८८३ हरजस- ९०१
९४ सूरतराम- १७८७-१८८७ हरजस- ९०१-९०२
९५ मयारामदास- १८००-१८७० १-अमावस्या कथा,
२-फुटकर छंद- ९०२-९०४
९६ खरातीराम मेरठी-१८००-१८६० बारहमासा- ९०४-९०६
९७ विष्णुदास- १८००-१८८९ १-आरती,
२-हरजस ३-जन्माष्टक की विष्णु-विलास टीका (गद्य में)— ९०६-९०७
९८ हरिकिसनदास- १८००-१८९९ पत्री (गद्य-पद्य)- ९०७-९०८
९९ पोकरदास(पोहकर)-१८००-१८५० १-नुगरी सुगरी को झगडो,
२-भजन- ९०९-९१०
१०० ऊदोजी अडींग- १८१८-१९३३ जीवनवृत्त-रचनाएँ-
(परिचय और विवेचन)- १-प्रहलाद चिरत, २-विष्णु चरित, ३-ककका छत्तीसी, ४-लूर, ५-फुटकर छंद- ९१०-९२०

१०१ मोतीराम- १८५०-१९२५ साखियाँ- ९२०
१०२ अज्ञात- १८५०-१९२५ जम्भस्तुति- ९२१
१०३ सीमन्द (बेनू)- १८६०-१९२० फुटकर छंद- ९२१
१०४ गोविन्दरामजी गोदारा- १८६०-१९५० १ जाम्भोजी की स्तुति
२-साखियाँ, ३-नाम महिमा वर्णन साखि ४-विष्णु मन्त्र (गद्य)- ९२२-९२५
१०५ मेघनाथ- १८६५-१९५१ कवित्त (स्वप्न) ९२५-९२७
१०६ अज्ञात- १९वीं शताब्दी जाम्भेजी रे मतां री भरमगार- ९२७
१०७ साधु सुखीराम-१९वीं शताब्दी फुटकर छंद ९२७-९२८
१०८ अज्ञात- १८७५ गीत (रघुनाथ)- ९२८
१०९ अज्ञात- १८७५ भजन- ९२९
११० अज्ञात- १९वीं शताब्दी कुण्डली- ९२९
१११ पीताम्बरदास- १९वीं शताब्दी उत्तरार्द्ध १-आरती हरजस, २-जम्भाष्टोत्तर शत नाम ९२९-९३०
११२ परसरामजी- १९वीं शताब्दी उत्तरार्द्ध दोहे- ९३०-९३१
११३ केसोदासजी- १९वीं शताब्दी मंगलाष्टक- ९३१-९३२
११४ साहबरामजी राहड़-१८७१-१९४८ जीवनवृत्त-रचनाएँ (परिचय और विवेचन)-१-सत्तलोक पहुँचन का परवाना, २-सार सम गुंजार, ३-सार बत्तीसी, ४-अमर चालीसी ५-महामाया की स्तुति, ६-फुटकर रचनाएँ- साखियाँ हरजस भजन, आरती तथा छन्द, ७-जम्भसार, महत्त्व और मूल्यांकन— ९३२-९४३
११५ बिहारीदास- १८७०-१९५० १ फुटकर छन्द, २-जम्भसरोवर स्तुति, ३-जम्भाष्टक- ९४३-९४४
११६ अज्ञात- १९००-१९५० भजन गायाण री कथा- ९४४-९४५
११७ अज्ञात- १९००-१९४२ जाम्भोलाव महातम (गद्य)- ९४५
११८ शीतल- १९००-१९७५ भजन और लावनी- ९४५
११९ ईश्वरानन्दजी गिरि-१८९१-१९५५ १-श्री जम्भसागर २-शब्दवाणी अर्थात जम्भसागर, ३-श्री जम्भ संहिता, ४-ब्राह्मण वर्ण व्यवस्था, ५-शिक्षा दर्पण- ९४५-९४८
१२० अज्ञात- १९२० चेलोजी की कथा (गद्य)- ९४८-९५०
१२१ स्वामी ब्रह्मानन्दजी-१९१०-१९८५ १-श्री जम्भदेव चरित्र भानु, २-साखा संग्रह प्रकाश ३-मृतक संस्कार निर्णय ४-श्री वील्होजी का जीवन चरित तथा वील्होजी का संक्षिप्त वृत्तान्त, ५-विश्नोई धर्म विवेक ६-विद्या और अविद्या पर व्याख्यान, ७-गोचाचार, ८-भाषण, ९-आरती तथा भजन- ९५०-९५१

१२२ हिम्मतराय- १९००-१९८० फुटकर छंद- ९५१
१२३ किशोरीलाल गुप्त-२०वीं शताब्दी फुटकर छंद- ९५२
उत्तरार्द्ध
१२४ माधवानंद- १९२५-१९७५ भजन- ९५२
१२५ ब्रदीदास
(बिरधीदास)- १९५० भजन- ९५२-९५३
१२६ जगमालदास- १९५०/६० आरती- ९५३
१२७ श्रीरामदासजी गोदारा-१९२०-२०१० इनका महत्त्व और प्रकाशन-
कार्य-स्वसम्पादित रचनाएं-१७ तथा अन्य ७— ९५४-९५५
१२८-कुम्भारामजी पूनिया-१९३७-१९९५ १-निर्वेद ज्ञान प्रकाश,
२-पचयज्ञ प्रश्नोत्तर मणिभाषा— ९५५-९५७
१२९ साधु जगदीशराम-१९६०-२००५ भजन- साखी- आरती-
और फुटकर छंद। अन्य कवि-नामोल्लेख- ९५७-९५८

अध्याय ९ विश्नोई साहित्य : महत्त्व, देन और मूल्यांकन पृष्ठ ९५९-९८४

राजस्थानी साहित्य का काल विभाजन— तीन धाराएं और शैलियां १ जन शैली, २ चारण शैली ३ लौकिक शैली,-सिद्ध काव्यधारा- नामकरण। सिद्ध काव्यधारा महत्त्व, देन- (१) साहित्य के क्षेत्र में-

(क) काव्य रूप और शैली की दृष्टि से १ साखी, २ हरजस, ३ भजन, ४ गीत (डिंगल गीत), ५ छंद, ६ विभिन्न छंद परक रचनाएं, ७ स्तुति-स्तोत्र, आरती, ८ बारहमासा, ९ माहात्म्य, महिमा, १० ब्यावलो (विवाहलो), ११ मंगल, १२ बावनी, बारहखड़ी, छत्तीसी (ककको काव्य), १३ कथा काव्य, १४ चरित काव्य, १५ आख्यान, इसके उपादान, १६ चेतन, चितावणी (प्रतिबोध परक), १७ संवाद, १८ रासो १९ तिलक, २० चरी (आचार-विचार), २१ लोक प्रचलित विशिष्ट गीत-झूमखो, रंगीलो, मधुकर, लूर, जखडी, आवेलो, हिंडोलणो, धुन लावनी, २२ लघु कथ परक और मुक्तक रचनाएं, २३ सार, २४ लक्खण (लक्षण), २५ अंग, २६ परची, २७ परसंग (प्रसंग), २८ दृष्टिकूट, गूढार्थ, २९ परवाना, ३० संख्यापरक काव्य ३१ माळ (माला), ३२ परगास (प्रकाश), ३३ चौजुगी (विवाह पाटी), ३४ भगटो, ३५ रूपक और प्रतीक काव्य तथा ३६ गुण।

(ख) प्रवृत्ति और वर्ण्य विषय की दृष्टि से-(१) जाम्भाणी रचनाएं- (क) जाम्भोजी विषयक, (ख) सम्प्रदाय विषयक,- (२) पौराणिक रचनाएं- (३) धर्म, ज्ञान, नीति और लोकोत्थान विषयक रचनाएं- (४) अध्यात्म परक रचनाएं- (५) ऐतिहासिक- अर्द्ध-ऐतिहासिक रचनाएं- गद्य में, पद्य मे- मरसिया या पीछोला- इसकी प्रमुख विशेषताएं-अर्द्ध एतिहासिक- (६) लोक कथा और लोक जीवन विषयक रचनाएं- (७) लोकभाषा विषयक

रचनाएँ। जाम्भाणी साहित्य वर्गीकरण - बिश्नोई लोकगीत। साहित्य क्षेत्र में विशिष्ट उपलब्धि- १ गेय पद परम्परा में - २ डिंगल गीत,- ३ कवित्त (छप्पय),- ४ बारहमासा-बावनी,- ५ आख्यान काव्य,- ६ पौराणिक चरित्रों में इनका विशेष महत्त्व- ७ जाम्भोजी-जाम्भोजी से सम्बन्धित प्रबन्ध और मुक्तक रचनाएँ- महत्त्व के प्रमुख कारण- इनके प्रेरणा स्रोत। सम्प्रदाय और साम्प्रदायिक विचारधाराओं के क्षेत्र में-धार्मिक-दार्शनिक विचारधारा। *भाषा के क्षेत्र में- इतिहास के क्षेत्र में- अर्द्ध ऐतिहासिक। सांस्कृतिक- सामाजिक क्षेत्र में।*

परिशिष्ट (संख्या २ से ११)- ९८५-१००६

२ आरती। ३ हिंडोलणो (हीरानन्द, कवि संख्या ८६ कृत)। ४ जाम्भजी रै भक्तां री भक्तमाळ। ५ मंत्र (१-नवण, २-कलश पूजा, ३-पाहळ, ४ विष्णु या गुरु, ५-तारक या गुरु, ६-बालक, ७-धूप, ८-सुजीवण और ९-ध्यान)। ६ लोकगीत और हरजस (१-हिंडोळो-हर रो हिंडोळो, २-हालो सहियाँ ए, ३-मुरली, ४-मिंदर)। ७ ताम्रपत्र और परवाने। ८-लिखत। ९-विष्णोइयों की जातियाँ। १० अंगरेज सरकार के आदेश। ११ साधु परम्परा।

सन्दर्भ सूची- १००७-१०१६

नामानुक्रमणिका- १०१७-१०५१

सतगुर मिलियो सतपथ बतायो भ्रांति चुकाई
अवर न बूझिबा कोई ॥ ४३ ५, ६ ।
घड ऊंध बोह बरसत मेहा, नीर पियो पणि ठालू ॥ ५५ ४ ।
दुनिया राच गान बाज ताह मा कणो न दाणो ॥ ६६ १३
दुनिया के रंगि सोह कोई राच, दीन रच सो जाणो ॥ ६६ १४

—जम्भवाणी (सबदवाणी) से

खबर पडी रिण मा बिडया, जदि हो बूही सार।
लागी सोई जाणसी, का जाणे वाहणहार ॥
गलै मा मोती पडया, अंधा निकस्या आय।
जोति बिना जगदीस की, जगत उलाड जाय ॥

—परमानंदजी वणियाळ

हाथ पाव कर कूबडी, नीचे मुख अरु नन।
इन कष्टा पोथी लिखी, तुम नीके रखियो सन ॥

—साहबरामजी राहड

पहला भाग

खण्ड १ तथा २

खण्ड १

पृष्ठभूमि

अध्याय १

अध्ययन-सामग्री

यह सामग्री अद्यावधि सर्वथा अज्ञात और अप्रकाशित है तथा प्राचीन हस्तलिखित प्रतियों, पट्टे-परवाना, ताम्रपत्र, 'लिखत' और 'विगत' आदि के रूप मे अनेक स्थानों से प्राप्त हुई है। नीचे इसकी तालिका दी जा रही है —

स्थान-नाम	कुल सामग्री संख्या	अध्ययन-सामग्री (प्रस्तुत अध्याय) की क्रम संख्या
१	२	३
१-ऋषिकेश	१	१३२
२-काट (मुरादाबाद)	१	१८६
३-कोलायत (बीकानेर)	१	७८
४-गुढा (जोधपुर)	२	१६१, ३४०
५-चक २९ बी० बी० (श्री गंगानगर)	७	२६४, ३६६, ३६७, ४०४, ४०५, ४०७, ४०८
६-जागलू साथरी (बीकानेर)	४६	४९ से ५३, १२६, १४०, १७२ से १८०, १८३, १९०, २७०, २७२, २७३, २७४, २७७, २७८, २८१, २८६, २९२, २९३, २९९, ३१०, ३१४, ३२०, ३२५, ३२६, ३३१, ३३४, ३३५, ३३८, ३३९, ३५०, ३८४, ३८५, ३९१, ३९२, ३९३ तथा गो० प्रति (जम्भवाणी-सम्पादन मे प्रयुक्त)
७-जाम्भा (आथणी और आगूणी जागा) (फलौदी)	५१	६६ से ७४, ७६, ७७, ११८, १३५, १६७, १७०, २१०, २३४ से २६५, २८२, ३०४, ३०५, ३२१, ३५७ तथा जा० प्रति (जम्भवाणी-सम्पादन मे प्रयुक्त)
८-जेसला (फलौदी)	१	३४१
९-भूलनिया (नाढोडी, हिसार)	७	३५६, ३९८ से ४०३
१०-डोली (जोधपुर)	२	३२८, ४०६
११-ढाणी सासा (महाजनान) (फतहाबाद, हिसार)	१	३३३
१२-दरीबा (भीलवाडा)	१	३६६

१३–दुतारांवाली (फीरोजपुर)	५०	३८ से ४८, ६८, ८८ से ६२, ६४, ६५, १८१, १८२, १८४ से १८८, १६२, १६३, १६८ से २००, २०२, २११, २७६, २६६ से २६८, ३००, ३०१, ३०६, ३२४, ३६७ से ३७४, ३६०
१४–पीपासर साथरी (नागौर)	५५	१६ से १६, ५४ से ६४, ७६, ८२ से ८५, १२७, १३६ से १३८, १४७ से १५१, १५७, १६२, १६३, १६८, १६६, २८४, २८५, २८७, २८८, २६०, २६१, ३०७, ३०८, ३१२, ३१३, ३२३ ३३२, ३४७, ३४६, ३५८, ३८६, ३८७, ३८८, ३८६ तथा रा० और पी० प्रतियाँ (जम्भवाणी सम्पादन में प्रयुक्त)
१५–पुर (भीलवाड़ा)	४	२१३, २१४, ३६४, ३६५
१६–पोतास (मेड़ता)	१	३६५
१७–भीयासर (जोधपुर)	५	२६६, ३४२, ३४३, ३४५ ३४६
१८–मुकाम (बीकानेर)	१७	२६, ६५, ६७, ८१, ८६, १२५, १२६, १५३, ३७५ से ३८३
१६–नोखा (भीनमाल)	१	२०३
२०–रामड़ावास (जोधपुर)	१६	१२४, १६० २०१, २१५ से २२६, ३१५, ३१६ ३६२, ३६३
२१–रावतसर (हिसार)	२७	६६ से १०८, ११३, १३०, १३६, १५२, १५५ १५६ १७१, २७३, २७५, २८०, ३११, ३०३ ३४४, ३५१
२२–[illegible] (जोधपुर)	११	२२७ से २३३ ३०६, ३१८, ३१६, ३५६
२३–रोटू (नागौर)	१	२०६
२४–[illegible] (जोधपुर)	६	२०४ से २०८ ३४८
–[illegible] (बीकानेर)	४७	२० से २५ ८०, १०६, ११०, ११२, ११८ से १२ १३१ १४१ २७१, २८६, २६५, ३१७ ३५४
[illegible] (जोधपुर)	५६	१ से १०, २७ से ३७, ६६, १२८, १४२ से १४६ १५८, १५६, १६१, १६४ से १६६, १६८ से १६७ २१२, २६६ से २६८, २८३, ३०२, ३०३, ३०७, ३५२, ३५३, ३५५, ३६० ३६१

२७–सगरिया मडी (श्रीगगानगर)	६	७५, १५४, ३२६, ३३०, ३३६, ३६४
२८–मदलपुर (हिसार)	५	८७, ६३, १३३, १३४, ३२७

कुल याग—४१२। इनमे ४ प्रतियो का परिचय अध्याय ६ (जम्भ वाणी पाठ–सम्पादन) की 'भूमिका' म दिया गया है। शेप सामग्री (कुल सख्या–४०८) का परिचय आगे दिया जा रहा है—

१ कथा बाल चिरत, केसोदास कृत, छद सख्या–६१। पत्र सख्या–४, देशी कागज। आकार–९×४ इच। हाशिया–दाएँ, बाएँ–आधा इच। पक्ति–प्रति पृष्ठ–१०–११। अक्षर–प्रतिपक्ति–३३–४०। लिपिकार–अज्ञात, अनुमानत सवत १८५० के लगभग लिपिबद्ध। लिपि–सुवाच्य। प्राप्तिस्थान–लोहावट साथरी।
आदि–राग आशा ॥ श्री गणेशायनम ॥ लिषते कथा बाल चिरत ॥
दोहा–॥ लोहट लोका न कहै। सुत धन कर सभाल।
मो सुत साईना सहु। परिखि चराव पाल ॥१॥
अत–दिधि दई परचो दियो बिसन बिसोवा बीस।
कहे केसो पेल पुसी। जगल थल जगदीस ॥६१॥ कथा बाल चिरत सपूरण ॥

२ पत्र सख्या–३। देशी कागज। आकार–६×४ इच। हाशिया–दाएँ, बाएँ–डेढ इच। पक्ति–प्रतिपृष्ठ–६। अक्षर–प्रति पक्ति–३२। लिपिकार–अज्ञात, अनुमानत सवत १८५० के लगभग लिपिबद्ध। लिपि–सुवाच्य। इसमे ये रचनाएँ हैं —(क) उमाहो, वील्होजी कृत। २१ दोहे। (ख) पतवो, आलमजी कृत, १० दोहे तथा (ग) हरजस, १, ऊदोजी नण कृत, ८ दोहे। प्राप्तिस्थान–लोहावट साथरी।
आदि–श्री विष्णु जी ॥ सत्य छ लिष्यते उमाहो
बाबो जावू दीपे प्रगट्यो चौहचकि कीयो उजास।
अप दीठो केवल कथ, जिह गुर की हम आस ॥१॥
अत नाव दीरावो देवजी जा थे ऊतरीय पारि।
ऊदोजी बोलू बीनती आवागवणि निवारी ॥९१॥ श्री

३ पत्र सख्या–१०, देशी कागज। आकार–६×४ इच। हाशिया–दाएँ, बाएँ–१ इच। पक्ति–प्रतिपृष्ठ–१२। अक्षर–प्रति पक्ति–३२–३४। लिपिकार–अज्ञात, अनुमानत सवत १८५० के लगभग लिपिबद्ध। लिपि–सुवाच्य। इसमे ये रचनाएँ हैं —(क) उदे अतली की कथा, केसोदास कृत, छन्द–७७। आदि से ५ वें पत्र तक। (इसम रचयिता का नाम भूल से सुरजनदास बताया गया है)। (ख) कथा सस जोपाणी की, केसोदास कृत, छद सख्या–१०६। प्राप्तिस्थान–लोहावट साथरी।
आदि–श्री गणेशाय नम राग हसा ॥ दोहा ॥
श्री पति पहली सिवरीयें आदि गरु आदेस।
सभ गुरु सदा जिहि स्यवर सुर सेस ॥१॥

अन्त–जोधाणी सत लगी कथा गुणी चित लाय ।
केसो कहे ससार म मोष मुकति फल पाय ॥१०९॥
इति श्री साम जोधाणी की कथा सम्पूर्ण २ ॥

४ उमाहो, वील्होजी कृत । छन्द सख्या–२२ । पत्र सख्या–२ । पतला देशी कागज । आकार–८.५ × ४ इन्च । हाशिया दाए, बाए–आधा इन्च । पक्ति–प्रति पृष्ठ–१० । अक्षर–प्रति पक्ति–२८ । लिपिकार–अज्ञात । अनुमानत सवत् १८०० के लगभग लिपिबद्ध । लिपि–स्पष्ट । प्राप्तिस्थान–लोहावट साथरी ।

आदि–श्री गणेशाय नम लिष । उमाहो
जबू दीपे परगट्यो धोरंघरि दीपो उजास
अपदीठो केवल कप निर् गुर की बलिहार १

अन्त–कांहीं र मन को धणी कांहीं र गुर पीर
वील्हे कहे विसनोइयां आपा माथ विसन क सीर २२ इति उमाहो सम्पूर्ण ।

५. अवतार चरित जांभाजी का, वील्होजी कृत । छन्द सख्या–१४० । पत्र सख्या–६ । देशी कागज । आकार–६ × ४ इन्च । हाशिया–दाए, बाए–पौन इन्च । पक्ति–प्रति पृष्ठ–८–९ । अक्षर–प्रति पक्ति–३२–३३ । लिपिकार–अज्ञात । लिपि–स्पष्ट । अनुमानत सवत १८५० के लगभग लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान–लोहावट साथरी ।

आदि–श्री विसनजी लिषतू अवतार चरित जांभाजी का
दोहा–नयनि करु गुर आपन मऊ निरमल भाय ।
कर जोड़ै वदु चरन सीस नम्य नवाय ॥१॥

अन्त–धनि विहाडो रण धनि गुर परगट ससार ।
वील्ह कहै जां ओल्ख्यो । त उतरिसि पार ॥१४०॥ कथा सपूरण समापन ।

६ परची, गोकलजी कृत । छन्द सख्या–३७ तथा अन्त म इनके २ कवित्त और हैं । पत्र सख्या–३ । देशी कागज । आकार–६ × ४ इन्च । हाशिया–दाए, बाए–आधा इन्च । पक्ति–प्रति पृष्ठ–११ । अक्षर–प्रति पक्ति–३१–३२ । सवत् १८६६ म रामदासजी के शिष्य द्वारा लिपिबद्ध । लिपि–स्पष्ट । प्राप्तिस्थान–लोहावट साथरी ।

आदि–श्री विसनायनम अथ परची लिषत ।
सुपेख्यो स्वामी सोवन धार नमो निजनाथ जको निराकार ।
नरापति निरख कर मन राव पिछाण्यो दूद परस्या पाय ॥१॥

अन्त–जम जुरा जीव जोपू नहा कोई ताक न शिष अवर अरि ।
अमर आनुपम आतमा राप जासी जित आप हरि ॥२॥ समत १८६६ मिति मीगसर सुध ॥ वा मगल ॥ ४ ॥ सीध श्री साध १८ बावाजी रामदासजी रा सि ।

७ लोहापागल की कथा, केसोदास कृत । छन्द सख्या–१८७ । पत्र सख्या–६, गहरे भूरे देशी कागज, जीर्ण । आकार–६×४ इन्च । हाशिया–दाए, बाए पौन इन्च । पक्ति–प्रति पृष्ठ–१० । अक्षर–प्रति पक्ति–३०–३३ । लिपिकार–अज्ञात । अनुमानत सवत् १८०० के लगभग लिपिबद्ध । लिपि–पाठय । प्राप्तिस्थान–लोहावट साथरी ।

आदि-श्री विष्णजी सत्य सही ।। राग हसो ।।
दोहा-।।चरण याद चरचा करू ।। अवगति अकल अलेप ।।
छह् दरसण सेवा करू ।। रुद्र ब्रह्मा सूर सेप ।।१।।
अन्त-मिली जुति गुर आपो जोय ।। जुगति मकति हरि तूठा होय ।।
केस कथा कही कर जोडि ।। आवागुवणि चुकावौ चौडि ।।८७।।
इति श्री लोहापगल की कथा सपूरण ।। समापत अ ।। अर ।।अ ।।श्री।।श्री।।

८ जभ स्तुति, रचयिता-गोकलजी तथा जभाष्टक (सस्कृत मे) केवल ५ श्लोक । छन्द सख्या-४५ । पत्र सख्या-५ । देशी कागज । आकार-६ × ४ इन्च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इन्च । पक्ति-प्रति पृष्ठ-६ । अक्षर-प्रति पक्ति-२८-२६ । लिपि-स्पष्ट और सुवाच्य । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत १८७५-१६०० मे लिपि-बद्ध । प्राप्तिस्थान-लोहावट साथरी ।
आदि-अ स्वस्ति ।। श्री गणेशायनम ।। श्री जभ गुरव नम ।। श्री विष्णव नम
दोहा-।।अ ।। रिधिपति सिधिपति शीलपति सुरपति सदा सहाय ।।
गति दाता गोवद सुमरि ।। गोकल हरि गुण गा‹ ।।१।।
अन्त-गत क्रोध काम गत षढ्विकार ।। परब्रह्म रूप भजे जभमीश ५ दयाज्ञा

६ नुगरी सूगरी को झगडो, रचयिता-पोहकर । छन्द सख्या-१६ । पत्र सख्या-१ । आकार-२४×४ इन्च । देशी कागज । हाशिया-नगण्य । रचना की कुल पक्तिया-८१ (७३+८) । अक्षर-प्रति पक्ति-१५-१६ । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत १८७५ के लगभग लिपिबद्ध । लिपि-पाठय । प्राप्तिस्थान-लोहावट साथरी ।
आदि-श्री विष्णुजी अथ झगडा लिषत
हरिजन साकट नारि वाता बहोत अडी ।
कूप चडी पणीयार दोनो झगड पडी ।।
अन्त-वुर चीती मेला भया पोहकर ज्ञान विचार ।
राम नाम प्रताप त ए जीती हरिजन नार ।।१६।।
एती नुगरी सूगरी को झगडो सपुरण ।।

१० दूणपुर की कथा, रचयिता-वील्होजी । छन्द सख्या-६० । पत्र सख्या ४, देशी कागज । आकार-६×४ इन्च । हाशिया-दाएँ,बाएँ-पौन इन्च । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-८ । अक्षर-प्रति पक्ति-३६ । लिपिकार-अज्ञात । लगभग सवत १८५०-७१ मे लिपिबद्ध । लिपि-पाठय । प्राप्तिस्थान-लोहावट साथरी ।
आदि-लिषत दूणपर की कथा ।। राग आसा ।।
दुहा-नवण्य करू गुर आपणें । बढ्र चरन सुभाव
भगता तारण भव हरण । तीन लोक रो राव ।।१।।
अन्त-सतगुर सेती बाद करि । जीतौ सुण्यौ न कोय ।
वील्ह कहै सेवा कारे । नय नय निज मयो होय ।।६०।।
दूणपुर की क्या सपूरणम् ।।

११ विष्णु चिरत, ऊदोजी अडींग कृत । छन्द सख्या–१०६ । पत्र सख्या–११ । देशी कागज । आकार–६×४ इन्च । हाशिया–दाएँ, बाएँ–पौन इन्च । पक्ति–प्रति पृष्ठ–१० । अक्षर–प्रति पक्ति–२८ । फरसरामजी द्वारा सवत् १८८७ म लिपिबद्ध । लिपि–स्पष्ट और सुवाच्य । प्राप्तिस्थान–लोहावट साथरी ।

आदि–श्र श्री गणेशाय नम ।। विष्णु चिरत लिष्यते ।।

श्री गुर सत चरण सिर नाउ । अज्ञा होय विष्ण जस गाउ ।।

महा विष्ण क चिरत अपारा । सुर नर मुनी जन लहै न पारा ।१।

अ त–गाव मुनि जन सत ।। विमल जस भव जल तरण ।। १०६ ।। इति श्री विष्णु चिरत सपूरण ।। समत १८८७ ।। वर्षेति आसाड वद तीज मिन्य श्री री । १०८ । गगाविसनजी का चेलो फरसराम ।। लिष्यतू गी ग्रामी सिसवाल माई ।।

१२ कथा बाल चिरत, रचयिता–केसोजी । छन्द सख्या–६१ । पत्र सख्या–१० । देशी कागज । आकार–६ ५×३ २५ इन्च । हाशिया–दाएँ, बाएँ–पौन इन्च । पक्ति–प्रति पृष्ठ–७ । अक्षर–प्रति पक्ति–१८ । पीताबरदास द्वारा सवत १८७७, द्वितीय ज्येष्ठ कृष्णा नवमी को लिपिबद्ध । लिपि–सुवाच्य । प्राप्तिस्थान–लोहावट साथरी ।

आदि–श्री वायुसुतवेनम अथ बालचित लिषते राग आसा

दूहा–लोहट लोका न कहै सुत धन कर सभाल ।

मो सुत साईना सहु परिषि चराव पाल ।१।

अन्त–देवि दई प्रचौ दीयौ विस्न विसोवा बीस ।।

कहै केसो पेलों पुसी जगल थल जगदीस ।। ६१ ।। इति श्री कथा बाल चित सपूरण ।।१।। सवत १८७७ रा वर्षे मिती द्वितीय जैष्ठ कृष्ण पक्षे ६ लिपीकृत पीताबरदास ।। पत्र १० छ ।।

१३ पत्र सख्या–२५, देशी कागज । आकार–६ ५×३ २५ इन्च । हाशिया–दाएँ, बाएँ–पौन इन्च । पक्ति–प्रतिपृष्ठ–७ । अक्षर–प्रति पक्ति–१४–१८ । लिपिकार–अज्ञात । लिपिकाल–सवत् १८८८, जेठ सुदि ४ । लिपि–सुवाच्य(वद पर हरताल फिराकर सुद किया गया है) । प्राप्तिस्थान–लोहावट साथरी । इसमे ये रचनाएँ हैं —

(क) तलाव को कथा, केसोजी कृत । आदि से पत्र १२ तक । दोहा समूह–१२, प्रत्येक के बीच प्राय ५–६ चौपइयाँ हैं, जिन पर सख्या नही दी गई है ।

(ख) उद अतली को कथा, केसोजी कृत । छन्द सख्या–७६ । पत्र १२ स २५ तक ।

आदि–श्री गणेशायनम । लिषते तलाव की जस । राग सोरठ ।।

पारब्रह्म पहली नऊ ।। जग मडण जगदीस ।।

लष चोरासी दे चुगो तिण साम नवाऊ सीस ।।

अन्त–सतरास र छिडोतर । वद भादवो वर्षाण ।।

उदा अर अतली तणो । कथा चडी प्रवाण ।।७७।। इति श्री उद अतली की कथा सपूरणम् समत १८८८ वर्षे मिति जेठ सुद ।। ४ सोम ।।

१४ ऊदजी का कवित, रचयिता–ऊदोजी नण । सख्या–४५ । अपूर्ण, पत्र सख्या–६ ।

आठवां और अंतिम पत्र अप्राप्य । देशी कागज । आकार-६×४ इंच । हाशिया-दाएं, बाएं-पौन इंच । पंक्ति-प्रति पृष्ठ-११ । अक्षर-प्रति पंक्ति-३१-३३ । लिपिकार-अज्ञात । संवत १८५० के आसपास लिपिबद्ध । लिपि-स्पष्ट, सुवाच्य । प्राप्तिस्थान-लोहावट साथरी ।

आदि-श्री विसनजी सत्य ॥ लिपते कवित ऊदजी का ॥ छप छंद ॥

सासि ग्रास दातार ॥ तास विनि और न जाणों ।

जपों दिवस और राति ॥ सदा वीनऊ वापाणों ।

अंत-कुण जाण तीनि त्रिलोक ॥ भाजे घड रोप ठव ॥

धनि धनि स्वामी कौ नाव ऊदा ॥ अतनी मैं सब सारवै ॥५२॥

अचल विसन क ध्यावि ॥ अरथ साप धन लिछमीं ॥ निहच पाणीं पवण ॥

१५ वील्हैजी का कवित्त, रचयिता-वील्होजी । संख्या ४४ । अपूर्ण । प्राप्त पत्र संख्या-५ (१ से ४ तथा ८ वां) । देशी कागज । आकार-६×४ इंच । पंक्ति-प्रति पृष्ठ-११ । अक्षर-प्रति पंक्ति-३१-३४ । हाशिया-दाएं, बाएं-पौन इंच । साध गुमानीराम द्वारा संवत् १८८८ में लिपिबद्ध । लिपि-स्पष्ट । प्राप्तिस्थान-लोहावट साथरी ।

आदि-लिक्षत कवित वील्हैजी का ॥

धम क्रिया सुप होय । लाछ लिछमी धन पाव ।

धम उतिम कुल अवतर । जनमि दालद नहीं आव ।

अंत-आप सवारथ मन मुघि । कीया कुवधी पापडा ।

वील्ह कहै भव सागरां । बह्यौ जाहि रे बापडा ॥४४॥ इति श्री वील्हैजी का कवत संपूरण ॥ संवत १०८८८ (१८८८) रा मीति भादवा सुद १४ लिपत साध गुमानीराम श्री १०८ गंगारामजी का चेला । गंव रासेसर मधे । वार मंगल ॥

१६ शब्द वाणी श्री जाभजी की । सबद संख्या-१२०, बिना प्रसंग । पत्र संख्या-८५ । देशी कागज । आकार-६×४ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इंच । पंक्ति-प्रति पृष्ठ-८ । अक्षर-प्रति पंक्ति २७-३० । लिपिकार-अज्ञात । संवत १९०४ में लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-पीपासर साथरी ।

आदि-६॥ श्री गणेशायनम ॥ अथ शब्द वाणी श्री जाभजी की लिपते ॥

उ गुर चीन्हीं गुर चीन्हि पिरोहित गुर मुषि धम वषाणी ।

अंत-भलीयो होय तो भल बुधि आव बुरीयो बुरी कमाव । १२० ॥ शब्द वाणी श्री जाभजी संपूरण ॥ संवत् १९०४ रा वृषे मिती काती सुदि ८ ।

१७ तलाव की कथा, रचयिता-केसोदास । दोहा-समूह संख्या-१२, प्रत्येक के बीच कई चौपाइयाँ हैं जिन पर संख्या नहीं दी गई है । पत्र संख्या-२० । मशीन के बने कागज । आकार-६×४ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-एक इन्च । अक्षर मोटे और छोटे दो प्रकार के । पंक्ति-प्रति पृष्ठ-७ । अक्षर-प्रति पंक्ति-२२-२३ । श्री संतोषदास द्वारा संवत् १९३८ में लिपिबद्ध । लिपि-स्पष्ट और सुवाच्य । प्राप्तिस्थान-

पीपासर साथरी।

आदि-श्री जभेश्वराय नम लिषते कथा तलाव की राग सोरठ

दोहा-पारब्रह्म पहली नउ जग मडण जगदीस।

लष चौरासी दे चुगो तिण स्याम नवाउ सीस ॥१॥

अन्त-तीय जाभोलाव जो कलि कल्याण निवास।

जो जन मन इछा कर सब की पुर आस ॥ इति श्री केशवदास विचित तलाव की कथा सपूरणम् शुभभूयात्करयाणरस्तु पठणाथ मुक्तिदनृणम् सवत १६३८ रा वर्षे मिति आश्विन सुद १३ वार बुधवार लिषिकृतम् साध श्री १०८। वालकदासजी का शिष्य सतोषदासेन पठणार्थं स्वय शुभमस्तु कल्याण रस्तु उ तत्सत् विष्णु सत्य हरी श्रोनम् शातायतेजसे।

१८ अमावस्या री कथा, मयाराम कृत। छन्द सख्या-१४५। पत्र सख्या-१६। देशी कागज। आकार-१०×४ इच। हाशिया-दाएं, वाएं-लगभग एक इच। पंक्ति-प्रति पृष्ठ-७। अक्षर-प्रति पक्ति-२६-२८। श्री मोतीराम द्वारा सवत १६०७ में लिपिवद्ध। काली स्याही से मोटे अक्षर, लिपि-स्पष्ट और सुवाच्य। प्राप्तिस्थान-पीपासर साथरी।

आदि-श्री जमेस्वरायनम लिष्यते अमावस्या री कथा

कु डलीया-प्रथम वदू गुरदेव कू दुतिये वदू सब साध।

विष्णु वदू पुन तीसरे जाते मिटे जु व्याध ॥

अत-सीस धरण धर करत हू निमस्कार सो वार।

ईष्ट देव मम जभ गुरु लीला हित अवतार। ४५। इति श्री महाभारते श्री कृष्णार्जुन सवादे अमावस्या महात्मे कथा मयाराम विरचनया समाप्तोय सवत् १६०७ मिती जेठ सुदी ७ (?) वार इतवार लिषते साध श्री १०८ पीतवरदासजी का शिष्य मोतीरामजी गांव धोरू मध्ये कुमला गोदारे के लिषी।

१६ गोकलजी के छन्द आदि। अपूर्ण। पत्र सख्या-११। पतला देशी कागज। आकार-१०×४ इच। हाशिया-दाएं, वाएं-प्राय एक इ च। पक्ति-प्रति पृष्ठ-११। अक्षर-प्रति पक्ति-३६-३८। लिपिकार-अज्ञात। अनुमानत सवत १८५० के लगभग लिपिवद्ध। प्राप्तिस्थान-पीपासर साथरी। इसमे ये रचनाएं हैं —

(क) अवतार की स्तुति, छन्द-४७ (४५ + २), (ख) परची, छद-२७। दोनों के रचयिता-गोकलजी। लिपिकार न दाता की ८२ छन्दो की एक कृति माना है। (ग) स्तुति अवतार की, केसोदास कृत, सोरठे-१३। (घ) इदव छन्द, गोकलजी कृत। ३० छन्द और २ कवित्त, म निम कवित्त अपूर्ण।

आदि-श्री विसनु सत्य। लिषत स्तुत अवतार की। छन्द मोतीदाम।

दोहा-रिधपति सिधपति सीलपति। सुरपति सदा सहाय।

मति दाता गोविंद सुमरि। गोकल हरि गुण गाय ॥१॥

अन्त-लाज त्रिलोक मा राषि पूरा धर्णी विषम भ जल ल्घो वाट भारी।
सब सासो मिट प्रब पाया इसो सदा राखो सरण गदाधारी ॥ आदि अ-।

२० गोक्लजी के छन्द, सख्या-३२। अपूर्ण। १५ पत्रो की प्रति, जिसके पहले ५ पत्र अप्राप्य। देशी कागज। आकार-८.५×४ इन्च। हाशिया-दाएँ, बाएँ-१ इन्च। पक्ति-प्रति पृष्ठ-९। अक्षर-प्रति पक्ति-३१। लिपि-स्पष्ट। लिपिकार-अज्ञात, लगभग सवत् १८५० के आसपास लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-लालासर साथरी।

आदि-न थघु ॥ तदि हुतो तुही त्रिक्म अगम अगाध अजोनी सिंभू अलख निरजण
अकल कलु ॥ आकार करण घटबरणि निवाजण भगत उधारण भाव कीयो ॥
अन्त-रह्या वाकी तका बचन पालो त्रिसन किसन किरपा करो काज सारी ॥
दास गोकल कहै आस पूरो अलष अवर आदि पुरष ओट थारी ॥२॥
इति श्री गोक्लजी का छन्द सपूर्ण समाप्ता ॥श्री॥श्री॥श्री॥

२१ परची, गोक्लजी कृत। छन्द सख्या-३७। पत्र सख्या-३। देशी कागज। आकार-८.७५×८ इच। हाशिया-दाएँ, बाएँ पौन इन्च। पक्ति-प्रति पत्र-९। अक्षर-प्रति पक्ति-३०-३२। लिपिकार-अज्ञात। अनुमानत सवत १८७५ के लगभग लिपिबद्ध। लिपि-पाठ्य। प्राप्तिस्थान-लालासर साथरी।

आदि-श्री विष्णु जी अथ परची लिषत ॥
सुपेष्यो सामी सोवन धार नमो निज नाथ जको निराकार ॥
नरापति निरप कर मन राव पिछयाणौं दुध परस्या पाव ॥१॥
अन्त-जपीयो जदि जाप रिद हरि एक आयो अघ मोचण आप अरेष ॥
भण बड भूप सु ण्यो ससार निरजणनाथ ऊतारण पार ॥३७॥ श्री विष्णुजी

२२ बारषडी, ऊधवदास कृत। (अपर नाम-क्क्का छत्तीसी)। छन्द सख्या ३७। पत्र सख्या-६। जीर्ण। देशी कागज। हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इन्च। पत्र सख्या-३, ४ तथा ६ अपेक्षाकृत मोटे अक्षरों मे लिखे गये हैं। पक्ति-प्रति पृष्ठ ११। छोटे अक्षरों वाले पत्रो में, अक्षर-प्रति पक्ति-३१ ३४। शेष मे २४-२७। लिपिकार-रतनदास। रचनाकाल-सवत १८८८ है और इसी के आसपास इसका लिपिकाल भी होना चाहिये। लिपि-विशेष स्पष्ट नही है किन्तु पाठ्य है। प्राप्तिस्थान-लालासर साथरी।

आदि-श्री विष्णजी सतगाही ॥ क्वत कु डलीया ॥
क्का केवल विष्ण भजो हृद घर विसवा (स) ॥
आन भरोसो छाड दो राव राम की आस ॥
अन्त-जा दिन मैं सपुरण भइ तिथ तीज बुधवार।
उधव वरस चोरासीयो क्हीय समत अठार ॥३७॥ इति श्री वारपरी सपूरण

१ गाव सारगपु मधे लिपत साध परमरामजी का सिष रतनदास की। जे कोइ वाच विच तो नुण मान लिजोजी।

२३ तेजाजी के छन्द। रचयिता-तेजा चारण। छन्द सख्या-१६२। पत्र सख्या-७। देशी

कागज । आकार-१०×५ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-१ इंच । छूटे हुए अक्षर हाशिया में लिखे गए हैं । पंक्ति-प्रति पृष्ठ-१३-१४ । अक्षर-प्रति पंक्ति-३७-४० । लिपिकर-अज्ञात । संवत १८७६ में लोहावट गाँव में लिपिबद्ध । लिपि-स्पष्ट । प्राप्तिस्थान-लालासर साथरी ।

आदि-श्री विसनु जी सत्य छ । लिषत तेजजी का छंद ॥

गाथा-अवगत्य तु प्रगट आजू कोडयां तारण काजू ।

सहि मडण माहराजू ॥ सोह साम्य सुभराजू ॥१॥

अंत-पच वरस न बर्ले पच दिन पथ पसलाद को । ता तल दोर तप तेजा ॥

ताह तल्य तसकरा नारि मायोजसे । अलह नवी ताज के भया न हेजा ॥६॥

१६२ ॥ इति श्री तेजजी का छंद संवत गीत गुण सपूरणम् ॥ समत १८७६ रा मिती माघ सुद ५ वार बमवार ग्राम लोहावट मध्य लि० ॥

२४ सस जोपांणी की कथा, रचयिता-केसोजी । छंद संख्या-१०५ । पत्र संख्या-६, देशी कागज । पत्र जरा से मुडने पर सूखे पत्ते की तरह टूटते है । आकार-६×४ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इंच । पंक्ति-प्रति पृष्ठ १० । अक्षर-प्रति पंक्ति-३६-४२ । पीताम्बरदास द्वारा स० १८८१ में लिपिबद्ध । लिपि-सुवाच्य । प्राप्तिस्थान-लालासर साथरी ।

आदि-श्री विष्णुजी कथा समा जोपाणी की राग हसा ।

दोहा-निरहारी पहली नउ सतगुर साम सुजाण ।

एक सत निवाज्यौ सामजी वाइ करू वषाण ॥१॥

अंत-इण करणी कैसौ कहै आवगवणि न होय ।

जसौ जाणीं तसौ कही जोडी कथा सपूण होय ॥१०५॥ इति श्री सस जोपाणी की कथा सपूरण लि० पीतांवरदासेण स० १८८१ मिगसर सुदि ११ ॥

२५ उद अतली की कथा, रचयिता-केसोजी । (इसमें भूल से इसके रचयिता सुरजनजी बताए गए हैं) । छंद संख्या-७७ । पत्र संख्या-५, देशी कागज । आकार-६×४ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इंच । पंक्ति-प्रतिपृष्ठ १० । अक्षर-प्रति पंक्ति-३२-३६ । लिपि-स्पष्ट और पाठ्य । लिपिकर्ता एवं काल-पीतांवरदास द्वारा संवत् १८८१ में लिपिबद्ध । प्रारम्भ में पहले पत्र के प्रथम पृष्ठ पर ॥ अथ उदाजी की कथा ॥ श्री ॥ लिखा है । प्राप्तिस्थान-लालासर साथरी ।

आदि-श्री विष्णुजी कथा उदा अतली की राग हसो ।

दोहा-धीरत पहली सिवरीय आदि गुरु आदेस ॥

ब्रम गुरु सिवरै सदा जहि सवरे सुर सेस ॥१॥

अंत-निध दसमौ पुरवा नषत मगलवार विचार ।

जन सुजन की बीनती आवगवण निवार ॥७७॥ इति श्री कथा सपूरण लि० पीतांवरदासेण स० १८८१ मिगसर सु० १०

२६ पाथी । देशी कागज के बीच में सिलाई की गई है । आकार-६×८ इंच

इन्च। हाशिया दाएँ, वाएँ-साधारणत पौन इन्च । १२८ फोलियो तक लिपिबद्ध, बाद के बहुत से पन्ने खाली हैं। तीन चार भिन्न हाथो की लिखावट मे। लिपिकारो के नाम कही कही दिए गए है जिनका उल्लेख यथास्थान आगे है। सवत १८७६-१८६७ के बीच लिपिबद्ध। लिपि-सामान्यन पाठ्य। लिपिकार अलग अलग होने से प्रति पृष्ठ मे पक्तिया की सख्या भी भिन्न भिन्न है। **प्राप्तिस्थान**-श्री रामचन्द्र थापन, गाव मुकाम। इसम ये **रचनायें हैं —(क) विष्णू पजर स्तोत्र मन्त्र, ध्यानम, विष्णु मन्त्र, ध्यान, २८ नाम** आदि सस्कृत मे। २८ श्लोक। लिपत ताजा अतीत वडे तकिए का लिपावत सुदराजी का चेला। (ख) **सवद जाभजी का प्रसग समेत।** १२२ सवद। पवित-प्रतिपृष्ठ-२२। अक्षर-प्रति पक्ति-१६-२४। प्रसग और प्रश्न लाल स्याही म।

आदि-श्री विष्णजी सत्य ॥ लिपतु सवद भाभनी का आदि सवद वाणी

बाभण न प्रचो दीया ॥ त समै को सबद श्री बायक ॥

गुर चीन्हो गुर चीन्ह पिरोहित ॥ गुर मुखि धरम वषाणी ॥

अन्त-**बिसन बिसन तौं भणि रे प्राणी । प क लाप उपज ।**

रतन काया वकुठे वासो। जुरा मरण भव भाज ॥१२२॥

इतिश्री सबद श्री वायक सपूरण॥

दोहा-**अनत सबद सतुगुर कह्या। बरस चोरासी बाणि ॥**

मायजी के कठ रह्या। लिष्या बील्है सुजाणि ॥१॥

(ग) **धू चिरत, जन गोपाल** कृत। छद सख्या-२१६। (घ) **गोकलजी के छन्द।** गोकलजी कृत। छन्द सख्या-३२। इनकी लिपि विशेष सुन्दर नही है। (ङ) **मावस्या री कथा, मयाराम** कृत। छन्द सख्या-१४४। कई हाथा की लिखावट मे। लिपि-काल-स० १८७६ चत सुदि १० वार सोमवार। (च) **प्रहलाद चौरत, केसोजी** कृत। छन्द-५६६। स० १८६७ माघ सुदि ५, बुधवार को थापन तेजा मोटाणी द्वारा गाव वगला म लिपिबद्ध। (छ) **पाडवगीता, शकराचाय** कृत (सस्कृत मे) ११७ श्लोक। (ज) **हरिनाम माला** (सस्कृत) १६ श्लोक। (झ) **विष्णुलहरी-शकराचाय** कृत (सस्कृत) ५ श्लोक। (ञ) **गगाष्टक, शकराचाय** कृत (सस्कृत) श्लोक ८। (ट) **देवाष्टक, शकराचाय** कृत (सस्कृत) श्लोक ८।

आदि-श्री विष्णजी सत्य ॥ श्री गणेशायन ॥ उ अस श्री विष्णुपज्र सतोत्र मन्त्रस्य ॥ नारद ऋषिरनुष्टप छद। श्री विष्णु परमात्मा देवता अह बीज मोह शक्ति। **अन्त-नमो देव देवाय कमल निवासी नमो देव देवाय वकुठवासी** इति श्री शकराचाय विरचिताया देवाद्विदेव स्तोत्र सपूरण।

२७ **जांभजी का अवतार चित्त कथा, रचयिता-बील्होजी।** छद सख्या-१४०। पत्र सख्या २६, देशीकागज। आकार-६ ५"×३ २५"। हाशिया-दाएँ वाएँ-पौन इन्च। प्रथम और द्वितीय पत्र पर बीच मे ६ पखुडियो वाले २ चक्र बनाये गये हैं। लिपि-कार-पीतावरजी, सवत १८८० के लगभग लिपिबद्ध। लिपि-स्पष्ट। **प्राप्तिस्थान**-

लोहावट साथरी ।

आदि-श्री हनुमत नम ॥ दोहा ॥ नमनि करूँ गुर आपन नऊँ निरमल भाव ॥
कर जोडे बंदूँ चरण सीस नवाइ मवाय ॥१॥

अन्त-लिपीकृत पीताम्बर श्री १०८ विष्णुदासजी तत्छिष्यश निवाश्रेप्वा जपुर मध्ये ॥

२८ पत्र सख्या-२ । देशी कागज । आकार-६ ५×३ २५ इन्च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इन्च । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-६ । अक्षर-प्रति पक्ति-२१-२४ । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत १८५० के लगभग लिपिबद्ध । लिपि-स्पष्ट । प्राप्तिस्थान-लोहावट साथरी । इसम ये रचनाएँ हैं —(क) पुन्ह पतीस, (ख) लुरा, (ग) सती लुगाइयां की पुन्ह, (घ) राजवीयारी वीगत्य ।

आदि-श्री विसनजी ॥ लिष्यतु पु ह पतीस डू में भादु की पुन्ह वूद थीलहरी की पुन्ह रावल जाणी की पुह ॥

अन्त राजवीयारी वीगत्य सिकदर लोदी १ महमदपा लोदी २ दुदो राठोड ३ सातल राठोड ४ जनसी भाटी ५ सागा सीमादीयो ६ या की पुन्ह राजवीया मगाई एती लुरा पुन्ह सपुणम् ॥

२९ गोक्लजी का छन्द, रचयिता-गोक्लजो । पत्र सख्या-१०, देशी कागज । आकार-६×४ इन्च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-आधा इन्च । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-११ । अक्षर-प्रतिपक्ति-३४-३८ । लिपिकार-अज्ञात । लिपिकाल-सवत १८६२ । लिपि-स्पष्ट । प्राप्तिस्थान-लोहावट साथरी । इसम कवि की दो रचनाएँ है —(क) अवतार विगति छन्द, सख्या-४५, पत्र ४ के आरम्भ तक । (ख) इन्दव छन्द सख्या-३२ ।

आदि-श्री विसनजी सत्य हाय छन्द ।

दोहा-रिधपति सिधिपति सिलपत सुरपति सदा सहाय ॥
गत दाता गोविंद सुमरि गोक्ल हरि गुन गाय ॥१॥

अन्त-रह्या वाको तक्त वचन पालो विसन किसन किरपा करो काज सारो ॥
दास गोक्ल कहै आस पूरो अलप ऊवरू आदि पुरष ओट थारो ॥२॥ इतिश्री गोकलजी का छन्द सपूर्ण सवत १८६२ मिती भादवा वद ३ वार मगल ॥

३० अमावस्या कथा, मयाराम रचित । छन्द सख्या-१४४ । पत्र सख्या-१०, देशी कागज । आकार-६×४ इन्च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इन्च । पक्ति-प्रति पृष्ठ-१० । अक्षर-प्रति पक्ति-२६-३८ । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत १८७५ के लगभग लिपिबद्ध । लिपि-पाठ्य । प्राप्तिस्थान-लोहावट साथरी ।

आदि-श्री गणेशाय नम श्री विष्णुजयति अथ मावस्यारी कथा लिषत

कुण्डलाया-प्रथम बदू गुरदेव कू दुतिये बदू सब साध
विष्णु बदू पुन्र तोमर जात मिटत जु अगाध ।

अन्त-सात धरणि परि करत हू नमसकार सो बार
इष्ट देव मम श्रभ गुर सोला हित अवतार १४४ इति श्री महाभारत श्री कृष्णार्जुन सवाद अमावस्या माहात्म कथा मयाराम विरचनाया सपूर्ण भवत ।

३१ तलाव की कथा, रचयिता-केसौजी। दोहा समूह सख्या-१२, बीच मे आई चौपइया की सख्या नही दी गई है। पत्र सख्या-४। देशी कागज। पत्र-जीरा, जरा सा मोडने पर टूटते हैं। आकार-१०×४ इच। हाशिया-दाऐं, बाऐं-पौन इच। पक्ति-प्रति पृष्ठ-१०। अक्षर-प्रति पक्ति-३५-३६। लिपिकर्ता-अज्ञात। लिपिकाल-सवत् १८७६। लिपि-सामान्यत पाठ्य। प्राप्तिस्थान-लोहावट साथरी।

आदि-श्री विसनजी स्यत्य सही लिषते तलाव की कथा राग सोरठ

पारब्रह्म पहली नऊ जग मडण जगदीस
ल्ष चोरासी दें चुगो तिण साम नवाऊ सीस ॥

अत-वड तीरथ को गुण यो केस गुण गू थि सुणायो
दिल अ तर दूजि न आणी जत माहि कह्यो सत जाणी ॥१२॥

तलाव की कथा सपूरण १ सवत १८७६ रा मिती भादवा सुदी ४ वार मगल ।१॥ विष्णु विष्णु विष्णु विष्णू श्री।

३२ अमावसरी कथा, रचयिता-मयाराम। छन्द सख्या-१४५। पत्र सख्या-१०। देशी कागज। आकार-६×४ इच। हाशिया-दाऐं, बाऐं-सामान्यत पौन इच। पक्ति-प्रतिपृष्ठ-११। अक्षर-प्रति पक्ति-३२-३६। प्रथम पत्र पर बीच म एक ६ पखुन्यिा वाला (सफेद, पीला, काला व लाल रगो मे) चक्र बनाया हुआ है। परसराम न जाभा म सवत १८८७ म लिपिबद्ध की। प्राप्तिस्थान-लोहावट साथरी।

आदि-श्री भभेस्वरायनम ।॥ अथ अमावसरी कथा लिषते ॥

॥ कु डलिया ॥ प्रथम वदौं गुरदव कू ॥ दूतिये बदू सब साध ॥
विष्णु बदू पुन तीसर ॥ जात मिट जु व्याध ॥२॥

अत-इति श्री महाभारते श्री कृष्णा अजु न सवाद अमावस महातम कथा मयाराम विरचिताया समापताय ॥ सवत १८८७ रा वृषे मिती असा श्रुदि १० बुधवार लिपत साधश्री १०८ हरक्मिनदास महतजी का सिष्य परसराम तीथ जाभा मध्ये १

३३ विष्णु चरित्र, ऊधोदास कृत। छन्द सख्या-११०। पत्र सख्या-१२, देशी कागज। आकार-६×४ इच। हाशिया-दाऐं, बाऐं-१ इन्च। पक्ति-प्रतिपृष्ठ-६। अक्षर-प्रति पक्ति-२५-२६। लिपि-सुवाच्य। लिपिकार-अज्ञात। लिपिकाल-सवत १६२५। प्राप्तिस्थान- लोहावट साथरी।

आदि-श्रा श्री गणेशायनम अथ विष्णु चरत लिष्यते ॥

॥ चौपाई ॥ श्री गुर सत चरण सिर नाऊ ॥ अज्ञा होय विष्णु जस गाऊ ॥
महा विष्णु के चरित अपारा ॥ सुर नर मुनि जन लहै न पारा ॥

अत-। सोरठा। हरि अवतार अनत ॥ अनत चरित अवगत तणा ॥
गाव मुनि जन सत ॥ विमल जस भव जल तरण ॥११०॥ इति श्री विष्णु चरित्र सपूरण सवत १६२५ ॥ वार सोमवार मिती अमाजो वदि ६ ॥ उ हरि तत सत ॥

३४ विष्णु चरित, ऊधोदास कृत। छन्द सख्या-११०। पत्र सख्या-६, देशी कागज।

श्राकार-६×४ इन्च। हाशिया-दाएँ, बाएँ-आधे से पौन इन्च तक। पंक्ति-प्रति पृष्ठ-११। अक्षर-प्रति पंक्ति-३४-३६। सवत् १८८५ म साधु गोविंदराम द्वारा लिपिबद्ध। लिपि-पाठ्य। प्राप्तिस्थान-लोहावट साथरी।

आदि-श्री स्वस्ति श्री गणेशायनम ॥

चौपई-श्री गुर सत चरण सिर नाऊ आज्ञा होय विष्ण जस गाऊ

महाविष्णु के चरित अपारा सुर नर मुनि जन लहै न पारा

अंत-दुहा सोरठा-हरि अवतार अनत अनत चरित अवगत तणा

गाव मुनि जन सत विमल जस भव जल तरण ॥११०॥

इति श्री विष्णु चरित सपूरणम् १॥ सवत्सर १८८५ रा मिति काति सुदि ५ लि० साधु गोविंदरामेण ग्राम जाभो जभ मदिर

३५ कका छतीसी, रचयिता-ऊधोदास। छन्द सख्या-३७। पत्र सख्या-६, देशी कागज। आकार-६×४ इन्च। हाशिया-दाए, बाएँ-पौन इन्च। पंक्ति-प्रतिपृष्ठ-१०। अक्षर-प्रति पंक्ति-२५-२६। फरसराम द्वारा सवत १८६७ मे लिपिबद्ध। लिपि-पाठ्य। प्राप्तिस्थान-लोहावट साथरी॥

आदि-श्री विष्णुजी। अथ कका छतीसी लिषते॥

कका केवल कृष्ण भज हृद धर विसवास

आन भरोसो छाड दे। राष राम की आस ॥२॥

अन्त-अपर पतीस उपर कवत सती विचार॥

उधव वरस चोरासीयो कहीय समत अठार ॥३॥ (३७)

इति श्री वावडी सपूरण १ सवत ॥ १८६७। रा वर्षे मिती असाढ वदी ॥६॥ श्री री लिपी कृत साध्य श्री री ॥१०८। गगाबिसनजी को शिष्य ॥ फरसराम लिष्यतु। ग्राम सोसवाल। श्री री लिपतु बीच तार रारामम

३६ पहलाद चरित, रचयिता-केसोदास। छन्द सख्या-५६४। पत्र सख्या-३५, देशी कागज। आकार-६×४ इन्च। हाशिया-दाएँ, बाएँ-१ इन्च। पंक्ति-प्रति पृष्ठ-११। अक्षर-प्रति पंक्ति-३०-३४। साधु गोविंदराम द्वारा सवत १८८५ म लिपिबद्ध। (८५ पर हरताल फिराई गई प्रतीत होती है) लिपि-सुवाच्य। प्राप्तिस्थान-लोहावट साथरी।

आदि-श्री गणेशायनम रागमारू-दोहा-

नारायण पहली नऊ स्वामी सब सुजाण

आदि भगत पहसु कथा प्रहलाद चरित प्रमाण १

अन्त-मैं दावण पड्यो दीन को सतगुरु कर सहाय

पांच सात नव बाहरा अब क मोहि मिलाय ५९४ इति श्री पल्हाद चरित सपूरण सवत्सर १८८५ रा मिती मधु वदि (३ ?) दनोवारे (?) एतान्नी लिपिकृत साधु गोविन्दरामण ग्राम मोख्या मध्ये

३७ मगलाष्टक, केसोजी कृत। छन्द सख्या-४३। पत्र सख्या-३, मोटा देशी कागज।

आकार-११ × ५ इन्च । पक्ति-प्रति पृष्ठ-११ । अक्षर-प्रति पक्ति-३३-३७ । हाशिया-दाएँ, बाएँ-साधारणत आधा इच । लिखावट-मोटे अक्षरो म, जो एकाध स्थल पर स्याही फल जान से अपाठ्य, अ यथा समा यत पाठ्य। लिपिकार-अज्ञात। अनुमानत सवत १९५० के आसपास लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-लोहावट साथरी ।

आदि-श्री गणेशायनम अथ मगलाअष्टक लिषते

दुहो-श्री गुरन पति वृहस्पति कहै देवन पति गोविंद
देवन पति ब्रह्मा वद सायन पति पति अ ब १

अन्त-विघन हरण मगल कर ब्रह्म ड थभण विण थभ
अनड चित कैथा विघु नमो उघव पत गुरु जभ ४३

इसके पश्चात धरती के ३० नाम हैं, जिसकी अ तिम पक्ति यह है—
कव अप हो कव पणी तीस नाम धरती तणा १

३८ विष्ण छतीसी, छ द-३७ तथा छप्पय, छ द ४१ । दोना के रचयिता-वील्होजी । पत्र सख्या-१०, देशी कागज । आकार-१० × ५ इ च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-१ इ च । पहले तीन पत्रा म पक्ति-प्रतिपृष्ठ-१० । अक्षर-प्रति पक्ति ३०-३२ । पत्र सख्या ४ से १० तक पक्ति प्रति पृष्ठ-१३ । अक्षर-प्रति पक्ति-३०-३२ । साधु हरिकृष्णदास द्वारा सवत १८९३ म लिपिवद्ध । लिपि-पाठ्य । प्राप्तिस्थान-श्री धाक्लराम विष्णुदत्त बिश्नोई, दुतारावाली ।

आदि-श्री विसनु सत्यायनम विष्णु छतीसी लिषते

कुडलीया-ऊ कारे आद गुर निरजण निरकार
आकारे जुग्य जोगीयौ आप रह्यौ निराकार

अ त-छ राज्यद्र के थे अवर आचारे ओलपीयो
वील्ह कहै मागू पु यह जा मुक्त न हायो दीयो इती वी‍ल्हजी के छपइए सपूरण सवत १८९२ मिती माघ वद २ लिपते साध हरिविष्णदास

३९ पत्र सख्या-९, दशी कागज । आकार-१० × ५ इ च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-साधारणत १ इ च । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-१२ । अक्षर-प्रति पक्ति-३८-४१ । लिपिकार-अज्ञात, अनुमानत सवत १८५० के लगभग लिपिवद्ध । लिपि-स्पष्ट । प्राप्तिस्थान-श्री धाक्लराम विष्णुदत्त बिश्नोई, दुतारावाली । इसम ये रचनाएँ हैं—(क) कथा गुगलिये की, वील्होजी कृत । छ द सख्या-८६ । (ख) कथा झोरडा की, वील्होजी कृत । छ द सख्या-३३ । (ग) बाल लीला केसोजी कृत । छ द सख्या-६१ ।

आदि-श्री विसनु जी लिपते कथा गुगलिए की राग आसा

दाहा-जगत गुरु जगल बस वासो मझ बणाह
भेद प्रकास भाव करि गुर तारसी घणाह १

अ त-देवि दई परचो दीयो विसन विसोवा विस
कहै केसो पेल पुसी जगल थल जगदीस ॥६१॥ एती श्री बाल लीला केसोदास विरचता सपुरण ॥३॥ (९वें पत्र का प्रथम पृष्ठ) इसके पश्चात् ९वें पत्र के

दूसरे पृष्ठ पर संवत्सरी है-अथ साठ संवत्सर लिखते   इति श्री संवत्सरी संपूर्ण ॥

४०. पत्र संख्या ७। आकार-१०×५ इंच। देशी कागज। हाशिया-दाएँ, बाएँ १ इंच। पंक्ति-प्रतिपृष्ठ-१४, किन्तु अंतिम पृष्ठ पर १५ है। अक्षर-प्रति पंक्ति-३८-३८। लिपिकार-अज्ञात। लिपिकाल-संवत् १८८४। लिपि-पाठ्य, किन्तु जगह जगह हरताल फिराई हुई है। प्राप्तिस्थान-श्री धोकलराम, विष्णुदत्त विष्णोई, दुतारांवाली। इसमें ये रचनाएँ हैं —(क) कथा जैसलमेर की, वील्होजी कृत। यह कथा ८८ दोहे-चौपइयों में, इसके पश्चात् २१ कवित्त और सा गोद हैं। लिपिकार के अनुसार ९० दोहे-चौपई तथा २१ कवित्त-सब इस कथा में हैं, जो भूल है। (ख) फुटकर सवइये-संख्या ८। इनमें ७ केसोजी के और १ किसोर का है।
आदि-॥ श्री बिसनजी सत सही लिखते कथा जैसलमेर की राग आसा
दोहा-सतगुर आगे विनती कर बिलगु पाए
    रह कारण गुण बरणउ आपर दो समजाए १
अंत-प्रगटे जद रूप निरंजण वस्तु जांभथ नांव कहायण कूं
    भगवां कपडा करि जाप जप सभरथल जाग जगायण कूं
बाएँ हाशिए में-गुर ध्यान ही ध्यान को ध्यांन धर यहू लोकन को समझायण कूं
    धरणी उर जघ पाव न धरहू बल हौं २ इन पांवन कौं ८ इति संपूर्ण

४१. हरि प्रहलाद चिरत (अपरनाम-लघु प्रहलाद चिरत), रचयिता-हरचंदजी। अपूर्ण। केवल अंतिम-३४ वां पत्र नहीं है। प्राप्य छन्द-१६९। पत्र संख्या-३३, मोटा देशी कागज। आकार-९×४ इंच। हाशिया-दाएँ, बाएँ-सवा इंच। पंक्ति-प्रतिपृष्ठ-१८-२०। लिपिकार-अज्ञात। अनुमानतः संवत् १८७५ के लगभग लिपिबद्ध। लिपि-स्पष्ट और सुंदर। प्राप्तिस्थान-श्री धोकलराम विष्णुदत्त विष्णोई, दुतारावाली।
आदि-श्री हरयेनम ॥ श्री गुरुभ्योनम ॥ श्री अनंत कोट वंदनायनम ॥ हरये ॥
    अथ ग्रंथ हरि प्रहलाद चिरत लिक्षते
दुहा-जभ गरू अब द्रवहू ॥ मम देहु बुध वि २ साल
    गाये चहु प्रहलाद गुन ॥ पुनि हरि चरित रसाल ॥१॥
अंत-॥ दुहा ॥ श्रीमती श्री भागोत में। वरणे चिरत अपार।
    तिनकी आस देष के। कछु एक किये उचार ॥१६९॥
    नारद कहै युधिष्टर हो। सुणहु परीक्षित ।

४२ हरि प्रहलाद चिरत, रचयिता-हरचंदजी। छन्द संख्या-१७२। पत्र संख्या-२६, देशी कागज। आकार-८.७५×४ इंच। हाशिया-दाएँ, बाएँ-१ इंच। पंक्ति-प्रति पृष्ठ-७। अक्षर-प्रतिपंक्ति-२२-२५। लिपिकर्ता-अज्ञात, संवत १९०० के आसपास लिपिबद्ध। लिपि-पाठ्य। प्राप्तिस्थान-श्री धोकलराम विष्णुदत्त विष्णोई, दुतारावाली।
आदि-अथ ग्रंथ हरि प्रहलाद चिरत लिक्षते

॥ दुहा ॥ जम गुरु अब ब्रबहु ॥ मम देहु बुध विसाल ॥
गाये चहु प्रहलाद गुन पुनि हरि चरित रसाल ॥१॥
अन्त-आस पास की साप ले ॥ कीए ग्रथ प्रकास ॥
दया सब सत राखियो ॥ हरचद तुमरे दास ॥१७२॥
इनि श्री लघु हरि प्रह्लाद चिरत सपूरण ॥ शुभमसतु किलाण रसतु ॥ ररररर

४३ (क) अमावसरी कथा, मयाराम रचित । छन्द सख्या-१४४ । तथा (ख) बील्हेजी कृत १० फुटकर कवित्त । पत्र सख्या-७ । देशी कागज । आकार-११.५×५ इच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-१ इच । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-१४ । अक्षर-प्रति पक्ति ४०-४३ । लिपिकार-अज्ञात । लिपिकाल-सवत १८६७ । लिपि-सुपाठ्य । प्राप्तिस्थान-श्री धारूलराम विष्णुदत्त विष्णाई, दुतारावाली ।
आदि-श्री गणेशायनम ॥ श्री विष्णो जयति ॥ अथ अमावसरी कथा लिषते ॥
॥ कुडलीया छन्द ॥ प्रथम बदू गुरदेव कौं ॥ दुतियै बद्र सब साध ॥
बिष्णु बदु पुनि तीसर जात मिटत जु व्याधि ॥
अन्त-धुगर कुकरणौं दपव अकलि हींण उबस हिये
बीह्ल कहैं जो पारवौ कुगर कुपात न बदिये १० । राम राम ।

४४ प्रह्लाद चिरत, केसोजी कृत । छन्द सख्या-५९४ । अपूर्ण । प्राप्त पत्र सख्या-२० । कुल पत्र सख्या ३९ है, जिनमे सख्या-७ से २५ तक, १९ पत्र अप्राप्य हैं । प्रतिजीर्ण । देशी कागज । आकार-९ २५×८ २५ इच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-१ इच । पक्ति प्रति पृष्ठ-११ । अक्षर-प्रति पक्ति-२९ से ३१ । सवत १८८४ म साधु श्री हरकिसनदासजी के शिष्य परसराम द्वारा लिपिबद्ध । लिपि-पाठ्य । प्राप्तिस्थान-श्री धारूलराम विष्णुदत्त विष्णोई, दुतारावाली ।
आदि-श्री भभेरवराय नम ॥ श्री परमात्मनेनम ॥ अथ प्रह्लाद चिरत लिषत ॥
राग मारू ॥ दोहा ॥ नारायण पहली नऊ ॥ सामी सरब सुजाण ।
आदि भगति कहिस्यौं कथा ॥ पहलाद चिरत परवाण ॥१॥
अन्त-मैं दावण पकड्यो दीन कौ ॥ सतगुर कर सहाय ॥
पाच सत नव वाहरा । अबक मोहि मिलाय ॥९४॥ इति श्री प्रह्लाद चिरत केसवदास विरचिताया सपूरण ॥ भवेत ॥ सवत १८८४ रा वर्षे मिती श्रावण सुदि ११ गुरवार ॥ लिषते साध श्री १०८ महत हरकिसनदासजी रा शिष्य परसराम ॥ तीरथ जाभोलाव मधे ॥ पोथी साध मायावराम की

४५ अवतार क्या, सुरजनदासजी रचित । छद सख्या-२३६ । पत्र सख्या-२० । बीसवें पत्र म केसोजी के ३ और किसोर का १ छन्द और लिखे गए हैं । देशी कागज । आकार-९ ७५×५ इच । हाशिया-साधारणत -दाएँ, बाएँ-एक इच । लिपिकार साहबरामजी के ज्येष्ठ पुत्र गणेशरामजी । अनुमानत सवत १९४० मे लिपिबद्ध । लिपि-स्पष्ट । अक्षर-प्रति पक्ति २७-२८ । पक्ति-प्रति पृष्ठ-१०-१२ । (प्रथम पृष्ठ म ९ ही पक्तियाँ हैं) । प्राप्तिस्थान-श्री धारूलराम विष्णुदत्त विष्णोई, दुतारावाली ।

आदि-॥ लिपते अवतार कथा ॥

॥ दो० ॥ वेद कतेब ने पुली गढ़ मढ़ किवी तयार

जीव पड जोयौ टल सतगुर ले अवतार १

अन्त-(पत्र १९ से) सतगुर सेती वीनती अरज करै लिव लाय

पांच सात नव बारहो अवकै मोह मिलाय २३६ इति श्री सुरजन-दास विरचतायां श्री अवतार कथा सपूरण लिपतु साध साहबराम जी का शिष्य गणेसरामेण हरी हर

(पत्र २० से) गुर ध्यांन हो ध्यांन को ध्यांन धर येह लोकन कौं समझावण कू

धरणी उर जप पाव न धरहु अलहू २ इन पावन कू १

४६ छप्पय, ऊदोजी कृत । छन्द संख्या-५५ । पत्र संख्या-७ । मशीन के बने कागज । आकार-१०×५ इन्च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-१ इन्च । पंक्ति-प्रति पृष्ठ १३ । अक्षर-प्रति पंक्ति-३४-३६ । हरिकृष्णदास द्वारा संवत १८९१ में लिपिबद्ध । लिपि-सुपाठ्य । प्राप्तिस्थान-श्री धोकलराम विष्णुदत्त विष्णोई, दुतारावाला ।

आदि-श्री विष्णु जयती श्री भगेश्वरायन्म अथ छपईया ऊन्जी का

सास ग्रास दातार तास बिन अवर न जाणौं

जपूं रात अर दिवस सदा थोनऊ थपाणौं

अन्त-अलप अछेव अजोनी सिंभू पार तिंह को कोण लहे

हलत पलत तिह सरण बिसन भक्त ऊदो कहै-५५ इति श्री ऊदजी रा कव्यत सपुरण १ लिपते साध श्री सरूपदासजी रा सिष्य हरिकृष्णदास समत १८९१ रा मिती माघ सुदी ४

४७ पत्र संख्या-३ । मोटा देशी कागज । आकार-१२×६ इन्च । हाशिया-दाएँ, बाए-एक से सवा इन्च तक । पंक्ति-प्रति पृष्ठ-१२-१३ । अक्षर-प्रति पंक्ति-१४ । दो हाथों की लिखावट है। लिपिकार-अज्ञात । अनुमानतः संवत् १८७५ के लगभग लिपिबद्ध । लिपि-सुपाठ्य । प्राप्तिस्थान-श्री धोकलराम विष्णुदत्त विष्णोई, दुतारावाली । इसमें २२ छन्द है —(क) सुरजनजी के कवित । छन्द संख्या-१८ । (ख) वील्होजी के कवित छन्द संख्या-४ ।

आदि-श्री विष्णुजी सतसहा छ जी लीपते कवत सुजन जी का कह्या दुरगदासजी न

मन राजा न्हेरीयो उघ दौय रोपो अवर

जडी मेप धारज पाव दे सास सवर

अन्त-संसार जुगत आगें मुक्त लाभ घणो छ दहू पहोर

वील कह आलस न कर जो गुर कह्यो सो धरमे कर २२

४८ हरजस, संख्या १११, विभिन्न कवियों के । राग-रागिनियों में गेय । पत्र संख्या-२७ । देशी कागज । जाण। मोटे और पतले दो प्रकार के । आकार-१०×५ इन्च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-१ इन्च । पत्र यत्र-तत्र चारों ओर से खंडित । पंक्ति-प्रति पृष्ठ-१४ । अक्षर-प्रति पंक्ति-३३-३४ । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानतः संवत

१८२५ के लगभग लिपिवद्ध । लिपि-पाठ्य । प्राप्तिस्थान-श्री घोक्लराम विष्णुदत्त विष्णोई, दुतारावाली । इसमे इन कविया के हरजस हैं —

(क) वील्होजी के-सख्या १९ । (ख) सुरजनजी के-सख्या ४८ । (ग) फुटकर-११ । ये इन कवियों के हैं —

(१) ऊधोजी (ऊदोजी) के-२, (२) वील्होजी का-१,
(३) कान्होजी का-१, (४) तेजोजी के-२,
(५) आसानन्द का-१, (६) दुरगदास के-२,
(७) पदम के-२ ।

(घ) केसोजी के-सख्या १२ । (ङ) आल्मजी के-सख्या १२ । (च) फुटकर हरजस-सख्या ७ । ये क्रमश इन कवियों के हैं —

(१) केसोजी का-१, (२) मावनजी का-१,
(३) मिठुदास-१, (४) देवो-१,
(५) ऊदोजी के-२, (६) हरिनद-१,

(छ) हीरानन्द कृत हिंडोलणो, १० पद । (ज) रहमत कृत-१ ।

आदि-श्री जभेस्वरायन्म लिपते हरिजस विल्हजी का राग आसावरी

दिल दुरमत दुजा साध कहाव ताका मोह अचभा आव टेक
पढ गु ण गत परमोघ रात दिवस विपीया कु सोध
वस सभा मा ग्यान विचार भीतर लपण विली का धारै १

अन्त-इन्द्र सहत सब देवता आए करण जुहार रे हेली
चरण प्रस्याजी स्याम का गाव मगलचार ४
प्हराजा के कारण रे हेली सभरथल अवतार
जन रहमत की वीनती जभ गरु अवतार ५ ११

४९ विष्णु चरित, ऊधोदास रचित । छन्द सख्या-११० । पत्र सख्या-२०, मशीन के वने कागज । आकार-९"×४" । हाशिया-दाएँ, वाएँ-पौन इन्च । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-६ । अक्षर-प्रतिपक्ति-२३-२५ । नृसिहदास द्वारा सवत १९३७ म लिपिवद्ध । लिपि-स्पष्ट । प्राप्तिस्थान-जागलू साथरी ।

आदि-श्री गणेशायनम ।। अथ विष्णु चरित लिख्यते ।। + + + ई

श्री गुर सत चरण सिर नाऊ ।। आज्ञा होय विष्णु जस गाऊ

अन्त-इति श्री विष्णु चरित सपूरणम् ।। मासोतममासे कातिकमासे कृष्ण पक्षे जीव वामरे मया लिख्यत नृसिग दास श्री । १०८ । श्री मोतिरामजी का शिष्य रहने वाला रणी वासे पपुर पदर का ।। सवत् १९३७ ।। पठनाथ साधु वुघरामजी श्री सावल-दामजी का शिष्य सहर नगीने मदिरे विष्णु ।। श्री वुघरामजी श्री ।। श्री जभाय नमोनम श्री गुरुचरणकमलेभ्योनम ।। श्री रामजी राम राम ।।

५० अमावस की कथा, मयाराम रचित । छन्द सख्या-१५० । पत्र सख्या-२६, मशीन के वने कागज । आकार-९×४ इन्च । हाशिया-दाएँ, वाएँ-पौन इन्च । पक्ति-प्रति

पृष्ठ-६ । अक्षर-प्रति पंक्ति-२२-२५ । नृसिंहदास द्वारा संवत १९३७ में लिपिबद्ध । अक्षर-मोटे, लिपि-स्पष्ट । प्राप्तिस्थान-जागलू साथरी ।

आदि-उ श्री गणेशायनम ॥ अथ भावतारी कथा लिष्यते ॥

कुंडलीया-प्रथम बदू गुरदेव कौं ॥ द्रुतीय बदू सब साध

बिश्णु बदू पुन्य तीसार ॥ जात मिट जु व्याध्य ॥२॥

अन्त-इति श्री महाभारत श्री कृष्णाअर्जुन संवादे अमावस महातम मयाराम बिरचिताया सम्पूरणम् ॥ संवत १९३७ मासोतम मासे अस्वीन् मासे ॥ शुक्ल पक्षे पुण्य माया शुभ तिथौ ॥ चद्रवासरे व मुकाम नगाने मन्दिर में ॥ लिपि कृत साधु नृसिंगदास श्री १०८ मोतिरामजी का शिष्य साध बिश्णोई ॥ पठनार्थ साधु सुषराम जी चेले श्री सावलदासजी के मन्दिर रनी में ॥

गो कहते सुष ऊपजे ॥ ता कहते तम नास

नृसिंगदास गीता जो कहै ॥ सहज मुक्त हो जात ॥१॥

राम राम राम राम राम श्री राम श्रीराम श्रीराम श्रीराम अभायनमोनम ॥ श्री गुरवनम ॥ श्री मंगलस्तु ॥ श्री ॥

५१ गोकलजी के छन्द आदि । कुल छन्द संख्या-१३५ । पत्र संख्या-१८ । देशी कागज । आकार-९×४ इंच । हासिया-दाएँ, बाएँ-१ इंच । पंक्ति-प्रतिपृष्ठ-११ । अक्षर-प्रति पंक्ति-२५-२६ । परसराम द्वारा संवत १८८९ में लिपिबद्ध । लिपि-पाठ्य । प्राप्तिस्थान-जागलू साथरी । इसमें ये रचनाएँ हैं —

(क) अवतार विगति-४५ छन्द, (ख) परची-३७ छन्द, (ग) स्तुति अवतार की-१३ दोहे-केसोजी कृत । लिपिकार के अनुसार ये तीनों 'अस्तुति अवतार का' के अन्तर्गत हैं। (घ) इन्दव छन्द-३२ छन्द । (ङ) स्तुति होम की-८ छन्द ।

आदि-श्री ऋभेस्वरायनम ॥ लिषते अस्तुति अवतार की छन्द मोतीदाम

दोहा-रिघपति सिधपति सीलपति सुरपति सदा सहाय

गतिदाता गोबिंद सुमरि गोकलि हरि गुण गाय १

अन्त-आभ अभा किम ऊधरे जिण रहै गिर सागर ओट तर

श्रीकमजी ताहरौ तवु अधर बिराज्यौ ईश्वर ८

इति श्री गोकलजी का कह्या छन्द कवत सपूरण ॥१॥ संवत १८८९ रा वर्षे मिति असाढ सुदि ८ वसपतवार लिषत साध श्री १०८ श्री हर किसनदास महतजी का सिष्य परसराम गाव फतपुर मध्ये ॥१॥

५२ उगनीस धम की आकडी, पत्र-१ जिसको बीच में मोडकर २ बनाए गए हैं। देशी कागज । १ पत्र के दोनों ओर (९+२) कुल ११ पंक्तियों में यह रचना है। दूसरा मुडा हुआ पत्र एकदम खाली है । लिपिकार-अज्ञात अनुमानतः संवत १८५० में लिपिबद्ध । लिपि-पाठ्य । आकार-एक पत्र का ९×४ इंच ॥ प्राप्तिस्थान-जागलू साथरी ।

आदि–श्री गणेशायनम अथ उणतीस धम की आकडी लिपते ।।

तीस दिन सूतक पाच रुतवती न्यारो

सेरो करो स्नान सील सतोप सुच प्यारो

अन्त–उणतीस धम को आकडी हुदे धरियो जोय

जामेजी कृपा करी नाम विष्णोई होय

श्री ६ उणतीम धम सपूण १ ।। शुभम् इति

५३ लघु हरि प्रहलाद चरित्र, हरचदजी कृत ।। छन्द सख्या–१७२ ।। पत्र सख्या–११, मशीन के बने कागज । आकार–९ ७५×५ इच । हाशिया–दाएँ, वाएँ–साधारणत पौन इच । पक्ति–प्रतिपृष्ठ–११ । अक्षर–प्रतिपक्ति–३४–३६, आदि और अत म दो पृष्ठ खडित हैं । सतापदास द्वारा सवत् १९४१ म लिपिवद्ध । लिपि–सुपाठ्य । प्राप्तिस्थान–जागलू साथरी ।

आदि–श्री गणेशायनम अथ ग्र थ प्रहलाद चिरत लिपते ।।

दोहा–जभ गुरु अव द्रवहू नम देहु बुधि विशाल

गाये चहु पहलाद गुन पुन हरि चरित रसाल १

अन्त–आस पास की साप ले कीये ग्रथ प्रकाश

दया सर्व सत राखियो हरचद तुमरो दास १७२ ।।

इति श्री भक्त हरचद कृतया लघु (हरि प्र) हलाद चरित्र सम्पूणम् ।।

दोहा–शृष्टी कारण जभ गुरु व्यापक है घट माह

सतोपदा (स स) रण परयो राखो चरणा माह १ ।।

समत्तानीसेक्तालीमे मासोत्तम्मासे मार्गशीप मासे शुक्ल पक्षे तिथौ चर्थीम् शुक्रवासरे लिपिकृतम् सत श्री १०८ स्वामी जी वालकदासस्य तस्य शिष्य सतोपदासेन ग्राम नीवग्राम विष्णु मदिर मध्ये श्री रस्तु कल्य ।

५४ *तलाव की कथा, रचयिता–केसोजी ।* *रूपक–सख्या–१२, दोहो के अतगत आई हुई* चौपइयो की सख्या नही दी गई है । पत्र सख्या–३, देशी पतला कागज । पुरान होन के कारण चारा ओर के किनारे खण्डित हैं । आकार–९ २५×४ ७५ इच । हाशिया दाएँ–बाएँ–साधारणत –आधा इन्च । पक्ति–प्रतिपृष्ठ–१४ । अक्षर–प्रति पक्ति–३४–३६ । सवत १८८२ म परसरामजी द्वारा लिपिवद्ध । लिपि–पाठ्य । प्राप्तिस्थान–पीपासर साथरी ।

आदि–श्री विष्णु जीनम ।। लिपते कथा तलाव की ।। राग सोरठ ।।

पारब्रह्म पहली नऊ ।। जग मडण जगदीस ।।

लप चोरासी दे युगो तिण साम नवाऊ सीस ।।

अन्त– ।।चो०।। बड तीथ को गुण गायो ।। केसजी गुण गु थि सुणायो ।।

दिल अ तर दूज न आणीं ।। जत माहि कह्यौ सत जाणीं ।।१२।।

इति श्री तलाव की कथा सपूण ।।१।। सवत १८८२ रा वृषे मिति प्रथम श्रावण सुदि तिरोदसी बुधवारे ।। लिखत साध श्री १०८ हर किसनदास जी

का शिष्य परसराम ॥ सहर नगीना मधे ॥ श्री ॥ श्री मगलमस्तु ॥

५५ कलस, पाहल और बालक मत्र, पत्र सख्या–४ ॥ मोटा देशी कागज । आकार–९×४ इच । हाशिया–दाएँ–बाएँ–पौन इच । पक्ति–प्रतिपृष्ठ–९ । अक्षर–प्रति पक्ति–२५–२८ । परसरामजी द्वारा लिपिबद्ध । अनुमानत सवत् १८७५ के आस पास । अक्षर–मोटे, लिपि–पाठ्य । प्राप्तिस्थान–पीपासर साथरी ।

आदि—अथ कलस लिख्यते ॥

उँ अकल रुप मनसा उपराजी ॥ ता मा पांच तत्त होइ राजी ॥

आकाश वाय तेज जल धरणी ॥ ता मा सकल सिष्ट की करणी ॥

अन्त—जल स हाथे त्याग मल विष्णु नाम सदा निरमल ॥

विष्णु मत्र कान जल छुवा ॥ गुर फुरमाण विष्णोई हुवा ॥ इति बालक को मत्र सपूरण ॥१॥ श्री जभायनम श्री विसवे नमो जय विष्णो । गगाविसनजी को सीष परसरामजी ॥

५६ प्रहलाद चिरत, ऊधोदास कृत । छन्द सख्या—३४५ (३४४ छन्द के पश्चात इसमे ३४८ की सख्या भूल से लिखी गई है) । पत्र सख्या—३४ । अपेक्षाकृत मोटा देशी कागज । आकार–साधारणत ९ ५×४ २५ । हाशिया दाएँ बाएँ—१ इच । पक्ति–प्रतिपृष्ठ–१०, किन्तु किसी पृष्ठ मे ६ भी हैं । अक्षर–प्रतिपक्ति २४–२८ । गायणे हणवतराम द्वारा सवत् १९३४ मे लिपिबद्ध । अक्षर मोटे हैं किन्तु लिपि विशेष स्पष्ट नही है । प्राप्तिस्थान—पीपासर साथरी । पुष्पिका के पश्चात ३४ वें पत्र के प्रथम पृष्ठ पर, 'गीतामाहाम', 'सूय जलचढाव' मत्र लिखे गए हैं ।

आदि—॥ श्री गणेशायनम ॥ अथ प्रहलादि चिरत्र लिख्यते ॥

दोहा—प्रथम बदु गरू देव कु दुतीऐ बदु सब साध ।

त्रिती बदु ब्म्हा विष्णु कु कहु चिरत प्रहलाद । १

अन्त—समत १८६८ । अठातरा स अडसठा माघ सूक्ल पक्ष जान

तिथी तीज सपूरण भयो प्रहलाद चिरत आखन ॥३४८॥ ईति श्री प्रहलाद चिरत सपूरण सवत १९३४ ॥ मीती श्रावण सुल्काया तीथी १५ वार वृहसपतवार लिप्यते गायणा हणवतरामेण पठनारथ गीला नथुरामेण गाव भाण । मध्ये । श्रा तिमो भगवतेवासदेवायनम ॥ श्री राम

५७ श्री गोविन्द स्वामी कृत सस्कृत जम्भाष्टक की विष्णोदासविलास टीका । टीकाकार विष्णुदास । टीका गद्य म है, आदि अन्त म टीकाकार न स्वरचित दोहे भी दिए हैं । पत्र सख्या–२८ । मशीन के बने कागज । आकार–साधारणत ८ २५×३ ५ इच । हाशिया–दाएँ, बाएँ–नाममात्र को । पक्ति–प्रतिपृष्ठ–५ । अक्षर–प्रतिपक्ति–(टीका मे) २३–२५ । सस्कृत श्लोक की अर्द्धाली पहले देकर टीका चलती है और क्रम भग नही होता । श्री नरसिंहराम द्वारा सवत १९४८ म लिपिबद्ध । मोटे अक्षर । लिपि–स्पष्ट । प्राप्तिस्थान—पीपासर साथरी ।

आदि—प्रथम पत्र के पहले पृष्ठ पर–अथ जमाष्टक सटीक लिख्यते । श्री श्री गणे

शायनम ॥
मायातीत त्रिगुण रहित ॥ श्री गुरु जभनतोस्मी ॥
सकल भुवन प्रकाश ॥ सच्चिदानद रूप ॥१॥
दो० ॥ श्री गुरु पदरज आन कं ॥ सब सतन के पाय ॥
मौली ऊपर धार क ॥ टीका करू सुहाय ॥२॥
॥ अथ टीका ॥ श्री जभेश्वर कु नमस्कार करु हु ॥ कैसे है सबके इश्वर है ॥
परमब्रह्म रूप है ॥ परे स परे है सत सत सरूप है सब के भजने योग है ॥
अत—॥दो०॥ श्री गुरु सत सरोज पद वसे हृदे मम आय
जभाष्टक प्रबध को दोनो तिलक बनाय ॥३॥
अतद्विति पठन्नित्य सब पाप प्रमुच्यते १०
शुद्धा शुद्ध की गम नहीं अक्षर का नहीं बोध
विष्णोदास अघ्तुति कर सत जु लीजो सोध ४

इति श्री गोविन्द स्वामी कृत विष्णोदास विलास टीकाया जभाष्टक सपूरणम् ॥ लिष्यत साधु श्री १०८ महाराज श्री मोत्तिराम जी का शिष्य र्नसिगदास मासोतम—मासे ग्रस्व मासे शुल्क पक्षे तिथि सप्तम्या शनिवासरे साल १९४८ ॥ पठन्नाथ विहारीदास साधु विस्नोई ॥ श्री जभेश्वरायनमोन श्री विष्णु

५८ चितावणी, सुन्दरदासजी की तथा सुरजनदासजी की। पत्र सख्या–७, देशी कागज। आकार–६×४ इच। हाशिया–दाएँ, बाएँ–पौन इच। पक्ति–प्रतिपृष्ठ साधारणत –१०, किन्तु किसी किसी मे ११ पक्तिया भी हैं। अक्षर–प्रतिपक्ति–४१–४६। सुन्दरदासजी की तीसरी रचना–तक चितावणी के पश्चात पत्र ६ के प्रथम पृष्ठ पर पुष्पिका इस प्रकार है—सवत १८५४। मिति माह सुदि नौमी वार शुक्रवार लिपते साध गगाराम ताजजी का चेला गाव अलाय मधे किसन सीहागर घरे। मगल मस्तु ॥ तत्पश्चात सुरजनजी कृत ग्रथ चित्रामणी का आदि अश इस प्रकार है—
श्री परमात्मनेन्म लिषते चित्रामणी सुरजनजी की
दोहा—कहा कम जर कोयली कहां तिसना कहा तोर
रे मन कित पित मात तु सपति बध्यो सरीर १

इस रचना के पश्चात पुष्पिका नही है, पर लिपिकाल सवत १८५४ ही मानना चाहिए क्योकि पत्र, लिखावट, स्याही या प्राचीनता म किसी प्रकार का भेद नही है। लिपि–सुवाच्य। प्राप्तिस्थान–पीपासर सायरी। इसम चार चितावणी ग्रन्थो का सकलन है पहली तीन सुन्दरदासजी की और चौथी सुरजनजी की —(क) विवेक चितावणी–छन्द सख्या–५३। (ख) हरिबोल चितावणी–छन्द सख्या–३०। (ग) तक चितावणी–छन्द सख्या–४०। (घ) प्रथ चित्रामणी–छद सख्या–२५।
आदि–अथ सुन्दरदासजी की विवेक चितावणी ॥
पूरनहार निरजन राया जिनि यहु नख सप्त साज बनाया
ताकों भूलि गयो बिभचारी अईया मनिपहु बूझि तुम्हारी १

क्रश कमल नयन नारायन स्यामी ॥ सब द्वारका अतरजामी ॥
वासुदेव सकर्षण छाज ॥ प्रद्युम्न अनिरुद्ध विराज ॥
अन्त-वारायडी आनद गुन गाऊ ॥ सब सतन को सीस नवावू ॥
दीन परतीते है दासु सुदामा ॥ नमसकार गुरुदेव समाना ॥ इति श्री सुदामा की बारखडी ममाप्ता मीता समाप्त व्दी १४ वार क्रमपतीवार ?

६२ प्रहलाद चिरत, ऊधोजी कृत । अपूर्ण । उपलब्ध-पत्रसंख्या-२७, (१ से २५ तक तथा २८वा और ३०वा) । देशी कागज । जीर्ण, खडित । आकार-९×४ २५ इच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-१ इच । पत्र २५ तक २७२, २८ म २९६ से ३०५ और ३०वें मे ३१८ म ३२८ तक छद हैं। लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत १८८० के लगभग लिपिबद्ध । लिपि-स्पष्ट । पक्ति-प्रति पृष्ठ-९ । अक्षर-प्रति पक्ति-२८-३० । प्राप्तिस्थान-पीपासर साथरी ।
आदि-॥ दो० ॥ श्री गणेशायनम ॥ अथ प्रहलाद चिरत लिप्यत ॥ दोहा ॥
प्रथम बदू गुरदेव कौं ॥ दुतीय बदू सब साद ॥
त्रितीय बदू महा विश्ण कौं ॥ कहौं चिरत प्रहलाद ॥१॥
अन्त-(३०वें पत्र का दूसरा पृष्ठ)
अजर जरे असत नहीं भावे ॥ कृष्ण अज्ञा सिर उपर रावे ॥२८॥
जाका कारज हरजी करया ॥ नव कोडी ले सहबे त + + ॥

६३ आदि वंशावली, पच्चीस नाम (विष्णु के), कलस और पाहल । अपूर्ण। प्राप्त पत्र संख्या-३ (सख्या-३, ४ तथा ५) । पत्रो के बाएँ हाशिए म हो० लिखा है जिमसे विदित होता है कि होम पाठ है । देशी कागज । आकार-९×४ इन्च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इन्च । पक्ति-प्रति पृष्ठ-११ । अक्षर-प्रति पक्ति-२५-२८ । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत १९०० के लगभग लिपिबद्ध । लिपि-स्पष्ट । प्राप्तिस्थान-पीपासर साथरी । इसमे ये रचनाएँ हैं —(क) आदि बसावली, (ख) पचीस नाम, (ग) कलस, (घ) पाहल (अपूर्ण)
आदि-सिनान सुभाइया चौथो सिनान तो विसा रूपो पचम् सिनान जल सागरा, विसन जले विसन थले
अन्त-(पाहल मत्र)-नेम तलाई नेम जल नेमे क जी पाहली
कायम राजा आईयो वे + + + ॥

६४ होम पाठ आदि । पत्र सख्या-५, देशी कागज । जीर्ण, खण्डित । आकार-९×४ इच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इच । लिपि-सुपाठ्य । पक्ति-प्रति पृष्ठ-१३ । अक्षर-प्रति पक्ति-३४-३६ । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत १८५० क लगभग लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-पीपासर सायरी । इसमे ये रचनाएँ हैं —(क) पारवती ईश्वर सवादे गोत्राचार, (ख) बसदर के २५ नाम, (ग) ईश्वर का पारवती को उपदेश-विष्णु-महत्ता के सबध म । (घ) आदि बसावली, (ङ) विष्णु के पच्चीस नाम, (च) विवरस, (छ) अस्तुति, (ज) कलस, (झ) पाहल, (ञ) फुटकर कवित्त-३, (ट)

बालक को मंत्र (यह बाद में लिखा गया प्रतीत होता है क्योंकि भिन्न हाथ की लिखावट में है)।

आदि-श्री गणेशायनम ॥ श्री महादेव उवाच ॥ उ जदू वास रूपू ॥ पुज्यमुस्याम निधु ॥ गुणे निधु ॥ आकास पुत्र ॥ सता रामु ॥

अंत-जदि कांन पड़या चूवा तदि वदा विसनोई हूवा इति बालक को मंत्र १

६५ (म०-प्रति)। १४ इंच लम्बाई के देशी कागजों को मोड़कर बीच से सिली, पतले गत्ते की जिल्द बंधी हुई पोथी। जीर्ण। आकार-प्रति पत्र-७×७ इंच। गहरे बादामी पत्र। हाशिया-दाएँ, बाएँ-साधारणतः पौन से एक इंच तक। तीन-चार हाथों की लिखावट में, अतः प्रति पृष्ठ में पंक्तियाँ समान नहीं हैं। संवत् १८४८-१८५३ के बीच लिपिबद्ध। यत्र तत्र स्याही फैली हुई है। लिपि-सामान्यतः-पाठ्य। मुकाम गाँव के श्री मल्लूराम थापन से प्राप्त होने के कारण इसका नाम म०-प्रति रखा गया है। इसमें ये रचनाएँ हैं —

(क) ध्रूचरित्र, रचयिता-जन गोपाल। पंक्ति-प्रतिपृष्ठ-१४-१५। बीच में कई पत्रों के एक ओर ही लिखा गया है। अंत-विकसत सुत अपराध कौ। जं नाप पल पितमात ॥२१६॥ गाथा ॥ चौपई ॥३००॥ इति श्री ध्रू चरित्र संपूरण ॥ थापन मदा वाचनाथ ॥ सं० १८४८ चैत्र सुदि ७ लि। भगवानदास विनचंद तारा भीमा लिषत हेमटसर मधे ॥ (ख) सबद, पहला। प्रसंग समेत। (भिन्न हाथ की लिखावट में)। (ग) सबद वाणी, प्रसंग समेत। प्रसंग पद्य में हैं। सबद संख्या-११७। सबद ६७ से पूर्व के पत्र सिलाई की ओर से कट कर अलग हो गए है तथा चारों ओर से खंडित है। लिपिकार-अज्ञात। मोटे अक्षर। लिपि-स्पष्ट। सारे सबद एक हाथ की लिखावट में।

आदि-"द० ॥ श्री गणेशायनम ॥ लिषते श्री वायक झांभजी का ॥

काच करव झल रपा। सबद जगाया दीप।
ब्राभण को प्रचा दिया। अंसा अचरज कीय।१।
जो बूझा सोइ कहा। अल्प ल्पाया भेव।
घोपा सब गमाइया। जदि सवद कह्या भ्रम देव।२। गुर चीन्हों गुर चीन्ह"।

अंत-भल कीयां तौ भल बुधि पाव वुरीया बुरी कमाव ११७ इति श्री झंभजी री वाणी साष्या संपूरण समाप्ता ॥ श्री रस्तु कल्याणमस्तु सुभवस्तु ॥ पंक्ति-प्रति पृष्ठ-१८। अक्षर-प्रति पंक्ति-२०-२१। लिपिकाल-संवत् १८४८ और १८५३ के बीच किसी समय, क्योंकि इसके पश्चात् भिन्न हाथ की लिखावट में बडीनवण है जो संवत् १८५३ में लिपिबद्ध की गई थी। (घ) बडी नवण।-इति श्री बडी नुणि संपूरण भवत सम १८५३। (ङ) श्री कृष्ण अर्जुन सवादे श्री विष्णु अठाईस नाम। (च) गोब्राचार (पार्वती ईश्वर सवाद)। आदि म-लिखत मदा थापन पंम थापन का बेटा। (छ) वसद का नाम,-अन्त म-लापतू थापन बीसरा समत १८५२ मिना वमाके म° ८। (ज) फुटकर छन्द, दादू के चार दोहे तथा सुरजनजी की यह ए

साखी-पनारास आतार लीया गुर आठम सोम अठोतर। (भ) फुटकर भजन, सख्या-३। कबीर, मीरा तथा अज्ञात कवि कृत। (ञ) दस अवतार, रचयिता-अज्ञात। (ट) गुगलिय की कथा, वील्होजी कृत, छन्द सख्या-८६। (ठ) सच अपरी विगतावली, वील्होजी कृत, छन्द सख्या-४८। स्याही फल जाने और कही कही पत्र भीग जाने से अक्षर सुवाच्य नही हैं, दो पत्र एक ओर ही लिखे गए हैं। (ड) कथा दूणपुर की, वील्होजी कृत, छन्द सख्या-६०। ८ पत्रों म एक ओर ही लिखी हुई है। लिपि कही कही अस्पष्ट। (ढ) कथा जसलमेर की, वील्होजी कृत, छन्द सख्या १११। २२ पत्रो म सम्पूर्ण, जिनम कवल ९वा पत्र ही दोनो ओर लिखा गया ह, शेष सब एक ओर लिखे हुए हैं। लिपि-अस्पष्ट। (ण) कथा ओरडां की, वील्होजी कृत, छन्द सख्या-३३। ६ पत्रो म, जो सभी एक ओर लिखे हुए ह। (त) कथा चित्तौड की, केसोजी कृत, छन्द सख्या-१३०। यह १९ पत्रो मे समाप्त हुई है जो सभी एक ओर लिखे गए है। कही कही स्याही फलन से लिपि-अस्पष्ट।

आदि-॥ द० ॥ श्री गणेशनायम । अथ धूचिरत्र ग्र थ लिक्षते ।

गुरु गोबिंद प्रणाम करीज । मन वच क्रम चरण चित दीजे ।
राम भगति को प्रारभ होई । गुपति वात समझाव सोई ।१।
सतयुग तेत्रा द्वापरि गईयो । तब कलियुग को आगम भईयो ।
पडवा राज परीछत दीनो । कलि प्रवेस प्रथवी परि कीनो ।२।

अन्त-बारा सोला सम करि घर ॥ गुर फुरमाई करणी कर ॥

पाच पचीसू रहै समोय ॥ जीवत पाक पलक में होय ॥१२९॥
सुघ बचन सतगुर का गहो ॥ कारण क्रिया गुर मुखि बहो ॥
सतरा स छिहोत्र सही कथा बिचारि कसजी कही ॥ १३० ॥ ॥ कथा सपूरण समापिता ॥ तत्पश्चात भिन्न लिखावट म, फीकी स्याही म अस्पष्ट रूप से यह लिखा है—समाध ॥ विसनु ॥ अठाईस नव ॥ सतो सरम पुरण ॥ समापीता ॥

६६ पोथी। १२ इच लम्बे देशी कागजो को मोडकर बीच से सिली हुई। सिलाई टूट जाने से पन्ने पृथक हो गए हैं। बीच म एकाध स्थल पर पत्र अप्राप्य। आकार-६×९ इच। जीर्ण और खडित। हाशिया-दाएँ, बाएँ-आधे से पौन इच तक। अतिम दस पत्र और जिल्द दीमक के खाये हुए ह। चार भिन्न हाथो की लिखावट म। पक्ति-प्रतिपृष्ठ-२० से २८ तक। सवत १८२० से १८२५ तक लिपिबद्ध। आदि से बीच की सिलाई तक ११५ और पश्चात ११७ फोलियो हैं। प्राप्तिस्थान-लोहावट साथरी। इसम क्रमश ये रचनाएँ हैं—(क) कबीर का रेखता-१। इस पर फोलियो सख्या नही है। (ख) पहलाद चरित, केसोजी कृत, छन्द सख्या-५९५। लिपिकाल-सवत १८२०। पक्ति-प्रतिपृष्ठ-२७। अक्षर-प्रतिपक्ति-२०-२१। अन्त-पाच सात नव बारहा ॥ इवक मोहि मिलाय ॥५९५॥ कथा सपुरण समापता लिपतु हरजी दासेजी का चेला वचनारथी सम्पो वरपे स्यनी असाढ दुतीय वदि ॥ तिथ ५। वार विसपति ॥ समत १८२० गाव गुढा मधे लिपत पहराज सीहाग र

घरे। (ग) ध्रू चिरत, जन गोपाल कृत, छन्द सख्या–२०८। प्रति पृष्ठ म २४ पक्तियाँ। अन्त–मैं अज्ञान मत आपनी। कपि कहि कुछ बात॥ बकसत गुन अपराध कू। जन गोपाल पित मात॥ २०८॥ एती ध्रू चिर सपूर समापिता॥ लिपतू का हा नाथाजी का स्यप सुपलाल दूधाधारी का पोता स्यप वचनारथी सरूपा॥ लिपतु गाव गुढा मधे पहराज साहाग र घरू॥ समत॥॥ १८२० '। (घ) मोहमरद राजा की कथा, रचयिता–जन जगनाथ। छन्द सख्या–११७। प्रति पृष्ठ म २१–२२ पक्तियाँ। अन्त– ॥ लिपतु प्रेमदास नाथाजी का स्यप॥ सुपलाल दूधाधारी का पोता स्यप। पठनारथी सरूपा॥ समत १८२०॥ वृषे मिती दुतीय असाढ सुद तिथ ६॥ वार थावरवार॥ गाव गुढा मधे पहराज सीहाग रे घरू॥ ।
(ङ) कथा सुरगारोहणी, केसौजी कृत, छन्द सख्या–(२१६ + १)=२१७। "लिपतु हरजी॥ दामजी का चेला॥ वाचनारथी सरूपो॥ समत १८२०॥ वर्षे म्यती॥ आसाढ दुतीय सुदि॥ ८॥ वार सोमवार। लिपतु गाव गुढा मधे॥ पहरा सीहागर घरे।" (च) घडाबध, वील्हैजी का। छन्द सख्या–५३। प्रति पृष्ठ म २५ पक्तियाँ। (छ) अवतार कथा, सुरजनजी कृत। छन्द सख्या–२४०। प्रति पृष्ठ म २६ पक्तियाँ। (ज) चित्रामणी, सुरजनजी कृत, छन्द सख्या–२७। (झ) धरमचरी, सुरजनजी कृत, छन्द सख्या–८०। (ञ) चेतन कथा, सुरजनजी कृत, छन्द सख्या–३०। लिपिकार के अनुसार (झ) और (ञ) एक ही रचना है। दोनो की छन्द सख्या का अलग अलग उल्लेख नही है। केवल ८० व छन्द के बाद 'अथ चेतन कथा लीयते' नाम दिया है। पुष्पिका म दोना का उल्लेख ऐसे है —एती चतन कथा ध्रमचरी सपुरण समापिता॥ (ट) ग्यान महातम, सुरजनजी कृत, छन्द सख्या–२३६ (भूल से २३५ के बाद ३३६ लिखी गई है)। (ठ) छपइया उदजी का। छप्पय सख्या–५४। उदजी का छपइया सपुरण समापेता। लिपतु परमाणद वणहाल॥ (च) से (ठ) रचनाएँ परमानन्दजी बणिहाल की लिखी हुई हैं। (ड) बहलोवन की कथा, केसौजी कृत। छन्द सख्या–५२०। लिपते हरजी दामजी को चलो॥ पोथी लाल जाणी की कौ उतारी कीयो छ॥ समत १८२१॥ वर्षे मिती चत्र वदि १०॥ वार थावर॥ गाव जाभोलाव मध॥ (ढ) बसावली, रचयिता–अनात। फोलियो ११५ व के दाएँ पत्र तक। प्रति पृष्ठ–२२ पक्तियाँ। इससे आगे की फोलियो सख्या अलग से आरम्भ होती है, आदि के दो पत्र नहीं हैं। (ण) वाहन नाम–२८। (त) सुत नाम–२७। (थ) रिपु नाम–२८। (द) गुणाय–८१ + १ सवइया। (ध) हीरावेधी–छन्द–१०। (न) पदिमनी–हस्तनी–चित्रणी–सषणी–वरणन–सस्कृत म–छन्द ५। (प) गोत्राचार ७ छन्द। (फ) ससदर के नाम। (ब) ईश्वर-पारबती सवाद। (भ) आदि बसावली। (म) पच्चीस नाम (विष्णु के)। (य) विवरस। (र) स्तुति। (ल) कलस। (व) पाहल। (श) बालक की मत्र। (ष) ग्यांन तिलक–सुरजनदास कृत। छन्द सख्या–१०५। (स) गज मोष, सुरजनदासजी कृत। छन्द सख्या–७०। (ह) कवित राम रास का पापन सुरजनजी का कह्या। छन्द सख्या–२६४। फोलियो–२१ स ३३ वें के दाएँ पत्र

तक। इसमे सुरजनजी को थापन बनाया गया है जो मूल है। (क्ष) छींकारी भारजा (त्र) सतरज री विगत। (ज्ञ) हीरावेधी (१ छप्पय)–चव पदम श्री राम पह ये मदो-वरि उचरह १ । (ग्र) कथा अपाडतिष की, कनकदास कृत। छन्द सख्या ११२। लिखावट अत्यन्त घसीटी लिपि मे है। अक्षर बहुत मोटे। लेपतु पेता थापन लेपा-वतु सरुपा प्रतीत ॥ (ग्रा) कथा चीलौड की, रचयिता–केसौजी, छन्द सख्या–१२८। लीपतु थापन भ्रमरा पेतारा ('दोरा छ' लिखकर काटा गया है) पस दसक्त दोय जणा रा छ॥ समत् १८२४ मीति ग्रासाढ सुद ११ देव पोढणी एकादसी गाव चोडी + + + + ॥ (इ) साखियां। सख्या–१०१, तीन हाथो की लिखावट मे। कुल १०१ साखिया इस प्रकार हैं—(१) साखी कणाकी–सख्या ८। (२) साखी छदा की–सख्या ९ से ५६। (३) साखी कणाकी स०–५७ से ८५ तक। (५) साखी छदा की–सख्या ८६ से ९५ तक। पन्न भाग ग्रोर से खडित। दीमक खा जाने के कारण अनेक पत्रो म छेद हो गए हैं। (५) रगीलो (९६), (५५ छन्दो का)। (६) साखी सेजडली की (९७), (१२ छन्दो मे)। (७) साखी गोपीचद की (९८), (३८ छन्दो मे)। (८) आबिलो (९९), (१७ छन्दों की बीच म सस्कृत श्लोक हैं)। (९) रामो की बीनती (१००), (११ छन्द)। (१०) उमाहो–(१०१), (२१ छन्दो मे)–फो० १०७ के बाएँ पृष्ठ तक)। पुष्पिका–मापी सपूरणो स० १८२६ ब्रिपे म्यती भादवा सुदि।२॥ वार थावरवार लिपतु हरजी वणिहाल॥ वाच जिक न नवण। (ई) फुटकर भजन आदि। दीमक खा जाने के कारण पत्रो मे छेद हो गए हैं। जन रहमत–१, तुलसीदास–१, सुरसीदास–४। कबीर–१। अज्ञात–१, जन हरीदास–१, हीरानद को हिडोलणो, २४ अवतारो के नाम आदि हैं। लिपि-स्पष्ट नही है। (उ) पूल्हैजी की कथा, रचयिता–वील्होजी, छन्द सख्या–२३। लिपि–पाठ्य नही है। (ऊ) साखियां–फोलियो १११ व के बाएँ पत्र से। इसके पश्चात १११ वें के दायें पत्र से फोलियो ११५ तक–पन्ने अप्राप्य। फो० ११६ वें का दाया पत्र उपलब्ध है, जिसमे किसी रचना का कुछ अंश तथा झाडा आदि है। (ए) गोरख गणेस की गुसटि, रचयिता अज्ञात। छन्द–३५। फोलियो–११७–११८ व के दाएँ पृष्ठ तक। लिपि–पाठ्य नही है। पूरी रचना नही पढी जा सकती। छन्द ३३ के पश्चात का अश एव पुष्पिका नीचे उद्धृत है –

आदि–श्री विसनजी सत सही॥ लिपते रेयता कविरजी का

सति कबीर सबग गुर स्येले। दया के तपत पवठ भाई॥
ग्यांन के महल मै सकल सुप साहबि॥ साध सतसग मिल भेद पाई॥
भेद पाये जिना भरम भाज नहीं भरम जजाल घर काल पाई
देप दिव्य दिष्टि सब सिष्टि जहड॥ गई मड रहा दुप सब घट छाई॥

अन्त–आकास ग्रसते अवगति ३३ एता + + । प्रकृति का भेद पवन का थभा अ + + + । पानो ज माया प्रान पुरसि तहा उतपति हूवा सुरति निरति ले सुनि समानां ३४ सोई प्यडे सोई ब्रहमडे ३५ इती गोरप

गणेस की गुटिट सपूरण समत १८२५ मती फागण ब० ७ लखत हरजी ॥ पोथी जीवण दास की मांगू गांव रासीसर मंधे । ( )

६७ गुटका, बीच से सिला हुआ जिल्द यथा। जीर्ण, यत्र-तत्र खंडित, बीच में कई पत्र अप्राप्य। देशी कागज, मोटा और पतला दो प्रकार का। आकार-५ ५ × ४ २५ इंच। हाशिया-दाएँ, बाएँ-गामा पत्र आधा इंच। तीन भिन्न हाथों की लिखावट में। फोलियो संख्या - १४८ (७८ से ९५ और ९६ से ११३ तथा १ से ५६ और ८० से १३५)। यह संख्या क्रमानुसार न होकर पृथक् पृथक् है। पंक्ति-प्रतिपृष्ठ-साधारणतः -८-१०। लिपिकाल-संवत् १८२७ से १८९९ तक। लिपि-प्रायः पाठ्य। प्राप्तिस्थान-श्री बदरीराम धापन, मुकाम। इसमें क्रमशः ये रचनाएँ हैं - (क) मातृका सगुन (अपूर्ण)। --लिपिकृत वीहा जाणी वचनायतु हिरमि सैहर समत १८२७। (ख) गण। (ग) जीव पतरी। (घ) अजप्पा जाप। (ङ) पारबती ईसर सवाद। (च) फुटकर साखियाँ-(१) मेलो वर्ष मोटा धणी गिए तैंतीसा नाव, केसौजी कृत, २७ छंद। (२) पनरास अवतार लीयो गुर आठिम सोम अठोतर, सुरजनजी कृत, छंदा की, छंद-४। (छ) आरतियाँ-२, साखी-१। क्रमशः पीताम्बर-दास, ऊधोदास, और अज्ञात कृत। (ज) गोकलजी के छंद संख्या-३३। इ दव छंद संख्या-३२ (३० + २), तथा एक छंद अस्तुति होम की। (झ) गोत्राचार (महादेव पार्वती-सवाद-रूप में)। (ञ) आदि वसावली। (ट) बसदर के पच्चीस नाम। (ठ) महादेव का पार्वती को ज्ञानोपदेश (स्नान आदि सम्बन्धी)। (ड) पच्चीस नाम (विष्णु के), (ढ) विवरस्य, (ण) अस्तुति, (त) कलस, (थ) पाहल, (द) बालक-मंत्र, (ध) होमपाठ, (१ कवित्त), (न) चौजुगी, (प) इंद्र चौजुगी, (फ) मंगलाष्टक-केसौजी कृत, (२९ छंद), (ब) दस अवतार (१० छंद, अज्ञात कृत), (भ) सप्त श्लोकी गीता, (म) एक श्लोकी भागवत, (य) एक श्लोकी रामायण, (र) सूर्य स्तोत्र--समत १८९९ रा मि। (ल) उमाहो, थोल्होजी कृत, छंद संख्या-२२, (व) पतवो, आलमजी कृत, छंद सं०-११, (श) हिंडोलणो-हीरानंद कृत, छंद संख्या-८, (ष) साखी १-केसौजी की-साधो मोम्यरणो कीयो अलोच जमु रवावीयो (फो० ५५ से ५६ तक)। इसके पश्चात ५७ फोलियो से ७९ फोलियो तक के पत्र अप्राप्य हैं क्योंकि ८० वें फोलिए के दाईं ओर के पृष्ठ पर, प्रहलाद चिरत का अंतिमांश और यह पुष्पिका है-"इति श्री प्रहलाद चिरतर सपूरणम ॥ समत १८९९ मिती चैत सुदी व सुदि ८ लिपि कृत साध श्री १०८ श्री श्री वीरमदासजी रो चेलो दयारामेण पठनारथी राज्जी"। (स) अमावस्या कथा, मयाराम कृत, छंद संख्या-१४५। (ह) तलाव की कथा केसौदास रचित। रूपक संख्या-१२। (क्ष) अस्तुति अवतार की, गोकलजी कृत, ४५ छंद। (त्र) परची-३७ छंद, गोकलजी कृत तथा अस्तुति केसौजी-१३ दोहे, केसौजी कृत। (ज्ञ) जांगडो-केसौजी कृत-५ दोहले। (अ) फुटकर भजन-(१) आये म्हार जम गुर जगदीस, गंगादास कृत, (२) आरती हो जी द्वारिका रो राव किसन हरि आरती तेरी-कबीर कृत। (आ) महादेवजी रो नरोदो-दा हाथा की लिखावट में।

आदि-ऋकारे असुभ ॥ ८ ॥ लृकारे सुभ ॥ ९ ॥ लृकारे असुभ ॥ १० ॥
एकारे सुभ ॥ ११ ॥ ऐकारे असुभ ॥ १२ ॥ ओकारे सुभ ॥ १३ ॥
अन्त-(सरोदो से) सुरज सुर न चलतो ॥ वेज एक जीव ॥ १ ॥ श्री माहादेव पारबती सेवादो सरोदो सपुरण समोपेता समत १८४८ मत वसाष वद ५

६८ पोथी। १४, १३, १२ और ११ इच लम्बे देशी कागजो को मोडकर बीच से सिली हुई, जिल्द युक्त। फोलियो स०-५७२। पत्राकार-७×१२ इच, ६ ५×१२ इच, ६×१२ इच तथा ५ ५×१२ इच। हाशिया-दाएँ, बाएँ-साधारणत -१ इच, किन्तु ५ ५×१२ इन्च आकार के पन्नो का दाएँ-१ इच, बाएँ-आधा इच। तीन भिन्न हाथो की लिखावट मे जिनमे एक लिपिकार हरजी वणियाल हैं। लिपिकाल-विष्णोई रचनाओ का-सवत १७८८ तक, रामरासो का सम्भवत इससे पूर्व ही तथा शेष का सवत १८२८ तक। लिपि-स्पष्ट। रामरासो तो बहुत ही सुन्दर लिपि मे है। पोथी के पूर्वार्द्ध भाग के फोलियो ३५ की साखी उत्तरार्द्ध भाग के फोलियो ५५० से पुन आरम्भ होती है। आदि के ३५ तथा अन्त के २३ (५५० से ५७२) फोलियो का अ श एक हाथ की लिखावट मे है। पक्ति सामान्यत -प्रति पृष्ठ ३५-३७। अक्षर-प्रति पक्ति १५-१९। प्राप्तिस्थान-श्री घोकलराम विष्णुदत्त विष्णोई, दुतारावाली। इसम क्रमश ये रचनाएँ हैं—(क) पहलाद चिरत, केसोजी कृत। छ द सख्या-५९६। (फो० १ से २२ तक)। (ख) साखिया-(फो० २२ से ३५ तक), पुन इसी क्रम म इनसे आगे की छ द सख्या देकर फो० ५५० से ५५५ तक और साखिया लिखी गई है, जिनका विवरण आगे है। इस प्रकार फो० ३५ तक २४ और ५५० से ५५५ तक १५ साखियाँ-कुल मिलाकर ३९ साखियाँ है। प्रस्तुत २४ साखियो का विवरण इस प्रकार है—साधी कणाको-६ साखिया। (अन्त म सख्या ७ भूल से लिखी गई है), (फो० २२-२४)। (१) साधो मामणी कीयो छ अलोच जुमो रचावीयो, उदोजी कृत ४१ पक्तियाँ। (२) आवो मिलो जमल जुलो। सिवरो सिरजणहार, केसोजी कृत, १३ पक्तियाँ। (३) जुमल आवो गुर माइयो ॥ सुपही करो जे काय, सुरजनजी कृत, १३ पक्तियाँ। (४) आवो मिलो साधो मोमिणो ॥ गुर मिलि जुमो रचाय, वील्होजी कृत, १२ पक्तियाँ। (५) आवो रलो साधो मोमिणो ॥ रल वरि जुमु रचाम, आलमजी कृत, १३ पक्तियाँ। (६) दिवलो दीन दयाला मा ध्याइय ॥ होइय सुरा सरीपा गुर भाइयो, अज्ञात कृत, १० पक्तियाँ। (ग) होम को पाठ गोआचार-फो० २४। (घ) वसद्र का नाव, साथ ही विष्णु-महिमा आदि है। फो० २५, (ङ) आदि वसावली। (च) पच्चीस नाम, विष्णु के। (छ) विवरस-फो० २५-२६। इति विवरसि होम को पाठ सपुरण। (स्पष्ट है कि ऊपर की सभी कृतियाँ-(ग) से (छ) तक होम पाठ से सबधित है)। (ज) ब्याह सुरत-फो०-२६। (झ) चौजुगी होंदगी, फो०-२६-२७। (ञ) गुरमत्र-फो०-२७-२८। (ट) परम तत मत्र फो०-२८। (ठ) बाल्क को मत्र, फो०-२८। (ड) गुणेस गायत्री, फो०-२८। (ढ) निरजण गायत्री, फो०-२८। (ण) गाइत्री, फो० २८-२९। (त) साखी

जांभाणी, (२९ से ३५ फो० तक)-वणारी —(१) दिलमां दामम बीगो मायो मोमिणो ॥ प्रदेसी सगारी, अज्ञात कृत-१० पंक्तियाँ, (२) जीव क काज जमल जाइय ॥ बीज गुर फुरमाइ मरो माइयो, केसोजी कृत, १२ पंक्तियाँ, (३) मर्गो गु णों गु णवतो देव ॥ जहक गु ए न लाभ छव, वील्होजी कृत, २२ पंक्तियाँ, (४) साइया जुगदातार ॥ पाणी मु पीड करणी-सिवदास कृत, २० पंक्तियाँ, (५) सिवरो श्रोमनि वो राव ॥ माइ राजा मच जपिय, समसदीन कृत-१९ पंक्तियाँ । सासी छदा की —(६) रे मन मीठा लोभ पइठा-अज्ञात कृत-४ छन्द, (७) रे मन मरा न करि मुवेरा-केसोजी कृत, ८ छन्द, (८) रे गुर भाइ मातु विमन सगाइ-सुरजनजी कृत-छन्द ८, (९) रे विणजारा न करि पमारा, भीवराज-छन्द ४। (१०) कलिजुग तीरथ थापियो । भाग परापति पावीयो, रायचद कृत-४ छन्द । (११) श्री निज तीरथ तालवो, केसोजी कृत-छन्द सख्या-४ । (१२) गुर क कमच जुत्या मेरा बाबा ॥ जाह का हरिया भाग, ऊदोजी कृत, छन्द ४ । (१३) गुर पुरी दातार ॥ म्हे छा थारा मगता-ऊदोजी कृत, छन्द ५ । (१४) मैं तु मांहरो सांमि स पीहर सिव रिया-ऊदोजी कृत, छन्द ७ । (१५) ओह गुर आया जाभराजदव, ऊदोजी कृत, छन्द ५ । (१६) वाज वाज रे मदनिया-ऊदोजी कृत-छन्द-४ । (१७) काया तो मोमिणी रतन सरीखी, ऊदाजी कृत-छन्द-५ । (१८) वावा सामत्य ज छ वागड दस, वील्होजी कृत, छन्द-५ । यह फो० ५५० पर पुन आरम्भ होकर पूरी हुई है (यहा केवल ऊपर की पंक्ति मात्र ही लिखी गई है) । फोलियो ३५ का दायाँ पत्र खाली है । यहा तक की रचनाएँ एक हाथ की लिखावट म हैं । (ग) गुण श्री रामरासो-माधोदास दधवाडिया कृत-फो० ३६ से ७० । (विशेष-३६ वें फोलियो के बाएँ पृष्ठ पर इसके १९ छन्द हैं, पश्चात दाएँ पृष्ठ पर छन्द सख्या ३ से आरम्भ होती है। इन १९ छन्दो और दूसरे पृष्ठ के ३ छन्दो के बीच सीधा कोई सबध या तारतम्य नही बठता प्रतीत होता । हो सकता है जिल्द बधवाते समय एकाध पत्र या फोलियो भूल से छूट गए हो) । इती श्री रामरासो माधवदास दधवाडीयारो कहीयो सपूरण समाप्ता ॥ रासो जस श्री राम रस ॥ वदियो निगम वखाण ॥ कथित माधवदास कवि ॥ लिखि सुपात्र सुजाण ॥३॥ ग्रथाग्रथ सहस दोइ २००० ॥ (द) श्री मद भगवद्गीता का सस्कृत श्लोकों सहित दोहे छन्द में भाषानुवाद । अनुवादक-नाजर आनन्दराम । हरजी वणिहाल द्वारा सवत १८२८ म लिपिवद्ध । फोलियो ७० से ११० तक । पहले सस्कृत श्लोक और बाद म उसी का भावानुवाद दोहा म किया है ।

अन्त-करत कहू चूक्यो जु कवि । सेयक लिख्यो जु मूल ।

नाजर आनदराम सब । कीयो सोध लप मुल ॥ १ ॥ समत १८२८ रा वर्षे शाके १६९३ प्रवतमान । मासोतममास कृष्णा पक्ष आसाढ द्वतीय चन्द्र ७ वार शनीस्चर ॥ लिपीकृत हरजी वणिहाल ग्राम कूडावास मध्य का हा जाणी घर ॥ अथ गीता पुस्तक जोइसी अनोपराम र मासू लिमीखं ॥ ॥ (ध) गोपीचद

चरित्र बगाग बोध ग्रथ, रचयिता रज्जबजी के शिष्य **खेमदास**। छन्द सख्या-१५३। (फोलियो-११० स ११७), पक्ति प्रतिपृष्ठ ३०-३२। (न) **भगवत भाषा हरिवल्लभ कृत**। भागवत के दोहे चौपाइया म हिन्दी मे भावानुवाद। (फोलियो ११७ स ५५० तक) यह तीन भिन्न हाथा की लिखावट म है। कुन दशम् स्कध के ३९ व अध्याय तक का अनुवाद है। अन्त हरिवल्लभ ह सग हुतो प्रभू सेवा के हृत ॥ राजा कछु समभी नही मन म भयो अचेत ॥ ४६ ॥ २५५८ ॥ इति श्री भागवते दशम स्कधे हरिवलभ भाषाकृते एकोन पचामतमोध्याय ॥ ४९ ॥ २५५८ ॥ पुरवार्द्ध सपूरण समाप्त पुरण ॥ (प) **साखिया** (फोलियो ५५० से ५५५)-१५ साखिया। (पहले की २४ तथा १५ ये, कुल ३९ साखिया है) प्रतिपृष्ठ म ३४ से ३६ पक्तिया। (१) बावो साभल्य ज छ बागड देस, **वील्होजी** कृत, छन्द-५। (२) बाव आपि लियो अवतार।। साम्य सभरियलि आवियो, **केसौजी** कृत-छन्द-५। (३) बावो मिलीयो छ ल सुवण तार जोति विराज निज थला-**सुरजनजी** कृत, छन्द-५। (३) बावो विसनो विसन भणित, **दामोजी** कृत, छन्द-५। (५) साधो सिवरो सीरजण हार। पारब्रम्भ पहली नऊ, **केसौजी** कृत छन्द-५। (६) सभरि आयो साम्य। सु चीयारा माचो धणी, **लषमणदास** कृत-छन्द-५। (७) बावो तेतीसा प्रतपाल, **गोकल** कृत, छन्द-५। (८) सिवरा सिरजण हार-॥ भाभेसर जवा धणी-**केसौजी** कृत,-छन्द-४। (९) जवडा जप्य जगदीस। भाभेसर जीवा धणी-**केसौजी** कृत-छन्द-४। (१०) मील पछम र देसि। हीवर तुरी पलाहिमी-**केसौजी** कृत-छन्द-४। (११) पनराम अवतार लीयो। आठम्य नोम अठोतर-**सुरजनजी** कृत-छन्द-४। (१२) साम्य सिधाग्यो चीनत कीयो। पनरासरि तिराणवें-**रायचद** कृत- छन्द-४। राग धनासी सापी कणाकी-(१३) दीने जागो दीन जागो। ओह गुर परगट आयो, **ऊदोजी** कृत-१६ पक्तिया। (१४) जीवलाजी धन्य महुरति धन्य सुवेला। गुर भाभेसर आयो-**नानग** कृत, १६ पक्तिया। (१५) हम र दसीया होजी। ओ दमडो वीडाणो (अपूर्ण), **ऊदोजी** कृत। (फ) **सच अपरी वीगतावलो, वील्होजी कृत,** छन्द सख्या-८७। (फो०-५५५-५५६)। (ब) **कथा दूणपुर की, वील्होजी कृत** छन्द-६०। (फो० ५५६-५५८)। (भ) **कथा उदा अतलो की, केसौजी** कृत-७७ छन्द-(फो०-५५८-५६१)। (म) **कथा सहसा जोयाणी की, केसौजी** कृत, छ० स०-१०५। (फो० ५६१-५६४)। (य) **कथा पुल्हाजी की, वील्होजी** कृत-छन्द सख्या-२५ (फो०-५६४-५६५)। (र) **कथा बाललीला की, केसौजी** कृत, छन्द सख्या-६१। (फो०-५६५-५६७)। (न) **कथा प्रमचरी (तथा कथा चेतन), सुरजनजी** कृत-छन्द सख्या-११५। (फो०-५६७-५७१)। (फो० ५७१ से) —

जन सुरजन की बीनती ॥ अज्या तिंघ सहाय ॥
पुर गुर की पु हैले ॥ सरण वठा आय ॥ ११४
मनसा वाचा करमना ॥ सुणो आतम साय
जन सुरजन की बीनती ॥ वाने की पन राय ॥ ११५ ॥

कथा सपूरण समापिता ॥ ॥ सवत ॥ १७८८ ॥ ॥

(ब) विष्णु पजर स्तोत्र (फो० ५७१-५७२) (संस्कृत म)

आदि-श्री विष्णजी सत्य ॥ लिपतु पहलाद चिरत ॥ । राग मारू ॥

दोहा ॥ नारायण पहलो नऊ स्वामी सरब सुजांण ॥

आदि भगति कहस्यों कथा पहलाद चिरत परवांण ॥ १ ॥

॥ चोपई ॥ पहलाद चिरत परवांण पय पू ॥ विधि सू बात वखांणों ॥

बात कहु सांभलियो स्वामी ॥ मो मति सारे जाणों ॥ २ ॥

अन्त-इति श्री ब्रह्माड पुराणे इद्र नारद सवाद विष्णु पजर स्तोत्र सपुरण । । श्री हरे नम ॥ श्री मगल्मस्तु ॥

६९ कथा ससे जोपाणी की, केसोजी कृत । छन्द सख्या-१०५ । पत्र सख्या-५ । देशी कागज । आकार-९ × ४ इन्च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इन्च । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-१३ । अक्षर-प्रति पक्ति-३४-३६ । साधु हरकिसनजी के शिष्य परसराम द्वारा सवत् १८७९ म लिपिबद्ध । लिपि-सुपाठ्य । प्राप्तिस्थान-महन्त रणछोडदासजी, आथूणी जागा, जाभा ।

आदि-श्री विष्णजी ॥ सत्य सही लिप्यते कथा सस जोपाणी की । राग हुसो ॥

॥ दोहा ॥ निरहारी पहलो नऊ । सतगुर स्याम सुजांण ॥

येक सत निवाज्यो सांसजी । बाइक कहू वखांण ॥ १ ॥

अन्त—इण करणी केसो कहै ॥ आवगवण न होय ॥

जसी जाणी तसी कही ॥ जोडी कथा सपूण होय ॥ १०५ ॥ इति श्री कथा सस जोपाणी की सपूरण भवत् ॥ लिप्यत साध श्री हरिकिसनजी का सिष्य परसराम ॥ समत १८७९ वष मित कार्तिक वदि । १४ वार मगलवार ॥ गाव लोहावट मधे ॥ श्री ॥

७० गोकलजी के छन्द । पत्र सख्या ८ । देशी कागज । यत्र तत्र खडित । आकार-९× ४ इन्च । हाशिया दाए बाएँ-पौन इन्च । पक्ति-प्रति पृष्ठ-१३ । अक्षर-प्रति पक्ति- साधारणत ३४- ३६ । श्री परसराम द्वारा सवत् १८७९ म लिपिबद्ध । लिपि-पाठ्य । प्राप्तिस्थान-महन्त रणछोडदासजी, आथूणी जागा, जाभा । इसम गोकलजी की ये दो रचनाए है -(क) ओतार की अस्तुति-छन्द सख्या-४५ । (ख) इदव छद, छन्द सख्या-३२ ।

आदि -श्री विष्णुजी सत्य ॥ लिप्यते ओतार की अस्तुति ॥ गोकलजी क कहे छद ॥

॥ दोहा ॥ रिधपति सिधपति सोलपति ॥ सुरपति सदा सहाय ॥

मति दाता गोविन्द सुमरि ॥ गोकल हरि गुण गाय ॥ १ ॥

अत-रह्या वाको तका वचन पालो बिसन किरपा करो काज सारो ।

दास गोकल कहै आस पूरो अलप ॥ ऊबर आदि पुरष ओट थारो ॥ २ ॥

इति श्री गोकलजी का छद सपूरण ॥ सवत १८७९ मिति कातिक सुदि १५ वार

वमप्त ॥ लिपते माध श्री हरिकिसनजी रा सिप परसराम ॥ गाव लोहाट मधे ॥ १ ॥

७१ पत्र सख्या-३६ । देशी कागज । आकार-९×४ इन्च । हासिया-दाएँ, बाएं-पौन इन्च । पक्ति-प्रति पृष्ठ-१३ । अक्षर-प्रति पक्ति-२४-३६ । साधु श्री हरकिसनजी के चेले फरसरामजी द्वारा सवत १८७८ म लिपिबद्ध । लिपि-पाठ्य । प्राप्तिस्थान-महन्त रणछोडदासजी, आथूणी जागा, जाम्भा । इसम क्रमश निम्नलिखित ९ रचनाएँ हैं —

(क) **कथा दूणपुर की, वील्होजी** कृत, छन्द सख्या-६० । (ख) **कथा चित्तौड की, केसोजी** कृत, छन्द सख्या-१२८ । (ग) **कथा उदा अतली की, केसोजी** कृत । छन्द सख्या-७७ । (घ) **कथा घरमचरी, सुरजनजी** कृत-छन्द सख्या-८० । (ड) **कथा झोरडा की, वील्होजी** कृत, छन्द सख्या-३२ । (च) **बाल लीला, केसोजी** कृत, छन्द सख्या-६१ । (छ) **कथा गूगलीए की, वील्होजी** कृत । छन्द सख्या-८६ । (ज) **कथा लोहापागल की, केसोजी** कृत । छन्द सख्या-११८ । (झ) **कथा मेडत की, केसोजी** कृत । छन्द सख्या-१६३ ।

आदि-श्री विष्णु जी ॥ सत्य सही । लिपते कथा दूणपुर की ॥ राग आसा ॥

॥ दोहा ॥ **नवणि करू गुर आपण ॥ बदू चरण सुभाव ॥**

भगता तारण भो हरण ॥ तीन लोक को राव ॥१॥

अन्त-॥ दोहा ॥ **सतरासै अर छिडोतर ॥ तिथि नव मगलवार ॥**

जिन केस की बीनती ॥ सत्गुर पार उतार ॥१६३॥ इति श्री मेडत की कथा सपूरण ॥ सवत अढार म अठतरा मिति कातिक सुदि ७ वार वसपतवार ॥। लिपत साध श्री हरकिसनजी रा चेला फरसराम ॥ गाव लोहाट मधे ॥१॥

७२ **कथा इसकदर की, केसोजी** कृत, छन्द सख्या-१९२ । पत्र सख्या-१०, देशी कागज । आकार-९×४ इन्च । हासिया-दाएँ, बाएँ-पौन इन्च । अक्षर-प्रति पक्ति-३३-३६ । फरसरामजी द्वारा अनुमानत सवत १८७८ म लिपिबद्ध । लिपि-पाठ्य । प्राप्तिस्थान-महन्त रणछोडदासजी, आथूणी जागा, जाभा ।

आदि-॥ श्री गणेशायनम लिपत कथा इसकदर की ॥ राग सोठि ॥ दोहा ॥

श्री पति पहली सिवरिय ॥ अलप अपार अनत ॥

शभ गुरु जल थल रहै ॥ भव भाजण भगवत ॥१॥

अन्त-**केस कथा कही कर जोडि ॥ आवागवणि चुकावौ षोडि ॥**

जो यह कथा सुण चित लाय ॥ सत कर मान सुरगे जाय ॥ १९२ ॥ इति श्री इसकदर की कथा सपूरण ॥ लिपत साध परसराम ॥

७३ **विष्णु चरित, ऊधोदास** कृत । छन्द सख्या-११० । पत्र सख्या-१०, मशीन के बने पतले कागज । चारो ओर से खडित । आकार-६ ५×८ इन्च । हासिया-दाएँ, बाएँ-पौन इन्च । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-८ । अक्षर-प्रति पक्ति-३२-३६ । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत १९०० के लगभग लिपिबद्ध । लिपि-स्पष्ट । प्राप्ति-

स्यान-महन्त रणछोडदासजी, आथूणी जागा, जाम्भा।
आदि-॥ श्री विष्णुजी ॥ अथ विष्णु चरित लिप्यते ॥
चौपई॥ श्री गुर सत चण सिर्नाऊ । अन्ना होइ विष्णु जस गाऊ ॥
महा बिष्णु के चरित अपारा । सुर नर मुनि जन लहै न पारा ॥१॥
अन्त-सोरठा । हरि अवतार अनत ॥ अनत चिरत अवगत तणा
गाव मुनि जन सत । विमल जस भव जल तिरण ।१०। इति श्री विष्णु
चरित्र सपूरण ॥ ॥ ॥ श्री ॥ श्री श्री श्री

७४ परची, गोकलजी कृत, छन्द सख्या-३७, अन्त म २ कवित्त और हैं। पत्र सख्या-३। आकार-९×४ इन्च। हाशिया-दाएँ, वाएँ-पौन इन्च। देशी कागज। पक्ति-प्रति पृष्ठ-११। अक्षर-प्रति पक्ति-३३-३६। लिपिकार-अज्ञात। लिपिकाल-सवत १८९८। लिपि-पाठ्य। प्राप्तिस्यान-महन्त रणछोडदासजी, आथूणी जागा, गाँव जाभा।
आदि-श्री विष्णव नम अथ परची लिपते ॥
सुपेख्यो स्वामो सोवनधार नमो निज नाय जको निराकार
नरापति निरष कर मन राव पिछाण्यौ दूद परस्या पाव १
अन्त-जपीयो जदि जाप रिद हरि एक क आयो अघ मोचण आप अलेप
भण बड भूप सुण्यो ससार निरजण नाय उतारण पार ३७ इति परची सपूरण ॥
जम जुरा जीव जोपू नहो कोई ताक न सिक अवर अगि
अमर आनुपम आतमा राव असो जित आप हरि २॥ (कवित्त)। समत् १८९८
रा मिति दुतिक आसो वद १ सुक्र

७५ गुटका। जिल्द वधा। १२ इन्च लम्ब देशी कागजो को माडकर वाच स सिला हुआ जिसके कई पत्र पृथक है। जीर्ण। आकार-६×४५ इन्च। हाशिया-साधारणत - दाएँ, वाएँ-पौन इन्च। पानी गिरन से अनेक पत्रो पर स्याही फल गई है। पक्ति-प्रतिपृष्ठ-१२। अक्षर-प्रति पक्ति-सामान्यत -२०। सवत १७७९ से १८५२ तक लिपिवद्ध। फोलियो या पृष्ठ सख्या नही है। लिपि-पाठ्य। प्राप्तिस्यान-श्री महो रामजी धारणिया, सगरिया मडी। इसम नम्न ये रचनाएँ हैं —(क) ध्रु चिरत जन गोपाल कृत (अपूर्ण)। इति श्री ध्रु चिरत सपूरण ॥ समत १८ ॥ ५२ ॥ तिथ ॥ ११ वार शुक्रवार ॥ लिपतु ॥ अजवो पुराणी ॥ चेलो गगारामजी को ॥ (ख) श्री मायोदासजी के सवोये। छन्द सख्या-५। (ग) पहेलाद चरित, केसौजी कृत-अपूर्ण, छन्द सख्या १-१७। (घ) पहलाद चित केसौजी कृत-छन्द सख्या-५९६ ॥ पुष्पिका-इति श्री पहलाद चिरत समाप्तिना ॥ समत १८५२ ॥ विरपे मिती-असाढ वद तीज ३ ॥ वार सुक्रवार ॥ लिपतु अजवो पुराणी चेलो, गगारामजी को गाव जाभा माह भनन्याव सभ नीपी छ जा ॥ श्री त्रिसनजी सत्य सही श्री रामजी सत्य सत्य ॥ (ङ) ग्रय जडभरय, जन गोपाल कृत। छन्द सख्या-१०३। (च) हरिरस, ईसरदास कृत। छन्द सख्या-१६९। समत १८५२ ॥ विरपे मिती असाढ वद तेरस

१३ ।। वार सोमवार । (छ) छमछरी (मईकी) (सवत्सरी) (सवत १७०० से १०० साल)। (ज) गुराचार। समत १७७९। अ पे मती असाढ सुध १२ वार सोमवार। (झ) राह को विचार। (ञ) कथा अमचरी तथा कथा चेतन, सुरजनजी कृत। छद सख्या-१०९। (ट) गोत्राचार। (ठ) वसदर के नाम। अंतिम पृष्ठ मूल से उलटा चिपका दिया गया है। (ड) ईश्वर-पावती सवाद रूप म-स्नान आदि का महत्व। (ढ) आदि वसावली (अपूर्ण)

आदि-॥ नीसान द्वारा वाजही हय हींसे हाथी गाजही
अमराव् सीस नाव्ही वीस माथ पावही ॥
कनक थार झारीया गडई कटोरी भारीया ॥
रूपाय हेमता चरू रसोईदार सरप रू ॥३॥

अ त-(ड)-से झाल माला फुले विसन ॥ विसन थांन थनतरे ॥
विसन सरवा सरब तरे ॥ आवो देवो सरवा सरवी को धणीं ॥१।

॥ आदि वसावली ॥ आदु अन + + + सिसटे न भवणे ॥ भव

७६ गुटका, फोलियो सख्या-६६९। १२ इ च लम्बे देशी कागजों को मोडकर वीच से सिला और जिल्द वधा हुआ। पत्राकार-९×४ इ च। हाशिया-दाएँ, वाएँ-साधारणत -पौन इन्च। पक्ति-प्रति पृष्ठ-७। अक्षर-प्रति पक्ति-सामान्यत -१३। विभिन्न लिपिकारा द्वारा सवत् १८३५ से १९०१ के बीच लिपिबद्ध। लिपि-पाठ्य। प्राप्तिस्थान-महन्त कौशलदासजी, आगूणी जागा, जाभा। इसम ये रचनाए हैं - (क) आवाहन, (सस्कृत २ श्लोक)। (ख) विसरजन-(सस्कृत) छ द-४। (ग) रामाष्टक स्तोत्र, शकराचाय विरचित (सस्कृत) छ द-८। (घ) नव ग्रह पूजा, पुष्पिका मे रक्षा नाम दिया गया है। (सस्कृत), छ द सख्या-६। इति रक्षा समाप्त समत ॥ १९०१ सुदि ७ श्री हरेनम (इस रचना के पश्चात फोलियो सख्या पुन १ से प्रारम्भ होती है)। (ङ) हरिभक्त जस रचयिता अग्रदास के शिष्य नरहरिदास। छद सख्या (४ दोहे + ३ छप्पय)=७। (च) श्री राधे किष्ण री सगाई री महमा। छद सख्या-५२। रचयिता भिवानीदास (?) रचनाकाल-(१८३५) काती सुदि ५। (छ) नरसी मुहता री हु डी री महमा, रचयिता-जेठमल कायस्थ, छद सख्या-८४। रचना काल, सवत १८२०, जैठ शुक्ल पक्ष-पचमी, बृस्पतिवार। (ज) गीता का हरिवल्लभ कृत हिंदी म पद्यानुवाद। (झ) सनेह लीला (अपरनाम सनह लीला भवर गीता), रचयिता जगमोहन, छद सख्या-१४१। (ञ) प्रहलाद चिरत, केसोजी कृत। छद सख्या-५९२। (ट) ऊमाहो, वील्होजी कृत। छद स०-२२। (ठ) पतवो-आलमजी कृत। छ० स०-११। (ड) हिंडोलणो-हीरानद कृत। छ० स०-८। (ढ) साखिया-विभिन विष्णोई कविया द्वारा रचित। (फोलियो-४४४ से ५८४)। साखी सख्या-५८। (ण) श्री नृसिंह स्तुति, ध्यान, नृसिंह मत्र, कवच आदि (सस्कृत मे)। (त) विष्णु शत नाम (विष्णु पुराण से) (सस्कृत मे)। (थ) विष्णु अठाईस नाम (सस्कृत म)। (द) सप्त श्लोकी गीता (सस्कृत म)। (ध) चतुर श्लोकी भागवत (सस्कृत म)

(न) श्री शङ्कराचार्य विरचित-श्री कृष्णाष्टक (संस्कृत में)। (प) हरिनाम माला (संस्कृत में)। (फ) विष्णु पंजर स्तोत्र (ब्रह्माण्ड पुराण से) (संस्कृत में)। (ब) विष्णु लहरी-शङ्कराचार्य कृत (संस्कृत में) (फोलियो ६११ तक)। (भ) उषाचरित्र-छंद १२८। रचयिता-अज्ञात। (म) ज्ञान राय लीला, गोसाईं माधोदास रचित। छंद ११७। (य, विवाह, गणेशस्तोत्र, रक्षा (संस्कृत में)। (र) विवरस्य आदि। (ल) अस्तुति, (व) दशअवतार। (श) मंगलाष्टक, (२९ छंद)। (ष) चौगुजो, (स) द्वन्द्व चौजुगी (फो० ६६६ तक)।

आदि   श्री गणेशायनम। वृष वाहन स्मा रढो सप्तजिह्वा हुतासन ॥
सातिक पण्णक चव अग्नि आवाह्याम्यह ॥ १ ॥
केशव पुंडरीकाक्ष माधव मधुसूदन ॥
लक्ष्मी सहितो देव विष्णु आवाह्याम्यह ॥ २ ॥

इति आवाहन ॥ अंत-(फो० ६६६) अनेक अनेक नर पोजि पोजि रहीलो तो पणि पारि किणी न पाईलो वर कायकावरदायक स्वामी सरण सुभदानक इति द्वंद्व चोजुगी सुमद २ समत १६०१ रा मिती असाढ सुदि ६ लिपी कृत्य श्री १०८ श्री वीरमदास रो चेला दयाराम पठनारथी साधु श्री मावतरामजी

७७ गुटका। जीर्ण। कई पत्र अप्राप्य। देशी कागज। आकार-६×४½ इंच। हाशिया-दाएँ, बाएँ-आधा इंच। दो हाथों की लिखावट में। लिपिकाल-संवत १८२०। लिपि-सामान्यत पाठ्य। बीच की सिलाई तक पूर्वार्द्ध के फोलियो की संख्या १२६ दी हुई है। इतनी संख्या उत्तरार्द्ध की भी होनी चाहिए किंतु नहीं है। पंक्ति-प्रति पृष्ठ-१३,१४ तथा १०-११। अक्षर-प्रति पंक्ति-क्रमश २१-२२ तथा १७-२०। प्राप्तिस्थान-महंत-कौशलदासजी, आगूणी जागा, जांभा। इसमें ये रचनाएँ हैं — (क) नामदेवजी की वांणी। पद संख्या-७५। राग टोडी, गुंड और गोरठि में गेय। (ख) फुटकर पद-६, रामरसिक-१, हरिवंश-१, हरिदास-१, हितहरिवंश-१, कबीर-२। (ग) हरचंद सत ग्रंथ-रचयिता- ध्यानदास। छंद संख्या-२६२। समत १८२० वर्षे मिती वैसाख वदि तिथि १४ वार मंगल गाव गुंगा मधि लिपतु दगवत दोय जणा रा छ वा हा हरजी रा चेला नाथाजी का दामैजी का ६, जी ॥ (घ) शनि गह क कवित्त-संख्या-११। (ङ) नासकेत पुराण बालबोध-१८ अध्याय। गद्य में। (च) फुटकर छंद-सवइये-७ केसोजी कृत, तथा दोहे ८, अज्ञात रचित। (छ) भूम माया संवाद-केसोजी कृत-१२ छंद। (ज) फुटकर छप्पय-५, केसोजी कृत-(झ) कवित्त की विगत्य। सुरजनजी कृत। कवित्त-संख्या-२६। समत १८२० ॥ वर्ष मिता असाढ सुदि तिथ ॥ ७ ॥ वार सनीसरवार। लिषतं प्रेमदास नाथाजी का स्वय गुरुद्वार कृपाधारी का पोता स्वय ॥ साव गुरा मध सुखना गाम्य र पर लिया ॥ स्वय्न हरजी प्रेमदास दोयाराध। (ञ) राम रख्या-रामानन्दजी कृत-(हिन्दी में)। (ट) छंद संख्या-८, सुरजनजी कृत। (ठ) सुरजनजी के कवित्त संख्या-१५। (ड) नरपराजी का श्लोक मूलो का समये का (संस्कृत-

हिन्दी दोना म)। (ढ) सवइये, सख्या-६, सुन्दरदासजी कृत। (ण) एकादसी माहातम कथा-(गद्य म)
आदि-अथ नामदेवजी की वाणी माडी प्रथम राग टोडी ॥
हरि नाम हीरा हरि नाव हीरा। हरि नाव लेत कटें सब पीरा के टेक
हरि नाव जाती हरि नाव पाती। हरि नाव सकल जीवनि मे क्राती ॥ १ ॥
हरि नाव सक्ल सुपन की रासी ॥ हर्नाव काटे जम की पासी ॥ २ ॥
हरि नाव सकल भवन ततसार ॥ हरि नाव नामदेव उतरे पार ॥ ३ ॥ १ ॥
अन्त-अजोध्या नगर परस चीत्रकुट श्रीपती रामेस्वर को दरमण कर श्री लीछमनजी को दरमण कर और सब तीथ कीया पुन होय कन्या दान कीया पुन्य होय श्री सालगराम सेवन कर॥ ११ के व्रत पुन्य सब तीथ कीया पुन्य होय ११ सु ईंघको पुन्य है मुक्ति को सामो कोही ११।

७८ गुटका। जीर्ण, दीमक खाया हुआ। कतिपय पत्र अप्राप्य तथा बीच म खाली भी हैं। देशी कागज। आकार-४×३ तथा ४ ५ × ३ इच। हाशिया-दाएँ, बाएँ-आधे से पौन इन्च। फोलियो सख्या एक क्रम मे न होकर अलग अलग रूप से (क्रमश ६५, १२, २१८, और ८६) ४११ तक है। अधिकाश गुटका एक ही हाथ की लिखावट मे, किन्तु अन्तिम कई रचनाएँ दो भिन्न हस्तलिपियो मे हैं। लिपिकाल-सवत् १८६६ से १६०५ तक, अन्त की (त्र) से (ड) तक रचनाओ का स० १६२३। लिपि-प्राय पाठ्य। पक्ति-प्रतिपृष्ठ-५-६। अक्षर-प्रतिपक्ति-८-१०। प्राप्तिस्थान-श्री विष्णोई मन्दिर, कोलायत। इसमे ये रचनाएँ हैं-(क) हरजस, सख्या-४। अज्ञात कृत-३ तथा अतिम काल्हू कृत। कई पत्र अप्राप्य। (ख) सोल सुपना रौ विवरो-रचयिता-अज्ञात। (ग) हरजस १, अ सा गुर हमारा अवधु हादू तुरक दोया स न्यारा। छन्द-५। सुरजनजी कृत। (घ) कक्का छत्तीसी-ऊधोदास कृत। छन्द सख्या-३७। (ड) मगलाष्टक-केसोजी कृत। छन्द सख्या-२६। (च) भाडली पुराण-गद्य म। रच०-अज्ञात। इति श्री भाडली पुराणे बार मास तीन स साठ दिनारा आरिष सपूरणम्। (छ) धुज पुन्यो रो विचार-असाढ उनता सावण लागता पुन्यों जिण रो नाम धुपुनू कहीज। ये सब फोलियो-६५ तक हैं। इसके पश्चात ४० पत्र खाली हैं तथा आगे की फोलियो सख्या पुन १ से आरम्भ हुई है। (ज) दस अवतार, छन्द-१०। रचयिता-अज्ञात। (झ) कवित्त-१। (ञ) गोत्राचार। (ट) आदि बसावली, (ठ) बसदर के २५ नाम, (ड) जभ स्तुति, गोकलजी रचित। छन्द सख्या ४५। (ढ) जम्भाष्टक, गोविन्दरामजी कृत, सस्कृत म। (ण) इ दव छद-सख्या-३२, गोकलजी रचित। फो०-४३ से ४५ अप्राप्य। (त) गायत्री, सस्कृत म, सख्या-२५। नाम ये हैं-ब्रह्म, राम, विष्णु, रुद्र, लक्ष्मी, नसिह, लक्ष्मण, कृष्ण, गोपाल, परशुराम, तुलसी, हनुमान, गरुड, अग्नि, पृथ्वी, जल, आकाश, सूर्य, चन्द्र, गुर, पवन, हस, गौरी, देवी एव अनग। समत् १८६६ रा मिती फाल्गुण वदि ११ पठनार्थी श्री वीरमदासजी लिपीकृत्वा दयाराम। आगे (थ) से (य) तक सभी रचनाएँ सस्कृत म हैं-

(य) श्री विष्णु पुराणे शत नाम। (द) विष्णु अठाईस नाम स्तोत्र। (घ) एक श्लोकी रामायण। (न) एक श्लोकी भागवत। (प) एक श्लोकी महाभारत। (फ) सप्त श्लोकी गीता। (व) चतुश्लोकी भागवत। (भ) हरिनाम माला। (म) सूय दस-नाम। (य) श्रमबेपाक गीता। (र) राम रक्षा। (ल) सनेह लीला भवर गीता, जग मोहन रचित। छ० स०–१३०। समत १८९९ रा मिती ज्येष्ट सुदि १४। (व) अमावस्या महात्म कथा–मयाराम रचित। छ० स०–१४५ (फो० सख्या–१६० से २१८ तक, रचना के ७२ छद पूरे होते हैं, पश्चात फोलियो सख्या नही दी हुई है)। (श) एकादसी महात्म (गद्य म)। (ष) ध्रू चरित्र–जन गोपाल कृत। छ० स०–२२२। (स) एक श्लोकी गीता, (सस्कृत)। (ह) विष्णु पजर स्तोत्र (सस्कृत)। सवत १९०६ रा मिती महा सुदि ३ वार शनिसर। (क्ष) विष्णु सहस्र नाम (सस्कृत) (फो० १५–८६, पश्चात् सख्या नही दी गई है)। (त्र) गभ चेतावणी–रामचरण कृत–छन्द स० १२३। समत १९२३ रा मिती श्रावण सुद १४ वार सनीस। (न) दोन दरवेस का एक छन्द–तथा राम रामेति रामेति–श्लोक। (ज्ञ) २९ धम की आखडी–तीस दिन सूतक पाच रतवती न्यारो। (आ) अवतारों की महिमा–१ छप्पय, अग्रदास कृत। (इ) फुटक्र छद, अनात कृत। (लिपि–पाठ्य नही है)

आदि–कौं चल्या सीता लोनी लार

व यन में हम रणवास में कौन सहे सिर भार ३

रामचदर त्यागी नही हम लीयो वराग

जो तुमकौं सग ल चल पड जोग में दाग ४

कर डीवी गल गूदडी परयौ भिषारी भेष

नाम निरजन शरण गुरु गोरष दीया उपदेस ५ ॥ ३ ॥ (फोलियो–२)

अत–ज ज मीन वाराह कमठ नरहर बल बावन।

परसराम रघुवीर कृष्ण श्रित जु पावन।

बुध नोकलकी व्यास पिरथुय रहस मत्र।

जग्य रषा हग्रीव ध्रवरघेन धनत्र।

बदरी पतर मल दत सनकादिक करणा करो।

चोविस रूप लिला रची श्री अगरदास उर पद धरो। (आ–रचना से)

७९ प्रह्लाद चिरत, ऊधोजी कृत। छन्द सख्या–३४६। गुटका। ऊपर स सिला हुआ। पत्र सख्या–४८ (फोलियो ८७)। देशी कागज। चिकनाई लगा हुआ, गहरा बादामी। आकार–५ ५×८५ इन्च। हाशिया–सिलाई की ओर पौन इन्च, किनारे की ओर १ इन्च। पक्ति–प्रति पृष्ठ–११। अक्षर–प्रति पक्ति–१६। सवत १६४१ म प्रागसुख लिखार, नगीनदास द्वारा लिपिबद्ध। लिपि–पाठ्य। प्राप्तिस्थान–पापासर साथरी।

आदि–दों श्री गणेशायनम अथ प्रह्लाद चिरत लिषत

॥ गोहा ॥ प्रथम बद् गुर देव कू ॥ सुनियें बहु सब साद ॥

किरने बहु मरा किस्न कु ॥ कहू चिरत प्रह्लाद ॥१॥

अन्त-सोरठा-अघवणा सवत् जाण ठार से अडसठ भए

सत करो परमाण प्रहलाद चिरत वणन करयो ३४७ (३४६) इति श्री ऊधोजी कृत भापाया प्रहलाद चिरत सपूरणम् १ सवत १६४१ मिती चत सुदि ८ वार वस्यपत के दिन लिप्यत प्राणसुख विस्णोई दिनदार का वेटा नगीन मध्ये रहन वाला उँ हरि तत सत १ ।

८० रुक्मणी मगल रचयिता–रामलला। विभिन्न राग-रागिनियो के अ तगत छन्द सख्या पृथक पृथक् है। पत्र सख्या–१७, देशी कागज। आकार–९×४ इच। हाशिया-दाएँ, वाएँ–पौन इच। पक्ति-प्रतिपृष्ठ–११। अक्षर-प्रति पक्ति–२८–३०। लिपिकार–अज्ञात। अनुमानत सवत १८५० के लगभग लिपिबद्ध। लिपि–पाठ्य। प्राप्ति स्थान–लालासर सायरी।

आदि–श्री गणेशायनम राग देवगरी

निगम जाकों नित्य गाव घ्यान शिव उर आनहीं

आदि अनादि परिब्रह्मा के भक्त नीक जानही १

अन्त–राज करो नागरी द्वारिका भक्त वछल श्री गोपाल

रामलला जन गाव मगल कृष्ण भज जन होय निहाल ८ इति श्री रामलला कृत रुक्मणी मगल सपूरणम् ।११।

८१ पोथी, जिल्द बधी (ब०–प्रति)। यत्र-तत्र खडित। एकाध पत्र–अप्राप्य। अपेक्षाकृत मोटा देशी कागज। पत्र सख्या–१५२। आकार–१०×७ इच। हाशिया-दाएँ, वाएँ–पौन इच। तीन लिपिकारो द्वारा सवत १८३२ से १८३६ तक लिपिबद्ध। लिपि–सामान्यत –पाठ्य। पक्ति-प्रति पृष्ठ–(क) हरजी लिखित रचनाओ म २३-२९, (ख) तुलछीदास लिखित सवदवाणी म–३१ तथा (ग) ध्यानदास लिखित रचनाओ म–२४–२५। अक्षर-प्रति पक्ति–क्रमश (क) १८–२०, (ख) २४–२५ तथा (ग) २३–२५। गाव मुकाम के श्री वदरीराम थापन की प्रति होने से इसका नाम ब०–प्रति रखा गया है। इसम ये रचनाए हैं —(क) औतार पात का वपाण, वील्होजी कृत। छन्द सख्या–१४०। (ख) गूगलीय की कथा, वील्होजी कृत। छन्द सख्या–८६। (प्रथम रचना का अ तिम और दूसरी का आरम्भ का एक पत्ता भूल मे शायद जिल्द बाधते समय, कथा जेसलमेर की के बीच म लगा हुआ है)। (ग) सच अपरो विगतावली, वील्होजी कृत। छन्द सख्या–४८। (घ) कथा दू णपुर की, वील्होजी कृत। छन्द सख्या–६०। (ट) कथा जेसलमेर की, वील्होजी कृत। छन्द सख्या–८६। (च) कथा झोरडा की, वील्होजी कृत। छन्द सख्या–३३। (छ) कथा ऊदा अतली की, केसोजी कृत। छन्द सख्या ७७। (ज) कथा सस जोखाणी की, केसोदासजी कृत। छन्द सख्या–१०६। (झ) कथा चीतोड की, केसोदासजी कृत। छन्द सख्या–१३०। (ञ) कथा पुल्हेजी की, वील्होजी कृत। छन्द सख्या–२५। (ट) कथा असक्दर पातिसाह की, केसोदासजी कृत। छन्द सख्या–१६१। (ठ) कथा वाल लीला, केसोदासजी कृत। छन्द सख्या–६१। (ड) कथा ब्रमचरी तथा कथा चेतन,

गुरजनदासजी कृत । पद संख्या-११ । (ड) ग्रंथ माहात्म्य, गुरजनदासजी कृत । पद संख्या-१६६ । संवत् १८३० मिती जेठ सु० १३ लिखी मन्दिर हरजी लिख पर ग्रंथित रामजी साताजी का पत्र पोथी मांड आमालीया मध्ये लिखा ॥ शुभ मस्तु कल्याण ॥

कथा साहुरदन मैं लिखी भरत बड जर पारि ।
पढ्य बधि अपार जो हुय । सभी हजोर गुपारी ॥१॥

(ग) पहलाद चिरत, केसोदासजी कृत । पद संख्या- ६० । (घ) श्री बावन जांभजी का (सबदवाणी) ५८ प्रसंग सहित । सबद संख्या-११७ ।

आदि-श्री परमातम राम । श्री गणपत राम ॥ लिखते श्री बावन जांभेजी का ॥

राव दरय जल रह्या ॥ सबद जगाया जोर ॥
बांभण कू परचा दिया ॥ अ ता अगा अमरज जोर ॥ १ ॥
जो पूछ्या सोई कह्या ॥ अलष लखाया भेव ॥
पोथा सब गमाईया ॥ जदि सबद कह्या सभदेव ॥ २ ॥

सबद ॥ गर थाप्या गुर चीन्ह निराहिर । गर गुर परम पखाणी ॥

अन्त-भलीयो होइ त भल बुधि आव ॥ बुरिया बुरी कमाव ॥ ११७ ॥ संवत् १८३३ ॥ मिष ताज भाण्यो सुमि ॥ गहन गार मध्य लिखत । वदा गागर हो । निपावनू रामा प्रताप भाभारया ॥ सबद जांभेजी का पनुरण ॥ लिखतू तुलीदास ॥ भाभारया कनोरामजी का चेला ॥ कनोरामजा कासालाण ॥ बावाजी नूर जी का सिष ॥ नूरजी पराजजी का सिष । पराजजी अगाली । माग बावा जांभाजी ताई पाठा छ सू हम जोगत भा वारा । जिगो मुसारियजी को निरति पा लिखी लिपी छ यथाथ प्रिति उतारी है ॥ सबद । दाहा ॥ कविर् । परिल जो बुध या सोई ॥ (ध) कवत गुरजनजी रा कह्या, संख्या-३२९ । संवत १८३९ रा वमाष मास तिथौ ५ देवा गुरवार लिषत वटगव ॥ प्यारंग्यास दुगासी मध्य जथा प्रति तथा लिपत ॥ बाच विचार लिगनु राम राम । (ग) होम को पाठ । (च) आदि वसावली । (न) विवरस । (प) कलस थापन । (फ) पाहल । (ब) चोगुणी चोवाहको । (भ) पाहलि (पुन)

आदि-श्री गणेसाय नम श्री सारदाय नम श्री विसनजी सत सही ॥ लिषतु प्रोतार पात का वपाण

॥ दुहा ॥ नवणि करू गुर आपण ॥ नउ निरमल भाय ।
कर जोडे बहू चरण ॥ सीस नवाय नवाय ॥ १ ॥

अंत-मछ की पाहलि ॥ कछ की पाहलो ॥ बारा की पाहली ॥ नारसिंघ की पाहलि ॥ बावन की पाहलि फरसराम की पाहलि राम लक्षमण की पाहलि । कनकी पाहलि बुध की पाहलि निकलकी पाहलि ॥

८२ सबद वाणी । सबद संख्या-१२०, बिना प्रसग । गुटका, फोलियो संख्या-६६ । मशीन के बने कागज । आकार-६ २५ × ४ इंच । हाशिया-दाएँ बाएँ-आधे से

पौन इच। पंक्ति-प्रति पृष्ठ-९। अक्षर-प्रति पंक्ति-१९-२०। लिपि-सुवाच्य। विहारीदास द्वारा सवत १९३० म लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-पीपासर साथरी।

आदि-श्री जभगुरवे नम। अथ शब्द वाणी श्री जाभजी की लिखते॥

गुर चीन्हो गुर चीन्ह पिरोहित। गुर मुख धम बखाणी।

अत-भलीया होय तो भल बुध आवै॥ बुरीया बुरी कमाव॥ १२० इति श्री शब्द वाणी जाभजी की सपूरणम् सवत॥ १९३० मिति फागन वदि २ वार मगल कु लिपिकृत साधु विष्णुदासजी का शिष्य बिहारीदास न॥

८३ सबदवाणी। सबद सख्या-१२०, बिना प्रसग। गुटका। फोलियो सख्या-७६। मशीन के बने कागज। आकार-६×२ ७५ इच। हाशिया-दाएँ, बाएँ-एक इच। पक्ति-प्रति पृष्ठ-९। अक्षर-प्रति पक्ति-१६। सवत १९४१ म प्राणसुख विश्नोई द्वारा लिपिबद्ध। लिपि-सुवाच्य। प्राप्तिस्थान-पीपासर साथरी।

आदि-श्री श्री गणेशायनम॥ अथ शब्दवाणी श्री जाभजी लिप्यते।

ओं गुर चीन्हों गुरचीन्हि पिरोहित। गुर मुखि धम बखाणों॥

अत-भलीयो होय सो॥ भल बुद्धि आव॥ बुरीयो बुरी कमाव १२०॥ इति श्री शब्द वाणी श्री जाभजी की सपूरणम्॥ १॥ सवत१९४१ मिती जेष्ट वदी २ वार मगलवार कू लिप्यत प्राणसुख विश्नोई नगीन वाला। बेटा दिलदार का॥ श्रो० हरि तत सत

८४ सबदवाणी। सबद-सख्या-१२०। बिना प्रसग। गुटका। फोलियो सख्या १०५। मशीन क बने कागज। आकार-६ २५×४ इच। हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इच। पक्ति-प्रति पृष्ठ-७। अक्षर-प्रति पक्ति-१४-१५। लिपि-सुवाच्य। सवत १९६७ म स्वामी साहबरामजी द्वारा लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-पीपासर साथरी।

आदि-श्री गणेशायनम॥ श्री श्री जभगुरुभ्योनम॥ ०॥ अथ शब्द वाणी श्री जाभजी की लिपते॥ ओं गुर चीन्हों गुर चीन्हि पिरोहित गुर मुख धरम बखाणों। अन्त-भलीया होय सो भलो बुधि आव वुरिया वुरी कमाव॥१२०॥ इति श्री सज्जभ प्रणीता शब्द वाणी सम्पूरणम्॥ सवत् १९६७ मिती फाल्गुण वदि ६ रविवार को नगीना वटा मन्दिर श्री १०८ श्री स्वामी रामानन्दजी का शिष्य स्वामी साहबराम लिखतम

दोहा-हाथ पाव कर कूबडो नीच मुख अरु नन

इन कष्टा पोथी लिखी तुम नीके रखियो सैन १

८५ प्रहलाद चिरत-ऊदोजी कृत। छद सख्या-३५०। गुटका। फोलियो सख्या-३८। मशीन के बने हल्के पाले रग के कागज। आकार-६ २५×४ ५० इच। हाशिया-दाएँ, बाएँ-आधा इच। पक्ति-प्रतिपृष्ठ-१०। अक्षर-प्रति पक्ति-२०-२२। सवत १९५८ म सतोषदासजी द्वारा लिपिबद्ध। लिपि-सुपाठ्य। प्राप्तिस्थान-पीपासर साथरी।

आदि-श्री गणेशायनम अथ प्रहलाद चिरत लिपते॥

दोहा-प्रथम बदु गुरुदेव कु दुतिये वदु सब साध
त्रितिये वदु महा विष्ण कु कहु चरित प्रहलाद
अंत-समत अठारे स अडसठा माघ सुकल पक्ष जान
तियो तीज सम्पूण भयो प्रहलाद चरित आख्या ३५० इति श्री २० पा० प्रहलाद चरित्र समाप्तोय समत १६५८ मीती माघ वदी १३ लिपीकृत साध श्री १०८ वालक्दासजी का शिष्य सतोपदास प० स्वय ॥

८६ गुटका । फोलियो सख्या-८२ । मशीन के बने कागज । आकार-६ २५×४ इच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इ च, पक्ति-प्रतिपृष्ठ-८ । अक्षर-प्रति पक्ति १८-१६ । सवत १६३६ म प्राणसुख विष्णोई द्वारा नगीने म लिपिबद्ध । लिपि-सुपाठ्य । प्राप्तिस्थान-श्री वीरमरामजी थापन, मुकाम । इसमे दो रचनाएँ हैं —(क) विष्णु सहस्र नाम । (ख) सबदवाणी । सबद सख्या-१२०, बिना प्रसग ।
आदि-उ श्री गणेशायनम ॥ उ यस्य स्मरण मात्रेण जन्म ससार वधनात ॥
अन्त-भलोयो होय सो भल बुधि आव ॥ बुरीया बुरो कमाव ॥ १२० ॥ इति श्री सबद वाणी भावजी की सपूरणम् ॥ सवत ॥ १६३६ ॥ मिती श्राव सुदि ३ वार सोमर के दिन लिपते पिरानसुष विष्णोई ॥ नगीन मध्ये ॥ ओं तत सत् ॥

८७ प्रहलाद चिरत, केसोदासजी कृत । छन्द सख्या-५६५ । पत्र सख्या-९६ । यत्र तत्र खडित और जीर्ण । देशी कागज । आकार-६ ५×३ २५ । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इ च, पक्ति-प्रति पृष्ठ-७ । अक्षर-प्रति पक्ति-१८-१६ । सवत १८८७ म श्री दयाराम द्वारा लिपिबद्ध । लिपि-सुवाच्य । प्राप्तिस्थान-श्री भीयाराम गायणा, सदलपुर ।
आदि-श्री गणेशायनम श्री गुरुभ्यानम अथ प्रहलाद चिरत ॥ राग मारू ॥
दोहा-नारायण पहली नऊ । सांमी सब सुजाण ।
आद भवत कहसू कथा । पहलाद चिरत परवाण १ ॥
अन्त-में रावण पकडयो दीन को ॥ सतगुरु करे सहाय
पाच सात नव बाहरां ॥ अवक मोह मिलाय ॥ ५९५ ॥ इति श्री पहलाद चिरत सम्पूरणम ॥ १ समत ॥ १ १८८७ ॥ रा वर्षे मिती पौह बदि । ३ ॥ वार गुरुवारे ॥ लिपी कृत साध श्री बाबाजी श्री बाबाजी १०८ श्री बीग्मन्दासजी रा तत्सिष दायाराम लिपत गाव सावराऊ मध्ये ढाणी घतरवाला री बगिची मध ।

८८ (हरि) प्रहलाद चिरत, साहबरामजो राहड कृत । छन्द सख्या ६८ । पत्र सख्या-१७ । देशी कागज । आकार-१२×६ इ च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-१ २५ इ च, पक्ति-प्रति पृष्ठ-११ । अक्षर-प्रतिपक्ति-२७-२८ । सवत १६४४ मे साहबरामजी द्वारा लिपिबद्ध । लिपि-पाठ्य । प्राप्तिस्थान-श्री धोकलराम विष्णुदत्त विष्णोई, दुतारा वाली ।
आदि-अब गुरु कृपा करो ॥ मम बुधि गुन गन देहु ॥
आद भक्ति गुन अमित अति ॥ हृदे परे रहु तेहु ॥ १ ॥

अन-साहबरांम हा पुस के । पग दाशिन के दान
जाभ उपासक मम कथा । सुन हिय करहि विलास ॥ ६८ ॥ समत १६४४ रा वर्षे मीती फागण वदी ११ लिपी कृत शारी शाहबरामेण ।१। (पत्र के बीच मे)–इति श्री मत शाह रामेण विरचतेयां ॥ हरि प्रहलाद चिरत । सपूरण भवेत । उ तत सत् उँ हरियेन्म)

८९ पत्र सख्या–७ । देशी कागज । आकार–११ ५×५ २५ इ च । हाशिया–दाएँ, बाएँ–१ इ च । पक्ति–प्रतिपृष्ठ–१६ । अक्षर–प्रति पक्ति–४१–४३ । लिपिकार–भगवानदास तया अज्ञात । लिपिकाल–सवत १८६४ । लिपि–सुवाच्य । इसमे ये रचनाएँ हैं —(क) धम सवाद, धेमदास कृत । छद सख्या–१७८ । लिपत साध भगवान । समत १८६४ रा मि भादवा सुदि ७ बार मगल्वार लिपि । चसरखठा मधे ॥ प्राप्ति-स्थान–श्री धाकलराम विष्णुदत्त विष्णोई, दुतारावाली । (ख) ३ कवित्त अल्लूजी के, तुही सान सधीर, जिणि गोवल रायीयो, तया जठ नदी जल विमल । (ग) २ सवइए, अज्ञात कृत ।
आदि–श्री गणेशायन्म श्री विष्णुजी सत्य ॥ अय ग्र थ धम सवाद लिपते । श्लोक ॥ अधर्मेषु विल्वपु
अत–अस बड मै परि विपता । तब सिंधु को काज तो काहू न कीनां ॥२॥

९० रुक्मणी मगल, पदम भगत कृत । विभिन्न राग रागिनिया के अ तगत लिखित छदो की स० पृथक पृथक् है । पत्र सख्या–५३ । देशी कागज । आकार–६ ७५×४ ७५ इ च । हाशिया–दाएँ–बाएँ–पौन इ च । पक्ति–प्रतिपृष्ठ–१३ । अक्षर–प्रति पक्ति–४२–४६ । लिपि–स्पष्ट एव सुवाच्य । लिपिकार–अज्ञात, सवत १६२४ मे लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान–श्री स तकुमारजी विष्णोई, दुतारावाली ।
आदि–श्री गणेशायनम ॥ अथ पदमईया कृत रुक्मणि मगल लिख्यते
॥ दोहा ॥ गौरीनदन वीनवा । सुरपति सुरति सुजान ।
कृष्ण तणो र विवाहलो । रिध सिध परमाण । १ ॥
अन्त–राग सोरठ ॥ जो मगल कु गाव जाक पाप परा हो जाव ।
जो मगल सुहे काने जाके कोट जन्म के पुन है । १ ।
द्वारामति आनद भयो है । सुर नर देत आसीस ।
भणे पदमैयो वष्णव यु । सिंघासण जगदीस । २ । इति श्री पदमया कृत रुक्मणी मगल सपूण ॥ सवत १६२४ स रा मीती चत सुद एकम ॥ भार सुकरवार ॥

९१ रुक्मणी मगल, पदम भगत कृत । विभिन्न राग–रागिनियो के अ तगत लिखित छदा की सख्या पृथक पृथक् है । पत्र सख्या–७० । देशी कागज किन्तु पत्र ४७ से ५८ तक, १२ पत्र मशीन के बने । आकार–१२×६ इ च । हाशिया–दाएँ, बाएँ–१.२५ इन्च । पक्ति–प्रतिपृष्ठ–११ । अक्षर–प्रति पक्ति २८–३५ । सवत १९३९मे साहबरामजी द्वारा लिपिबद्ध । लिपि–सुवाच्य । प्राप्तिस्थान–श्री स तकुमार विष्णोई,

दुतारावाली ।

आदि ॥ ६ ॥ श्री गणेशायनम

॥ दो० ॥ ससार सागर अथाह् जल ॥ सुमत वार न पार ॥
गुर गोबिद कृपा करो ॥ मै गाऊ मगलचार ॥ १ ॥

अन्त-जो मगल कु सुन गाय गुन है । याने अधिक बजाय ।
पूरण ब्रह्म पदम के स्वामी । मुक्त भक्ति फल पाय ५ इति श्री पदमइया कृत रुकमणी मगल सपूरण स्मत १६३६ मीती म्हा व० ६ लिपिकृत नारी साहबराम

६२ गनेशजी सुरसती के भजन, साहबरामजी कृत । भजन सख्या-५ । पत्र सख्या-२ । मशीन के बने कागज । आकार-१२×६ इच । हाशिया-दाएँ-बाएँ-१ इच । पक्ति-प्रतिपृष्ठ म १२ । अक्षर-प्रति पक्ति-३३-३६ । लिपि-स्पष्ट एव सुवाच्य । साहबरामजी द्वारा अनुमानत सवत् १६३६-४० म लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-श्री सन्तकुमारजी विष्णोई, दुतारावाली ।

आदि-अथ गनशजी सुरसती के भजन लिषते
नाचन गवरी नन्द आऐ क मम सिम २ छिब छाऐ टेर ०

अन्त-सुरसत गनपत जो नर गाव जीवत हा मुक्ति पद पावै
साहब सत भव त्रस्या म्हे ७

६३ गुटका, किनारा से दीमक खाया हुआ । कतिपय पत्र-अप्राप्य । देशी कागज । आकार-५ ७५×४ २५ इच । हाशिया दाएँ, बाएँ-पौन इच । पक्ति-प्रति पृष्ठ-१३ । अक्षर-प्रति पक्ति-१०-१२ । सवत् १८८७ म श्री रतनदासजी द्वारा लिपिबद्ध । लिपि-पाठ्य । प्राप्तिस्थान-श्री रामरिख गायणा, सदलपुर । इसमे ये रचनाए हैं - (क) बारपडी, ऊदोदास रचित । छद सख्या-३७ । इती श्री बारपडी उदोदास विचते सपूरण लिपत साध भभेणा श्री १०८ परमरामजी का सिष्य रतनदास का जे कोई बाच विचार तो नुवण बाचजोजी समत १८८७ मिती भादव सुदि १२ मगलवार । (ख) लूर-१, छद सख्या-६ । हरजस-१, छद सख्या-६ । क्रमश ऊदोजी अडीग और ऊदोजी नण कृत । (ग) साखी सख्या-१८ । इन कवियो द्वारा रचित - रायचद-२, केसोजी-५, ऊदोजी नण-३, वील्होजी-१, सुरजनजी-२, दामोजी-१, गुणदास-१, रविदास-१ तथा अज्ञात-२ । (घ) कथा तलाव की, केसोजी कृत । छद सख्या नही दी है । (ङ) बिहारी के दोहे । सख्या-१३० । (च) भ्रमर गीत-नददास कृत । छद सख्या ७४ । (छ) ध्रुवचरित, जनगोपाल कृत । अपूण । प्राप्त छद सख्या-२७० ।

आदि-श्री विष्णजी सत नही श्री गणेशायनम अथ लिपते बारपडी
कवत कुडलिया ॥ कका केवल क्रिष्ण भजो । हृद धर विसवास ।
आन भरोसो छाडदो । राष राम की आस ।

अन्त-उलटो मीन चल जल माही हरि भगति मिल हरि माही
जसे सीप समुद त न्यारो स्वांत बूद बरिष सुष भारी २७०

जसे चद कमोदनि भावँ जल मैं बसे सप्रेम (अन्तिम छेद पक्ति अस्पष्ट है)

६४ साखी। सख्या-६४ (लिपिकार न भूल से सख्या ६३ दी है)। विभिन्न विष्णोई कवियो द्वारा रचित। पत्र सख्या-३३। देशी कागज। आकार-१२×६ इन्च। हाशिया-दाएँ, बाएँ-सवा इन्च। पक्ति-प्रतिपृष्ठ-१३। अक्षर-प्रति पक्ति- ३५-३७। सवत १६१० म श्री साहबराम द्वारा लिपिकृत। लिपि-पाठ्य। प्राप्तिस्थान श्री सन्तकुमार विष्णोई, दुतारावाली। आदि-श्री जभायनम राग सुहव ॥ कणाकी ॥
साधे मोमणे कीयो अलोच जमु रचावीयो ॥ १ ॥
इ हि जमल पुजली करोडि गुर फुरमाइयो ॥ २ ॥
अन्त-अत ही सुहायो म्हारो सायबो। पीयो म्हारो प्रमँ दयाल।
आलम प्रभुजी रो लाडलो। गोरघर लाल गवाल। १०। ६३ इति श्री सापी भाभजी की सपूरण लिपते नाथ श्री गोविंदरामजी रा सिष सायवराम सवत् १९१० रा वषे मिती पोह वघ १४ वारे गरुवार गाव रामडास (म) धे श्री म्हाराज विलजि रि जाग्या ह वठी ता सम मा स्व थ।

६५ हरजस, सख्या-१०५। पत्र सख्या-४०। देशी कागज। आकार-१२×६ इच। हाशिया-दाएँ, बाएँ-सवा इच। पक्ति-प्रति पृष्ठ-१३। अक्षर-प्रति पक्ति-३२-३७। सवत १६०८ म साहबरामजी द्वारा लिपिबद्ध (१६०८ मीती पो सुघ १ लिपते माघ श्री गाविंदरामजी रो सिस सायवरान-पत्र १६ वें पर)। लिपि-स्पष्ट। प्राप्ति-स्थान-श्री सन्तकुमार विष्णोद, दुतारावाली। इसम सुरतराम, सूरदास, लाल्दास, चन्द्रसखी, विसनदास, शीतल, अली, तुलसीदास, अगरदास, नानक, कबीर, सुन्दरदास, नरसी, मीराबाई, तुरसीदास, माधोदास, भानीनाथ, रामदास, बख्तावर, देवादास, नामदेव, रदास, केसौजी, मिठुदास, सुरजनजी, पदम आदि के हरजस सग्रहीत हैं। आदि-श्री वीसनजी रा गोडी। श्री भागोत उघारा जग मै। टेक
श्री भागोत सुनि सिनकादिक इमृत पीये एक धारा
ध्रू प्रहैलाद भभीषन नारद सिमृत बारमबारा १
अन्त-तुलछीदास सिवरी फल पाऐ दसरत नद कीसोर हो ३
भइया जो आज के सवाद मीठे बोर हो लछमेंना ईति हरजस १०५

६६ सबदवाणी। सबद सख्या-१२३। गद्य प्रसग समेत। गुटका। जीर्ण और खडित। फोलियो-८०। आकार-६×४ इच। हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इच। पक्ति-प्रति पृष्ठ-७। अक्षर-प्रति पक्ति-१२-१६। अनुमानत सवत् १८२२ मे लिपिबद्ध। (इसी लिखावट मे रावतखेडा से सुन्दरदासजी के सवइयो का एक गुटका और प्राप्त हुआ है, जिनके अन्त मे लिखा है-"इति श्री सुन्दरदास जी के सवईये सपूरण भवेन पठनर्थ साधू महाराज प्रमहस केसोदासजी सवत १८२२"। लिपि-पत्र भीग जाने से यत्र तत्र अस्पष्ट, पर सामान्यत -पाठ्य। प्राप्तिस्थान-महन्त भोलारामजी, विष्णोई मदिर, रावतखेडा। इसम स्वीकृत सबद सख्या १०३ के दो सबद (सख्या १०४, १०५) मान हैं तथा स्वीकृत सबद सख्या १०२ भी इसमें १०३ वी सख्या पर है।

आदि-श्री गणेशायनम श्री विष्णवेनम अथ श्री भाभजीरा शब्द लिख्यते । वाच वरव नीर राख्यो वाची माटी का दीवटीया घराया जा माहि पांणी घनाय हुक्म सू दीया जगाया वामण न परचो दिखाल्यो

अन्त-रतन कया थकू ठे वासो तेरा जुरा मरण भय भाज १२३ इति श्री शब्द श्री

९७ प्रहलाद चिरत, ऊदोजी कृत । छन्द सख्या-३५६ । पत्र सख्या-४१ । जीर्ण और खडित । मशीन के बने कागज । आकार-९×४ इच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-सवा इच । पक्ति-प्रति पृष्ठ-८ । अक्षर-प्रति पक्ति-२४-२६ । सवत् १९२८ म प्रानसुख विष्णोई द्वारा लिपिवद्ध । लिपि-स्पष्ट एव सुवाच्य । प्राप्तिस्थान- महन्त भोला-रामजी, विष्णोई मन्दिर, रावतखेडा ।

आदि-ॐ श्री गणेशायन अथ प्रहलाद चिरत लिखते

दोहा-प्रथम बदु गुरदेव कु दुतिये बदु सब साद

त्रितीये बदु महा विष्णु कु कहु चित प्रहलाद १

अन्त- सोर्ठा आयवणा स वत जाण ठार से अडसठ भए

सत करो परवाण प्रहलाद चिरत वणन करयो ३५६ इति श्री ऊधोदासजी कृत भाषाया प्रहलाद चित सपूरणम् १ सम्वत् १९२८ मिति भादु दुजा वदी ३ लिपि कृत प्रानसुख विष्णोई नगानेवाला श्री तत सत श्री राम राम ॥

९८ परची, गोकलजी कृत । छन्द सख्या-३७ । पत्र सख्या-४ । देशी कागज । आकार-९×४ इच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन से १ इच तक । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-९ । अक्षर-प्रतिपक्ति-२५-२६ । लिपिकाल-अज्ञात, अनुमानत स० १८५० के लगभग लिपिबद्ध । लिपि-पाठ्य । प्राप्तिस्थान-महन्त भोलारामजी, विष्णोई मदिर, रावत खेडा ।

आदि- श्री गणेशायनम अथ लिपते परची

सुपेख्यो सामी सोवन धार नमो तिजनाथ जको निराकार

अन्त-भर्ण खड भूप सुण्यो ससार निरजणनाथ उतारण पार ३७ इति श्री गोकलजी की परची सपूरणम् १

९९ अमावस्या री कथा, मयाराम कृत । अपूर्ण । प्राप्त छद सख्या-१२९ । पत्र सख्या-१२ । देशी कागज । आकार-९×४ इच । हाशिया-दाएँ, बाएँ- १ स सवा इच । पक्ति-प्रति पृष्ठ-९ । अक्षर-प्रति पक्ति-२० से २५ । लिपिकार-अज्ञात । लिपि काल-अनुमानत विक्रम उन्नीसवी शताब्दी उत्तरार्द्ध । लिपि-पाठ्य । प्राप्तिस्थान-महन्त भोलारामजी, विष्णोई मदिर, रावतखेडा ।

आदि-श्री गणेशायनम लिषतु अमावस्या री कथा कु डलीया ॥

प्रथम बदु गुर देवकू दुतिये बदु सब साध

विष्णु बदु पुत्र तीसर जात मिट जु ब्याध्य २

अन्त-कतक दिन बिते गूजरि आई ॥ कदली वन म बदत बधाई ॥

वधू आय पाय सब लागी ॥ आसिस दई हाहु सुभागी ॥

१०० कथा वहसोवनी, केसौजी कृत । छद सख्या-५३८ । पत्र सख्या-४४ । देशी कागज । आकार-६×४ इच । हासिया-दाएँ, बाएँ-पौन से १ इच । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-६ । अक्षर-प्रति पक्ति-२५-२६ । साधु तुलसीदास द्वारा सवत १८९२ म लिपिवद्ध । लिपि-पाठ्य । प्राप्तिस्थान-महन्त भोलारामजी, विष्णोई मदिर, रावतखेडा ।

आदि-॥ श्री जभेस्वरायनम श्री गुरुभ्यनम अथ कथा वहसोवनी लिपन राग गवडा दोहा-आदि व्यसन साभलि क्षरज नवपड माव नरेस

सु र्णीया वग सुणाइ सु आप दीयो उपदेस १

अत-केसो कथा कही कर जोडि आवागवणि मिटावो पोडि ॥५३८॥ इति श्री वह सोनो की कथा सपूरण समाप्त ॥ समत १८९२ रा प्रवे मिती आसोज वदि तिथ १२ वार सनीसर ॥ लिपते साध श्री १०८ श्री महाराजजी श्री मनरूपदासजी रा सिष्य साध तुलसीदास ॥ सर नगीना मध्ये श्री जामजी र मिदर मा लिपी छ जी ॥ श्री विष्णु जी सत सही छ जी ।

१०१ प्रहलाद चिरत, ऊदोजी कृत । छ द सख्या-३४८ । पत्र सख्या-२७ (पत्र सख्या २ अप्राप्य) । देशी कागज । आकार-९×४ इच । हासिया-दाएँ, बाएँ-नाम मात्र को । पक्ति-प्रति पृष्ठ-९ । अक्षर-प्रतिपक्ति-३४-३६ । ठाकर थापन द्वारा सवत १९३९ म लिपिवद्ध । लिपि-पाठ्य । प्राप्तिस्थान-मह त भोलारामजी, विष्णोई मदिर, रावतखेडा ।

आदि-श्री विष्णजी ॥ अथ प्रहलाद चिरत लिप्यते दुहा ॥

पृथम बदु गुरदेव कु । दुतीय बदु सब साध

अ त-सम अठारै अडसटा माघ सुक्ल पप्य जानि

तियी तीज सुपुरण भयो प्रहलाद चिरत अक्षान ३४८ इति श्री प्रह्लाद चिरत सपुरण समापत ॥ लिपते ठाकर थापन गाव वटोपल माही समत १९३९ मीनि फागण वदी १० वार मगल्वार ॥ श्री राम ।

१०२ प्रहलाद चिरत, ऊदोजी कृत । छन्द सख्या-३४६ । मशीन के बने कागजो की सिली हुई प्रति । फोलियो-४१ । आकार-९×५ २५ इच । हासिया-दाएँ, बाएँ-पान इच । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-९-१० । अक्षर-प्रतिपक्ति-२२-२३ । रामानन्दजी के शिष्य साहबरामजी द्वारा सवत १९५६ म लिपिवद्ध । लिपि-पाठ्य । प्राप्तिस्थान-महन्त भोलारामजी, विष्णोई मदिर, रावतखेडा ।

आदि-श्री विष्णुवेनम

दोहा-प्रथम बदु गुरदेव कु दुतीये बदु सब साध ।

अन्त-इति श्री वसनवी धर्मावलम्वी ऊदोदास कृत भाषाया प्रहलाद चरित सपूरणम् सवत् १९५६ पोष वदि १२ शनि लिखत श्री १०८ महाराज श्री रामानन्दजी का तत्शिष्य साहबराम स्वपठनार्थम् नगीना हरी भवन लाला शिवलालजी के मकान प ।

१०३ रुकमणी मगल, पदम भगत कृत । विभिन राग-रागिनियो के अतगत छन्द सख्या पृथक् पृथक् है । पत्र सख्या-७३ । यत्र तत्र खन्डित । देशी कागज । आकार-११ ५×

६ इन्च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-१ इन्च । पंक्ति-प्रति पृष्ठ-९ । अक्षर-प्रति पंक्ति-२७-३० । संवत १९४७ में बिहारीदास द्वारा लिपिबद्ध । लिपि-सुवाच्य । प्राप्ति-स्थान-महन्त भोलारामजी, विष्णोई मंदिर, रावतखेडा ।

आदि-श्री जम गुरुवेनम + + + रुकमणी मंगल लिषते ॥ दोहा ॥

सु डाला दुष भजना सदा जो बालक भेस ॥

सारां पैली सिवरीये गोरी पुत्र गणेस ॥ १ ॥

अन्त-जो मंगल कु सुण और गाव बाजा ढ्यक बजाव ॥

पुण ब्रह्म पदम के स्वामी भक्त मुक्त फल पाव ॥५॥ इति श्री व्यावलो संपूर्ण ॥ सं० १९४७ ॥ मी० ॥ कातिक वदी ९ लि० बिहारीदास

१०४ पूल्होजी की कथा, वील्होजी कृत । छंद संख्या-२३ । आकार-१०×५ इन्च । कुल पंक्तियाँ-२८ । अक्षर-प्रतिपंक्ति-३७-३८ । हाशिया-दाएँ, बाएँ-१ इन्च । लिपि-सुवाच्य । संवत १८८७ में साधु हरिविष्णदास द्वारा लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-महंत भोलारामजी, विष्णोई मंदिर, रावतखेडा ।

आदि-श्री विसनु नमायनम अथ पूल्हेजी की कथा लिषत दूहा

भीयाणो भाइ क जण परोयावट पुवार

अन्त-छहा जणांसों पूल्हैजी दिठी गयो पुलाय २३ इति श्री वील्ह विरचतायां पूल्हैजी की प्रचा समापत १ लिपिते साध हरिविष्णदास वीय जांभो डेरा मधे समत १८८७ रा मिता जेठ वद ८ वार शनिवार मंगलमस्तु कल्याणमस्तु ॥

१०५ पुन्य, अज्ञात कृत । पत्र-१, देशी । आकार-९×४ इन्च । कुल पंक्तियाँ-२१ । अक्षर-प्रति पंक्ति-२९-३० । हाशिया-आध से पौन इन्च । लिपिकार-अज्ञात । लिपिकाल-अनुमानतः संवत १८५० के लगभग । प्राप्तिस्थान-महन्त भोलारामजी, विष्णोई मन्दिर, रावतखेडा ।

आदि-श्री विसनु जयति लिषत पुन्य पतीत

कूम भाइ की पुन १ वड घोल्हरी की २

अन्त-लिषते विगत वार वाड की पत जांणा मुर्यां १०००००० सायर गोरवरी मुर्यां १०००००० सतला कन्याणी मुर्यां १०००००० ॥

१०६ आरती जांभाणी । संख्या-५ । (ऊदोजी की-४, गोतम की-१) । देशी कागज । आकार-६ ७५×४ ५ इन्च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-१ इन्च । कुल पंक्तियाँ-२५ । अक्षर-प्रति पंक्ति-३२-३६ । लिपि-सुपाठ्य । लिपिकार-अज्ञात । लिपिकाल-अनुमानतः १९वीं शताब्दी उत्तरार्द्ध । प्राप्तिस्थान-महन्त भोलारामजी, विष्णोई मन्दिर, रावतखेडा ।

आदि-श्री गणेशायनम लिषत आरता

आरती काज गुर ग्राम जंभी की हर हर भगत उधारण प्रांणपती की टेर

अन्त-पांचमी आरती गौतम गाव महाविष्णु सू सीस नवाव ५

१०७ कथा चीतोड़ की, केसोजी कृत । छंद संख्या-१२८ । पत्र संख्या-८ । देशी कागज ।

आकार-९×४ इंच। हाशिया-दाएँ, बाएँ-१ इंच। पंक्ति-प्रतिपृष्ठ-११। अक्षर-प्रतिपंक्ति-३२-३४। लिपि-सुवाच्य। संवत् १८८६ में रामदासजी द्वारा लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-महंत भोलारामजी, विष्णोई मंदिर, रावतखेड़ा।

आदि-श्री जभेश्वराय नम ॥ श्री विष्णुजी लिषते कथा चीतोड की।

राग हंसो दोहा-श्रभ गुर सिवरों सदा सकल वियापी सोइ

दुख मेटण दालद हरण जिह सिवरयां सुष होइ १

अन्त-सुध बचन सतगुर का गहे कारण करीया गुरमुष कहे

सतरासै छीडोतर सही कथा जोडि केसजी कही १२८ इति श्री चीतोड की कथा सपूरण ॥ समत् १८८६ मिती श्रावण सुद २ वार यावरवार। लिषतं साध श्री १०८ कनीरामजी रो सिष्य रामदासजी ॥ गाव मल्लाय मध्ये ॥ श्री विष्णु ॥

१०८ रुक्मणी मंगल, रामलला कृत। छंद संख्या-३६५। पत्र संख्या-१६। देशी कागज। आकार-९×४ इंच। हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इंच। पंक्ति-प्रति पृष्ठ-११। अक्षर-प्रति पंक्ति-३०-३२। लिपि-सुवाच्य। संवत १८६४ में साधु तुलसीदास द्वारा लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-महंत भोलारामजी, विष्णोई मंदिर, रावतखेड़ा।

आदि-॥ श्री गणेशायनम ॥ अथ लिषते रुक मंगल ॥ रागनी देवगीरी ॥

निगम जाकों नित्य गाव ॥ ध्यांन सिव उर आनीय ॥

आद अंत प्रब्रह्म जु के ॥ भगत नीक जानियं ॥

अन्त-राज करो नग्र द्वारका को ॥ भगत वछल श्री गोपाल ॥

रामलला जन गाय मंगल ॥ कृष्ण भजन जन होय नीहाल ॥ सरव जोड ॥ ३६५ ॥ इति श्री ग्रंथ रुक्मणी मंगल पूर्ण समापत्ति लिषतं साध श्री १००८ श्री महंतजी श्री मनरूपजी का शिष साध तुलसीदास ॥ सवत १८६४ रा मिती फागण सुदि तिथ १० वार मंगलवार श्री विष्णु जी सत सही छ जी ॥ १ ॥ लिषतं सहर नगीना मध्ये।

१०९ विवाह क्रम (जांभाणी)। रचयिता-अज्ञात। पत्र संख्या-१५। देशी कागज। आकार-९.२५×४.२५ इंच। हाशिया—साधारणत—दाएँ, बाएँ-पौन इंच। पंक्ति-प्रति पृष्ठ-९। अक्षर-प्रतिपंक्ति-२९-३०। लिपि-सुवाच्य। संवत् १८९१ में केसोदास द्वारा लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-लालासर साथरी। इसमें ये रचनाएँ हैं — (क) आवाहन (संस्कृत में)। (ख) गोत्राचार। (ग) बसंदर के नाम। (घ) आद वसावली। (ङ) नाम (संस्कृत)। (च) विवरस। (छ) अस्तुति। (ज) विष्णु रक्षा (संस्कृत)। (झ) नवग्रहरक्षा (संस्कृत)। (ञ) पोढी पालटण (संस्कृत)। (ट) वश्वानर पूजा (संस्कृत)। (ठ) कन्या लक्षण (संस्कृत)। (ड) चोजुगी। (ढ) मंगलाष्टक। (ण) देवता विदा कथ।

आदि-श्री गणेशायनम । मंगलं भगवान विष्णु मंगलं गरुडध्वज

अन्त-इति श्री न्यासक्रम सपूर्णम् समत १८९१ रा मिती माघ सुध पूरणवासी वार सुक्रवार लिष्यतं साध श्री १०८ रावलजी का सिष्य केसोदास ॥ लिपिक्रितम् ॥ श्री

विष्णु ॥

११० बारे मासौ, रचयिता-खरातो मेरठी । समवार छन्द सख्या नही दी है । पत्र स०-४ । देशी कागज । आकार-१०×५ इन्च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-एक इन्च । पक्ति-प्रतिपृष्ठ १४-१५ । अक्षर-प्रतिपक्ति ३७-४७ । लिपि-सुवाच्य । लिपिकार-अज्ञात । सवत् १८७६ म लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-लालासर साथरी ।

आदि-श्री विस्नु सत्यायम

दोहा-आसाद सम विनती कर येरासाह अधीन

तुम बिन व्याकुल मन हैं जस जल बिन मीन १

अन्त-दोहा-कहै यैरातो मेरठी सुनीयो बार मास

आस दरस लागी रहो जब लग घट म साम १२ इति बार मासौ सपूरण ॥ १ ॥ सवत् १८७६ मिति चत सुदि १३ वार शुक्रवार ॥ गाव लोहावट मभे ।

१११ सबदवाणी । सवद सख्या-१२० । बिना प्रसग । पत्र सख्या-५८ । देशी कागज । आकार-६×४ इन्च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन से एक इन्च । पक्ति-प्रति पृष्ठ-६ । अक्षर-प्रतिपक्ति-२२-२७ । साधु माधोदासजी द्वारा सवत १८८२ म लिपिबद्ध । लिपि-सुवाच्य । प्राप्तिस्थान-महन्त कौशलदासजी, अगूणी जागा, जाभा ।

आदि-श्री गणेशाय नम श्री विष्णुजी सत्य लिषत सब्द श्री जाभजी का श्री वायक

उ गुर ची हीं गुर चीर्हि विरोहित गुर मुखि धम बर्खाणी

अन्त-भलीयो होय तो भली बुधि आव बुरियो बुरी कमाव १२० इति श्री सब्द वाणी श्री जाभजी की समाप्त लिषत साध माधोदास श्री तिलोकदासजी का शिस्य आप पठनाथ सबत १८८२ रा मिती भाद्रवा सुदि ४ वार भृगुवारे वाच विचार जिना कू नू गि प्रणाम श्री विष्णु

११२ पद्य प्रसग, सबदवाणी के । १२० सवदो पर । पत्र सख्या-१६ । देशी कागज । आकार-६×४ इन्च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-१ इन्च । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-११ । अक्षर-प्रतिपक्ति ३०-३४ । लिपि-सुवाच्य । सवत १८७७ म पीताम्बरदासजी द्वारा लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-लालासर साथरी

आदि-श्री विसनजी अथ सब्द का प्रसग

दोहा-हांसा लोहट न कहै सुणो बात चित लाय

बालक प्रोढ बोल नहीं कोई जतन कराय १

अन्त-दोहा विसनोई न तबही हरिसौं बूझी बात

विष्णु भजन मैं करौं मोह सुनावो तात १

शब्द विसन विसन तौं भणि रे प्राणीं इस जीवणि ० १२० इति श्री प्रसग सहत सबद सपूरणम ॥१॥ समत १८७७ मिती असुजे मासे शुक्ल पक्षे अमुरा आचाय्यवार्य शिष्य नाम्य लिपि कृत पीताम्बरदास श्री १०८ विसनुदासजी रा शिष्य पठनाथ रावलजी श्री १०८ गगारामजी रा शिस्य । सख्या श्लोक वतीसा ४४० ।

११३ सबदवाणी, सबद सख्या—११७, बिना प्रसग । पत्र सख्या-४१ । देशी कागज ।

आकार-९×४ इञ्च । हाशिया-दाऐं, बाऐं-साधारणत पौन इन्च । पंक्ति-प्रति पृष्ठ-९ । अक्षर-प्रति पंक्ति-२९-३६ । लिपि-सुवाच्य । सवत् १८५८ मे सुरतराम जी द्वारा लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-महत भोलारामजी, विश्णोई मंदिर, रावतखेडा । आदि-श्री विसनजी सत्य । लिपते सबद झाभजी का श्री वायक ।

गुर चीन्हों गुर चीन्हि पिरोहित गुर मुखि धम बषांणी ।

अन्त-भलीया होय तो भल बुधि आव । बुरिया बुरी कमावं ।११७। इति श्री सबद बाणी झाभजी की सपूण समाप्त । सवत १८५८ मीती आसोज वदि ५ वार दीत-वार । लिपत गगारामजी के चेल सुरतराम । गाव झामोलाव मध्ये ॥

११४ सबदवाणी । सवद सख्या-१२०, बिना प्रसग । किनारो से खडित । पत्र सख्या-३१ । देशी कागज । आकार-१०×४ ७५ इञ्च । हाशिया-दाऐं, बाऐं-एक इञ्च । पंक्ति-प्रति पृष्ठ-१२ । अक्षर-प्रति पंक्ति-३०-३२ । लिपि-सुवाच्य । सवत् १८८४ मे परसरामजी द्वारा लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-लालासर साथरी ।

आदि-श्री झाभेस्वराय नम ॥ श्री सरस्वत्य नम ॥ अथ लिष्यते शबद बाणी

झाभजी की गुर चीन्हों गुर चीन्हि पिरोहित ॥ गुर मुष धम बषांणी ॥

अन्त-भलीया होय तो भलि बुद्धि आव ॥ बुरीया बुरी कमाव ॥ १२० इति श्री शब्द वाणी श्री झाभजी की सपूणम ॥१॥ सवत १८८४ मिती असाढ वदि ६ सोमवार ॥ लिपते साध श्री १०८ हरिकिसनदास महतजी रा सिष्य परसराम विसनोई साध ॥ गाव धवा मध्ये ॥ श्री कल्याणमस्तु श्री मगलमस्तु ॥ श्री सुभर ० ।

११५ पुन्य । पत्र-१, देशी । आकार-१०×५ इञ्च । हाशिया-दाऐं, बाऐं-एक इञ्च । कुल पंक्तिया-२७ । अक्षर-प्रति पंक्ति-३२-३७ । लिपि-सुवाच्य । लिपिकार-अज्ञात । लिपिकाल-अनुमानत उन्नीसवा शताब्दी उत्तरार्द्ध । प्राप्तिस्थान-लालासर साथरी ।

आदि-श्री विष्णुजी सत्य सही लिषतु पुन्य पतीस की

मा भादु की ० १ बूढ धोल्हरी की ० २

अन्त-सब्द नीहच आप लागा फल वठा छाया तात निरोकार नाव कहाया निराकार मा विसन १

११६ इसकदर की कथा, केसौजी कृत । छन्द सख्या-१९२ । पत्र सख्या-१३ । देशी कागज । आकार-६ २५×४ २५ इञ्च । हाशिया-दाऐं, बाऐं-एक इञ्च । पंक्ति-प्रतिपृष्ठ-१० । अक्षर-प्रतिपंक्ति-३२-३५ । लिपि-साधारणत पाठ्य । लिपिकार-अज्ञात । लिपिकाल-सवत १८८४ । प्राप्तिस्थान-लालासर साथरी ।

आदि-श्री गणेशायनम ॥ अथ असकन्दर की कथा लिषते ॥ राग सोठि ॥

दोहा-श्रीपति पहलो स्यवरियै अलष अपार अनत

प्रभ गुरू जल थल रहै भव भाजण भगवत १

अन्त-कसे कथा कही कर जोडि आवागवणि चुकावो षोडि

जो यहै कथा सुण चित लाइ सत करि मान सुरगे जाइ १९२ ।

इति श्री इसकदर की कथा सपूण ॥

२१७ सस जोपाणी की कथा, केसोजी कृत । छन्द सख्या–१०६ । पत्र सख्या–६ । देशी कागज । आकार–८ ५×४ इच । हाशिया–दाएँ, बाएँ–पौन इच । पक्ति–प्रति पृष्ठ–११ । अक्षर–प्रतिपक्ति–३२–३६ । लिपि–सुवाच्य । लिपिकार–अज्ञात । अनुमानत उन्नीसवी शताब्दी उत्तरार्द्ध मे लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान–लालासर साथरी ।

आदि–श्री गणेशायन्म ॥

दोहा–निरहारी प्रथम नऊ सतगुर सांम सुजांण

एक सत निवाज्यौ सांमजी यायक करू यषांण १

अन्त–जोपांणी सस तणी कथा सुणौं चित लाइ

केसौ कहै ससा मैं मोष मुकति फल पाइ १०६ ।

इति श्री सस जोपाणी की कथा सपूरणम् ॥ १ ॥

२१८ उद अतली की कथा, केसौजी कृत । किनारो से खडित । (इसमे यह रचना सुरजन दासजी की बताई गई है, जो भूल है) छन्द सख्या–८९ । पत्र सख्या–६ । देशी कागज । आकार–९×४ इच । हाशिया–दाएँ, बाएँ–साधारणत –पौन इच । पक्ति–प्रतिपृष्ठ–११ । अक्षर–प्रतिपक्ति–३०–३२ । लिपि–सुवाच्य । लिपिकार–अज्ञात । अनुमानत उन्नीसवी शताब्दी उत्तरार्द्ध मे लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान–लाला सर साथरी ।

आदि–श्री गणेशायन्म राग हसो ।

दोहा–श्री पति पहली सिवरीये आदि गुरु आदेस

जभगुरु सिवरू सदा जिहि सिवर सुर शेस १

अन्त–वक्त पढ प्रीत सहित श्रोता सुन सुजान

ताके मनकी वासना सुफल कर भगवान ८९ । इति श्री उद अतली की कथा सपूरणम् १

२१९ विष्णु चिरत, ऊधोदास कृत । छन्द सख्या–१०५ । किनारो से खडित । पत्र सख्या–१० । देशी कागज । आकार–६×४ इच । हाशिया–दाएँ, बाएँ–पौन इच । पक्ति प्रतिपृष्ठ–६ । अक्षर–प्रतिपक्ति–२६–३० । लिपि–सुपाठ्य । लिपिकार–अज्ञात । अनुमानत सवत् १६०० के लगभग लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान–लालासर साथरी ।

आदि–श्री विष्णाय नम ॥ श्री प्रमात्मनेनम श्री गुरुम्योनम

श्री गुर सत   ।सि नांऊ अप्पा होय विष्णु जस गोज

अन्त–सोरठा–हरि अवतार अनत अनत चिरत अवगत तणा

गाव मुनि जन सत विमल जस भवजल तरणां १०५

इति श्री विष्णु चिरत उधवदास कृत सपूरण

२२० धरमचरी, सुरजनजी कृत । छन्द सख्या–८० । पत्र सख्या–४ । देशी कागज । आकार–१०×५ इच । हाशिया–दाएँ, बाएँ–१ इच । पक्ति–प्रतिपृष्ठ १४ । अक्षर–प्रतिपक्ति–३२–३५ । लिपि–सुपाठ्य । लिपिकार–अज्ञात । सवत१८७७ म लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान–लालासर साथरी ।

आदि-॥ श्री विसनजी सत्य छ जी ॥ लिपते धरमचरी ॥
दुहा ॥ चोरासी वुप देषि क भुगत्या क्रम अधार
ओह ओसर मिनपा जलम मिल न वारोवार ॥ १ ॥
अन्त-दोहा ॥ चोरी पकडी चोहट । हूतो पुगो दाव ॥
सुगति विदर क पूत नें । विदर न सिर पाव ॥८०॥ इति श्री धमचिरी सपूण ॥ समापतोय ॥ भवत । समत १८७७ रा वर्षे मिती बसाप सुदि १० वार थावरि

१२१ सुरजनदासजी के कवित्त । सख्या-३२६ । पत्र सख्या-३५ । देशी कागज । आकार-१०×५ इ च । हाशिया-दाएँ, वाएँ-१ इ च । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-१४ । अक्षर-प्रति-पक्ति-३५-३६ । लिपिकार-अज्ञात । सवत १८८४ मे लिपिबद्ध । लिपि-पाठ्य । प्राप्तिस्थान-लालासर साथरी ।
आदि-श्री जामेस्वरायम धरम जप धारणा ग्यान भारी गुण सागर ।
सहज सील सतोष कीयो पथ माँहि उजागर ।
अन्त-राग दोप लज्या रसण । माया मोह अकार भणि ॥
प्रकीर कीघ तिण प्यजर । गुर तत भेद आकास गण ॥ ३२९ ॥
इति श्री सुरजनदास विरचिताया कवित सपूणम् ॥ समत १८८४ वर्षे मिती भाद्रवा सुदि अष्टमी वसपतवार ॥ लिपते तीरथ मामोलाव मध्ये ॥ १ ॥

१२२ गोकलजी के छन्द आदि । पत्र सख्या-११ । देशी कागज । आकार-१०×५ इ च हाशिया-दाएँ, बाएँ-१ इ च । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-१४ । अक्षर-प्रतिपक्ति ३३-३६ । लिपि-सुवाच्य । परसरामजे द्वारा सवत १८७८ म लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-लालासर साथरी । इसम ये रचनाएँ हैं -
(क) अस्तुति अवतार की । छद-१३ । (अपूण) ।
(ख) इदव छन्द । छद-३२ । (ग) अस्तुति होम की । छद-१० ।
इति श्री गोकलजी का कह्या कवत सपूण १ ॥ लिपते साध श्री हरकिसनदासजी रा सिप्य परसराम ॥ सवत् १८७८ रा मिती चत सुदि १२ वार रवि । गाव लोहा-वट मध्ये ॥ श्री । (घ) कवित्त (जाम्भाणी)-३ । अपूण । रचयिता-अज्ञात ।
आदि-श्री गणेशायनम ॥ लिप्यते असतुत अवतार की छद मोतीदाम ।
दोहा-रिषपति सिषपति सीलपति ॥ सुरपति सदा सहाय ॥
गतिदाता गोविंद सुमरि ॥ गोकल हरि गुण गाय ॥१॥
अन्त-रहत पचो कृत देह परगट वप पु हमी धारयो
जीव ऊपम बहु कुटल अंच अत मारग आंने

१२३ ग्यांन महात्म, सुरजनदासजी कृत । छद सख्या-१६६ तथा अज्ञात कृत ४ कवित्त । पत्र सख्या-१० । देशी कागज । आकार-१०×५ इ च । हाशिया-दाएँ, वाएँ-१ इ च । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-१४ । अक्षर-प्रतिपक्ति-३५-४० । लिपि-सुवाच्य । साधु हरिकृष्णदास द्वारा सवत् १८८७ म लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-लालासर साथरी ।

आदि-श्री जाभेस्वरायम अथ ग्यान महातम लिपते
दोहा-माया ब्रह्म मिलाय क हूत बसोयो माहि
गुर बिन ग्यान न पाईए ग्यान बिना सच नांहि १
अत-घरहर घाट आग घर घास घहे ज घाहरा
कायरां वियो हाल नहीं वियो नरदां नाहरा ॥ ४ ॥
इति श्री सुरजनदास विरचत ग्यान महात्म सपूरण गमापतोनम १ लिपत माघ हरि किष्णदास तिरथ तलाव मध्य समत १८८७ रा मिति जठ सुद १५ ।

१२४ सबदवाणी तथा विष्णुसहस्र नाम । सबद सख्या-१२० । बिना प्रसग । गुटका । देशी कागज । फोलियो-१४३ । आकार-५×४ इच । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-८ । अक्षर-प्रति पक्ति-१३-१४ । हाशिया-आध से पौन इच । लिपि-सुवाच्य । सवत १९३८ म वष्णव रामदास द्वारा लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-महत रामनारायणजी, रामडावास।
आदि-श्रीमते रामानुजाय नम ॥ अथ सब्द वाणी श्री जाभजी की लिपत ॥
उ गुर चीन्हों गुर चीन्हि पिरोहित गुर मुषि धम बषाणीं ॥
अत-श्री विष्णोनाम सहस्र सपूरण॥ सवत् १९३८ मीगर वदि ११ लि० वष्णव रामदास नग्र राहेण मध्ये ।

१२५ सबदवाणी, सबद सख्या-१२० । बिना प्रसग । गुटका । फोलियो-८० । मशीन के बने कागज । आकार-६ २५×४ इच । हाशिया-पौन से एक इच । लिपि-सुपाठ्य । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-६ । अक्षर-प्रतिपक्ति-१५-१८ । सवत् १९४० म प्राणसुख विष्णोई द्वारा लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-श्री बदरीराम थापन, मुकाम ।
आदि-उो श्री गणेशायनम । गुर चीन्हों गुर चीन्ह पिरोहित । गुर मुष धम बषाणी ।
अत-भलीयो होय सो ॥ भल बुद्धि आव । बुरीयो बुरी कमाव ॥ १२० ॥ इति श्री सब्द वाणी श्री जाभजी की सम्पूरण ॥ १ ॥ सवत १९४० रा वर्षे मिती माघ वदी ८ लिपत प्राणसुष विष्णोई बेटा दिलदार का नगीनेवाला उो हरि तत सत ॥

१२६ गुटका । फोलियो-१७५ । मशीन के बने हल्के नीले रग के कागज । आकार-६ ५×४ इच । हाशिया-दाएं, बाएं-पौन इच । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-६ । अक्षर-प्रति पक्ति-१७ १६ । सवत १९२५ म साधु नृसिंहदास द्वारा लिपिबद्ध । लिपि-सुपाठ्य । प्राप्तिस्थान-श्री बदरीराम थापन, मुकाम । इसमे ये रचनाएं हैं -(क) सबदवाणी, सबद सख्या-१२०, बिना प्रसग । (ख) प्रल्हाद चरित, ऊधोजी कृत । छन्द सख्या-३४८ । इति श्री ऊधो भक्त कृत प्रहलाद चरित्र सम्पूरणम् ॥ ३४८ ॥ सम्वत १९२५ लिख्यत मया साधु नृसिंघदासेण श्री मोतीरामस्य शिष्य पठनाथ साधु श्री मया रामदासजी चेला श्री गुरु मानिरामजी का लिपि कृत्त गाव रणी मध्ये ॥ (ग) सप्त श्लोकी गीता (मूल और टीका ससेत), (घ) ८ छन्द केसोजी के । (ङ) ४ भजन तुलसीदासजी के । (च) ३ हरजस, साखियां (जाभाणी)
आदि-उा श्री गणेशायनम ॥ श्री जभाय नमो नम अथ लिष्यते सब्द वाणी जाभजी की गर चीन्हों गर चीन्हि पिरोहित ॥ गुर मुष धम बषाणी ॥

अन्त-क्स म कट कह जन केशो बिष्णु सिवर मन भाई ॥४॥ ३ मूठो भोजन उलटो इस्त्री गवन बीज छूट जाणा नपठो छूटणी नाड री छोत विसा जावणो अ सात छोत टाल ॥

१२७ सबदवाणी, अपूर्ण। पद्य प्रसग समेत। पत्र सख्या-५१। देशी कागज। (सख्या-३,२० तथा ५१ के पश्चात के पत्र नही हैं)। आकार-६×४ इच। हाशिया-दाएँ, बाएँ-१ इच। पक्ति-प्रतिपृष्ठ-११। अक्षर-प्रति पक्ति ३२ ३६। लिपि-सुवाच्य। लिपिकार अज्ञात। अनुमानत उन्नीसवी शताब्दी उतरार्द्ध म लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-पीपासर साथरी।

आदि-(४ था पत्र) राय न ते पणि रुप हमारा थीयों ॥ जतो तपो तक पीर रयेसर ॥ काय जपीज ॥ ते पणि जाया जीयों ॥

अन्त-विसन विसन तू भणि रे प्राणी ॥ इस जीवणीं क हाव ॥ तिल तिल आव घटतो जाव ॥ मरण दि ॥

१२८ सबदवाणी। सबद सख्या-१२०, बिना प्रसग। पत्र-सख्या-४४। देशी कागज। आकार-६×४ इच। हाशिया-दाएँ, बाएँ-१ इच। पक्ति-प्रतिपृष्ठ-६। अक्षर-प्रतिपक्ति-२६-३०। लिपि-पाठ्य। गोविन्द द्वारा स० १८८५ म लिपिबद्ध। प्राप्ति स्थान-लोहावट साथरी।

आदि-श्री विष्णुजी ॥ लिख्यते शब्द जाभजी का श्री वायक ॥

गुर चीन्हों गुर चीन्हि पिरोहित गुर मुखि धम वखाणीं

अन्त-भलीया होय त भलि वुद्धि आवै वुरीया बुरी कमाव १२० इति श्री शब्द बा॰ी श्री झाभजी की मपूरणम् ॥ १ ॥ जे च द्रवातृ को वसुरेव वसु महा भूताब्दे कार्तिक तृतीया गोविंदनतलिखित १

१२९ सबदवाणी-सबद-सख्या-१२०, बिना प्रसग। पत्र सख्या-३०। देशी कागज। आकार ११ ५×-५ ५ इच। हाशिया-साधारणत -दाएँ, बाएँ-एक इच। पक्ति-प्रति पृष्ठ १२। अक्षर-प्रतिपक्ति-३३-३७। लिपि-सुपाठ्य। सवत १९२५ म साधु लक्ष्मणदास द्वारा लिपिबद्ध। सबदवाणी के पश्चात स यामन्त्र ह। प्राप्तिस्थान-जागलू साथरी।

आदि-श्री गणेशायनम। श्री झभेसुरायनम।

ओं गुर चीन्हो गुर चीन्ह पिरोहित। गुर मुख धम वखाणीं ॥

अन्त-रतन काया वैकुठे वासो। तेरा जरा मरण भव भागू ॥ १२०। इति श्री स द वाणी। जाभजी सम्पूरणम् मिति वसाप सुद १५। समत १९२५ लिपत साधु लक्ष्मण दास शिष्य वुधरामजी के ॥ श्री गणेशायनम अथ सध्या मन लिखते। ओं बिष्णु बिष्णु तु भण रे प्राणी। साध भवते ऊद्धरणो। इति श्री जभ तातु सवाद। सध्या मत्र ।

१३० सबदवाणी, सबद सख्या-१२०, बिना प्रसग। पत्र सख्या-३४। किनारो से खडित। देशी कागज। आकार-६×४ इच। हाशिया-दाएँ, बाए-१ इच। पक्ति-प्रतिपृष्ठ

११ । अक्षर-प्रति पंक्ति ३४-३६ । लिपि-सुपाठ्य । संवत् १८८७ में रामदास द्वारा लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-महन्त भोलारामजी, बिश्नोई मन्दिर, रायतनगर ।

आदि-श्री जंभस्वराय नम श्री प्रमात्मा नम लिषत सबद जाभजी का श्री वायक ॥

गुर चीन्हों गुर चीन्ह पिरोहित ॥ गुर मुषि धम वषांणीं ॥

अंत-भलीया होय ता भल बुधि आय ॥ बुराया बुरी कमाय ॥ १२० ॥ इति श्री सबद वाणी जाभजी का सपूरण ॥ समाप्त ॥ संमत ॥ १८८७ रा वृष मिती भादवा बद ६ ॥ वार बिरसपतवार ॥ लिषत साध श्री १०८ मनोरामजी रा सिष्य रामदास ॥ गाव रायतपुरा मध्य ॥ श्री जंभस्वराय नम ॥ श्री गणेशाय नम ॥ १ ॥

१३१ सबदवाणी, सबद संख्या-१२०, बिना प्रसंग । पत्र संख्या-३२ । जीर्ण, खंडित । देशी कागज । आकार-६×४ इंच । हाशिया-दाएं, बाएं-१ इंच । पंक्ति-प्रतिपृष्ठ-११ । अक्षर-प्रतिपंक्ति-३२-३६ । लिपि-सुवाच्य । संवत १८९१ में रामदासजी द्वारा लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-लालासर साथरी ।

आदि-श्री जंभस्वराय नम लिषत सबद जाभजी का श्री वायक

गुर चीन्हों गुर चीन्हो पिरोहित गुर मुषि धरम वषांणीं

अंत-रतन काया बैकूंठ वासो तेरा जरा मरण भव भाजों १ १२० इति श्री सबद वाणी जाभजी का सपूरण ॥ संमत १८९१ रा मिती काती बद ६ वार बिरसपतवार लिषत साध श्री १०८ मनारामजी रा सिष्य रामदासजी गावें भाटसरा मध्य ॥

१३२ गुटका । खंडित । फोलिया संख्या-१८२ (१४२+४०) । देशी कागज । आकार-५×३.२५ इन्च । हाशिया-दाएं, बाएं-पौन इंच । पंक्ति-प्रतिपृष्ठ-६ । अक्षर-प्रतिपंक्ति-१२-१६ । लिपि-सुवाच्य । साधु दिलराम द्वारा संवत १९१२ में लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-स्वामी शिवानन्दजी महाराज, मुक्तिधाम, ऋषिकेश । इसमें ये रचनाएँ हैं —(क) सबदवाणी, सबद संख्या-१२०, बिना प्रसंग । (ख) विष्णु सहस्र नाम ।

आदि-श्री गणेशायनम उँ गुरु चीन्हों गुरु चीन्हि पिरोहित । गुरमुषि धरम वषांणीं ।

अंत-संवत १९१२ रा वष मिति आसाढ सुदि तिथि ६ वार बुधवार । लिपीकृत साधु दिलरामएा ॥ ग्राम ब्राह्मनवाला मध्य ॥ वरणाव भगवानदास की दुकान मध्य ।

१३३ गुटका । फोलियो संख्या-११२ (८६+२६) । मशीन का बना कागज । आकार-६×३.७५ इंच । हाशिया-दाएं बाएं-एक इंच । पंक्ति-प्रतिपृष्ठ-९ । अक्षर-प्रतिपंक्ति-१२-१६ । लिपि-सुपाठ्य । संवत् १९२६ में अज्ञात लिपिकार द्वारा लिपिकृत । प्राप्तिस्थान-श्री भीयाराम विश्नोई, मदनपुर । इसमें ये रचनाएँ हैं —(क) सबदवाणी, सबद संख्या-१२०, बिना प्रसंग । इति श्री सबद वाणी भाभजी की सपूरणम समाप्त १ संवत १९२६ मासी बैसाष सुदी २ वार वृसपतिवार के दिन ॥१॥ उ तत सत । (ख) विष्णु सहस्र नाम । (ग) विष्णु पंजर स्तोत्र

आदि-श्री श्री गणेशायनम ॥ ओ गुर चीन्हों गुर चीन्हि पिरोहित गुर मुषि धम

अन्त-इति श्री ब्रह्माड पुराणे इन्द्र नारद सवाद विष्णु पजर स्तोत्र सपूर्ण १ उँ तत् सत।

१३४ सबदवाणी (अपूर्ण) सबद-सख्या-११७। पद्य प्रसग समेत। पत्र सख्या-५४। जीर्ण, खडित। देशी कागज। आकार-८ २५×३ ५ इन्च। हाशिया-दाएँ, बाएँ-लगभग १ इन्च। पक्ति-प्रतिपृष्ठ-१०। अक्षर-प्रतिपक्ति-३०-३३। लिपि-सुपाठ्य। अनुमानत सवत १८०० के लगभग अज्ञात लिपिकार द्वारा लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-श्री भीयाराम विश्नोई, सन्लपुर।

आदि-(दूसरे पत्र से) का साला सतगुर है तू सहज पिछाणीं किसन चिरत विन काच कर्व रह्यो न रहिसी पाणीं १

अन्त-भलीयो होय तो भल बुध्य आव बुरीयो बुरी कमावं ११७ इति श्री सिधात वाणी सतगुर भभेसर विरचनाया सपूरण।।

१३५ सबदवाणी। सबद सख्या-१२०, बिना प्रसग। गुटका। देशी कागज। आकार-६ ७५×५ इन्च। हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इन्च। पक्ति-प्रतिपृष्ठ-११। अक्षर-प्रतिपक्ति-२०-२३। लिपि-सुपाठ्य। सवत् १८३६ मे अज्ञात लिपिकार द्वारा लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-महन्त कौशलदासजी, आगूणी जागा, जाम्भा।

आदि-श्री गणेशायनम अथ सबद वाणी श्री जाभजी की लिपते ।।

उ गुर चीन्हों गुर चीन्हि पिरोहित गुर मुखि धम बखाणीं

अन्त-भलीयो होय तो भल बुधि आव बुरीयो बुरी कमावै ।। १२० ।। इति श्री शब्द वाणी श्री जाभजी सपूरण ।। सवत ।। १८३६ ।। मिति साढ बदि अष्टमी ।। राम राम

१३६ सबदवाणी, सबद-सख्या-१२०। बिना प्रसग (केवल पहले सबद का पद्य मे प्रसग है)। पत्र सख्या-३६। मशीन के बने हल्के नीले रग के कागज। आकार-११ ५×६ इन्च। हाशिया-साधारणत -दाएँ, बाएँ-१ इन्च। पक्ति-प्रतिपृष्ठ-१०। अक्षर-प्रतिपक्ति-३४-३६। लिपि-सुवाच्य। सवत १६११ मे गोपालराय द्वारा लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-पीपासर सायरी।

आदि-श्री जभेस्वरायेनम ।। अथ लिप्यते सवद ।। जाभेजी का ।।

काच करवो जल रख्यो ।। सबद जगाया दीप ।।

बांभण को परच्यो दयो ।। अेसो अचरज कीय ।।

अन्त-भलियो होय तो भल बुध आव बुरियो बुरी कमावै ।। १२० ।। इति श्री सवद वाणी श्री जाभेजी की सपूर्णमस्तु ।। श्री जभेस्वरायनम ।। श्री रामचद्रायनम ।। सवत् १६११ वरषे मीती फालगुन सुद्ध १३ गुरवासरे प्रथम प्रहरे ता दिने समाप्त ।। हस्ताक्षर गोपालराय ब्राम्हन सनोडिया वसती हरदा ग्राम मध्ये ।। श्री कृष्णायनम सवत १५६३ मागसीर वद ८ आगली को पालठिया रूप रह्यो रिधु अधिक जोत समराथजे ।। ६ ।।

१३७ प्रहलाद चिरत, केसोजी कृत। छन्द सख्या-५४६। पत्र सख्या-३४। देशी कागज। आकार-१२ ७५×६ ५ इन्च। हाशिया-दाएँ, बाएँ-साधारणत सवा इन्च।

पक्ति-प्रतिपृष्ठ-१२-१३। अक्षर-प्रतिपक्ति २८-३२। लिपि-पाठ्य। सवत् १६६२ मे साधु विहारीदास द्वारा लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-पीपासर साथरी।

आदि-श्री गणेशायनम प्रहलाद चिरत ॥

दो० ॥ नारायण पती निऊ स्वामी सरब सुजाण ॥
  आद भगत कहस्यु कथा प्रहलाद चिरत परवांण ॥ १ ॥

अन्त-मै दायण पकड्यो दीन को सतगर करी सहाय पांच सात नव माहरा अवक मोय मिलाय ५४६ इति श्री प्रहलाद चिरत कथोजी कृत सपूरण लिपते साध विहारीदास चेला विष्णुदासजी का स्व पठनारथ १६६२ मिती ममाप वदी ९ सुकवार गाव भगतासणी मैं।

१३८ रुक्मणी मगल, पदम भगत कृत। विभिन्न राग-रागिनियो के अन्तगत छद सख्या पृथक पृथक दी हुई है। पत्र सख्या-१३९। देशी कागज। आकार-१३×६.५ इच। हाशिया-साधारणत -दाएँ, वाएँ-सवा इच। पक्ति-प्रति पृष्ठ-१०। अक्षर-प्रति पक्ति-२१-२४। लिपि-सुपाठ्य। सवत् १९४८ म केवलदासजा द्वारा लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-पीपासर साथरी।

आदि-श्री गणेशायनम ॥ अथ रुक्मनी मगल लिप्यत ॥

दोहा-सु डयाला दुख भजणा ॥ सदा जो याल्क बेन ॥
  सारा पहली सुमरिय ॥ गवरी पुत्र गनेश ॥ १ ॥

अन्त-सुमरन भजन कछु ना जानू ॥ लीज्यो आप सुधारी ॥ ५ ॥ पदम० कीज्यो कृपा मुरारी ॥ ६ ॥ इति श्री पदमदास कृत रुक्मनी मगल समाप्त ॥ समत १९॥ ४८ श्रवण सुदी ६ वार मगलवार लिपित विष्णु पथी रुपरामजी के सिस्य केवलदासजी ग्राम अलाय मध्ये।

१३९ ग्यानचरी, वील्होजी कृत, छन्द सख्या-१३० तथा सुरजनजी कृत धरमचिरी और चेतन कथा-छन्द सख्या-१०९। अपूर्ण। चारो ओर से खडित। प्राप्त पत्र सख्या-८ (९ से १६)। देशी कागज। आकार-८×३ इच। हाशिया-दाएँ, वाएँ-साधारणत पौन इच। पक्ति-प्रति पृष्ठ-१०। अक्षर-प्रति पक्ति-३१ से ३४। सवत १८७० म साधु भगवानदास द्वारा लिपिबद्ध। लिपि-सुपाठ्य। प्राप्तिस्थान-महन्त भोलारामजी, विष्णोई मदिर, रावतखेडा।

आदि-णि ॥ साचो करि हिरद मा आणि ॥
  मति प्रवाणीं वरणी सही ॥ ग्यान चिरी वील्हैजो कही ॥ १२९ ॥

अन्त-मनसा वाचा क्रमना ॥ गुनु पुरातम साचि।
  जन सुरजन की वीनती ॥ वांन की पति रावि ॥ १०९ ॥ इति श्री धरमचिरी जन सुरजन कथत ॥ समाप्तोय ॥ लिषतं साध भगवानदास पठनार्थी आप हेतारथ॥ समत १८७० रा मिती जेठ सुदि। १३। इसके पश्चात ३ दोहो की एक साषी है।

भवसागर कू देव क ॥ डरयो जो मेरो चित ॥
सतन की त्रिपा हुव ॥ दरसन पावौं नित ॥ ३ ॥

१४० हरजस । संख्या–१६४ (विभिन्न राग रागिनियो मे) । पत्र सख्या–३० । देशी कागज । आकार–१२.५×६ इच । हाशिया–दाएँ, बाएँ–साधारणत –सवा इच । पक्ति–सामान्यत —प्रति पृष्ठ–१५ । अक्षर– प्रतिपक्ति–२९–३४ । लिपिकार–अज्ञात । लिपि–सुपाठ्य । सवत् १८७५ के लगभग लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान–जागलू साथरी । इसमे सूर, ऋषिकेश, कबीर, मनसुषदास, रज्जब, ध्यानदास, सु दरदास, अग्रदास, श्री भट्ट, तुलसीदास, नामदेव, मीरा, अनाथदास, परमान द, माधोदास, तुरसी, नरसी, जन हरिदास, रामदास, दादू, भींव, अमरदास, अन तदास, वाजिदवास, तानसेन, दीपराम, बुधान द, विष्णुदास, षेमदास, सुरतराम, रामलला, मोट्टदास, जन रीवदास, सुरजनदास, गगादास आदि के हरजस हैं ।

आदि-॥ श्री विष्णु जिसहाय अथराग रागनि के हजस लिक्षत ॥ प्रथम राग गवडी ॥
माधौ मन मरजाद तजो ॥ ज्यू गजमत जानि हरि तुम सौं ॥ बात विचार सजो ॥
अ त-नवका रूप वण्यो सत सगत जामैं बठो सब कोई आई
थोर उपाय नहो तिरवा को सु द्र काढो रांम दवाई २ । १६४

१४१ साखी सग्रह (जाभाणी) । साखी सख्या–६६ । अपूर्ण । विभिन्न कवियो द्वारा रचित । प्राप्त पत्र सख्या–२२ (कुल पत्र सख्या–२६ है, जिनमे से प्रथम दो तथा २३–२४, ४ पत्र नहा हैं) । किनारा से खडित । देशी कागज । आकार–९×४ इ च । हाशिया–दाएँ, बाएँ–एक इ च । पक्ति–प्रतिपृष्ठ–१६ । अक्षर–प्रतिपक्ति–३६–४३ । लिपि–पाठ्य । सवत १८९० मे पीतावरदास द्वारा लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान–लालासर साथरी ।

आदि–लीज जिहि मन पोटा तिहिं सब तोटा न करि पराई निंदा
हृद जो हरषे हरि जपो तो सत सोधे वदा ४१ (केसोजी कृत)
अन्त–(पत्र २६, प्रथम पृष्ठ, चौथी पक्ति)—
अत ही सुहायो मेरो साहिबो पीव मेरो प्रमदयाल
आलम प्रभुजी रो लाडलो गिरधरलाल गवाल १० २ (आलमजी कृत) ।
(द्वितीय पृष्ठ, दसवी पक्ति) लिपीकृत पीतावरदास पठनाथ स्वय स० १८९० ।

१४२ साखी सग्रह । साखी सख्या–६३ । पत्र सख्या–४३ । देशी कागज । आकार–९×४ इ च । हाशिया–दाएँ, बाएँ–एक इ च । पक्ति–प्रतिपृष्ठ–११ । अक्षर–प्रतिपक्ति–३१–३५ । लिपि–स्पष्ट । सवत १८८६ म रामदास द्वारा लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान–लोहावट साथरी ।

आदि-॥श्री जभायनम श्री विष्णवेनम लिषते साषी ॥ राग सुहव ॥ वणाकी ॥
साचे मोमणो कीयो अलोव जमु रचावीयो । १ ।
इ हि जमलै पुजलो करोडि गुर फुरमाईयो ॥ २ ॥
अन्त–करि सुकरत सुरगे गया ॥ से जन पुहता पारि ॥
थोनतजी रांमो कहै ॥ म्हारो आवागवणि निवारि ॥ १ ॥ ६३ ॥ इति श्री साषी

भाभजी की सपूर्ण लिपते साध श्री क्नीरामजी री सिष्य रामदास ॥ समत ॥ १८८६ रा वर्षे मिती आसाढ सुद ॥ १० वार शनीसरवार ॥ गाव अलाय मध्ये ॥ १ ॥ सपूर्ण श्रीरस्तु कल्याणमस्तु ॥ श्री मग । श्री गणेशायनम श्री जभस्वरायनम ॥ श्री विष्णजी ॥ -

१४३ साखी सग्रह । साखी सख्या-१४ । अपूर्ण । प्राप्त पत्र सख्या-११ । देशी कागज । आकार-६×४ इच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-साधारणत पौन इच से एक इच । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-११ । अक्षर-प्रतिपक्ति-२७-३२ । लिपि-पाठ्य । लिपिकाल-अनुमानत सवत १८५० के लगभग । लिपिकार-अज्ञात । प्राप्तिस्थान-लोहावट साथरी ।

आदि-श्री गणेशायनम ॥ लिपतु साषी जमल की ॥ राग सूव ॥

साधे मोमणे कीयो अलोच ॥ जमलो रचावीयो ॥
इण जमल पूर्जलो किरोड ॥ गुर फुरमावीयो । १ ।

अत-जुग दवापुर रे मोमणो पाचु । वीर नें सगि राणीं द्रोपती ॥

सतवादणि रे मोमणो कूतां दे माय न गनि न ले तरी ॥
सतवादणि रे माय नें कूता तरो गति न तारि न सति हूता चडया वेंडे ॥

१४४ हरजस, सख्या-१७३ । पत्र सख्या-५५ । देशी कागज । आकार-६×४ इच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इच । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-६ । अक्षर-प्रतिपक्ति-२८-३२ । लिपि-सुपाठ्य । सवत् १८६१ म कसोजास द्वारा लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-लोहावट साथरी । इसम तुलसीदास, सूरदास, मीरां, जन हरिदास, नामदेव, रामदास, कबीर, माधोदास, अग्रदास, श्री भट्ट, अनाथदास, मनसुषदास, दादू, ध्यानदास, व्यासदेव, परमानन्द, वाजिददास, रज्जब, पेमदास, अमरदास, दीपराम, नरसी, तानसेन, तुरसीदास, काजी महमन्द, लालदास, विष्णुदास, सुदरदास, गगादास, रामलला, मिठुदास, सुरतराम, सुरजनदास, जन रविदास, गोविददास आदि के हरजस हैं ।

आदि-श्री विष्णुजी सत सही ॥ लिपते हरजस ॥ राग परज ॥

निरषत जात जटाई रथ पर ॥ टेक
सूरजवस राजा नप जसरथ ॥ उनके सुत रघराई ॥

अत-इति श्री हरजस सपूरणम् लिपतु साध विसनोई ॥ गाव भवानीपुर ॥ समत ॥ १८६१ रा मिती भाद्रा वदि नाम ५ । वार रवि ॥ साध श्री रावलजी का शिष्य कसोजास ॥

१४५ होमपाठ । अपूर्ण । पत्र सख्या-६ । देशी कागज । आकार-६×४ इन्च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-१ इन्च । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-६-११ । अक्षर-प्रतिपक्ति-२७-२८ । लिपि-पाठ्य । लिपिकाल अनुमानत उन्नीसवी शताब्दी पूर्वार्द्ध । लिपिकार अज्ञात । प्राप्तिस्थान-लोहावट साथरी । इसमे इन रचनाओं का सग्रह है -(क) विष्णु अठाईस नाम स्तोत्र । (ख) एक श्लोकी रामायण । (ग) विष्णु शतनाम । (घ) देवाधिदेव स्तोत्र । (ङ) पारब्रह्म ईश्वर सधार गोसाधार । (च) वसदर के २५ नाम । (छ) आदि

बसावली। (ज) पचीस नाम। (झ) विवरस्य (अपूर्ण)।

आदि-श्री गणेशायनम ॥ अजुन उवाच किंतु नाम सहस्राणि जपत च पुन पुन

अन्त-हलिन को मारग छाडि क पल्ति यों ले जाहि तेरवों गुर पापी पापडी ठग चोर चोइसा को सायी साई राजा हेत कीयो

१४६ बालक मत्र तथा वडी नुवण। पत्र सख्या २। देशी कागज। आकार-८ ७५×४ इंच। हाशिया-दाएँ, बाएँ-एक इच। कुल २३ पक्तियाँ। अक्षर-प्रतिपक्ति २७-३०। लिपि-पाठय। लिपिकाल-अनुमानत सवत १८५० के लगभग। लिपिकार-अज्ञात। प्राप्तिस्थान-लोहावट साथरी।

आदि-॥ बालक को मत्र ॥ उँ सबद देव निरजन ताह इछया त भए अजन

अन्त-विष्णु भणियौं विष्णु मन रहीयौ तेतीस कोडि पार पहुता साच सतगुर को मत्र कहायौं इति श्री वडी नुवण सपूण १

१४७ जाभजी की आरती, विष्णुदास रचित। छद-६। पत्र सख्या-२। देशी कागज। आकार-६×४ २५ इच। हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इच। पक्ति-प्रतिपृष्ठ ६-७। अक्षर-प्रतिपक्ति-२४-२५। लिपि-पाठय। लिपिकार-अज्ञात। अनुमानत सवत् १९०० के लगभग लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-पीपासर साथरी।

आदि-श्री गणेसायेनम अथ आरती जय जय श्री जभेश्वर देवा—।

अन्त-सुद्ध सच्चिदानद घन जभ लीन अवतार

विष्णु नाम उपदेस कर जीव किये सब पार १

१४८ हिंडोलणो, हीरानद कृत। छद-८। पत्र-१। आकार-६×४ इच। हाशिया-दाएँ, बाएँ-एक इच। कुल २० पक्तियाँ। अक्षर-प्रतिपक्ति ३६-३९। लिपि-सुवाच्य। अनुमानत सवत् १८५० के आसपास लिपिबद्ध। लिपिकार-अज्ञात। प्राप्तिस्थान-पीपासर साथरी।

आदि-॥ श्री विष्णुजी ॥ लिषत हिंडोलण

दूदो देसोटे गयो मन म घणों सधीर।

अन्त-चानण रायचद जसा पचायण सबद का आचार

हीरानद की अरज ऐती सगत पार उतार ८। हिंडोलणा सपूण ॥ १ ॥

१४९ भवरो, रामो कृत, छद-११ तथा बत्तीस लखण। देशी पत्र-१। आकार-६×४ इच। हाशिया-नाम मात्र को। कुल १६ पक्तियाँ। अक्षर-प्रतिपक्ति ३३-३६। लिपि-पाठ्य। सवत १८५० के लगभग लिपिबद्ध। लिपिकार-अज्ञात। प्राप्तिस्थान-पीपासर साथरी।

आदि-श्री विसनजी लिषते भवरो राग मलार ॥

जा पलीया देवजी भवरो अवतरह्यो

अन्त-सुद्धि प्रकासवत ३१ परवेदन लपन हार ३२ इति बत्तीस लछन सपूण

१५० सध्या वदन मत्र। देशी पत्र-१। आकार-९×४ इच। हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इच। कुल १० पक्तियाँ। अक्षर-प्रतिपक्ति-३२-३३। लिपि-सुवाच्य। लिपिकार-

अज्ञात । अनुमानत सवत् १८५० के लगभग लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-पासार सायरी ।
आदि-श्री विष्णायेनम अथ सध्या वदन मत्र उँ विष्णु विष्णु तु भण रे प्राणि
अन्त-साच सतगुरु को मत्र कहियु १ । इति श्री जभ तानु सवाद सध्या वदन मत्र शुभ ।१।

१५१ उमाहो, वील्होजी कृत । छद-२१ तथा पतयो, आलमजी कृत, छद सख्या-१० । पत्र सख्या-२ । देशी कागज । आकार-६X४ इच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-एक इच । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-११ । अक्षर-प्रतिपक्ति-२८ ३१ । लिपि-सुपाठ्य । लिपि काल-अनुमानत सवत १८५० के लगभग । लिपिकार-अज्ञात । प्राप्तिस्थान-पासार सायरी ।
आदि-श्री विष्णजी सत्य छ लिष्यते उमाहो
बाबो जांबू दीवे प्रगटयो चोहुचकि कीयो उजास ।
अन्त-अतही सुहायो मेरो साहियो पीव मेरो प्रम दयाल
आलिम प्रभूजी रो लाडिलो गिरघरलाल गुवाल १०

१५२ पोथी, जिल्द बधी । देशी कागज । आकार-६, ५ ५X६ २५ इच । हाशिया आधा इच । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-२१-३१ । अक्षर-प्रतिपक्ति-१६-२२ । परमानन्द,प्रेम दास और हरजी वणिहाल द्वारा सवत् १८१७ से १८३३ के बीच लिपिबद्ध । लिपि-पाठ्य । प्राप्तिस्थान-महन्त भोलारामजी, विष्णोई मदिर, रावतखेडा । इसमे ये रचनाएँ हैं —
(क) पहलाद चिरत, केसोजी कृत । छद सख्या-५६६ । लेपतु परमाणद ॥ पचनारथी देवजी रा चेला तालाका ॥ समत १८१७ ॥ अपे मीती भादवा वद ४ । (ख) ग्यान महातम, सुरजनजी कृत । छद सख्या-२३४ । (ग) कथा मोहमरदी, जन जाभाय कृत । छद सख्या-११४ । (घ) कथा ग्यानचरी, वील्होजी कृत । छद-सख्या-१३३ । (ङ) ब्याहलो किष्णजी को । पदम कृत । छद सख्या-२४१ । (च) आरती, पदम कृत, छद-६ । नवरग लाल विहारी । १ । टेक । (छ)कथा अहदावणी अहमनी, ऊदो कृत । छद सख्या-७१७ । (ज)कथा बहसोवनी, केसोजी कृत । छद सख्या-५३८ (झ) धु चीरत, जनगोपाल कृत । छद सख्या २१४ । (ञ)कथा इसकदर पातिसाह की, केसोजी कृत । छद सख्या-२१४ । लीपतु परमाणद बचनारथी देवजी का चेला तलाका समत १८३३ मगसर वद १३ । (ट) साषी-सख्या-६० । (ठ) ग्रथ रामायण मेहोजी कृत । छद सख्या-२७१ । (ड) राम चीरत, थापन सुरजनजी को कह्यो कवत ९१ ॥ दुवाला ५९ ॥ सवदका १० ॥ दूहा १९ ॥ कु ॥ ३६१ ॥ धड चोपइ ॥ (ढ) गोत्राचार आदि ।
आदि-श्री विसनजी मति सही ॥ लपतु पहलाद चीरत राग मारू
दूहा ॥ नारायण पहली नउ ॥ सामी सरब सुजाण ॥

अंत-हणवतजी अंजनी का पूत पवन का नाती वजर की काछ वजर का लगोटा
या चल ज्यू हणवत जती की गिजा चल ज्यू ।।

१५३ गुटका । फोलियो-१०६ । देशी कागज । आकार-६ ७५×४ ५ इन्च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इन्च । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-९ । अक्षर-प्रतिपक्ति-१९-२१ । थापन रासा द्वारा स० १९०७-०८ मे लिपिबद्ध । लिपि-कही कही अस्पष्ट पर साधारणत पाठ्य । प्राप्तिस्थान-श्री कन्हीराम थापन, मुकाम । इसम ये रचनाएँ हैं - (क) हिंडोलणो,हीरानन्द कृत, अपूर्ण । छन्द स०-५ । (ख) असतुती अवतार की गोकलजी कृत । समत १९०७ मीती दुतीय वसाक सुद ७ दसक्त थापन राम रा छ । (ग) छन्द गोकलजी के । सख्या-३२ । (घ) प्रहलाद चिरित, केसोजी कृत। अपूर्ण । छन्द सख्या-४७६ । (ङ) वायक श्री जाभजी का (सबदवाणी)-प्रसग समत। अपूर्ण । केवल ४४ सबद ।

आदि-श्री गणेशायनम दुदो देसोट गयो मन म धणो सधीर ।
कुव ऊपर नीरपोयो ओ जुग तारण पीर १ ।।
अन्त-डडत डडो मुडत मुडो ।। मुडीन माया मोही कीसो ।।
भ्रमी वादी वादे भुला ।। काय न पाली जीव दयो ४४

१५४ पोथी । खडित और त्रुटित । देशी कागज । आकार-८ ५×३ ७५ इन्च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इन्च । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-९-१६ । अक्षर-प्रति पक्ति-१६-२४ । सवत् १९४० म अमेद थापन द्वारा लिपिबद्ध । पत्रो के आपस म चिपके होन और पानी गिरन से लिपि यत्र तत्र अस्पष्ट । प्राप्तिस्थान-श्री महीरामजी धारणिया, सगरिया । इसम ये रचनाएँ है -(क) कथा जसलमेर की, वील्होजी कृत । छन्द सख्या-१५४ । (ख) कथा चित्तौड की, केसोजी कृत । अपूर्ण । बीच के दो पत्र निकले हुए है । (ग) कथा मेडत की (अपूर्ण) । (घ) औतार कथा, वील्होजी कृत । (ङ) बाल लीला, केसोजी कृत । (च) कथा गुगलिये की, वील्होजी कृत । (छ) कथा पुलजी की, वील्होजी कृत । समत १९४० मीती सावण सुद ११ लीपी वार सोमवार थापन सोभजी रा सीष्य सुत अमेद । (ज) भेटवालों के नाम । (झ) इसक्दर की कथा, केसोजी कृत । (ञ) कथा द्रोणपुर की, वील्होजी कृत ।

आदि-श्री वीसनजी सत सही ।। लीपतु कथा जसलमेर कि राग आमा दुहा ।।
सतगुर आगल्य वीनती करे वेल गु पाय ।।
राह कारण्य गुर मीनऊ ।। आयर दयो समझाय ।। १ ।।
अंत-सतगुरु सेती वाद करि ।। कदे न जीतो कोय ।।
वीहल कह सेवा करो ।। मवे मवे नेजम होय ।। ६३ ।। दुणपुर की कथा सपुरण समापना गाव धाम मुकाम मधे लीपी पोथी ।

१५५ कथा इसकदर की, केसोजी कृत । छन्द सख्या-१९२ । खडित । पत्र सख्या-१३ । देशी कागज । आकार-८ २५×३ ७५ इन्च। हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इन्च । पक्ति-प्रति पृष्ठ-१० । अक्षर-प्रति पक्ति-३१-३३ । लिपि-पाठ्य । सवत १८७० म भग

वानदास द्वारा लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान–महन्त भोलारामजी, विष्णोई मन्दिर, रावत-खेडा ।

आदि–श्री विसन जी ॥ लिषतु कथा इसकदर की ॥ राग सारठि ।

दोहा– श्री पति पहली स्यवरिये ॥ अलष अपार अनत ॥

प्रभ गुरु जल थल रहै ॥ भव भाजण भगवत ॥ १ ॥

अत–कैस कथा कही कर जोडि । आवगवणि चुकावो षोडि ।

जो यह कथा सुण चित लाइ ॥ सत करि मान सुरगे जाइ । १९२ ।

इसकदर की कथा सपूरण समापिता ॥ लिषत साध श्री हरकीसन सा जी का चेला भगवनदास ॥ समत । १८७० । बार श्र तवा मोती जेठ सुदी सातू ७ ॥

५६ अमावस्या महात्म्य कथा, मयाराम कृत । छन्द सख्या–१४४ । खडित और फटी हुई । पत्र सख्या–१० । देसी कागज । आकार–६×४ इच । हाशिया–दाए, बाए– एक इच । पक्ति–प्रतिपृष्ठ–१० । अक्षर–प्रतिपक्ति–३५–३८ । लिपि–पाठ्य । सवत १८८४ म सूरतराम द्वारा लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान–महन्त भोलारामजी, विष्णोई मदिर, रावतखेडा ।

आदि–श्री गणेशायनम अथ मावसरी कथा लिषत

कुडलिया–प्रथम बदू गुरदेव कू दुतिये बदू सब साध

विष्णु बदु पुन तीसर जात मिटत जु व्याध २

अन्त–सीस धरणि धरि करत हू नमसकार सौ बार

इष्ट देव मम प्रभ गुरु लीला हित अवतार १४४ । इति श्री महाभारत श्री कृष्णार्जुन सवादे अमावस्या महात्म कथा मयाराम विरचताया सपूरणम १ लिषत साध श्री गगारामजी का चेला सूरतराम समत १८८४ रा मिती मिगश्र वदि ५ वार गनीसर ॥

१५७ दस अवतार, रचयिता–अज्ञात । छन्द–१० । पत्र सख्या–२ । देशी कागज । आकार–६×४ इच । हाशिया–दाए, बाएँ–पान इच । पक्ति–प्रतिपृष्ठ–११ । अक्षर–प्रतिपक्ति–२८–३६ । लिपि–सुपाठ्य । लिपिकाल–अनुमानत सवत १८५० के लगभग । लिपिकार–अज्ञात । इसके १० छन्दों के पश्चात ५ श्लोक सस्कृत मे हैं । प्राप्तिस्थान पीपासर साथरा ।

आदि–श्री जभेश्वरायनम अथ दस अवतार लेषत आदू अनादू सिष्टे न भवण

अन्त–इति दस अवतार पढत सुणते गगा सनान फल लभते सब पाप मुचते सुग लोक गच्छते । इति अवतार दस सपूरण ॥ १० ॥

१५८ धूमर, ऊदोराम कृत तथा अन्य कवित्त । सख्या पत्र–१ । आकार–७×४ इच । हाशिया नहीं है । कुल २० पक्तियाँ । अक्षर–प्रति पक्ति–१३–१७ । लिपि–पाठ्य । अनुमानत सवत् १९०० के लगभग लिपिबद्ध । लिपिकर्ता–अज्ञात । प्राप्तिस्थान–पीपासर साथरा ।

आदि–अथ धूमर लिख्यते सत्य गुर दरसन कू जास्या निज धूरब श्रोत विरांणी से मा ।

अन्त-पाप न कर रे विरांणीय्यां आखर तो दिन उगसी ॥ १ ॥

१५९ १ देशी पत्र। आकार-१० २५×४ २१ इच। हासिया-दाएं, वाएं-पौन इच। कुल २४ पक्तियाँ। अक्षर-प्रतिपक्ति-३१ से ४१। लिपि-पाठ्य। लिपिकाल-अनुमानत सवत् १८५० के लगभग। लिपिकार-अज्ञात। प्राप्तिस्थान-लोहावट साथरी। इसमे ये रचनाएं हैं—(क) विष्णोई धम, ऊदोजी कृत। छद-३। (ख) साखी उडारय की, रायचद कृत। छद-४।

आदि-श्री विष्णजी ॥ कवत ॥ प्रथम प्रभाते उठ जल छाण र लीज ॥

अन्त-कव रायचद हरि नाव लीज अत चित रहीजोय
जीवड सहारण विष्ण मिलीयों मूंधि धीरज कीजोय ४ ॥

१६० आदि वशावली, लेखक-अज्ञात। देशी पत्र। सख्या-२। आकार-६×४ इच। हासिया-दाएं, वाएं-पौन से एक इच। पक्ति-प्रतिपृष्ठ-१३। अक्षर-प्रतिपक्ति-३६-४०। लिपि-सुपाठ्य। लिपिकाल-उन्नीसवी शताब्दी उत्तरार्द्ध। प्राप्तिस्थान-महन्त रामनारायणजी, रामडावास।

आदि-श्री विष्णवे नम अथ आदि वशावली लिख्यते प्रथम आदि विष्णु १

अन्त-मुकनजी क जगनाथजी जगनाथजी क कुमलोजी कुमलजी क छदुजी छदुजी के दलोजी

१६१ बडी नवण। देशी पत्र-१। आकार-८×४ २५ इच। हासिया-नाम मात्र को। कुल ११ पक्तियाँ। अक्षर-प्रतिपक्ति-२६-३०। लिपि-पाठ्य। लिपिकार-अज्ञात। अनुमानत सवत १८५० के लगभग लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-लोहावट साथरी।

आदि-श्री विष्णजी ॥ अथ निवण ॥ विष्णु विष्ण तू भण रे प्राणी ॥

अन्त-साच सतगुर मत्र कहीयो ॥ १ ॥ इति श्री वडी निवण।

१६२ पतीस पुंह, सूर एव मोटूदास कृत १ हरजस। देशी पत्र-१। आकार-९ ७५×३ ७५ इच। जीर्ण। हासिया-दाएं, वाएं-आधा इच। कुल २७ पक्तियाँ। अक्षर-प्रतिपक्ति-३५-३७। लिपि-पाठ्य। अनुमानत सवत १८५० के लगभग लिपिबद्ध। लिपिकार-अज्ञात। प्राप्तिस्थान-पीपासर साथरी।

आदि-श्री विमष्णुजी मत छ अथ पुंह पतीस की ॥ डुम वाडेट की पुंह वुड पोलरी की पुंह।

अन्त-अनत कोड जाक दावन वीलमै दास मोटु + + + +।

१६३ सध्यावदन मत्र, तारक मत्र तथा अन्त म २ श्लोक। देशी पत्र-१। आकार-६×४ इच। हासिया-दाएं, वाएं-एक इच। कुल २३ पक्तियाँ। अक्षर-प्रतिपक्ति-२७-२८। लिपि-पाठ्य। अनुमानत सवत १८५० के लगभग लिपिबद्ध। लिपिकार-अज्ञात। प्राप्तिस्थान-पीपासर साथरी।

आदि-श्री विष्णवेनम अथ सध्या वन्दन मत्र उ विष्णु विष्णु तु भण रे प्राणि।

अन्त-सकला सुर वस भुवणे जनित त्व विमले कुले मया ॥ १ ॥

१६४ पत्र सख्या-३। देशी कागज। आकार-६ २५×३ इच। हासिया-दाएं, वाएं-आधा

मात्र का। पंक्ति-प्रतिपृष्ठ-८। अक्षर-प्रति पंक्ति-२३-२६। लिपि-पाठ्य। लिपिकाल-अनुमानत संवत १८७५ के लगभग। लिपिकार-अज्ञात। प्राप्तिस्थान-लाहावट साथरी। इसम ये रचनाए है —(क) गुरु महिमा, मुरली कृत। (ख) धनि, गगादास कृत। (ग) भजन-२।

आदि-श्री गणेशाय नम लिषतु गुर महमा-उधारा सब सतन मिलि कीन बिचारा॥

अत-दम्र तेरो पीर मुरीद तू जाका अस्तुति कीर॥ ३॥

१६५ आरती, ऊदोदास कृत। सख्या-२। देशी पत्र-१। आकार-६ ५ × ३ २५ इच। हाशिया-दाए, बाएँ- पौन इच। कुल-१५ पंक्तियाँ। अक्षर-प्रतिपंक्ति-२०-२२। लिपि-पाठ्य। अनुमानत स० १६०० के आसपास लिपिबद्ध। लिपिकार-अज्ञात। प्राप्तिस्थान-लाहावट साथरी।

आदि-आरती कीज श्री जभ गुर देवा॥ पार न पाव गुर अलष अभेवा॥ टेक॥

अत-पाचमी आरती घट घट वासा। हरि गुन गावे ऊधोदासा॥ २॥

१६६ नुवण। देशी पत्र-१। आकार-६ ५×६ ५ इच। हाशिया-नगण्य। कुल १६ पंक्तियाँ। अक्षर-प्रतिपंक्ति-२४-२८। लिपि-पाठ्य। लिपिकाल-अनुमानत उन्नीसवी शताब्दी उत्तरार्द्ध। लिपिकार-अज्ञात। प्राप्तिस्थान-लोहावट साथरी।

आदि-श्री वीसीनोजी उ सबद गुरु सुर चेला पाच तत मे रहा अकेला।

अत-साव सतगुर का मत्र कईयो। एतो श्री नुवण सपूरण।

१६७ देशी पत्र-१। आकार-८ २५×४ इच। हाशिया-नगण्य। कुल २३ पंक्तियाँ। अक्षर-प्रतिपंक्ति-२४-२६। लिपि-पाठ्य। लगभग स० १६०० म लिपिबद्ध। लिपिकर्ता-अज्ञात। प्राप्तिस्थान-महत रणछोडदासजी, आयूणी जागा, जाभा। इसम य रचनाए है -(क) हरजस-१। सुपसाम कृत। छ द-६। (ख) जाभजी की आरती, ऊदोजी कृत। छ द ५। (ग) भजन-१ कबीर कृत।

आदि- ॥ श्री विसन जी॥ लिषत हरजस राग बिलावल॥ ज गगा जुग पांवनी। भागीरथ आणीं॥

अत-दास कबीर जुगत कर जोडी उर की उर मैं चीनी। ३।

१६८ वशावली, रचयिता-अज्ञात। देशी पत्र सख्या-२। आकार-९×४ इच। हाशिया-दाए, बाएँ-पान इच। पंक्ति-प्रतिपृष्ठ १३। अक्षर-प्रतिपंक्ति-३२-३६। लिपि-सुपाठ्य। लिपिकाल-अनुमानत संवत् १९०० के आसपास।

प्राप्तिस्थान-पीपासर साथरी।

आदि-अथ श्री वसावली लिख्यत प्रथम आदि विष्णु १ विष्णु के ब्रह्मा सुत २

अत-अठार सत निनाणव वद पाच मधु मास

हरिकृष्णजी हरिसरण भयो समाप वास ४ श्री

१६९ वशावली (सिद्धजी की परम्परा), तथा बालक मत्र। देशी पत्र-१। आकार- ९×४ इच। हाशिया-दाएँ, बाएँ-आधा इच। कुल १७ पंक्तियाँ। अक्षर-प्रतिपंक्ति-२६-३०। रामदास द्वारा लिपिबद्ध। लिपि-सुपाठ्य। लिपिकाल-अनुमानत सं

१९०० के आसपास । प्राप्तिस्थान–पीपासर साथरी ।

आदि–॥श्री विष्णुजी ॥ अथ प्रथम कामाजी कि आदि वशावली लिपत ॥ प्रथम आदि विष्णु १ ।

अत–विष्णु मत्र कांन जले छुवा गुर फुरमाण विष्णोई हूवों ॥ १ इति सपूर्णम् ॥

१७० केसोजी कृत १ गीत तथा वशावली (वील्होजी की परम्परा)। देशी पत्र–१ । अपूरण । इस पर पत्र सख्या ४ लिखी हुई है, आरम्भ के ३ पत्र अप्राप्य हैं । आकार–८×४ इ च । हाशिया–दाएँ, बाएँ–पौन इ च । कुल १९ पंक्तियाँ । अक्षर–प्रति पक्ति–२२–३० । लिपि–पाठ्य । अज्ञात लिपिकार द्वारा स० १६०० के आसपास लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान–मह त रणछोडदासजी महाराज, आथूणी जागा, जाम्भा ।

आदि–तिरय बडो कीयो क्ल डीकम जन तारण जाभेसर जाइ

अ त–ग्यानजी का चेला अ मरदासजी ॥ १ ॥ फतोजी । २ ।

१७१ पत्र सख्या–३ । (४ प नो मे से दूसरा अप्राप्य) अपूरण । मशीन के बन कागज । जीरण और खडित । आकार–९×४ इ च । हाशिया–दाएँ, बाएँ–एक इ च । लिपि– सुपाठ्य लिपिकार–सभवत स्वामी ब्रह्मानदजी । लिपिकाल–अनुमानत सवत १९५० । पक्ति प्रति पृष्ठ ६–१० । अक्षर–प्रति पक्ति–२८–२६।

प्राप्तिस्थान–मह त भोलारामजी, रावतखेडा । इसम ये रचनाएँ हैं –

(क) घम अ ग, ब्रह्मानदजी कृत–अपूरण । (ख) भजन–१, ब्रह्मान दजी कृत । छ द–६ । (ग) भजन–१, पदम भगत कृत । पक्ति–४ ।

आदि–६ ॥ श्री गणेशायनम श्री जभेस्वरायनम कृष्णाय गोविंदाय नमोनम

प०–मत (विश्नोई पथ) के होने का निमित

उ०–सतजुग मैं प्रहलाद कु वचन दिया था

अ त–पदम भण पडवा पाय लागु चदेरी नु दाग लगायसी ॥ ४ ॥

१७२ स ध्या–वदन मत्र तथा तारक मत्र । देशी पत्र–१ । आकार–८ ७५×४ इ च । हाशिया–दाएँ, बाएँ–एक इ च । कुल १९ पक्तिया । अक्षर–प्रति पक्ति–३४–३७ । लिपि–सुपाठ्य । सवत १९३८ म स तोपदास द्वारा लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान–जागलू साथरी ।

आदि–श्री विष्णवे नम अथ स या वदन मत्र उ विष्णु विष्णु तू भण रे प्राणी

अ त–सवत १६३८ मिति श्रावण श् द ४ लिपिकृत स्स तोपदासन लालासर की साथरी मध्ये श्री रस्तु पठणार्थं स्वयम् विष्णुवनम उँ तरसत

१७३ आरती–१, भजन–४, साहबरामजी कृत । मशीन का बना पत्र–१ । जीरण, खण्डित । आकार–१६×५ इ च । हाशिया–नही है । कुल ७५ पक्तिया । अक्षर–प्रतिपक्ति १६–२१ । लिपिकार–अज्ञात । लिपिकाल–अनुमानत सवत १९५० के आसपास । प्राप्तिस्थान–जागलू साथरी ।

आदि–श्री रामजी लीपते आरती कु कु म रा पगल्या पधारो गुरु जभे देव

अन्त–पाहाड़राम सरन सतगुरु की थारे चरना मैं हु मांरो सीस ५

१७४ साखी–१, रचयिता–अज्ञात । अपूर्ण । मशीन का बना पत्र–१ । आकार–१२×६.७ इंच । हाशिया–नगण्य । कुल २८ पंक्तियाँ । अक्षर–प्रतिपंक्ति १०–१५ । लिपि पाठ्य । लिपिकार–अज्ञात । अनुमानतः संवत् १९५० के आसपास लिपिबद्ध । प्राप्ति स्थान–जागलू साथरी ।

आदि–श्री जम्भ गुरुवे नमः लिषन्तु साखी

दोहा सत्तनाराण सिवरीये सिवरां सदा सहाय

ब्रह्म सुता सु विनती अक्षर द्यो समझाय

अन्त–अहो जोर न देख्यां जाणो थ मारो किसा बखाणो । टेर

१७५ छप्पय ६, गोविन्दरामजी कृत । मशीन का बना पत्र–१ । आकार–१०×६.५ इंच हाशिया नगण्य । कुल पंक्तियाँ–३८ । अक्षर–प्रतिपंक्ति १६–१९ । लिपि–पाठ्य लिपिकार–अज्ञात । अनुमानतः संवत् १९५० के आसपास लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान जागलू साथरी ।

आदि–श्री रामजी अव्यगत अलष अ मदा नांव षकुट अपड जोत जांहां राजीय

अन्त–गोविंदराम कहै जभ कु सीवरो हीन चीत लाय भरम न भुलो भाईयो ६

१७६ पद–४, सुरतराम कृत । अपूर्ण (आदि के २ पद नहीं हैं, कुल पद संख्या ६ है) प्राप्त–पत्र संख्या–२ । देशी कागज । आकार–६.२५×४.२५ इंच । हाशिया नगण्य । पंक्ति–प्रति पृष्ठ ९ । अक्षर–प्रति पंक्ति २० । लिपि–सुपाठ्य । लिपिकार अज्ञात । अनुमानतः संवत १९०० के आसपास लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान–जागलू साथरी ।

आदि टेक ॥ दरस करत दिल को भ भाग ॥ मन में हू मगन भई ॥ १ ॥

अन्त–जन सूरतराम ऐ हिरद धारो ॥ ऐहीं ग्यांन सतगुर का बिचारो ६ ॥ पद ॥ ६

१७७ हिंडोल्णो, हीरानंद कृत । पद ८ । १ देशी पत्र । आकार–९×५ इंच । हाशिया नगण्य । कुल ३८ पंक्तियाँ । अक्षर–प्रतिपंक्ति–१६–१९ । लिपि–पाठ्य । लिपिकार अज्ञात । अनुमानतः सं० १९०० के लगभग लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान–जागलू साथरी

आदि–श्री विसनजी सत सही ॥ लीपते हीडोलणो

दोय सील सजम थभ रोपे नाव बडो पारि ।

अन्त हींडोलणो सभरथल झूल साथ ८ इती हिंडोरणो

१७८ देशी पत्र–१ । जीर्ण, खंडित । आकार–१०.७५×५.७५ इन्च । हाशिया–नगण्य कुल ५७ पंक्तियाँ । अक्षर–प्रति पंक्ति–१९.२२ । लिपि पाठ्य । अनुमानतः सं० १८५० के आसपास लिपिबद्ध । लिपिकार–अज्ञात । दो भिन्न हाथो की लिखावट से प्रतीत होता है किसी बड़ी प्रति का यह एक पत्र है । प्राप्तिस्थान–जागलू साथरी । इसमें ये रचनाएं हैं —(क) साखी १ । ४ पद, केसोजी कृत । (ख) सालिया–४, हरि वणियाल कृत । (ग) कवित्त २, वील्होजी कृत ।

आदि– + + जामेसर जीवा धणी दातार भव भाजण जीयां भणी २

अन्त-केई २ कुपर कुयाव ॥ व निरताह न जाण ।
चोरी लाव वित्त साह सू परचो ।

१७९ भजन-१ तथा लावनी-१। रचयिता-शीतल। मशीन का बना पत्र-१। आकार-१३×४ इंच। हाशिया-नगण्य। कुल ३५ पंक्तियाँ। अक्षर-प्रति पंक्ति-१५-१८। लिपि-सुपाठ्य। संभवत रचयिता ही लिपिकार है। अनुमानत संवत् १९५० के लगभग लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-जागलू साथरी। (पत्र यत्र तत्र फटा हुआ है)।
आदि-ओ३म् भजन न० १ ज जै गुरु जभे स्वामी कलि कलुष विनाशन हारे ॥
अन्त-सच्चा प्यारा विश्नोई धम सिखाया शीतल कह फिर से वेद माग विस्तारे

१८० जोधपुर के महाराजा तख्तसिंह द्वारा जारी किए गए, विष्णोई धम संबंधी संवत् १९२३ के आज्ञा-पत्र की नकल। मशीन का बना पत्र-१। आकार-२०×६ ५ इंच। ३५ पंक्तियाँ। लिपि-पाठ्य। लिपिकार-अज्ञात। प्राप्तिस्थान-जागलू साथरी।

१८१ गुरुदेव महिमा, साहबरामजी कृत। अपूर्ण। आदि के ५ पत्र हैं। मशीन के बने कागज। आकार-६ २५×४ इन्च। हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इन्च। पंक्ति-प्रति पृष्ठ-७। अक्षर-प्रति पंक्ति-१२-१३। लिपि-सुपाठ्य। प्राप्तिस्थान-श्री धोकलराम विष्णुदत्त विष्णोई, दुतारावाली।
आदि-॥ श्री गणेशाय नम ॥ दो० ॥ गुरु गरवा सुमेर स्म ॥ गहरा समद समान ॥
मीठा इमृत उदिघ इव ॥ शाग्व नैना भान १
अन्त-छिपा छिपा ॥ सजन नैना ॥ पर्सा श्रुति देव गुरु रत ॥
विद्र उधा ॥ धना कुवा "।

१८२ हरजस-१, साहबरामजी कृत। अपूर्ण। मशीन का बना पत्र-१। आकार-६ २५×४ इंच। हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इंच। पंक्ति-प्रति पृष्ठ-७। अक्षर-प्रति पंक्ति—१७-१८। लिपि-सुपाठ्य। लिपिकार-साहबरामजी। अनुमानत संवत १९२५ के लगभग लिपिबद्ध। यह २७ वा पत्र है। इसके पहले के २६ और पश्चात् के पत्र अनुपलब्ध हैं। प्राप्तिस्थान-श्री धोकलराम विष्णुदत्त विष्णोई, दुतारा-वाली।
आदि-ज ज जभ गुरु जग जाना मुक्ति सोई मुकामा टेक
अन्त-साहबरामा भक्ति अकामा पायो पद निरवाना ६

१८३ कवित्त-१, साहबरामजी कृत। मशीन का बना पत्र-१। आकार-६ ५×४ २५ इंच। हाशिया-नगण्य। कुल ८ पंक्तियाँ। अक्षर-प्रति पंक्ति-१४-१६। लिपि-सुपाठ्य। लिपिकार-अज्ञात। अनुमानत संवत १९५० के लगभग लिपिकृत। प्राप्तिस्थान-जागलू साथरी।
आदि-॥ श्री रामजी कवत काहां गनपत को ग्रेह कहो काहा ब्रह्म नारायण
अन्त-साहब पुछ पडितां काहां तेज पु ज अस्थांन १

१८४ प्रवाना (परवाना) तथा पाना, साहबरामजी कृत। पत्र संख्या-४। देशी कागज। आकार-६ २५×४ इंच। हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इंच। पंक्ति-प्रति पृष्ठ-

७। अक्षर-प्रतिपंक्ति-१५-१६। लिपिकार-साहबरामजी। लिपिकाल-संवत् १६५० से पूर्व। प्राप्तिस्थान-श्री धाकलराम विष्णुदत्त विश्नोई, दुतारावाली।
आदि-ग्रंथ श्री प्रयाना प्रारभते उ हुग ॥ निरंजन देहा सोहं श्रुति माणा है ॥
अन्त-सब्दों शब्द समाय ॥ प्रयाणो हात है ॥ विष्णु ॥ इति श्री मतपान समाप्त ॥

१८५ द्वार (सार) बत्तीसी, साहबरामजी कृत। छन्द संख्या नहीं है। मशीन से बने कागज। पत्र संख्या-१८। आकार-६ २५×४ इंच। पंक्ति-प्रतिपृष्ठ-६। अक्षर-प्रतिपंक्ति-१३-१५। लिपि-सुपाठ्य। साहबरामजी द्वारा लिपिकृत। अनुमानतः संवत् १६.० से पूर्व लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-श्री धाकलराम विष्णुदत्त विश्नोई, दुतारावाली।
आदि-॥ ६ ॥ प्रमातमप्रलोक तें आतम दीनों डार
भव नाग्र में साहबराम सतगुर भवे अपार १
अन्त-लिपीकृत साध शारी ॥ गोविंदरामजी का सीष्य ॥ साहबरामेण ॥ १ ॥ शारबतीसी यहे कृताया शाहबराम ॥

१८६ अमर चालीसी, साहबरामजी कृत। कुल छन्द संख्या नहीं दी है। देसी कागज। पत्र संख्या-१३। आकार-६ २५×४ इंच। हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इंच। पंक्ति-प्रति पृष्ठ-६-११। अक्षर-प्रति पंक्ति-१८-२१। श्री गणेशराम द्वारा अनुमानतः संवत १६५० से पूर्व लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-श्री धाकलराम विष्णुदत्त विश्नोई, दुतारावाली।
आदि-॥ ई ॥ श्री गणेशायनम ॥ अमर चालिसि प्रारभते ॥ श्री अपडकाराय नमः
उ बावन अ गुर बुद हैं ॥ गई दमब द्वार ॥
अंत-शाहब गोला ध्यान का मार करे मदात ईती श्री अमर चालिसि साध साहबरामेण विरचतेया ॥ लिपिकृत साध साहबरामजी का शीष्य गणेशरामण लियत सपुरणम् भवेत ॥ उँ तत शत।

१८७ सार शब्द गु जार, साहबरामजी कृत। छन्द संख्या-१८७। मशीन के बने कागज। पत्र संख्या-५६। आकार-६ ५×४ इंच। हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इंच। पंक्ति-प्रति पृष्ठ-६। अक्षर-प्रति पंक्ति-१४-१६। लिपि-सुपाठ्य। संवत् १६३६ में साहबरामजी द्वारा लिपिबद्ध। (बीच के कई पत्र गणेशरामजी के हाथ के लिखे हुए हैं)। प्राप्तिस्थान-श्री धोकलराम विष्णुदत्त विश्नोई, दुतारावाली।
आदि-ग्र थी सार शब्द गु जार प्रारभे श्री अपडकाराय नमः ॥ श्री गुरूभ्योनम ॥
पावर विनाई अस्त मत निदक जड अज्ञान
अन्त-संमत १६३६ रा मीति चत सुदि ११ वार बृस्पतवार सपूरणम्। कृताया साध श्री महंतजी श्री १०८ गोविंदरामजी का शिष्य साधु श्री शाहबरामण गाम सान्ही मध्ये—

१८८ आरती मोर भजन। देसी पत्र-१। आकार-१२×६ इंच। हाशिया-दाएं, बाएं-सवा इन्च। कुल २३ पंक्तियाँ। अक्षर-प्रति पंक्ति ३०-३५। लिपि-सुपाठ्य। लिपिकाल-अनुमानतः सं० १६५० के आसपास। लिपिकार-अज्ञात। प्राप्तिस्थान-

श्री धाक्लराम विष्णुदत्त विष्णोई दुनारावाली । इसमें ये रचनाएँ हैं-(क) आरती-२ (दूसरी ऊदोजी कृत ह)। (ख) भजन-३ कबीर, रविदास तथा नामदेव कृत ।
आदि-श्री गणेशायनम लीपत आरती आरती कीज श्री जभ गुर देवा—
अन्त-रामजी का हर गु ण नामदेजी गाव ५ ॥

१८६ पुस्तिका । हरजस और आरतिया । मशीन के बने कागज । पत्र सख्या-१७ । खडित, जीर्ण । आकार-५ ५×४ ५ इच । हाशिया-नगण्य । पक्ति-प्रति पृष्ठ-७ । अक्षर-प्रतिपक्ति-१३-१५ । लिपि-सुपाठ्य । लगभग सवत १९५० के आसपास लिपिबद्ध । लिपिकार-अज्ञात । प्राप्तिस्थान-विष्णोई मदिर, काट । इसम माखनजी, मीठ्ठदास, ऊदोजी, मुरारी और मोतीराम की आरतिया, तथा कबीर, रविदास और परमानन्दजी के हरजस हैं ।
आदि-उाम् श्री गणेशायनम श्री विष्णु जी सहाय जिभीया जप ले जभ सवेरा ॥
अन्त-इति श्री ठाकुरजी की आरती सपूरण ॥ १ ॥ १७ ॥ आरती हैंई समाप्त ।

१९० पोथी । फोलियो सख्या-१०१ । देशी तथा मशीन के बने कागज । खडित और फटे हुए । आकार-१०×६ ५ इच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इच । पक्ति-प्रतिपृष्ठ १६ । अक्षर-प्रतिपक्ति-१६-१८ । लिपि-पाठ्य । सवत १९४५ म प० कृपाराम द्वारा लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-लिपिकार के पौत्र से, जागलू । इसमे ये रचनाएँ हैं - (क) राग-रागिनी वणन, (ख) रुक्मणी मगल । विभिन्न राग-रागिनियो के अतगत छद सख्या-पृथक पृथक दी गई है ।
आदि-अथ राग रागनी वणन ॥ कवत छप
+ + भए घटका च्यार ४ रात रहिया सु सोव
अन्त-सवत १९४५ वर्षे शाके १८१० चत मासे शुक्ल पक्षे तिथौ चतुर्थी ४ भृगुवारे पृथम पहेर जगलगढ मध्ये लिपीकृत प्रोहित कृपाराम स्वपठनाय—।

१९१ पुस्तक । मशीन के बने कागज । फोलियो सख्या-१२८ । आकार-६ ५×६ २५ इच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इच । लिपि-सुपाठ्य । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-१६ । अक्षर-प्रतिपक्ति-११-१४ । बिहारीदास द्वारा सवत १९७२ मे लिपिबद्ध । प्राप्ति स्थान-श्री साधु सिद्धारामजी महाराज, गुडा । इसम ये रचनाएँ हैं-(क) साखिया, सख्या-८० । विभिन्न कवियो द्वारा रचित । (ख) प्रहलाद चरित्र, ऊदोजी । छद सख्या-४०१ ।
आदि-श्री जभगुरुवे नम ॥ अथ साखी लिख्यते ॥ राग सुहब ॥
साघे मोमणो कियो अलोच । जमो रचावीयो १ ॥
अन्त-इति श्री प्रहलाद चरित्र ऊधवदास कृत समाप्तम् लिखित साध बिहारीदास चेला विष्णु दासजी का १९७२ असाढ सुदी १४ गाव भगतासणी मैं चौधरी लाभू बणियाल के घरा १ ।

१९२ रजिस्टर । पृष्ठ सख्या-१४० । मशीन के बने कागज । आकार-१३ ५×८ इच । श्री गणेशरामजी तथा श्री लक्ष्मीनारायणजी का सवत् १९४६ स १९५० के बीच

लिखा हुआ। इसम श्री साहबरामजी के सग्रह की प्रकाशित और हस्तलिखित पुस्तकों की सूची है। साथ ही साहबरामजी, ब्रह्मानदजी तथा जम्भसार सबधी महत्वपूण सूचनाएँ भी है। प्राप्तिस्थान-श्री घोक्लराम विष्णुदत्त विष्णोई, दुतारांवाली।

१६३ जम्भसार आदि। साहबरामजी कृत। देशी कागज। आकार-१२×६ इन्च। हाशिया-दाएँ, बाएँ-सवा इन्च। पक्ति-प्रतिपृष्ठ-११। अक्षर-प्रति पक्ति-२४-२७। साहबरामजी द्वारा सवत १६४४ स १६४७ के बीच लिपिबद्ध। लिपि-सुपाठ्य। अपेक्षाकृत मोटे अक्षर। प्राप्तिस्थान-श्री घोक्लराम विष्णुदत्त विष्णोई, दुतारावाली। इसम ये रचनाएँ हैं—(क) सतलोक पहुचने का परवाना। (ख) सार शब्द गुजार, ५ प्रकरण। पत्र १-२८। (ग) सार बत्तीसी-छन्द ४१। पत्र २६-३४। (घ) अमर चालीसी-छद ४४। पत्र ३५-४१। (ङ) महामाया की स्तुति। छन्द-३७। पत्र ४१-४७। सवत १६४४ मिती आसोज वदि ६ को साहबरामजी द्वारा स्वपठनाथ गाव नादडी म लिपिबद्ध। (च) जम्भसार। २४ प्रकरण, जिनकी सूची अग्रलिखित है -

प्रकरण	प्रकरण – नाम	रूपक–सख्या	कुल पत्र–सख्या
१	२	३	४
—	(विषय–सूची)	—	६
१	वशावली वणन नाम	४२	१०
२	प्रल्हाद चरित्र आख्यान	५०	२४
३	सनतकुवार चरित्र कथा	२०	१२
४	अवतार स्तुति	४०	१८
५	अवतार चरित्र ग्रथ	५७	१५
६	वाल चरित्र कथा	६८	२७
७	सिकदरशाह पातस्याह परच्या नाम	१७२	५४
८	विश्नोई स्थापना	५६	२७
९	भक्त विडदावली	७८	३६
१०	राज उपदेश	८६	३०
११	जोगी उपदेश	१२७	२६
१२	रावन प्रवोध	१४६	४७
१३	नव राजिद्र उपदेश	१४४	२७
१४	जम्म सागर महात्म वणन	१६७	५७
१५	भूत पलटणी-दव क्तव्य	१३६	४६
१६	महाप्रलय	६६	३६
१७	जोगीशाख्यानो	७८	५६
१८	वण-विभाग	२००	५८

१९	जाम रसरोवो -	७८	४०
२०	भक्तगिणत प्रकाश	४३	२०
२१	जर्मो महात्म्य वरणन	५७	२९
२२	जमचलरण मद्र अस्यानो	५१	७८
२३	(कोई नाम नहीं)	२८२	७१
२४	नीत धरम महारम सयुक्त	१६८	६७

आदि-॥ ६ ॥ श्री प्रमात्मने नम ॥ श्री गुरुम्योनम ॥ श्लोक ॥ प्रणम्य प्रमातमान ॥ प्रणम्य पुरुषोतम ॥ प्रणम्य प्र ब्रिह्म प्रणम्य परापर ॥ १ ॥
अन्त-इति श्री जम शारेण ॥ शाय श्री शाहबरामेण ॥ वृरचतेमा ॥ नीत धरम-म्हातम सजुक्तो नाम चवुवीसो प्रक्रण सवत १६४७ रा मीती जेष्ट सुदी १२ लिपि कृत शारी शाहबरामेण ।

१६४ देशी पत्र-१ । अपूरण । खडित । आकार-८ ५X४ इ च । हाशिया-नाम मात्र को । कुल १२ पक्तियाँ । अक्षर-प्रतिपक्ति-३१-३२ । लिपि-पाठ्य । सवत १८५० के लगभग लिपिवद्ध । लिपिकार-अज्ञात । प्राप्तिस्थान-लोहावट सायरी । इसमें किशोर और केसौजी के ८ छन्द हैं ।
आदि-हू त ओई दोर करत सयांनी सोर वाहु नें कहत कहा तेरो के गयो (केसौजी)
अन्त-धरणीं उव जय पाव न धरहू बल्हू बल्हू इन पांवन कू ॥ ८ ॥

१६५ देशी पत्र-१ । फटा हुआ । आकार-११ ७५X८ इ च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इ च । पक्ति-प्रतिपृष्ठ १७ । अक्षर-प्रतिपक्ति १८-१६ । लिपिकाल-अनुमानत सवत १६०० के आसपास । लिपिकार-अज्ञात । लिपि-पाठय । इसमे लालदास का बारह मासा तथा पीतांबरदासजी का एक भजन है । प्राप्तिस्थान-लोहावट सायरी ।
आदि-ये सो मैं न जोऊ गी अरी अरी उ न स्यांम सु दर बिन
अन्त-जन पिताबरदास जीवन जन को जस वढाव ॥ ५ ॥

१६६ देशी पत्र-१ । अपूरण । आदि के १० पत्र अप्राप्य हैं । आकार-९X४ २५ इ च । हाशिया-दाऍ, वाऍ-पौन इ च । कुल ९ पक्तियाँ । अक्षर-प्रतिपक्ति ३३-३४ । लिपिकार-अज्ञात । लिपि-पाठय । लिपिकाल-अनुमानत सवत् १८५० के लगभग । प्राप्तिस्थान-लोहावट साथरी । इसम ऊदोजी के २ भजन हैं —
आदि-राग काफी ॥ घर आवोजी मीठा बोला ॥ प्यारी तमारी वातीया ॥
अ त-ऊधवदास क रहो प्रभु पास ॥ नित नवला पावणा ॥ ६ ॥

१६७ देशी पत्र १ । आकार-६X४ इ च । हाशिया-दाऍ, वाऍ-पौन इ च । कुल ६ पक्तियाँ । अक्षर-प्रति पक्ति २७-२८ । लिपि-पाठ्य । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत स० १९०० के आसपास लिपिवद्ध । इसम मीठूदास के दो छद हैं। प्राप्तिस्थान-लोहावट सायरी ।
आदि-श्री विष्णुजी ॥ होता एक थोरो पापन का थोरो अ त का अघोरी
अन्त-रहै दास मिठु जब पोलदी किंवारी है ॥ २ ॥

१९८ इसकंदर पातस्या की कथा—कसीदासजी कृत । छन्द संख्या—२०४ (१९२+१२)। अपेक्षाकृत पतला देशी कागज । पत्र संख्या—१० । आकार—१०×५ इंच । हाशिया—दाएँ, बाएँ—आध इंच । पंक्ति—प्रतिपृष्ठ—१८ । अक्षर—प्रतिपंक्ति २८–३५ । लिपि-पाठ्य । संवत् १८७८ में परसराम द्वारा लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान—श्री धोकलराम विष्णुदत्त विश्नोई, दुतारावाली । १९२ छन्दों के पश्चात् पुष्पिका है—"इति श्री कसविस्वनाथ पातसाह इसकन्दर की कथा सम्पूर्ण ॥ समापत ॥ लिषत साध श्री हरकिसनदासजी रा सिष्य परसराम ॥ संवत १८७८ रा मिती चैत सुदि १५ ॥ वार मंगल ॥ श्रीरस्तु ॥ मंगलमस्तु ॥ १ ॥" इसके पश्चात् पुनः इसके छूटे हुए १२ छन्द प्राप्त हैं।

आदि—अथ इस्कंदर शाह पातस्या की कथा ॥ श्री गणेशायनमः लिषत कथा इसकंदर की ॥ राग मांढ ॥

दोहा—॥ श्रीपति पहली सिंवरिये । अलष अपार अनंत । सुमरि गुरु जल थल रहै । भव-भंजण भगवंत ॥ १ ॥

अन्त—लेण देण उपजे संसार विसन जप्यां तो मोष दुवार ।
जैसी चाहे तैसी सुण बेद कतेब भगत गुर भण ॥ ८६ । दोहा मोती ५ पानो ६

१९९ चेतन कथा, सुरजनदासजी कृत । अपूर्ण । अंतिम दो पत्र—१३ और १४ उपलब्ध हैं। अपेक्षाकृत पतला देशी कागज । आकार—१०×५ इंच । हाशिया—दाएँ, बाएँ—१ इंच । पंक्ति—प्रतिपृष्ठ १४ । अक्षर—प्रतिपंक्ति—३८–४५ । लिपि—पाठ्य । संवत १८८६ में हरिकिसनजी द्वारा लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान—धोकलराम विष्णुदत्त विश्नोई, दुतारावाली । इसमें सुरजनदासजी कृत प्रभ चितावणी के अंतिम १९ से २७ छन्द हैं । पश्चात चेतन कथा है, जिसमें ३१ छन्द हैं, जो पूर्ण है ।

आदि—हरि कूं भज हरि का होय ॥ १८ ॥ दुहा

अंत—इति श्री सुरजनजी की चेतन कथा सम्पूर्ण ४ लिषत साध हरिकिसन संमत १८८६ मिति जेष्ट सुद ८ ॥

२०० कवित्त, गोविंदरामजी कृत । संख्या—१८ । पत्र संख्या—२ । देशी कागज । आकार—१२×६ इंच । हाशिया—दाएँ, बाएँ—१ इंच । लिपि—सुपाठ्य । अक्षर—अपेक्षाकृत मोटे । पंक्ति—प्रति पृष्ठ—१३ । अक्षर—प्रतिपंक्ति ३२–४० । लिपिकार—अज्ञात । लिपिकाल—अनुमानतः संवत १९२५ के लगभग । प्राप्तिस्थान—श्री धोकलराम विष्णुदत्त विश्नोई, दुतारावाला ।

आदि—॥ ६ ॥ श्री गणेशायनमः श्री जंभेस्वरायनमः
पूरण गुरु परमात्मा जंभेसर जगदीस ।
आदि पुरष अवचल तु हि तोहि नवाऊं सीस ।

अन्त—सरणागत सुष करन कु तुमरो विड़द विराज ।
अपनो ही जन जान के कृपा करो महाराज ॥ १४ ॥

२०१ पोथी । ला० प्रति । फोलियो संख्या—५९० (२५+५६५) । बीच से मिली हुई । देशी

कागज, गहरा बादामी रंग। प्राचीन, जीर्ण, यत्र-तत्र किनारों से खडित। कही कही आपस म चिपके हुए पत्र पृथक करने से फट गए हैं, ऐसे स्थान अपाठ्य है। आकार-९ ५×१२ इच। हाशिया-सिलाई की ओर-आधे से एक इच। किनारों पर आधा इच। श्री परमानदजी वणिहाल द्वारा सवत १७९९ स १८१० के बीच लिपिबद्ध। लिपि-साधारणत पाठ्य। पक्ति-प्रतिपृष्ठ-सामायत —३० (कही कही ३६ तक)। अक्षर-प्रतिपक्ति-२५-२६ (कही कही ३३ तक)। कतिपय पत्र अपेक्षाकृत मोटे अक्षरों म। इनम पक्ति-प्रति पृष्ठ-२५-२८ और अक्षर-प्रतिपक्ति-२५-२६। लिपिकार न पोथी की रचनाओ का सूचीपत्र दिया है, जिसमे इससे पूव की, स० १८ तक की (आदि के फोलियो १ से २५) रचनाए सम्मिलित नही हैं। फोलियो ५३६ से सूचीपत्र म लिखित रचनाओ के नाम और फोलियो सख्या मे कुछ व्यतिक्रम है जो सम्भवत मिलाई करते समय पन्ना के इधर-उधर लगा देने से हो गया है। आदि अत क कुछ पन्ने निकले हुए प्रतीत होते हैं। लालासर साथरी की प्रति होने से इसका नाम ला० प्रति रखा गया है। प्राप्तिस्थान्-श्री महत रामनारायणजी, रामडावास।

यह अत्यत प्रामाणिक और विश्वसनीय प्रति है। इस बृहद सकलन ग्रथ म निम्नलिखित रचनाए हैं —१ छत्तीसी बारपडी-छद-३६। २ चौपई, छद-९ (बारपडी)। ३ जपडी, छद-१०, ऊदोजी कृत। ४ क्रम धम सवाद, छद-९५। ५ जुघतानाम, छद-४३, खेमदास कृत। ६ नाम मजरी, छद-२६४, नददास कृत। ७ फुटकर श्लोक, ३०। ८ श्लोक-२४। ९ छुटक साखी, दोहा-३६। १० दुहा-दोसट कूट, २२। ११ उदराज का दुहा-१२२। १२ दुहा-१६। १३ फुटकर दुहा-२६। १४ जोग समाध्य, छद ४०, जन हरिदास कृत। १५ साखी (छदा की), केसोजी-१, परमानदजी-३। १६ सोहल, छद ५, ऊदोजी कृत। १७ हरजस, परमानदजी-४, जतरसूल-१। १८ दस अवतार का छद, सख्या-११, केसौजी कृत। ये रचनाए फोलियो १ से २५ तक है, इसके पश्चात सूची पत्र है। १९ चौढालियो, छद-१००। २० समन की साख्य, दोहा-२०। सूची पत्र सहित ये रचनाए (१९-२०) पुन आरम्भ किए गए फोलियो १ से ५ तक ह। २१ पाटो पाठ की, ८। २२ पाढो की वेगते। २३ पाढा, एकावली-६। २४ पाटो एकाकी-४। २५ चरणायक-८। २६ गोत्राचार। २७ आदे वसावली। २८ पचीस नाम। २९ विसन पजर। ३० वेसन सते नाम। ३१. विवरिस। ३२ कलस, पाहल। ३३ बालक को मत्र। ३४ व्याह की पीढीया की सुरति। ३५ कलमा नीवज। ३६ फातेमा। ३७ मछली की दवा। ३८ पजनाम। ३९ हरफ। ४० नवण्य। ४१ (सख्या २१ से ४० रचनाए-फोलियो २१ तक)। सबद श्री वायक (सबदवाणी), सबद सख्या-१२१। गद्य प्रसग सहित। पुष्पिका के पश्चात २ सबद अतिरिक्त।

आदि-श्री वेसनजी सति सही लेषतु सबद श्री जांभजी रा वायक ॥ काच करव नीर रापी काची माटी का दीवटीया कराप जा जाहि पाणी घतायो हुकम सु दीया जगाया

बांभण न परखो वीयाल्यो आवि सबद वांणी सतगुर की श्री सतगुर वाच ॥ गुर चोहू गुर चौहि पेरोहित गुर मुंपि भ्रम वपांणी ॥ जो गुर होयबा सहजे सीले ॥ नादे विदे ॥ तिह गुर का आलीगार पिछांणी ।
अन्न-धीसन धीसन तु भण रे प्रांणी । पक लाव उज । रतन कया वकुंठ वासी । जुरा मरणभोव भाज ॥ १२१ ॥ एती सबद श्री वायक सपुरणो समत १७९६ । सब दवाएी फोलियो म० २१ मे ४३ तक है ।
४२ साषी—(१) राग सुहब की-१८। (२) राग धनासी की-२८ । (३) राग आसा की-१० । (४) राग मारू की-१५ । (५) राग भु वरो की-१ । (६) राग हस की-२ । (७) राग मलार की-३ । (८) राग सोरठि की-३ । (९) राग गवडि की-१० । (१०) राग रांमगीरी की-९ । (११) राग सोघु की ८ । (१२) राग जतसीरी की ३ । (१३) उ माहो-१ । (१४) असतोतर-१ । (१५) रगीलो-१ । (१६) आंबेलो-१ । (१७) बारामासो-१ । (१८) बुघ परगास-१ । (फो० ४४ – ८१) ।
"॥ एक सौ तेरा प्राय सायो सपुर समापिता समत १७९७ परमांणद वणिहाल लोषो छ सही श्री विसनजी सति सहि ॥"
कुल साखिया ११६ हैं किन्तु लिपिकार ने भूल से ११३ बताई हैं । ३ साखियों का अन्तर,५४ वीं पर सख्या न लगाने तथा ५६ के स्थान पर ५३ लिखने के कारण है । (आगे छन्द-सख्या लिपिकार के अनुसार दी गई है, तत्पश्चात कोष्ठक म रचना-विशेष के आरम्भ होने की 'पाना' (फोलियो) सख्या है) ।
४३ हरजस वील्हजी का-२० । (८१) । ४४ हरजस सुरेजनजी का-४८ । (८४) । ४५ हरजस केसजी का-११ । (९१) । ४६ सोहलो मुकनजी को-११ । (९२) । ४७ हरजस और फुटगर-१० । (९३) । आलमजी कृत । ४८ हरेजस रासजी का-२२ । (९४) । ४९ दुहा वील्हजी का-२६ । (९८) । ५० दुहा केसजी का-४१ । (९९) । ५१ साप्य केसजी की-४५ । (१००) । ५२, साप्य नाटारम की-३० । (१०१) । ५३ सापि सुरजजी की-११२ । (१०१) । ५४ असमेध की सापे-४५ । (१०६) । ५५ चद्रायणा केसोजी का-८९ । (१०७) । ५६ छन्द सुरेजनजी का-१३६ । (११०) । ५७ छन्द मुकनजी का-५५ । (११४) । ५८ छन्द काह चारण का-५४ । (११६) । ५९ छद तेज चारण का-१६२ । (११८) । ६० गीत सुरेजनजी का-१७ । (१२३) । ६१ कवत असु चारण का-१६ । (१२५) । ६२ छपइया उदजी का-५७ । (१२६) । ६३ छपइया वील्हजी का-४५ । (१३१) । ६४ कुड सीया वीमन छतोमी-३६ । (१३४) । ६५ कवत परसग का-१३ । (१३६) । ६६ कवत सुरजनजी का-८६१ । (१३७) । ६७ कवत गोपाल का-७ कु डलिया । (१५५) । ६८ सवइया फुटगर १६ । (१७७) । ६९ कवत दांमजी का १४ । (१७०) । ७० कवत उघोदास का-११ । (१८०) । ७१ कवत केसजी का-८२ । (१८१) । इनम गोपाल, कील्हो और गद् में छन्द भी हैं । ७२ कवत कील्हजी का २६ । (१८८) । ७३ कवत फुटगर-२० । (१८९) । ७४ कवत वराठ का-१० । (१९१) । ७५

कवत महाभारत का-१० । (१६२) । ७६ कु डलीया-६ । (१६२) । ७७ सवइया पनर तीय का-१५ । (१६३) । ७८ सगीत (के सवइये)-४ । (१९४) । ७६ सवइया फोसनजी का-१२ । (१६४) । ८० सवइया सुरजनजी का-२६ । (१६५) । ८१ सवइया केसजी का-३६ । (१९७) । ८२ मन्त्र सात सीघ काज-७ । (२००) । ८३ कथा प्राय घडाबघ दुहा-५३ । (२०१) । वील्होजी कृत । ८४ कथा औतार-पात १४२ । (२०२) । वील्होजी कृत । ८५ कथा बाललीला ६१ । (२०६) । केसौजी कृत । ८६ कथा गुगलीय की-८६ । (२०८) । वील्होजी कृत । ८७ कथा पुल्हजी की-२५ । (२११) । वील्होजी कृत । ८८ कथा सचअपरी वेगतावली-५४ । (२११) वील्होजी कृत । ८६ कथा लोहापागल की-१८७ । (२१३) । केसौजी कृत । ६०. कथा इसकदर की-२१२ । (२१८) । केसौजी कृत । ६१ कथा दु णपुर की-६३ । (२२५) । वील्होजी कृत । ९२ कथा जैसलमेर की-१५८ । (२२७) । वील्होजी कृत । ६३ कथा चीतोड की-१६८ । (२३१) । केसौजी कृत । ६४ कथा मेडत की-१७२ । (२३६) । केसौजी कृत । ६५ कथा सस जोपांणी की-१४४ । (२४०) । केसौजी कृत । ६६ कथा ग्रोरडा की-३२ । (२४५) । वील्होजी कृत । ९७ कथा उद अतली की-७७ । (२४५) । केसौजी कृत । ६८ कथा जति तलाव की-८० । (२४७) । केसौजी कृत । ६६ कथा ग्यानचरी-१३० । (२५०) । वील्होजी कृत । १०० कथा ग्रथ भोगल प्राण-३०७ । (२५२) । सुरजनजी कृत । १०१ कथा औतार की-२३७ । (२६३) । सुरजनजी कृत । १०२ कथा सेठ सुदरसण की-२८ । (२७०) । १०३ कथा चन्द्रामणी-२५ । (२७१) । सुरजनजी कृत । १०४ कथा धरमचरी-१११ । (२७२) । सुरजनजी कृत । १०५ कथा ग्यांन तलक-१०४ । (२७५) । सुरजनजी कृत । १०६ कथा ग्यांन माहातम-२२८ । (२७८) । सुरजनजी कृत । १०७ कथा गजमोष-७१ । (२८५) । सुरजनजी कृत । १०८ कथा हरे गु ण-१९७ । (२८७) । सुरजनजी कृत । १०६. कथा परसीष-२०१ । (२६३) । सुरजनजी कृत । ११०. नाव भेटवाला का-६२ । (२६६) । १११ कथा उषा पुराण-२३२ । (३०१) । सुरजनजी कृत । ११२ कथा पहलाद चीलत-५९६ । (३०७) । केसौजी कृत । ११३ कथा रांमायण-२६१ । (३२३) । मेहोजी कृत । ११४ कथा बहसोवन की-५५६ । (३२६) । केसौजी कृत । ११५ कथा भीव दुसासणी-६६ । (३४५) । केसौजी कृत । ११६ कथा अहमनी-७१७ । (३४७) । ऊेल्हजी कृत । ११७ कथा सुरगारोहणी-२१६ । (३६३) । केसौजी कृत । ११८ कथा विगतावली-३७७ । (३७०) । केसौजी कृत । ११६ कथा अघलेपा की १३८ । (३८३) । केसौजी कृत । १२०, कथा पच इ द्री की वेल-३८ । (३९०) । १२१ कथा अथाडसीष की-११६ । (३९१) । कीनकदास कृत । १२२ कथा सतकवार की-५५ । (३९४) । १२३ कथा नेमकवार की-६४ । (३९५) । १२४ कथा व्याहलो कीसन-२५५ । (३९७) । पदम कृत । १२५ 'छमछरी सहको-१०० । (सवत् १८००-१९००) गद्य । (४०५) । १२६ भाग्या छमछरी दूहा-७७ । (सवत् १७००-१८००) । (४१३) । १२७ भाइली पु रांण-गद्य ।

(४१४) । १२८ बुधचार-गद्य । (४१८) । १२६ सुकर असत वेचार-गद्य । (४१९) । १३० ग्रहणचार-पद्य । (४१९) । १३१. इधक मास वीचार-गद्य । (४१९) । १३२ बार सक्रायत रो भाव-गद्य । (४१९) । १३३ गुराचार-गद्य । (४२०) । १३४ समचार-गद्य । (४२१) । १३५ भोगल पुरांण-गद्य पद्य मिश्रित । (४२२) । १३६ अठाइस कुड-गद्य । (४३०) । १३७ वराठ पुराण-पद्य, ६ पटल, शंकर-पार्वती सवाद रूप म । (४३१) । १३८ सरोदो, आरेजा फुटकर । गद्य । (४३९) । १३६ बार भुवन-गद्य । (४४३) । १४० अभीच लगन, बाल लगन, मूल लगन । गद्य । (४४६) । १४१ होडचक्र-गद्य । (४४६) । १४२ काल्यग ग्यान-क्रम वेपाक-गद्य । (४४७) । १४३ आरेजा फुटकर (चद्र आरेजा)-पद्य । (४५०) । १४४ क्रम वेपाक-गद्य । (४५३) । १४५ कवत फुटगर-८ । (४५६) । १४६ कथा हरेचद पुराण-३०७ । (४५७) । ध्यानदास कृत । अपर नाम-कथा हरचद की, हरचद सत कथा । १४७ कथा गोपीचद की-१३६ । (४६७) । खेम कृत । १४८ कथा प्रमताव माल-२१६ श्लोक, दोहा, चौपई । (४७१) । १४९ जम गीता-सस्कृत, प्रहदान, प्रह अए घट । (४८५) । १५० नासकेत पुराण-६७०, दोहा, चौपई । १८ अध्याय । (४८५) । १५१ क्रम वीपाक-२२, कृष्ण अर्जु न सवाद रूप म । (५०१) । १५२ महादेव का श्लोक २० सस्कृत । (५०२) । १५३ भरथरी का श्लोक ४७ सस्कृत । (५०२) । १५४ निरजन अ ग, शकराचार्य रचित-११४ श्लोक । (५०४) । १५५ कवत फुटकर-४ । (५०६) । १५६ अरेजन पुराण-७५ । (५०७) । १५७ सात पताल को वेचार-२५ । (५०९) । १५८ ब्रम समाधे-३०१ सस्कृत, हिन्दी । (५१०) । १५९ उतेम क्वार का श्लोक-१५ । (५१६) । १६० जड भरथ नल घोप पडवां का श्लोक-२४ । (५१६) । १६१ गोरषनाथ की सबदी-२६९ । (५१७) । १६२ बतीस लषण-५ । (५२५) । १६३ कवित्त-२ । (५२६) । १६४ गुडा गाह दुहा-११२ । (५२६) । १६५ प्र चेरत-२२५ । (५२९) । जन गोपाल कृत । १६६ सुगन आठ दिसा, सम भाव की आरेजा । (५३५) । १६७ फुटकर कवित्त । (५३५) । १६८ बार सक्रांयतां रो बार विचार । (५३७) । १६९ बार सक्रांयतां रो भाव । (५३७) । १७० कथा जडभरथ की-८९ । (५३८) । जन गोपाल कृत । १७१ कवत गोपीचद का । (५४१) । १७२ फुटकर कवित्त-१७ । (५४२) । १७३ गीत-१ । (५४४) । १७४ साढा पचीस आय देन रा नांम । (५४४) । १७५ तारा । (५४५) । १७६ वीलायत री वारता । (५४७) । १७७ आदि विसन क नाम । (५४८) । १७८ फुटकर छन्द-कवित्त, कुडली, दोहा आदि । (५४९) । १७९ मोह जीव की कथा-११७ । (५५५) । १८० भगत भावती भागोत सगुन ३१६ । दोहा, चौपई, पाधायण आदि । (५५८-५६४) । लालदास कृत । पुष्पिका-(५६०) ।

आदि-श्री विसनजी सति सही श्रीमनु छतीसो बारषडी दुहा ॥

ओं विसन विसनु मन्यो विसनु ॥ तत पुरेष वासदेवाय धामहे ॥

तनो वास परचो दया ॥ १ ॥ दुहा
अआ आदि विसन ओउ कार सु ॥ सोह सोरज्यो ससार ॥
ओर सकल भ्र म आन तज्य ॥ करि सीवरण करतार ॥ १ ॥
अ १- श्रीविसनजी रा ग्रय ग्यान सासत्र पुसतग नाम पोयो सपुरण
समापीता लीपतु परमाणद सत जात्य वणहाल थापन
सुरताणजी रा सुत रामजी रा चेला दामजी रा पोता सीप
मारवाडे नव कोटी रा थापना अतीता म गापार रा अतीता
रा जुना पुसतक देप्य महुता री पोयी देपि ओह ग्रय
ग्यान लीप्यो छ समत १७९८ पोयो कीयो समत १८१०
चत्र सुदे १ पोयो सपुरण लीप्यो छ वार बुधवारि वचनारयो
कान्हा गाव रासीसर सुभ सुयाने दामजी री थापनां ।

२०२ सबदवाणी । सबद सख्या-१२० । पद्य प्रसग ममेत । पत्र सख्या-७४ । कतिपय पत्र खडित । देशी तथा मशीन के बन कागज । आकार-१२×६ इ च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-सवा इ च । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-११ । अक्षर-प्रतिपक्ति २२-२५ । श्री साहब-रामजी द्वारा सवत १९३७ मे लिपिबद्ध । लिपि-सुपाठ्य । अपेक्षाकृत मोटे अक्षर । प्राप्तिस्थान-श्री धाकलराम विष्णुदत्त विश्णोई, दुतारावाली ।
आदि-श्री गणेशायनम ॥ श्री प्रमात्म नम ॥ श्री गूरूभ्या नम -
नाद प्रसग चौ० क्षत्रीय जात लोहट तें हि नांमा ।
जात पु वार पींपासर धामां ॥
अन्त-भलीयो होय तो भल बुधि आव बुरियो बुरी कमाव ॥ १२० ॥
इति श्री शब्दवाणी श्री जाभजी की प्रसगा समेत समाप्त भवेत श्री वाक्य सख्या ८०० अथ श्री म्हाराज री बाणी रो म्हात्म प्रारभते ० जो सब्दनि सीप सुन ॥ वाच कै विचार ॥ साहवराम एक पलक म होत पतित भव पार ॥ १ ॥ लिपिकृत साध श्री गोबिंदराजी का सिप साहबराम ॥ सारी ॥ गाव नादडी म्धे । स्मत । १९३७ । मीती जेठ सुद ॥ १ ॥

०३. विवाह पद्धति बिश्नोई समाज । गुटका । फोनियो-सख्या-८० । खडित । देशी कागज । आकार-६×४ २५ इ च । हाशिया-नगण्य । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-७ । अक्षर-प्रतिपक्ति-१४-१९ । लिपि-पाठ्य । श्री सतोपदास द्वारा सवत १९५२ म लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-श्री पन्नालाल गायणा, गाव मोढा, पो० गुदाऊ, (भीनमाल से), जिला-जालोर । इसमे ये रचनाएँ है —
(क) गाठ रो मत्र । (ख) हथलेव रो मत्र । (ग) अगनी साप रो मत्र । (घ) भूमी देव साप मत्र । (ड) मगल मत्र । (पाचा सस्कृत म) । (च) कलस । (छ) पावती ईश्वर सवादे गोत्राचार । (ज) वासदर के पचीस नाम । (झ) विष्णु अठाईस नाम । (ञ) सप्याण । (ट) आदि वसावली । (ठ) दस अवतार । (ड) विवरस । (ढ) अस्तुति । (ण) हरी नाम माला (सस्कृत) । (त) दस अवतार । शकराचार्य विरचित

(संस्कृत)। (थ) रतनमाला, ४१ दोहे–ऊद्धवदास रचित। (द) किष्णजी र व्याव री सायोचार। (ध) चौजुगी। (न) पीढा वदलण री मंत्र (संस्कृत)। (प) देवता विदा करण मंत्र (संस्कृत)। (फ) पाहल मंत्र। (ब) बालक मंत्र। इती व्याव री पाटीया घडा वध संपूरण। (भ) अमावस्या री कथा–मयाराम रचित। (म) कवित्त–१३। सुरजनजी–३। तत्ववेत्ता–२, वील्होजी–७, अल्लूजी–१।

आदि–उं श्री गणेशायनम अथ गाठ वाधण री मंतर लिष्यते ॥

उँ एक दंतो महाबुद्धि सव गुणो गणनायक

सव सिद्धि करो दव गवरा पुर विनायक

अन्त–संमत १९५२ रा मिती आसोज सुदी १० पोथी गायण रामचन्द धीराणी री छ लिष० सा० स० दा० कान र पातर लिषी छ दुज री दावो नहा छ ॥

दोहा ॥ नारी क्यारी मित्र कू वेद ग्यान कृसान (?)

यता वग सभालीय धान पात भगवान १

समन सपत पाय कं वडो न कीज चित

ये कबहु न विसारीयें हरी अरी अपनो मित २

हरी सुमरया पातक क्षर मितर मिटाव पीर

अरी सुमरयां एता वध वृद्ध प्राक्रम अरु धीर ३

२०४ पोथी। फोलियो संख्या १३६। अपूर्ण, जीर्ण, खडित, दीमक खाई हुई। देशी कागज। आकार–८×५.५ इंच। हाशिया–प्राय आधे से पौन इंच। पंक्ति-प्रतिपृष्ठ-१०-१३। अक्षर-प्रतिपंक्ति-१४-१९। थापन तेजै तथा अज्ञात लिपिकार द्वारा सं० १९०१-०२ में लिपिबद्ध। लिपि-पाठ्य। प्राप्तिस्थान–श्री सिमरथाराम थापन, लाम्बा (बिलाड़ा, जोधपुर)। इसमें ये रचनाएँ हैं —

(क) प्रहलाद चीरत, केसोजी कृत। लिपते थापन तेजा मौनाजी सुत जात वीणीयार ॥ वाम लाव मधे पोथी लीयी भुल चुक तो वीसनजि जाण। संमत १९०१ मीना असाढ ब० २। (ख) विष्णू चिरत––ऊधवदास रचित। (लिपिकाल–संख्या १९०२)। (ग) पाटीया पढण रो–मिथो वरणा। (घ) जभेस्वर स्तोत्र, सुरजनदास रचित। (ङ) नासकेत भाषा। (च) सबदवाणी जाभजी की। ६३ वें सबद तक, ६४ वां अपूर्ण है। नवल्याणा न० ४६ व छन्द के पश्चात। (छ) सेवादास कृत २० छन्द हैं।

पुन सबद लिखे गये हैं।

आदि–विरतो सनकस भयो विरोध ॥ एकण मन मां कीयो क्रिरोध ॥४९॥

दरषांना न पहु तो पाप। सनकादिक कहै ये लीयो सराप।

सनकादिक विधि कहे विचार ॥ असरा घर पायो अवतार ॥५०॥

अन्त–ब्रह्मा ईस महेसर परस्या। दोनो करामत कनो थारी

धर सुर शेष सायी परस्या। पवण पनेसर पवन ॥

२०५ रुक्मणी मंगल, रामकृष्ण कृत। अपूर्ण। किनारा से त्रुटित। अन्य कृत मौन र

कागज। प्राप्त पत्र संख्या-८। आकार-९ ७५X५ २५ इंच। हाशिया-दाएँ, बाएँ-एक इंच। पंक्ति-प्रतिपृष्ठ-१२। अक्षर-प्रतिपंक्ति-२३-२४। अज्ञात लिपिकार द्वारा संवत् १८७५ के आसपास लिपिबद्ध। लिपि पाठ्य। प्राप्तिस्थान श्री सिमरथा राम थापन, लाम्बा।

आदि-श्री विष्णजी सत छ जी लिपते हरी रस श्री विष्णु प्रमातमाऐ नम लिपते
रूपमणी मगल राग देवगरी
निगम जाकों नित्य गाव ध्यान सिव उर आन हीं
आदि अनादि परिब्रह्म जु के भक्त नीक जान ही १

अन्त-जुक्त सों पत्री जु लिष करि विप्र के हाथन दई
माथ छुवाय जु लई दिज न ।

२०६ गुटका। अपूर्ण। किनारा से खण्डित। देशी कागज। आकार-६X४ इंच। हाशिया-सिलाई की ओर पौन इंच। पंक्ति-प्रतिपृष्ठ १०, ११। अक्षर प्रतिपंक्ति-१६ १६। थापना तेजा तथा अज्ञात लिपिकार द्वारा संवत १८७८-१८८१ के बीच लिपिबद्ध। लिपि-पाठ्य। प्राप्तिस्थान-श्री सिमरथाराम थापन, लाम्बा। इसमे रचनाएँ हैं -
(क) विश्णोई धम-२ कवित्त, ऊम्मेजी कृत। (ख) प्रह्लाद चिरत केसोजी कृत, छन्द २२३ तक (अपूर्ण)। (ग) गीता का दसवा अध्याय (संस्कृत)। (घ) गणपति स्तोत्र (संस्कृत)। (ङ) इंदव छन्द-गोकलजी कृत। (च) विष्णु सहस्र नाम (अपूर्ण)। (छ) विष्णु चिरत-उदोजी कृत। संमत १८७८ विरषे मीती फगण वद ६ लिषते थापन तेजा मोटावत " पोथी गाव डावर री ढाणी मा नीपी छ वास लाव मधे। (ज) ३ श्लोक (संस्कृत)। (झ) हरजस-१। (ञ) गीताजी की भाषा। (ट) वेमाहो श्री क्रिसनजी रो पदम भगत कृत, विभिन्न राग रागिनियो के अन्तर्गत छन्द संख्या पृथक पृथक है।

आदि-श्री विष्णु जी सत छ जी १। लिपते कवत ॥२॥
प्रथम परभाते उठ जल छाण र लीज ॥
सज्यम सु च सिनांन। सुद हुय नाव जपीज

अन्त-आरती कीज भुगत लीज। चुवर ढोल देवता ॥
सु र नारी गील गावं ॥ का ह जुव पेलता ॥
वण रायं मोरी ॥ गहर गाज ॥ सकल सुर नर मडली ॥
पदम गाव मुगत पावं ॥ अहै मन पुगी रली ॥३३॥

ब्यावलो किसनजी रो संपूरण ॥ १ ॥ संमत १८८१ वीरषे मीती स्वाण सुद १ ॥ वार मल ॥ दसक्त थापन तेज मोटावत रा छै।

२०७ पोथी। अपूर्ण। आदि मे बीच की सिलाई तक फोलियो संख्या-९३ जिनमें आदि के २० अप्राप्य। खण्डित, जीर्ण। अपेक्षाकृत मोटे देशी कागज। आकार ९X८ इंच। हाशिया-सिलाई की ओर-१ तथा किनारा पर पौन इंच। पंक्ति-प्रतिपृष्ठ-१६-१६। अक्षर-प्रतिपंक्ति-१७-२४। दत्ताजी तथा परमानन्ददास वणिहाल द्वारा संवत्

१७८६–१७६१ म निपिवद्ध । लिपि–सामायत पाठ्य, कहा कहा पत्र भीग जान से अपाठ्य । प्राप्तिस्थान–सिमरथाराम थापन, लाम्बा । इसम ये रचनाएँ हैं –(क) कथा औतार पात, छन्द सख्या–१४० । वील्होजी कृत (अपूर्ण) । लेपतु दला सीपी पोथी परमाएण की मा गु ।

(ख) रामांयण, छन्द सख्या–२२५, मेहोजी कृत । समत १७८६ ॥ म ॥ पौह वदे १० वार ब्रिसपति ॥ लीपत दला छजुजी का सीप । लीखावतु प्रमाएण बहीणीवाल सुरताएा सुत । (ग) छन्द–२, राम–युद्ध सम्ब धी । (घ) हरिजस–सख्या–१२, वील्होजी कृत । (ङ) कथा धडाबध–वील्होजी कृत । (च) दोहे–१५ ,केसोजी कृत । (छ) भोगल प्रांण ग्रथ–सुरजनजी कृत । (ज) कथा सुरगारोहणी–केसोजी कृत । (झ) कथा चीतोड़ की–केसोजी कृत । (ञ) कथा इसकन्र की–केसोजी कृत । लिपतु परमाएण बणीहाल लपावतु दता चोहाग पठनारथी समत १७६१ वर्षे मती जेठ सुदि २ (३ ?) वार वसपतिवार गाव धरटीय मधे । (ट) कथा अहवांवणी–केल्ह कृत । (ठ) दांन सील तप भाव रौ चौढालीयौ–वाचक समैसु दर कृत । (ड) कुष परगास–केल्ह कृत । (ढ) कथा दु णपुर की, वील्होजी कृत । लेपतु परमाएण दास समत १७६१ । (ण) नाहरखांन का छन्द–सख्या–१३ । (त) वसावली । (थ) कवित्त–सुरजनजी क स०–८ । (द) कथा जैसलमेर की–वील्होजी कृत । (ध) कथा मेड़ता की, केसोजी कृत । (न) वेसन पीजर, श्री सकरा चावार मसतोतर । (प) चत्रामणी–सुरजनजी कृत । (फ) साषी गोपीचन्द की, हरियौ कृत ।

आदि–रोग मांन दोस नही ॥ दोस घणो सपोस ॥

गड सुती पाव नही ॥ कहो कु णां को दोस ॥ ३९ ॥

चौपई ॥ पीठ पोढायौ सुषवासाणि । फिरि हुवौ इसकी क ताणि ॥

वासौ भमै न देइ देव ॥ कु ण जांण सतगुर को भेव ॥

अन्त–गोपीचन्दजी हेत करे मोलीयौ ॥ बाइ भुजा पसारी जी ॥ ६४ ॥

रो रो हे म्हारी जामण जाई ॥ हु गोपीचन्द भीपीयारी जी ॥ ६५ ॥

सोच दीयो गोपीचद राजा ॥ मेलीया बहण अर भाइ ।

जामणि जाया को दुष दोहेरो ॥ बहनड वलै न आइ जी ॥ ६७ ॥ ॥

२०८ पोथी । त्रुटित । देशी कागज । आकार–८×७ इन्च । हाशिया–नाम मात्र को । पक्ति–प्रतिपृष्ठ–१३–१६ । अक्षर–प्रतिपक्ति–१७–२० । थापन वसता द्वारा सवत् १८८१–१६०७ मे लिपिबद्ध । लिखावट भद्दी और कई स्थलो पर अपाठ्य । प्राप्ति स्थान–श्री सिमरथाराम थापन, लाम्बा । इसमे ये रचनाएँ हैं — (क) विष्णुचिरत–ऊदोजी कृत । (ख) सूरदास का १ भजन । (ग) किसनजी रो ब्यावलो–पदम भगत कृत । १८८१ बीरषे मीती आसाड सूद ४ वार सनीसरवार दसकत थापन वेसता रा । (घ) गोपाचन्दजी की साषी–हरियौ कृत । (ङ) कथा मगलेया की–केसोजी कृत । (च) कवित्त–२, तेजोजी और वील्होजी के । (छ) ऊमावस कथा–मयाराम रचित । (ज) सनेह लीला–जगमोहन कृत । समत १८६५ का मती जेट बद ६ सुकरवार । (झ) दांणलीला–रचयिता अज्ञात । (ञ) गोकलजी की असतुत । (ट) छद

मोतीराम-गोकलजी कृत । (ञ) और (ट) एक ही रचना है। (ठ) ग्रुप परगास-ईहड़ कृत। (ड) कथा अहवावणी-ईहड़ कृत। (अपूर्ण)। (ढ) सिवदास कृत साषी-१। (ण) पहलद चिलत कथा-केसोजी कृत।

आदि-श्री विष्णुजी ॥ श्री गुरभ्योनम ॥ विष्णु चिरत लिष्यते ॥

चोपई ॥ श्री गुर सत चरण सिर नाउ । अज्ञा होय विष्ण जस गाउ ॥

अन्त-ईती श्री ग्रं थाग्रं थ कथा पहलाद चरित सपूरण " थापन वसता वेट मोट जी र जात रा वणीवला ग्रपे मती असड वदे आठ ८ समत १६ सात र ७ वर (स)।

२०६ पोथी। त्रुटित। फोलियो सख्या-१००। मशीन के बने कागज। आकार-८×६ इन्च। हाशिया-आधे से पौन इन्च। पंक्ति-प्रतिपृष्ठ-१०। अक्षर-प्रतिपंक्ति-१७-१६। साधु बिहारीदास द्वारा सम्वत् १६४६ में लिपिबद्ध। लिपि-सुपाठ्य। प्राप्तिस्थान-श्री रामकिशन साद्, रोट्ट (तहसील-जायल, नागौर)। इसमें ये रचनाएँ हैं -(क) शब्द जांभजी का-गद्य प्रसंग समेत (आदि-अंत अपूर्ण)। सबद सख्या-१२३। इसमें स्वीकृत सबद सख्या १०३ के दो सबद (सख्या १०३, १०४) माने हैं। स्वीकृत सबद सख्या १०२ भी इसी सख्या का सबद है। (ख) विष्णु चिरत-ऊधोदास कृत। आदि-ऊपर मगला असवार हुयज्यो। बालक असवार हुआ। सगलाई ललकार कीवी ॥ घाडवीयां र निजर कटक आयो। सांढ छोड र नाठा ॥ रबारी साढा लारे था तका बार धाती ॥ सों मोरें छाया न माया लोही न मासू (सबद-२)

-- (सबदवाणी का अंत -विसन विसन तू भण रे प्रांणी पक लाव उपाजू ॥

रतन काया बकुंठे बासो। तेरा जरा मरण भो भाजू। १२३)

अंत-इती श्री विष्णु चिरत ऊधोदास कृत समापत ॥ सवत १६४६ मिती आसोज सुदी ४ लिष्यते साधू श्री बीसनुदासजी रा शिष्य बीहारीदास विष्णु विष्णु विष्णु ॥

२१० पिसण-सिंघार, सेवादास कृत। छन्द सख्या ८६। देशी कागज। किनारा से खडित। पत्र सख्या-४। आकार-६ २५×४ इन्च। हाशिया-दाएँ, बाएँ-एक इन्च। पंक्ति-प्रतिपृष्ठ-११। अक्षर-प्रतिपंक्ति-३३-३७। लिपि-सुपाठ्य। भगवानदास द्वारा सवत १६१२ में लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-महन्त रणछोडदासजी, आथूणी जागा, जाम्भा।

आदि-श्री प्रमात्मनेनम ॥ अथ ग्रथ पिसण सिंघार लिष्यते ॥

दोहा ॥ उनमन नेजा फरहर ॥ नहदा घुर निसांन ॥

इन विधि भोम्यां ऊपरं ॥ चढियो सबद दीवांन ॥ १ ॥

अन्त-जहां काल तणां धारा नहीं ॥ फिरी राम की आण ॥

सेवादास जग जीपिया ॥ परस्या पद निरबाण ॥ ८९ ॥ इति श्री पिसण सिंघार ग्रंथ समाप्ता। सबत १६१२ मिति पो सुध १३ वार शनिसर। लिपिकृत भगवान-दास रामदासजी का चेला ॥ गाव तिलवासणि मधे ॥

२११ पिसण सघारण, सेवादास कृत। छन्द सख्या-१०२। देशी कागज। किनारो से खडित। पत्र सख्या-४। आकार-१२×६ इन्च। हाशिया-दाएँ, बाएँ-सवा इन्च।

१७८६–१७६१ में लिपिबद्ध। लिपि–सामान्य पाठ्य, कहीं कहीं पत्र भाग जाने से अपाठ्य। प्राप्तिस्थान–सिमरथाराम थापन, लाम्बा। इसमें ये रचनाएँ हैं–(क) कथा औतार पात, छन्द संख्या–१८०। वील्होजी कृत (अपूर्ण)। लिपतुं दला साधा पोथी परमाण की मा गु।

(ख) रांमायण, छन्द संख्या–२२५, मेहोजी कृत। समत १७८६ ॥ म ॥ पोह वद १० वार ब्रिसपति ॥ लापत दला छतुजी का गाँव। सापायतु प्रमाण बहोगीवाल सुरताण सुत। (ग) छप्पय–२, राम–युद्ध सम्बन्धी। (घ) हरिजस–संख्या–१२, वील्होजी कृत। (ङ) कथा पडाबंध–वील्होजी कृत। (च) दोहे–१५, केसोजी कृत। (छ) भोगल प्रांण प्रप–सुरजनजी कृत। (ज) कथा सुरगारोहणी–केसोजी कृत। (झ) कथा चीतोड़ की–केसोजी कृत। (ञ) कथा इसकन्द्र की–केसोजी कृत। लिपतुं परमाणद वणीहाल ल्पावतु दला चोहांण पठनारथी समत १७६१ वर्षे मतो जेठ सुदि २ (३ ?) वार वसपतिवार गांव भरटीप मधे। (ट) कथा अहवांवणी–ऊदो कृत। (ठ) दांन सील तप भाव री चोढालीयो–वाचक समैसुंदर कृत। (ड) बुध परगास–ऊदो कृत। (ढ) कथा दुणपुर की, वील्होजी कृत। लिपतु परमाणंददास समत १७६१। (ण) नाहरपांन का छन्द–संख्या–१३। (त) वंसावली। (थ) कवित्त–सुरजनजी के सं०–८। (द) कथा जैसलमेर की–वील्होजी कृत। (ध) कथा मेड़ता की, केसोजी कृत। (न) वेसन पीजर, थी सकरा आचार असतोतर। (प) घप्रामणी–सुरजनजी कृत। (फ) साषी गोपीचन्द की, हरियो कृत।

आदि–रोग मांन दीस नही ॥ दोस घणो सपोस ॥
गड घुती पाय नही ॥ कहो कुणां को दोस ॥ ३९ ॥
चौपई ॥ पीठ पोढायो सुपवासांणि। फिरि हुवो इसकी क तांणि ॥
बासो भमै न देइ देव ॥ कुण जांण सतगुर को भेव ॥
अन्त–गोपीचन्दजी हेत करे मीलीयो ॥ बांह भुजा पसारी जी ॥ ६४ ॥
रो रो हे म्हारी जांमण जाई ॥ हु गोपीचन्द भीषीयारी जी ॥ ६५ ॥
सीष दीयें गोपीचन्द राजा ॥ मेलीया बहण अर भाइ।
जांमणि जाया को दुष दाहेरो ॥ बहनड वलें न आइ जी ॥ ६७ ॥ ॥

२०८ पोथी। त्रुटित। देशी कागज। आकार–८×७ इंच। हाशिया–नाम मात्र को। पंक्ति–प्रतिपृष्ठ–१३–१६। अक्षर–प्रतिपंक्ति–१७–२०। थापन वसता द्वारा संवत १८८१–१९०७ में लिपिबद्ध। लिखावट भद्दी और कई स्थलों पर अपाठ्य। प्राप्ति स्थान–श्री सिमरथाराम थापन, लाम्बा। इसमें ये रचनाएँ हैं — (क) विष्णुचिरत–ऊदोजी कृत। (ख) सूरदास का १ भजन। (ग) किसनजी री ब्यावलो–पदम भगत कृत। १८८१ वीरष मीती आसाड सुदि ४ वार सनीसरवार दसक्त थापन वेसता रा। (घ) गोपीचन्दजी की साषी–हरियो कृत। (ङ) कथा मगलेया की–केसोजी कृत। (च) कवित्त–२, तेजोजी और वील्होजी के। (छ) ऊमावस कथा–मयाराम रचित। (ज) सनेह लीला–जगमोहन कृत। समत १८८५ का मती जेट वद ६ सुकरवार। (झ) दांणलीला–रचयिता अज्ञात। (ञ) गोकलजी की असतुत। (ट) छंद

मोतीदाम-गोकलजी कृत । (ञ) और (ट) एक ही रचना है। (ठ) बुध परगास-डेल्ह कृत । (ड) क्या अहवावणी-डेल्ह कृत । (अपूर्ण) । (ढ) सिवदास कृत साषी-१ । (ण) पहलव चिलत कथा-केसोजी कृत ।

आदि-श्री विष्णुजी ।। श्री गुरुभ्योनम ।। विष्णु चिरत लिष्यते ।।

चौपई ।। श्री गुर सत चरण सिर नाउ । अज्ञा होय विष्ण जस गाउ ।।

अन्त-ईती श्री ग्र थाग्र थ कथा पहलाद चरित सपूरण थापन वसता वेट मोट जी र जात रा वणीवला ग्रये मती असड वदे आठ ८ समत १६ सात र ७ वर (स)।

२०६ पोथी। त्रुटित । फोलियो सख्या-१०० । मशीन के बने कागज । आकार-८×६ इच । हाशिया-आधे से पौन इच । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-१० । अक्षर-प्रतिपक्ति-१७-१६। साधु विहारीदास द्वारा सवत् १६४६ मे लिपिबद्ध । लिपि-सुपाठ्य । प्राप्ति स्थान-श्री रामकिशन भाट्, रोट्ट (तहसील-जायल, नागौर) । इसमें ये रचनाएँ हैं -(क) शब्द जांभजी का-गद्य प्रसग समेत (आदि-अ श अपूर्ण) । सबद सख्या-१२३ । इसमे स्वीकृत सबद सख्या १०३ के दो सबद (सख्या १०३, १०४) माने हैं। स्वीकृत सबद सख्या १०२ भी इसी सख्या का सबद है । (ख) विष्णु चिरत-ऊधोदास कृत । आदि-ऊपर सगला असवार हुयज्यो । बालक असवार हुया । सगलाई ललकार कीवी ।। घाडवीया र निजर कटक आयो । साढ छोड र नाठा ।। रवारी साढा लारे था तका बार घाती ।। ओं मोर छाया न माया लोही न मासू (सबद-२) (सबदवाणी का अ त -बिसन बिसन तू भण रे प्राणी पक लाव उपाजू ।।

रतन काया बकु ठे बासो । तेरा जरा मरण भो भाजू । १२३)

अ त-इती श्री विष्णु चिरत ऊधोदास कृत समापत ।। सवत १६४६ मिती आसाज सुदी ४ लिष्यते साधू श्री बीसनुदासजी रा शिष्य वीहारीदास बिष्णु बिष्णु बिष्णू ।।

२१० पिसण-सिंघार, सेवादास कृत । छन्द सख्या ८६ । देशी कागज । किनारों से खडित । पत्र सख्या-४ । आकार-६ २५×४ इच । हाशिया-दाएँ, बाएँ- एक इच । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-११ । अक्षर-प्रतिपक्ति-३३-३७ । लिपि-सुपाठ्य । भगवानदास द्वारा सवत् १६१२ मे लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-महन्त रणछोडदासजी, आथूणी जागा, जाम्भा ।

आदि-श्री प्रमात्मनेनम ।। अथ ग्रथ पिसण सिंघार लिष्यते ।।

दोहा ।। उनमन नेजा फरहर ।। महदा घुर निसान ।।

इन विधि भोम्यां ऊपर ।। चडियो सबद दीवांन ।। १ ।।

अन्त-जहा काल तणां चारा नहीं ।। फिरी राम की आण ।।

सेवादास जग जीपिया ।। परस्या पद निरबाण ।। ८९ ।। इति श्री पिसण सिंघार ग्र थ समाप्ता । सबत १६१२ मिति पो सुध १३ बार शनिसर । लिपिकृत भगवानदास रामदासजी का चेला ।। गाव तिलवासणि मधे ।।

२११ पिसण सधारण, सेवादास कृत । छन्द सख्या-१०२ । देशी कागज । किनारों मे खडित । पत्र सख्या-४ । आकार-१२×६ इन्च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-सवा इच ।

पंक्ति-प्रतिपृष्ठ-१३ । अक्षर-प्रतिपंक्ति-३३-३६ । लिपि-सुपाठ्य । सवत १९०८ म साहबरामजी द्वारा लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-श्री धारनराम विष्णु-त विष्णोई, दुतारावाली ।

आदि-ग्रथ ग्रथ ॥ पिसण सेधार लिखने ॥

दुहा-उनमुन नेजा फरहर ॥ अनहद धुर निसान ।

महो तो भोम्यां ऊपर पधीयो सबद दिवान ॥ १ ॥

अन्त-काल तणी सारो नहीं ॥ सिरपा रामराय री आण ।

सेवादास जग जीत कर । परस्या पद निरवाण । १०२ । इति श्री पिसण सघा रण ग्रथ सपूरण १ सवत । १९०८ । रा यप मिति भा-व सु' । १० । लिपतु साध साहिबराम ॥

२१२ गीता-माहात्म्य, दोहे-चौपइयों म, तथा ऊदोजी कृत १ दोहा और १ छप्पय । देशी कागज । पत्र-सख्या-४२ । आकार-६×४ इच । हांशिया-दाएं, बाएं-एक इच । पंक्ति-प्रतिपृष्ठ-११ । अक्षर-प्रतिपंक्ति-२८-३० । लिपि-सुवाच्य । प्राप्तिस्थान-लोहावट साथरी ।

आदि-श्री कृष्णायनम ॥ चोपई ॥ गीता की महिमा पुनि गाऊ । व्यास कहि सो कहि समझाऊ । पदम पुरांन माहि विस्तार ॥ सो कछु वर्नें मति अनुसार ॥

इति श्री पदम पुराणे उतर षडे सता ईश्वर सवादे जतराम कृत भाषाया अष्टा-शोध्याय । १८ सवत १८८९ मिती माहा सुद १४ वार दितवार लिपते विसनाई साध श्री गगारामजी का चेना गुमानीरा गाव वावड मधे लिपत ।

अन्त-वद राप्यो भरत लोक म आवीत कु असव दीयो ।

रतन चवद उदया बाट विसनु सुर कारज कीयो ॥ २ ॥

२१३. गुटका । फोटियो स०-२१३ । अपूर्ण, किनारो से खडित । देशी कागज । आकार-६×४ इच । हांशिया-दाएं, बाएं-पौन इच । पंक्ति-प्रतिपृष्ठ-९ । अक्षर-प्रतिपंक्ति-१७-१८ । साधु गोविंदराम द्वारा सवत १९०७ म लिपिबद्ध । लिपि-सुपाठ्य । प्राप्तिस्थान-श्री भगवतीलाल चौहान (सुपुत्र, श्री ओंकारलालजी), पुर (भीलवाड़ा) । इसम य रचनाएं हैं -(क) शब्द बाणी श्री जांभजी की । सबद सख्या १२० । बिना प्रसग ।

अन्त-विसन विसन तू भणि रे प्राणी प क लाप उपाजों

रतन काया मकू ठे बासो तेरा जरा मरण भव भाजों १२० । (ख) प्रहलाद चिरत-केसोजी कृत । छन्द सख्या-५९४ । इति श्री पहलाद चिरत सपूरण समत १९०७ रा वृषे मिती फागुण वदि अमावस्या १ लिपीकृत साध गोवि-राम । (ग) अमावस्या री कथा-मयाराम कृत । छन्द सख्या-१४५ । (घ) पाणिग्रहण-सस्कृत श्लोक १० । (ङ) महादेव-पार्वती सवाद आदि (गोत्राचार) । (च) बसदर के २५ नाम (सस्कृत) । (छ) सख्याण तथा ईश्वर पावती सवाद । (ज) आदि अशावतो दस अव तार वणन, छद १० । (झ) पच्चीस नाम विष्णु के । (ञ) बिबरस । (ट) स्तुति ।

(ठ) विष्णु रक्षा-८ श्लोक । (ड) नवग्रह रक्षा-६ श्लोक । (ढ) पीढी पालटण ३ श्लोक । (ण) वइश्वानर पूजा-(संस्कृत) । (त) कन्या वर लक्षण-(संस्कृत) । (थ) चोजुगी-४ छंद । (द) स्तुति जाभोजी की । (ध) मंगलाष्टक-केसव कृत । (न) देवता विदा करण, अग्नि बिसजन-२ श्लोक । (प) साथिया-केसोजी, सुरजनजी, रायचंद, ऊदोजी, गुणदास तथा अज्ञात रचित । (फ) छपईया-वील्होजी कृत । अपूर्ण । आदि-॥ ६ ॥ श्री जभगुरवे नम

उँ गुर चीन्हों गुर चीन्हि पिरोहित गुर मुखि धरम बखांणीं

जो गुर ह्वा बा सहने सीले शब्दे नादे वेदे तिहिं गुरका आलींकार पिछाणीं ।

अंत-सुगर सीलवत होय सुगर मन्य सदा सतोषी

सुगर सहज्य सुष लील सुगर पर जीवा पोषी

सुगर सुमारग दाषव जण तारण आयो तरण (-वील्होजी कृत)

२१४ सबदवाणी । अपूर्ण । सबद-संख्या-११७ । बिना प्रसंग । किनारा से खंडित । देशी कागज । प्राप्त पत्र संख्या-२८ । (कुल ४२ पत्रो मे से संख्या १, ११, २८, २६, ३१, ३२, ३३, ३४, ३५, ३६, ३८, ३६, ४० और ४२ अप्राप्य) । आकार-९×४ इंच । हाशिया-दाएं, बाएं-१ इंच । पंक्ति-प्रतिपृष्ठ-१० । अक्षर-प्रतिपंक्ति-२८-३० । लिपि-पाठ्य । साधु कनीरामजी द्वारा संवत १८८६ म, पुर मे लिपिबद्ध । प्राप्ति-स्थान-श्री गोपीलालजी सीमोदिया विष्णोई (सुपुत्र-श्री नारायणजी), पुर (भीलवाडा) आदि-न रहिसी पांणी ॥ १ ॥ उँ न मोर छाया न माया ॥ लोही न

मासु रगतु न धातु ॥ मोर माई न बापु ॥ आपेण आपु ॥

अंत-भलीयो होई तो भल बुधि आवं ॥ बुरीयो बुरी कमावं ॥ ११७ ॥ ईति श्री सबद वाणी भाभजी की सपूरण समापता ॥ लिषत पुर मधे माथरी जाभजी की लीपते साध श्री ॥ १०८ ॥ वलुजी का सीष कनीरामजी ॥ श्री विसनजी ॥ समत ॥ १८८६ ॥ रा मिती श्री असाढ सुघ ॥ १४ ॥ वार बुधवार श्री विस्न ।

२१५ साखी, संख्या-५२ । विभिन्न विष्णोई कवियो द्वारा रचित । अपूर्ण, खंडित । देशी कागज । प्राप्त पत्र संख्या-३५ । (कुल ४१ पत्रो म से संख्या १, २, ३, ४, ६, और २८ अप्राप्य) । आकार-६×४ इंच । हाशिया-दाएं, बाएं-पौन इंच । पंक्ति-प्रतिपृष्ठ-६ । अक्षर-प्रतिपंक्ति-३०-३२ । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत संवत १८०० के आसपास लिपिबद्ध । लिपि-प्राय पाठ्य । प्राप्तिस्थान-महंत श्री राम-नारायणजी, रामडावास ।

आदि-सुरवांणी २ माया मोह निवारी

अजप्यो जाप जपे मन मेरा करि उनमन सु धारी

गरज गिगन इधक सुर सुणीं ये उपज अनहद बाणी

जिहिं डोरी सिध साध बिलंब्या सा जीवडा सत्य जाणी ॥ ३ ॥ (-केसोजी)

अंत-कहै रायचंद हरि नाव लीज अति चित रहीजीय

जीवडा कारण विसन मिलीयो मुध्य धीरज कीजीयै ॥ ४ ॥ ५२ ॥

२१६ जांभजी र भक्तां री भक्तमाल, छन्द संख्या–२४ (२५ वां त्रुटित)। अपूर्ण। देशी कागज। पत्र-संख्या-२। आकार-६×४ इंच। हाशिया-दाएँ, बाएँ-एक इंच। पंक्ति-प्रतिपृष्ठ-१०। अक्षर प्रतिपंक्ति २६-२८। लिपि-पाठ्य। रचयिता, लिपिकार एवं काल-अज्ञात अनुमानतः संवत् १९०० के लगभग लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान महन्त श्री रामनारायणजी, रामडावास।

आदि–श्री विष्णु प्रमात्मने नमः ॥ अथ श्री जाभजी रै भक्ता री भक्तमाल लीखते ॥
दोहा–विष्णु को अवतार है ॥ श्री जांभेस्वरराय ॥
सिव ब्रह्मा ईद्रादि देव ॥ निस दिन ध्यांन धराय ॥ १ ॥
अन्त–पचायण जसा रायचंद ॥ जिन ध्यायो विष्णु गोविंद ॥
हीरानन्द मिठुजी जोय ॥ ध्यायो विसन जमे गु ॥

२१७ सवए, केसोजी कृत–७ तथा किसोर कृत–१। मशीन के बने दो पत्र। आकार-६.५×४ इंच। हाशिया-दाएँ, बाएँ-१ इंच। पंक्ति-प्रतिपृष्ठ-७। अक्षर-प्रतिपंक्ति-३०-३५। लिपि-सुपाठ्य। अज्ञात लिपिकार द्वारा संवत् १९५० के लगभग लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-महन्त श्री रामनारायणजी, रामडावास।

आदि–उँ श्रीगणेशायनम आदि अनादि जुगादि को जोगी लोहट घर अवतार लीयो है
धन हो धन भाग बडो जिण हांसल कों हरिमात कह्यो है–
अन्त–धरणि उर जध पाव न धरहू वलहू २ इन पावन कु ॥ ८ ॥ इति श्री केसो दास कृत छंद सम्माप्तम्

२१८ तारक मंत्र तथा विष्णु मंत्र। देशी पत्र–१। आकार–८.७५×४.२५ इंच। हाशिया-दाएँ, बाएँ–सवा इंच। कुल ८ पंक्तियाँ। अक्षर–प्रतिपंक्ति–२५-२६। लिपि-पाठ्य। अज्ञात लिपिकार द्वारा अनुमानतः संवत् १९०० के लगभग लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान–महन्त श्री रामनारायणजी, रामडावास।

आदि–श्री विसनु जी उ सबद गरु सुरत चेला पाच तत मै रहु अकेला
सहज जोगी सुन मा वास पाच तत मा लीया प्रकास
अन्त–विष्णु मंत्र प्राण अधरि जो जप सो उतर पार
उँ विष्णु आद विष्णु तत रुपी तारक विष्णु ॥ २ ॥

२१९, साखी, जन हरजी कृत। देशी पत्र–१। आकार–९.२५×४ इंच। हाशिया–दाएँ, बाएँ–एक इंच। कुल (११+६) १७ पंक्तियाँ। अक्षर–प्रतिपंक्ति–३१–३३। लिपि–पाठ्य। अज्ञात लिपिकार द्वारा अनुमानतः संवत् १८५० के लगभग लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान–महन्त श्री रामनारायणजी, रामडावास।

आदि–श्री वीष्णजी अथ साषी लीषते–म्हो वीसोवा वीस साचो गुर सभलायले
कान कवर नदलाल कीरपा कर आय भव रे
अन्त–वीसन भजो वीसनोइयो धरो सीभु ध्यान
साच सील सचोल चालो मानो हक हलाल
जीन हरजी की वीनती कीया गुर नीपट नीहाल पाप करता पापीया ५

२२० सबदवाणी । सबद सख्या–११७ । पद्य प्रसग समेत । जीर्ण, खण्डित । अपूर्ण । अनेकाट्टत पतले देशी कागज । पत्र सख्या–५४ । प्रथम पत्र नहा है । आकार–९× ४ इच । हाशिया–दाएँ, बाएँ–साधारणत पौन इच । पक्ति-प्रतिपृष्ठ–९ । अक्षर-प्रतिपक्ति–३४–३६ । लिपि–सुपाठय । प्रीतम द्वारा सवत १८७५ म लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान–महत श्री रामनारायणजी, रामडावास ।

आदि–सन चिरत विन कार्च करव रह्यो न रहिसी पाणीं १

दोहा–उथण का हावत बूझीयो देवजी किसू आचार

पेट पूठि दीस नहीं ताका क्हो विचार १ जो बूझयो सोई कह्यो

म ध्य–मोर छाया न माया लोही नु मासौं रगतो न धातो मोरे माई न बापो–

अन्त–ज्यू ज्यू लाज दुनी की लाज त्यू त्यू दा यो दावे

भलीयो होय तो भल बुध्य आव बुरियो बुरी कमाव ११७ इति श्री सिधात वाणी सतगुर सपूर्ण १ स० १८७५ लि० प्रीतम

२२१ साखी खडाणै की, केसोजी कृत । अपूर्ण, २७ छन्दा म से १६ छन्द । देशी पत्र–१ । आकार–२१ ५×४ २५ इच । हाशिया–नहीं है । कुल ४४ पक्तिया । अक्षर-प्रतिपक्ति–११–१८ । अज्ञात लिपिकार द्वारा अनुमानत सवत १९०० के आसपास लिपिबद्ध । लिपि–पाठ्य । प्राप्तिस्थान–महत श्री रामनारायणजी, रामडावास ।

आदि–साषी पडाण की १ मेलो वर मोटा घणी गीण तेतीसु ग्यान

दरसण दीज देवजी बीसन बीसोहा भान १

अन्त–हापु अर नापु नीरखो कसवा कीमन सहाय

चलण कियो चिलत पुहता सुरगि पुलाय १६ हरीजन हरी बीन ।

२२२ साखी, सख्या–२ । केसोजी तथा अज्ञात रचित । देशी पत्र-सख्या–२ । आकार–७ ७५×४ इच । हाशिया–दाएँ, बाएँ–नगण्य । पक्ति-प्रतिपृष्ठ–१२,९ । अक्षर-प्रतिपक्ति–२४–२६, २७–३२ । लिपि–पाठय । अज्ञात लिपिकार द्वारा अनुमानत सवत १८५० के लगभग लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान–महत श्री रामनारायणजी, रामडावास ।

आदि–सिवरो २ सिरजण हार । कलि जुगि कायम राजा आवीयो ।

प्रमेसर प्रगट ससार । भागि परापति भगता पावीयो । (–केसोजी)

अन्त–उपगार मारा विचार रे जीव जाण मन क्यों वीसर

अमर भगता भेद लाभ सेवा सतगुर की कर ४ (–अज्ञात)

२२३ नवण । देशी पत्र–१ । आकार–८ ५×४ २५ इच । हाशिया–दाएँ, बाएँ–पौन इच । कुल (७+६) १३ पक्तियाँ । अक्षर-प्रतिपक्ति–२१–२३ । लिपि–पाठय । अज्ञात लिपिकार द्वारा अनुमानत सवत १९०० के आसपास लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान–महत श्री रामनारायणजी, रामडावास ।

आदि–श्री विष्णुजी उँ विष्ण २ तु भण रे प्राणी साघे अवते ऊपरण

अन्त-विष्णु हीं मन विष्णु भणीयों तेतीस कोड़ पार पोहु ता शाच सतगुर मत्र कहीयों
ईती मुण सपुराम् ।

२२४ साधा री वसावली। खण्डित। देशी पत्र-२। आकार-९×४ इन्च। हाशिया-दाएँ, बाएँ-१ इन्च। पंक्ति-प्रतिपृष्ठ-१३। अक्षर-प्रतिपंक्ति ३२-३५। अज्ञात लिपिकार द्वारा संवत १९५० के आसपास लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-महन्त श्री रामनारायणजी, रामड़ावास।

आदि-श्री गणेशायनम अथ साधारी वशावली लिख्यत

जभ गुरु के शिष्य अनेक कहता लहु न पार।

क भगवा वस्त्र रखिता काले सेती पार १

अन्त-मानजी लू वड का चेला वलिजी गगारामजी थडहरीया जीवणजी माधोजी

४ वलिजी का चेला सामुजी सुखोजी हरनाथजी जीयोजी ४

२२५ शब्द वाणी श्री जाभजी री। सबद सख्या-१२०। पद्य प्रसग समेत। पुस्तक। खण्डित। देशी कागज। पत्र सख्या-७४। आकार १०.५×५.५ इन्च। हाशिया-दाएँ, बाएँ-एक इन्च। पंक्ति-प्रतिपृष्ठ-११। अक्षर-प्रतिपंक्ति २३-२६। लिपि-सुन्दर एव सुपाठ्य। साधु गोविंदरामजी द्वारा सवत् १६३३ म लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-महन्त श्री रामनारायणजी, रामडावास।

आदि-॥ श्री गणेशायनम अथ शब्दा का प्रसग

दोहा-हासा लोहट नै कहै सुणो वात चित लाय।

घनाक्षरी-नागोर मे बांभण है वात सब अ स कहै ईश्वरी की सेव गहै ताहि ल्याऊँ

जाइ क। पुवार यही सुनाई बात मन मांहि भाई सहर में कहो जाई बोमत

हो सुनाई क।

अन्त-ज्यों ज्यों लाज दुनी की लाज त्यों त्यों दाव्यो दाव

भलीयो होय तो भल बुद्धि आव बुरीयो बुरी कमाव १२० इति श्री ग-द वाणी श्रा जाभजी की सपूण प्रसगा सहत लिपित समत १६३३ तेनीमा रा वष मिती असाढ व-द ८ वहस्पतिवार लिपिकृत साध श्री १०८ महत रतनदासजी तस्य शिष्य साध गोविन्दराम लिपतु धाम जाभोलाव मध्ये लिषावतु साध मोनरामजी रा चेला साध गगादास शुभमस्तु कल्याणमस्तु।

२२६ गुटका। फोलिया सख्या-२६१। मशीन के बने कागज। आकार-६×३.७५ इन्च। हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इन्च। पंक्ति-प्रतिपृष्ठ-६। अक्षर-प्रतिपंक्ति-१२-१४। साधु नसिंहदास द्वारा सवत १६३७ म लिपिबद्ध। लिपि-स्वच्छ एव सुपाठ्य। प्राप्ति स्थान-महन्त श्री रामनारायणजी, रामडावास। इसमे ये रचनाएँ हैं —(क) अमावस री कथा, मयाराम रचित। (ख) सबदवाणी श्री जांभजी की। सबद सख्या-१२०। बिना प्रसग। भलीयो हाय ता भल बुधि आव ॥ बुरिया बुरी कमाव ॥ १२० ॥ (ग) विचार माल (रचयिता-अज्ञात, सवत् १७२६ म रचित)। (घ) विष्णु सहस्र नाम एव शाप मोचन मत्र (सस्कृत)।

आदि-उँ श्री गणेशायनम ॥ अमावस री कथा लिषते ॥ कुंडलीया

प्रथम बदू गुरु देव कों । दुतिये बदू सव साध ।

विष्णु बधु पुन्य तीसरे । जात मिट जु व्याध ॥ १ ॥

अन्त-इति श्री गग सहिताया श्री विष्णो सहस्र नाम पाप मोचन विमुक्ति विधि सम्पूर्णम । सवत ॥ १६३७ मिति कातिक सुदि ॥ २ ॥ वार वस्पत सु भमस्तु ॥ श्री गुरुवेनम श्री ॥

२२७ पोथी । फोलियो सख्या-२०४ । देशी कागज । अपूर्ण । जीर्ण, खडित । आकार-६ ५×८ ७५ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-आधे से पौन इंच तक । अक्षर बडे एव छोटे होने से, पक्ति-प्रतिपृष्ठ-२४ से ३३ । अक्षर-प्रतिपक्ति-१६ से ३४ तक । श्री परमानदजी वणिहाल द्वारा सवत १८३३-१८३८ म लिपिबद्ध । लिपि-साधारणत पाठ्य । प्राप्तिस्थान-साधु श्री हणूतरामजी महाराज, रेडकली । इसमे ये रचनाएँ हैं — (क) **ध्रव गुणि सापि**, सख्या-६५५ । परमानदजी रचित । "श्री ६५५ । १०२ ॥ एती एक सौ दोय प्रसग सपुरण समापीत समत १८३८ ।" (ख) **चत्र सीरलोक भागोत । दुतीय सक्घे चत्र श्लोकी टीका**-मापि-६ । (ग) सपत **श्लोकी गीता टीका**-दोहा-८ । (घ) **राग नाम**-२ कवित्त और १३ दोहे । 'समत १८३८।'(ङ) **नाव महातम नहचौ दीज पुत्री वाषान**, अज्ञात कृत । (६ अध्याय), कुल छन्द-चौपई-दोहा-२६८ । (च) **श्री महादेव पारबती सवादे सरोदौ**-अज्ञात कृत । दोहा-चौपई-१६६ । (छ) **ग्रन्थ काफर बोध**-गोरखनाथ कृत, छद स०-३० । (ज) **मारकुडे पुराण**-३० अध्याया मे सम्पूर्ण, भाषानुवादकता-**दमोदर** । छन्द, चौपई, दोहा-सख्या-१३०६ । सुमरण भजन कर कोउ । जोग ध्यान चित लाय । सो फल एहु कथा सुन्य । दमोदर जम गाय ॥ ४२ ॥ १३०६ ॥ मारकुडे पुराण सपुरण समापिता लीषतु परमाणद वचनारथी कान्हा पोथी सुपजी की मा सु लीख्यौ गाव रासीसर मधे समत १८३३ भाद्रवा सुद ५ । (झ) **सबद श्री वायक** । गद्य प्रसग समेत । सबद सख्या-१२४ । (पुष्पिका के पश्चात ३ सबद और है जिनमे—'विसन विसन तू भण रे प्राणी, साधा भगता उधरणो मत्र भी सम्मिलित है) ।

आदि-श्री विसनजी सत्य सही लिषतु सबद श्री वायक आदे सबद वाणी वाभण न परचो दान्ही त समै को सबद श्री वायक **गुर चीन्हो गुर चिन्ह पिरोहित गुर मुषि धरम वषाणी ॥**

अन्त-भाभोजी कह् माड की पहेली जाणौ भाभजी कह्या जाण्यस्यो भाभोजी कह् ॥

माडा सगते धरम कराइय ॥ जा धरमा उपरि भाव ।

दोन्यों पथ वताइय ॥ मन मान जोह जाह १२४ ए पहेली उपरे वील्हजी ग्यानचरी कही सबद सपुरण ॥

(ञ) **पजनांमु** । (आरबी पारसी मा पजनामु हीदगी मा पजनमो) । (ट) **मत्र** । (१) **विसन मत्र** । (२) **वीरज मत्र** । (३) **तारण मत्र** । (४) **सुजीवण मत्र** । (५) **सोष**

मंत्र। (६) गुर मंत्र। (७) अघोर मंत्र। (८) गायत्री–२५ (संस्कृत)। प्रमग य गायत्री हैं —ब्रह्म, राम, विसन, वरा, रुद्र, लीछमी, नृस्यघ, लदमण, प्रमन, गोपाल, प्रसराम, तुलछी, हनुमान, गुरड, अगस्य, प्रथी, जल, प्रकाम, सुरेज, चन्द, गुर, पुवन, हंस, गारी, सगत। (ड) सुपदेव लोला, अज्ञात कृत (अपूर्ण)। छन्द–दोहा, चौपई, डिंगलगीत–१३६। यहां म १०–११ पत्र अप्राप्य हैं। (ढ) पदम पुराण सतोत्र टीका सजुगत्य विसन सहस्र नाम (पदम पुराणे उत्तरखंडे उमा महेश्र सवादे। श्री विष्ण नामे सतोत्र)। २५२ श्लोकों पर गद्य टीका। (ण)–(१) हरिनाम माला (संस्कृत) १९ छन्द। (२) सत्यनाम सतोत्र (संस्कृत)–१७ छंद। (३) पचीस नाम। (४) विसन पिंजर। (५) गोत्राचार। (६) गीत–वासद्र नाम, ४ दोहले। (७) वसद नाम। (८) आद्य वसावली। (९) विवरत्य। (१०) कलस। (११) पाहल। (१२) बालक री मंत्र। (१३) ब्याह। पीया का सुरत्य। (१४) चौजुगो। (१५) सुरत्य। (१६) सदसी मुसलो भाप्या, दोहा–चौपई–२३। (१७) बार फरज नीवाज के। (त) असतोतर, बद्रीनाथ का–६ छन्द। (थ) हरजस वोल्हजी का। सख्या १६। (द) हरिजस सुरजनजी का। सख्या ४८। (ध) छुटक–हरजस स० ११। ऊदोजी, वील्हाजी, काहोजी, तेजोजी, आसानन्द, दुरगदास, और पदम कृत। (न) हरिजस केसजी का–सख्या १२। (प) हरिजस आलम का–स० १२। (फ) हरिजस छुटक–केसोजी, माल नजी, मीठुदास, देवीजी, और ऊदोजी कृत। (ब) हरिजस परमाणद का। सख्या–३९। (भ) हरिजस गोरपनाथजी का। स० ८। (म) फुटकर हरजस। मीठुदास, अज्ञात, मुकनदास, तानसेन, भगाल, कान्होजी, भगवान कृत। (य) रव्या। (र) हरजस वखनु, परमानदन्दास, रामदास अज्ञात, तथा किसनानद कृत। (ल) साखी (जाम्भाणी) स० २। (व) विसन असतोतर, २२ छन्द। (श) अथर्वण वेदे नारायण पनिषद (संस्कृत)।

आदि–श्री विसन जी सत्य सही ॥ ल्यषतु साधि ॥ यनमस्कार परसग ॥

पहली नुवण नीरजणों ॥ सब का सीरजण हार ॥
सीरज्यां कु विसर नही ॥ दीयण खुगो दातार ॥ १ ॥
जाकु सोवरयां अनत गुण ॥ पार न पावे कोय ।
आसा सवही पूरव ॥ अलप अजुनी सोय ॥ २ ॥

(परमानन्दजी की हस्तलिपि के अंतिम २ छन्द, (ब) स) —

सेस सुर नर जाकी सरण्य । सीव ब्रभा ध्यावत सोय ।
तीन लोक तारण तरण ॥ अवर न दुजो कोय ॥ ४ ॥ (३)
दुत भाव अक्रम भ्रम ॥ हरयो भेय अममरा ॥
भ्रम कम वधीया ॥ हींदु मसेलमान ॥ ५ ॥ (४) ३४ ॥ असतोतर सपूरण ॥

अन्त–क्रिये दस भागेण यट भागेण च वति ग्रहे

चोपारेसु षोड भागेण करता कम्म न लिपते ॥ १ ॥
जला रषेत स्थला रषतू रषेतू सीयल वषना

मूप हस्ते न दातव्य एव वदति पुस्तक ॥ २ ॥

२२८ बहीनुमा पुस्तिका। खण्डित, दीमक खाई हुई। अपेक्षाकृत पतला देशी कागज। ९ पन्ने। आकार–२१×४ २५ इन्च। हाशिया–नगण्य। पक्ति–प्रतिपृष्ठ–३३ से ४३। अक्षर–प्रतिपक्ति–११ से १७। सवत १६०२–०३ म बिहारीदास द्वारा लिपिबद्ध। लिपि–पाठ्य। प्राप्तिस्थान–साधु श्री हणू तरामजी, रुडकली। इसमे ये रचनाएँ हैं —

(क) कवित्त–१, बिहारीदास कृत। (ख) गुरु नानक जप (अपूर्ण)। (ग)–(१) प्रात कालीन पूजा–पाठ विधि तथा आरती। (२) कलस थापण मत्र, पूजा विधि (अपूर्ण)। (३) पाहल मत्र। "इति श्री पाहलि करने का मत्र सपूरन मिति फागुन सुदी २, १९०२।"

(४) बालक के कान फूकवे को मत्र। (५) तिलक मत्र। (६) पेसव करने का मत्र। (७) दिसा जवे को मत्र। (८) दतौन को मत्र। (९) असनान मत्र। (१०) भस्म धारन करवे को मत्र। (११) सध्या वदन। (१२) नवण मत्र।

(घ) सझया आरती, सख्या–५। (ङ) आरती प्रथम मगलाचार, सख्या–४। (च) विभिन्न मत्र–(१) भोजन पायवे के सम को मत्र। (२) भोजन कर चुके पर मत्र पढे। (३) अनत बाधिवे को मत्र (सस्कृत)। (४) जुर को मत्र (सस्कृत)। (छ) अवतार नाम। (ज) नमस्कार, (सस्कृत)। (झ) शिवपावती सवाद– सख्याण। (ञ) चौजगो। (ट) बिहारीदास कृत ५ दोहे, जभ सरोवर अस्तुति छन्द–१०, जभाष्टक, छन्द–१०। इति श्री सतगुर भावाजू की अस्तुति सपूरण स० १९०३ मु० कालपी। (ठ) आरती–२, मोतीराम कृत। (ड) दोहे–५, बिहारीदास कृत।

आदि–कवित–दीनन के त्राता बुध्य दाता सिध्य दाता जाहि ध्यावत विधाता सिव सकट निवारी है। नाम के लिये त सकल सक्ट पराहि जाहि ध्यान के धरें ते करत बुध उजियारी है।

अत– वार वार वर मागऊ सरन राखिय नाथ।
दास बिहारी की सुनो तुव चरनन पर माथ ॥ ५ ॥

२२९ मशीन के बने कागज। पत्र सख्या–७। जीर्ण, खडित। आकार–८ ५×४ २५ इन्च। हाशिया–नगण्य। पक्ति–प्रतिपृष्ठ–११। अक्षर–प्रतिपक्ति २२–२३। लिपिकार– सम्भवत गोविन्दरामजी। अनुमानत सवत १९१०–१२ के आसपास लिपिबद्ध। लिपि–सुपाठ्य। प्राप्तिस्थान–साधु श्री हणू तरामजी, रुडकली। इसमे ये रचनाएँ हैं —(क) साखी खेजडली री–गोकलजी कृत। (ख) श्री गोविन्दरामजी कृत–(१) जाम्भोलाव महात्म्य छन्द–६ तथा (२) साखी, ६ छ दो की।

आदि–॥श्री विसनु जी लीपते साषी षेजडली री दो०
पण पालण पोसणा गजण रया रायण हार ॥
जोयाणं जालम तप्यो अजमलजी अवतार १

अन्त–सुघ जीव सोध्या सही दोनो कवल नीभाय

गोमदरांम यहै जभ कु   सोवरो होत घोत लाय   भरम न भुलो भाईयो ६

२३० पोथी। मशीन के बने पन्नो की। फोलियो ४१। आकार ५ ५X४ ५ इच। हाशिया-आधे से पौन इच। पक्ति-प्रतिपृष्ठ-११। अक्षर प्रतिपक्ति १५-१६। लिपिकार-अज्ञात। अनुमानत सवत १६५० के आसपास लिपिबद्ध। लिपि-सुपाठ्य। प्राप्ति स्थान साधु श्री हणू तरामजी, रडक्ली। इसम ये रचनाएँ हैं —(क) कवित जांभजी के जन्म समय का सख्या-८। केसोजी, किशोर और अज्ञात कृत। (ख) निज धम उन्नीस का कवित्त-(१) ऊदोजी कृत-५ कवित्त, (२) तीस दिन सूतक पाच रतवती न्यारा। (ग) रामसरण के कवित्त-स० २। (घ) जमे सबधी कवित्त-१। (ङ) फुटकर छन्द। हरचन्द, ऊदोजी, केसौदास, गद्द, गिरधर कविराय, रामचरण, तत्ववेता तथा अज्ञात कविया के। (छन्द सख्या १७ से ५३)। (च) अठार पुराणों की सख्या, निपट निरजन, तत्ववेता, बालकराम, जगन्नाथ, रज्जब, सुदर, दत्तराम, सिह, मीर, भगवान, वील्होजी, खेमदास तथा अज्ञात कृत-छप्पय-कुडलिया आदि, छन्द सख्या-५४ से ११३। (छ) श्लोक कवि कालदासजी के-५। (ज) फुटकर छन्द-ऊदोजी, तत्ववेता, सहजप्रताप तथा अज्ञात कृत। (छन्द-११४-१२८ और अंतिम दो दोहे)।

आदि-श्री जभगुर गुरवे नम कवित्त श्री जाभजी के जन्म सम का ॥

आदि अनादि जुगादि को जोगी लोहट घर अवतार लीयो है।

धनहों धन भाग बडो जिन हासल कु हर मात कह्यो है।

अन्त-दोहा-तृष्णा चितवन दोष बुध नर सग तृय मन दोष

कायक वायक मानसो दसू दोष तज मोष २

२३१ गुटका। अपूर्ण। दीमक खाया हुआ। फोलियो-२९। देशी कागज। आकार-१ २५X५ ७५ इच। हाशिया-दाएँ, बाएँ-आधे से पौन इच। विभिन्न अज्ञात लिपिकारो द्वारा लिपिबद्ध होने से, पक्ति-प्रतिपृष्ठ ९, ११, १७। अक्षर-प्रतिपक्ति-क्रमश १०, १५, तथा २५। अनुमानत सवत १८०० के लगभग लिपिबद्ध। लिपि-पाठ्य। प्राप्तिस्थान-साधु श्री हणू तरामजी, रडक्ली। इसम ये रचनाएँ हैं-(क) सबदवाणी (अपूर्ण), सबद सख्या-३। (ख) सस्कृत श्लोक, गद्य टीका सहित। (ग) स्त्री-पुरुष तथा पशु आदि के लक्षण (सस्कृत श्लोक पद्य टीका सहित)।

आदि-तिहि गग होलोलेहै जाय सतगुर धीहै सहेले न्हाय

निरमल पांणी निरमल घाट निरमल धोबी बध्याहा पाट

अन्त-पर नारी सुरति कीय पर दोय जिय जानि जहू

जो मन चचल वसि नही तोउ इनस केलि न मनीये ॥ ७८ ॥ नारी दोषण ॥ इह ॥ निलज   ~ ॥

२३२ गुटका। देशी कागज। अपूर्ण। जीर्ण और खडित। बीच के कई पृष्ठ रिक्त हैं। आकार-६X४ ५ इच। हाशिया-दाएँ, बाएँ-साधारणत पौन इच। पक्ति-प्रतिपृष्ठ-८-१०। अक्षर-प्रतिपक्ति-१० से १५। ऊनोजी महीम तथा अन्य अनेक

लिपिकारा द्वारा लिपिबद्ध । लिपिकाल-सवत १८३६ से १८३८ (तथा इसके पश्चात् भी) । लिपि-कही कही पाठ्य, अधिकतर भद्दी और दुष्पाठ्य । प्राप्तिस्थान-साधु श्री हणू तरामजी, रुडकली । इसमें ये रचनाएँ है-(क) प्रसण सीणगार (पिसण सिंघार), सेवादास कृत (अपूर्ण) ७० छन्द । (ख) सिर्दा-घात पाटी । (ग) लघूचर्णा-यके राजनित सास्त्रे (सस्कृत) । (घ) एकावलि री पाटि । (ड) सबद-कबीर का । (च) सीवरात्तरी कथा-गद्य (अपूर्ण) । (छ) ऐकादशी री कथा-गद्य (अपूर्ण) । (ज) हरिरस गुण, बारहट ईसरदास कृत । (अपूर्ण) "स० १८३८ वर्षे शाके प्रवत्तमाने : मासे जैष्ट व्द १० बुधवारे विनोई नेसा अडीग तत पुत्र उदा लिपा कृत विस० ॥ वगनो पुन सावत् पुवार पठनार्थे ॥ ग्राम रुडक्ली सुभ भवेतु ॥" (झ) जोगणी चक्र, गग के फुटकर कवित्त आदि । (ञ) साषी-जाम्भाणी । (ट) कबीर, मीरा, वषतावर तथा अज्ञात रचित भजन । (ठ) दसु अवतार । (ड) राजा भोज डोकरी री कथा (गद्य) । (ढ) गौदा विगनान । "स० १८३६ रा वर्षे वसाक सुद ९ ।" (ण) पावस रितरा दूहा । (त) चद्रायणा लालदासजी रा कह्या सख्या-७ । (थ) ऊदोजी अडींग की लूर । (अपूर्ण) । (द) मीरा के भजन, फुटकर सवए वाजिद के चद्रायणे आदि । (ध) वारापरी (सुदामा की) ।

आदि- ॥ द० ॥ अथ प्रसण सीणगार ग्रथ लीषते ॥

उनमन नेजा फहर । अनहद घुरे नीसाण
सहीत भोम्या उपर । चढीयो सबद दीवाण ॥ १ ॥

अन्त-लवादर गजवदन तु ॥ सीव सुत गवरी नद
तु+त प्रन हीरदे कर ताको हरो दुष दु द ॥
+भजन भगवान है सकट हरन गनेस ।
चौपती हरन श्री लछीमी माया देन महेस ॥ श्री रामजु ॥

२३३ पुस्तिका । मशीन के बने कागजो की । अनेक पृष्ठ रिक्त हैं । आकार-७ ५×५ २५ इन्च । हाशिया-नगण्य । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-१४-१६ । अक्षर-प्रतिपक्ति-१४-१७ । अज्ञात लिपिकार द्वारा अनुमानत सवत १९२५ के आसपास लिपिबद्ध । लिपि-भिन्न हाथो की लिखावट म, कही पाठ्य, कही दुष्पाठ्य । प्राप्तिस्थान-साधु श्री हणू तरामजी, रुडकली । इसम ये रचनाएँ हैं -(क) भाडली पुराण (गद्य म) । (ख) औषद । (ग) मन्त्र । (घ) साखी-सख्या-३ ।

आदि-श्री गणेशायनम अथ भाडली पुराणे लिष्यते प्रथम वर्षा रूप पुत्र हुनी जनम उतपत कहे काती महिन दिवाली सूय पछ उगत आथमैं तें श्राम रातडा होव निका आगला बरसनि बरषा रूप अरिम रित आवी कहिज

अन्त-मीनषा तो देई दुलब हु जीव पडो सगट भारीये ।
पाप परासीत मैट जभराज हीरद हर म धीसारीये ॥

२३४ पोथी । फोलियो सख्या-५१ । अपूर्ण, खण्डित । देशी कागज । आकार-१० २५× ६ ७५ इन्च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-डेढ इन्च । पक्ति-प्रतिपृष्ठ ११-१३ । अक्षर-

प्रतिपंक्ति-२४-२६। लिछमणदास गायणे द्वारा संवत १६३५ म लिपिबद्ध। लिपि-पाठ्य। अनेक पन्ने आपस म चिपक जाने से फट गए हैं, ऐस स्थल अपाठ्य हैं। प्राप्तिस्थान-महन्त श्री रणछोड़दासजी, आथूणी जागा, जाम्भा। इसम ये रचनाए हैं —

(क) कथा मेडत की, केसौजी कृत। छन्द संख्या-१६३। समत १९५ मीती प्रमाद वद २ ॥ वार अदीतवार क दिन कथा संपूरण कीनी ॥ नयीत गावण लीछमणराम बेटा श्री आमारामजी का ॥ पोथी लीपी गाव पडीयाल मधे। (ख) अहवार्णी (कथा) ऊेल्ह कृत। छन्द संख्या-६५५।

आदि-श्री गणेशायनमो। श्री जभस्वरायनम ॥ अथ कथा मेडत की लिष्त ॥ राग हुसा ॥

दोहा-पार ब्रह्म पहली नउ ॥ जिहि सिवर्‌या सुष थाय ॥
      जभ गुरु सिवरू सदा ॥ संकट कर सहाय ॥१॥

अन्त-कहो जोमा जोमण कुण जोमसो तो सुल कियो काल
      नोठर बाभण बाभणी प्रख्या तात अहमात
      अरजन कहै उचर नोठर   (-छन्द ६५५ वा)।

२३५ गोत्राचार आदि। अपूर्ण। देशी पत्र-२। जीर्ण। आकार-१०.२५×४.२५ इन्च। हाशिया-नाम मात्र को। लिपिकार-अज्ञात। संवत् १८०० के लगभग लिपिबद्ध। लिपि-पाठ्य। पंक्ति-प्रतिपृष्ठ-१२। अक्षर-प्रतिपंक्ति-४६-४८। प्राप्तिस्थान-महन्त श्री रणछोड़दासजी, आथूणी जागा, जाम्भा। इसमें रचनाएं हैं —(१) गोत्राचार (महादेव पार्वती संवाद)। (२) वसंदर के नाम। (३) आद वसावली। (४) कवत। (५) विवरस्य। (६) अस्तुति। (७) कलस (अपूर्ण)।

आदि-श्री विष्णुजी ॥ अथ गोत्राचार ॥ श्री महादेव उ० ॥ उँ जदु बास रुप्र। पुत्रयत्र। स्याम निघू। गुणे निघू आकास पुत्र

अन्त-पांचा कोडया के मुंधो। गुप हलाद कलस थाप्यौ ॥ वह कलस जस धम हव म इ ह कलस हुइयो। सुप सुवायन करी। दुष दुवायन पास टाली ।

२३६ साखी। संख्या-३, वील्होजी, केसौजी कृत। खंडित। देशी कागज। आकार-८.५×४.२५ इन्च। हाशिया-नाम मात्र का। पंक्ति-प्रतिपृष्ठ-१०। अक्षर-प्रतिपंक्ति-२६-३४। लिपिकार-अज्ञात। अनुमानतः संवत १८५० के आसपास लिपिबद्ध। लिपि-पाठ्य। प्राप्तिस्थान-महन्त श्री रणछोड़दासजी, आथूणी जागा, जाम्भा।

आदि-श्री विष्णु जा ॥ साषी लिषते ॥
      थावो सांभिलजस बागड़ देस जी यो पोर्मी पितबर आवियो
      कहि पूरबल सं प्रम न रैसो जी यो रांक रतन धन पावियो

अन्त पार गरांये देव थामो मिस सुर नर कामणी
      वह वैसो सुणो साधो मारी अरज सुणो मोटा धणीं ॥ ५ ॥

२३७ साखी ७ तथा कुण्डल छन्द-४। जन हरजी कृत। अपूर्ण, किनारा स खण्डित।

देशी कागज। पत्र सख्या-५। आकार-६×४ इंच। हाशिया-नगण्य। पक्ति-प्रति पृष्ठ-१२। अक्षर-प्रतिपक्ति-३३-३८। लिपिकार अज्ञात। अनुमानत सवत् १८५० के आसपास लिपिवद्ध। लिपि-सुपाठ्य। प्राप्तिस्थान-महन्त श्री रणछोड़दासजी, आथूणी जागा, जाम्भा।

आदि-श्री विष्णुजी सहाय लीषतु साषी जाभाणी ॥

रे मन गहला सारा पहला कुद र काग मचावै
बुरो कहै सब कोई तोकु तोही सरम न आवै

अन्त-गिण न ठोड़ कुठोड मन सू कदे न धोजियै
मन क बोहत मरोड जाय स्ती इ द आवसू ४ ॥
सतो मन को कहा परतीत ब्रह्म देव सू

२३८ साखी-१, हरजी कृत तथा २ श्लोक, १ दोहा। पत्र-१। खण्डित। आकार-६×४ इंच। हाशिया-नही है। कुल ४३ पक्तिया। अक्षर-प्रतिपंक्ति-१४-१९। सतोपदास द्वारा सवत १९४३ मे लिपिवद्ध। लिपि-पाठ्य। प्राप्तिस्थान-महन्त श्री रणछोडदासजी, आथूणी जागा, जाम्भा।

आदि- ॥ श्री ॥ श्री गणेशायनम उ

बावो सही विस्वा बीस साचौ गुरु सभरायलं
कान कवर नदलाल किरपा कर आयें मले २

अन्त-अर श्री हत्या भाग है गोहत्या मद जान
ब्रह्म हत्या तमाल है यह निश्च कर मान १

२३९ छप्पय-७ और प्रभ चितावणी, छन्द-१३३। ऊदोजी कृत। पत्र सख्या-१२। देशी कागज। अत्यन्त जीर्ण, खण्डित। आकार ६×४ इन्च। हाशिया दाएँ, बाएँ आधे से पौन इन्च। पंक्ति-प्रतिपृष्ठ ६ १०। अक्षर-प्रतिपक्ति-२५ ३०। लिपिकार-अज्ञात। अनुमानत सवत १८०० के आसपास लिपिवद्ध। लिपि पाठ्य। प्राप्तिस्थान-महन्त श्री रणछोडदासजी, आथूणी जागा, जाम्भा।

आदि-श्री गणेशायनम श्री विसनजी सत्य सही ॥

नमो नमो गुर जभ नमो गुर ज्ञान दिवाकर।
नमो गुरू उपदेस नमो गुर देव विद्याधर।
नमो नमो सिध साध नमो रिप राज मुनिवर।
नमो नमो पित मात नमो अब देव पुरद्र।
पाच तत ब्रह्म मडल नमो नमो अबातमा।
कर जोडे उधव कहं नमो विष्णु अमातमा ॥ १।

अन्त-हर कृपा सु मनय तन गुर कृपा सु भक्ति।
उधव हरि कु सिवरलो बोहोड न अ सो जुगत।
हर सेवा गुर बदगी कर सतन सु भाव।

ऊधव वोहुरे न पायवो अ सो उतम गाव ॥ इति श्री चितावणी सपूर्ण ॥

२४० सात वार, आठ याम, बारह राशि और कलिजुग तथा जाभजी के अवतार लिये की विगति। देशी पत्र-१। खण्डित। आकार-६×३ इन्च। हाशिया-नाम मात्र को। पंक्ति-प्रतिपृष्ठ-९। अक्षर प्रति पंक्ति-२७ ३०। लिपि-सुपाठ्य। सवत १८३५ में लिपिबद्ध। लिपिकार-अज्ञात। प्राप्तिस्थान-महन्त श्री रणछोड़दासजी, आयूणी जागा, जाम्भा।

आदि-श्री विसनजी सत्य ॥ अथ लिखते सात वार ॥ आदीतवार ॥ १ सोमवार २ मंगलवार ३

अन्त-अथ वील्हैजी तो ववत मैं चोरासी वरस देह रापी कही जाभजी की ॥ अरु परमाणदजी लेपो करि पच्यासी वरस कही ॥ इति सवत १८३५ ॥

२४१ कथा अहमनी, ढेरह कृत। छन्द सख्या-६९५। पत्र सख्या-३९। खण्डित। देशी कागज। आकार-९×४.२५ इच। हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इच। पंक्ति-प्रतिपृष्ठ १०। अक्षर-प्रतिपंक्ति ३०-३२। लिपि-पाठ्य। साधु कनीरामजी द्वारा पुर मे सवत् १८८१ म लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-महन्त श्री रणछोड़दासजी महाराज, आयूणी जागा, जाभा।

आदि-श्री विष्णुजी सत सही ॥ लीपते अदावणी ॥

पणउ गुणौउ गु णा गहीर ॥ सदीरी पीजर सरीर ॥ १

सुस घुड फरस जो कर ॥ को को दोप वीयायक हर ॥ १ ॥

विघन हर लाबोदर देव ॥ गिर सुक तो सायर सेव ॥

पहलु नाव नारायण तणो ॥ नास पाप भ्रम होय घणो ॥ २ ॥

अन्त-कथा सवारी जुगत सु ॥ भारथ री साषा परी ॥

गीता की सब रीत ॥ कथा सु ण जे अमनो ॥ नर नारी सब लोग ॥

जे नर तो सुष भोगव ॥ जाह वीसन कै लोक ॥ ६९५ ॥ क्था सपुरण समापीता ॥ समत ॥ १८८१ अं पे मीती चत सुध १२ वार सोमवार ॥ लीपतु साध कनीरामजी ॥ सीप वलुजी कौ ॥ उदयार चीत सु लीपाय छ अहमनी सपुरण ॥ समापीता ॥ गाव पुर मधे ॥ सुथान वास परगट ॥ साथरी जाभजी की सुचीत ॥ श्री वीसनजी छत छ जी।

२४२ विभिन्न मत्र। पत्र सख्या-३। खडित। देशी कागज। आकार-९×४ इन्च। हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इन्च। पंक्ति-प्रतिपृष्ठ १०। अक्षर प्रतिपंक्ति ३२ ३४। लिपि पाठ्य। लिपिकार-अज्ञात। अनुमानत सवत् १८५० के लगभग लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-महन्त श्री रणछोड़दासजी, आयूणी जागा, जाम्भा। इसम ये मत्र हैं —(क) कलस। (ख) पाहल। (ग) बालक को मत्र। (घ) स्तुति।

आदि-श्री विसनजी सत्य सही ॥ उँ अकल रूप मनसा उपराजी ॥

ता मां पांच तत होय राजी ॥

अन्त-आइ बलाइ दूर करी ॥ दूर वालीयो दूर चोनीयो ॥ तिसक चक्र मारो ॥

त्रिलोकी नाथ भलो है स करो ॥ इति स्तुति सपूरण । ७ ।

२४३ पहलाद चरित्र, केसोजी कृत । छद सख्या-५९६ । पत्र सख्या-६७ । खडित । अप क्षाकृत मोटे देशी बादामी रग के कागज । आकार-८ २५×४ इन्च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-आधे से पौन इन्च । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-६ । अक्षर-प्रति पक्ति साधारणत २८-३२ । लिपि-पाठय । प्रभुदास दादूपथी द्वारा अनुमानत सवत १९०० के आसपास लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-महन्त श्री रणछोडदासजी, आयूणी जागा, जाम्भा ।

आदि-श्री विष्णूजी सत्य ग्रथ पहलाद चरित्र लिप्यते

नारायण पहली नउ सामी सर्व सुजाण

आदि भगति कहस्यौं कथा पहलाद चिरत वाण १

अन्त-दो० मो मत साह बींनवों बिसन तणा बाषाण

कर कथणी के + + + + + + यो सत सुजाण ९५

मैं दावण पकडयो दिन को सतगुर कर सहाइ

+ + + + + बारिहा अबक मोहि मिलाइ ५९६ इति श्री पहलाद चरित्र स + + + + + + त साद प्रभूदास दादू पथी ॥ वाच विचार ज्यानू नू ग मलाम ॥ श्री ॥

२४४ आदि वसावली । (आदि विष्णु से जाम्भोजी तक) । देशी पत्र-१ । खण्डित । आकार ६×४ इन्च । हाशिया-नाम मात्र को । कुल १२ पक्तियाँ । अक्षर-प्रतिपक्ति-२५ २७ । लिपि-पाठय । अज्ञात लिपिकार द्वारा सवत १८७८ मे लिपिवद्ध । प्राप्ति स्थान-महन्त श्री रणछोडदासजी, आयूणी जागा, जाम्भा ।

आदि-श्री विष्णुजी प्रथम आदि वसावली लिपत प्रथम आदि बिष्णु १ बिष्णु को पुत्र ब्रह्मा २

अन्त-सेतराम रो रोलो २६ रोल को लोहट २७ लोहट को श्री झाभोजी २८ सवत १८७८ मिती आसोज सुदी ३ ।

२४५ भ्रमचिरी, सुरजनजी कृत । छद सख्या ७८ । पत्र सख्या ४ । खण्डित । देशी कागज । आकार १० २५×४ २५ इन्च । हाशिया-दाएँ, वाएँ-लगभग पौन इन्च । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-११ । अक्षर-प्रतिपक्ति-४३ ४५ । लिपि-साधारणत पाठय । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत १८०० के आसपास लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-महन्त श्री रणछोडदासजी, आयूणी जागा, जाम्भा ।

आदि-श्री विष्णजी ॥ लिपत भ्रमचिरी ॥

दोहा-कहां कम जल कोयली ॥ कहां तिसनां कहा तीर ।

रे मन कित पित मान तू सपत बध्यो सरीर ॥ १ ॥

अन्त-दो०-चोरी पकडी चोहट । दूतो लागो दाव

मुक्ति विद्र के पूत न ॥ विदर न तिर पाव ॥ ७८ ॥

इति भ्रमचोरी सपूरण ॥

२४६ श्री विष्णुचिरत, ऊदोजी कृत । छन्द सख्या-११० । अपूर्ण । खडित । देशी कागज ।

प्राप्त पत्र सख्या–१० । ११ पत्रों मे से पहला अप्राप्य । आकार–९X४ इच । हाशिया-दाएँ, बाएँ–१ इच । पक्ति–प्रतिपृष्ठ–११ । अक्षर–प्रतिपक्ति–२०–२४। साधु रामदास द्वारा सवत् १८८१ म लिपिबद्ध । लिपि–पाठ्य । प्राप्तिस्थान–महन्त श्री रणछोडदासजी, आथूणी जागा, जाम्भा ।

आदि–तोय तारा अगन सुर चद सोई ॥ सब मै तेज विष्णु का होई । १२ ।
पुरष प्रकृत का सकल पसारा ॥ भक्त काज कीनों संसारा ।

अन्त–सोरठा–हरि अवतार अनत अनत चिरत अवगत तणा
गाव मुनी जन सत ॥ विमल जस भव जल तरण ॥ १० ॥ (११०)

इति श्री विष्णु चिरत सपूरण ॥ लिषतु साध रामदास श्री माधोदासजी रा सिष। समत १८८१ मिती पोह सुद १२ ॥

२४७ अवतार चीरत मामाजी का, वील्होजी कृत । छन्द सख्या–१४० । पत्र सख्या–११। खडित । अपेक्षाकृत मोटा देशी कागज । आकार–९X४ इच । हाशिया–दाएँ, बाएँ साधारणत पौन इच । पक्ति–प्रतिपृष्ठ–११ । अक्षर–प्रतिपक्ति २५–२७ । सदा रामजी द्वारा अनुमानत स० १८५० के लगभग लिपिबद्ध । लिपि–पाठ्य । प्राप्ति-स्थान–महन्त श्री रणछोडदासजी, आथूणी जागा, जाम्भा ।

आदि–श्री श्री विसनजी लिषतु अवतार चीरत मामाजी का–
दोहा–नवनि करु गुर आपन नऊ निरमल भाव
कर जोडे यदु चरन सीस नवावय १

अन्त–धनि दिहाडो रण धनि गुर परगट ससार
वाल्ह कहै जां ओलख्यो ति उतरिस पार १४० । कथा सपूरण समापत हैती श्री औतार का चीरत सपूरण भैऐत लीषतु विसनोई साध श्री पराजजी का चेला सदारामजी लिषतु पुसतक ।

२४८ तलाव की कथा, केसोजी कृत । रूपक सख्या–१२ । पत्र सख्या–४ । देशी कागज। जीर्ण, खडित । आकार–८.५X४ इन्च । हाशिया–नगण्य । पक्ति–प्रतिपृष्ठ–१०। अक्षर–प्रतिपक्ति–३१–३४ । लिपि–पाठ्य । लिपिकार–अज्ञात । अनुमानत सवत् १८०० के लगभग लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान–महन्त श्री रणछोडदासजी, आथूणी जागा, जाम्भा ।

आदि–श्री विष्णु । लिष्यते तलाव की जत ॥ राग सोठ ॥
पारब्रह्म पहलो नऊ जगमइण जगदीस
रूप चोरासी दे घणो तिण साम नवांउ सीस ।

अन्त–यह तीथ को गुण गायो केस गुण गु थि सुणायो
रिस म तर दूजि न आंणो जत मांहि कह्यो स्त जांणो १२ ।
तलाव की कथा सपूरण ॥ य

२४९ पत्र सख्या–८ । खडित । देशी कागज । आकार–९.७५X४ इच । हाशिया–नाम मात्र का । पक्ति–प्रतिपृष्ठ १० । अक्षर–प्रतिपक्ति ४०, ४२ । लिपि–पाठ्य । लिपि-

कार अज्ञात । अनुमानतः संवत् १८५० के लगभग लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-महन्त श्री रणछोड़दासजी, आयूणी जागा, जाम्भा । इसमें ये रचनाएँ हैं –(क) औतार की विगत्य की अस्तुति-गोकलजी के कहे छंद, संख्या-४७ । (ख) इंदव छंद-गोकलजी का कह्या, संख्या-३२ । (ग) सवया-१, सुन्दरदासजी का (घ) सवया-१, पेतसी कृत ।

आदि-श्री विष्णजी सत्य लिषते औतार की विगत्य की अस्तुति ॥ गोकलजी के कहे छंद । दोहा-रिधपति सिधपति सीलपति सुरपति सदा सहाय ॥

गतिदाता गोविंद सुमरि । गोकल हरि गुण गाय ॥ १ ॥

अन्त-ढूंढत न पायो राम तायें भया ढूढोया
जोगी मै न जती मै न साध मै न सती मै न गछ मैं न गती मैं न ज्ञान हीन मूढोया
पुन्य मै न दान मै न भसम सनान मै न सुधि मैं न ज्ञान मै न महा सठ सूढोया
सिव की न बात गहे जैन क न ठाठ रहे घड़त न आव घाट घर को सो पूटीया ।
पेतसी कहत इन वकुंठ मे ठौर्नाहि ढुंढत न ०

२५० चितावणी,सुरजनजी कृत । छन्द संख्या २६ । पत्र संख्या ३ । खंडित । देशी कागज । आकार-९×४ इन्च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इन्च । पंक्ति-प्रतिपृष्ठ-८ । अक्षर-प्रतिपंक्ति-२४-२५ । लिपि-पाठ्य । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानतः संवत् १८०० के लगभग लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-महन्त श्री रणछोड़दासजी आयूणी, जागा, जाम्भा ।

आदि-श्री गणेशायनम लिषतु चितावणी ।

दोहा-कहा करम जल कोयली कहा तिष्णा कहा तीर
रे मन कित पित मात तो संपति वध्यो सरीर १

अन्त-दूहा-साच को घर एक सुरजन घर मुनि जन ध्यान
रहे नाव अलेष को क आपणों ईमान २६

इति श्री सुरजनजी की चितावणी समाप्त ॥ १ ॥

२५१ कथा दूणपुर की वील्होजी कृत । छंद संख्या-५६ । पत्र-संख्या-३ । देशी कागज । आकार-१० २५×४ २५ इन्च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इन्च । पंक्ति-प्रतिपृष्ठ-११ । अक्षर-प्रतिपंक्ति-३८-४१ । लिपि-पाठ्य । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानतः संवत १८५० के आसपास लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-महन्त श्री रणछोड़दासजी, आयूणी जागा, जाम्भा ।

आदि-श्री विसनजी लिष्यते कथा दूणपुर की राग आसा

दोहा ॥ नविणि करू गुर आपण बंदू चरण सुभाव
भगता तारण भो हरण तीन लोक को राव १

अन्त-सतगुर सेती वाद कर कदे न जीता कोइ
विल्ह कहे सेवा करो मोख मोख मोज मय होय ५९ । इति श्री दूणपुर की कथा संपूरणम् ॥

२५२ आरती, संख्या ५ । ऊदोजी-२, प्रीतम-१, अज्ञात कृत-२ । मशीन का बना हल्के नीले

रंग का एक पत्र। खण्डित। आकार ६×४ इन्च। हाशिया-नगण्य। कुल २२ पंक्तियां। अक्षर-प्रतिपंक्ति-३४ ३६। लिपि-पाठ्य। लिपिकार अज्ञात। अनुमानतः संवत् १९५० के लगभग लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-महन्त श्रीरणछोड़दासजी, आथूणी जागा, जाम्भा।

आदि-श्री गणेशायनम उँ आरती कीज श्री जभ गुर देवा पार न पाव अलख अभेवा

अन्त-चौथी आरती अनु नवाऐ मूंच लोक प्रभु पात कहाऐ ॥ ४ ॥

पाचमी आरती साधू जन गाव सोई गा अ मरा पव ।५।५।

२५३ नवण, संस्कृत श्लोक-१ एवम् मनहर छन्द-१। देशी पत्र। खंडित। आकार-९×४ इन्च। हाशिया-दाऐं, बाऐं-पौन इन्च। कुल १६ पंक्तियां। अक्षर-प्रतिपंक्ति २४ २५। लिपि-पाठ्य। लिपिकार-अज्ञात। अनुमानतः संवत १९०० के लगभग लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-महन्त श्री रणछोड़दासजी, आथूणी जागा, जाम्भा।

आदि-उं स्वस्ति श्री विष्णवेनम ॥ उँ विष्णु विष्णू भण रे प्राणी साधे भवते उद्धरणों

अंत-प्रसन्न वदन जाको निस दिन रहै सदा लछमी निरप ताकौ आनन्द भरत जु अ सो रूप विष्णु को शांति अरथ विघन कू तिन प्रति चित महीं वितवो करत जु २

२५४ मयारामदास कृत अमावस्या कथा, छन्द १४४ और कवित्त-१। अपूर्ण। जीर्ण, खण्डित। प्राप्त पत्र संख्या ७। कुल ८ पत्रों में से प्रथम पत्र अप्राप्य। अपेक्षाकृत मोटा देशी कागज। आकार-८ ५×४ इन्च। हाशिया-दाऐं, बाऐं-एक इन्च। पंक्ति-प्रति पृष्ठ-१४। अक्षर-प्रतिपंक्ति-२९ ३२। रचयिता द्वारा संवत १८५१ में लिपि-बद्ध। लिपि-सामान्यतः पाठ्य। प्राप्तिस्थान-महन्त श्री रणछोड़दासजी, आथूणी जागा, जाम्भा।

आदि-तृभवन धनी ॥ ८ ॥ इहि व्रत करत पाप सब नास ॥ हूवे उजल ज्ञान प्रकास ॥

अ सी सुनि + + + की बांनी। अजन मन आसका आंनी

मधु न उ०। दीनदयाल दीन पत पारक ॥ संसय हरन ज्ञान विस्तारक ॥१॥

अन्त-पाटि वाटि जो मैं लिखि सो छमियौं सब साध।

मो मति अति ही तुछि है अमावस महिमा अगाध ॥२॥

संवत १८५१ श्रावण मास शुक्ल पक्षे तिथि सप्तम्यां शनिवासरे। लिषत मत श्री १०८ स्यामरामजी तस्य शिष्य मयाराम। ग्रंथ रचा संवतार जन्म को कवित ॥

जेठ आदि रवि कष्ठ ॥ मघ अतित मघु वानो ॥

कोन मघु ग्रह आदि ॥ नृसिंघ माघव भौंनु जाना ॥

ग्रावस सित गिर मन ॥ करसपर प्रगटे आंनु।

मघु ग्रह गिनराम ॥ मास बांवन तिन भांनु ॥

कृस्न अमित वसु भाक मैं ॥ जेठ नित जुर भूप जानि।

ता दिन निरमाण मयाराम ॥ दान कीजें अघ हानि ॥ १ ॥ ३.॥

२५५ पुह और लूर । पत्र १ । देशी कागज । आकार–९×४ इच । किनारे खण्डित हैं । हाशिया–नाम मात्र को । कुल २६ पक्तियाँ । अक्षर–प्रतिपक्ति–३५–३९ । लिपिकार–अज्ञात । अनुमानत सवत् १९०० के आसपास लिपिबद्ध । लिपि–पाठ्य । प्राप्तिस्थान–महन्त श्री रणछोडदासजी, आथूणी जागा, जाम्भा । इसम मे कृतिया हैं —(क) पुह पतीस की । (ख) लूर (२४ का) । (ग) सुगाइया की पुह (२७ की) । (घ) छव राजवीया न पुह । (ङ) प्रनाली (जाम्भोजी से लेकर सावतराम तक शिष्य-परम्परा)।

आदि– ॥ श्री विष्णू ॥ लिपतु पुहे पतीस की ॥ हूमे भादु की पु० वूड पिलेरी की पु०

अन्त–सुजाणजी का चेला कनीरामजी ११।२। कनीरामजी का चेला अजबोजी।१२।१ सांवतराम २ ॥

२५६ ब्याह (पद्धति) । अपूर्ण । प्राप्त पत्र सख्या–५ । ६ पन्नो म से प्रथम अप्राप्य । जीर्ण, खण्डित । देशी कागज । आकार–८ ५×४ २५ इच । हाशिया–दाएँ, बाएँ–१ इच । पक्ति–प्रति पृष्ठ–१६ । अक्षर–प्रति पक्ति–३२–३५ । लिपि–प्राय पाठ्य । सवत् १८४९ म साधु मयारामदास द्वारा अलाय मे लिपिबद्ध । कतिपय पक्तियाँ भिन्न हस्त-लिपि मे भी हैं । प्राप्तिस्थान–महन्त श्री रणछोडदासजी, आथूणी जागा, जाम्भा । इसम ये कृतियाँ हैं –(क) विष्णु महिमा । (ख) आदि वसावली । (ग) पचीस नाम । (घ) विवरस । (ङ) कलस । (च) सूरति । (छ) चौजुगो । (ज) सूरत मुसलमाणी । (झ) गजल ।

आदि–विसन सब सबत्रे ॥ विसन थान थन तरे आवो देवो सर्वा सरवो को धणी । ध्यान धूपे मन पोहपे पच इन्द्री होतासणीं । होम जाप समाधि पूजा पूजा देव निरजणों ॥

अन्त–ब्याह सम्पूरणम् ॥ स ॥ लिपतु साध मयाराम सामजी का सिष्य । पठनार्थ यापन । हरिकिसन । सवत १८४९ जैष्ट सुदि ४ वहस्पति । स्थान अलाय मैं लिपी छ । श्री ॥

२५७ पूल्हैजो की कथा,वील्होजी कृत तथा वडी नवण । अपूर्ण । जीर्ण, खण्डित । देशी पत्र–१ । आकार–९ ७५×४ २५ इच । हाशिया–दाएँ, बाएँ एक इच कुल १७ पक्तियाँ । अक्षर–प्रतिपक्ति–३०–३९ । लिपि–पाठ्य । दो भिन्न हस्तलिपियों मे । लिपिकार–अज्ञात । अनुमानत सवत् १८०० के आसपास लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान–महन्त श्री रणछोडदासजी, आथूणी जागा, जाम्भा ।

आदि–सेती सोप सुण पूल्हो चालण हार १७

चौपई–पूल्हो मतो करि सण हकारया नीवतो मांग्य वचन कहि सारया

सेती एक गाय कितो एक मांणों कापड चौपड धन आंमांणो १८

अन्त–विष्ण भणियों विष्ण मन रहियां तेतीस कोड पार पहु ती साचे सतगुर को मत्र कहोयो । इति श्री वडी नुवण ।

२५८ कथा अहवावणीं–ऊेल्ह कृत । अपूर्ण । आदि से ८८ छदा तक । प्राप्त–पत्र सख्या ४

देशी कागज । जीर्ण, खण्डित । आकार ९×४ इन्च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-एक इन्च पंक्ति-प्रतिपृष्ठ १३ । अक्षर-प्रतिपंक्ति ३४-३५ । लिपि पाठ्य । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत संवत् १८०० के लगभग लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-महन्त श्री रणछोड़दास, आथूणी जागा, जाम्भा ।

आदि-श्री विष्णु जी सत्य ॥ ॥ श्री ॥ गणेशायनम ॥ अथ कथा प्रहदावणी लिषते ॥

राग धनाश्री ॥

प्रणउ गणपति गुणा गहीर ॥ सहुरी विजरे सरीर ॥

मूस चड फरस कर धर । की को दोष विनायक हर ॥ १ ॥

अंत-छपन कोड जादव चोले ॥ सुण नारायण वात ॥

वारे वरस री मोटी होयसी ॥ किण विध लांबी धांत ॥ ८८ ॥

वारे वरस री मोटी होयसी । वाह"" ।

२५९ मंत्र आदि । अपूर्ण । कुल १९ पत्रों में से अंतिम ७ पत्र प्राप्त । चारों ओर से खंडित । अपेक्षाकृत मोटा देशी कागज । आकार-९,८×४ इन्च । हाशिया-दाएँ,बाएँ-एक इन्च । पंक्ति-प्रतिपृष्ठ-१० । अक्षर-प्रतिपंक्ति-२६-३१ । लिपि-सुपाठ्य । मेघदास द्वारा संवत् १८७८ में लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-महन्त श्री रणछोड़दासजी, आथूणी जागा, जाम्भा । इसमें ये रचनाएँ हैं --(क) रामरक्षा, रामानंदजी की-(अपूर्ण) । (ख)कलस । (ग)पाहूल । (घ)वालक को मंत्र । (ङ)कवित्त तेजोजी कृत । (च)वालक को मंत्र । (छ)चंद्रायणा छन्द ६, अज्ञात कृत । (ज)कवि गद्द कृत कुंडली १ । (झ) दोहे-७, अज्ञात कृत । (ञ) मंत्र मोहनी को । (ट)विछु को मंत्र । (ठ) मंत्र अदासिसी को ।

आदि-ले प्रात वाने ॥ ते नरा मोक्ष पावते ॥ इति श्री रामरक्ष्या रामानंदजी की संपूरणम् संवत ॥१८७८॥ पोह सुध ॥६॥ वार अदीतवार । लिष्यत वसनो श्री राम दासजी का वेटा मेगदास लिखत ।

अंत-पापा वाली न पाव गुल वाली न सुरजी वानी फक तीन गोली तीन दीन षाव वीष्णजी रा साध कनिरामजी रा सीष सावतराजी पठणारथे ॥ नगर जाम्बपुर वागामधे पोथी प्यारीराम की हर हींया को हार घणा जतन सु राषजा पोथी सती प्यार सुभमस्तु

२६० ऊदोजी कृत १ कवित्त और १ सवया । देशी पत्र-१ । आकार-६×४ इन्च । हाशिया-दाएँ, बाएँ पौन इन्च । कुल ८ पंक्तियाँ । अक्षर-प्रतिपंक्ति ३५-३८ । लिपि-पाठ्य । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत संवत् १९०० के आसपास लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-महन्त श्री रणछोड़दासजी, आथूणी, जागा, जाम्भा ।

आदि-स्वन गुर म्हमा को ॥ गुर देवन के देव गुरां सा अवर न कोई

भव में इवर जोत सतगुर तारे सोई ॥

अंत-निज अपराधि सेतो प्रम गत ल्याधो सेतो

उध्व विचार विडद सरण तोह आयो है ॥ २ ॥

२६१ प्रहलाद चिरत, ऊदोजी कृत । छन्द-२३२, (लिपिकार ने ३३० छन्द बताए हैं)। अपूर्ण । जीर्ण, खंडित । देशी कागज । प्राप्त पत्र संख्या-१६ । कुल २४ पत्रों में से ८ पत्र, संख्या ३, ४, ५, ६, ७, १६, १७ और १८ अप्राप्य । आकार ६ २५×४ इन्च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-१ इन्च । पंक्ति-प्रतिपृष्ठ-१० । अक्षर-प्रतिपंक्ति-३०-३४ । लिपि-सामान्यत पाठ्य । संवत् १८६६ में स्वयं रचयिता द्वारा लिपिबद्ध । प्राप्ति स्थान-महन्त श्री रणछोडदासजी, आयूणी जागा, जाम्भा ।

आदि-श्री विष्णुजी ।। ।। श्री प्रमात्मने नम. ।। अथ प्रहलाद चिरत लिष्यते ।।

दुहा-प्रथम म दु गुर देव कू ।। दुतिय म दु सत सार ।।

त्रितिय म दु म्हाविष्णु कु ।। कहु चिरत प्रहलाद ।। १ ।।

अंत-जम गह मम इष्ट है सत सबै सिर मोड ।।

जन ऊधो की बीनती ।। सीस न्याय कर जोड ।। ३० इति श्री प्रहलाद चिरत सपूर्णम् ।। १ समत १८६६ रा असढ सुध ६ ।। वार वसप्तवार माव माहाराज श्री सुदरजी का चेला लिख्यते ऊधोदास वाच जाकु नीवण वाचणी जी (दाएँ हाशिए में-लाल स्याही से-।। समसत चोपई दुहा छन्द कवत ३३० ।।)

२६२ इसकदर की कथा, केसौजी कृत । छन्द संख्या-१९२ । अपूर्ण । जीर्ण, खण्डित । प्राप्त पत्र संख्या ७ । कुल १० पत्रों में से ३ पत्र संख्या १,७ और ८ अप्राप्य । देशी कागज । आकार-६×४ इन्च । हाशिया-दाएँ, बाएँ एक इन्च । पंक्ति-प्रतिपृष्ठ-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३५ ३९ । लिपि पाठ्य । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानतः संवत १८०० के लगभग लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान महन्त श्री रणछोडदासजी, आयूणी जागा, जाम्भा ।

आदि-ईसु णि लोग सहर की आई

साभलि सतगुर सुरवाणी तहा धरम दया मनि आणी २०

दो० सब्द साहब का साभल्या बिवर बिचारी बात

दरजी चाल्या देव दिस अभ गुरू की जात २१

अंत-पेस क्या कही कर जोडि आवागवणि चुकावो पोडि

जो यहै कथा सुण चित लाय सत करि मानैं सुरगे जाइ १९२ इति श्री इसकन्दर(र) की कथा सपूरणम् श्री परमात्मन नम

२६३. साखी-संग्रह । अपूर्ण । साखी संख्या ३७ से ८४ तक पूर्ण । विभिन्न विष्णोइ कवियों द्वारा रचित । जीर्ण, खडित । प्राप्त पत्र संख्या-१६ । आकार-८ ५ × ४ इन्च । हाशिया-दाएँ, बाएँ एक इन्च । लिपि-पाठ्य । पंक्ति-प्रतिपृष्ठ-१६ । अक्षर-प्रति पंक्ति-३८-४१ । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानतः संवत १८५० के लगभग लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-महन्त श्री रणछोडदासजी, आयूणी जागा, जाम्भा ।

आदि-वन हेड आयो ।।जो। काढे तेग गरदन वाई । सीस उतारि भुय थायो । ४।।

आपे पडोयो आपे पतरो ।। आपे आप सिझायो ।।

अंत घर मिंदर माता पिता ।। भ्रवा भतीजा वीर ।। तजि तीरथ न्नू नीसरो ।।

सकल चुकायो सीर ।। ६ ।। मतो करे मोमण मिल्या ।। दंड चल्या पुलाई ।।

कु ण कितना दिना ।। पोहो ।।

२६४ सइयां की विगति-३५ पु ह, २२ को हूरो, विगत लुगाइयां री, तथा राजा की पुह। अपूर्ण । देशी पत्र-२ । खडित । आकार-६×४ इच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-एक इच । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-१० । अक्षर-प्रतिपक्ति-२१-२४ । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत १८०० के आसपास लिपिबद्ध । लिपि-पाठ्य । प्राप्तिस्थान-महत श्री रणछोडदासजी, आथूणी जागा, जाम्भा ।

आदि-१०००००० पेतु जाणीं की पुनह मुघो कोडि को

अत-राजा को पुह् असकदर लोदी महमदवा लोदी सांतल राठोड़

जतसी भाटी सागा सीसोदीयो दूदो राठोड इति सत्य

२६५ सूर्य स्तोत्र (सस्कृत) श्लोक १६ (अपूर्ण) तथा विगत बाईस भडार की । दो पत्रो म मे दूसरा प्राप्य । खडित । देशी कागज । आकार-९×४ इच । हाशिया-दाए, बाएँ-एक इच । कुल ११ पक्तियाँ । अक्षर-प्रतिपक्ति-२२-२४ । लिपि-पाठ्य । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत स० १६०० के लगभग लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-महत श्री रणछोडदासजी, आथूणी जागा, जाम्भा ।

आदि-एक भक्ति क्रता भावो पोसते रवि वीसरे व्याधि कुष्टि न दालिद्र

अत-नगीणो १८ लोदोगोड १९ भीयांसर २० कोसाणो २१ पांडवालो २२ भडारा बाईस

२६६ हिंडोलणो-हीरानद कृत । देशी पत्र-१ । जीर्ण, खडित । आकार-६×४ इच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इच । कुल १३ पक्तियाँ । अक्षर-प्रतिपक्ति २८-३० । लिपि-पाठ्य । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत १८५० के लगभग लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-लोहावट साथरी ।

आदि-दूदो देसोट चल्यो मन म घणा अधीर

कुव उपर ओलख्यो निरपोयो जुग तारण जभ पीर १

अत-चनण रायचद जता पचायण सवद से आचार

हीरानद की आरज ऐति सगत पार उतार ।।

२६७ कुडलिया-४, केसौजी कृत । देशी पत्र-१ । जीर्ण, खडित । आकार-९×४ इच । हाशिया-नगण्य । कुल २९ पक्तियाँ । अक्षर-प्रतिपक्ति-१२-१६ । लिपि-पाठ्य । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत् १८०० के लगभग लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-लोहावट साथरी ।

आदि-।। श्री वीष्णुजी सपतु क्वत कुडलया

हेज न कर रे हीया ।। सजन न करही हेज ।।

मन भाग मेलो कर ।। जामा याज न पेज ।।

अन्त-श्रोबोणी हामो ही गोक्म जप्यो न तप (कीया)

कहि केसो सुचीच्यारि करि हुडरको म करि रे हीया ४

२६८ विगत बाईस भडार की, गूगल की विधि तथा औषधियों की सूची । देशी पत्र-१ ।

खण्डित । आकार-६×४ इंच । हाशिया-नही है । प्रथम पृष्ठ मे १६ पंक्तियाँ । अक्षर-प्रतिपंक्ति-१६-१८ । लिपि-पाठ्य । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत संवत् १८५० के लगभग लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-लोहावट साथरी ।

आदि-॥ श्री विष्णव नम विगत आईम भडार की ॥ प्रथम श्री सभरायल १ पीपा सर २ ईवारी ३

अंत-पाणीं सेर पका चढाय दे जिसका छेटेका भर रहे ।

२६६ पत्री, अज्ञात कृत । गद्य पद्य मिश्रित । देशी पत्र-१ । आकार-१२ ५×६ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-१ इंच । कुल १६ पंक्तियाँ । अक्षर-प्रतिपंक्ति-३७-४० । लिपि-पाठ्य । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत संवत १८७५ के आसपास लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-भीयासर साथरी ।

आदि-श्री जाभूजी सीहाय छ जी ॥ प्रथम सति श्री स्वामी आदू ग्यांन भगति जिन त लही

अंत-श्री १०८ महंतजी तुलछीदासजी बाबाजी दयारामजी भगतरामजी बक्सीराम को संतराम तुण प्रणाम सहत वचज्यो जी और आपकी क्रपा सू आनंद हे आपका सदा आनद चाहि जी और कृपा म्हरवानीगी रायो तिनसू वसेष गपज्यो जी और स्वामी जी श्री गशाय म उ नम सीध

२७० गोविंदरामजी कृत, विभिन्न छंद-१३ । देशी पत्र-१ । आकार-२४×२ इंच । हाशिया-नही है । कुल ७७ पंक्तियाँ । अक्षर-प्रतिपंक्ति ६-८ । लिपिकार-अज्ञात । १६२० के लगभग लिपिबद्ध । लिपि-पाठ्य । प्राप्तिस्थान-जागलू साथरी ।

आदि-श्री विसनजी सत स कुंडिलीया

उँ पूरण गुर प्रमात्मा अविगत जलप अभेव ॥
जभ गुरु महाराज है देवां हीं अति देव २

अन्त-साथरी की साला वणी सोई समईयो जाण
साध गुमानीरामजी साल कीवी हित मांन ६

२७१ अल्लूजी का कवित्त-१ तथा सुंदरदासजी के सवैये-२ । देशी पत्र-१ । खडित । आकार-४ ७५×२ ७५ इंच । हाशिया नगण्य । कुल १८ पंक्तिया । अक्षर प्रतिपंक्ति-२१-२४ । लिपि-पाठ्य । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत संवत् १८०० के आसपास लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-लालासर साथरी ।

आदि-कवित ॥ असी लाष कबाड ॥ पदम दस लोंग सुपेथी ॥
चावल पदम पचास ॥ घत षण पार अलेषी ॥

अंत-सुंदर कहत ओर भुगत अनत दुष सतनि कों निद ताको सत्यानास जाय है ।

२७२ बीलहोजी के कवित्त-११ तथा अल्लूजी के कवित-३ । पत्र सख्या-४ । देशी कागज । खण्डित । आकार-९×४ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इंच । पंक्ति-प्रतिपृष्ठ-८ । अक्षर-प्रतिपंक्ति-२१-२४ । लिपि-पाठ्य । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत संवत १८५० के आसपास लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-जागलू साथरी ।

आदि-श्री विष्णुजी लिपते नवीया वीसजी म्हारा का १
　　अनत वेर यो जीव भुयो चोरासी भीतर
　　　　आयागवण फिरत सह्या सपट बहोली पर
अंत-आंणद थयो मन मांहर जीव तणीं पायो जतन
　　　　नारांयण नाम मेलसा नहीं अलु रक हाय पायो रतन ३

२७३ जम्भ महिमा विषयक अज्ञात कृत कवित्त-३ तथा सूरदास कृत भजन-१। देशी पत्र-१। खडित। आकार-६×४ इंच। हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इंच। कुल २१ पंक्तियाँ। अक्षर-प्रतिपंक्ति-३२ से ३८। दो भिन्न हस्तलिपियों में। लिपिकार-अज्ञात। अनुमानत संवत १८५० के आसपास लिपिबद्ध। लिपि-पाठ्य। प्राप्ति-स्थान-जागलू साथरी।
आदि-जंभगुरु जगदीश ईस नारायन स्वांमी
　　निरपषक निरलेप सकल घट अंतरजामी
अंत-सूरदास भगता कारण बस पपांवण आयो हेरी ॥ १ ॥

२७४ लूर-१, ढाल-१। क्रमश ऊदोजी अडींग और ऊदोजी नण कृत। देशी पत्र, सख्या-२। आकार-८.२५×३.७५ इंच। हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इंच। पंक्ति-प्रति-पृष्ठ-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-१८-२२। लिपिकार-अज्ञात। अनुमानत संवत १६०० के आसपास लिपिबद्ध। लिपि-पाठ्य। प्राप्तिस्थान-जागलू साथरी।
आदि-सोरठा लुहर की ढाल ॥ गिरधर गोकल आव गोपी सनेसा मोकल ॥
　　　　मोह दरसण का चाव। प्रेम पियारे कानजी। टेर ॥
अंत-प्रेम में पागी भइ अनुरागी। हरि सु नेह थपाणी ऐ माय। ५ ॥
　　उधोदासा प्रेम प्रगासा। हरि में सुरत समाणी ऐ माय ६। १० ॥

२७५ झगडो, पोहकर कृत। छंद १६। देशी पत्र-१। त्रुटित। आकार-१०×२.२५ इंच। हाशिया-नगण्य। कुल १०८ पंक्तियाँ। अक्षर-प्रतिपंक्ति-१०-१२। लिपि-पाठ्य। लिपिकार-अज्ञात। अनुमानत संवत १८७५ के लगभग लिपिबद्ध। प्राप्ति-स्थान-महंत श्री भोलारामजी, विष्णोई मंदिर, रावतखेडा।
आदि-॥ अथ झगडो लिषते ॥ हरिजन साकट नारि याता वहोत अडी
　　　　कूप चडी पणीयार दोनों झगड पडी टेक ॥
अंत-वूर चौली सेला भया पोहकर झाल विचार
　　राम नाम प्रताप त ए जीती हरिजन न नार १६ ॥

२७६ साखी और हरजस, सख्या-४। जीर्ण और खडित। देशी पत्र-२। आकार-९×४ इंच। हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इंच। पंक्ति-प्रतिपृष्ठ-११। अक्षर-प्रतिपंक्ति-३४-४१। लिपि-पाठ्य। लिपिकार-अज्ञात। अनुमानत संवत १८५० के आसपास लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-महंत श्री भोलारामजी, विष्णोई मंदिर, रावतखेडा। इसमें ये रचनाएँ हैं-(क) साखी-१, भरथरी संबंधी, कालू कृत। (ख) हरजस-२, क्रमश भरथरी और गोपीचंद संबंधी, अज्ञात कृत। (ग) हरजस १, गोपीचंद संबंधी चतर-

दास कृत ।

आदि-॥ श्री गणेशायनम राग रामगरी

सुणि हो राजा रांणी कहै बगा महल पधारो

जिन जोगी भरमाईया वाका सग निवारो टेक

अन्त-शब्द सुनत भूपति चल्यौ उभी मेलि बगाल

चतरदास अवला कहै कवन हमारा हवाल ७ (।) ४

२७७ साखी और हरजस, सख्या-४। कालू, अज्ञात तथा चतरदास कृत। अपूर्ण। पत्र स० ५। देशी कागज। आकार-८.७५×३.७५ इन्च। हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इन्च। पक्ति-प्रतिपृष्ठ-७, ८। अक्षर-प्रतिपक्ति-१८-२४। लिपिकार-अज्ञात। अनुमानत सवत १९०० के लगभग लिपिबद्ध। लिपि-पाठ्य। प्राप्तिस्थान-जागलू साथरी।

आदि-राम सत्य ॥ राग धनाश्री ॥

आज नगर में एक जोगी देख्यौ बीरा गोपीचद के उणिहार रे लो ॥

इसड़ा तो जोगी म जाण न दीज। आगणि मढी बधायमे रे लो ॥ १ ॥

अन्त-अमर भया ससार में वह कारिज सारया

कहि कालू पुरवा तणा गुर ज्ञान बिचारा १७।३

दोहा आदि है अन्त-दह मध्य रहे इक्का ।

२७८ बिष्णोई साधुओं के निधन काल का उल्लेख। देशी पत्र-१। आकार-९×४ इन्च। हाशिया-नगण्य। कुल १२ पक्तियाँ। अक्षर प्रतिपक्ति १२-१४। लिपि-पाठ्य। लिपिकार-अज्ञात। अनुमानत सवत् १९०० के आसपास लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-जागलू साथरी।

आदि ॥ दोहा ॥ समत अठार तेरासियो एकम चत सुदि शनिवार।

गगारामजी तन त्यागियो पायो मोष दवार

अन्त-समत १९१०० रा आसोज बद ३ तीज ससीवार।

फरसरामजी तन त्यागीयो भेट्या विसन दवार।

२७९ गोकलजी की रचनाएँ। पत्र सख्या-११। देशी कागज। आकार १२×६ इन्च। हाशिया-दाएँ, बाएँ-सवा इन्च। पक्ति-प्रतिपृष्ठ १३। अक्षर-प्रतिपक्ति ३७-३९। श्री माहब्रामजी द्वारा सवत १९१० म लिपिबद्ध। लिपि-सुपाठ्य। प्राप्तिस्थान-श्री घोंकलराम विष्णुदत्त विष्णोई, दुतारावाली। इसमे कवि की ये रचनाएँ हैं-औतार को विगत, छद-४७। (क) परची, छन्द-३७। (ग) इदव छन्द-३२। (घ) अस्तुति होम को, छद-१०।

आदि-श्री गणेशायनम। लिपत औतार की विगत। गोकलजी के कहे छद।

रिषपति सिधिपति सिलपति सुरपति सदा सहाय।

गति दाता गोविंद सुमरि गोकल हरि गुण गाय ॥ १ ॥

अन्त-आभ थभा किम ऊधरे ॥ जिण रह गिर सागर ओट तर ॥

गोकमजी ताहरो तवु ॥ अधर विराज्यो ईश्वर ॥ ८ ॥ इति श्री गोकलजी का

कह्या । कवत सपूरणम । सवत । १९१० वर्षे मिती पोह सुध । ४ । सोमेवारे लिषते साध श्री ॥ १०८ ॥ गोवि (द) रामजी का शिष्य श्यामबराम रामदास म ॥

२८०. सापी-१, छद २७ । केसोजी कृत । देशी पत्र १ । जीएा, खडित । हाशिया-नगण्य । आकार ६×४ इच । कुल २१ पक्तियाँ । अक्षर प्रतिपक्ति ४२ ४६ । लिपि-पाठ्य । सवत् १८७३ मे साधु क हीरामदास द्वारा लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-महन्त श्री भोला रामजी, विष्णोई मदिर, रावतखेडा ।

आदि-। श्री विस्नजी । सापी । दरसण दीज देजी गीण तेतीसां भान
मेलो करि मोटा धणी बीस्न बिछोहा भांन १

अत-वीनती केसो कह इला फरी जुग रेरि २७ ।
लिपते साध क हीरामदास ॥ सबत १८७३ ।

२८१ जभाष्टक, (सस्कृत) श्लोक-६ । गोविन्ददास कृत, देशी पत्र-१ । खण्डित । आकार-१२×६ इच । हाशिया-दाएँ, वाएँ-सवा इच । कुल १७ पक्तियाँ । अक्षर-प्रति पक्ति २६ २८ । लिपि-पाठ्य । लिपिकार अज्ञात । सम्भवत साहबरामजी द्वारा अनुमानत सवत् १९१० के लगभग लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-जागलू साथरी ।

आदि-॥ ६ ॥ श्रीम महागणाधिपतये नम ॐ मुखे चारु शोभ महामद हास्य
अत-अ तद्रित पठेन्नित्य सब पाप प्रमुच्यते ॥ ९ ॥ इति श्रीमद्गोविन्ददासेन विचि ताया जभाष्टक सम्पूरणम् ।

२८२ विष्णोई धम के कवित्त ३ । ऊदोजी कृत । देशी पत्र-१ । जीएा, खण्डित । आकार-८ ७५×३ ७५ इच हाशिया-नाम मात्र को । कुल ११ पक्तिया । अक्षर-प्रति पक्ति-३२-३३ । लिपि-पाठय । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत् १८०० के लगभग लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-महन्त श्री रणछोडदासजी, आथूणी जागा, जाम्भा ।

आदि-श्री विष्णजी ॥ कवत ॥ प्रथम प्रभाते उठ ज जल छाण रे लीज
सजम सुच सिनान सुध हुय नाव् जपीज—

अत-आप मरत मरण न रहै हर हैतात पडे सही
एह धम विष्णोइया तणों विष्ण भक्त उयो कही ॥ ३ ॥

२८३ हरिनद के फुटकर छद । दो कवित्त और १ दोहा । देशी पत्र-१ । जीएा, खण्डित । आकार-६ ५×४ इच । हाशिया-नगण्य । कुल १३ पक्तियाँ । अक्षर-प्रतिपक्ति-१८-२१ । लिपि-पाठय । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत स० १८५० के आस-पास लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-लोहावट साथरी ।

आदि- ॥ कवित् ॥ प्रथम बदरा पवम अठार राम पेड रोसाण
अन्त-भाले कु भकरण रा भाई तबवां तणां तमास । २ ॥

२८४ ऊदोजी के फुटकर छन्द । सख्या-२४ । पत्र सख्या-५ । देशी कागज । जीएा, खण्डित । आकार-९×४ इच । हाशिया-दाएँ, वाएँ-एक इच । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-९-१० । अक्षर-प्रति पक्ति-२७-२८ । लिपि-पाठय । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत १८७१ के लगभग लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-पीपासर साथरी ।

आदि-श्री विष्णजी । करणा को अग लिष्यत । सवईया । इकतिसा । मनोहर छद ।
माया है अपार तोहि पार नहो पाव कोय सुर नर नाग परं तु हि भगवान है ॥
अन्त-विडद विचार सुद लीजिय उधदास गुलाम को ॥
दावण पकडी दीन हुय ॥ प्रभु तेरे नाम की ॥ ३५ ॥ (२४)

२८५. जाम्भोजी की स्तुति-१ दोहा, २ श्लोक तथा सरस्वती अष्टक, ८ श्लोक । देशी पत्र-१ । खडित । आकार-६×४ इच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-एक इच । पक्ति-प्रति-पृष्ठ-११ । अक्षर-प्रति पक्ति-३०-३२ । अज्ञात लिपिकार द्वारा अनुमानत संवत् १६०० के लगभग लिपिबद्ध । लिपि-पाठ्य । प्राप्तिस्थान-पीपासर साथरी ।
आदि-उ स्वस्ति श्री गणेशाय नम श्री सरस्वत्यनम श्री ऋभदेवाय नम
श्री विष्णवे नम कर प्रणाम कहत हु शुभ गुरु जगन्नाथ
अन्त-भावातीत त्रिगुण रहित सदगुरु त नमामि ॥ १ ॥

२८६ हरिनद के फुटकर छद । २ कवित्त और १ दोहा । देशी पत्र-१ । खण्डित । आकार-६×४ २५ इन्च । हाशिया-नगण्य । एक पृष्ठ म कुल १३ पक्तिया । अक्षर-प्रति-पक्ति-१८-२० । लिपि-पाठ्य । सवत १९५६ मे गणेसरामजी द्वारा लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-जागलू साथरी ।
आदि- । कवीत ॥ प्रथम वदरा पदम अठार राम पेड रोसाण
अन्त-भलो कुंभकरण रा भाई तबुवा तणा तमासा ।३। इती कवीत सपुरणम् । लीपी गणेसराम माघ दुतारावाली म ॥ मी काती व्दी ४ स १९५६ साल ।

२८७ लूर, ऊदोजी कृत । छद-९ । मशीन का बना पत्र-१ । खडित । आकार-७ २५×५ इच । हाशिया-नगण्य । कुल १९ पक्तिया । अक्षर-प्रतिपक्ति-१८ । लिपि-पाठ्य । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत १९५० के आसपास लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-पीपासर साथरी ।
आदि-श्री रामजी लीपत लूर टर गोरधर गोकल आव गोपी सनेसो मोकल ।
अन्त-ऊदो कह करे जोड दरसण दया कर दीजीये ९ ।

२८८ श्री वीसनु सरुप, गोविन्दरामजी कृत । गद्य मे । मशीन का बना पत्र-१ । त्रुटित । आकार-११ ७५×७.५ इ च । हाशिया-नही है । कुल २७ पक्तिया । अक्षर-प्रति-पक्ति १७ २४ । सवत् १९५० मे लेखक द्वारा लिपिबद्ध । लिपि-पाठ्य । प्राप्तिस्थान-पापासर साथरी ।
आदि- ॥ श्री गणेसाय नमो ॥ श्री नारायणजी का सरुप ईस भात है स्याम रग कमल नन
अन्त-तब सोनकादीक बकुठनाय को डडवत कर न ऊपरात विदा हो कर चले गये
ईती श्री विसनु सरुप स० १९५० असाढ व्द १३-विष्णु गोविंदराम ।

२८९. साखी, सख्या-५ । केसोजी, सुरजनजी, लालचद और अज्ञात कृत । पत्र सख्या-१० । देशी कागज । जीर्ण और खण्डित । आकार-५×४ ५ इच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इच । पक्ति प्रतिपृष्ठ ९-१० । अक्षर प्रतिपक्ति-१२-१३ । लिपि-पाठ्य । लिपि-

कार अज्ञात । अनुमानत सं० १८५० के आसपास लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-लालासर साथरी ।
आदि- ॥ श्री जभगुरुदेवाय नम लिपते सापी साथो निंवरो सिरंजणहार पार वह पहलो नेऊ ।
अंत-जो हो हम गुहीं गुर म्हारो पूरो दाता म्हारो गुन्हो माफ करावो ।
२९० नवण तथा वील्होजी के २ छप्पय । देशी पत्र-१ । जीर्ण, त्रुटित । हाशिया-नगण्य । कुल २३ पंक्तियाँ । अक्षर-प्रतिपंक्ति-२०-२२ । लिपि-पाठ्य । सक्रदास द्वारा सं० १९०० (?) में लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-पीपासर साथरी ।
आदि-श्री विष्णु जी श्री रामजी अथ नवणि लिखते ।
विष्ण विष्ण तू भणि रे प्राणी ॥
अंत-आप सवारथ मन मुषी ॥ कीया कुवयो पापड़ा ॥
वील्ह कहै भव सागरां ॥ बह्यो जांहि रे बापड़ा ॥ २ ॥
लीपते साध सकरदास १६ ॥
२९१ साखी-२ । केसोजी और वील्होजी कृत । देशी पत्र-१ । खण्डित । हाशिया-नगण्य । कुल २५ पंक्तियां । अक्षर-प्रति पंक्ति-४३-४५ । लिपि-पाठ्य । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सं० १८५० के लगभग लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-पीपासर साथरी ।
आदि-श्री विष्णुजी ॥ बूंचे बार कोडि सू कीयो वैकुंठे वास
अंत-वील्ह कहै गति साभलो साधां तणां वषाण १७ ॥
सुग पोहोता सासो गयो मिट गई आवागोंण १७
२९२ गायणा सम्बन्धी कविता । छन्द ५ । मशीन का बना एक पत्र । खण्डित । आकार-१०×६ ५ इञ्च । हाशिया-नगण्य । कुल ९ पंक्तियाँ । अक्षर- प्रतिपंक्ति-३०-३२ । लिपि-पाठ्य । (अनेक जगह अक्षर, मात्रादि छूटे हुए हैं) । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत संवत १९५० के आसपास लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-जागलू साथरी ।
आदि-ओ३म् जभ गुरवे नम दोहा-निवण २ गुरु सन्त को गाईस गावण की काया
अंत-दुब गये लुगाई गावण फेर्भी मुख दीखलाते हो ।
२९३ उतीस धर्म । छन्द-८ । मशीन का बना पत्र-१ । आकार-८ ७५×५ ५ इञ्च । कच्चा हुआ । हाशिया-चारों, चारों-१ ५ इञ्च । कुल १३ पंक्तियाँ । अक्षर-प्रतिपंक्ति-२४-२८ । लिपि-पाठ्य । प्रस्तुत रचना एक ही पृष्ठ में है, दूसरे में उसी हस्तलिपि में ६ फुटकर श्लोक लिखने के पश्चात् लिपिकाल का उल्लेख इस प्रकार है -सम्वत १९४४ मीती असाढ वदी १ लो० स० प० सा० म० शुभ भूयात उ तास हरीम । प्राप्तिस्थान-जागलू साथरी ।
आदि-श्री गणेशायनम उ तीस दिन सूतक १ पाच रितुवती नार २
अंत-जाभजी कृपा करो जहां रो नाम विष्णोई होय । १ । इति गुणतीस धर्म समाप्त
२९४. प्रह्लाद चरित, केसोजी कृत, छन्द ५६६ । तथा यज्ञ पुण्य रो विचार एवं हानी र

पुन रो विचार। गुटका। फोलियो स०-७४, किन्तु बीच के अनेक पत्र अप्राप्य। अपूर्ण, खण्डित। देशी कागज। आकार-५×६ ५ इन्च। हाशिया-दाएँ, बाएँ-आधे से पौन इन्च। पक्ति-प्रतिपृष्ठ-८-१०। अक्षर-प्रतिपक्ति-१४ से २०। दो भिन्न हस्तलिपियो मे। लिपि-सामान्यत पाठ्य। सवत १६२५ मे गायणे हणू तराम द्वारा लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-श्री सोहनलालजी गोदारा, चक २६ बी० बी० (श्री गगानगर)।

आदि-दो-०सतर लाप सतजुग हुवो। ओर अठाईस हजार मछ रूपी मोवन ईल लीयो अवतार। ईती श्री पहलाद चीरत सपूरण समत १६२५ रा वीरषे मीती सावण वदी १० वार बुध लीपतू गायणा हणू तराम वेटा मदरूपजी रा लीपा वतू रूप वेटा दान रा गाव सीत मध्यो।

अन्त-अथ होली मगाल जीण पुन रो विचार १ पुरव दीसा रो वायरो वाज तो राजा परजा सुप कर २ दीपण दीस रो पुन चाल तो देरभगे दुरभक्ष पड ३ पिछम दीस रो वायरो वाजे तो तीण सपत वढ उन दीस रो वायरो वाज तो धान वधतो होयजो होली रो धुवो आकास न चढ तो राजा गढ छुट जाय इती होली र पुन रो विचार ५

२६५. अल्लूजी के कवित्त-सख्या-३। देशी पत्र-१। जीर्ण, खण्डित। आकार-६ ५× ३ २५ इन्च। हाशिया-नगण्य। कुल १७ पक्तिया। अक्षर-प्रतिपक्ति-२०-२३। लिपि-पाठ्य। लिपिकार-अज्ञात। अनुमानत सवत १८०० के लगभग लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-लालासर साथरी।

आदि-श्री विसजी सत्य लीपतु कवत ॥ बेंद जोग वराग ॥ षोज दीठा नर निगम

अन्त-विसन देव नपत्य हुयो ॥ बल राजा जीमाडीयो ।३॥

२६६ रामो कृत १ भजन, तथा सुरतराम कृत १ हरजस। देशी पत्र-१। जीर्ण एव खण्डित। आकार-६×४ २५ इन्च। हाशिया-नगण्य। दो भिन्न हस्तलिपियो मे। पक्ति-प्रतिपृष्ठ ११,५। अक्षर-प्रतिपक्ति-२५-२६, ४०-४१। लिपि-पाठ्य। लिपिकार-अज्ञात। अनुमानत सवत १८८० के आसपास लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-श्री थानलराम विष्णुदत्त विश्नोई, दुतारावाली।

आदि-राग भवेरो-जा थलीया देवजी भवरा अवतरयो जा थलिया छै गाढो नूर

अन्त-सुरतराम श्री पति की महमा गाव सत पियारा ४। श्री भगवतेवासुदेवाय नम।

२६७ वील्होजी के कवित्त, सख्या-८। देशी पत्र-१। आकार-८ ७५×४ इन्च। हाशिया-नाम मात्र को। कुल ५८ पक्तिया। अक्षर-प्रतिपक्ति-१४-१७। लिपि-पाठ्य। लिपिकार-अज्ञात। अनुमानत स० १८५० के लगभग लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-श्री थानलराम विष्णुदत्त विश्नोई, दुतारावाली।

आदि- ॥ कवत ॥ वील्हजी ॥ पाप नि कर मति हीण हलति हारिसैं जलमतरि

अन्त-वील्ह कहै रे भाइयो ॥ भा भलो हो। कित लाम्यसो ॥ ८ ॥

२६८ पत्रो, हरिकिसनजी री-चौपई ९ और-दोपारा गद्य मे। देशी पत्र-१। जीर्ण,

खंडित। आकार-६×४ इंच। हाशिया-नगण्य। ६६ पंक्तियाँ। अक्षर-प्रतिपंक्ति-१७-१९। लिपि-पाठ्य। संवत १८७३ में साध हरिकिसनदासजी द्वारा लोहावट में लिखित। प्राप्तिस्थान-श्री धोकलराम विष्णुदत्त विष्णोई, दुतारावाला।
आदि-श्री विसनु जी सत्य ॥ लिष श्री सब ओपमा लाइक सत्य धम के सदा महाहर
अन्त-श्री माहाराज तुम जोग्य हु नयण वाचजो साय
मूल चूक जो है लियो छिमा करो सव साप
२९९ गुटका। फोलियो संख्या-१५९। देशी कागज। आकार-४.२५×२.७५ इन्च। हाशिया-आधा इन्च। पंक्ति-प्रतिपृष्ठ-६। अक्षर-प्रतिपंक्ति-१७-२०। संवत् १९०९ मे किसनदास द्वारा लिपिबद्ध। लिपि-सुपाठ्य। प्राप्तिस्थान-जागतु सायरी। इसमे ये रचनाएँ हैं —(क) विष्णु पंजर स्तोत्र (संस्कृत ब्रह्माड पुराणे इंद्र नारद सवाद)। (ख) सबद वाणी। सबद संख्या-१२०, बिना प्रसंग। ग्रन्त काया वकुंठ वासो तरा जरा मरण भव भाजों १२० इति श्री सब्दवाणी श्री जाभजी की संपूरण। (ग) अस्तुत श्री जाभजी की, छन्द-४७, गोकलजी कृत। (घ) परची, छन्द-३७, गोकलजी कृत। (ड) श्री विष्णु चिरत, छन्द ११०, ऊदोजी अडींग कृत।
आदि-श्री गणेशायनम उँ अस्य श्री विष्णु पंजर स्तोत्र, मनस्य नारद ऋषिनुष्टप छंद
श्री विष्णु परमात्मा देवता अह बीज सोह शक्ति
अन्त-सोरठा-हरि अवतार अनंत अनंत चिरत अवगत तणा
गाव मुनी जिन सत वि (म) ल जस भवजल तरण १० (११०) इति श्री विष्णु चिरत उधोदास विरचतं संपूरण समत १९०६ रा विरषे मिती भादवा सुदि १३ लिपतं साध श्री १०८ मावलदासजी रा चेला किसनदास लिपावतु साऊ सगरामजी वास रामडास रा गाव जाभोला मध्ये।
३०० कवित्त-२, अज्ञात कृत (विष्णोइयां को दी गई छूट के संबंध में)। देशी पत्र-१। आकार-८.२५×५.७५ इन्च। हाशिया-नगण्य। कुल ११ पंक्तियाँ। अक्षर-प्रतिपंक्ति-१८-२०। लिपि-पाठ्य किन्तु अशुद्ध। लिपिकार-अज्ञात। अनुमानतः संवत १९५० के आसपास लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-श्री धोकलराम विष्णुदत्त विष्णोई, दुतारावाली।
आदि-श्री विसनजी क० पाट सिर जोधपुर जोधा टीकायत जाणौ
अन्त-सूर अजा जसवंत गजा तिण पाट बीजा वगतेसरा २
३०१ पदम भगत कृत-१ आरती, छन्द १०। देशी पत्र-१। खण्डित। आकार-११×५.५ इन्च। हाशिया-दाएँ, बाएँ-एक इन्च। कुल १२ पंक्तियाँ। अक्षर-प्रतिपंक्ति-३४-३६। लिपि-पाठ्य। लिपिकार-अज्ञात। अनुमानतः संवत १९५० के आसपास लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-श्री धोकलराम विष्णुदत्त विष्णोई, दुतारावाली।
आदि-आरती। आरती हो जी द्वारका रो राव कृष्ण रुक्मण आरती जी
अन्त-भण पदमइयो जान आरतो आवा र गवण नीवार १० इती श्री आरती संपुरण।

३०२ हरजस-१, छन्द-५ । सुरजनजी कृत । देशी पत्र-१ । आकार-६ ५×३ २५ इन्च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इन्च । कुल १२ पक्तिया । अक्षर-प्रतिपक्ति-२०-२१ । लिपि-सुन्दर एव सुपाठय । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत १८५० के लगभग लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-लोहावट साथरी ।

आदि-लिपते हरीजस ॥ राग आसावरी ॥ अैसा गुर हमार अवघू होंदू तुरक दोया स यारा ॥ टेक ।

अन्त-सुरजनदास विसन क सरनै । सहज रूप समाना ॥ ५ ॥

३०३ भजन-२, नरसीजी और केसोजी कृत, । देशी पत्र-१ । खण्डित । आकार-६×४ इन्च । हाशिया-नाम मात्र को । कुल २० पक्तिया । अक्षर-प्रतिपक्ति-३०-३२ । लिपि-सुपाठय । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत स० १८५० के लगभग लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-लोहावट साथरी ।

आदि-॥ राग मुथरा रो वासो कान्हवो रह्यो दुवारका छाइ (नरसीजी)

अन्त-कर करणी केसो कह जावोज उण देस ॥ ७ ॥

३०४ शकर स्तुति, कवित्त-१, अज्ञात कृत तथा वशावली और नवण । देशी पत्र-१ । आकार-८ २५×४ इन्च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-लगभग पौन इन्च । २२ पक्तिया । अक्षर-प्रतिपक्ति २६ ३० । लिपि-सुपाठय । साधु हरिकृष्णजी द्वारा अनुमानत स० १८८० के लगभग लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-महन्त श्री रणछोडदासजी, आयूणी जागा, जाम्भा ।

आदि-श्री विष्णु जी ॥ कवित ॥ जटा जूट सिर गग चद्र सेषर चप हुत वह ॥

अन्त-तेतस कोडि बकुठ पहुता साच सतगुर को क्लमों कहियो इति श्री वडी नवण सपूरण १ लिपत साध हरिकिष्णए ।

३०५ कबीर कृत आरती-१, हरजस-१ तथा सुरजनजी कृत हरजस-१ । छन्द-७ । देशी पत्र-१ । खण्डित । आकार-९×४ इन्च । हाशिया-नगण्य । कुल १६ पक्तियाँ । अक्षर-प्रतिपक्ति-३२-३५ । लिपि-पाठय किन्तु अशुद्ध । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत १८५० के लगभग लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-महन्त श्री रणछोडदासजी, आयूणी जागा, जाम्भा ।

आदि-दूसरी आरती बावन सोवा वल धार पधारे हर दवा ॥ २ ॥

अन्त-मन विच करम चरण चित्त धरीय जन सुजन भो सागर तीरीय ७ रात को पाय अधाय क सोवत ॥ काला वस म ।

३०६ पदम भगत कृत ११ छन्द और विविध राग-रागिनियो म गेय ८ गीत । देशी पत्र-१ । जीर्ण, खण्डित । आकार-१२×६ इन्च । हाशिया-नगण्य । ६६ पक्तियाँ । अक्षर-प्रतिपक्ति-१८-२२ । लिपि-पाठय । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत १८२५ के लगभग लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-श्री धोकलराम विष्णुदत्त विष्णोद, दुतारावाली ।

आदि-॥ श्री विष्णुजी छन्द-पीता वर अर प्रीत ल्यावे वसु कीजिय

राजा तवत थट म गावाल वपु जोईये

अन्त-वयर रवमईया पु उठ बोल्यो कुल को धरम घटाय २

पवम भणै प्रणव पाय लागु भीतम सोता नयाय ३

३०७ प्रदोदास के भजन, सख्या-५ । मशीन का बना पत्र-१ । अपूर्ण, खडित । आकार-१२ ५×७ ७५ इच । हाशिया-नगण्य । पक्ति--प्रति पृष्ठ-२३-२५ । अक्षर-प्रतिपक्ति-१७-२० । मपशाग्त माट मगर । लिपि-पाठ्य किन्तु अशुद्ध । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत स० १९५० मे लगभग लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-पीपासर साथरी ।

आदि-श्री दोहा पुलहे पर्चो पायोया दीनो दीनदयाल

सुरग हे दीपायो स्यामजी सता की प्रतपाल

अन्त-अयसो अरज सुणा गोरदारा भगतो पाऊ थारो

अनुपावनी भगती दीजे असी अरज हमारी ६

असी सुण जबसुर बोले सुणलो पीता हमारी सो वर मागो सोई दीनो

३०८ फुटकर छद-८ । अपूर्ण । मुरली-२, मयाराम-१, केसवदास-१ तथा शेष ४ अज्ञात कृत । मशीन का बना पत्र-१ । आकार-१३×४ इच । हाशिया-नगण्य । कुल ४६ पक्तियाँ । अक्षर-प्रतिपक्ति-१७-१६ । लिपि-पाठ्य किन्तु अशुद्ध । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत स० १९५० के लगभग लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-पीपासर साथरी ।

आदि-श्री रामजी ॥ राम गुन गायो जीन अंतो सुष पायो है (-मुरली कृत)

अन्त-जस हो तो क्वीजनन म होती कछु न हान

३०९ वशावली । देशी पत्र-१ । खण्डित । आकार-४ २५×४ ५ इन्च । हाशिया-नगण्य । कुल ९ पक्तियाँ । अक्षर-प्रतिपक्ति-१६-१७ । लिपि-पाठ्य । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत् १८७५ के लगभग लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-साधु श्री हणू तरामजी, रुन्वली ।

आदि-श्री विसनजी श्री झाभजी को चेलो रेडोजी १ रडजी को चेलो नायोजी

अन्त-मनरूपजी का चेला सावलजी पुरोजी ॥ श्री

३१० कवित्त-२, ऊदोजी कृत । मशीन का बना पत्र-१ । आकार-६ २५×५ ८५ इच । हाशिया-नगण्य । कुल १४ पक्तियाँ । अक्षर-प्रतिपक्ति-१३-१६ । लिपि-पाठ्य । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत १९५० के लगभग लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-जाँगलू साथरी ।

आदि-क्वत जीव अ त जल माहे पार गीणती नहीं पावै

अन्त-उधव ब जन उधर भवसागर को भय नही ३

३११ कवित्त-४ । गह्, रज्जब, ऊदोजी और अज्ञात कृत । देशी पत्र-१ । अपूर्ण, खण्डित । आकार-६ २५×५ २५ इच । हाशिया-नगण्य । कुल २४ पक्तियाँ । अक्षर-प्रतिपक्ति-१७-२१ । लिपि-पाठ्य । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत १८७५ के लगभग लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-महन्त श्री भोलारामजी, विष्णोई मन्दिर, रावत-

खेटा।

आदि-श्री विष्णु मत सही अथ कवित नव ढोक्लो तोय सबँहि येत पिलाव (-गह्)
अन्त-यू साधु भक्त न छाडहो जो दुप पडे अनेक २ (-ऊदोजी)

३१२ कवित्त, सवैए-२३। रचयिता-वील्होजी-१८, मधुसूदन-१, अज्ञात-१, ऊदोजी-३। मशीन के बने ६ पन्ने। आकार-८ २५ × ५ २५ इच। हाशिया-नाम मात्र को। पक्ति-प्रतिपृष्ठ-१०। अक्षर-प्रति पक्ति १८-२४। लिपि-पाठ्य। लिपिकार अज्ञात अनुमानत सवत १९५० के लगभग लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-पीपासर साथरी।
आदि-अथ कवत उ विष्णूवे नम उ धर्म कीया सुप होय लाछ लिछमी धन पावे :
अन्त-उधव बे जन ऊधरे भवसागर भरमे नही ॥ २३ ॥

३१३ देशी कागज। प्राप्त पत्र सख्या-५। अपूर्ण। चौथा तथा छठे के पश्चात पत्र नही हैं। आकार-९×४ इच। हाशिया-दाएँ बाएँ पौन इच। पक्ति-प्रतिपृष्ठ-८। अक्षर-प्रति पक्ति-२५-२६। लिपि-सुदर, सुपाठ्य। लिपिकार-अज्ञात। अनुमानत सवत् १८७५ के लगभग लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-पीपासर साथरी। इसमे ये रचनाएँ हैं - (क) मगलाष्टक-केसोजी कृत, छद २८। (ख) दस अवतार (अपूर्ण)। (ग) कृष्णार्जुन सवादे विष्णु अठाईस नाम (सस्कृत)-७ श्लोक। (घ) पच्चीस नाम, विष्णु के। (ट) चौजुगी (अपूर्ण)।
आदि-श्री जभेश्वरायनम अथ मगलाष्टक लिषत श्री गुरनपति वृसपति देवन
पति गोविंद देवतान पति ब्रह्मा साधन पति सकर १
अन्त- यभा तो रुपवा वरो तो रामचन्द्र कन्या तो सती सीता ब्राह्मण तो
वासिसट मुनि बेद तो जुजरबेद पढते गुणते सामीजी ह्मे त ।

३१४ पुस्तिका। प्राप्त पन्नो की सख्या-१२१। मशीन का बना कागज। अपूर्ण, जीर्ण, खडित। आकार-८ ५ × ५ २५ इच। हाशिया-नगण्य। पक्ति प्रतिपृष्ठ ५ से १७ तक। लिखावट प्राय भद्दी, बहुत से स्थलो पर दुष्पाठ्य। सवश्री रामदासजी, गणेशराम जी, तिलोकदासजी तथा अनेक अज्ञात व्यक्तियो द्वारा समय समय पर लिपिबद्ध। लिपिकाल-सवत १९४४ से १९६०। प्राप्तिस्थान-जागलू साथरी। इसमे अनेक जाम्भाणी तथा अन्य कवियो की फुटकर रचनाएँ हैं, जिनमे ये उल्लेखनीय हैं - (क) गोविन्दरामजी के छद-७। (ख) साहबरामजी के भजन-१०। (ग) श्री रामदासजी का पत्र-सस्कृत व्याकरण नियम-लेखन, सवत् १९४४ मे। (घ) अमर चालीसी, छद ४३, साहबरामजी कृत। (ड) आरती-१, साहबरामजी कृत। (च) पदम भगत कृत कृष्ण रुक्मिणी विवाह सबधी भजन। (छ) धुन, गगादास कृत।

१५. रज्जबजी के कवित्त ४, केसोदासजी के सवये ५, तथा भजन १ अज्ञात कृत (अपूर्ण)। देशी पत्र-१। जीर्ण, खण्डित। आकार-११ ५×५ ७५ इच। हाशिया-नगण्य। कुल ३१ पक्तियाँ। अक्षर-प्रतिपक्ति-४२-४६। लिपिकार-अज्ञात। अनुमानत सवत् १८२५ के लगभग लिपिबद्ध। लिपि-पाठ्य। प्राप्तिस्थान-महन्त श्री रामनारायणजी, रामड़ावास।

आदि–लीपतु कवत ॥ मत मुराल मदुरिक्ष वाय वणराय पिछांण ।
अन्त–वहो वचन मीठाइ मेवा हुसि हुसि दे गोरघारो
वहो राए कुण सुघ कहिऐ ले ला मधकारी ॥ ८ ॥ आज

३१६ बील्होजी के कवित्त, सख्या–१४ । देशी पत्र–१ । जीर्ण, खण्डित । आकार–११ ५X ५ ५ ड च । हाशिया–नगण्य । कुल ३१ पक्तियाँ । अक्षर प्रतिपक्ति ४८–५० । लिपि–पाठ्य । लिपिकार–अज्ञात । अनुमानत सवत १८०० के लगभग लिपिबद्ध । प्राप्ति स्थान–महन्त श्री रामनारायणजी, रामडावास ।
आदि–श्री विसनजी कवत–धम कीया सुघ होय लाछ लीछमी धन पाव
अन्त–भलो वधाण आपको पराइ पुणी वह
वील्हा विरतो ना भलो सण कीयों वुणों वह ॥ १४ ॥

३१७ कलस, पाहल, विवाह पद्धति । अपूर्ण । देशी पत्र–१ । खण्डित । आकार–१० २५X ४ २५ इ च । हाशिया–नाम मात्र को । कुल २४ पक्तियाँ । अक्षर–प्रतिपक्ति–४३–४५ । लिपि–सुपाठ्य । लिपिकार अज्ञात । अनुमानत सवत १८५० के लगभग लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान–लालासर साथरी ।
आदि–तेरीजा करी ॥ सतान की वेर्जा करो ॥ आई बलाइ दफ करो ।१ । टेक ।
वार लाप छराणव हजार त्रेता जुग प्रवाण
अन्त–विज नार जाय जादु । बीज नी कवि जना । मोरी क मोरा । नव वव
बोहो हलाली सुकर ।

३१८ रदास कृत साखी–१, (छन्द ४) तथा फुटकर दोहे–४ । देशी पत्र–१ । यह तीसरा पत्र है । आकार–८ ५X४ २५ इ च । हाशिया–दाएँ, बाएँ–पौन इ च । कुल १८ पक्तियाँ । अक्षर–प्रतिपक्ति–३१ ३३ । लिपि–पाठ्य । लिपिकार अज्ञात । अनुमानत सवत १८७५ के लगभग लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान–साधु श्री हणूतरामजी, रडकली ।
आदि–दास कहै विणजारा त जलम लीयो ससार वे १ दूज पहर रण क विणजारीया
अन्त–हुसा न सरव (र) घणा वास घणी भवरा सुगणा न साजन घणां देस प्रदेस गया ४ ॥

३१९ पुहु पतीस की, लूर तथा २७ सुगाइयां की पुहु, अपूर्ण । देशी पत्र १ । आकार ८ ५ X४ २५ इ च । हाशिया दाएँ, बाएँ–पौन इ च । कुल २२ पक्तियाँ । अक्षर–प्रतिपक्ति–३२–३५ । लिपि–पाठ्य । लिपिकार–अज्ञात । अनुमानत सवत १८७५ के लगभग लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान–साधु श्री हणूतरामजी, रडकली ।
आदि–श्री विसनजी सत्य ॥ लीष्यतु पुहु पतीस की ॥ दूजै भादु की पुहु ॥ अ
पोल्हरी की पुहु
अन्त–थोरी गोदारी ॥ १७ । आल्हो जांघुव ॥ १८ ॥ चीवो सोहवो ॥ १९ लाहण
वरी २० ।

३२० पत्र सख्या–१०, तासरे स बारहव तक । अपूर्ण । देशी कागज । अत्यन्त जीर्ण, खण्डित । आकार–५ २५X३ ७५ इ च । हाशिया–नगण्य । पक्ति–प्रतिपृष्ठ–७–८ । अक्षर–

प्रतिपंक्ति-१५-१६ । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानतः संवत् १६०० के आसपास लिपिबद्ध । लिपि-साधारणतः पाठ्य । प्राप्तिस्थान-जागलू साथरी । इसमें ये रचनाएं हैं —(क) साईदीन के सवये-१३ (संख्या ६ से १८)। आदि के कुछ छन्द अपाठ्य । (ख) दीन दरवेस की कुंडलियां-६ । (ग) हींडोलणो, हीरानंद कृत-छन्द ७ । (८ वां अपूर्ण ।

आदि-(जीव थे) ट के सुल भुल गय यु इ पेट के काज भटकता है (१ वां छन्द)।

अन्त-सुजा सुरजन आलम केसो ग्यान का परवेस

चदण रायचद जसा पचायण सबद का आचा ।

३२१ साखी-१५, केसोजी, सुरजनजी, भीमराज, रायचद, ऊदोजी, गुणदास एवं अज्ञात कृत तथा प्रभु नामावली (सस्कृत)। पुस्तिका । प्राप्त पन्ना की सख्या-२३ (३ से २५)। अपूर्ण, खडित । देशी और मशीन के बने कागज । आकार-६.५×५ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इंच । पंक्ति-प्रतिपृष्ठ-९ । अक्षर-प्रतिपंक्ति-१५-१७ । लिपि-सुपाठ्य । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानतः संवत १९२५ के आसपास लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-महन्त श्री कौशलदासजी, आगूणी जागा, जाम्भा ।

आदि-सत जांणो ३ रे मन नाई सहज (राहा) ई पथा पथी नहिं कीजे । (-केसोजी)।

अन्त-जगन्नाथ जग जाडय विनाशन जामदग्नि घत ज्योति स्लवदे जल नाथि ॥

३२२ ककका बतीसी, ऊदोजी कृत । कुंडलिया-३६ । पुस्तिका । मशीन के बने कागज । आकार-६.७५×४ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-१ इंच । पंक्ति-प्रतिपृष्ठ-८ । अक्षर-प्रतिपंक्ति-१५-१८ । लिपि-पाठ्य । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानतः संवत् १९२५ के आसपास लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-पीपासर साथरी ।

आदि-ओं श्री जभ गुरुभ्यो नम अथ ककका बतीसी कवीत कुंडलीया ॥

कका केवल किष्ण भजो हृद धर विस्वास

अन्त-जभ गुरु आचार उर मै सत सब सिर रे वेसू

क्षक्षीय लग सब भया सपूरणां कह्या कुंडलीया कक सु । इती ।

३२३ साखी-४ । हरजी, साहबरामजी तथा अज्ञात कृत । पुस्तिका । मशीन का बना कागज । आकार-८.५×५.२५ इंच । हाशिया-नगण्य । पंक्ति-प्रतिपृष्ठ-१९-२० । अक्षर-प्रतिपंक्ति-१४-१६ । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानतः संवत १९५० के लगभग लिपिबद्ध । लिपि-अशुद्ध और घसीटी, साधारणतः पाठ्य । प्राप्तिस्थान-महन्त श्री भोलारामजी, विश्णोई मन्दिर, रावतखेडा ।

आदि-श्री परमसरजी अथ साखी लीषतु मनो

मन सो बुरो न कोय सीव शकर सतावीयो,

पारबती पत सोय ॥ ध्यान अटारभ थापीयो २

अन्त-भभकार पकड पसारीयो चोक मे

नें जाण हे जुग ससार रे सायर भग सग रमे सपूरण ।

२४ गोत्राचार तथा होम के सबद-६ । १० पन्नो की पोथी । देशी कागज । आकार-

६×६ ७५ इ च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-१ इ च । पक्ति प्रतिपृष्ठ १२-१३ । अक्षर-प्रति पक्ति-१२-१३ । लिपि-पाठ्य । श्री गणेशरामजी द्वारा सवत् १६८० मे लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-श्री धोक्लराम विष्णुदत्त विष्णोई, दुलारावाली ।

आदि-लीपते गोतराचार उ जदु वास रघु पुजत ह साम मीघु - गुणे नीघु आकार पुतह

अन्त-रावण मत तो पडदे रायां ज्यू रावें पांन मनासपती ६ सबद सपुरणम सवद होम का पूरा हूवा लीपीकृत बाबा शाहबरामजी का पुत्र गणेसराम पठणाप्रथे सेर थापन म लीप्या सनद रहै मी० पोह सुदी १४ स० १६८० हाथ पाव कर कुबरो नीच मुख अह नन इन कसटां पोथी लीषी नीके रचीयो सैन वाच जोस कु नीवण

३२५ गुटका । फोलियो सख्या-८१ । मशीन का बना कागज । आकार ६ ५×४ २५ इ च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इ च । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-८ । अक्षर-प्रतिपक्ति-२०-२१ । लिपि-स्पष्ट एव सुपाठ्य । विष्णोई प्राणसुख द्वारा सवत १६१६ मे लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-जागलू साथरी । इसम ये रचनाएँ हैं -(क) नवण । (ख) विष्णु पजर स्तोत्र (सस्कृत, श्लोक-२५, ब्रह्माण्ड पुराणे इन्द्र नारद सवादे)। (ग) सबदवाणी, सवद सख्या-१२०, बिना प्रसग । भलीयो होय तो भल बुद्धि भाव ॥ बुरीयो बुरी कमाव ॥ १२० ॥ इति श्री शब्दवाणी श्री जाभजी की सपूरण ॥ १ ॥ सवत १६१६ रा वृषे मिती कातिक वदी ६ लीपी कृत विष्णोई प्राणसुख नगीने वाला ॥ (घ) मगल का ।

आदि- ॥ उ श्रीगणेशायनम ॥ लिषते नोवण ॥ उँ विष्ण विष्णु तू भण रे प्राणीं ॥ साघे भवते उघरणों ॥

अन्त-भगवान भवतां भाजवा महर पधारे महमाण १ । इति मुगल का सपूरणम १ ।

३२६ गुटका । फोलियो सख्या-४६८ । देशी कागज । आकार-६×४ २५ इ च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इ च । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-८ । अक्षर-प्रति पक्ति-१६-१६ । लिपि-सुन्दर और सुपाठ्य । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत् १८५० के लगभग लिपिबद्ध । बीच म कई पृष्ठ रिक्त हैं । प्राप्तिस्थान-जागलू साथरी । इसम ये रचनाए हैं —(क) सबदवाणी । सवद सख्या-१२०, बिना प्रसग । भलीयो होय तो भल बुधि भाव ॥ बुरीयो बुरी कमाव ॥ १२० ॥ इति श्री शब्दवाणी श्री जाभजी की सपूरण ॥ (ख) पाडव गीता (सस्कृत), श्लोक १६३ । (ग) श्री भगवदगीता (सस्कृत), १८ अध्याय । (घ) एकादशी महात्म्य-२६ अध्याय । चौपइया म । इति एकादसी री कथा सपूरण छ ॥ (ङ) जन्म अष्टमी की कथा, चौपई-३१ ।

आदि- ॥ द ॥ श्री गणेशायनम ॥ अथी शब्द वाणी श्री जाभजी की लिषत ॥ उँ गुर चीन्हों गुर चीन्हि पिरोहित गुर वि धम बर्याणीं ॥

अन्त-एक जन्म अष्टमी व्रत करावे ॥ चोवोस ग्यारस को फल पावे । या विधि रांम कृष्ण ने कहे ॥ निरखे कु क नवधा मे है ॥ ३१ ॥ इति श्री

ब्रह्म ड पुराण ब्रह्म नारद सवादे जन अष्टमी कथा सपूर्ण । यह पुस्तक साधु जीया रामजी री छ दसकत साधु मगलदास रा छ ।

३२७ रुक्मणी मगल, पदम भगत कृत । प्रत्येक राग रागिनी के अ तर्गत आए छन्दो की म० पृथक् पृथक् है । पत्र सख्या-८३ । अपेक्षाकृत मोटे देशी कागज । आकार-११×५ ५ इ च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-एक इ च । पक्ति-प्रति पृष्ठ-१० । अक्षर-प्रतिपक्ति-२६-३० । लिपि-पाठय किन्तु बीच मे कई पत्रो के आपस मे चिपक जाने से अपाठ्य । श्री साहबरामजी द्वारा सवत १९३५ मे लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-लोहावट सायरी ।

आदि-श्री विष्णजी श्री रामच द्रजी नम अथ श्री प्रदमईया कृत रुक्मणी मगल लिषत

दोहा-ससार सागर अथाग जल ॥ सूझत वार न पार ॥

गुर गोबिद कृपा करो ॥ गावा मगलचार । १ ।

अन्त- जो मगल कू सु न गाय गु नहै बाज अधिक बजाय

पूरण ब्रिह्म पदम के स्वामी मुक्त भवत फल पाय ५ ॥ १९२ ॥ ईती श्री पदम ईया कृत रुक्मणी मगल सपूरण १ समत १९३५ रा वष मीती भाद्रवा व्द ४ वार आदितवारे लोपीकृत शाध श्री १०८ श्री म्हतजी श्री आतमारामजी का सिष शायबरामेण गाव फीटकासणी मेघे विष्णुजी के मीदर म जीसी प्रीत देषी तसी लिषी मम दोस न दीजीये—हाथ पाव कर कुबडी मुष अरु नीचे नेन । ईन कष्टा पोथी लीषी तुम नीके रापीयो सेन सुभमस्तु कल्याणमस्तु विष्णुजी । (भिन्न हस्तलिपि म) प्रीत व्यावलो श्री क्सिन रुक्मणी रो मगलाचार री पोथी साद गोविंददास विष्णु वईरागी की कोई उजर करण पाव ही ॥ साद रुपराम विसनोइया रा कना सु लीनी छ गाव रामडावास रा छ ।

३२८ हींडोलणो, हीरानद कृत । छ द-८ । देशी पत्र-१ । खण्डित । आकार-१० ७५× ५ ५ इच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इच । कुल २३ पक्तियाँ । अक्षर-प्रति पक्ति-३०-३३ । लिपि-सुन्दर एव सुपाठय । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत १८७५ के लगभग लिपिबद्ध । डोली गाव (जोधपुर) से श्री महीरामजी धारणिया (सगरिया मडी) को प्राप्त ।

आदि-श्रीराम सत स कामण चली हीडोलण गाव आल जाल । जभ अचभो न गावही

अन्त- चदण रायचद जसा पचाय(ण) सबद का उ आचार

हीरानद की अरज सेती सगत पार उतार ८ ।

३२९ कथा अहदांणों, ऊदो कृत । अपूर्ण । मशीन का बना कागज । प्राप्त पत्र सख्या-२२ । जीर्ण, खडित । आकार १० ५×५ २५ इ च । हाशिया-दाएँ, बाएँ एक इ च । पक्ति प्रतिपृष्ठ-११ । अक्षर-प्रतिपक्ति-२८-३० । लिपि-पाठय । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत् १९५० के लगभग लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान डोली गाव (जाधपुर) से श्री महारामजी धारणिया (सगरिया मडी) को प्राप्त ।

आदि-श्री विष्णजी ॥ सत सही ॥ लिपत कथा अहदाणों ॥ राग धनासी ॥

पणउ गुणोउ गुणों गहीर ॥ मुस चड फरस जो कर ॥
को को दोव वि यांयक हूर ॥ १ ॥

अंत– रे मंन जगत सुपनो जाणि ॥ ओ ससार विकार परहर सिवर सीरजणहार ॥
राग घोवल । चोयपहर रो विचार अणदकुवरी सुहणों सह । नीस दीन अ धारी
रात ॥ ईद्र भुवण ओवचाट हुव ॥ ईद्र देव ।

३३० पत्र सख्या–७३ । अपेक्षाकृत मोटा देशी कागज । आकार–१० ७५×५ ५ इंच । हाशिया–दाएँ, बाएँ–सवा इंच । पंक्ति–प्रतिपृष्ठ–९ । अक्षर–प्रतिपंक्ति–२६–२८ । लिपि–सुन्दर एव पाठ्य । सवत १६३६ म रावलदास द्वारा लिपिबद्ध । डोली गाव (जोधपुर) से महीरामजी धारणिया (संगरिया मंडी) को प्राप्त । इसम ये रचनाएँ हैं —(क) कथा लोहापागल की, केसोजी कृत । छद १३२ । (ख) कथा सत जोपाणी का, केसोजी कृत । छद–१०६ । (ग) कथा जैसलमेर की, वील्होजी कृत । छद–१४६ । (घ) चत्रामणी, सुरजनजी कृत । छद–३१ । (ङ) ग्यान माहातम, सुरजनजी कृत । छद–२०१ ।

आदि– ॥ श्री विनजी सति सही लीपतु कथा लोहापागल की ॥ राग हसो ॥ दुग-
नीरहारी पहली नीउ ॥ उरि मेटो अपराध ॥
सीवष सीरजणहार ने ॥ जीह सीमरे सुर साध ॥ १ ॥

अंत– जन सुरजन की वीनती ॥ अरज कह लिव लाय ॥
पाच साता नव बारहा ॥ इब के मोही मिलाय ॥ २०१ ॥ ईति ग्यान महातम सपूरण ॥ समापत्ता ॥ समत १६३६ का मीती मीगसर सुद ५ पचमी वार वहस्पति । लिपिकृत श्रीमाली ब्राह्मणो रावलदास ॥ जोधपुर नगर ॥ पठनारथ ॥ सा गगा दासजी चेला मोतीरामजी का ॥ + + + यह वात इण मीनोष मे कही है के पुसतक सु इतनी चीज आगी रापणी एक तो तेल १ दुजो जल २ और मुरप के हाथ नही देवणी पुसतक ॥ १ ॥ वाचे जीण न राम राम वचसी ।

३३१ कक्का छत्तीसी, ऊदोजी कृत । कुडली–३७ । पत्र सख्या–९ । अपेक्षाकृत मोटा देशी कागज । खण्डित । आकार १४×५ ५ इंच । हाशिया दाएँ, बाएँ–डेढ इंच । पंक्ति प्रतिपृष्ठ–७ । अक्षर–प्रतिपंक्ति–३०–३३ । लिपि–सुन्दर एव सुपाठ्य । सवत् १६४० म साधु सतोषदासजी द्वारा लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान–जागू साथरी ।

आदि–उ श्री गणेशायनम अथ कक्का छतीसी प्रारभे ॥
ओं कक्का केवल कृष्ण भजो हिरद धर विस्वास ॥
आन भरोसा छाड दे ॥ राख राम की आस । २ ।

अंत– अक्षर पतीसां ऊपर ॥ कवित छत्तीस विचार ॥
उदय बरप चौरासियो । कहि सवत अठार । ३७ । इति । श्री । उदयराम कृत कक्का । छतीसी सम्पूर्णम् ॥ सवत् १६४० मिति आश्विन मासे कृष्ण पक्षे तिथौ दशम्याम् बुधवासर ॥ लिपिकृतम् । साधु । श्री १०८ । महाराज बालकरामजी का शिष्य सतोषदासजी लिखा ग्राम रामडावास मध्य श्री ॥

३३२ हरजस २८। मीरां–५, सूरदास–४, रामप्रताप–१, दयाल १, बखतावर–३, बखना १, अज्ञात–१, रदास–२, नामदेव–१, लाल्दास–३, कबीर–३, रामदास–१, सतदास–१ तथा ध्यानदास १। पत्र सख्या १४। देशी कागज। आकार–८ २५×३ ७५ इ च। हाशिया–दाएँ, बाएँ–पौन इ च। पक्ति–प्रतिपृष्ट–८। अक्षर–प्रतिपक्ति–२१-२३। लिपि–पाठ्य। लिपिकार–अज्ञात। सवत १८८६ म लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान–पीपासर माथरी।

आदि–श्री विसनजी राग वहग ॥ एकर मु मुप बोल रे मेरे प्यारे हो जोगी टे० सींगी नाद भभुत का बटवा मू द मती दिरग बोल रे मेरे प्यारे हो जोगी (मीरा)

अन्त–वेद पुराण सास्त्र कहू हरजन कह्त वजाय

जती सती सिव सेस कह ध्यानदास लिवलाय १३ इति श्री ग्रथ हरजस सपूरण वर्षे मीती मगसर सूदी समत १८ रा ८६ गाव वावी मधे म वाच विचार जिसकु राम राम।

३३३ गुटका। फोलियो सख्या–१४२। बीच के कई पन्ने अप्राप्य। जीर्ण, खडित। देशी कागज। आकार–८×५ ५ इ च। अनेक लिपिकारा द्वारा लिखे जाने के कारण पक्ति प्रतिपृष्ठ और अक्षर–प्रतिपक्ति में एकरूपता नही है। हाशिया–किनारो पर–१ इ च। सवत १७१०० (१७००) (छ) से १९२३ (ञ) तक की लिपिबद्ध रचनाओं को एकत्र कर सिलाई किया गया है। लिपि–सामान्यत पाठ्य। प्राप्तिस्थान––श्री भागी (सुपुत्र श्री चोखा वणिहाल), गाव ढाणी खासा महाजनान, पो० किरमारा (तहसील फतहाबाद, हिसार)। इसमे ये रचनाएँ हैं –(क) लघु चणाइक्य राजनीत सास्त्र, ८ अध्याय (सस्कृत)। (ख) गरभ चितावणी–रामचरणजी कृत। छद १२८। (ग) देवियो कृत १ सवया, फुटकर दोहे–४। (घ) लुक्मान हकीम की कही न्याय नसीयत (अपना बेटा कू)। वचनिका शैली म ८५ नसीहत। (ङ) देवीदास रा क्वत राजनीत रा। कवित्त–१९। (च) फरीदजी माहाराज को कह्यौ काफर बोघ। गद्य पद्य में। समत १९१५ रा वसाप सुदि ३ लिप्त माघ सम्पदास (छ)सबद जोगारभ का। इसके अतगत इन कवियो के पद या भजन हैं–गिर–२, लालदास–४, कबीर पद–८, सवए–२, गोरख–१, रामदे–१, लिछमण–१, सोनी अपो–१, अज्ञात–१, लिपमो १, अज्ञात सवए–२, कमाल–सवया–१, नामदेव की साषी–१, गुरुदेव परताप सु दास नामा कहै मुगत क दम की रीझ पाया ॥ १ समत १७१०० स (१७००) रा अमाड व १३ ॥ नीसाणी हरीया की सत की ॥ (ज) हरीया की नीसाणी–१ (लिपिकार के अनुसार सख्या २ है)। (झ) अज्ञात कृत ख्याल–१,–साषी–१। मीर की कु डलिया–३, धरमाल–अज्ञात कृत–४ छद। (ञ) वमेक वारता री नीसाणिया, केसोजी कृत–नीसाणी–२९। इति श्री बीमेक वारता री नीसारणीया सपुरण समत १९२३ रा भादवा सुद १० वार बुध–पोथी बीसनोई पूमजी री छे सोभन मे लीपी छे। (ट) गिरधर की कु डली १। (ठ) उपदेस की नीसाणी १ कवि आलम कृत तथा अज्ञात कृत–१ पद। (ड) रामदास की साखिया। सख्या नही दी है। (ढ) बवुती (भभूती) मन्त्र,

जालमगरजी का सवया–१। (ए) कमाल, बखेदास, तुलछीदास, साँईदीन के एक एक सवए। दीनदरवेस–कु डली–२, लालगुलाम–१, कवित्त, कबीर का रेखता और दोहे, जन आतम, नाथूराम तथा अज्ञात कृत फुटकर दोहे। (त) गोतराचार, पाहल। (थ) विभिन्न मत्र–नागफणी स्योट कापीद का मत्र, धुणी का मत्र, वभुती का मत्र। (द) करमरेषा की पहचाण। समत १६१६ रा वसाक ब्द ७। हरजस फुटकर अज्ञात कृत। (ध) भुल की लछन, अज्ञात विष्णोई कवि कृत तथा फुटकर दोहा सवया। (न) गुणतीस धरम कवत। (अपूर्ण)। १८ दोष (सव–के तू कारण किरीया चूक्यो––)। (प) नरसीजी का भजन–१, इन्द्रजाल तत्र विधा मामग–(सस्कृत)। गोपीश्वत बामनोई पगारी-समत १६१५ रा मीती चत सुद १० गाव राणासर। (फ) कथा धुना री लावणी, भवानीसींग कृत, ६ छन्द। (ब) सरोदो, चरणदासजी कृत, छन्द–२४०। (भ) श्री रामचरणजी की वाणी अणभ–स्तुति का किवत, ग्रथ गुर महमा, २५ छन्द। ग्रथ नाव प्रताप (अपूर्ण), ५४ छन्द।

आदि–श्री गणेशायनम ॥ अथ चरणायका लिष्यते ॥

प्रणम्य शकर देव ॥ व ह्माण च जगदगुरु ॥ विष्णु प्रणम्य सिरसा ॥

वष्यामी सास्त्रमु त्तम ॥ १ ॥

अन्त–हिरदा सू ले धरणी गई ॥ नाभ कवल म चेतन भई ॥

सबद गु जार नाड सब जागै ॥ रू म रूम सीतग सो लाग ॥ ५४ ॥

नौ स नारी मगल गाव ॥ ता मधि (–रामचरणजी कृत ग्रथ नाम प्रताप)।

३३४ गुटका। अपूर्ण। फोलियो सख्या–१४२ (११६+२+१३+३+५)। किनारे खण्डित। देशी कागज। आकार–७ २५×५ इच। हाशिया–किनारो पर पौने इच। पक्ति-प्रतिपृष्ठ–६,११। अक्षर–समग प्रतिपक्ति–१६–२१, १४–२०। विहारी दास तथा अज्ञात लिपिकारो द्वारा सवत् १६३० म लिपिबद्ध। लिपि-पाठ्य। प्राप्ति स्थान-जागलू साथरी। इसम य रचनाएँ हैं –(क) सबदवाणी। सबद सख्या-१२०, बिना प्रसग। भलीया होय तो भल वुघ आव। बुरीया बुरी कुमाव ॥ १२० ॥ इति श्री सबदवाणी सपूण। (ख) विष्णु सहस्र नाम। (ग) विष्णु पजर स्तोत्र (सस्कृत)। (घ) रुक्मनी मगल-रामलला कृत। फो० ८५–११६। विविध राग-रागिनियों के अन्तर्गत छन्द स० पृथक्-पृथक् है। इति श्री रामलला कृत रुकमनी मगल समाप्त सवत १६३० मिति पाह वदी ६ लिषत विहारीदास। (ङ) फुटकर साखियाँ-जाम्भाणी (अपूर्ण)। (च) अमावस्या की कथा, मयाराम कृत। छन्द १४१। (छ) साखियाँ–६, जाम्भाणी। केसोजी–२, ऊदोजी–१, दामोजी १, भीवराज–१, और रिवदास कृत।

आदि–(तो) कन मोहा। अति धुरसांणी दोमत लोहा पांणी। छल तेरी खाल पखाला। सतगुर तोड मन का साला ॥

अन्त–चल्यो मस्सो पथ दुहली वाहा सु कर सनेह वे

जन रिवदास कहै (विण) जारा तरी परहर रूपी देह रे ४ (६)।

३३५ गुटका। प्राप्त फोलियो सख्या-६६। अपूर्ण, खडित। मशीन का बना कागज। आकार-८×५ ७५ इच। हाशिया-आधे से पौन इच। पक्ति-प्रतिपृष्ठ-एकरूपता नही है किन्तु साधारणत ११। अक्षर-प्रतिपक्ति-२२-२४। लिपिकार-अज्ञात। अनुमानत सवत् १९५० के आसपास लिपिबद्ध। लिपि-प्राय पाठ्य। प्राप्तिस्थान-जागलू साथरी। इसमे इन कवियो के हरजस, भजन आदि हैं —कान्हडदास, चद्रसखी, मीरा, तुलसीदास, रामसेवक, कृपाराम, नानकदास, रामचरण, लालदास, विष्णुदास, सूरदास, खेमदास, हरिदास, पूरणदास, कबीर, बखतावर, रामसरण, तानसेन, हरिराम, सेवादास, कालूराम, गगादास, केवलदास, जन रविदास, बुधरमल, चरणदास, जमलदास, सहज, रसिकनाथ, नागरीदास, साईदीन, सुरतराम, पोकरदास, (भजन १ तथा नुगरी सुगरो को झगडो), रामराय, औघड, दयाराम, मुरारीदास, नामदेव, माधोदास, नरसी, अनेक अज्ञात कवि तथा पदम भगत (कृष्ण रुक्मिणी विवाह सबधी)।

आदि-(फो० ७ के द्वितीय पृष्ठ के नीचे से)—

जल कसे भरू सरजू गहरो सनमुप राजा रामजी खडे (टेर)
अवधपुरी सों चली मेरी सजनी हाथ घडा सिर पर इडुरी १
अपने अपने भवन सू निकसी कोउ स्यामल कोउ गोरी घरी २। (-रामसेवक)

अत-कामण मिलकर कामण गाव क्रण क्वर कु सुप उपजाव
सेस सहस मुप पार न पाव जगत हेत नर चिरत दिपावं
पदम भगत तुमरो जस गाव वास बकु ठ, नहीं आव ६। (-पदम)

३३६ गुटका। देशी कागज। पत्र-सख्या-१०। आकार-६ २५×४ इच। हाशिया-नगण्य। कुल १७ पक्तिया। पक्ति-प्रतिपृष्ठ-८। अक्षर-प्रतिपक्ति-१३-१४। लिपि-पाठ्य। लिपिकार-ब्रह्मानदजी तथा अज्ञात। सवत १९५८ और उससे पूव लिपिबद्ध। डोली गाव (जोनपुर) से श्री महीरामजी धारणिया (सगरिया मडी) को प्राप्त। इसमे ये रचनाएँ हैं-(क) जाम्भोजी, विष्णोई पथ तथा २९ धम नियमों सबधी विशेष विशेष ज्ञातव्य। (ख) भगव रो जाप (मत्र)।

आदि-श्री जभ गरुभ्योनम ॥ ईस बीसनोईया के होन का नीमित ॥ और देसा ओर गावा ॥ आर अवतारी के माता पाता ॥ ओर ओतार लेने की अभुतता ॥

अत-इड कमडल विरमा दोनी ॥ सदा सोव दोनी झारी ॥
भगवा वसतर विसनु दीना वीचरो बीरमा चारी इती मत्र सपूरण ॥ १९५८ माह वदी १३

३३७ श्री जभेस्वर जनम कथा, किसोरीलाल कृत। (अपूर्ण)। पुस्तिका। मशीन के बने ८ पन्नो का। आकार-८ ५×६ इच। हाशिया-नगण्य। पक्ति-प्रतिपृष्ठ-१६-१७। अक्षर-प्रतिपक्ति-१८-२२। लिपि-पाठ्य। लिपिकार-अज्ञात। अनुमानत सवत् १९८० के आसपास लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-भीयाराम विष्णोई, सदलपुर (हिसार)। आदि-श्री जभेस्वर जनम कथा दोहा नासे विघ्न समुल ते श्री गणपति को नाम

जां चितवन विन होत नां देवनहु का कांम
अन्त-नांत ने ध्यांन लगावे फल ईच्छा पुण पाये छद कहे कीसोरील कटे जजाल है
पुसहाल अ ति मोल भात भराये जो कर्के ॥ ४ ॥

३३८ पुस्तिका । फोलियो सख्या-१५ । मशीन का बना कागज । आकार-८ ५×५ २५ इ च । हाशिया-नाम मात्र को । भिन्न हस्तलिपियो म होने से प्रतिपृष्ठ म ६ से १२ तक पक्तियां तथा प्रतिपक्ति म १२ स २४ तक अक्षर । लिपि-प्राय पाठय । फो० ८ पर दसक्त तालोकन्दास र हाथ रा छ समत १६५८ मीत फगण सुन्द १४ लिखा है । प्राप्तिस्थान-जागलू साथरी । इसम ये रचनाएं हैं —(क) पदम कृत कृष्ण-रुक्मणी विवाह सम्ब धी पद । (ख) फुटकर रचनाएं-कबीर, तुलसीदास, पदम के हरजस, साहबरामजी का १ छप्पय तथा रायचद कृत १ साखी । (ग) शकर कृत १ भजन ।
आदि-श्री जभगुरुवेनम दोहा-हरिबुध हरिदास सों ॥ कहो देस री बात
आनद थांरो राई रुक्मण कहो कुसलात १
अन्त-तार पहु च गया धुर नदन में सब बसतु है इस फवन में ॥
कहेता ग्रान नीता के ॥ सक्र को टेक मोलती है ५ ॥

३३६. रुक्मणी मगल, पदम भगत कृत । विभिन्न राग-रागिनियों के अन्तगत छद सख्या पृथक पृथक है । पुस्तिका । अपूर्ण । जीर्ण, खडित । (पृष्ठ २५ से २३८ तक) । आकार-६×७ ७५ इ च । हाशिया-नाम मात्र को । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-१७ । अक्षर-प्रतिपक्ति-१५-१९ । स्वामी ब्रह्मानदजी द्वारा सवत १६५८ के लगभग लिपिबद्ध । लिपि-पाठय । प्राप्तिस्थान-जागलू साथरी ।
आदि-पाच सहस्र हस्ती श्रृ गारा सात सहस्र केकाणो
सोवण साज वणो अति सुन्दर हीरा जडित पीलाणो २ (पृष्ठ २५)
अन्त-दन २ पुत्र एक २ कन्या तरुणी यह चक दीनो
निराकार निरलेव निरजन यो रग माया भीना ३
अपनो २ पोल निरन्तर भजन करत हैं नारी पदम स्याम सुखदायक नायक ।
(पृष्ठ २३८)

३४० पुस्तिका । पृष्ठ सख्या-५८ । मशीन के बने कागज । आकार-५ ७५×६ ७५ इच । हाशिया-नगण्य । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-१२-२५ । अक्षर-प्रतिपक्ति-१०-१५ । लिपि-पाठ्य । मगे मोदारे द्वारा सवत १९९३ म लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-साधु श्री मिश्रा रामजी महाराज, गाव गुडा (जोधपुर) । इसम ये रचनाएं हैं —(क) वीष्णु चरात, ऊधोजी कृत । छद सख्या-११० । ईती श्री वीसनुचरीत सपुरणम् ॥ समत १६६३ रा जेट वद १२ ने । (ख) जभ स्तुति-अज्ञात कृत । छ द ५ । (ग) साखी-१, साहब रामजी कृत । (घ) वनानाथ के भजन-८ । (ङ) अखनुराम की कु डलिया-२ तथा हरिया, सुखराम और हरिराम कृत भजन ।
आदि-॥ उ ॥ श्री वीष्णुवेनम ॥ अथ वीष्णु चरीत लीषते ॥

चौपाई ।। श्री गुरु सत चरण सीर नांउ ।। अज्ञा होय वीष्णु जस गाऊ
महावीष्णु के चरीत अपारा ।। सुर नर मुनी जन लहे न पारा । १ ।
अंत-नाभी नगर नागणी जागी ।। जाकु देव सकल जग भागी ।।
असो नागण न सब जुग पाया ।। जा यां सतगुरु पुरा ही पाय ।। १५ ।। (वनानाय)

३४१ हीमतराय की रचनाएँ । अपूर्ण । पुस्तिका । प्राप्त पन्ने-१५ । मशीन के बने कागज । आकार-८×६ २५ इन्च । हाशिया-नगण्य । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-१६ । अक्षर प्रतिपक्ति-१७-२१ । लिपि-घसीटी किन्तु सामान्यत पाठ्य । श्री कनीराम गायणे द्वारा स० २००० के आसपास लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-श्री कनीराम गायणा, गाव जेसला (फलोधी) ।
आदि-कोरतार ।। दुदजी डेरा कीया कुव उप्र आय
सनवधी मेला कीया जाजम दई वीछाय ।।
अंत-केइ दीनो के वाद लोहापागल वन म जावर सेरनाय अघोरी का चेला हो गया तपमा करन लाग्या फेर तपसा का घमड कीया अवर आसन वठ के कहा की मे लीछमण का अवतार हु ढाइ सो चेला लेकर समराथल आया ।

३४२ साधु जगदीशराम कृत साखियाँ-१०, भजन-३, आरती-१ और फुटकर छन्द तथा चन्दू, राजाराम गायणा, रिसीलाल, शकरदास, सूरदास और गोरख के फुटकर पद । पुस्तिका । अपूर्ण । मशीन का बना कागज । आकार-८ ५×७ इन्च । हाशिया-नाम मात्र को । प्रतिपृष्ठ मे पक्तियों की एक रूपता नही है । अक्षर भी छोटे बडे हैं ।लिपि-पाठ्य किन्तु अशुद्ध । साधु श्री जगदीशराम द्वारा अनुमानत सवत् २००० के लगभग लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-भीयासर साथरी ।
आदि-आत्मा रूपी एक परवत है तिस ऊपर आकास रूपी वन है तिस विषे ससार रूपी वृक्ष लगे हुवे हैं
अंत-शकरदास दुज सन्त बिचारी मृगा ने सिंह दबाया है
कलटा ग्यान समझे कर देखा जद ये मन पतियाया है ।। ४ । (३६ वा पन्ना)

३४३ जगमालदास कृत १ आरती तथा जगदीशराम कृत १ साखी । मशीन-बना एक पत्र । आकार-१३ ५×४ २५ इन्च । हाशिया-नगण्य । कुल ५७ पक्तिया । अक्षर-प्रतिपक्ति-१२-१३ । लिपि-पाठ्य । सवत् २००३ म जगदीशराम द्वारा लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-भीयासर साथरी ।
आदि-आरती रामजी श्री जाभाजी की
ओं जे श्री जभ ओंकारा ब्रहमा सीव सनकादिक गावत है सारा
हरी हरी हरी जभ देवा टेर (-जगमाल्दास)
अंत-दुरयोधन को मान घटाये भाल वीदुर के जावीयो
जगदीस गुरुजी आगी कर रे पुकार पार लगावियो (जगदीशराम) समत २००३ मीती सावरा वद १४ यह साषी जगदीस लीखी छे

३४४ पुस्तिका । मशीन का बना कागज । आकार-६ ५×४ इन्च । हाशिया-नगण्य । प्रति-

पृष्ठ म पंक्तियो और प्रतिपंक्ति मे अक्षरा की, छोटे बडे होने से एकरूपता नही है। कई पृष्ठ अधूरे लिखे हैं। लिपि-सामान्यत -पाठ्य। अधिकाश अ श साधु श्री जगदीशराम द्वारा अनुमानत सवत् २००० के आसपास लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-मन्त श्री भोलारामजी, विष्णोई मदिर, रावतखेडा। इसम रामानन्द के ५ भजन, साब्चार, पचीकरन, अनेक मत्र (सस्कृत), ३५ पृ ह तथा साधु जगदीशराम का १ ह और २ साखियां हैं।

आदि-ओ३म् हरये नम भजन कीतन (१)

गाय गाय नित गुण गोविन्द रा कलीमल हरसी रे

हरिगुण गाय ले। टेर। (-रामानन्द)

अन्त-दस धाम सोध छो नास हुवे सब ताप

जगदीशराम खुद देख लो घट ही मे गरू आप ॥ २ ॥

३४५ साधु जगदीशराम कृत ३ भजन। मशीन के बने छोटे छोटे ३ पन्नो म। रचयिता द्वारा सवत २००० के आसपास लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-भीयासर साथरी। इनम ये भजन हैं—पत्र १-बिना विद्या के प्रताब मोक्ष पद केस पावे रे।

पत्र २-ये तो दरसन दीजो माने आयो गुरुजी माने तारो नी।

पत्र ३-द्वार गुरु सरण तुमार कृपा मो पर कीजो रे।

३४६ विवाह पद्धति। अपूरण, प्रथम पत्र अप्राप्य। पुस्तिका। मशीन का बना कागज आकार-८ ५×६ ७५ इन्च। हाशिया-नाम मात्र को। दो हस्तलिपिया म। पंक्ति प्रतिपृष्ठ-१६-१८, १०। अक्षर-प्रतिपंक्ति-क्रमश १६-२३ और १२-१५। लिपिकार-अज्ञात। अनुमानत सवत् २००० के आसपास लिपिबद्ध। लिपि-प्राय पाठ्य प्राप्तिस्थान-भीयासर साथरी। इसम अनेक मत्र, वील्होजी, तेजोजी के कवित्त आशीवचन, नाम, तथा रामचन्द्र, राधाकृष्ण और मगल के शाखोच्चार हैं।

आदि-चतुदसे उत्पनो गनिवासरे ऊरष मुखे दृष्ट पताले अगोचर पावतुवाच

कवण से माता कवण से पीता कवण से गोत्रे के जीम्या प्रकासते

अन्त-सहर फतेपुर वास है जन्म मोसर कुल गाय

हरसुख सुत प्रताप ही साखा कही बनाय ॥ ४१ ॥ (मगल की शाखोच्चार)

३४७ मीरां का भजन-१ तथा अज्ञात कृत जाम्भोजी सबधी भजन-१। देशी पत्र-१। पत्र खडित होने से अ तिम भजन अपूरण। आकार ४ ५×३ ५ इन्च। हाशिया-नही है कुल-२५ पंक्तियाँ। अक्षर-प्रतिपंक्ति-११-१३। लिपि-पाठ्य। अज्ञात लिपिकार द्वारा अनुमानत सवत १८५० के आसपास लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-पीपासर साथरी

आदि-देयो री सहेलां मारो मोहन मायण लुटजो। टेर (-मीरां)।

अन्त-भगवों टोपी भगवों चोलो भलो सु रगो भेष ५।

३४८. उमाहो-वील्होजी कृत (अपूरण) तथा तेजोजी कृत १ कवित्त (गुगल मत्र)। देशी पत्र १। खडित। आकार ८ ७५×४ इन्च। हाशिया-नगण्य। कुल १३ पंक्तियाँ। अक्षर प्रतिपंक्ति-२८-३०। लिपि-पाठ्य। साधु परसरामजी द्वारा अनुमानत स० १८

के लगभग लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-श्री सिमरथाराम थापन, लाम्बा (जोधपुर)।

आदि-मन रातो साम सु गुदड्यो गुणा री गहीर १६ निरधनीया धनवाल हो क्रि
पण वाल्हो दाम विर्योमां न वाल्हो कामणी तेरा साध विसन के नाम १७
(-वील्होजी)

अंत-क्व तेज पयप जोडि कर आसा पूरण अभेमण
भगवांन भगत भो भजबा महर पधारे महमाण १ ।। (तेजोजी) लिप्यते सा य
फरसरामजी स्वयं

३४९ ज्ञानचिरी, वील्होजी कृत । छन्द सख्या-१२६ । अपूर्ण । देशी कागज । प्राप्त पत्र
सख्या-४ । आदि के ५ तथा ६ वां पत्र नही है । आकार-६×४ इंच । हाशिया-
पौन इन्च । पक्ति प्रतिपृष्ठ-१० । अक्षर प्रतिपक्ति २८-२९ । लिपि पाठ्य । लिपि-
कार-अज्ञात । अनुमानत सवत १८७५ के लगभग लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-पीपासर
साथरी ।

आदि-री कहुँ क्द करारी धार मुप त बोल मारो मार ६२
तिल तिल कर सौ काट पिंड काट कपट करे पड कुपड
बाट बिहच कर जूजूया तौऊ जीव न छूटे मूवा ६३

अंत-सोर्ठा-सत सु धम विचार धर्मा उपर भाव है
दो यों पथ सवार मन मान जिह जावहू २९ (१२९) इति श्री ज्ञानचिरी
सपूर्णम् ।

३५० सध्या बदन मत्र । मशीन का बना १ पत्र । आकार-८×६ इंच । हाशिया-पौन
इन्च । कुल १५ पक्तिया । अक्षर-प्रतिपक्ति-२०-२३ । लिपि-सुपाठ्य लिपिकार-
अज्ञात । अनुमानत सवत १६४० के लगभग लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-जागलू साथरी ।

आदि-श्री जभेगुरुवे नम अथ सध्यावन्न मतर लिषते ।।
उं विसनु विसनु तू भण रे प्राणी ।। साधे भगते

अंत-तेतीस कोड वकु ठ पहु ता यू साच सतगुर को मतर कहिये
इति श्री जभ तातू सवादे स या वदन मन सपूर्णम्

३५१ साखी २, हरजी कृत । मशीन के बने २ पत्र । आकार ८ ५×५ २५ इ च । हाशिया
नगण्य । कुल ६३ पक्तिया । अक्षर-प्रतिपक्ति-१५-१८ । लिपि-पाठ्य । दोना द्वारा
अनुमानत सवत १९५० के आसपास लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-महन्त श्री भोलाराम
जी, विष्णोई मन्दिर, रावतखेडा ।

आदि-राजा बल क दुवार जाचण आयो नरहरी
बावन रूप मुरार तीन पेड सब धर करी

अंत-हरजो हर की आस लोहट घरे बधावणो
कुल पुवार तण प्रगास पीपासर प्रगट्यो सही । ५ । साखी सपुरण छ द ।।
दोना रा छ

३५२ लिखत, लोहावट गाव के लोगों की । कतिपय धम-नियम पालन करने सम्ब धी ।

देशी पत्र-१ । स० १८६२ म फागुन सुदि १५ को लिखित । प्राप्तिस्थान-लोहावट साथरी ।

३५३ लिखत, लोहावट गांव के लोगों की । धर्मनियम पालन-सम्बन्धी । देशी पत्र-१ । थापन राउ द्वारा लिखित । लिपिकाल अनुमानत स० १८६२ के आसपास । प्राप्तिस्थान-लोहावट साथरी ।

३५४ मेले मुकाम पर की गई, धर्म-नियम पालन सबधी संवत १८७२ की लिखत की नकल । मशीन का बना कागज-१ । नकल का समय-सवत १९५० । प्राप्तिस्थान-लालासर साथरी ।

३५५ रुक्का, पानी निकालने-पिलाने सबधी । मशीन का बना कागज-१ । सवत १९८९ फागुन सुदि ११ का लिखा हुआ । प्राप्तिस्थान-लोहावट साथरी ।

३५६ वंशावली (आदि विष्णु से निद्रजी का शिष्य परम्परा) । देशी पत्र-१ । खडित । आकार-२६×२५ इञ्च । हाशिया-नहीं है । कुल ६५ पक्तियाँ । अक्षर प्रतिपक्ति-६-८ । सवत १९०१ मे दयाराम द्वारा लिपिबद्ध । लिपि-पाठ्य । प्राप्तिस्थान-श्री रामनारायणजी खीचड, भूलनिया (नाढोडी) ।

आदि-॥ श्री विष्णवेनम अथ प्रथम आदि दशावली लिषत ॥

प्रथम आदि विष्णु १ को व्रह्मा २ को मरीचि ३

अन्त-४१ रावलजी चेला ८ सजरामजी मयारामजी बालकिष्णजी केसोदासजी ४१

समत १९०१ रा वर्षे मिती वैशाष सुदि १४ लिषत दयाराम

३५७ जाम्भोलाव पर 'पछेवडी' फिराने सम्बन्धी उल्लेख । देशी पत्र-१ । सवत १८११, चैत वदि ११ को दयारामजी द्वारा लिखित । प्राप्तिस्थान-महन्त श्री रणछोड्दास जी, जाम्भा ।

३५८ सूत फिराने पर 'पीछोवडी' बांटने सम्बन्धी उल्लेख । देशी पत्र-१ । सवत १८२३ मे लिखित । लिपिकार-अज्ञात । प्राप्तिस्थान-पीपासर साथरी ।

३५९ लिखत, रुडकली गाव मे मुर्गे मारने सबधी, स० २००१, माघ सुदि ११, वार रवि वार को । मशीन का बना कागज-१ । प्राप्तिस्थान साधु श्री हणूतरामजी, रुडकली ।

३६० लोहावट साथरी मे मवाड के विष्णोइयो द्वारा स० १९८३ फागुन सुदि ८ को किये गए चन्दे का उल्लेख । मशीन का बना कागज-१ । लिपिकाल-यही । प्राप्तिस्थान लोहावट साथरी ।

३६१ परवाना, जोधपुर के महाराजा मानसिंहजी का । सवत् १८७८ मिगसर सुदि २ का । सावडाऊ गाव पर, खेजडी आदि न काटने सबधी । देशी पत्र १ । प्राप्तिस्थान-लोहावट साथरी ।

३६२ परवाना, जोधपुर के महाराजा श्री विजयसिंहजी का । सवत १८२१, जेठ सुदि ५ का । जोधपुर परगने के समस्त गावो के पटटायतों पर, विष्णोइयो से कर और बेगार न लेने सबधी । देशी पत्र १ । प्राप्तिस्थान-महन्त श्री रामनारायणजी, रामडावास (जोधपुर) ।

३६३ परवाना, जोधपुर के महाराजा मानसिंहजी का। सवत १८६०, पोह सुदि १४ का। विषय वही जो परवाने सख्या-३६२ म है। प्राप्तिस्थान-मह्न्त श्री रामनारायणजी, रामडावास (जोधपुर)।

३६४ परवाना, उदयपुर के महाराणा भीमसिंहजी का। सवत १८७४, आषाढ वदि २ का। पुर के नायक मानसिंहजी को, छूट के सबध म। देशी पत्र-१। प्राप्तिस्थान-मुखिया नायक श्री सुखलालजी मागीलालजी, पुर।

३६५ परवाना, उदयपुर के महाराणा जवानसिंहजी का। सवत १८८५, मिगसर वदि १३ का। पुर के नायक सिवलालजी का, छूट के सम्बन्ध म। देशी पत्र १। प्राप्तिस्थान मुखिया नायक श्री सुखलालजी मागीलालजी, पुर।

३६६ ताम्रपत्र-उदयपुर के महाराणा सरूपसिंहजी का। सवत १९०६, वैमाख वदि १२ का। विष्णोई साधु मनीराम मगनीराम को, दरीवा मे २॥ बीघा धरती और बावडी सबधी। प्राप्तिस्थान-श्री नाथूलालजी ओदिया विष्णोई, दरीवा (भीलवाडा)।

३६७ भजन-२, रामलला का-१, तुरसी का १। देशी पत्र-१। आकार-५×१ ५ इच। हाशिया-नगण्य। कुल २८ पक्तियाँ। अक्षर-प्रति पक्ति-७-१०। लिपि-पाठ्य। लिपिकार-अज्ञात। अनुमानत सवत १९०० के लगभग लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-श्री धोकलराम विष्णुदत्त विष्णोई, दुतारावाली।

आदि-सांवरे सु प्रीति लागी री हिंवडा के बीचि। टेक।

अत-ताहू सिखर रिन दिन तुरसी। मनसा बाचा क्रमना। ३॥

३६८ गोविन्दरामजी कृत साखी-१। देशी पत्र-१। जीर्ण, त्रुटित। आकार-७ ७५×५ इच। हाशिया-नगण्य। कुल २७ पक्तिया। अक्षर-प्रतिपक्ति-२२-२४। लिपि-पाठ्य। लिपिकार-अज्ञात। अनुमानत सवत १९५० के लगभग लिपिबद्ध। प्राप्ति स्थान-श्री धोकलराम विष्णुदत्त विष्णोई, दुतारावाली।

आदि-॥ छद छप ॥ श्री जाभेश्वरधाम जाय जन धका ज पाव

अत-अडसठ तीथ उपर न जभ सरोवर धाम

जभेश्वर की दया सों वरणत गोविंदराम श्री जाभेसुर ध्याईये साषी सपुरणम्

३६९ जाम्भोजी की आरती, सख्या ६। देशी पत्र-१। खण्डित। आकार ११×४ ७५ इ च। हाशिया-नगण्य। कुल ५७ पक्तिया। अक्षर-प्रति पक्ति-१५-१८। लिपि-पाठ्य। श्री गणेशरामजी द्वारा सवत् १९४५ के लगभग लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-श्री धोकल राम विष्णुदत्त विष्णोई, दुतारावाली। इसमे ऊदोजी की ४, प्रीतम की १ तथा कबीर की १ आरती है।

आदि-श्री ॥ अथ आरती श्री जाभजी की ॥ सध्या समरण आरती भजन भरोस दास
मनसा बाचा करमना सतगुरु चरण निवास

अत-तुलछि को पात कहत मन हीरा हरप निरष जस गाव कबिरा ॥

आरती सपुरण भवेत गणेसजि म्हाराज की लिपत समाप्त

३७० बार मासी-बरामाह कृत। अपूर्ण। देशी पत्र-१। आकार-९ ५×४ इ च। हाशिया

नगण्य । पवित-प्रति पृष्ठ-१० । अक्षर-प्रति पंक्ति-३१-३५ । लिपि-प्राय पाठ्य । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत संवत् १८५० के लगभग लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-श्री धोकलराम विष्णुदत्त विष्णोई, दुतारावाली ।

आदि-श्री विष्णु प्रमात्मननम अथ यार मासो परा साहु मे ॥

दोहा-असाढ सम वीनतो कर । ॥ परासाहु अधोत ॥

तुम विन व्याकुल मन है जस जल विन मीन ॥ १ ॥

अंत-जल धार बरष मेघला अर कोकुला कुलात है

जोहै सुहागन पिया पियारी तीज पेलन जात है ॥ तु पहन बसु मी घो ।

३७१ विवाह पद्धति-जाम्भाणी । अपूर्ण । देशी पत्र-४ । जीर्ण, खंडित । आकार-१२X६ इंच । हाशिया दाएँ, बाएँ-पाव इंच । पंक्ति प्रतिपृष्ठ १३ । अक्षर प्रतिपंक्ति ३४ ३७ । लिपि-पाठ्य । सम्भवत श्री साहबरामजी द्वारा अनुमानत संवत् १९४० के लगभग लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-श्री धोकलराम विष्णुदत्त विष्णोई, दुतारावाली । इसमें गोत्राचार आदि वंसावली, यसदर के नाम, चौजुगी, सदाशिव महिमा, विवरत, कलस और पाहल है ॥

आदि-॥ ६ ॥ श्री विष्णुजी सत्य । लिषत गोत्राचार ॥ श्री महादेव उ०

उँ ॥ जद्र वास रूपू-

अंत-मछ की पाहल । कछ की पाहल । वाराह की पाहल । बावन की पाहल । नृसिंघ की पाहल-

३७२ प्रहलाद चरित-केसोजी कृत । अपूर्ण । छंद ८३ से ३८२ तक । आदि के ७ से २५ तक, १९ पत्र । देशी कागज । जीर्ण, खंडित । आकार-९ २५X४ २५ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-एक इंच । पंक्ति-प्रति पृष्ठ-११ । अक्षर-प्रति पंक्ति-२८-३१ । लिपि-सुपाठ्य । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत संवत १८५० के लगभग लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-श्री धोकलराम विष्णुदत्त विष्णोई दुतारावाली ।

आदि-घ स आगो ॥ मुक्त माड नवाई ॥ ८२ ॥

समहि पाग आण्यो उर ऊपरि ॥ हिरण करै हाकारो ॥

मेरी वारी मोहि विणासो ॥ अबला मूलि न मारो ॥ ८३ ॥

अंत-अनड पहाड अनेरा ॥ जित वाघण वाघ वघेरा ॥

रींछ राकस रोझ रहाव ॥ हर डाकण भूत डराव ॥ ८२ ॥

३७३ महामाया की स्तुति, साहबरामजी कृत । अपूर्ण । पत्र संख्या-११ । मशीन का बना कागज । आकार-६ ५X४ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-आधा इंच । पंक्ति-प्रति-पृष्ठ-६ । अक्षर-प्रति पंक्ति-१५-१७ । लिपि-सुपाठ्य । श्री साहबरामजी द्वारा संवत १९४० के लगभग लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-श्री धोकलरामजी विष्णुदत्त विष्णोई, दुतारावाली । अनुमानत संवत १९४० के लगभग लिपिबद्ध ।

आदि-श्री म्हामाया की अस्तु प्रारभते ॥ दोहा० ॥

महामाया स्तुति शब्द की ॥ चाली चाव्र मोढ

पुस जगाणे प्रीत सु ॥ रहे सुष सेज्या पोढ ॥ १ ॥

अन्त-इ ड कटाक्ष भए च छारा जाहा ताहा देयू तेज तुम्हारा

मार निरजन किया हु कारा ॥ जग रहे नेन जगन यानीं ॥ २९ धि-

३७४ साहबरामजी की सापी, अरणभ की-२ । मशीन का बना पत्र-१ । जीरण, खण्डित । हाशिया-नगण्य । कुल ६६ पक्तियाँ । । अक्षर-प्रति पक्ति-१५, १६ । लिपि-पाठ्य । लिपिकार-अनात । अनुमानत सवत् १६४५ के लगभग लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-श्री धाक्लराम विष्णुदत्त विष्णोई, दुतारावाली ।

आदि-॥ उौ ॥ सापी साहबरामजी की सापी अरणभ की

परमभक्ति प्रहेलाद होरणाकुस दूप है दयो घोल हलाहल क्षर

उन पायो इन पी लीयो

अत-गुर किया भगवा भेस जेठ व्दी मौमी दिने

हरि दियो नद उपदेस शाहब सतगुर है सही ॥ ५ ॥ श्री बाबा शाहबरामजी री २ साषी सपुरणम् ॥

३७५ परवाना, महकमा कौंसिल राज श्री बीकानेर का । सवत १९३०, मिति पोह सुदि १४ का । मुकाम गाव पर, मेढे सबधी । देशी पत्र-१ प्राप्तिस्थान-थापन बधु (सवश्री बदरीराम, वीरम, मरलूराम, मोतीराम, काशीराम, श्योलाल एव नारायण),मुकाम ।

३७६ परवाना, बीकानेर अदालत का । सवत १९०७, मिगमर वदि ११ का, समस्त कसाइया के नाम, विष्णोइया के गावो मे से बकरा ल्कर न निकलन सबधी । देशी पत्र-१ । प्राप्तिस्थान-थापन बन्धु, मुकाम ।

३७७ परवाना, बीकानेर अदालत का । सवत १८७८, फागुन वदि १२ का । राज्य की जनता के नाम, थापना से विना अपराध कुछ भी माग न करने सबधी । देशी पत्र-१ । प्राप्तिस्थान-थापन ब धु, मुकाम ।

३७८ परवाना, बीकानेर अदालत का । सवत १८७८, फागुन वदि १२ का । विषय-वही जो परवाने ३७७ म है । प्राप्तिस्थान-थापन बन्धु, मुकाम ।

३७९ परवाना, बीकानेर अदालत का । ऊपर के (३७७, ३७८) परवान को पुन जारी करने सबधी । सवत १८८७, पोह सुदि १ का । देशी पत्र-१ । प्राप्तिस्थान-थापन बन्धु, मुकाम ।

३८० परवाना, बीकानेर अदाल्त का । सवत १८९०, चत सुदि ७ का । मुकाम के थापनो पर । मुकाम-मदिर के पुजापे को चार भागो मे बाँटकर ल्नेे सबधी । देशी पत्र-१। प्राप्तिस्थान-थापन बधु, मुकाम ।

३८१ परवाना, बीकानेर के महाराजा अनूपसिहजी का । सवत १७५२, जेठ सुदि ४ का । पवार जगरूप नाजर आनदराम की ओर । गाव तालवे के १० खेत थापनो को दिलाने और हरे वक्ष न काटने सबधी । देशी पत्र-१ । प्राप्तिस्थान-थापन बन्धु, मुकाम ।

३८२ परवाना-बीकानेर अदालत का । सवत् १८९८, जेठ सुदि १ का । मुकाम के थापनो

की ओर। चढ़ावे की रहन रखकर श्री जांभाजी की मूर्ति हेतु लिए गए रुपया को चकाने और घास न उठाने सबधी। देशी पत्र-१। प्राप्तिस्थान-थापन बन्धु, मकाम।

३८३ परवाना-बीकानेर के महाराजा सुजानसिंहजी द्वारा सालयें, मुकाम के थापनों को दी गई धरती सम्बन्धी। सवत १७५८, जेठ बदि १ का। देशी पत्र १। प्राप्तिस्थान थापन बन्धु, मुकाम।

३८४. लिखत, मुकाम-मेले की। सवत् १८७२, फागुन सुदि १ की। विश्नोइया द्वारा धर्म-नियम पालन सबधी। देशी पत्र-१। प्राप्तिस्थान-जांगलू साथरी।

३८५ लिखत, जांभोलाव के मेले की। सवत् १९०६, चैत बदि अमावस्या का। विश्नोइयों द्वारा धर्म-नियम पालन सबधी। देशी पत्र-१। प्राप्तिस्थान-जांगलू साथरी।

३८६. फुटकर छन्द-५। बारहठा सबधी, १ छप्पय तथा आनन्द एव अज्ञात कृत। देशी पत्र-१। आकार-९×४ इन्च। हाशिया-पौन इन्च। कुल-१६ पक्तिया। अक्षर-प्रति पक्ति २५ २६। लिपि-पाठ्य। लिपिकार अज्ञात। अनुमानत सवत १८७५ के लगभग लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-पीपासर साथरी।

आदि-कवित्। तरवर एक उतग तास कोय पेड अपांणू।

यथ साप जड बीस सिषर सोवन गढ थांण।

अन्त-कचण केरै पींजर काग न दीठा कोय २

३८७ विवाह पद्धति। पोथी। फोलियो सख्या-८२। मशीन का बना कागज। आकार-९×५ ५ इन्च। हाशिया-१ इन्च। पक्ति-प्रति पृष्ठ-१४-१५। अक्षर-प्रतिपक्ति-७-९। लिपि-पाठ्य। साधु बिहारीदास द्वारा सवत १९७२, जेठ बदि ३० को लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान पीपासर साथरी। इसमे विभिन्न मत्र, नाम, ऊदोजी के कवित, कृष्ण और शिव से सबधित शाखोच्चार, मगलाष्टक आदि हैं।

आदि-श्री जभगुरूवेनम ।। अथ विवाह पद्धती लिखते ।। अथ कलस थापण कलम लिखते ।। जो समरथ कथा सुणो सब कोई ।। तासों पथवी उत्पन्न होई ।।

अन्त-विष्णु मत्र का जल छूया ।। गुरू की कृपा स बालक सुध हुया ।। इति श्री बालक मतर सपूरणम् ।। लिखत साध बीहारीदास चेला विष्णु दासजी का गाव भगतासरी मै बिसनोई बणीयाल लाभु के घरे सवत ।। १९७२ जेठ बदी ३० अमावस निज पठनाथ ।। उँ

३८८. माधवदास कृत भजन-१३। पुस्तिका। मशीन का बना कागज। आकार-७ ५×६ इन्च। हाशिया नगण्य। पक्ति प्रतिपृष्ठ-१४-१५। अक्षर प्रति पक्ति १९ २२। लिपि पाठ्य। लिपिकार-अज्ञात। अनुमानत सवत १९७५ के आसपास लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-पीपासर साथरी।

आदि-ऊ श्री जम्भेस्वरो जयति दा

कलिमल हरण अरु सुख करण मगल मुरति रूप

दुष्टदलन मनमथ मथन जम्भ गुरु सुर भूप

अन्त-अपरपार कलियुग की माया नहीं भेद कीसि ने पाया

कसा कुर जमाना आया माधव भज माईजो ॥ ४ ॥

३८९ पुस्तिका । अपूर्ण । पन्ने-२२ । आदि का १ तथा २३ के पश्चात पन्ने नही हैं। देशी कागज । आकार-७ २५×५ २५ इच । हाशिया-दाएं, बाएं-पौन इच । पक्ति-प्रति पृष्ठ-१०-१२ । अक्षर-प्रति पक्ति-१५-१६ । लिपि-पाठय । सवत् १९१५ मे बिहारीलाल विष्णोई द्वारा कालपी मे लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-पीपासर साथरी । इसम ये रचनाएँ हैं -(क) विष्णु चरित-ऊधवदास कृत । अपूर्ण । छद-४-१०७ । मिती असाढ वदी ५ गुरौ सवत् १९१५ दसस्त बिहारीलाल विष्णोई झमया के मोजे रहै आ कालपी-पोथी लिषी । (ख) आवला सरोवर अस्तोत्र, छद-१३ । बिहारीदास कृत । (ग) जाभा अष्टक, छद-१० । बिहारीदास कृत । (घ) लीलकठ विष्णोई की बनाई अस्तुत छप्प । अपूर्ण । छद ६ ।

आदि-लाल उष्ण नहि सीला ॥ ३ ॥

विष्णू क नहि रूप न रेषा ॥ लिपा न जाव विष्णु अलेपा ॥

विष्णू निकट नहि कुछु दूरा ॥ विष्णू पूरन है भरपूरा ॥ ४ ॥

अत-वैचुव सुकवि सरण जाके लवलेस भये छूटत भ्रम वद यह मेर मन आयो है ॥

कोई जिन भूलो साध भावो निज नाम ही को सोई पर ।

३९० चैनजी की कथा, अज्ञात रचित । खडी बोली गद्य म । पुस्तिका २ । कुल पृष्ठ सख्या-३१३ (१-१७९ तथा १८०-३१३) । एक इच हाशिये वाली । मशीन के बन कागज की । आकार-७ ७५×६ २५ इच । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-१३ । अक्षर-प्रति पक्ति-११ म १९ । लिपि-प्राय अशुद्ध किन्तु पाठ्य । सम्भवत गणेशरामजी द्वारा सवत १९५० के आसपास लिपिबद्ध । यह कथा किसी अन्य प्रति से उतारी गई है, जिसके सकेत अनेक स्थानो पर मिलते है । आदि के प्रथम अध्याय म जाम्भोजी और २९ धम-नियमो सबधी उल्लेख करके फिर असली कथा आरम्भ होती है । प्राप्तिस्थान-श्री धाकलराम विष्णदास विष्णोई, दुतारावाली ।

आदि-अ सच्चिदानन्देश्वरायनमो नम १ आ गुरु श्री जम्भेश्वरायनमो नम श्री गुरु जम्भेश्वरजि म्हाराज का अवतरण

अन्त-इन तीन दिन म मृत्यू सख्या लाखो की गिनती मे हो गई और बचे वे सब दुखी जीवन म ही रहे अथात् जीये जितने तक २९ धर्मों को पालन करते गुरुजी को याद करते ही करते प्राणान्त हुए इति

३९१ गुटका । चारो ओर स खडित । देशी कागज । आकार-४×२ ७५ इच । हाशिया नगण्य । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-६-७ । अक्षर-प्रतिपक्ति-१४-१७ । साधु मगनीराम तथा बुधमराम द्वारा स० १९०० के आसपास लिपिबद्ध । लिपि-पाठय । प्राप्तिस्थान-जागलू साथरी । इसम ये रचनाएँ हैं-(क) साईदीन के छन्द-१० । साधां जगदीस रामजो म्हाराज क चौपनो छ लिपत साधु मगनीराम । (ख) ग्रथ विसण सिंघार, सेवादास कृत । छन्द-१०२ ।

आदि-अथ दीनजी का छन्द दोहा

मिनषा वेही पाय कर ॥ जाण्यो मही जगदीस ॥
दीन कहे सुधर नहो ॥ विगडी वीसवा वीस ॥ १ ॥
अन्त-काल तणो सारो नहीं ॥ फिरगी रामराय की आंण ॥
सेवादास जग जीत कर ॥ परस्या पद निरबांण ॥ १०२ ॥ इति श्री ग्रथ विसाग गधार समाप्त वान विचार जिग्गगों साधु बुद्धमराम को राम राम वाचसी घरणा न घणा राम

३६२ गुटका। देशी कागज। अपूर्ण, खंडित। आकार-६ २५×८ इंच। हाशिया-दाएं, बाएँ-१ इंच। पंक्ति-प्रतिपृष्ठ-७-६। अक्षर-प्रतिपंक्ति-१४-१७। प्रनात तथा बिहारीलाल द्वारा संवत १६२३ में लिपिबद्ध। लिपि-पाठ्य। प्राप्तिस्थान-जागनू साथरी। इसमें ये रचनाएं हैं -(क) सबदवाणी, अपूर्ण। सबद संख्या १२०। अन्ती यौ होय तौ भल बुधि आव यु (१२०)। (ख) विष्णु सहस्र नाम स्तोत्र (संस्कृत) श्लोक-१६३। (ग) अमावस्या री कथा, मयारामदास कृत। छन्द-१४४।
आदि-वा वर्षांणत ॥ उरघ ढाक से त्रिसूलौं ॥ ॥ आद अनाद तो हम रे रचोलों ॥
हम सरजोलो स कौण।
अन्त-इति श्री महाभारते श्री कृष्णा अर्जुन संवादे अमावस्या महात्मे कथा मयाराम विचित संपूर्णम् संवत १६२३ मीती माढ सुदी ४ सुक्रवार को लिखतम् बिहारीलाल

३६३ गुटका। मशीन का बना कागज। आकार-६×३ ५ इंच। हाशिया-एक इंच। पंक्ति-प्रति पृष्ठ-६-६। अक्षर-प्रति पंक्ति-१३-२०। लिपि-पाठ्य। भिन्न भिन्न लिपिकारों द्वारा संवत १६४२-५४ के बीच लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-जागनू साथरी। इसमें ये रचनाएं है —(क) श्री जाभोलाव महातम, गद्य में। (ख) जंभ स्तोत्र, सुरजनदास रचित। छन्द-१७। (ग) सबदवाणी, सबद-१२०, पद्य प्रसंग समेत। रतन काया बकुंठ वासो तेरा जरा मरण भो भागो ॥ १२० इति श्री सबद वाणी श्री जाभजी की संपूर्णम् शुभ संवत १६४२ मिती जेष्ट वदि दूजा ११ वार बधवार के दिन लिष्यत प्राणसुख विष्णोई बटा जिलदार का—। (घ) सध्या मन्त्र-उा विष्णु विष्ण तु भण रे प्राणी साधा भक्ता उधरणों ॥ (ङ) छत्तीस धर्म। (च) जम्भाष्टक (संस्कृत) श्री गोविन्दरामजी कृत। (ज) मन्त्र-२, (जो शब्द गुरु श्रुत चेला—तथा श्री शब्द सो बार आप-)। (ज) धर्म शास्त्र के श्लोक-२। (झ) मयारामदास कृत अमावस्या कथा के अन्तिम छन्द तथा आरती-६। ऊदोजी-४, कबीर-१, नामदेव-१।
आदि-श्री गणेशायनम ॥ श्री जाभोलाव महातम लिख्यते ॥ एक समें श्री सुजनजी महाराज जहां तहां उपदेश करते हुवे दर्शन के लिये पक्षम तीर्थ जंभ सरोवर अर्थात जाभो गाव तलाव के गये।
अन्त-पांचवीं आरतो रामजी कु भाव श्री रामजी की आरती नामदेजी गाव ॥५॥ सा०वराम स० १६५४ दारानगर गज मह मध्य साढ सुद ५

३६४, रुकमनी मंगल, रामलला कृत। छन्द संख्या नहीं दी गई है। पत्र संख्या-११।

किनारे श्रुटित । देशी कागज । आकार ९×४ इञ्च । हाशिया दाएँ, बाएँ एक इञ्च । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-६ । अक्षर-प्रति पक्ति-२८-३० । सवत् १९०७ मे रामलाल द्वारा लिपिबद्ध । लिपि-सुपाठ्य । डोली गाव (जोधपुर) से श्री मल्लीरामजी धारणिया (सगरिया मडी) को प्राप्त ।

आदि-श्री गणेशायनम लिषते रुकमनी मगल ॥

निगम जाको नीत गावं घ्यान सिव उर आनही

आदि अनादि पारब्रह्मजु के भक्ति नीक जानही

अन्त-राज करो नग्र द्वारका को भक्त बछल श्री गोपाल

रामलला जन गाव मगल क्रष्ण भज जन होय नीहाल इति श्री रुक्मनी मगल सपूरणम् १ समत १९०७ माघ सुदी १४ वार थावरवार लिपते साघ श्री चनरामजी का सीष रामलाल पु टघेडा मघे सव सुम मगल ॥ श्री ॥

३९५. गुटका, सबदवाणी । सबद सख्या-१२०, बिना प्रसग । अपूर्ण, खडित, जला हुआ । प्राप्त फोलियो सख्या-७९ । ८७ फो० मे से आदि के ८ अप्राप्य । देशी कागज । आकार-६ २५×३ २५ इञ्च । हाशिया-सवा इञ्च । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-८ । अक्षर प्रति पक्ति-१५-१६ । लिपि-सामान्यत पाठ्य । सम्भवत प्राणसुख विष्णोई द्वारा सवत १९४० के आसपास लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-श्री कानाराम गायणा, पोनास (मेडता सिटी) ।

आदि-पो माग । रे विनहीं गुर्हे जीव वयु मारौ ॥

अन्त-विष्णु तू भणि रे प्राणीं । इस जीवण कै हाव ।

तिल २ आव घटती जाव मरन दिने दिन आवं (१२०)

३९६ प्रहलाद चिरत, केसोजी कृत । छन्द-५९४ । पत्र सख्या-३२ । देशी कागज । कति पय पत्र खडित । आकार ९×४ इञ्च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-एक इञ्च । पक्ति-प्रति-पृष्ठ ११ । अक्षर-प्रतिपक्ति-३३-३६ । सवत् १८९० म साधु रामदासजी द्वारा लिपिबद्ध । लिपि-सुपाठ्य । प्राप्तिस्थान-सवश्री सोहनलालजी गोदारा, भागीरथजी गायणा, चक २९ बी० बी० (तहसील पदमपुर, श्री गगानगर) ।

आदि-श्री विष्णजी राग मारू दोहा

नारायण पहलो नऊ सांमो सर्व सुजाण

आदि भक्त क्हसू कथा पहलाद चिरत प्रवाण १

अन्त-में दावण पकड्यौ दीन को सतगुर कर सहाय

पाच सात नव वाहरा अवक मोहि मिलाय ५९४ इति श्री प्रहलाद चिरत सपूरणम् ॥ १ ॥ समत १८९० रा वर्षे मिती भादवा सुद ५ वार मगलवार लिषते साघ रामदासजी कानजी रो सिष्य गावें मलाय मध्ये । श्री उमाय नम

३९७ अमावस्या री कथा, मयारामदास कृत । छन्द १४६, पत्र सख्या-१४ । मशीन के बन कागज । किनारों से खण्डित, जीर्ण । आकार-८.५×४ ५ इञ्च । हाशिया-दाएँ, बाएँ -आधा इञ्च । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-९-१० । अक्षर-प्रतिपक्ति-२५-२९ । श्री सन्तोष-

दास द्वारा सवत् १९५० के आसपास लिपिबद्ध । लिपि-पाठ्य । प्राप्तिस्थान-सवथी सोहनलालजी गोदारा, भागीरथ गायणा, चक-२९ बी० बी० (तहसील पदमपुर, श्री गगानगर) ।

आदि– ॥ श्री गणेशायनम अथ अमावस्या रा कथा लिख्यत कु डलीया

उ प्रथम बदु गुरदेव कौ दुतिय बदु सब साध ।

बिष्णु बदु पु नि तीसर जात मिट कु ब्याध २

अन्त– लिपाकृत सत श्री १०८ श्री बालकदासजी का शिष्य सतोषदासेन जेमनां मध्ये श्री पठनार्थं साध जीयाराम श्री जगरामदासजी का शिष्य उॅ तत्सत हरी

३९८ गोकलजी कृत (क) अवतार की बिगति, छद सख्या-४५ और (ख) इडव छद, सख्या-३२ । पत्र सख्या-१० । जीर्ण, खडित । देशी कागज । आकार-९X४ इच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इ च । पक्ति-प्रति पृष्ठ-११ । अक्षर प्रति पक्ति ३३ ३६ । श्री रामदास द्वारा सवत १८७५ के लगभग लिपिबद्ध । लिपि-पाठ्य । प्राप्तिस्थान-श्री रामनारायणजी खीचड, भूलनिया (नाढोली) ।

आदि– ॥ श्री जमेस्वराय नम । लिख्यते ओतार की बिगत्य की असतुति ॥ गोकलजी क कहे छह दाहा ॥

रिधपति सिधपति सोल्पति ॥ सुरपति सदा सहाय ॥

गति दाता गोविंद सुमरि ॥ गोकल हरि गुण गाय ॥ १ ॥

अत– रह्या याकी लवा बचन पालो बिसन किरपा करो काज सारो

दास गोकल कह आस पूरो अलप ऊबर आदि पुरप ओट थारो

इति श्री गोकलजी क छद सपूर्ण लिपत रामदास

३९९ वील्होजी क कवित्त, सख्या-४४ । पत्र सख्या-५ । जीर्ण, खडित । देशी कागज । आकार-६X४ इ च । हाशिया दाएँ, बाएँ एक इ च । पक्ति प्रति पृष्ठ १३ । अक्षर-प्रति पक्ति-३६-४० । अज्ञात लिपिकार द्वारा अनुमानत सवत १८५० के आस-पास लिपिबद्ध । लिपि-सुपाठ्य । प्राप्तिस्थान-श्री रामनारायणजी खीचड, भूलनिया (नाढोली) ।

आदि– ॥ श्री विष्णव नम लिपत कवत वील्होजी का ॥

धम कीयां सुप होय लाछ लिछमी घन पाय

धम उत्तम कुलि अवतर जनम दालद नहीं आय

अन्त– आप सवारथ सुन सुधी कीया कुबधी पापडा

वील्ह कहै भव सागरां बह्यो जाहि रे बापडा ४४ इति श्री वील्हजी का कवित सपूर्ण समाप्त ॥ १ ॥

४०० अमरपुरी, सुरजनजी कृत । छद-१०८ पत्र सख्या-८ । खडित । मशीन का बना कागज । आकार ११X५ ५ इ च । हाशिया-नाम मात्र का । पक्ति प्रति पृष्ठ-११ । अक्षर-प्रति पक्ति-२८-३६ । साधु बालगाविन्द, तथा अज्ञात लिपिकार द्वारा लिपि-बद्ध । लिपि पाठ्य । लिपिकाल सवत १९५० होना चाहिए, क्योंकि यहां कहा हुआ

प्रतीत हाता है। प्राप्तिस्थान-श्री रामनारायणजी खीचड़, भूलनिया (नाढोडी)।

आदि-श्री गणेशायनम उ स्वस्ति लिपत्र ध्रमचरी ॥

दोहा-कहा कम जल कोयली ॥ कहा तिसना कहा तीर ॥

रे मन कित पित मात तू ॥ सपति बध्यौ सरीर ॥ १ ॥

अन्त- मनसा वाचा क्रमना ॥ सुनु पुरातन साषि ॥

जन सुरजन की वीनती ॥ वानै की पत राषि ॥ १०८ ॥ इति श्री धमचिरि समापत ॥ समत ॥ १९ ॥ ५ । महीना चत सुदि । पचीमी । लीपिकृत साधु बालगोविंद ॥ श्री चारामजी के सिम ॥ वार रवि ॥

४०१ अमावम कथा, मयाराम कृत (छन्द सख्या नही दी गई है, पाठ मे काफी मिश्रण है)। शिवजी की आरती, सेवानद कृत तथा रामाष्टक (सस्कृत)। पत्र सख्या ९। खडित। मशीन का बना कागज। आकार-१२×५ ५ इच। हाशिया-दाएँ, बाएँ-एक इच पक्ति-प्रति पृष्ठ-१२। अक्षर-प्रति पक्ति-३५-३८। लिपि-पाठ्य। अज्ञात लिपिकार द्वारा अनुमानत सवत १९५० के लगभग लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-श्री राम नारायणजी खीचड, भूलनिया (नाढोडी)

आदि- ॥ ६ ॥ श्री गणेशायनम अथ अमावम कथा लिखते ॥ कुडलिया ॥

प्रथम सिमरू गुर देव कु ॥ दुतिये सबै साध ॥

विष्णु वदु पुनि तिसर ॥ जात मिटत ज्यु व्याधि ॥ १ ॥

अन्त- श्री स्यामो पवित्त मनसा प्रतीत रागे न गीत्त बचनै अत्तीत

श्री रामचद्र सततमामि इति श्री रामाष्टक सपूरणम् ॥ १ ॥

४०२ अमावस कथा, मयाराम कृत। अपूर्ण। प्राप्त पत्र सख्या-८। खडित। मशीन का बना कागज। आकार-११×५ ५ इच। हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इच। पक्ति-प्रति-पृष्ठ-११। अक्षर-प्रति पक्ति-२८-३०। लिपि-पाठ्य। अज्ञात लिपिकार द्वारा सवत १९५० के आसपास लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-श्री रामनारायणजी खीचड़, भूलनिया (नाढोडी)

आदि-श्री गणेशायनम अथ अमावस कथा लिखते कुडलिया

प्रथम सिमरू गुरदेव कु ॥ दुतिये सब साध ॥

विष्णु वदु पुनि तिसर ॥ जाते मिटत ज्यु व्याधि ॥ १ ॥

अन्त-प्रात समै आई ज्यौ सब करो प्रणाम गयो है ज घरै

गुरो धाम भई जो राति सोई ॥ कथा सुनो देव प्रीतो वडो पुत्र गुजरो क हुतो ॥

४०३ रुक्मणी मगल, पदम भगत कृत। विभिन्न राग रागिनियो के अन्तगत छन्द सख्या पृथक् पृथक् है। पत्र सख्या-४३। खडित। देशी तथा मशीन के बने कागज। आकार-१०×५ ५ इच। हाशिया-दाएँ, बाएँ-प्राय आधा इच। पक्ति-प्रति पृष्ठ-१४-१५। अक्षर-प्रति पक्ति-३६-४२। लिपि-साधारणत पाठ्य। बिहारीदास द्वारा सवत् १९३७ मे लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-श्री रामनारायणजी खीचड, भूलनिया

(गाडाणी)।

आदि-श्री जमगन्द नम सप पन्मन्द कृत स्वर्मान्ति मगन लिख्यते दो०

सासार सागर अपार जत सूझा वार न पार।

गुर गोविद कृपा करो गावो मगलाचार १

अत- हर री साधु कर बीनती साभल कृभवणनाथ

सोला सहस गोवी घर धार भोजन दसमण हाथ ९

सोनो हीनो सालयो रूपो अ त न पार

भण पदमइयो जन आरती आयागपण निवार १०-१८३ इति श्री पन्मइयो

कृत रामसी मगल विवाहला समाप्ताम् १ सवत १६३७ मिति बगाप सुदी २

लिपत विस्नदास

४०४ छमछरी (सवतसरी) फल, (सवत १८०० स १६००), श्री परमानदजी वणिहाल

कृत। पद्य गद्य मिश्रित। पाथो। मरुग, सचित्र। प्राप्त पत्र सख्या-२०। देशी

कागज। आकार-८ ५x५ ५ इच। हासिया-दाएँ,बाएँ-प्रायः सवा पौन इच। पक्ति-

प्रति पृष्ठ-२५। अक्षर प्रति पक्ति १८-२५। श्री परमानन्दजी वणिहाल द्वारा सवत

१८०० के आसपास लिपिबद्ध। लिपि-पाठ्य। प्राप्तिस्थान-मय श्री मोहनलालजी

गोदारा रामनाजिजा गावसा २२-२६ वी० वी०, तहसील-पदमपुर, श्री गगानगर।

आदि- ॥ एती समत १८०५ फल ॥ ५ ॥ दुहा

छ व सम दुप छत्रीयसां ॥ परस बोह जल धार।

नदीयूयां भीर वह घण ॥ घरि घरि मगलचार। चत वसाप म न ससता जेठ

पाव वाज्यसी घमाढ़ वपा गोयमी सावण बीरपा कार्ति वदीस राप भाद्र्व

मध घणा भाद्रवा दाय २

अत- एती समत १६०० फल ॥ दुहा ॥

सो वरसे समत पालट ॥ नाव अक सचवाय

छमछरी अपर न पालट ॥ नु थी मुये री थाय १

\+ \+ \+

साठी सइ कीसत्य गुर ॥ वलै ज वरस वेचारि ॥

दुहा दुरस्य ज दपीया ॥ परमाणद विचारि ॥ ५ ॥

हरि करिसी सो होयसी ॥ होतिव हरि क हाथ ॥

ए चतुराइ चातरो ॥ वेद गरथ की वात ॥ ६ ॥

जोत्यग मा सब कुछय लीध्या ॥ ह सब जोतिग माहि।

हु णहार होत्यव की ॥ आगति लपी न जाय ॥ (७) ॥

वेद पढो जोत्यग पढो ॥ सब वातां समरथ ॥

मेह मोत अर रीजक की ॥ कागद साइ हथि ॥ ८ ॥

साचो नाव विसन को ॥ अवर न सचा कोय ॥

आकास साचो अरथ ॥ धरा न सची होय ॥ ९ ॥

पडत नै भुठो कह ॥ मुरेप लोग मजुर ॥
दिणहे रावण क्यो नही ॥ दाल्यद घर मा पुरे ॥ १० ॥
पचायत मा पुछीया ॥ राजा मान सोय ॥
साइ सेती सरप रू ॥ लीव्यो स साचो होय ॥ ११ ॥
इण ही पोहमी उपर ॥ परब न टाल कोय ।

४०५ पोथी । अपूर्ण, अनेक पत्र अप्राप्य । जीर्ण, खडित । देशी कागज । आकार-९ × ६ इच । हाशिया-आधे से पौन इच । पंक्ति-प्रतिपृष्ठ-२४-२७ । अक्षर-प्रतिपंक्ति-१७-२१ । श्री परमानदजी वणिहाल द्वारा संवत १८२० के आसपास लिपिबद्ध । लिपि-साधारणत पाठ्य । प्राप्तिस्थान-मवश्री सोहनलालजी गोदारा, रामलालजी गायणा, चक २६ बी० बी०, तहसील-पदमपुर, श्रीगंगानगर । इसमे ये रचनाएँ हैं - (क) ध्रुव गणी भाखी, छद ५६८ । अपूर्ण । परमानदजी वणिहाल कृत । बीच म अज्ञात रचित अन्य फुटकर छद भी हैं । (ख) डगव की कथा, अज्ञात कृत । दोहा, चौपई ३२८ । (डगव भीम अर्जुन सवाद उरवसी मोप) ।(ग) गदप्रसेन की कथा, दोहा चौपई-१२८ । अज्ञात कृत । (घ) कथा भरथरी राज त्याग । अपूर्ण, प्राप्त दोहा, चौपई १ से ४३५ । अज्ञात कृत । (ङ)कथा गोपीचन्द, दोहा, चौपई ५२२ । अपूर्ण । प्राप्त छद-२६१ से ५२२ । मेरठ निवासी जोधीराम कृत । (च) मोहजीव की कथा (मोह्मरद राजा की कथा), छद ११७ । जन जगनाथ कृत । (छ)विसन भगति महमा (कृष्ण और पाण्डवो से सबंधित) । अपूर्ण, प्राप्त दोहा, चौपई, कवित्त-११० । अज्ञात कृत । (ज) ध्रम कथा, ४ अध्यायों म । हिन्दी सस्कृत मिश्रित श्लोक-३००(१००+ ७२+७३+५५) । अज्ञात कृत । (झ) कीसनजी रो ब्याहलो ।अपूर्ण, प्राप्त छद ५ । पदम कृत । (भिन्न हस्तलिपि म) । यत्र तत्र अनेक फुटकर छद भी लिखे हुए हैं ।

आदि-श्री निसनजी सति सही ल्यपतु श्रवगु णी साषी
ओ नमो नाथ निरजणा ॥ अवगति नाव अनत
परमानद तस वदना ॥ भगत वछल भगवत ॥ १ ॥
वीनउ नायव वील्हजी ॥ घनो नेतो सुरताण ॥
परमाणद गुर पावीया ॥ सतगुर क्षम सुजाण ॥ २ ॥
पिना आयर सुरताण गुर ॥ चलु गुर दामु दास ॥
रासोजी दिष्या गहू ॥ तसा सुषदेव व्यास ॥ ३ ॥
सेस महेस ब्रमा सगति ॥ कवि सुरनेर केतान ॥
निहु जुगे रीष तापसी ॥ गुयया गेरष गीयान ॥ ४ ॥
केसो सुरेजन वील्हजी ॥ गुर मतगुर सामान्य ॥
एता वायक सभल्या ॥ अ नत गु ण ग्यांन धीयान ॥ ५ ॥

अन्त-ध्रम सवाद इद सुत ॥ ध्रव पाप प्रमुचते ॥
परलोके भवेत गत ॥ मुक्ते रव् न ससए ॥ ५४ ।
पठते हरते पाप ॥ सुरत्वा मोषु लभते ॥
ध्रव सीरय भवे फल ॥ महाध्रम प्र वतते ॥ ५५ ॥

एती ध्र म कथा सपूरण समापैता (परमानदजी की हस्तलिपि मे)
गुर गोवद वीनउ म अभीनासी देव तन मन धन आगे धरू
करु गुर की सेव । ५ । (इसके पहले से । भिन्न हस्तलिपि म) ।

४०६ हरजस । अपूर्ण । आदि के २ पत्र, किनारो से खण्डित । देशी कागज । आकार १४ × ४ इच । हाशिया–दाएँ, बाएँ–पौन इच । पक्ति–प्रतिपृष्ठ–६ । अक्षर–प्रति पक्ति २४–३० । अज्ञात लिपिकार द्वारा अनुमानत सवत् १६०० क आसपास लिपिबद्ध । लिपि–पाठ्य । गाव डोली (जोधपुर) म श्री महीरामजा धारणिया (सगरिया मढी) को प्राप्त । इसम सुरतराम, तुलसीदास, नानगदास, काजी महमद, वील्होजी तथा अज्ञात कृत एक एक हरजस ह ।

आदि–राग गाडी श्री भागोत उधारो जग में र टेक श्री भागोत सुणी सनकादिक
इमरत पीयो इकधारा प्र प्रहलाद भभीछण नारद सुमरत वाहू वारा १
अन्त–मेल नहीं अमल ह चोपा त्योंह मेरे वीर मिट सब धोपा ३
वील्हाजी अमल विसनु लिव लागी बहुत दिना की वायड भागी ४ ॥ ५ ॥
रे मन होय निरविरत भजि नरहरे छाडि ।

४०७. गोपीचन्द का हरजस, अज्ञात कृत । देशी पत्र–१, जीएा और किनारा से खडित । आकार ६×४ इच । हाशिया–दाएँ, बाएँ १ इच । कुल १८ पक्तियाँ । अक्षर प्रति पक्ति–३२ ३५ । अज्ञात लिपिकार द्वारा अनुमानत सवत १८५० के आसपास लिपिबद्ध । लिपि पाठ्य । प्राप्तिस्थान–लोहावट साथरी ।

आदि–राम सत्य राग धनाश्री आज नगर में एक जोगी देख्यो वीरा गोपीचन्द क उणिहार र लो टेक
अन्त–जलन्धी प्रगादे राजा गोपीचद बोलै हम तुम एहो विछोहा रे लो २२ १

४०८. पहलाद चिरत, केसौदासजी कृत । छ द सख्या–५२० । गुटका । फोलियो सख्या–१६७ । मशीन के बने कागज । आकार–३ ३/४×५ १/२ इच । पक्ति प्रति पृष्ठ–५ । अक्षर–प्रतिपक्ति–१०–१२ । रामचन्द गायणा द्वारा सवत १६७१ म लिपिबद्ध । अपेक्षाकृत मोट अक्षर । लिपि सुपाठ्य । प्राप्तिस्थान–श्री सोहनलालजी गोदारा, चक २६ जी० बी०, (श्रीगगानगर) ।

आदि–श्री गणेशायनम अथ पहलाद चीत केसोजि यानो लिषत । राग मारु दोहा ।
नारायण पहिलि निऊ स्वांमी सब सुजांण । आद भक्त कहिसु कथा पहलाद चीरत पर्वाण ॥ १ ॥
अन्त में रांवण पकड्यो बीन को । सतगुर करे सोहाय ॥ पांच सात नव बाहरा ।
अबके मोंही मोलाय ॥ २० ॥ ईति श्री पहलाद चीत केसोदास वीरचीताया म सपूरणम् ॥ लीषत गायण रामचन्द गाव रासीसर वास वहा म लीपावनु । समत १६ ७१ साल री वीरपे मीती माघ्या सुदी १ वार मनीसरवार रे दीन पुसतक सपुरा हुयो ॥ वाई वाच वीचार तो गायण रामचन्द री नुण परणाम वाचाजोजा ।

कागल पोथा ना कुछि थोथा । ना कुछि गा'या गीयौं ॥ २५ ४ ।
वलि वलि कूकस काय दलीज । जिह्मा कणौ न दाणौ ॥ ७१ ८ ।
वेद कुराण कु माया जालू । दत कथा जुगि थाई ॥ ९७ २,३ ।
भीज्या है पणि भेद्या नाही । पाणी माहि पखाणौ ॥ १०५ ५ ।
विण रणायर हीर न नीरे,
गज न सोपे, तके न खोल्या नालू । २९ १३-१५ ।

—जम्भवाणी (सबदवाणी) से ।

अध्याय २

जाम्भोजी, विष्णोई सम्प्रदाय और साहित्य विषयक किया गया अब तक का कार्य

अध्याय २

जाम्भोजी, विष्णोई सम्प्रदाय और साहित्य विषयक किया गया अब तक का कार्य

यह काय दो भागो म बाटा जा सकता है —

(१) विष्णोई लेखकों द्वारा किया गया काय और

(२) इतर लेखकों द्वारा किया गया काय।

पहले प्रकार की प्राय सभी सामग्री व्यक्तिगत प्रकाशनो के रूप मे सीमित लोगो के सामने आई थी। लेखक, सम्पादक या सकलनकर्ता ही प्रकाशक था। प्रकाशन के मूल मे धम या समाज-सुधार सम्बन्धी भावना विशेष रूप से रही थी। ऐसी पुस्तकें सीमित सख्या म और विशेषत मतानुयायियो के लिए ही छपाई गइ थी। अत ये साधारणत सुलभ नही हैं। इनमे जितना भावना का प्राधान्य है उतना वज्ञानिक और शोधबुद्धि का नही। एकाध अप वाद को छोडकर मूल प्रति या स्रोत का उल्लेख किसी ने नही किया है। प्रकाशित और मूल पाठ म पर्याप्त भिन्नता है। अपनी अपनी रुचि के अनुसार बहुधा कवि-विशेष के कतिपय छद ही प्रकाशित किए गए। इनका आधार न बताने के कारण एक तो प्रामाणिकता पर सन्देह होना स्वाभाविक था और दूसरे कवि-विशेष की रचना के विषय मे केवल अत्यन्प और आशिक जानकारी ही प्राप्त हो सकती थी। फिर, धार्मिक आवरण के कारण से भी ये ग्रन्थ लोगो का ध्यान आकृष्ट नही कर सके। "सबदवाणी" का प्रकाशन अपेक्षाकृत अधिक बार और अनेक व्यक्तियो द्वारा किया गया। प्रत्येक की सबद सख्या और उनकी घटा बढ़ी का उल्लेख यथास्थान आगे कर दिया गया है। जहा तक इसकी टीकाओ का प्रश्न है, वे भ्रामक हैं और सन्तोषजनक तो कदापि नहीं हैं। इनमे खीचतान कर किसी न किसी प्रकार मनमाने अथ लगाए गए हैं। प्रत्येक टीकाकार ने अपनी-अपनी रुचि और सस्कार के अनुसार अथ करने की चेष्टा की है। मूल पाठ-विकृति, भाषा-दुरूहता और साम्प्रदायिक स्वरूप-अनता के कारण भी ऐसा हुआ है। वज्ञानिक दृष्टि से विचार करने वालो के लिए यह सामग्री कतिपय तथ्यों और चितन-सम्बन्धी दिशा तो बता सकती है, आधारभूमि प्रदान नही कर सकती। अन्य प्रमाणो के पुष्टि-स्वरूप इसका उल्लेख किया जा सकता है किन्तु स्वतत्र प्रमाण क रूप मे इसका उपयोग करने मे बहुत सतकता की आवश्यकता है। ऐसी रचनाओ का सबसे बडा महत्व परम्परा, विचार-भिन्नता, सम्प्रदाय और समाज को जाग्रत करन के प्रयास की दृष्टि से है। इसके अतिरिक्त इनसे कतिपय अन्य बातो का भी पता चलता है जिनका उल्लेख यथास्थान किया गया है।

दूसरे प्रकार की सामग्री के अन्तगत विभिन्न गजेटियर, रिपोर्ट, जाति धम सम्प्रदाय, इतिहास और साहित्य विषयक ग्रन्थो मे आए प्रासगिक उल्लेख तथा एतद् विषयक निबन्ध आदि सम्मि लित हैं। इनम प्रस्तुत विषय के सम्बन्ध म प्राय तो नामोल्लेख मात्र ही किया गया है। इस

सामग्री में विभिन्न गजेटियर और रिपोर्टें प्रमुख हैं। गजेटियरों और रिपोर्टों का आधार अधिकांश में क्षेत्र-विशेष में तत्कालीन कुछ लोगों से सुनी-सुनाई बातें और दंतकथाएँ मात्र हैं। सामाजिक दृष्टिकोण प्रधान होने के कारण इनमें समय-विशेष में प्रचलित अनेक बातों को आधार बना लिया गया है। फलतः एक क्षेत्र से सम्बन्धित एतद् विषयक उल्लेख दूसरे क्षेत्र के ऐसे उल्लेखों से भिन्न हैं। इनके परवर्ती लेखकों ने पूववर्ती लेखकों के कथनों का अन्धाधुंध अनुसरण किया है। इसलिये पूववर्ती लेखकों की अनेक भूलें भी दोहराई जाती रही हैं। तत्सम्बन्धी प्रामाणिक सामग्री के उपलब्ध न होने, वैचारिक परम्परा और सम्प्रदाय के स्वरूप को समग्रता में भली-भांति न समझने के कारण इनकी अधिकांश बातें भ्रामक और गलत हैं। कहीं कहीं तो ऐसा लगता है कि वे पूर्वाग्रह से ग्रसित और दुविधाजनक स्थिति में लिखी गई हैं (द्रष्टव्य-आगे (२) सन्दर्भ संख्या ५ और २०)।

साहित्यिक धार्मिक दृष्टि से विचार करने वाले विद्वानों ने भी एतद् विषयक अप्रामाणिक सामग्री के आधार पर अपनी-अपनी बातें कही हैं, अतः उनका मूल्य भी विशेष रह नहीं जाता (विशेष द्रष्टव्य-'विष्णोई सम्प्रदाय' नामक अध्याय)। उनको यह साहित्यिक सामग्री उपलब्ध नहीं हो सकी थी। प्रस्तुत विषय का मूलाधार सबदवाणी है। इसकी भाषा १६ वीं शताब्दी की ठेठ ग्रामीण मरुभाषा होने से राजस्थानेतर विद्वान् को यह सहज रूप से बोधगम्य भी नहीं हो सकती। दूसरे, इसकी प्रकाशित प्रतियाँ भी साधारणतः प्राप्त नहीं हैं। तीसरे, इनका पाठ अनेक स्थलों पर विकृत है, अतः मूल मन्तव्य सही रूप में ग्रहण नहीं किया जा सकता।

इन्हीं सब कारणों से, अपवादों को छोड़कर, अनेक क्षेत्रों में महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ होते हुए भी, प्रस्तुत विषय का क्रमबद्ध सम्यक् विवेचन और मूल्यांकन कहीं नहीं किया जा सका। प्रस्तुत अध्ययन की पूर्व-पीठिका के रूप में एतद् विषयक दोनों प्रकार के कार्यों की सूची, कालक्रमानुसार सम्बन्धित संक्षिप्त उल्लेखों सहित नीचे दी जा रही है। (पहले कालक्रमानुसार संदर्भ ग्रन्थ आदि का विवरण और बाद में तारक चिह्न (*) से प्रारम्भ नई पंक्ति में उनका संक्षिप्त कथनोल्लेख और सार दिया गया है)।

यहाँ इस कार्य का विवेचन नहीं किया गया है, जिसके प्रमुख कारण संक्षेप में ये हैं —

१-इनमें अधिकांश का आधार अप्रामाणिक या आंशिक रूप में ही प्रामाणिक है, अतः नामोल्लेख और ऐतिहासिक दृष्टि के अतिरिक्त इनका मूल्य विशेष नहीं है।

२-सम्प्रदायेतर विद्वानों ने केवल प्रासंगिक या पृथक् रूप से उल्लेख मात्र ही किए हैं, सम्यक् और विशद रूप में क्रमबद्ध विचार विवेचन नहीं किया। इस अध्ययन द्वारा ही प्रस्तुत विषय से सम्बन्धित अनेक प्रकार की सामग्री पहली बार प्रकाश में आ रही है, अतः उनके लिए ऐसा करना सम्भव भी नहीं था। फिर, ऐसे कथन भी या तो सुने-सुनाए या/और लोक-प्रचलित कथाओं के आधार पर कहे गए हैं अथवा उनमें पूर्ववर्ती लेखकों की बातों को उसी रूप में दोहराया गया है।

३-अब तक इस सम्बन्ध में जो कुछ भी लिखा गया है, उसमें-(क) जाम्भोजी के जीवन की दो-चार घटनाओं का, उन्हीं सन्दर्भ में सम्प्रदाय-प्रवर्तन और उनके २९ अथवा कति

पय धमनियमो का नामोल्लेख है, या/और विष्णोई-समाज मे समय-विशेष म प्रचलित कुछ मान्यताओ और रीति-रिवाजो का उल्लेख भर है।

४-शायद ही कोई कथन ऐसा हो जिसमे किसी न किसी प्रकार की-तथ्य, व्याख्या, परम्परा, विचार और मूल्यांकन विषयक भूल न हो अथवा जिसम अप्रामाणिक बातें न कही गई हो।

५-इस प्रबन्ध मे यथास्थान प्रस्तुत विषय का सप्रमाण और सविस्तर विवेचन करन का प्रयास किया गया है जिसमे उल्लिखित काय की भूलो, शिथिलताओ और अप्रामाणिक बातों का स्वयमेव निराकरण हो जाता है। अत यहाँ ऐसा करना पुनरावृत्ति ही होती।

(१) विष्णोई लेखकों द्वारा किया गया काय

१-श्री जम्भसागर स्वामी ईश्वरानन्दजी गिरि रचित शब्दाथ दीपिका टीका सहित, सवत् १९४९ (लीथो मे)।

* ११७ सवद और उन पर टीका। अन्त म "विज्ञापन" मे जाम्भोजी का परिचय और २९ धमनियम। ६ स्वीकृत सवद (सख्या-१०, १०१, १०२, १०३, ११५, और १२१) नहीं हैं।

२-जभसहिता स्वामी ईश्वरानन्दजी गिरि रचित धम्म बोधिनी टीका, सवत् १९५५।

* विभिन्न मत्रो और २९ धमनियमो पर टीका।

३-शब्दवाणी अर्थात् जम्भसागर सकलनकर्ता-स्वामी ईश्वरानन्दजी गिरि, सशोधनकर्ता-प० जगन्नाथ तिवारी, सवत् १९५५।

* पत्र प्रसग सहित १५१ सवद। २ स्वीकृत सवद, सख्या १०२, १२१ नहीं हैं। इस प्रकार १२१ स्वीकृत सवद हैं, शष ३० मे से १-'पवण स मोमण पाणी माण' (पृ० १२५, सवद ११५)-इसमे पृथक है जो स्वीकृत सवद १०३ का अर्द्धांश है। बाकी २९ अतिरिक्त सवदो का विवरण इस प्रकार है —

क्रम-संख्या	पृष्ठ-सख्या	सवद-सख्या	सवद
१	१२१	१०२	पडित जण जण वाद न होई। अणबोल्या अवधू माइ
२	१२१	१०३	टूट पवणा छीज काया। आसण दढ कर बसो गया।
३	१२१-२२	१०४	देवल यातरा शून्य यातरा। तीथ यातरा पाणी।
४	१२२	१०५	आऊ न जाऊ निरजण नाथ री दुहाई।
५	१२२	१०६	चहु दिशि जोगी सदा मल्ग। खेल वर कामनी के सग।
६	१२३	१०७	राज गए को राजा झूर। बैद गए को रोगी।
७-१२	१२३-२४	१०८-१३	ओ विष्णु विष्णु तू भणरे प्राणी। साधे भविन ऊघरणों (यह वृहनवण है, जिमके यहा ६ सवद माने गए हैं)।
१३	१३०	१२२	आ अक्ल रूप मनसा उपराजी, ता मा पाच तत्व होय राजी (यह कलश-पूजा मत्र है)।
१४	१३१-३२	१२३	ओ नमो स्वामी शुभ करतार। (यह पाहल मत्र है)।

१५	१३३	१२४	भा शब्द सोह जाप। अन्तर जपै अजप्पा जाप। (यह तारक मंत्र है)।
१६	१३४	१२५	भा शब्द गुरु सुरत धना, पांच तत्व में रहै अकेला। (यह गुरु मंत्र है)।
१७	१३५	१२६	अवधू शब्द निरन्तर गहिये। तहां दिवस न रात्री कहिये।
१८	१३५	१२७	मूल गाचोरे अवधू मूल सींचो। ज्या तरवर मेल्हव कारण
१९	१३६	१२८	मारिवा तो मन मसत मारिबा। सूरिवा पवरण भंडारण।
२०	१३६	१२९	भाद्रि न बांधिवा गती न प्रबोधिवा। मिथ्या न साथवा थूलम्।
२१	१३७	१३०	कोटि मध्ये कोई एकहि जूझै। कोटि मध्ये कोई एकहि बूझ।
२२	१३७-३८	१३१	तत ऐसालो तत ऐसालो किम कर कयू गभीरम।
२३	१४५	१४३	गृहवाका नाहा त्रिनिया का लग्न चन्द सूर विवरजित पस।
२४	१४७	१४४	तीस दिन सूतक पांच ऋतुवन्ती न्यारो। (धर्मनियमों सम्बन्धी ये जाम्भोजी नाम कृत २ क्योड़े छप्पय हैं)।
२५	१४८	१४५	हासवा खेलवा रहिवा रग। काम क्रोध न करिवा सग।
२६	१४८-४९	१४६	रण्डी सो जो काया दण्ड भावन जानी तृष्णा खण्ड।
२७	१४९	१४७	अवधू सयम अहार कदरप नही व्याप। वायु अहार क्षुधा न सताप।
२८	१५०	१४८	अजप्पा जपो रे अवधू अजप्पा जपो। पूजो देव निरजन थानम्।
२९	१५०	१४९	गगण हमारा वाजा बाज, मूल मत्र भल हाथी।

४–विश्नोई धर्म विवेक स्वामी ब्रह्मानंदजी द्वारा सकलित, प्रकाशक–श्रीरामदासजी, प्रथम सस्करण–सवत १९५५, द्वितीय सस्करण–सवत् १९७१।

* प्रश्नोत्तर क्रम से "विश्नोई धर्म" का स्वरूप वर्णन।

५–श्रीजम्भदेव चरित्र भानु स्वामी ब्रह्मानन्दजी, प्रकाशक—लेखक, काट, सवत १९५८, (ता० १–९–१९०१)।

* जाम्भोजी का जीवन–चरित्र, भूमिका म ग्राशिक रूप से सुरजनजी कृत कथा ग्रौतारपात ("अवतार–चरित्र") भी छापा है।

६–विश्नोई नियमावली श्यामलाल आत्मज बद्रीप्रसाद वश्य विश्नोई कृत। प्रकाशक–बद्री प्रसाद वश्य, मुहल्ला रजीतपुरवा, कानपुर, सवत १९६७।

* जाम्भोजी का परिचय, २९ नियम, सस्कार –सूतक, पाहल, गुरुमत्र, अन्त्येष्टि।

७–जम्भाष्टक प्रकाश उद्धर्ता–स्वामी ब्रह्मानन्दजी, प्रकाशक–श्री रामदासजी, जमसरोवर धाम, सवत १९६८।

* गोविन्ददासजी कृत जम्भाष्टक और सम्प्रदाय का स्वरूप आदि।

८-जम्भदेव लघुचरित्र श्रीरामदासजी रचित, प्रकाशक-लेखक, जमसरोवर धाम, सवत १६६९।

* पाताम्बरदासजी कृत जम्भाष्टोत्तर शतनाम, आरतियाँ, जाम्भोजी, सम्प्रदाय का परिचय, २९ धम-नियम।

९-बिष्णोई मत व्याख्या लाला मोहनलाल वश्य, प्रकाशक-लेखक, कसबा अजीतमल, इटावा, सवत् १९६९।

* जाम्भोजी का परिचय और काय, तत्कालीन दशा, २९ नियम, उनकी व्याख्या।

१०-मतक सस्कार निणय स्वामी ब्रह्मानन्दजी, प्रकाशक-श्रीरामदासजी, विष्णोई मदिर, गणेशगज, कालपी, सवत १९६६ (द्वितीय सस्करण-स० १९७०)।

* शव का भूमि म गाडने की पुष्टि।

११-शब्दवाणी गुरु जांभेजी सग्राहक प्रकाशक-साधु गगादास, विष्णोई मन्दिर, फलावदा, जिला मेरठ, सवत १९६६।

* कई पुस्तकों से सग्रह किए गए सबद हैं, जिनकी कुल सख्या १२६ दी गई है किन्तु २ (स्वीकृत सख्या २७, २८) आशिक रूप से दो बार लिखे और गिने जाने के कारण, यह सख्या १२४ होनी चाहिए। इनम से ६ स्वीकृत सबद (सख्या-७, ८, ९, १०, ६७ और ११५) नही होन से ११४ ही स्वीकृत सबद आ पाए हैं। शेष १० सबद अतिरिक्त हैं, जिनका विवरण यह है —

क्रम-स०	पृष्ठ-सख्या	सबद-सख्या	सबद
१	१०३	९९	पडित जण जण वाद न होई। अणबोल्या अवधू सोई।
२	१०५	१००	चहु दिशि जोगी सदा मलग। खेल बर कामनी के सग।
३	१०५	१०१	राज गए को राजा झूर। वद्य गए को रोगी।
४ स ९	१०५	१०२	"गोत्राचारी शब्द"-श्री विष्णु विष्णु तू भण रे प्राणी।
	१०७	१०७	साधे भक्ति उधरणो। (यह वहनवण है, जिसके ६ सबद माने हैं)।
१०	११७	१२४	तीस दिन सूतक पाच ऋतुवन्ती न्यारा। (धम नियमो सम्बन्धी ये ऊदोजी नण कृत दो ब्योढे छप्पय हैं)।

१२-"श्री महर्षि स्वामी बील्हाजी का जीवन चरित्र" तथा "श्री बील्हाजी का सक्षिप्त वृत्तान्त" स्वामी ब्रह्मानदजी, प्रकाशक-श्रीरामदासजी, विष्णोई मन्दिर गणेशगज, कालपी, सवत् १९७०।

* वाल्होजी का जीवन-चरित्र।

१३–साखी संग्रह प्रथम संग्राहक–प्रकाशक स्वामी ब्रह्मानन्दजी, संवत् १९७१ (११ मई, सन् १९१४ ई०)।

* अनेक विष्णोई कवियों की ७८ विभिन्न साखियाँ। किसी किसी साखी का भावार्थ भी दिया है।

१४–विद्या और अविद्या पर व्याख्यान स्वामी ब्रह्मानन्दजी, प्रकाशक–श्रीरामदासजी, संवत् १९७२।

* तत्संबंधी विवेचन के सन्दर्भ में विष्णोई सम्प्रदाय की महत्ता और विद्या प्रचार पर बल।

१५–गोत्राचार विधि संग्राहक–स्वामी ब्रह्मानन्दजी, प्रकाशक–श्रीरामदासजी, कालपी, संवत् १९७३।

* "वहूवरण", गोत्राचार मंत्र और उन पर टीका।

१६–श्रीस्वामी वील्हाजी कृत वाणी संग्राहक प्रकाशक–श्रीरामदासजी, संवत् १९७४।

* वील्होजी के १८, सुरजनजी के २ कुण्डलिया छप्पय तथा ३ दोहे।

१७–ब्राह्मण वर्ण व्यवस्था, सटीक संग्राहक–स्वामी ईश्वरानन्दजी गिरि, प्रकाशक–रेवतदासजी, जागलू, संवत् १९७५।

* तद्विषयक अनेक धर्मशास्त्रों के वचनों का संग्रह और प्रसंगानुकूल सबदवाणी की पंक्तियों के उद्धरण।

१८–शब्दवाणी जम्भसागर (गुटका) प्रकाशक–श्रीरामदासजी, (द्वितीय बार), संवत् १९७६।

* १२० सबद। ३ स्वीकृत सबद, संख्या १०२, १०३ और १२१ नहीं हैं।

१९–श्री विष्णु धर्म प्रकाश संग्रहकर्ता–कामताप्रसाद गुप्त, संवत् १९७७, प्राप्तिस्थान–लाला शिवप्रसाद गुप्त, दुकान–गप्पीलाल नारायणदास, टरननगंज, कालपी, यू० पी०।

* वर्ण्यविषय इस प्रकार है —
  १–भूमिका (विष्णु, लक्ष्मी और विष्णुधर्म शब्दों की व्याख्या)।
  २–विष्णुधर्म के २९ नियम (अनेक उद्धरणों सहित व्याख्या और मंडन)।
  ३–महात्मा जम्भेश्वर स्वामी और विष्णुधर्म।
  ४–एकता तथा एका ("अविद्या की भूल-भुलइयों में विद्या के दीपक व परस्पर के मेल व प्रीति की आवश्यकता")।
  ५–स्त्रीशिक्षा (उसकी आवश्यकता के कारण और पूर्णता के उपाय)।
  ६–स्त्रीधर्म (श्रीमती कमला देवी कृत)।
  ७–यज्ञोपवीत का प्रभाव।
  ८–पंच महायज्ञ विधि।
  ९–अन्त्येष्टि संस्कार।
  १०–वर्णाश्रमियों के कर्त्तव्य कर्म।
  ११–अन्य उपयोगी विषय (ये सभी पद्यबद्ध हैं) —
    (अ) योग, कवि अनन्यदास लिखित गृहस्थों और राजाओं के लिए।
    (ब) धर्म का सार (तत्व)–कवि नरेश कृत।

(न) उपदेशसार–कवि रामदयाल लिखित।

(ट) ईश्वर प्रायना के भजन, गजल आदि।

(य) शान्तिपाठ।

२०–ऊदाजी का कवित्त (जम्भसार) सग्राहक–प्रकाशक श्री रामदासजी, सवत १९७८।

* ऊदोजी नण के ५६ छप्पय, वील्होजी के ४ छप्पय और वाणी, सुरजनजी के ६ छप्पय और १ हरजस।

२१–श्रीजम्भसार (प्रथम और द्वितीय खण्ड) साहबरामजी द्वारा सकलित और रचित। प्रकाशक–श्रीरामदासजी, सवत् १९७८।

* प्रथम खण्ड म ६ प्रकरण (१ से ९)। द्वितीय खण्ड म ९ प्रकरण–(१२, १४, १७ से २३)। मूल ग्रथ के २४ प्रकरणो म से ये १८ प्रकरण आशिक रूप म ही प्रकाशित किए गए हैं।

२२–श्री स्वामी वील्हाजी का जीवन चरित्र (जम्भसार–त्रयोविंशति प्रकरण) साहबरामजी। प्रकाशक–श्रीरामदासजी, सवत् १९७८।

* जम्भसार का २३ वा प्रकरण आशिक रूप से पृथक प्रकाशित।

२३–सार शब्द गुजार (सारवत्तीसी, अमरचालीसी और महामाया की स्तुति समेत) श्रीसाहबरामजी कृत, प्रकाशक–गणेशराम लक्ष्मीनारायण, दुतारावाली, सवत १९७८।

* सक्षिप्त किन्तु महत्वपूर्ण भूमिका सहित इन रचनाओ का प्रकाशन।

२४–जम्भसागर (प्रथम खण्ड) शब्दवाणी स्वामी ईश्वरानदजी कृत भाषा टीका सहित प्रकाशक–स्वामी विधानदजी, ला० कन्हैयालाल मक्खूलाल विश्नोई रईस, कानपुर की सहायता से (प्रकाशन-काल नही है)।

* २० सबद, प्रसग और टीका सहित।

२५–श्री स्वामी वील्हाजी कृत ककका सतीसी सग्राहक–प्रकाशक–श्रीरामदासजी, प्रथम सस्करण–सवत् १९७९, द्वितीय सस्करण–सवत २००३।

* इस रचना के ३७ छन्द कतिपय सूचनाओ सहित।

२६–श्री वील्हाजी कृत जम्भदेव जीवन-चरित्र (श्री जम्भसार दशम प्रकरण) प्रकाशक–श्रीरामदासजी, सवत १९७९।

* कान्होजा कृत "कथा औतारपात" और "कथा दूणपुर की" तथा सुरजनजी कृत "कथा औतार की" (आशिक रूप म)।

२७–जम्भसार (साहबरामजी कृत) प्राचीन हस्तलिखित पुस्तक का सूचीपत्र सम्पादक–प्रकाशक सम्भवत श्रीरामदासजी, अनुमानत सवत १९७८–७९ म।

* प्रति सख्या–१९३ (च) का सूचीपत्र। (सूची पूर्ण नही है)।

२८–अखिल भारतवर्षीय विश्णोई महासभा, कानपुर के तृतीय अधिवेशन के सभापति स्वामी ब्रह्मानन्दजी का भाषण प्रकाशक–स्वामी ब्रह्मानदजी, सवत १९८१।

* विश्नोई–स्वरूप, एकता, २९ नियम–पालन, सम्प्रदाय का प्रभाव, सस्कार-पाहल, शुद्धि-प्रेम–वील्होजी का उदाहरण और काय-जाम्भोलाव–मेला, विश्णोइयो मे श्रद्धा–भक्ति,

४५-श्री जम्भसार-साखी संग्रह (तृतीय संस्करण) सम्पादक-प्रकाशक श्रीरामदासजी, संवत २००० ।

* अनेक कवियों की ८२ विभिन्न साखियां, वील्होजी कृत कथा ग्रन्थ और १२ हरजस तथा १ हरजस सुरजनजी का। (वर्तमान में यही संग्रह सर्वाधिक प्रसिद्ध है)।

४६-जम्भदेव आरती संग्रह संग्राहक-मास्टर जगन्नाथ शेखर 'सेवक', नोखागांव, प्रकाशक-श्री ओंकारजी पवार, कड़ोला, द्वितीय संस्करण, संवत २००३।

* विभिन्न कवि कृत १६ आरतियां।

४७-श्री जाम्भोजी महाराज का जीवन चरित्र, महात्मा सुरजनदासजी रचित सम्पादक-प्रकाशक-श्रीरामदासजी, संवत २००७ (श्री महीरामजी धारणिया के सहयोग से)।

* सुरजनजी कृत 'कथा औतार की' (आंशिक रूप में), २६ नियम, जाम्भोजी के कुछ जीवन प्रसंग, सजड़जी की कथा, हुजूरी नामावली आदि।

४८-श्री विष्णु चरित्र, ऊदोजी अडाग कृत संग्रहकर्ता मास्टर जगन्नाथ शेखर, नोखागांव, प्रकाशक-ओंकारजी पवार, कड़ोला, संवत २००७।

* विषय नाम से स्पष्ट है।

४९-विश्नोई नित्यकर्म पद्धति संग्राहक-प्रकाशक स्वामी जगदीशानन्दजी, साधुवाला, श्रीगंगानगर, संवत २००९।

* विभिन्न मंत्र, २६ नियम, १३ सबद।

५०-जम्भसागर (शब्द निर्णय टीका समेत) स्वामी रामानन्दजी गिरि विरचित। प्रकाशक बिश्नोई सभा, हिसार, संवत २०११।

* जाम्भोजी का परिचय। विभिन्न मंत्र २६ धर्मनियम, १२० सबद और इन सब पर टीका। ३ स्वीकृत सबद संख्या १०२, १०३ और १२१ नहीं हैं।

५१-श्री जम्भदेव आरती व साखी (हरजस उनतीस नियम) लेखक-प्रकाशक श्री [illegible] [illegible], कारखाना-भवन [illegible], (जोधपुर) संवत् २०१२।

* यह संग्रह में संख्या ४५ की नकल है।

५२-विवाह पद्धति विश्नोई समाज सम्पादक-रामजस [illegible] प्रकाशक-श्री [illegible], [illegible] (पो०-सिरसाना)। (प्रकाशन संवत नहीं दिया है)।

* नाम से स्पष्ट है।

५३-विवाह पद्धति विश्नोई समाज सम्पादक पं० हरीराम शर्मा, प्रकाशक-मुंशी [illegible], [illegible], हिसार। (प्रकाशन संवत नहीं दिया है)।

* नाम से स्पष्ट है।

५४-श्री विश्नोई जागरण महात्म्य-सबदावली सम्पादक-प्रकाशक [illegible] प्रकाशक-[illegible], [illegible], ग्राम [illegible] जोधपुर। (प्रकाशन संवत नहीं दिया है)।

* [illegible] और [illegible]।

(२) अन्य लेखकों द्वारा किया गया काय

१-टाड कृत "राजस्थान", भाग २ (सन् १८३२ म प्रथम बार प्रकाशित ।

* सिंध के "ब्राह्मण विष्णवो" के मुर्दे गाडने आदि का।

२-गजेटियर आफ दि बीकानेर स्टेट कप्टिन पी० डब्ल्यू पाउलेट, सन १८७४।

* जाटो के अन्तगत "विश्नवियों", उनकी प्रकृति, नियम-पालन और जाम्भोजी का।

३-रिपोट आफ दि पोलिटिकल एडमिनिस्ट्रेशन आफ दि राजपूताना स्टटस, सन १८७५-७६

* जाम्भोजी का जीवन चरित, राव दूदा का मिलना, सम्प्रदाय-प्रवत्तन, २६ धम-नियम, मुसलमानों के विरोध पर उनमे बढोत्तरी, पूजा-पद्धति, रीति-रिवाज का।

४-गजेटियरस आफ मारवाड, मालानी एण्ड जैसलमेर मजर सी० के० एम० वाल्टर, सन १८७७

* धम और कृषका के सन्दभ म "जाम्वा के अनुयायी विष्णवियों" का।

५-स्टेटिसटिकल, डिस्क्रिप्टिव एण्ड हिस्टोरिकल एकाउन्ट आफ दि नाथ-वस्टन प्रोविन्सेस आफ इडिया वाल्यूम फिफ्थ, रुहेलखण्ड डिवीजन, पाट फस्ट, गजेटियर आफ दि नाथ वेस्टन प्रोविन्सेस, बिजनौर डिस्टिक्ट एटकिन टी० एटकिन्सन, सन १८७६।

* धम के अन्तगत। विश्नोई भामाजी या शेख मखदुम जहान जहागश्त के अनुयायी ह। उन्होंने अपनी मत्यु के पश्चात किसी को इस धम का अनुयायी बनाने का वचन दिया था। फलस्वरूप अब यह कुलगत ही रह गया है। इसम हिन्दू और मुस्लिम रीति-रिवाजो का विचित्र मिश्रण है। अभिवादन म सलाम अलेक, मुर्दों को गाडने और गुलाम मुहम्मद और इस प्रकार के अन्य नाम रखने मे विश्नोई हाल तक मुसलमानों की नकल करत थ। अब वे हिन्दू रीति-रिवाज अपनाने लगे हैं किन्तु आदर सूचक सम्बोधन मे "शेखजा" कहे जाते हैं। कहा जाता है कि एक काजी की हत्या करने के कारण दण्ड-स्वरूप उन्होंने (जाम्भोजी न) इसलाम अगीकार किया था।

६-दि राजपूताना गजेटियर, वाल्यूम फस्ट सी० के० एम० वाल्टर, सन् १८७९ ई०।

(क) बीकानेर, पृष्ठ १६३।

* "विश्नवियों" के स्वभाव और रीति-रिवाज का।

(ख) जसलमेर, पृष्ठ १७६।

* "विश्नवियों" के निवास का।

७-दि पजाब सेन्सस रिपोट आफ १८८१

* विष्णोइया के नियम-पालन, मुर्दे गाडना, पहनावा, विवाह आदि का।

८-हिन्दू ट्राइब्स एण्ड कास्टस रेव० एम० ए० शेरिंग, वाल्यूम-थड, सन १८८१, पृष्ठ ७१।

* बीकानर के जाटो के अन्तगत "वैष्णव" और उनके नियम-पालन की दढता का।

९-जनरल कोड आफ टाइबल कस्टम इन दि सिरसा डिस्ट्रिक्ट आफ दि पजाब जे विल्सन, सेटलमेन्ट-आफिसर, शिमला, २१ अक्टूबर, सन १८८२ (इन्ट्रोडक्शन-बागडी जाट, जन

रल कोड आफ ट्राइबल कस्टम, सक्सन-१ तथा "पार्टिशन", सक्सन ११ के अन्तर्गत)।

* विष्णोई-पृथक जाति, धर्म-पालन मे दृढ, जीव-दया विशेष रूप से पालने वाले किन्तु झगडालू। रीति-रिवाजो का उल्लेख।

१०-पंजाब कास्टस बीइंग ए रीप्रिंट आफ दि चैप्टर आन दि रेसेस, कास्टस एंड ट्राइब्स आफ दि पीपल "इन दि रिपोर्ट आन दि सेन्सस आफ दि पंजाब पब्लिश्ड इन १८८३ बाई दि लेट सर डेंजिल इबेटसन, लाहौर, सन् १९१६।

* (जाति संख्या-१०६)-विष्णोइयो की विभिन्न जातियां-सही रूप में यह जाति नहीं, सम्प्रदाय है-, वैवाहिक संबंध आदि का।

११-वीरविनोद कविराजा श्यामलदास, सन् १८८६ (संवत १९४३) भाग १, पृष्ठ १३७, भाग २, पृष्ठ ४८०।

* "पटदान" के अन्तर्गत विभिन्न देवी-देवताओं के मन्दिरों के लिये धर्मादे की जमीन के सन्दर्भ में "भाभादव" का।

* "वरीशात नक्कारे" का।

१२-तवारीख राज श्री बीकानेर मुन्शी सोहनलाल, सन् १८९० ई० (संवत् १९४७)।

* विष्णोई जाम्भोजी का फिरका, जाम्भाजी, रीति-रिवाज, लाश दफनाना, सती होना, नियम-पालन आदि।

१३-तवारीख जसलमेर (तीनों भाग) महता नथमलजी की सहायता से लेखक लखमी-चन्द रईस, जसलमेर द्वारा सन् १८९२ में प्रकाशित, पृष्ठ १७३, १७५, १७६, २२२।

* इस राज्य में विष्णोइयों द्वारा अनेक स्थानों पर कूएँ बनवाये और गांव बसाये जाने का उल्लेख, परगने-साचणे, नोख और मीठड़ियो, नगराजसर आदि में। विष्णोइयों के ऊंटों की मजबूती और सुन्दरता के सम्बन्ध में।

१४-इतिहास राजस्थान चारण रामनाथ रत्नू, सन् १८९२ ई०, पृष्ठ ११।

* बीकानेर राज्य के जाटों के अन्तर्गत-विश्नोइयों के धर्मनियम पालन की दृढ़ता और जाम्भोजी का।

१५-विलसन की सिरसा सटलमेंट रिपोर्ट पराग्राफ-१०७। सन् १८९३ में इसका उल्लेख किया गया है किन्तु यह लेखक को प्राप्त नहीं हो सकी। देखें-आगे संदर्भ संख्या १६।

१६-गजेटियर आफ दि हिसार डिस्ट्रिक्ट पी० जे० फागन, सन् १८९३ ई०, चैप्टर ३ बी, ३ सी और ३ डी (पृष्ठ ७४-७५, १०२-१०३, १०६, १०८, १३१-१३२)।

* "विष्णोई धर्म- 'नरसिंह पुराण' के अनुसार जाम्भोजी विष्णु के अवतार, अवतार-कथा और प्रयोजन, जाम्भोजी का परम्परागत परिचय, प्रह्लाद और होलिका, होली मनाना, साधु-गायणा,-हवन-जाप-यात्रा, सामाजिक-जीवन, वैवाहिक रीति-रिवाज, मुर्दे गाड़ना, कतिपय सामान्य और विशिष्ट बातें, विभिन्न जातियां उनका गोत्र आदि और विवाह-सम्बन्ध, धर्म-नियम-पालन आदि।

१७-श्री बीकानेर के राव श्री बीकाजी और नराजी का जीवन चरित्र सचित्र मुन्शी देवी-प्रसाद कायस्थ, सन् १८९३ ई०।

* पूजनीक चीजो मे जाम्भोजी प्रदत्त बरीसाल नगाडा भी, इनके लिए बीका की जोधपुर-चढाई।

१८-दि कास्टस आफ मारवाड मारवाड दरबार, जोधपुर, सन् १८६४, पृष्ठ ४१-४२। "बिश्नोई" के अ तगत।

* विष्णोइयो की सख्या-४००२३। जाम्भोजी और सम्प्रदाय का। रीति-रिवाजो म हिन्दू और मुस्लिम धम का मिश्रण। सन् १८८१ की पजाब सन्सस रिपोर्ट का उद्धरण।

१६-रिपोट आन दि सेसस् आफ १९८१, वाल्यूम थर्ड, दि कास्टस आफ मारवाड मारवाड दरबार, जोधपुर, सन् १८६४ ई०।

* जाम्भोजी का जीवन, उनकी मा यता-विचार, सम्प्रदाय-प्रवत्तन, धम-नियम, सामाजिक रीति-रिवाज आदि। (विशेष द्रष्टव्य-सदभ सख्या-२०)

२०-रिपोट मरदुमशुमारी राज मारवाड, बाबत सन् १८९१ ई० तीसरा हिस्सा, पहला विभाग, सन १८६५, पृ० ९३-६६।

* "बिश्नोई"। जाम्भोजी-राव दूदा का मिलना-अकाल, सम्प्रदाय- प्रवत्तन, २९ धम-नियम, नागौर के शासक मुहम्मदखा के विरोध पर मुसलमानी मजहब की पाच बातें और जोडना, जाम्भोलाव, स्वगवास मुकाम-वहा फागुन का मेला और पचायत द्वारा झगडो का निपटारा, साडिया छोडना, रोटू मे जाम्भोजी की तलवार और पाव के निशान का पत्थर, विष्णोई गावा और मुकाम-मन्दिर म पूजा -पद्धति, नियम-पालन, नाता-विवाह, मुर्दे गाडना, छुआछूत-विचार, थापण, गायणा, झगडो के निपटारे की रीति, पाहाळ, कतिपय सामा य और विशिष्ट बातो आदि का।

२१-दि ट्राइब्स ए ड कास्टस आफ दि नाथ वस्टन प्रोवि सेस् ए ड अवध डब्ल्यू-कुक, सन् १८६६।

* विष्णोइयो का उल्लेख।

२२-रिवाइज्ड इस्ट्रक्शनस फार स्पोटसमैन अदर दन सोल्जरस इस्यूड अ डर पजाब गवर्नमैन्ट आडरस क्टेन्ड इन देयर सकू लर न० १-११५, डेटेड थड फब्रुअरी, १८९६ ए० एम० स्टा, डिपुटी कमिश्नर, हिसार डिस्ट्रिक्ट द्वारा।

* हिसार के विष्णोई-गावा म शिकार न करने सबधी राजाज्ञा। हिसार जिले के ६, तहसील हिसार के १२, तहसील फतेहाबाद के २६ और तहसील सिरसा के १३ गावा के लिए (गावा क नामोल्लेख सहित)।

२३ आडर-ता ८ माच, १८९९ ई० सी० एम० किंग, डिपुटी कमिश्नर, फीरोजपुर द्वारा।

* फीरोजपुर के १६ विष्णोई-गावों मे शिकार न करने सबधी राजाज्ञा (गावो के नामोल्लेख सहित)।

२४-दबिस्ताने मज़ाहिब मुल्ला मोहसिन फानी, नवलकिशोर प्रेस, कानपुर, जनवरी १६०४ ई० (लेखक फानी बादशाह शाहजहा का समकालीन बताया जाता है)।

* बिश्नोई मत को मानने वाले हिन्दू-मुसलमान दोना, पूव की ओर मुह करके नमाज पढना, नियम-पालन, सूरा और मिकाइल, इजराइल, जिबराइल, मुहम्मदाइल आदि

फरिश्ता का नाम जपना, मुर्दे गाडना–आदि ।

२५–सत-सन्देश[1] जिल्द ६, न० १ श्री शिवव्रतलाल लाहौर, पृ० ६५ ।

- मुनीन्द्र जम्भनाथ देवजी द्वारा ईश्वर भजन–प्रचार, लाखों का उद्धार विश्नोई मत आचार्य–शब्द–अभ्यासी और सुरत शब्द योगी ।

२६–(क) आर्य्य–समाज में शान्ति का उपाय–रामचन्द्रजी का सच्चा दर्शन[2] प० त्याग मद्रम प्रचारक प्रेस, जालन्धर ।

- जाम्भाजी का मौलवियों से शास्त्रार्थ करके उनको और सकडों आदमियों को दी इसलाम से नफरत दिलाकर वैदिक धर्मानुयायी बनाने का ।

(ख) कुल्लियात आर्य मुसाफिर प० लेखराम, सन् १९०४ (उर्दू संस्करण) । हि संस्करण पहला भाग, सन् १९६३, पृष्ठ ११०–१११ ।

- "पुराण किसने बनाये" ? के अन्तर्गत अन्य मतवादी (सिक्ख गुरुओं के अतिरिक्त ऊधोजी (ऊन्दोजी नाम से तात्पर्य प्रतीत होता है) द्वारा तम्बाकू निषेध का "पतितोद्धार के अन्तर्गत" वष्णवी (विश्नोई) बनियों (बन्यों) के साहस का ।

२७–पजाब डिस्ट्रिक्ट गजेटियरस, वाल्यूम–सेवेन्ड, हिसार डिस्ट्रिक्ट (पार्ट–ए) पी० जे फागन, रिवाज्ड एण्ड ग्रांट अपटूडेट बाई–सी० एम० किंग, सन् १९०७, पृष्ठ ६२, ७ १०२, ११०, और १४१ ।

- विश्नोइयों में विवाह–संस्कार, जनसंख्या–विभिन्न जातियां, रीति–रिवाज, विश्वास धर्म, जाम्भोजी का जीवन–परिचय, २९ धर्मनियम–उनका पालन विष्णु नाम जप पहनावा, शव और दाह–संस्कार, हवन, साधु, मुर्दे गाडना, होली मनाने में भिन्न तत्सम्बधी कथा तीर्थ–मुकाम, समराथल, जाम्भोलाव, अपराध उनका निर्णय आदि

२८–पजाब गजेटियरस, सन १९०८ ई० ।

- सम्प्रदाय की प्रमुख विशेषताएँ, विष्णु के अवतार जाम्भाजी की अवतरण–कथा, पूजा पद्धति, सामाजिक रीति–रिवाज आदि ।

२९–दि इम्पीरियल गजेटियर आफ इण्डिया, न्यू एडिशन, सन् १९०८ ।

(क) वाल्यूम–१७ मुरादाबाद, पृष्ठ ४२४ ।

- विश्नोई मूलत धार्मिक सम्प्रदाय, जन संख्या–१६००, यू० पी० में अन्यत्र नहीं ।

(ख) वाल्यूम–१४, जोधपुर पृष्ठ १८६ ।

- विश्नोई–हिन्दू सम्प्रदाय, जन संख्या ३३०००, खान–पान, रीति–रिवाज आदि

(ग) वाल्यूम–२१, रहतगढ़, पृष्ठ ३०८ ।

१–विष्णु धर्म प्रकाश सम्पादक–श्री रामनारायण गुप्त, कालपी, सन १९२० प्राप्ति स्थान–माता जियाराम गुप्त, दुकान–गल्लानाल नारायणदास, कालपी पृ० ७ दास–विश्नोई ।

२–वही, पृष्ठ ७१ ।

* यहा विश्नोइयो के निवासी होने का।

३०-प्रोविन्सियल गजेटियरस आफ इण्डिया, राजपूताना वेस्टन राजपूताना स्टेटस् रसिडेंसी मेजर के० डी० इर्स्किन, सन् १९०९, जोधपुर, पृष्ठ १८०-१८१।

* विश्नोइयो के रीति-रिवाज, नियम-पालन आदि का।

३१-राजपूताना गजेटियर, वाल्यूम थड ए, दि वेस्टन राजपूताना स्टटस रैसिडेन्सी एण्ड दि बीकानेर एजेन्सी मेजर के० डी० इर्स्किन, सन १९०९।

(क) जसलमेर स्टेट, पृष्ठ २२।

* विश्नाइयो द्वारा मुर्दे गाडने का।

(ख) जोधपुर स्टेट, पृष्ठ ८३, ९०-९१, ९६, १००, १०१, १९७।

* बीकानेर, जोधपुर, जसलमर और उदयपुर मे विश्नोइयो का निवास, जाम्भोजी, २९ धर्मनियम, नागौर के मुसलमानो के प्रतिरोध पर इनमे पाच इसलामी बात और जोडना, मुर्दे गाडना, रीति-रिवाज-पहनावा, राव दूदा को लकडी की तलवार देना। मडौर-तनाम करोड देवताओ का स्थान म एक प्रतिमा जाम्भोजी की।

(ग) बीकानेर स्टेट, पष्ठ ३३७, ३३९

* विश्नाइयो द्वारा मुर्दे गाडने का, जन सख्या-८५९८।

३२-ए गजेटियर आफ दि जसलमेर स्टट एन्ड सम स्टेटिसटिकल टेबल्स मेजर के० डी० इर्स्किन, सन १९०९, इण्डेक्स-पृष्ठ ४५।

* इस "विलक्षण" सम्प्रदाय का उल्लेख।

३३-बीकानेर राज्य का इतिहास कु वर कन्हैया जू देव, खेमराज श्रीकृष्णदास, बम्बई, सन् १९१२ (सवत १९६९) पृष्ठ २७, पाद-टिप्पणी।

* जोधपुर से बीकानेर लाए गए राजचिह्नो मे जाम्भोजी-प्रदत्त बरीसाल नगारे का उल्लख।

३४-अगरवाल अगरोहा की जागती जोत श्री ब्रह्मानदजी के शिष्य निभयानन्दजी रचित, खेमराज श्रीकृष्णदास, बम्बई, सन १९१२, पृष्ठ ८७-पाद-टिप्पणी।

* अगरोहे के चारो ओर बहुत से ग्रामो मे विश्नोई कौम के हजारो घर, जाम्भोजी, उनकी गौभक्ति।

३५-कस्टमरी ला आफ दि हिसार डिस्ट्रिक्ट (एकसप्ट दि सिरसा तहसील) वाल्यूम-२५, रचक-सी० ए० एच० टाउनसेंड, पजाब गवनमेंट प्रेस, लाहोर, सन १९१३।

* इस जिले म अन्य लोगो और जातियो के साथ विश्नोइयो के भी मान्य-रीति-रिवाजो, प्रथाओ और परम्पराओ का प्रश्नोत्तर रूप म स्पष्टीकरण और निरूपण।

३६-दि ट्राइब्स एण्ड कास्टस आफ दि सेन्टल प्रोविन्सेस आफ इण्डिया (वाल्यूम सकेण्ड) आर० वी० रसल और रायबहादुर हीरालाल, मकमिलन एण्ड क० लि०, लन्दन, सन १९१६।

* विश्नोई निम्नलिखित शीर्षको के अन्तगत अपेक्षाकृत विस्तृत परिचय -सम्प्रदाय का

उद्भव, जाम्भोजी का जीवन, २-जाम्भोजी के उपदेश, शब्दवाणी, २९ धर्मनियम, ३-पंजाब के विश्नोइयों के रीति-रिवाज, ४-दीक्षा-संस्कार, ५-सम्प्रदाय का स्वरूप, ६-मध्यप्रदेश के विश्नोई, उनका परिचय, ७-विवाह, ८-मृतक-संस्कार, ९-सम्प्रदाय का सामान्यतः जाति में विकसित होना, कतिपय अन्य सामाजिक तथ्य।

३७-ए प्रोग्रेस रिपोर्ट आन दि वर्क डन ड्यूरिंग दि ईयर १९१६ इन कनेक्शन विद दि बार्डिक एंड हिस्टोरिकल सर्वे आफ राजपूताना डा० एल० पी० टसीटरी, जनरल एंड प्रोसिडिंग्स, एशियाटिक सोसाइटी आफ बंगाल (न्यू सिरीज), वाल्यूम-१३, १९१७ नं० ४, १० नवम्बर, १९१७, पृष्ठ २०७।

* जांगलू में जाम्भोजी के मन्दिर, चोले और जाम्भोजी का।

३८-ऐन इन्साइक्लोपेडिया आफ रिलिजन्स मोरिस ए० कैने, ई० पी० डटन एंड कम्पनी, न्यूयार्क, सन १९२१।

* जाम्भोजी, सम्प्रदाय पंजाब में स्थापित, स्वरूप और कतिपय धर्म-नियम।

३९-मंडोर (अंग्रेजी) जोधपुर गवर्नमेंट, जोधपुर।

* 'तैतीस करोड़ देवता का स्थान" की १६ प्रतिमाओं में एक जाम्भोजी की, जाम्भोजी का राव दूदा को लकड़ी की तलवार देना।

४०-मंडोवर का इतिहास जगदीशसिंह गहलोत, सन् १९२१ ई० (संवत् १९७८), पृष्ठ १९-२१।

* 'वीरभवन" की मूर्तियों में एक जाम्भोजी की जाम्भोजी का परिचय, सम्प्रदाय प्रवर्तन, नागौर के हाकिम मुहम्मदखां के विरोध पर मुसलमानी मजहब की बातें भी शामिल करना, जाम्भोलाव, मुकाम-फागुन का मेला, झगड़े निवारणार्थ पंचायतें, नियम-पालन, रहन-सहन, पहनावा।

४१-भारत का धार्मिक इतिहास वेयर निवासी पं० शिवशंकर मिश्र कृत आर डी बाहती एंड कं०, नं० ४, चोर बगान लेन कलकत्ता, सन् १९२३ (संवत १९८०), पृष्ठ ३३१

* विष्णुरूप जाम्भोजी द्वारा दिल्ली में स्थापित, शव-गाड़ना, विवाह में कुरान और हिन्दू शास्त्रों के वाक्यों का उच्चारण।

४२-मारवाड़ राज्य का इतिहास (द्वितीयावृत्ति) जगदीशसिंह गहलोत, हिन्दी साहित्य मन्दिर, जोधपुर, सन् १९२५, पृष्ठ ६२।

* मंडोर के 'वीरभवन' की मूर्तियों में एक जाम्भोजी की, जाम्भोजी का परिचय, "विश्नोइयों" के नियम-पालन आदि का।

४३-तवारीख-टावरी महता महजना के खानदान की महता उमेदसिंह वल्द अजातसिंह, विमा मूहणलाल जगन्नाथ, जसलमेर, सन १९२५ (संवत १९८२), पृष्ठ ६३-६४।

* नाचणे से कमरसिंह द्वारा विक्रूपुर में मुहता विसनसिंघजी को लिखित पत्र-"विसनोइयां" से ऊंटा के लिए पांच रुपये लेने और उनसे तकरार के लिये उलाहना।

४४-ऊमर काव्य कवि ऊमरदान अचलप्रताप न्यायी एंड कं०, जोधपुर, तृतीय संस्करण,

सन १६३०, पृष्ठ ७२, ३३३-पाद-टिप्पणियाँ ।

* जाम्भाजी, "बिसनाई", नियम-पालन, पाहल से शुद्धि का, कविता म भी नामोल्लेख।

४५-सेंसस आफ इंडिया, १९३१, वाल्यूम फस्ट, पार्ट फस्ट जे एच हट्टन, पृ० ४०२ ४१०।

* टाड के आधार पर सिन्ध के ब्राह्मण "बिश्नोइयो" तथा हिसार के बिश्नोइयो द्वारा मुर्दे गाडन का।

४६-सन्सस आफ इंडिया, १९३१, वाल्यूम २७ ले०-कनल वी० एल० कोले, पृष्ठ १२४, १२६।

* पश्चिम म "बिश्नोई" (जनसख्या-६६८७३) पहले सम्प्रदाय था, अब एक पृथक जाति, प्रधानत जाट, बीकानेर, जैसलमेर, मारवाड म।

४७-सन्सस रिपोर्ट आफ बीकानेर स्टेट, सन् १९३१।

* रणधीरजी को चने का जहर देकर मारना और दिल्ली भागना, मुसलमान बनना, काजी की लडकी से विवाह, मुकाम-मन्दिर और ग्रंथो पर कब्जा करना, "बिश्नोइयो" द्वारा कतिपय मुसलमानी बातें मानने के बदले कब्जा छोडना, पाहल से स्वय की शुद्धि प्राप्ति।

४८-जयमलवंशप्रकाश गोपालसिंह मेडतिया, सन् १९३२ पृष्ठ ७१, पाद-टिप्पणी।

* मेजर के० डी० इर्स्किन के आधार पर "वष्णव" सम्प्रदाय के संस्थापक जाम्भोजी, उनका राव दूदा का लकडी की तलवार देना।

४९-दि हाउस आफ बीकानेर गवर्नमेन्ट प्रेस, बीकानेर, सन १९३३, पृष्ठ ११०।

* राजचिह्नों मे जाम्भोजी प्रदत्त बरीसाल नगारे (सख्या १२) का।

५०-विजडम एन्ड वेस्ट इन दि पजाब विलेज लेखक-माल्कम ल्याल डार्लिंग, सी० आई० ई०, इन्डियन सिविल आफिसर, हम्फ्रे मिलफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, सन् १६३४, चप्टर ६, पृष्ठ १५०-१५२।

* सदलपुर गाव के विष्णोइयो के सन्दर्भ मे जीवरक्षा, मुसलमानो को गाय न बेचना, २९ नियम, उनके पालन की दृढता, जाम्भोजी, मुकाम के दो मेले, सफाई का विशेष ध्यान, पचायत का आदर, उद्योगी और परिश्रमी किन्तु झगडालू।

५१-बीकानेर की ऐतिहासिक गाथाएँ प० अयोध्याप्रसाद तिवारी, प० सत्यनारायण द्विवेदी, एज्युकेशनल बुक डिपो, बीकानेर, सन १६३४, पृष्ठ ४-५।

* जाम्भोजी का जीवन, २६ नियम, नियम-पालन, मुकाम म फागुन मेला।

५२-योगांक, कल्याण - वर्ष-१०, सख्या-१, गीताप्रेस, गोरखपुर, अगस्त, १९३५, पृ० ८१७।

* जाम्भोजी का परिचय, बिश्नोई (वष्णव) सम्प्रदाय-प्रवर्त्तन, तालवा म समाधि, मेले।

५३-राजपूताने का इतिहास (प्रथम भाग) जगदीशसिंह गहलोत, सन् १९३७, पृष्ठ ७२, ६०, ६३३।

* निवासियों में 'बिसनोई' जाति का, जसलमेर में बिसनोइयों की संख्या ३६४६ ।

५४-करमी चरित्र किशोरसिंह बार्हस्पत्य, राजस्थान रिसर्च सोसाइटी, कलकत्ता, सन् १९३८, पृष्ठ १८४, २४४-२४६ ।

* जाम्भोजी का परिचय, राव दूदा का मिलना, २९ धर्म-नियम, नागौर के सूबेदार के विरोध पर ५ बात मुसलमानी की स्वीकार करना, मुकाम-मेला, राव जोधा को बरी साल नगारा देना ।

५५-जोधपुर राज्य का इतिहास (प्रथम खण्ड) गौरीशंकर हीराचन्द ओझा, सन् १९३८, पृष्ठ २५-२६, २६५ ।

* मंडोर में 'तैंतीस करोड़ देवता' के देवालय की १६ मूर्तियों में एक जाम्भोजी की, जाम्भोजी का परिचय । पूजनीक चीजों में दरीगान नगाड़े का नामोल्लेख ।

५६-बीकानेर राज्य का इतिहास (प्रथम खण्ड) गौरीशंकर हीराचन्द ओझा, सन् १९३९, पृष्ठ १६, २६, ५६ ।

* धर्म के अन्तर्गत । 'बिसनोई' मत के प्रवर्तक 'जाम्भा नामक सिद्ध' का परिचय, मुख्य धर्म-नियम, हिन्दू मुसलमानों में एकता के लिये मुसलमानी धर्म की कुछ बातें जारी कीं। मुकाम-मेला, झगड़े निपटाना, पुनर्विवाह । जांगलू में जाम्भोजी के मन्दिर और चोले का ।

५७-बीकानेर के वीर नरोत्तमदास स्वामी, नवयुग ग्रन्थ कुटीर, बीकानेर ।

* जाम्भोजी का परिचय, बिसनोई पंथ, नियम-पालन, मुकाम-मेला ।

५८-एससमेंट रिपोर्ट आफ दि फर्स्ट रेगुलर सटलमेंट आफ गंग केनाल कोलोनी रायसाहब बिहारीलाल, सन् १९४६, पृष्ठ ३१ ।

* विष्णु के अवतार जाम्भोजी, उनके अनुयायी विश्नोइयों की प्रकृति, जीविका आदि ।

५९-पंजाब प्रान्त सम्पादक-रामनारायण मिश्र प्रकाशक-भूगोल कार्यालय, प्रयाग, सन् १९४६, पृष्ठ ४९ ।

* जनसंख्या के अन्तर्गत विश्नोई सम्प्रदाय की उत्पत्ति, जाम्भोजी का परिचय, धर्म-नियम, पाहल-दीक्षा-संस्कार ।

६०-दयालदास की ख्यात, भाग २ सम्पादक-डा० दशरथ शर्मा, अनूप संस्कृत पुस्तकालय, बीकानेर, सन् १९४८ (संवत २००५) पृष्ठ २१ ।

* पूजनीक चीजों में जाम्भोजी-प्रदत्त बैरीसाल नगारे (संख्या ११) का ।

६१-साधु संग्रह अथवा नूतन भक्तमाल (राधा स्वामी) सन्तदास माहेश्वरी, प्रकाशक—लेखक, स्वामीबाग, आगरा, सन १९५०, पृष्ठ २२४-२२५ ।

* 'गूंगा पीर-भामाजी' का परिचय ।

६२-उत्तरी भारत की संत परम्परा श्री परशुराम चतुर्वेदी, भारती भंडार, लीडर प्रेस, प्रयाग ।

(क) प्रथम संस्करण, सन् १९५१ ई०, पृष्ठ २५७, ३७०-३७२ ।

* संत जम्भनाथ या जाम्भोजी का संक्षिप्त परिचय, रचनाएँ, सिद्धान्त व साधना, 'सतमाल' से रचना के उदाहरण।

(ख) द्वितीय संस्करण, सन् १६६४, पृष्ठ ३३२-३३७।

* पूर्व मत में किंचित परिवर्तन, विश्नोई सम्प्रदाय-संक्षिप्त परिचय, जाम्भोजी का जीवन, रचनाएं और विचार-धारा, समाधि तथा सम्प्रदाय।

६३-संत काव्य श्री परशुराम चतुर्वेदी, किताब महल, इलाहाबाद, सन १६५२ ई०।

* 'संत जंभनाथ' का परिचय, उनकी प्राप्त फुटकर रचनाओं का वर्ण्य-विषय, १ पद और ३ दोहे उद्धृत।

६४-हिंदी साहित्य डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी, अतरचन्द कपूर एण्ड सन्स, देहली, सन् १६५२ ई०, पृष्ठ १४७।

* विश्नोई सम्प्रदाय के संस्थापक जंभनाथ-उनकी रचनाओं में योग, अजपा-जाप आदि बातों की प्रधानता का उल्लेख।

६५-भक्त चरितांक, कल्याण वर्ष २६, संख्या १, गीताप्रेस गोरखपुर, जनवरी, सन १९५२, पृष्ठ ४५६।

* 'सन्त श्री जाम्भोजी महाराज' का परिचय, विश्नोई-मत की स्थापना, २९ धर्म-नियम।

६६-राजस्थान की जातियां प्रस्तुतकर्ता एवं प्रकाशक-बजरंगलाल लोहिया, कलकत्ता, सन् १६५४ ई०, पृष्ठ ३३-३४।

* विश्नोई जाम्भोजी का परिचय, सम्प्रदाय-स्थापना, रीति-रिवाज, पेशा, नियम पालन।

६७-इन्साइक्लोपेडिया आफ रिलिजन एन्ड एथिक्स मन् १६५५, वाल्यूम ६, हिन्दुइज्म-माडर्न हिन्दुइज्म डिफाइन्ड, पृष्ठ ६६८।

पंजाब के विश्नोइयों के मुर्दा गाडने का उल्लेख।

६८-संतवाणी अंक, कल्याण वर्ष २९, संख्या १, गीताप्रेस गोरखपुर, जनवरी, सन् १६५७ ई०, पृष्ठ ३५९।

* संत जम्भनाथ (जाम्भोजी), उनकी ३ साखियां (दोहे)। ये दोहे वही हैं जो संदर्भ संख्या ६३ में उद्धृत हैं।

६९-सन्ड ड्यूट एन्ड सायल-राजस्थान डाइरेक्टरेट आफ एग्रीकल्चर, राजस्थान सरकार, मई १६५८, पृष्ठ ३४।

* विश्नोई सम्प्रदाय-बीकानेर और मारवाड़ में-इनके रीति-रिवाजों में हिन्दू और मुसलमान-दोनों संस्कृतियों का सम्मिश्रण, जाम्भोजी, बीस और नौ से विश्नोई नाम।

७०-राजस्थानी भाषा और साहित्य (विक्रम संवत १५००-१६५०) डा० हीरालाल माहेश्वरी आधुनिक पुस्तक भवन, ३०-३१, कलाकार स्ट्रीट, कलकत्ता ७, सन् १६६०, पृष्ठ २७६-२७९।

* जाम्भोजी का जीवन, विश्नोई सम्प्रदाय का स्वरूप, २६ धर्मनियम, कतिपय सबदों के मांशिक उदाहरण।

७१–सत परम्परा और साहित्य (धर्मेन्द्र अभिनन्दन ग्रन्थ) धर्मेन्द्र अभिनन्दन ग्रन्थ समिति, पटना, सन् १९६०, पृष्ठ ३१३।

* हिन्दी सत कवियों का तिथिक्रम, ज्ञानमार्गी सतों के अन्तर्गत, सख्या १४–सत जभनाथजी का जभो, समय–सवत् १५०८–१५८०, सम्प्रदाय–पुष्कर।

७२–गजेटियर आफ इण्डिया, राजस्थान, बाड़मेर डी० सी० जोशी, सन् १९६२, पृ० ५५।

* विश्नोई जोधपुर, बीकानेर, जैसलमेर और उदयपुर में, जाम्भोजी नागौर के मुसलमानों के विरोध से उनकी ५ बातें स्वीकार था, मुर्दे गाड़ना, पहनावा आदि।

७३–क्षत्रिय जातियों का उत्थान-पतन एव जाटों का उत्कर्ष कविराज् योगेन्द्रपाल शास्त्री, प्रकाशक–ठाकुर समारसिंह, कन्या गुरुकुल, हरिद्वार, सन् १९६२ पृष्ठ ६११।

* 'जाट साधु सत' के अन्तर्गत 'महात्मा जम्भदेव' का परिचय, उनके विचार, नगीना के विश्नोइयों का हाफिज को मारना और दण्ड से बचने के लिए मुसलमानों बातें ग्रहण करने की बात अमान्य, सामूहिक रूप से सम्पूर्ण विश्नोइयों के आर्यसमाजी होने का।

७४–राजस्थानी सबद कोस प्रथम खण्ड श्री सीताराम लालस, राजस्थानी शोध सस्थान, जोधपुर, सन १९६२, पृष्ठ १२३। 'राजस्थानी साहित्य का परिचय'–

* जाम्भोजी का परिचय, १ सबद (स्वीकृत सख्या ११) का उदाहरण।

७५–श्री महाराज हरिदासजी की वाणी सम्पादक–श्री मगलदास स्वामी, निखिल भारतीय निरजनी महासभा, दादू महाविद्यालय, मोती डूगरी रोड, जयपुर, सन् १९६२ श्री परशुराम चतुर्वेदी लिखित प्रस्तावना, पृष्ठ १०।

* 'जभनाथ या जाभोजी' की विचारधारा का परिचय।

७६–हिन्दी सत साहित्य डा० त्रिलोकीनारायण दीक्षित राजकमल प्रकाशन प्रा० लि०, दिल्ली, सन १९६३, पृष्ठ ५८।

* पथ निर्माण का सूत्रपात (सवत् १५५०–१६००) फुटकर सत–विश्नुई मत के प्रवर्तक सत जभनाथ का उल्लेख।

७७–सेन्सस आफ इण्डिया १९६१, वाल्यूम–१४, राजस्थान, पार्ट सिक्स–ए, विलेज सर्वे मानोग्राफस–४ मुकाम सन १९६५।

* मुकाम–सर्वेक्षण, जाम्भोजी का जीवन, कार्य, यहा के लोगों का धार्मिक, सामाजिक–सास्कृतिक, आर्थिक जीवन, आरती, परिशिष्ट में कतिपय पट्टे परवानों की नकल और सबदों के कुछ अश आदि।

७८–कास्ट एण्ड रेस इन इण्डिया जी एस घुरये, प्रथम सस्करण, सन् १९३२, पृष्ठ २९, ६५। तीसरा सस्करण–कास्ट एण्ड क्लास इन इण्डिया सन् १९५७, पृष्ठ ३३, पापुलर बुक डिपो, बम्बई।

* विश्नोई सम्प्रदाय के पृथक् जाति बन जाने का उल्लेख।

७९–भारतवर्ष मे जातिभेद क्षितिमोहन सेन, अभिनव भारती ग्रन्थमाला, १७१–ए, हरिसन रोड, कलकत्ता, सन् १९४० पृष्ठ १५४।

* बम्बई प्रान्त में विश्नोई सम्प्रदाय के पृथक् जाति बन जाने का उल्लेख।

८०-कास्टस इन इंडिया इट्स नेचर, फन्क्शन एण्ड आरिजिंस जे एच हट्टन, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, बम्बई-१, चौथा संस्करण, सन् १९६३' पृष्ठ २३६, २५३ और २७८।

* सिन्ध के विश्नोई ब्राह्मण, हिसार के विष्णोईया द्वारा मुर्दा गाडना, विभिन्न जातियों की।

८१-नाथ और संत साहित्य (तुलनात्मक अध्ययन) डा०नागेन्द्रनाथ उपाध्याय, काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी-५, सन् १९६५, पृष्ठ ४०, ५१, ६६।

* नाथपंथ से संबद्ध पश्चिमी प्रदेश के जम्मनाथ, संतमत के २५ प्रमुख सम्प्रदायों में विश्नुई सम्प्रदाय, विश्नोई साम्प्रदायिक जाति का।

८२-"अध्ययन और अन्वेषण" मे डा० हीरालाल माहेश्वरी का "पृथ्वीनाथ और उनकी रचनाएँ", निबन्ध। नेशनल पब्लिशिंग हाउस-दिल्ली-७, नवम्बर, १९६६, पृष्ठ १२८-१३१।

* "अचभ" जाम्भोजी का विशेषण, कतिपय प्रसिद्ध विष्णोई कवियों की 'अचभ जभ' प्रयोगवाली रचनाओं के उदाहरण, जाम्भोजी का काल।

८३-ब्रज साहित्य का इतिहास डा० सत्येन्द्र, भारती भण्डार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, सन् १९६७ (स० २०२४), भूमिका, पृष्ठ १४-२२ तथा ७०३-७०५।

* विष्णोई सम्प्रदाय का स्वरूप और कतिपय कवियों की सूची।

८४-सोशल लाइफ इन मेडिएवल राजस्थान (अंग्रेजी) डा० गोपीनाथ शर्मा, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा-३, सन १९६८, पृष्ठ २२९।

* 'साम्भा' उनके काय और कतिपय धर्म नियमों का उल्लेख, मुसलमानी प्रभाव की कल्पना।

पत्र-पत्रिकाएँ —

८५-मरु भारती, पिलानी, वर्ष ७ अंक २, जुलाई, १९५९। राजस्थान के प्रमुख मत सम्प्रदाय-एक परिचय पृष्ठ ४५-५१।

* संत जंभनाथ, विश्नोइयों का नियम-पालन।

८६-राजस्थान-भारती, भाग ७ अंक ४, सादूल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीट्यूट, बीकानेर, अगस्त, १९६१, पृष्ठ ५७-६३।

* "विश्नोई पंथ' का परिचय।

निम्नलिखित पत्र-पत्रिकाओं में डा० हीरालाल माहेश्वरी के निबंधों मे प्रासंगिक उल्लेख —

८७-"जागृत महिला" (साप्ताहिक), मातृ सेवा संघ, सीताबर्डी, नागपुर-१, ३०-३-६२, ६-४-६२ और १३-४-६२ के अंकों में।

* "जाम्भोजी और विष्णोई सम्प्रदाय सामान्य परिचय"

८८-परिशोध, चौथा अंक, सन् १९६६, हिंदी विभाग, पंजाब यूनिवर्सिटी, चण्डीगढ, पृष्ठ-११८-१२३-"राजस्थानी के विस्मृत कवि गद्द और उनके कवित्त"

* गद्द के विष्णोई कवि होने की सम्भावना, प्रसंगवशात सुरजनजी का भी उल्लेख।

८९ शोध-पत्रिका, उदयपुर, वर्ष-१८, अंक १, सन १९६७, "राजस्थानी ककको काव्य और चतुर नार की बारहखडी,' पृष्ठ ५७-६५।

* वाहोजा कृत ककका सतीसी का।

९०-वरदा, बिसाऊ, वर्ष-१०, अंक २, फरवरी अप्रेल, १९६७, "संत जाम्भोजी और उनकी साखी"-"संत को अंग", पृष्ठ ४८-६६।

* जाम्भोजी के भाव-गुरु के सम्बन्ध में।

९१-कल्चरल फोरम, नम्बर-३६, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, सन् १९६७ "कृष्ण-इन गुजराती एण्ड राजस्थानी लिट्रेचर" (अंग्रेजी)।

* विष्णोई सम्प्रदाय के कृष्ण-कवियों का भी नामोल्लेख।

९२-विश्वभारती पत्रिका, शांतिनिकेतन, जुलाई सितम्बर, सन् १९६७-"राजस्थानी साहित्य कतिपय विशेषताएँ"।

* सम्प्रदाय के स्वरूप, कवि और उनकी रचनाओं के कतिपय उदाहरण।

दिल्ली सिकदर साह, दे परचौ परचायो।
महमन्खा नागौरि, परचि गुर पाए आयो।
दूद मेडतियो राव, आय गुर पाय विलग्गो।
रावल जसलमेर, परचता सासौ भग्गो।
सातिल सनमुखि आय, सुचील जित हुवो सिनानी।
साग राण मुणि सीख, जका गुर कही स मानी।
छव राजिंदर के के अवर, आचारे ओलखियो।
वील्ह कहै मार्गो पुह, जाह मुक्ति नैं हाथो दियो॥

—वील्होजी कृत 'कथा जैसलमेर की' से।

कल्जिुग चारो धर्म, एकठा फुरमाइया।
मुसल व भा जएा, जोग जुगति दिढाइया।

—अज्ञात कवि (सख्या २५) कृत 'साखी' से।

जोगी जगम नाद डिगबर। सन्यासी ब्राहमण ब्रह्मचारी॥ ४५ ६ ७।
मनहठ पढिया पिंडत, काजी मुल्ला खेल आप दुवारी॥ ४५ ८ ६।
हाली पूछ पालो पूछ, आ कलि पूछणहारी॥ ८३ २४।
ठाकर पूछ चाकर पूछ, पूछ कीर कहारी॥ ८३ ३१।

—जम्भवाणी (सबदवाणी) से।

अध्याय ३

तत्कालीन स्थिति

अध्याय ३

तत्कालीन स्थिति

जाम्भोजी का भ्रमण व्यापक था। यद्यपि उन्होंने देश के अन्य भागों में भी अपने उपदेश दिये थे तथापि उनका प्रमुख कार्य-क्षेत्र राजस्थान रहा था। सम्प्रदाय के अधिकांश पुराने स्थान यहां पर स्थित हैं। साहित्य-निर्माण भी अधिकांशतः यहीं के कवियों ने किया। इस कारण, जाम्भोजी, विष्णोई-सम्प्रदाय और साहित्य को समग्रता में सम्यक् रूपेण समझने और महत्त्व-दिग्दर्शन के लिए पृष्ठभूमि के रूप में १६ वीं शताब्दी राजस्थान की राजनीतिक, सामाजिक और धार्मिक स्थिति का परिचय देना आवश्यक प्रतीत होता है। आगे इसका सिंहावलोकन किया जाता है —

(क) राजनीतिक स्थिति –

(१) राजस्थान नाम-सारे राजस्थान या राजपूताने के लिए पहले किसी एक नाम का प्रयोग होना पाया नहीं जाता, उसके कई अंशों के तो प्राचीन काल में समय-समय पर भिन्न भिन्न नाम थे और कुछ विभाग अन्य बाहरी प्रदेशों के अन्तर्गत थे[1]। शासकों के परिवर्तन के साथ-साथ उनके द्वारा शासित प्रदेशों की भौगोलिक सीमाओं में भी परिवर्तन-परिवर्द्धन होता रहा है।

(२) जांगलू-राठौड़ों के अधिकार से पूर्व बीकानेर का दक्षिणी हिस्सा जांगलू नाम से प्रसिद्ध था। वह साखले परमारों के अधीन था और उसका मुख्य नगर जांगलू कहलाता था। अब तक वह स्थान उसी नाम से प्रसिद्ध है। जांगल देश के उत्तरी भाग पर राठौड़ों का अधिकार होने के बाद जबसे उसकी राजधानी बीकानेर स्थित हुई तबसे उक्त राज्य को बीकानेर राज्य कहने लगे[2]। तब जांगलू के अन्तर्गत साखलों के केवल ८४ गांव ही थे। ऐसा प्रतीत होता है कि उस समय तक पृथक् प्रदेश की प्रसिद्धि के रूप में जांगलू अपना महत्त्व खो चुका था और सुप्रसिद्ध नाम 'बागड़ देश' के अन्तर्गत माना जाता था। बीकानेर के राजा जांगल देश के स्वामी होने के कारण अपने को जांगल धर (जांगल देश) के बादशाह कहते हैं[3]।

(३) स्वालक, माड, मेदपाट-साम्भर चौहानों की मूल राजधानी होने के कारण पीछे से उनके अधिकार का साम्भर, अजमेर आदि का सारा प्रदेश सपादलक्ष कहलाने लगा। इसी को सवालक या स्वालक कहते थे[4]। जाम्भोजी ने एक 'सबद' (६३ १४) में इसका उल्लेख किया है। पहले इसके अन्तर्गत जांगलू, जयपुर राज्य का शेखावाटी से लगाकर रण-

---

१-ओझा ओझा निबंध-संग्रह, प्रथम भाग, पृष्ठ १७, सन् १९५४ (उदयपुर)।
२-ओझा बीकानेर राज्य का इतिहास, प्रथम खण्ड, पृष्ठ ४, सन् १९३९।
३-ओझा ओझा निबंध संग्रह, प्रथम भाग, पृष्ठ १८, १९।
४-ओझा जोधपुर राज्य का इतिहास, खण्ड १, पृष्ठ ३९, ४१, सन् १९३८।

थभोर से कुछ दक्षिण तक का प्रदेश जिसमे कोटा रियासत का उत्तरी भाग भी है, मेवाड का माडलगढ से लगाकर सारा पूर्वी हिस्सा, बूंदी राज्य का पश्चिमी अंश, किशनगढ का राज्य तथा अजमेर का सारा प्रदेश माना जाता था [१]। नागौर पट्टी को अब तक स्वालक या 'सवा लख' कहा जाता है [२]। जैसलमेर राज्य का प्राचीन नाम माड है [३]। मेवाड का पुराना नाम मेदपाट और प्राग्वाट मिलता है।

(४) बागड, बागड देश-ओझाजी के अनुसार डूंगरपुर और बांसवाडा राज्यों का सम्मिलित नाम बागड मिलता है [४]। अन्यत्र उनका कथन है कि बीकानेर राज्य का दक्षिणी और पूर्वी भाग बागड नाम की विशाल मरुभूमि का और कुछ उत्तरी पश्चिमी भाग भारत की मरुभूमि का अंश है [५]। ओझाजी का 'बीकानेर राज्य के एक अंश को बागड' मानना आंशिक रूप से ही मान्य हो सकता है। 'एक अंश' ही नहीं राव बीकाजी द्वारा विजित इस प्रदेश की समस्त भूमि और पश्चात का पुराना बीकानेर राज्य तथा शेखावटी का समस्त प्रदेश सम्मिलित रूप से 'बागड' या 'बागड देश' कहलाता था। इसका बागड या बागड नाम इसलिए पडा प्रतीत होता है कि इस भूमि पर कभी सैकडो वर्षों तक बागडिये चौहानों का राज्य रहा था। बीकाजी के समय इस भूमि का नाम जहां अब बीकानेर राज्य स्थापित है 'बागडी देश' था [६]। जाम्भोजी इसी प्रदेश मे उत्पन्न हुए थे। विष्णोई कवियों ने उनके बागड देश मे अवतीर्ण होने का सोल्लास उल्लेख किया है [७]। अन्य उल्लेखों से भी इसकी पुष्टि होती है [८]।

(५) "बागडदेश" मे राजनीतिक उथल-पुथल राठोड-जाम्भोजी के प्रादुर्भाव से लेकर विष्णोई-सम्प्रदाय-प्रवर्तन के समय-संवत १५४२ तक पीपासर और समराथल के आसपास ही नही, समूचे 'बागडदेश' मे एक महान राजनीतिक उथल-पुथल हो रहा थी। इन्ही ३४-३५ वर्षों मे राठौडो ने यहा के जाटो, छापर द्रोणपुर के मोहिलो, पूगल के भाटियो,

१-ओझा ओझा निबंध संग्रह, प्रथम भाग पृष्ठ २०-२१।
२-ओझा जोधपुर राज्य का इतिहास खण्ड १, पृष्ठ ४१।
३-लखमीचन्द रईस तवारीख जैसलमेर (तीसरा भाग), पृष्ठ १२५, सन् १८९२।
४-ओझा निबंध संग्रह, प्रथम भाग पृष्ठ २४-२६ और राजपूताने का इतिहास, पहली जिल्द, पृष्ठ २, टिप्पणी सन १९३७।
५-बीकानेर राज्य का इतिहास खण्ड १ पृष्ठ ५।
६-पाउलेट-बीकानेर स्टेट गजेटियर, पृष्ठ २, सन १९३२।
७-(क) सो गुर आयो बागड देस जग मा कियो चानिणो।-साखी, ऊधोजी नैण।
(ख) एकल बाइ पन्ड सिरि आदो बागड देस सुनाव॥-साखी, कवि संख्या-२८।
(ग) बावो गामलिज धु बागड देस, पोन्मी पातसर आवियो।-साखी, वील्होजी।
(घ) भगता काजि कियो परवस भरत षंड मा बागड देस।
समरथलि ऊभो सायरा, नवषडि जोति जुगति परवरी॥ १२॥
—कथा ग्यांनचरी, वील्होजी।
(ङ) सिवरो सिवरो साभगर देव, कल्जुग कायम राजा आवियो।
साय अवतरयो बागड देस, सतगुर गुपह बताविये॥ १॥-साखी, केसोजी।
८-बरसायता रामा, भूमिका, पृष्ठ ११, राज० पु० म०, जयपुर, संवत २०११।

जागलू के सांखलो तथा जोइयो से अनेक ठिकाने जीत लिए। परस्पर वमनस्य, आपसी फूट, यशोलिप्सा और अहंकार के कारण राठौडो के हाथो उनकी पराजय हुई।

(६) जागलू के सांखले–राठौडो के बीकानेर राज्य पर अधिकार होने से पूर्व यह प्रदेश ई भागो म विभक्त था और इस राज्य पर उक्त लोगो का अधिकार था। मरुभूमि और ाबादी कम होने के कारण विजेताओ का इस तरफ ध्यान कम ही रहा, जिससे यहा के ासक स्वाधीनता का उपभोग करते रहे। एक नए राज्य–स्थापन की कामना लेकर राव ोधा के पुत्र राव बीका अपने आदमियो सहित विक्रम सवत १५२२ के आश्विन सुदि १० ो जोधपुर से प्रस्थान कर मडोर होते हुए देशनोक आए। वहा से उन्होंने चाडासर, कोडम ेसर आदि स्थानों पर अधिकार किया और जागलू[1] पहुच कर नापा सांखला की मदद से सांखला के ८४ गाव, अपने अधीन कर लिए[2]। पहले सांखलो की एक शाखा का निवास रुण (जोधपुर राज्य) मे था। वे राणा कहलाते थे। १२ वी शताब्दी के लगभग साखले महीपाल का पुत्र रायसी इस प्रदेश मे आया और दहियो से जागलू ले लिया। बीकानेर से ३६ मील दक्षिण मे स्थित कवलीसर गाव मे साखले राणाओ की १४ वा शताब्दी पूर्वार्द्ध की दवलियां हैं। रायसी की वश परम्परा म नापा सांखलो म वडा प्रसिद्ध हुआ। उसके समय मे यहा बिलोच जाति के मुसलमानो के आक्रमण होने लगे जिससे सांखले निर्बल हो गए। फिर नापा जोधपुर क राव जोधाजी के पास चला गया और कुवर बीका को नवीन राज्य स्थापित करने को उद्यत देख जागलू पर अधिकार करने की सलाह दी[3]। राव जोधा के समय तो जागलू म साखलो का ही राज्य बना रहा था[4] जिसको इस प्रकार, राव बीका ने, सवत १५२२ म अपने अधीन किया। तब से सांखले राठौडो के विश्वासपात्र बन गए। नैणसी के अनुसार, नापा सांखला, राव जोधा की तरफ से राणा कुम्भा के दरबार मे भी रहा था[5]।

(७) पूगल के भाटी–बीकानेर राज्य की स्थापना से पूर्व, बीकानेर के पश्चिमोत्तर का सारा प्रदेश जो जसलमेर राज्य की सीमा से पजाब की सीमा तक मिलता है, भाटियों के अधिकार में था[6]। ये वहा लूटमार भी किया करते थे। इनके दो भाग थे–एक पश्चिम की ओर जसलमेर राज्य की सीमा से मिले हुए पूगल प्रदेश के भाटी राजपूत और दूसरे भटनेर (हनुमानगढ़) के आसपास बसने वाले भाटी मुसलमान। राव बीका ने जागलू पर अधिकार करने के समय भाटी राव शेखा पूगल का स्वामी था। एक बार वह मुल्तान की ओर

१–जागलू बीक जाणइ जगत्त। छत्रपति हूवो ताणाविद्धत्त।
नूर घन्न घल्हल धित्त। चउड रा जेम राव बीक चित ॥ ४० ॥
–बीठू सूजा कृत छद राव जतसी रो, इ० प्र० स० ६६, अनूप संस्कृत लाइब्रेरी, बीकानेर।
२–ओझा बीकानेर राज्य का इतिहास, खण्ड १, पृष्ठ ५५, ९१–९२।
३–वही, पृष्ठ ५३ ५५ ५८, ६६ ७२ ७३, २३८।
४–ओझा जोधपुर राज्य का इतिहास खण्ड १, पृष्ठ २१५।
५–ख्यात, भाग १ पृष्ठ ३०–३१, ना० प्र० स० काशी।
६–पाउलेट बीकानेर स्टेट गजेटियर पृष्ठ २।

से चूकमार कर जब मोड़ रहा था, तो वहाँ के सूबेदार की सेना से मुठभेड़ हो गई। वह पकड़ा गया और मुलतान में कैद कर लिया गया। ओझाजी के अनुसार, राव बीका ने सेना की रानी की प्रार्थना पर उनको कैद से छुड़वा लिया। इस पर राणा की पुत्री का विवाह राव बीका से हो गया[1]। परन्तु करणीजी द्वारा राणा को छुड़ाकर लाने और उससे विवाह कराने जाने का उल्लेख मिलता है[2]। यह घटना संवत् १५३६ की है[3]। राव बीका ने कोडमदेसर के निकट अपनी राजधानी का निर्माण कराना चाहा, जिससे भाटियों को भय हुआ। उन्होंने कुलभाण महाराज के नेतृत्व में राठौड़ों से युद्ध किया। निकट होने के कारण भाटियों से निरन्तर झगड़ा होने की सम्भावना देख कर राव बीका ने कोडमदेसर से दक्षिण पूर्व में विक्रम संवत १५४२ में किला बनवाया जो बीकानेर[4] नगर के भीतर है। राव शेखा ने भी बीका की अधीनता स्वीकार कर ली और इस प्रकार जांगलू के पश्चात् पूगल बीकानेर राज्य के अन्तर्गत हो गया[5]। कोडमदेसर (बीकानेर से २८ मील दक्षिण) गाँव के समीप वाली सागर नामक कूएँ के पास एक कतार में २६ देवलियाँ लगी हैं। इनमें से एक को छोड़कर शेष सभी विक्रम संवत् की १६वीं १७वीं शताब्दी के बीच मृत्यु को प्राप्त होने वाले भाटी जागीरदारों की हैं।[6]

(८) भटनेर के भाटी-बीकानेर के उत्तर की तरफ के भाटी राजा दुलचन्द से विक्रम संवत १४४८ में तैमूर ने भटनेर लिया। इसके बाद यहाँ क्रमशः भाटियों, जोहियों और चायलों का अधिकार हुआ। विक्रम संवत् १५८४ में बीकानेर के चौथे शासक राव जैतसी ने यहाँ राठौड़ों का आधिपत्य स्थापित किया। इसके ११ वर्ष बाद बाबर के बेटे कामरां ने इसे जीता। भटनेर के चारों ओर भाटी, चायल और जोहिया जाति के लोग बसे हुए थे। ये लोग अधिकतर मुसलमान थे। विक्रम १६वीं शताब्दी पूर्वार्द्ध में रेणी के आसपास का इलाका चायल और खीचियों के अधिकार में था।[7] राव बीका ने खीचीवाड़े के स्वामी देवराज खीची को मारकर वह इलाका भी अपने राज्य में मिला लिया[8]।

१-ओझा बीकानेर राज्य का इतिहास खण्ड १ पृष्ठ ७४ ९४।
२-(क) पाउलेट बीकानेर स्टेट गजेटियर पृष्ठ २-३।
(ख) किशोरसिंह बार्हस्पत्य करनी चरित्र पृष्ठ १४१-१४७।
३-किशोरसिंह बार्हस्पत्य करनी चरित्र पृष्ठ १४७।
४-छात्रपति उचारिय छत्र छांह बताल आडी बीध वार ॥
बीक दुरग करजि कीधवत्त सोभाग दीप जाणी सपत ॥ ४९ ॥-बीठू सूजा कृत छन्द राव जतसी रो। ह० प्रति संख्या ९९, अनूप सं० ला०, बीकानेर।
५-(क) पाउलेट बीकानेर स्टेट गजेटियर पृष्ठ ३-४।
(ख) ओझा बीकानेर राज्य का इतिहास खण्ड १, पृष्ठ ७४।
(ग) बीठू सूजा कृत छन्द राव जतसी रो छन्द ४८, हस्तप्रति सं० ९९, अनूप सं० ला०, बीकानेर।
६-ओझा बीकानेर राज्य का इतिहास, खण्ड १ पृष्ठ ५८।
७-(क) पाउलेट बीकानेर स्टेट गजेटियर पृष्ठ २।
(ख) ओझा बीकानेर राज्य का इतिहास, खण्ड १, पृष्ठ ६५, ६६, १००।
८-कुंवर कन्हैया जू देव बीकानेर राज्य का इतिहास, पृष्ठ १८, संवत् १९६९।

(६) 'बागडदेश' के जाट, उनका विस्तार–भटनेर के चारो ओर वहा से लेकर दक्षिण म बीकानेर और उसके आसपास जाटो की आबादी थी। भटनेर विजय के सिलसिले म तमूर ने अपने जीवन–चरित मे लिखा है कि जाट जाति बडी शक्तिशाली है और ये दुर्दांत जाट डाकिया और चीन्यिा की भांति असभ्य है, कोई भी यात्री या व्यापारी इनके हाथो पडकर बिना चोट खाए जा नहा सकता[1]। बीकानेर से ईशान, पूव और आग्नेय दिशाओ मे तो जाटों का राज्य ही था। ये लोग मुख्यत सात जातियो मे विभक्त थे जिनका परिचय इस प्रकार है[2] —

जाति	गावो की सख्या	मुख्य स्थान	मुखिया का नाम
१ गोदारा	३६०	लाधडी, शेखसर	पाण्डू
२ सारण	३६०	भाड ग	पूलो
३ कसवा	३६०	सीधमुख	कवरपाल
४ बेनीवाल (वणियाल)	३६०	रासलाणा	रायसल
५ पूनिया	३६०	वडी लूदी	कानो
६ सिहाग	१४०	सूई	चोखो
७ सोहुवा	८४	धाणसिया	अमरो

जाट लोग मरुभूमि मे बहुत प्राचीन काल से निवासी थे। उपयुक्त सूची से स्पष्ट है कि वतमान बीकानेर का बहुत सा भाग पहल वहा के जाटो के अधिकार म था। बीका के आक्रमण के दिना म उनका शासन निबल पड गया था। आपसी फूट के कारण उनको राठोडा की अधीनता स्वीकार करनी पडी। आसपास की अन्य जातियो–मोहिला, जोहिया और जैसलमेर के भाटियो से भी उनकी शत्रुता थी। इसी समय गोदारो और सारणो मे पूले सारण का पत्ना मिलकी के कारण आपस म झगडा हो गया, जिसम राव बीका न पाण्डू गोदार का पक्ष लिया। बीकाजी की शक्ति देख कर जाटो के अन्यान्य वग भी धीरे धीरे उनकी अधीनता मे आ गये।

उपयुक्त शासक जातिया के अतिरिक्त भी जाटो से सम्बन्धित उल्लेख यत्र–तत्र मिलते है जिनम उनके महत्त्व का पता चलता है। जोधपुर से निकलने के बाद राव बीका को जांगलू लेन की सलाह देने मे जाट निकोदर भी एक था[3]। राव जोधा को एक जाटनी द्वारा मडोर

१–हिस्ट्री आफ इण्डिया एज टोल्ड वाई इटस् ओन हिस्टोरियन्स, वाल्यूम–थड, पृष्ठ ४२८–४२६, लन्दन, सन १८७१।

२–(क) दयालदास की ख्यात भाग २, पृष्ठ ७, बीकानेर, सवत् २००५।
(ख) पाउलेट बीकानेर स्टेट गजेटियर पृष्ठ ४।
इस सम्बन्ध मे विभिन्न लेखका मे किंचित् मतभेद भी है। द्रष्टव्य –(१) कनल टाड– एनल्स आफ बीकानेर, (२) रामनाथ रत्नू इतिहास राजस्थान, (३) कु वर कन्हैया ज दव बीकानेर राज्य का इतिहास, (४) देशराज जघीना जाट इतिहास, आदि।

३–विश्वेश्वरनाथ रेउ मारवाड का इतिहास, प्रथम भाग, पृष्ठ ९८, पाद–टिप्पणी।

के आसपास की भूमि पहले हस्तगत करने की शिक्षा दिए जाने का प्रसंग बहु-प्रसिद्ध है[१]। राजपूतों और जाटों में परस्पर विवाह भी होते थे। आमेर के कछवाहा कुन्तलजी (जो संवत् १३३३ में वहां के राजा हुए) की एक रानी वरसीरदेजी, चौडाराव जाट की बेटी थी[२]। शेखावतों के पूर्वज सुप्रसिद्ध शेखाजी बरवाडे में जन्मे थे और खासोरा जाट भमरा के घर ढाणी में धाय के पल्ले थे[३]। जयपुर राज्य का सामोद नगर जो कभी नाथावतों के अधिकार में था, श्यामा नामक एक जाट की ढाणी थी[४]। बाँकीदास के अनुसार उनके समय में, जोहाणपट्टी के जाखड जाटों के गांव बीदावतों के पट्टे में, सीहागवाटी के सीहाक जाटों के १४० गांव महाजन के पट्टे में और गोदारों के १४४ गांव बीकानेर राजा के खालसे में थे[५]। बीकानेर राज्य के निवासियों में तीन चौथाई संख्या जाटों की है[६]। अब भी पुराने बीकानेर राज्य,-बीकानेर, चूरू और श्रीगंगानगर जिलों में जाट बहुत बडी संख्या में आबाद हैं। जाम्भोजी ने प्रमुखतः जाटों में ही अपने अनुयायी-विष्णोई बनाए थे जिसका उल्लेख 'सबदवाणी' में भी है (१४ ३-४)। विष्णोई बन जाने पर भी जाटों की जाति वही रही जो पहले थी। यही कारण है कि गोदारा जाट भी मिलते हैं और विष्णोई भी।

(१०) जोहियावाटी के जोहिये-जोहियों का मूल निवास स्थान पंजाब में था। इन्हीं के नाम पर सतलज नदी के दोनों तटों पर का पुराने भावलपुर राज्य के निकट का प्रदेश जोहियावाटी कहलाता था। बीकानेर राज्य का उत्तरी भाग पहले जोहियों के अधिकार में था। राठौड राव सलखा का छोटा पुत्र वीरम, मालाणी प्रदेश से निकाले जाने पर जोहियों के पास आकर रहा था। वीरम के छल कपट करने पर उन्होंने उसको मार डाला[७]। राठौडों से पराजित होने से पहले उनका ६०० गांवों पर आधिपत्य था। इनका नेता शेरसिंह था जिसका मुख्य स्थान भूरपाल था। गोदारों से संधि हो जाने के बाद राव बीका ने शेरसिंह पर आक्रमण किया किन्तु वे सफलता प्राप्त न कर सके। अंत में विजय की कोई सूरत न देखकर उन्होंने षड्यन्त्र द्वारा शेरसिंह को मरवा डाला[८]। ओझाजी के अनुसार, बीका ने सिधाल

१-ओझा (क) उदयपुर राज्य का इतिहास, खण्ड २, पृष्ठ ६०३।
(ख) जोधपुर राज्य का इतिहास, खण्ड १, पृष्ठ २ ७।
२-श्री हनुमान शर्मा जयपुर का इतिहास पृष्ठ ४० सन् १९३७।
३-(क) चारण रामनाथ रत्नू इतिहास राजस्थान पृष्ठ ६३।
(ख) श्री हनुमान शर्मा जयपुर का इतिहास, पृष्ठ ३६।
(ग) प० झाबरमल्ल शर्मा-सीकर का इतिहास, पृष्ठ ८-९ तथा खेतडी का इतिहास, पृष्ठ २१ २२।
४-हनुमान शर्मा जयपुर का इतिहास, पृष्ठ ९४।
५ बाँकीदास की ख्यात पृष्ठ ८०, जयपुर, संवत् २०१३।
६-गजे-राजस्थान, ऐतिहासिक भाग बीकानेर।
७ (क) वीरमायण, ग्रंथ संख्या भा-१ पा-२३ ग, एशियाटिक सोसायटी कलकत्ता
कैटलाग आफ राजस्थानी मैनुस्क्रिप्ट्स पार्ट प्रथम, त० मा०, कलकत्ता पृ०

पर चढाई की जहा का जोइया स्वामी उसके परो मे आ गिरा[1]। बीकानेर के छठे राजा रायसिंह के समय जोइयो ने उपद्रव किया था किन्तु राठौड सेना ने उनका भीषण सहार किया। फलस्वरूप जोइया राज्य सदा के लिए निबल और जनशून्य हो गया[2]।

(११) मोहिलवाटी के मोहिल-राठौडो के आगमन से पहले छापर, द्रोणपुर और बरलू के आसपास का प्रदेश मोहिल राजपूतो के अधिकार मे था और मोहिलवाटी कहलाता था। मोहिल चौहानो की एक शाखा है, जिसके स्वामियो ने राणा का विरुद धारण कर उक्त स्थानो के आसपास के प्रदेश पर विक्रम की १६ वी शताब्दी के प्रारम्भ तक राज किया था[3]। नणसी के अनुसार, सवत् ६३१ में वागडियों से मोहिलो न धरती ली थी, नौ सौ बरसा तक छापर-द्रोणपुर का राज मोहिलो के अधिकार मे रहा और सवत् १५३२ मे उनसे राठौडो ने वह प्रदेश लिया[4]। राठौडा के आगमन से पूव बीकानेर मे जाटा के बाद सबसे प्रबल मोहिल राजपूत ही थे। प्राचीन काल मे बीकानेर के बहुत बडे भाग मे उनका आधिपत्य रहा था, यह अनेक देवलियो और शिलालेखो से सिद्ध होता है[5]। १६ वी शताब्दी के आरम्भ म मोहिलो का राजा अजीत था जो बडा वीर और प्रतापी था। वह राव जोधा का दामाद था। सवत १५२१ मे वह राव जोधा द्वारा मारा गया (द्रष्टव्य-तेजोजी चारण, कवि सख्या १)। तब से राठौडो और मोहिलो मे वैर हो गया तथा उनमे कई लडाइया हुइ। केवल चार पाच महीने ही राठौडो का वहा अधिकार रहा होगा कि कु वर मेघा बछराजोत ने अपनी धरती वापिस छीन ली। बछराज अजीत का भतीजा था। सवत १५२३ के लगभग वह भी राठौडो द्वारा मारा गया। उसके पश्चात छापर-द्रोणपुर का स्वामी उसका पुत्र मेघा हुआ। उसके जीते जी राठौड कुछ न कर सके। सवत १५३० म उसके मरने पर बरसल वहा का स्वामी हुआ। वह एक निबल शासक था। मोहिलो मे परस्पर फूट हो गइ और सवत १५३१ म राव जोधा न वह इलाका अपने अधीन कर लिया[6]। इस पर राणा बरसल, उसका छोटा भाई नरबद तथा बाघा काधलोत बादशाह बहलोल लोदी के पास दिल्ली म गए। बादशाह ने हिसार के सूबेदार सारगखा को फौज देकर भेजा[7]। उन्होने अपना इलाका राठौड बीदा से पुन वापिस ले लिया। इस पर राव बीका न मोहिलो पर चढाई कर उन्हे परास्त किया और मोहिलवाटी को विजय कर वह प्रदेश अपने भाई बीदा को दे दिया। तब से वह बीदावाटी कहलाने लगा। बीदा ने अपने जीवनकाल में ही छापर-द्रोणपुर के दो भाग कर अपने पुत्र उदयकरण को द्रोणपुर और ससारचन्द्र को पडिहारा बाट दिया[8]। राव बीदा का उल्लेख जाम्भोजी के जीवन-वृत्त और जाम्भाणी साहित्य म अनेक बार हुआ है।

१-बीकानेर राज्य का इतिहास खण्ड १ पृष्ठ १०१।
२-पाउ राजस्थान ऐनल्स आफ बीकानेर।
३-ओझा बीकानेर राज्य का इतिहास, खण्ड १, पृष्ठ ६०-६१।
४-नणसी की ख्यात, प्रथम भाग, पृष्ठ १६५-१६६ ना० प्र० स०, काशी।
५-ओझा बीकानेर राज्य का इतिहास, प्रथम भाग, पृष्ठ ५९-६२।
६-विश्वेश्वरनाथ रेउ मारवाड का इतिहास प्रथम भाग, पृष्ठ ९७-१००, जोधपुर।
७-ओझा जोधपुर राज्य का इतिहास, खण्ड १, पृष्ठ २४७।
८-ओझा बीकानेर राज्य का इतिहास, खण्ड १, पृष्ठ ७१ तथा खण्ड २, पृष्ठ ६४९

(१२) **शेखावाटी के कायमखानी**–राव बीका के इस प्रदेश मे आने के समय शेखावाटी कायमखानियो के अधिकार मे थी[१]। शेखावाटी के खडेला प्रदेश का स्वामी रिडमल प्राय बीका के राज्य मे लूटमार किया करता था। इस पर राव बीका ने उस प्रदेश को लूटा[२]। शेखावाटी–विजय का उल्लेख बीठू सूजा ने भी किया है[3]।

(१३) **राजस्थान मे मुसलमानों का प्रवेश–अजमेर**–सबदवाणी के कई सबदों और प्रसगो मे मुसलमानों के मजहब और कार्यों आदि के उल्लेख हैं। इनमे नागौर के मुहम्मदखा और अजमेर के मल्लूखा के नाम सर्वाधिक प्रसिद्ध और प्रचलित हैं। तत्कालीन राजस्थान में वस्तुत अजमेर और नागौर ही मुसलमानो के प्रधान स्थान थे। यहा मुसलमानो का प्रवेश विक्रम की तेरहवी शताब्दी उत्तरार्द्ध से आरम्भ होता है। तेरहवी शताब्दी के मध्य तक राजपूताने के प्रत्येक विभाग पर प्राय राजपूत राजा ही शासन करते थे। यद्यपि उससे पूर्व ही मुसलमानो के हमले इस देश पर होने शुरू हो गए थे और उन्होंने सिंध तथा उत्तरी सीमान्त प्रदेश पर अपना अधिकार कर लिया था, तो भी वहा के राजपूत अवसर पाकर उनको अपने इलाको मे से निकाल देते थे[४]। यह स्थिति शहाबुद्दीन गोरी से पलटी। सवत १२४६ मे पृथ्वीराज चौहान कैद होकर कुछ महीनो बाद मारा गया। सवत १२५१ मे अजमेर पर मुसलमानो का अधिकार हो गया[५]। तब से इसलाम का प्रवेश राजस्थान मे होने लगा और उसके ठीक मध्य मे मुसलमानो का अधिकार हो गया। अजमेर की ढाई दिन का झोपडा नाम की मसजिद विक्रम सवत् १२५६ से १२७० तक चौदह वर्षों मे बनी थी[६]। सवत् १२६६ मे अजमेर मल्लिक इजुद्दीन के अधिकार मे आया[७]। सवत् १४५७ से १५०२–५५ वर्षों तक अजमेर, मेवाड के महाराणा मोकल (मृत्यु सवत् १४६७) तथा उनके पश्चात महाराणा कुम्भा (शासन–काल सवत १४६०–१५२५) के अधिकार मे रहा[८]। फिर वह सवत १५०३ मे माण्डू के सुल्तान महमूद खिलजी के हाथ मे चला गया किन्तु कुछ महीनो बाद ही राणा कुम्भा ने नागौर की लडाई के समय (सवत १४५६ मे) पुन उसे विजय कर लिया। प्रतीत होता है, राणा कुम्भा की मृत्यु के पश्चात (सवत १५२५) अजमेर पुन माडू के सुलतान द्वारा ले लिया गया था और वहा उसका अधिकार सवत १५६१ तक रहा। पश्चात सवत १५६० तक वह मेवाड के महाराणा रायमल के कब्जे मे रहा। माण्डू के सुलतान की ओर से अजमेर का सूबेदार मल्लूखा था[९] जो सवत १५३९ मे नियामतुल्लाखा के स्थान पर नियत

१–पाउलेट बीकानेर स्टेट गजेटियर पृष्ठ २।
२–ओझा बीकानेर राज्य का इतिहास खण्ड १, पृष्ठ १०७–१०८।
३–पुरषन लाइ भाभण पाड। राथिया बाह दे रोपिराद ॥ ४६ ॥
-छन्द राव जतसी रो।
४–ओझा राजपूताने का इतिहास जिल्द पहली पृष्ठ २८०, ३०६ द्वितीय सस्करण।
५–(क) ओझा उदयपुर राज्य का इतिहास खण्ड ३ पृष्ठ १४१०।
(ख) रेउ मारवाड का इतिहास प्रथम भाग पृष्ठ ९।
६–ओझा राजपूताने का इतिहास जिल्द पहली पृष्ठ २८।
७–रेउ मारवाड का इतिहास प्रथम भाग, पृष्ठ १५।
८–शारदा अजमेर हिस्टोरिकल एण्ड डिस्क्रिप्टिव पृष्ठ १४६, २२६।
९–वही पृष्ठ १४६ २२६–३१।

हुआ था[1]। म-लूखा का उल्लेख जाम्भोजी के जीवन-वत्त मे किया गया है।

(१४) मुसलमान और नागौर-अजमेर पर मुसलमानो का आधिपत्य होने के कुछ समय बाद नागौर पर भी उनका अधिकार हो गया[2]। विक्रम संवत ११७६ मे मुहम्मद बाहलीम ने नागौर का किला बनवाया[3]। संवत १२५२ से १३७२ तक यह तुर्की सूबेदारों के अधिकार म रहा[4]। मुहम्मद तुगलक के जो संवत १३८२[5] म दिल्ली के तख्त पर बैठा, नागौर से प्राप्त एक लेख मे वहा उसका अधिकार होना सिद्ध होता है। तुगलक वश के अंतिम वर्षों म दिल्ली की बादशाहत कमजोर होने पर गुजरात का सूबेदार जफरखा, मुजफ्फरशाह नाम से, संवत १४५३ म वहा का स्वतत्र सुल्तान बना। उसने नागौर से जलालखा खोखर को हटाकर अपने छोटे भाई शम्सखा ददानी को संवत १४६० म वहा का हाकिम नियुक्त किया। शम्सखा ने वहा अपने नाम से शम्स ममजिद और शम्स तालाब बनवाए। उसके बाद उसका बेटा फीरोजखा वहा का स्वामी हुआ। उसने भी वहा एक बडी ममजिद बनवाई, जिसको राणा कुम्भा ने विजय करते समय नष्ट कर दिया[6]। संवत १५१२ मे फीरोजखा के मर जाने के बाद उसके छोटे भाई मुजाहिदखा ने नागौर पर अधिकार कर लिया। थोडे ही समय बाद एक दूसरे शम्सखा ने, जो मुजाहिदखा का भतीजा और फीरोजखा का बेटा था[7], राणा कुम्भा की सहायता से नागौर पर अधिकार कर लिया[8]। यह घटना संवत १५१३ मे हुई[9]। संवत् १५४१ म नागौर पर फीरोजखा द्वितीय का शासन था। शम्सखा के वश का अंतिम शासक मुहम्मदखा था, जिसने दीर्घ काल तक शासन किया। संवत १५८५ तक वहा उसका शासन करना सिद्ध होता है। उसके बाद नागौर का शासन क्रमश लोदी और सूर शासकों के हाथ म चला गया। संवत १५६० के एक शिलालेख से पता लगता है कि वहा शेरशाह सूरी के पुत्र इस्लामशाह के राज्य मे एक मसजिद बनवाई गई थी[10]। मुहम्मदखा का उल्लेख जाम्भोजी के जीवन-वत्त म किया गया है। बीठू सूजा कृत छन्द राव जतसी रो (हस्तप्रति सख्या ९९, अ० स० ला०, बीकानेर) से मालूम पडता है कि राव बीका ने नागौर पर चढाई करके उसे दो बार जीता था[11]। विक्रम संवत १५७० मे मुहम्मदखा ने बीकानेर पर चढाई की किन्तु वहा के राव लूणकरण के हाथो उसकी

१-ठाकुर गोपालसिंह राठौड मेडतिया जयमलवंशप्रकाश पृष्ठ ६३ बदनौर।
२-ओझा जोधपुर राज्य का इतिहास खण्ड १ पृष्ठ ४१।
३-रेउ मारवाड का इतिहास प्रथम भाग पृष्ठ १३, जोधपुर।
४-डा० कलाशचन्द जैन अंशियट सिटीज आफ राजस्थान, पृष्ठ २०६ अप्रकाशित शोध-प्रबन्ध राजस्थान विश्वविद्यालय पुस्तकालय जयपुर।
५-मजुमदार रायचौधरी और दत्त एन एडवान्स्ड हिस्ट्री आफ इण्डिया पृष्ठ ३१७।
६-ओझा जोधपुर राज्य का इतिहास खण्ड १, पृष्ठ ४२ २०२ (पादटिप्पणी), २१२।
७-श्यामलदास वीरविनोद पृष्ठ ३२७-२८।
८-डा० कलाशचन्द जैन अंशियट सिटीज आफ राजस्थान -'नागौर'।
९-ओझा उदयपुर राज्य का इतिहास, खण्ड २ पृष्ठ ६१३।
१०-डा० कलाशचन्द जैन अंसियट सिटीज आफ राजस्थान - नागौर'।
११-नागवर कोट बीकइ नडेय। वलिवडि राइ बिहु वार वेय ॥ ४७ ॥

पराजय हुई[1]। नागोर के खान पर राव गागा ने भी आक्रमण किया था किंतु राव लूणकरण ने खान की सहायता की और दोनों का मेल करा दिया[2]।

संवत् १४५५ में तैमूर ने हिंदुस्थान पर चढ़ाई कर भटनेर का किला लिया था। लोदी खानखान के बहलोल और सिकन्दर लोदी ने राजपूताने पर हमले किए, परन्तु यहां पर उनका विशेष प्रभाव नहीं पड़ा[3]। लखा से भी राव बीका का युद्ध हुआ था (बीठू सूजा कृत छन्द राव जैतसी रो)। सबदवाणी के 'तिमिर लिंगा' में सम्भवतः इन्हीं का ओर संकेत है (८६ १६-१८)।

(१५) राठौड़ मंडोर-जोधपुर-संवत १४८० में राव चूंडा के पश्चात् मंडोर के शासक राव कान्हाजी और राव सत्ताजी हुए। संवत १४९५ में चूंडाजी के पुत्र राव रणमलजी चित्तौड़ में मारे गए। उनकी मृत्यु का पता लगते ही उनके पुत्र राव जोधा, (जन्म संवत १४७२) चित्तौड़ से मारवाड़ की तरफ आगए और १५ वर्षों के बाद संवत १५१० में उन्होंने मंडोर हस्तगत कर लिया। संवत् १५१५ में मंडोर के किले में उनका राज्याभिषेक किया गया। संवत १५१६ में उन्होंने मंडोर के दक्षिण में ३ कोस दूर योगी चिड़ियानाथ के रहने की भाखरी पर जिसको चिड़ियाटूंक कहते थे, किला बनवाया और उसी के पास अपने नाम पर जोधपुर नगर आबाद किया[4]। राव जोधाजी की मृत्यु संवत १५४५ में हुई। जाम्भोजी के समय में उनके पश्चात् वहां के शासक राव सातल (संवत १५४५-१५४८), राव सूजा (संवत १५४८-१५७२), राव गांगा (१५७२-१५८८) और राव मालदेव (१५८८-१६१९) हुए।

(१६) राठौड़ों का विस्तार-राव जोधाजी के कई पुत्रों ने मरुभूमि में विभिन्न स्थानों पर अपने ठिकाने कायम किए। संवत १५१८ में राव जोधाजी ने अपने पुत्र वरसिंह और दूदा को मेड़ता की ओर भेजा इन्होंने मेड़ते को आबाद किया और माण्डू के ३६० गांव अपने अधीन कर लिए। संवत १५७२ में, ७५ साल की अवस्था में राव दूदा का देहान्त हुआ। बीकानेर में राव बीका के बाद वहां के शासक, जाम्भोजी के समय में राव नरोजी, राव

१-(क) नागाणा अनिय बीकनेर। बासोघसि हुवौ वहै वर।
ऊठिया कोपि आमन्यिया अग। आकासि अड़ाविय उतिमग ॥ ५७ ॥
महमन्द खान धाए मगाइ। आहए नर आयाढ़ि आइ।
सतरहौ सनीछर राइ समथि। हाथी वरीसि गलहथि हथि ॥ ६१ ॥-वही।

(ख) महमदखा सउ भिडयउ, नयर सिंद मुरखाणाइ।
जेसलमेर दुरग मल्यउ सहु कोई जाणाइ-चारण गोरा।
-ज० आफ ए० सो० बगाल (न्यू सिरीज-१३) नम्बर ४ १९१७ पृ० २३७।

२-गगेवि राइ नागौर गढ साकड घाति भीडिय सनढ।
दावाणि राव कोघी दुवारि आविय करन ओल उवारि ॥ ७४ ॥
-बीठू सूजा कृत छन्द राव जैतसी रा।

३-ओझा राजपूताने का इतिहास, जिल्द पहली, पृष्ठ ३१० संवत १९९३।

४-(क) रेउ मारवाड़ का इतिहास, प्रथम भाग पृष्ठ ८६-८८।
(ख) आसोपा मारवाड़ का संक्षिप्त इतिहास, पृष्ठ १८२-१८३।

लूणकरण और जतसीजी रहे। राव बीदा को छापर-द्रोणपुर का इलाका संवत् १५३१ के आसपास मिला था।

इनमें राव जोधा, राव लूणकरण राव जतसी, राव बीदा, राव सातल और राव मालदव जाम्भोजी के सम्पर्क में आये थे। (द्रष्टव्य—जाम्भोजी का जीवन-वृत्त)। राव लूणकरण तो कवि भी थे (द्रष्टव्य-कवि संख्या ४२)।

(१७) मेवाड़-मेवाड़ में राणा मोकल के पुत्र राणा कुम्भा विक्रम संवत १४९० में चित्तौड़ के सिंहासन पर बैठे। इन्होंने दो बार नागौर पर चढ़ाई की—संवत १५१३ में और संवत १५१५ में। दूसरी चढ़ाई इसलिए की थी कि नागौर में मुसलमानों ने हिन्दुओं का नि दुखान के लिए गोहत्या करनी शुरू की थी। महाराणा ने उनका यह अत्याचार देखकर पचास हजार सवार लेकर चढ़ाई की और किले को जीत लिया। इसमें हजारों मुसलमान मारे गए [१]। राणा कुम्भा की मृत्यु संवत् १५२५ में हुई। उनके बाद क्रमश: राणा उदयसिंह (१५२५-१५३०), राणा रायमल (१५३०-१५६६), राणा सांगा (१५६६-१५८४), राणा रत्नसिंह दूसरा (१५८४-१५८८) तथा विक्रमाजीत (१५८८-१५९३) मेवाड़ के शासक हुए[२]। इस प्रकार जाम्भोजी के स्वर्गवास संवत तक मेवाड़ में ६ शासक हुए। इसमें राणा सांगा और उनकी माता झाली राणी का उल्लेख विष्णोई साहित्य में मिलता है।

(१८) जसलमेर के भाटी—जसलमेर में भाटी राजपूतों का राज्य था, जिनमें जाम्भोजी के समय रावल देवीदास (संवत १५०५-१५३६), रावल जतसी (१५४१-१५८३) तथा रावल लूणकरण (संवत १५८३-१६०७) वहां के शासक रहे थे[३]। इन शासकों और उनके राज्यकाल के सम्बन्ध में विद्वानों में कुछ मतभेद है। वीरविनोद के अनुसार, रावल लखमण के मरने के बाद विक्रम संवत् १४८६ में रावल वरसी, संवत १५०६ में रावल चाचा, संवत १५१३ में रावल देवीदास, संवत १५४६ में रावल जतसी और संवत १५८५ में रावल लूणकरण वहां के राज्य के स्वामी हुए। लूणकरण का देहान्त संवत १६०७ में हुआ[४]। श्री जगदीशसिंह गहलोत ने शासकों के नाम तो वीरविनोद के अनुसार ही दिए हैं किन्तु उनके शासन-काल के सम्बन्ध में भिन्न संवतों का उल्लेख किया है[५]। जो भी हो, रावल जतसी का सम्बन्ध जाम्भोजी से विशेष रहा था और उन्होंने अपेक्षाकृत दीर्घकाल तक शासन किया था (द्रष्टव्य जाम्भोजी का जीवन-वृत्त)।

(१९) आमेर के कछवाहा तथा अन्य राज्य—आमेर में कछवाहों का शासन था। जाम्भोजी के समय वहां पर उद्धरणजी (संवत १४९६), चन्द्रसेनजी (संवत १५२४), हरि—

१-(क) श्यामलदास वीरविनोद भाग १ पृष्ठ ३३१।
(ख) ओझा उदयपुर राज्य का इतिहास खण्ड २, पृष्ठ ६१८।
२-ओझा उदयपुर राज्य का इतिहास खण्ड २, पृष्ठ ६३४, ६२६ ६३८ ६३६, ६५८ ६५९ ६६६ ७०० ७०५ ७०६ ७१३।
३-नैणसी की ख्यात, भाग २ पृष्ठ ४४१, ना० प्र० स०, काशी।
४-श्यामलदास वीरविनोद पृष्ठ १७६१-६२।
५-राजपूताने का इतिहास प्रथम भाग पृष्ठ ६६७ ६७०।

भक्त महाराज पृथ्वीराजजी (संवत १५५९-१५८४), पूरणमलजी (संवत १५८४-१५९०), भीवजी (१५९०-१५९३) तथा रतनसिंहजी (१५९३-१६०४)-६ राजा क्रमशः गद्दी पर बैठे[१]। आमेर के शासकों से जाम्भोजी या विष्णोइयों के सम्पर्क का पता नहीं चलता। यही बात राजस्थान के अन्य राजघरानों-बूंदी, सिरोही आदि के सम्बन्ध में कही जा सकती है।

(२०) दिल्ली : सयद, लोदी, सूर, मुगल-जाम्भोजी के जन्म से ३८ वर्ष पूर्व दिल्ली में तुगलक शासन का अन्त होकर सयदों का शासन आरम्भ हुआ। संवत १५०८ में अफगान सरदार बहलोल लोदी ने दिल्ली पर अपना शासन स्थापित कर लिया। संवत १५४६ में उसकी मृत्यु के बाद उसका दूसरा पुत्र निजामखां, सुल्तान सिकन्दरशाह के नाम से बादशाह बना। सिकन्दर की मृत्यु संवत १५७४ में आगरा में हुई। उसके बाद उसका पुत्र इब्राहीम सुल्तान हुआ, जिसको बाबर ने पानीपत के मैदान में संवत १५८३ में हराया था। तब से मुगलों का शासन आरम्भ हुआ किन्तु कुछ ही वर्षों बाद संवत १५९७ में शेरशाह के हाथों हुमायूं पराजित होकर काबुल लौट जाने पर विवश हुआ। शेरशाह की मृत्यु संवत् १६०२ में होगई तथा दिल्ली का शासन निर्बल पड़ गया। संवत १६१२ में हुमायूं ने काबुल से वापिस आकर लाहौर पर अधिकार कर लिया और इस प्रकार पुनः मुगल शासन आरम्भ हुआ[२]। जाम्भोजी का सम्बन्ध सिकन्दर लोदी से रहा था।

स्मरणीय है कि अभी तक जोधपुर-बीकानेर के राठौड़ों और उदयपुर के सीसोदियों का इतिहास तो कुछ लिखा भी गया है किन्तु जाम्भोजी के समय की अन्य अनेक शासक जातियों का इतिहास अन्धकार के गर्भ में ही है। ऐसी जातियों में जोइया, चायल, लघा, जाट, सांखला, मोहिल और भाटी मुख्य हैं। विष्णोई साहित्य से कतिपय नवीन ऐतिहासिक बातों पर प्रकाश पड़ता है।

(२१) निष्कर्ष-जाम्भोजी के समय राजस्थान की राजनीतिक स्थिति ऐसी ही थी। परस्पर निरन्तर युद्ध होते रहते थे। युद्धों के कारण अनेक थे। नया राज्य स्थापित करने या पराई भूमि को जीतने का आकर्षण सर्वाधिक था। इसके अतिरिक्त अनेक छोटी छोटी और साधारण सी बातों पर भी युद्ध हो जाया करते थे। अपने या अपने पूर्वजों के वैर का बदला लेना भी इनमें से एक कारण था। शरणागतवत्सलता, मान सम्मान और आत्म-गौरव, वचन-पालन, धर्म-रक्षा, कर्त्तव्य-परायणता आदि की भावनाओं से प्रेरित होकर भी युद्ध हो जाते थे। एक शक्तिशाली जाति दूसरी निर्बल जाति का मौका देखकर दबा लिया करती थी। अतः शासकों को हर समय जागरूक और युद्ध के लिए कटिबद्ध रहना पड़ता था। भूमि बल से ही अधिकार में रखी जा सकती थी, यह सभी जानते थे अतः अपनी शक्ति को निरन्तर बनाये रखना भी शासक जाति आवश्यक समझती थी। राजस्थान के बाहर के किसी

१-हनुमान शर्मा : जयपुर राज्य का इतिहास, पृष्ठ ३२, ३६, ४१, ५६, ५७, ५८।
२-मजुमदार, रायचौधरी और दत्त : एन एडवान्स्ड हिस्ट्री आफ इण्डिया, लंदन, सन १९४८ पृष्ठ ३३७, ३३८-३४०, ३४१, ४२७, ४३८, ४३९, ४४४, ४४५।

मानसमणा ने राजस्थान पर विशेष प्रभाव नहीं डाला। राजस्थान की शासक जातिया तो आपस म ही उलझी रहती थी और यही कारण इनके पतन का भी रहा। राजपूतों की यशलिप्सा राज्यलिप्सा और महत्वाकांक्षा तथा ज्योतिष और शकुनो पर विश्वास रखने के कारण भी आपस म निरन्तर युद्ध होते रहते थे और अकारण ही परस्पर लटकर निबल बन जाते थे। यह सब होने हुए भी देश पर आने वाली विपत्ति के समय प्राण देना राजपूत अपना पुनीत कर्त्तव्य समझते थे, इसी प्रकार शरणागत की रक्षा, वचन-पालन व प्राण देकर भी करते थे।

(ख) सामाजिक स्थिति

१-विभिन्न वर्ग हिन्दू समाज यद्यपि चार वर्णों म बटा हुआ था तथापि जाम्भोजी के आविर्भाव स बहुत पहले ही इन वर्णों मे अनेक जातियाँ, उपजातियाँ तथा कई नई जातियाँ बन गई था। जाति-मान्यता म कर्म प्रधान न रह कर जन्म प्रधान रह गया था। जम्भवाणी और विष्णोई साहित्य से यह पता लगता है कि जाम्भोजी के समय में 'वागड देश' म प्रधानत निम्नलिखित वर्ग के लोग थे —

१-राज वर्ग। २-खेतिहर वर्ग। ३-कारीगर और मजदूर वर्ग।
४-व्यापारी वर्ग। ५-आंशिक या पूर्ण रूप से राज्याश्रित तथा विद्वत वर्ग।
६-कलाबाज वर्ग। ७-निम्न वर्ग तथा ८-साधु वर्ग।

२-राज वर्ग -इसमे राजा, ठिकानेदार, पटटेदार, भोमिए तथा राज-काय सचालन करने वाले मन्त्री, सेनापति आदि सम्मिलित हैं। जाति की दृष्टि से इसम राजपूत, जाट और मुसलमान प्रधान थे। इस वर्ग का प्रमुख काय युद्ध था। हिन्दू राजा धर्म-कर्म के मामलो मे सहिष्णु होने थे। सभी स्मार्त मतानुयायी थे, धर्म या सम्प्रदाय-विशेष के पालन का आग्रह इनम नहा मिलता।

३-जाट, खेतिहर वर्ग -राजस्थान म जाति की दृष्टि से सबसे अधिक सख्या जाटो की थी। राजपूतो से भी इनकी सख्या अधिक रही है[1]। पेशे की दृष्टि से सर्वाधिक सख्या खेतिहर लोगो की थी। राजवर्ग के कुछ लोगो को छोडकर समाज का प्रधान पेशा खेती करना और गाय, भैंस, भेड, बकरी, ऊट आदि पशु पालना था। घी तथा ऊन का व्यवसाय होता था। जम्भवाणी (सबदवाणी) की वर्णन सामग्री और उसके अधिकाश उल्लेख दूसरे और तीसरे वर्ग से सबधित हैं।

४-सम्बन्धित उल्लेख -किसान, खेती और उससे सम्बन्धित सामग्री का वर्णन अनेक *सबदो म है।[2] 'अनाज निकाल लेने पर पीछे बची हुई "कूकस' (भूसी) को दलना बेकार है' इस उक्ति का उल्लेख सात बार किया गया है[3]। इसी प्रकार बिना रस के 'बाकस' (रस निकाले हुए गन्ने के छिलके), (६५ ४,७५ ७), 'गूणा गाहना' (७६ ५), (गवार निकाल लेने

१-बजरंगलाल लोहिया राजस्थान की जातिया, पृ० २२।
२-सबदवाणी-२०, २८, ७०, ८३, आदि। * सबदवाणी के उदाहरणो म पहले सबद सख्या और फिर विराम ( ) के पश्चात उसकी पक्ति सख्या दी गई है।
३-२७ ५६, ४८ १८, ६५ ४, ७१ ८, ७५ ७, ७६ ६, ८६ ३।

पर गाही हुई वस्तु 'गूगा' कहलाती है) आदि को बिल्कुल व्यर्थ बताया गया है क्योंकि उन में तत्त्व वस्तु नहीं है। इसके लिए सुखेत में बीज बोना (५४ ५), भली भूल का सिंचन करना (२९ १, ६६ ३८) और खलिहान का गाहटन (२८ २०) करना चाहिए। कल्लर जमीन में बीज बोने और टीले पर तालाब बनाने से कोई लाभ नहीं (७१ १०-११, १०५ ३)[1]। इनके अतिरिक्त और (मजरी) भड़ने पर किसान के दुखी होने (४६ ३), अपने खेत की ही कमाई खाने (११२ १-२) आदि उल्लेख इसी ओर संकेत करते हैं। किसानों (७२ ११) और जाटों (११६ १) को सम्बोधन, वृक्ष, पान, फूल (९४-५, ७५ २), साग (८६ ५,३४) का उल्लेख, श्रेष्ठ खाद्य-पदार्थों में अन्न, दूध दही, घी, मेवा (३२ ४) की गिनती, खेत में अच्छे बीज बोने की सलाह (१०९) आदि खेती से ही सम्बन्धित हैं। जाम्भोजी के पिता लोहटजी स्वयं एक सम्पन्न किसान थे (वील्हाजी कृत कथा औतारपात, छन्द १३,२४)। खेतिहर लोगों के सिन्ध में गहूं लाने के लिए जाने और सावन निकट देखकर हल जोतने की तैयारी का वर्णन वील्होजी ने किया है[2]। उन्होंने कृष्ण को सबसे बड़ा किसान बताते हुए सुकृत खेती का उल्लेख किया है[3]। उनकी 'सच अखरी विगतावली' की अधिकांश वर्णन सामग्री किसान और खेती से ही सम्बन्धित है। मरु प्रदेश का किसान 'भुरट' के कांटों से अपने पांवों को बचाने के लिए प्रायः चमड़े का बना 'पायचा' पहनता है। यह शीत से भी रक्षा करता है। 'पायचे' का उल्लेख भी जाम्भोजी (४८ १९) और हजूरी कवि ऊदोजी नण (कवित्त संख्या ३७) ने किया है।

खेती के साथ साथ पशु-पालन एक आवश्यक अंग था। वील्होजी कृत 'कथा दूणपुर की' में अनेक 'भांति' के दूध का उल्लेख है, जिससे कई तरह के दुधारू पशु-पालन का संकेत मिलता है। उनमें गाय श्रेष्ठ समझी जाती थी[4]। गाय का घी और भैंस का दही उत्तम माना जाता था[5]। मरुदेशीय वातावरण को चित्रित करने वाली सामग्री में भी खेती और खेतिहर समाज का उल्लेख मिलता है। आक, खीप, रूई, ऊन (२५), गहूं, मुंग, बगरा, चदन्वो[6], मोथड़ियो, खरगोश, लोमड़ी, गूंद, (जड) (५३), हिरण, हिरणी, रिण छाणा (जंगल में उपलब्ध गाय-भैंस का सूखा गोबर, ८६ २३), मशक (८४ ६), करड,

---

१-थल माथ निवाण करि, नर काय लोड नीर।
  नाले पोले न मिले, रीतायर वीरिग हार ॥ ३६ ॥-वील्होजी, कथा धड़ावध।
२-भलो उपायो सिंध को, किण्क गीयावा मोल।
  आव मावरण टुकड़ो, करा हला को मूल ॥ ३२ ॥-कथा गुगलिये की।
३-किसन बड़ो करसाण, जो जुग मण्डल धणी।
  किसन जपो संसारि, मारव औपति एती ॥ ५ ॥
  सुकरत धती नीपनी, जा दीठा ताहा लद्धा।
  किसन जपो संसारि, र रा रह्या मे इह विध रह्या ॥ ३० ॥-किसन छत्तीसी।
४-घणी भांति का दूध कहाव, किसो दूध थारे मनि भाव।
  जग मा उतिम गउ कहावे, करो दूध म्हारे मनि भाव ॥ ३२ ॥
५-गावो घिरत मगाऊ जी, म्हो मगाऊ भैंस को ॥ ११ ॥-साखी, कवि संख्या २०।
६-बगरो अर चदन्वो जाय, भाण जीम कर रमाय। ६५।-वील्होजी, कथा गुगलिये की।

(भाक्ला, ग्रोढने का वस्त्र-विशेष जो रूई ग्रौर ऊट की 'जट' से बनाया जाता है,– (४७ ३, १२ १६), दोवड[1], ढेंकली ग्रौर ढाबी (१११ ५) से पानी निकालने ग्रौर ढोने तथा ग्रकाल पडने पर अन्यत्र जाकर समय काटने–'गोवलवासो' (५१ ३४–३५, ८४ १५) लेने के उल्लेख प्रधानत इसी वग मे सम्बन्धित हैं।

५-तीसरे वग (कारीगर और मजदूर) मे तेली, माली, कुम्हार, धोबी, लुहार, दर्जी, सुथार, नाई, सुनार, कहार, भाड, खोजी ग्रादि थे। इनका तथा इनके विभिन्न कार्यों का उल्लेख ग्रनक प्रसगो म विष्णोई साहित्य म मिलता है[2]।

६-व्यापारी वग –इसम व्यापार करन वाले वश्य, वनजारे तथा ग्रन्य लोग सम्मिलित हैं। इनम हीरे, मोती ग्रौर मानिक ग्रादि का व्यापार करन वाले श्रेष्ठ माने जाते थे। जाम्भोजी ने स्वय का हीरो का व्यापारी कहा है (५१ १,७२ ११–१२)। एक ग्रज्ञात हुजूरी कवि (सख्या २४) ने जाम्भोजी को 'सराफ ग्रौर 'विणजारा' बताते हुए कहा है कि लोगा को उनस तो चुन चुन कर मोती लेने चाहिएँ। ग्रन्य हुजूरी कविया ने भी उनको 'सही सौदागर' ग्रौर 'समरथ साह' बताते हुए उनसे 'विणज' करने का ग्रनुरोध किया है क्योकि ऐसे सेठ के साथ व्यापार करने से लाभ होता है[3]। दीन सुन्दरदी (कवि सख्या ४९) के ग्रनुसार जाम्भोजी वे बनिये हैं जो 'सहज' ही व्यापार करते ग्रौर बिना 'डाडी ग्रौर पालड' के तोलते हैं। दूसरा कवि रायचन्द ग्रपने मन को विणजारा ग्रौर सौदागर बताता है।[4]

इन उल्लेखा से यह स्पष्ट विदित होता है कि तत्कालीन समाज म बडे-बडे सेठ सराफ ग्रौर शाह थे। इनके स्थान-स्थान पर ग्राढतिये होते थे। जिन वस्तुग्रो मे ये व्यापार करत थ उनके क्रय-विक्रय के लिए ग्रनक छोटी श्रेणी के व्यापारी भी होते थे। समाज मे बडे व्यापारिया की सच्चाई ग्रौर ईमानदारी प्रसिद्ध थी। उनकी "साख" चलती थी। दीन सुदरदी (कवि सख्या ४९) की एक साखी (सख्या २) से इसकी पुष्टि होती है। मुख्यत जनान्तर–व्यापारी, "सराफ" तथा रुपये पसे की लनदेन करने वाला "शाह" या सेठ कहलाता था। व्यापारी वग म सराफ ग्रौर शाह बडे माने जाते थे। इनस छोटे "विणजारे" ग्रौर सौदागर थे जो बहुधा स्थान–स्थान पर ग्रपने व्यापार सम्बन्धी चीजो का क्रय–विक्रय करते फिरत थ। एक ही स्थान पर हाट बनाकर बठे हुए खरीद बिक्री करने वाले छोटे-मोटे व्यापारी भी होते थ। "सराफो' को खोटा माल देना ग्रौर ' शाहो" से ठगाई करना ग्रासान काम नहा था[5]। ग्रनेक लोग नकली माल बेचते ग्रौर "खोटा विणज" करते

१–एक दावड दुज हडी, सुप मा सोर उपायो ।–वील्होजी कृत साखी ।

२–२५ १२, ७१ ६, ६८ ७ ५९, ६०, ७६ २, ३५, १०७ ६, ६६ १–७, १४ १–४, ११ १६–१७ ग्रादि ।

३–(क) ग्रसो समरथ साह ग्रायो, चेति करि जीव जागियो ।–कुलचन्दजी, साखी ।
(ख) ग्रौ गुर ग्रायो पूरो साह, विणज करो वौपारियो ।–ऊदोजी नण, साखी ।

४–मेरा मन विणजारला, विणजत नहडा कीजजी ।–साखी ।
मेरा मन सौदागर, देपि ग्रापा समालि वे ।–साखी ।

५–पाटे दिय सराफा हाथि, कर ठगाई साहा साथि ।
पढिया ठगण मत गिवार, फिटा फिटा हुव पुवार ॥ ५८ ॥–कथा ग्रौतारपात ।

थे।[1] वील्हाजी ने इसलिए 'काच कथीर' का व्यापार छोड हीरा के व्यापार करने की सलाह दी है[2]। जाम्भोजी के अन्य उल्लेख हाट, "विणज वापर" (९५ १७–१८), पाईपाई करके लाखों एकत्र होना (१२२ १) से भी इस वर्ग की ओर संकेत मिलता है। सच्चाई व्यापारिक सफलता के लिए अति आवश्यक है, उस समय भी यही बात थी। रुपये उधार दिये जाते थे[3]। ब्याज पर दिये गये रुपयों के एवज में कोई न कोई वस्तु बन्धक के रूप में रखी जाती थी[4]। बिना रुपया के व्यापारी की कुछ भी कीमत नहीं थी (कवि संख्या १८), अन्य पराई आशा पर न रह कर अपनी गाठ के अनुसार ही व्यापार करने की सलाह कवियों ने दी है[5]। हिसाब किताब में होशियार होना व्यापारी के लिए आवश्यक था।

७–आंशिक या पूर्ण रूप से राज्याश्रित तथा विद्वत्वर्ग–इसमें चारण, ब्राह्मण पुरोहित ज्योतिषी संगीतज्ञ गायक वैद्य, शकुनी भाट आदि सम्मिलित हैं। विष्णोई साहित्य से पता चलता है कि चारण लोग कीर्ति और विरुदावली बखानते थे। इस हेतु वे घूमते-फिरते थे और धन पाते थे। हजूरी कवि कान्होजी बारहट ने इसीलिए कहा है कि चारण वही चतुर है जो विष्णु की कीर्ति का "उच्चारण" करे और "चपलता" त्यागे (कवि संख्या १४, बावनी, छंद ६)। बहुत से चारण हैं जो अनर्थ, जुल्म और पाप किया करते थे। वील्होजी कृत 'कथा जसलमेर की" (छंद ६१–६२) में तेजोजी के कथन में इसका स्पष्ट उल्लेख है। बारहटों को राजपूतों से घोडे, रुपया कपडे तथा अनेकानेक वस्तुएँ भेंट स्वरूप मिलता था किन्तु तेजोजी चारण तो यह सब त्याग कर केवल हरि के ही ' बारहट" हुए (कवि संख्या १, सातवां गीत)। भाट विरुदावली गाते और पीढियावली रखते थे। तेजोजी ने चारणों और भाटों के कार्यों का बड़ा यथार्थ वर्णन किया है। ये लोग पेट के लिए दूसरों की प्रशंसा करते, लोभ-वश उनको देवता और सुमेरु के समान बडा बताते उनके लिए गीत, कवित्त और छंदों की रचना करते और मीठे स्वर में गाते थे[6]। स्वार्थ के वशीभूत होकर ये लोग अनुचित निंदा–स्तुति करते थे और यह बडे व्यापक रूप में प्रचलित थी। वील्हाजी की

१–परी र विणज वाधियो घोटो परी जनम गु चियो पहर ॥ २ ॥
—कान्होजी चारण, बावनी।
२–ववा विसन रतन छ, पाया दाम न रेस।
काच कथीर न विणजिय, विणज स हीरा जेस ॥ ३२ ॥–विसन छत्तीसी।
३–परी मिलो ससारि विणज–वोपारि करारो।–
परी मिली ससारि टीक तिरि दिय उधारो ॥ २७ ॥–ऊदोजी नण, छप्पय।
४–वट अपरो गुफ कहा न कहीज, वध वोलि धन व्याज म दीज ॥–केसोजी, साखी।
५–(क) विणज न कीज आस पराई, आन्र विणि घर कहीं न जाई ॥ २४ ॥
गाठी सार विणज चलाई, काम अरम्भो सो निरवाहो ॥ १० ॥
(ख) सेनी धम अन्य कीन, विणज करता रूप न भूलीज ॥ १५ ॥–केसोजी, साखी।
६–सुर भर सम वड मिनख लोभ पगाए। पेट काजि पुनरुक्त वोहत छन्द बोलण।
जे जोभे जगनाथ, विण अपरठा कथाव। गीत कवत छद ग्यान, सरस सरल सुर गाव।
वीनवा विसन वाचा मचल, मु गो साभि सारंगधर।
ऊचर तम तोंह बार नी राप राजि गुर मधर ॥ ८ ॥–प्रति संख्या २०१, पो० ७०।

"छुन्द सावियों" म इसका उल्लेख मिलता है[१]। कान्होजी, तेजोजी, वील्होजी आदि कवियों के उल्लेख चारणों की उन निबलताओं को बताते हैं जो जाम्भोजी के समय म बहुत बड़े रूप म प्रचलित थी।

पाठशालाएँ हुआ करती थी[२] किन्तु प्रमुखत पढाई-लिखाई सम्पन्न, ब्राह्मण या उच्च वर्ग के कुछ लोग ही करते थे, शेष सारा समाज इस दृष्टि से प्राय शून्य था। विद्या की दृष्टि से ब्राह्मणों की दो श्रेणियाँ थी-पढे लिखे तो ब्राह्मण (बाभण) कहलाते थे और अनपढ भत्सना के तौर पर "गुरडा" या "गरडा"। आज भी निरक्षर या अत्यल्प पढे-लिखे ब्राह्मण को ऐसा कहा जाता है। पदम भगत कृत हरजीरो व्यांवलो' म कृष्ण और शिशुपाल म अन्तर बताते हुए इसका उल्लेख किया गया है[३]। हिन्दुओं म ब्राह्मण वेद, शास्त्र और पुराण (२५ १-२, ८३ १५) तथा मुसलमानो म काजी मुल्ला पढते-लिखते थे (२५ १-३ ८३ १५, ९३ १९)। हिन्दू समाज मे ब्राह्मणो का पद ऊचा समझा जाता था। व 'गुरु" माने जाते और धर्म बताते थे किन्तु थे अधिकाश मे लोभी, कुकर्मी, पापी, अज्ञानी और क्रिया हीन[४]। 'लेखा करना" विशेष रूप से कायस्था का काम था[५]। मुसलमानो म मुल्लाणियां घरों म पढाती थी (११५ ३)। वद्य जडी-बूटी से इलाज करते थे (१६ १३-१४)। ज्योतिषी भविष्य वक्ता के रूप म प्रसिद्ध थे (कवि सख्या १२, साखी)।

८-शकुन और ज्योतिष—ज्योतिष और ज्योतिषियो पर लोगो का बहुत विश्वास था। राणा सागा तथा उनके भाइयो के आपसी विरोध और मारकाट की घटना के मूल मे ज्योतिषियो के कथन पर विश्वास करना ही था[६]।

शकुनों पर भी गहरा विश्वास और श्रद्धा थी। राजपूतो मे तो शकुन-अपशकुनो पर बहुत पुराना विश्वास चला आता है। आज भी यहा की प्राय सभी जातियो म शकुन मान्यता है। मीने, भील और बावरी तो शकुन विचार पर बहुत ही विश्वास रखते हैं[७]। साम्बला

१-धीर थपारी हुवी, सेभ पलटयो साड।
चारण मो मीठो चव, भोंडी कर स माड ॥ ४ ॥
चारण री हास्यौ घणो, कुजस कहै चोरेह।
ओन्हे दधी ओगणे, बल्तो बरल्क देह ॥ ५ ॥

२-तेगि पोसाल पढावियो, पावन पद पोसाल।
ओलपिया आपर अपर, गुर मिलियो गोपाल ॥ -बावनी, कान्होजी बारहट

३-अ तर काग हस अर सायर, अ तर बाभण गुरडा।
इवन्हे अ तर हरि सिसपाल्हो, किनर कल्स काचा घडा ॥ ७ ॥ -प्रति सख्या २०१।

४-ब्राह्मण गुर सकल ज धरम बताव, कहता द दे धरम कह।
वर क्लोभ अत्र म कमाव, वहता भवसागरि वहैं।
नियाहीण नतवे काचा दुप थ नेरा जीव दहैं ॥
अवतार अचभ भ्रम यति आयो लिपी न प्रापति कम लहैं ॥ ३ ॥ -तेजोजी कृत छद।

५-तुरिया तज ज सार पुरष वोन परवाण।
कायथ लेप सार विपर ज्यों वेद पुराण ॥ १४ ॥ -ऊन्होजी नाग, छप्पय।

६-(क) श्यामलदास वीरविनोद, पृष्ठ ३४३।
(ख) ओझा उदयपुर राज्य का इतिहास खण्ड-२, पृ० ६४२-४३, प्रथम सस्करण।

७-बजरगलाल लोहिया राजस्थान की जातियाँ, पृ० ४०, ४६, २४३, सन १९५४।

मेहराज और उनके पुत्र हडबूजी (जो पाँच पीरों में से एक माने जाते हैं) दोनों ही मान्य शकुनी थे[1]। नापा साँखला और काल्हो (राव बीका के समकालीन), कल्याणमल (राव मालदेव का समकालीन) और नीबा महेशोत बड़े अच्छे शकुनी माने जाते थे[2]। विशेष कार्यारम्भ से पूर्व अच्छे शकुन देखे जाते थे। अणहिलवाड़ा[3] पाटण और बीकानेर[4] बसाने से पूर्व अच्छे शकुन देखे गये थे। शकुन लेने और शकुन देखकर उसके शुभाशुभ पर विचार करने के अनेक उल्लेख मिलते हैं। नणसी ने राव गांगा, खेतसी अरड़कमलोत, नीबा, और रावल घड़सी आदि से सम्बन्धित वर्णनों में इनका उल्लेख किया है[5]। बाँकीदास ने बीकमपुर की हद में अच्छे शकुनियों का होना बताया है[6]। ऊदोजी, मेहोजी, केसोजी आदि ज्ञात और अज्ञात कवियों ने अनेक प्रचलित शकुनों का यथावसर उल्लेख किया है। प्रतीत होता है कि साधारणतः समस्त समाज में और विशेषतः उच्च वर्ग में ज्योतिषियों और शकुन-पाठकों का अच्छा सम्मान था।

९–कलाबाज वर्ग–इसमें हाथ की सफाई, चमत्कार-प्रदर्शन या ऐसे ही कलाबाजी दिखाकर जीविका कमाने वाले नट, जादूगर, गोडबाजिया आदि की गणना है। तत्कालीन समाज में ऐसे अनेक लोग थे। वे भाँति-भाँति से लोगों को चमत्कृत और चकित करते थे। वील्होजी ने "कथा दूणपुर की" में ऐसे संकेत किये हैं[7]।

१०–निम्नवर्ग–भील (नायक), वधिक, कसाई, "हड़कुटा", भीवर, बावरा, थोरी, अहेरी, मेघवाल (चमार), चंडाल आदि नीच जाति के माने जाते थे। भील निर्दयी होते (१२ २४), भीवर जाल फलाकर पशु-पक्षी पकड़ते (वील्होजी कृत कथा जसलमेर की) और बावरी प्रायः झूठ बोलते थे। हजूरी कवि ऊदोजी नैण के छप्पयों से इन बातों का पता चलता है[8] (द्रष्टव्य–कवि संख्या ३७, संदर्भ ६६,६०)।

११–साधु वर्ग–इसके अन्तर्गत हिन्दू और मुसलमान–दोनों जातियों के गृहस्थाश्रम त्यागे हुए लोग, जोगी, सन्यासी, यति, पीर, फकीर आदि सम्मिलित हैं। साधुओं का मूल काम तो सत्कर्म करना, तत्त्व और अध्यात्म का चिंतन और मनन करना, तदनुसार जीवन व्यतीत करना तथा समाज में अध्यात्म, नीति का सदुपदेश देना था किन्तु उस समय अधिकांश साधु बने हुए लोग पाप कर्मों में लिप्त थे और धर्म के नाम पर पाखण्ड फैलाते थे। धर्म के

१–मुंहणोत नणसी की ख्यात, द्वितीय खण्ड, पृ० १०१, १२९, काशी, संवत १९९१।
२–वही, पृष्ठ २०४, १५६, ४१७।
३–वही, पृष्ठ ४७६–४७७।
४–(क) दयालदास री ख्यात, भाग-२, पृष्ठ ६–७, बीकानेर, संवत् २००५।
(ख) पाउलेट बीकानेर स्टेट गजेटियर, पृष्ठ ३–४।
५–ख्यात, द्वितीय खण्ड, पृष्ठ १७७–७८, १९२, २८६, ३१३, काशी।
६–बाँकीदास री ख्यात पृष्ठ २०९, राज० पु० म०, जयपुर, सन १९५६।
७–(क) भेनी कहै देवजी नहा सोभा, म्राव कर गोडिया देव भाभा ॥ २२ ॥
(ख) एक समा मा कहै अभेनी, आ तो छ गोडिया री वदी ॥ २६ ॥
८–वधक कमाई हड़कुटा, पर पिंड वाहै छुरी।
जे दयेवो पाप ता ऊन, देखो भीवर बावरी ॥ ६ ॥

मूल तत्त्व के नाम पर केवल बाह्य वेश और क्रिया-कर्म ही धर्म का प्रतीक माना जाने लगा था। सबदवाणी और जाम्भाणी साहित्य में स्थान-स्थान पर धर्म के नाम पर प्रचलित पाखंड की भर्त्सना मिलती है।

१२-स्त्री, बहु-विवाह, विधवा-विवाह, आचरण-राजपूतों में तो बहु-विवाह प्रथा प्रचलित थी ही, समाज के अन्य वर्गों के लोगों में भी थी। जाम्भोजी ने 'सौक और दुहागण' स्त्रियों का उल्लेख किया है (८३ २९)। व्यभिचार बहुत होता था। जम्भवाणी में इसके संकेत हैं (२५ २२)। इस हेतु पुरुष और स्त्री पराये घरों में जाते थे। अनेक हुजूरी कवियों की रचनाओं से इसका पता लगता है[1]। पराये घर को नष्ट करने वाले व्यभिचारी लोग अपनी स्त्री का त्याग देते थे। वे कूएं में पड़ कर आत्म-हत्या भी करते थे[2]। यही नहीं, लोग "कुवात" कह कर भी पराये घरों को उजाड देते थे [3]।

समाज का उच्च वर्ग भी व्यभिचार से बचा हुआ नहीं था। मूला पुरोहित अपनी स्त्री और भानजे को व्यभिचार-रत देखकर अत्यन्त दुखी हो जाम्भोजी के पास जाम्भोलाव गया था। (द्रष्टव्य-जाम्भाजी का जीवनवृत्त)। परायी स्त्रियों का हरण करके लोग उनको अपने घर बठा लेते थे। इसकी प्रेरणा स्त्रियाँ भी देती थी। पूले सारण की स्त्री मिलकी के कहलवाने पर पाण्डू गोदारे ने उसका हरण करवाया था[4]। रूण के स्वामी सीहड सांखले की बेटी सुपियारदे, जिसका विवाह जतारण के नरसिंह सिंघल के साथ हुआ था, के लिखने पर नर्वद सत्तावत उसको अपने गाव ले गया था[5]। व्यभिचार की भांति परायी नारी का हरण भी बहुत होता था। जाम्भोजी ने १८ दोषों में से एक दोष पराई नारी का हरण भी बताया है (सबद ५६,६०)। बाल विवाह प्रचलित था। बाल्यावस्था में विधवा होने का उल्लेख हुजूरी कवि कोल्हजी चारण (कवि संख्या ६) ने किया है[6]। विधवा विवाह होते थे।

१-(क) तजोजी चारण, कवि संख्या-१, गीत संख्या २।
(ख) सोच न जल सकल मन बधो ममतो। विषियावन हाडलो, पालिय पर घरि जतो।।
—उदोजी नण, छप्पय।
(ग) मन्ने मैं चाले करे डफोलो, पर घरि हाढि न जीम्यत बोलो। —डेल्हजी, साखी।
२-एक घर की नारी परहर, कुवा तवहि परघर भानणा।
एक गुर को वायक मेटि, रूप विरप बोट छागणा।। २६।। -ऊदोजी नण, छप्पय।
३-पोगो माह समार कियो उपगार न मान।
पोगो मोह समार कुवात कह पर घर भान।। २८।। —ऊदोजी नण, छप्पय।
४-(क) पाउलट बाकानेर स्टेट गजेटियर, पृष्ठ ५, बीकानेर, सन् १९३२।
(ख) ओझा बीकानेर राज्य का इतिहास, प्रथम खण्ड, पृ० ९७-९९, सन १९३९।
५-मुहणोत नणसी की ख्यात, द्वितीय खण्ड पृ० १२२-१२७, काशी, सवत १९९१।
६-नारायण हा देव जाण्य तज्य नेम गुदार।
घडत भज काय, भजि घड वले सुधार।
माय पूत वोछोडि बाल्का देह दुखाव।
नेह शाखा हो तोडि, फूलिता काय सुकाव।
बाली दह रहेपडो, धमि बालापणि क रहे।
दया नहा तह देव न, नारायण कोल्हो कहे।। १०८।।-हस्तप्रति संख्या २०१।

उनका 'नाता" होता था, 'चूडा" पहना कर उनको पत्नी रूप म स्वीकार कर लिया जाता था[1]। विवाह का मुहूर्त (सावा) चाहे जसी भी परिस्थिति हो, अटल रहता था (सबदवाणी ११६ ३)। कन्यादान का महत्त्व था (१०० ६) तथापि लोग बहन, भानजिया के विवाह के बदले रुपये भी लेते थे[2]।

१३–गोठ, "जागर, जमला" चोरी, डाके–मनचले लोग गोठ करते, कुकर्मों स मूर्खों को भ्रमाते और उमम हसी–मजाक किया करते थ[3]। गोठ के अतिरिक्त 'जागर" और जमले" होत थ (दाना म अन्तर के लिए द्रष्टव्य–विष्णोई सम्प्रदाय नामक अध्याय)। लाग "जमले" म न जाकर "जागर" मे बडी प्रसन्नता से जात थे। ऊदाजी नएा, समसदान, वील्होजा आदि कवियो ने "जमले" म जान का आग्रह किया है। इनके उल्लेखो स यह भी स्पष्ट है कि लाग अपने मनोरजनार्थ अनेक कुकर्म, पाप और जीव–हत्या करते थे। चोरी बहुत होती थी। लाग मौका देखकर हरे–भरे बाग और खत म चारी कर लते थे (द्रष्टव्य–कवि सख्या २, ४०)। पशुओ का भी चारी होती थी, खोजी (खोज देखकर) उनका पता लगात थे (४६' १)। ठगी होता थी[4] और "धाडे' (डाके) भी पडत थे[5]। गरीब लोग मजदूरी करते थे किन्तु उनका पेट कठिनाई से ही भर पाता था। अकाल पडने पर जब अन्न महगा हो जाता, तो वे "जीवारी" के लिए बाल–बच्चा सहित अन्यत्र चल जाते थे (ऊदोजी नएा, सम्भ–५५ तथा वील्हाजी कृत कथा गुगलिय की)। भिखारियो की सख्या कम नही थी (सबद १५)।[6]

१४–आचार विचार, खानपान–तत्कालीन समाज म रहन-सहन और खानपान की शुद्धता नही थी। इस पहलू पर जाम्भोजी और विष्णोई कवियो के अनेक उल्लेख मिलते हैं। जाम्भोजी ने पवित्रता पर बडा जोर दिया है। लोग मद, मास, अफीम और भाग का अबाध प्रयोग करते थे। जब से तम्बाकू इस देश म आई, उसका यहा भी प्रचलन हागया। सम्प्रदाय के २६ धम नियमा म इन पाँचो का प्रयाग वर्जित है।

१५–अफीम–राजस्थान के राजपूता म प्राचीन काल से ही अफीम खान का बहुत प्रचलन था, यहा तक कि अतिथि का आदर–सत्कार भी अफाम खिलाकर हा किया जाता था। आखातीज, होली, दीपावली आदि त्योहारा और सगाई विवाह के अवसर पर पानी

१–मात न कीज हीय कूडो, सील विणि नारी पहराय न चूडो ॥ २५ ॥ डेल्हजी साखी,

२–बहण भाणजिया री ल्य भाडि गोर माहि पड ला धाडि ॥ ४ ॥–वील्होजी, साखी।

३–पाच सात कु मला मिल, माड गोठ विकारि।
  कर पिसण सू प्रीति, सीख की कर पवारि।
  मुरख का मन भोलव, पाति कुबधि की पासी।
  पणी ठेक मसकरी, घणी बाजा अर हासी।
  परी उपगारी माय गुर, जिह को कह्यो न मानहा।
  बरजया पथ अगति क, वील्ह कहै चाल्या तही ॥ २२ ॥–वील्होजी।

४–एक जगि फिर ठग चोर ठग हड वसत पराई।
  ठगि चौर पडि जाग्नि जित चाल्ह नवी ठगाई ॥ २६ ॥ –ऊदोजा नएा छप्पय।

५–माय मागे न हाई मोर। पेन्हे धाडि न लागे चोर ॥५८॥–वाल्होजी, कथा गुगलिय की।

६–श्यामलदास वीरविनोद पृष्ठ २०६।

म अफीम घोल कर मेहमानो को पिलाने की प्रथा थोडे वर्षों पूर्व तक भी बहुत प्रचलित थी[1]। यहा का सनिक जातिया-राजपूत, जाट और गूजर-मे युद्ध के अवसरो पर पहले अफीम का प्रयोग औषधि के रूप म मलमूत्रावरोध के लिए होता था, बाद मे बिना युद्ध के अवसरो पर भी इसका सेवन होने लगा और इस प्रकार इसका नशा धीरे धीरे अनिवार्य बन गया। समाज के अन्य लोगो मे भी नशे के रूप मे इसका प्रचुर प्रचार हो गया। यही कारण है कि राजस्थान म इसका प्रयोग बहुत अधिक है। इतिहास ग्रन्थो मे इसके सेवन के अनेक उदाहरण मिलते हैं। जोधपुर के राव गागा अफीम बहुत खाते थे, अफीम की पिनक म ही उनकी मृत्यु हुई[2]। बूदी का राव नारायणदास (सवत १५६० १५८४) अफीम का बहुत ज्यादा नशा करता था। इसके अफीम सेवन की अनेक दतकथाएँ भी प्रचलित हैं[3]। इसका पुत्र रावसूरजमल भी अफीम का बहुत नशा करता था। अफीम न मिलने के कारण मृत्यु होने के उल्लेख भी मिलते हैं। ईडर का गोपीनाथ जगल मे अफीम न मिलने के कारण मर गया था[4]। अफीम खाकर आत्महत्या भी की जाती थी। विक्रम सवत १६६० म राजा भगवानदास की बेटी शाहजादे सलीम की बडी बेगम, अफीम खा कर मरी थी[5]। जब राणा रायमल का पुत्र जयमल बदनौर व सोलकी राव सुरताण के पीछे चला, तो राव के साले रतने ने अमल का मावा चढा कर रात म अकेले ही बरछा मार कर जयमल को मार दिया था[6]। गुजरात के सुलतान ने जब चित्तौड पर हमला किया तो राणी करमेती ने सात सहस्र स्त्रिया सहित अफीम खाकर प्राण त्यागे थे[7]। ऊगा उगमणावत के प्रसग म नणसी ने लिखा है कि मेला सिखरा की स्त्री की चोटी काट कर वापिस गया, तो उसका अमल का पोता खुलकर गिर पडा था[8]। अकबर के साथ युद्ध करने से पहले राठौड राव जयमल ने अपने हाथ स सरदारो को अमल पान कराया था[9]। प्राचीन काल से राजपूतो म यह रीति चली आती है कि भिन्न वश के साथ का वैर लडकिया व्याहने से मिटाया जाता था और एक ही वश वालो का परस्पर अफीम पिलाने से[10]। अफीम प्रचलन का पता विश्णोई कवियो की रचनाओ मे भी लगता है[11]। वील्होजी के एक छप्पय से विदित होता है कि उस समय म अफीम का नशा जन साधारण

१-जगदीशसिंह गहलोत राजपूताने का इतिहास, भाग १, पृ० ८१ जोधपुर, सन् १९३७।
२-ओझा जोधपुर राज्य का इतिहास, प्रथम खण्ड, पृ० २८१, सन १९३८।
३-(क) जगदीशसिंह गहलोत राजपूताने का इतिहास, द्वितीय भाग पृ० ५३, सन् १९६०।
(ख)-मुहणोत नणसी की ख्यात, प्रथम भाग, पृ० १०८, काशी, सवत् १९८२।
४-श्यामलदास वीरविनोद, पृ० ९९६।
५-वही, भाग २, पृ० १८४।
६-मुहणोत नणसी की ख्यात, प्रथम भाग, पृ० ४५, काशी।
७-वही, पृ० ५५।
८-वही, पृ० २२७।
९-ठाकुर गोपालसिंह जयमलवशप्रकाश, प्रथम भाग, पृ० १३९-१४०।
१०-गहलोत राजपूताने का इतिहास, पहला भाग, पृ० ८५।
११-तुटी बीटी ताकलो, ताये फिरैं तुवार।
म मत फुटो घोघो हुवौ, काया कर स हार॥ १०६॥-वील्हजी चारण, कवि सख्या ६।
तथा मल्लूजी कविया (कवि सख्या ३८) भी द्रष्टव्य।

मे फल गया था। यहा तक कि अफीम न मिलने पर लोग अफीम के छिलको को ही कूट पीटकर नशा करते और दिनभर मस्त पडे रहते थे[1]।

१६–मद्य-मास, जीवहत्या–राजपूत, जाट, गूजर आदि मास मद्य खाते-पीते थे। क्षत्रिय जातियो के अतिरिक्त जन साधारण म भी इनका प्रयोग होता था। वामपथी शाक्तों मे पशु हिंसा और मद्य मास का प्रयोग था[2]। यहा के कलालो का तो व्यवसाय ही शराब बनाना था।[3]। अफीम की भाति शराब भी मृत्यु का कारण हुई है। गुजरात के सुल्तान मुजफ्फरशाह ने अपने पुत्र तातारखा को शराब म जहर मिलवाकर मरवा डाला था[4]। अत्यधिक मदिरा पान के कारण सवाई राजा मानसिह का ज्येष्ठ पुत्र जगतसिह सवत १६५६ म मर गया था। इसी कारण सवत १६७८ म आमेर के शासक राजा भावसिह की जीवनलीला समाप्त हुई[5]। मेवाड के कुवर अमरसिह की भटियाणी राणी को शराब का शौक था[6]। नणसी ने अनेक स्थलो पर शराब के प्रयोग का उल्लेख किया है[7]। तत्कालीन समाज म जीवहत्या का अत्यन्त व्यापक रूप मे प्रचार था, जिसका बडे कठोर और प्रबल शब्दो म विरोध जाम्भोजी तथा विष्णोइ सिद्धो ने किया है। पीपासर के निकट नागौर म तो मुसलमान जीवहत्या करते ही थे, यहा तक कि जाम्भोजी की बाल्यावस्था म–सवत १५१५ म, हिन्दुओं का दिल दुखाने के लिए उन्होंने गोहत्या भी आरम्भ की थी। यह अत्याचार देख कर मेवाड के राणा कुम्भा को नागौर पर चढाई करनी पडी थी। राणा कुम्भा के अन्तिम दिनो मे उनक उन्माद रोग के सम्बन्ध मे किसी चारण द्वारा कहे गये एक प्रसिद्ध छप्पय मे भी इसका उल्लेख है[8]। जाम्भोजी ने स्पष्ट कहा है कि काजी और मुल्ला मोहम्मद के नाम पर जीवहत्या करते थे, वे "मुरदार" (सबद १०) थे। यही नही, वे गाय, बल (८ ३-४, १५ १६) तथा अन्य पालतू और निरीह जीवो की भी निर्ममता से हत्या करते थे (सबद ८, ६८)। कविराजा श्यामलदास के अनुसार, काबुल की ओर जाते हुए हुमायू के जसलमेर के इलाके म गो-हत्या करने पर वहा के राजपूतो ने लडाई की थी[9]। मौका मिलने पर मुसलमान लोग गो-हत्या

१–मूढ मगध अगियान साध मडली न सोहै।
नवगि जाप न कर वसि छोतरा कचोरै।
जाहा कथिग्र ग्यान ताहा ढुकडो न आवै।
जे पीणि वमे आय ठग मसकरी चलावै।
कुमत कुग्रह ग पाखड या वरज्यो रहै न पानियो।
ततोमा सू ताहि पर वोल्हा चोईमा निन चालियो॥ २१॥

२–श्यामलदास वीरविनोद पहला भाग पृ० १४३।

३–रजवगदान नोन्या राजस्थान की जातियाँ, पृ० २०८।

४–ओझा उदयपुर राज्य का इतिहास, द्वितीय खण्ड, पृ० ५८४–८५ प्रथम सस्करण।

५–डा० रघुवीरसिंह पूर्व आधुनिक राजस्थान, पृ० ८७, ९३, उदयपुर, सन १९५१।

६–श्यामलदास वीरविनोद, द्वितीय भाग, पृ० ६७३।

७–ख्यात, प्रथम भाग, पृ० ८१ १०६ आदि, काशी सवत १९८२।

८–(क) श्यामलदास वीरविनोद प्रथम भाग पृ० ३३१ ३३३–३३४।
(ख) ओझा उदयपुर का राज्य इतिहास खण्ड–२ पृ० ६१८ ६३३।

९–वीरविनोद, द्वितीय भाग पृ १२९।

करते रहते थे[1]। गौ के अतिरिक्त अन्य जीवों–भेड़ बकरी आदि की भी हत्या होती थी (७ २–३)। मुसलमानों के अतिरिक्त अन्य जातियों में भी इन जीवों को मारा जाता था। राजपूत भी जीव हत्या करते थे (वील्होजी कृत कथा गुगलिय की, छंद ५, ६, और २०)। बकरा को मारकर खाने के अनेक उल्लेख नणसी ने किये हैं। गोठ में तो बकरों की हत्या अनिवार्य सी थी। राव रणमल ने अन्य वस्तुओं के साथ ४० ५० बकरे मार कर घूंघा के साथ गोठ की थी[2]। खेतसी चूंडावत ने गोठ के निमित्त बकरा को मारा था[3]। मोहिल पड़िहार ने १६ बकरे मार कर गोठ की थी[4]। इसी प्रकार के और भी अनेक उल्लेख मिलते हैं[5]। जाटों में गोदारा और सारणों की आपसी अनबन का उल्लेख कर आए हैं। सारण पूलो और उसकी चौधराइन मिलकी के आपसी मनमुटाव को मिटाने का सारण जाटों ने विचार किया और इस हेतु एकत्र होकर उन्होंने बकरे मारे, मदिरा मंगवाई और गोठ की। राजपूत देवी पर बलि के निमित्त भी जीव हत्या करते थे[6]। यहां के ब्राह्मण और वैश्य मद्य मांस नहीं खाते थे[7]। हिन्दू और मुसलमान गृहस्थों के अतिरिक्त साधुवर्ग में भी बड़े रूप में जीवहत्या प्रचलित थी (१४ ११–१२, ४६)। वील्होजी कृत कथा जैसलमेर की से प्रतीत होता है कि जाम्भोजी ने रावल जतसी से चार वर पशुओं की रक्षा से सम्बन्धित ही मांगे थे। अफीम की भांति समाज में मांस और मदिरा का अबाध प्रचार था। यहां की अन्य जातियों में मीने मांस मदिरा खाते पीते हैं, यहां तक कि गौ-मांस भी खाते हैं[8]। कसाई केवल मुसलमान हैं जिसका व्यवसाय मांस बेचना और खटिक का खान पकाना है[9]। ये परम्पराएँ एक दिन का परिणाम नहीं हैं, इनका प्रचलन बहुत पुराना है।

१७–भांग और तम्बाकू–इन का प्रचलन भी यहां खूब रहा है। गोरखवानी में भांग-प्रयोग की भर्त्सना की गई है (पृ० ६६, छंद २०८, प्रयाग, संवत् २००३)। नगर निवासी ब्राह्मणों में तो भांग पीने का रिवाज बहुत ज्यादा रहा है[10]। विद्वानों के अनुसार तम्बाकू सबसे पहले संवत् १५५५ (सन् १४९८) में कोलम्बस भारत में लाया था। जाम्भोजी की विद्यमानता में राजस्थान में इसका प्रचलन हो जाना कोई आश्चर्य की बात नहीं है (द्रष्टव्य-ऊजी नैण, कवि संख्या ३७)। जाम्भोजी ने मानव और समाज की सर्वतोभावेन उन्नति को ध्यान में रख कर ही इन पाँचों के प्रयोग का सर्वथा निषेध किया था। वे समाज–सुधार,

---

१–श्यामलदास वीरविनोद, पृष्ठ ४०१।
२–मुहणोत नणसी की ख्यात, प्रथम भाग, पृ० २४, काशी।
३–वही, पृ० ३७।
४–वही, पृ० २२२।
५–वही, पृ० २२५–२६ तथा द्वितीय खण्ड पृ० १४३, २०२ आदि।
६–श्यामलदास वीरविनोद, प्रथम भाग, पृ० ३४६।
७–वही, पृ० २०७।
८–बजरंगलाल लोहिया राजस्थान की जातियाँ, पृ० ४०–४१।
९–वही, पृ० २११–२१२।
१०–श्यामलदास वीरविनोद, प्रथम भाग, पृ० १०१।

उन्नति और आत्मोत्थान का संदेश लेकर आये थे। मादक पदार्थों के सेवन से मनुष्य की शारीरिक और मानसिक शक्तियों का ह्रास होता है, वह अयोग्य और अकर्मण्य बनता है। आपसी फूट, वमनस्य, कलह और अशांति इनका मादकता का दुष्परिणाम है। वील्होजी ने भी इनका प्रयोग करने वालों को बुरी तरह धिक्कारा है[1]।

१८-जाटों का विशेष उल्लेख-विष्णोई अधिकांश जाट जाति में से बने हैं। विष्णोई-रचनाओं से जहां समूचे समाज की विभिन्न स्थितियों का पता चलता है, वहां जाटों से सम्बंधित कतिपय विशिष्ट बातों का भी पता चलता है। वे शीघ्र ही उत्तेजित हो जाते थे, लडाकू, झूठ, मूर्ख और अशांति प्रिय[2]। वे न पवित्रता रखते, न स्नान करते, न 'जीकारा' देकर बोलते और सुभाषण तो करते ही नहीं थे; "हो-हो" करके जोर से बोलते थे। वे बुरी-बुरी आदतों के शिकार थे और निर्दोष जीव हत्या करते थे। पुण्य, सत्य, शील, संतोष आदि गुणों से वे एकदम हीन और अनंता में जीवन बिताते थे (ऊदोजी नण, सम्भ ५८)। विष्णोई कवियों के ऐसे अनेक उल्लेख मिलते हैं। वील्होजी ने जाटों के "जीकारा" देकर बोलने में आश्चर्य प्रकट किया है[3]। केवल जाटों पर ही नहीं समाज के अधिकांश खतिहर और उनसे सम्बंधित लोगों पर भी यह बात लागू थी।

१९-समग्रता में समाज व जाम्भोजी के कार्य-जाम्भाणी साहित्य के आधार पर सामूहिक रूप से तत्कालीन समाज के सम्बन्ध में कतिपय सामान्य बातें कही जा सकती हैं।

लोग केवल भौतिक सुख, शान्ति और समृद्धि की ही कामना और तदनुसार कार्य करते थे। ऐसे अनेक लोगों और कामनाओं का जाम्भोजी ने बड़ा यथार्थ उल्लेख किया है (सबद ८३, ८६)। सभी भौतिक सुख-समृद्धि ही चाहते थे, मोक्ष प्राप्ति का मार्ग कोई नहीं ढूंढता था। लोग आयु से बड़े और कुल से उत्तम माने जाते तथा गुरु-दर्शन से ही अपने को सिद्ध समझने लगते थे (२४ २-५)। वे आचार-विचार हीन और पतित थे, धर्म, शील, संयम आदि का पालन नहीं करते थे (२१ २१)। झूठ से डरते नहीं थे, कड़कड़ कर बोलते थे, उनको ज्ञान तत्त्व का पता नहीं था और भूत की भांति 'भड़कते' थे[4]। भले बोल तो वे

१-वरज्या सतगुर साम्य, कु मल कुकरणी करता।
मद मास पावती, भाग पाहि विसरदा।
वरज्या गोरष नाथ, वरज्या कैवली तीथंकर।
वरज्या किसन मुरारि, वरज्या अवलिय पैकंबर।
सूत कुराण पुराण मा, वाल साधि मु जा न्मी।
अतना की सीष मानी नही, तरो कालो मुह रे आदमी ॥ २३ ॥

२-जाट सगो करि जीमण बसाला, तिणि री भड़कि विणावी ॥ १५ ॥
थूर मगाई मग लट किरिया नजिया ह वल जोवी ॥ १६ ॥-रेड़ोजी, साखी।

३-गंडऊ अचमी बात, जाटा जीकार वाणी।
जाट गासारी भण्यो, नर बोलता होकारि।
सुबुधि, साच, संतोष त्यागा, पुरेष अथवा नारि।
पालटी कुपरि कुवाण्य मांही, हुआ सवभि सुजाण।-साखी।

४-झूठ न डर कडकता बोल भव वोतिग भार अथरवाण तोल।
भेद वेद बिना भस्म ज्या भूता, जनम हारि वे दीन विगूता ॥ ५ ॥ -रायचन्द, साखी।

जानते ही नहा थे, सदा पाप की बातें ही सुनते थे[१]। जब बोलते थे तब कुवचन ही बोलते और सगनि मूर्खों की करते थे (कवि मस्या ४०, साखी)। उनको ठीक और ढंग से बोलना भी नहीं आता था। वील्हाजी कृत "सच अपरी विगतावली" और केसोजी कृत "कथा विगतावली" तो इसी विषय को ही लेकर लिखी गई हैं। और तो और अनेक लोगों को झूठ और सत्य तक का पता नहीं था,[२] न ही वे अभिवादन करना जानते थे। जीभ का "जीकारा" मीठा लगता था[३] किन्तु इसका लोगों म अभाव था[४]। वे मन-हठी, सदा वाद-विवाद में उलझे, सशय में डूबे और अपनी ही बात पर अडे रहते थे (१५ १३, ८)। उनका मनभावनी बातें तो बहुत पसन्द थी किन्तु खरी बातो का कोई विश्वास भी नही करता था (६ १४-१५)। गाने-बजाने से वे खुश होते थे (६६ १३)। वे व्यभिचार और जीव हत्या में रत रहते और परायी निन्दा करते थे (द्रष्टव्य-तेजोजी के गीत)। लोग खूब डटकर भोजन तो करते थे (११ १८,२४ १) किन्तु अधिकाश कुछ भी उद्यम न कर बेकार घूमते फिरते थे। बिना कोई काय किए दरिद्रता दूर होने का कोई उपाय नही था[५]। इसी कारण जाम्भोजी ने प्रत्येक परिवार को जीविका के लिए कुछ न कुछ अपने हाथ से काम करने का आदेश दिया है (६५ ५, ७५ ७)।

जाम्भोजी ने सोना, कपडा, घी, तेल, हाथी, घोडा तथा कन्या-दान आदि से भी बढ़कर पवित्रता रखना, नित्य स्नान करना और शील का पालन बताया है (१००, ११४ आदि)। समाज में सामान्यत हिन्दू शास्त्रों और सस्कारो पर आस्था थी किन्तु व्यापक प्रचलन उनके विपरीत रूप का ही था। सूय के सम्मुख थूकना, ब्राह्मण को निमन्त्रित करके भोजन न खिलाना, उसकी जनेऊ तोडना, चरती पीती गाय को डराकर भगा देना आदि जाम्भाजी ने दोष माने हैं (५९,६०)। कही कहीं समाज म "कथा" कही सुनी जाती थी। कथा से तात्पर्य पौराणिक कथाओ से प्रतीत होता है। हिन्दू और मुसलमान धम का असली तत्त्व न समझकर आपस म लडते थे (द्रष्टव्य-वील्होजी)। लोग भ्रम की श्रृखला म बधे अपने कुल की लीक पर चलते थे। गलत हो या सही, कुल की लाज का उनको बडा ध्यान रहता था[६]। अना-

१-धरम न धरियो ध्यान, पाप कानें साभलियो।
मलो न जाण्यो बोल, चवो विष पारी अलियो ॥ २१ ॥ -ऊदोजी नैण, छप्पय।
२-न्याव झूठ की न लहैं सच्य, मन्यसा रही पाप सू बध्य ॥ १० ॥
-वील्होजी, कथा गुगलिय की।
३-मीठो जीभ जीकारें, गाठि प्यडता की मीठी।
मान्व मीठी धाट, माहि मीठी अगीठी ॥ १०४ ॥-वील्हजी चारण, छप्पय।
४-विसन वीणि केवल ग्यान, अवर कु ण दूजो ल्याव।
अबूझ वुभाव कू ण, कु ण मुख जीकार बुलाव ॥ ४६ ॥-ऊदोजी नैण, छप्पय।
-५(क) उदिम कर रे आदमी, उदिम दाल्यद जाय।
जीभ विसन को नाव ले, अहनिस साम्य धियाय।
(ख) ककर क्रिया न छाडिय, कुकरम कल्ह नीवारि।
विसन भगति कोति आदमी, कूण पहुतो पारि ॥ ६ ॥-वील्होजी, विरन छनीसी।
६-कन्न ग्यानी आय मिल्यो भूला मुख भवीक।
बा्या सकल भरम का, वहैं ज कुल की लीक ॥ ७ ॥ (शेषाश आगे देखें)

नायकार और मोह म पड़े हुए भी लोग झूठी लोक-लज्जा का ख्याल करते थे। जाम्भोजी और अन्य कवियों ने इस तथाकथित दुनियादारी का त्याग कर हरि नाम जपने का कहा है। लोगों मे अतिथि-सत्कार तथा दान देने की भावना नहीं थी, जिसके लिए स्वयं जाम्भोजी ने प्रयास किया था। राव, राणा राज तो करते थे किन्तु वे अधिकांश भ्रम म भूले हुए[1]। लोग 'अभेदू' गाफिल और मूख थे[2]। जाम्भोजी ने ऐसे मूर्खों को समझाया, उद्दण्ड पुरुषों को विनीत बनाया और सत्पथ पर लाने के लिए 'बहरा' के आगे भी ज्ञान कथन किया[3]। सबदवाणी से विदित होता है, कि जाम्भोजी ऐसे मूख और अज्ञानी लोगों को राह पर लाने के लिए व्यग्र और चिंतित थ।

समथ लोग जबरदस्ती दूसरों की मजदूरी मार लेते थे। जानबूझ कर वे पाप-कर्म करते, हरे वृक्ष काटते, बन जलाते और ऋतुमती स भी सभोग करते थ। शर्म वे किसी की नहीं करते थे और भली बात कहने और समझाने पर ऐंठ कर बोलते थे[4]। अहंभाव बहुत था। "कोई पायचे" पहन और टेढ़ी पगड़ी बांधकर अपनी छाया को निरखते चलते थ। विद्वानों म पाखण्ड प्रचलित था। जाम्भोजी ने ज्योतिषियों को झूठा सिद्ध किया, पंडितों और काजियों का अहंकार चूर्ण किया[5]। 'ज्ञान-विचार बहुत कम लोगों के था। मुसल-

---

जड़ या भ्रम क सकल, वहैं ज कुल की लाज।
दरब गुमाव इकरथो, सर न एको काज ॥ १२ ॥-वील्होजी, कथा गुगलिय की।

१-राव राणा भरम्य भूला, राज करता मालिय।
गरीब रूपी पहो पूरौ सो गुर आयौ भालिय ॥ ४ ॥-ऊदोजी नैण, साखी।

२-गाफिल भूल्य रह्या भोलाव, करणी साध चितायौ ॥ ३ ॥
गाफिल थूल अभेदू मुरेपा, कयो परच परचायौ ॥ ४ ॥-ऊदोजी नैण, साखी।

३-बहरा आग ग्यान कथ्यो, गुर अबूझ बुझाया।
अ मला का गुर माण मल्या, गुर अनू नु वाया ॥ ३ ॥
-सुरजनजी (कवि सख्या ६९), साखी।

४-लोह भकोड कर अनियाव, चाटी चुगली सू घणौं हियाव ॥ ३ ॥
बाहण आणजिया री ल्य भाडि, दोर माहि पड ली धाडि ॥ ४ ॥
वसत पराई पडी लहाय, दाजि रहै मैला मन माहि ॥ ५ ॥
पूछी न कहै दिल रा चोर गुरजा तणी सहैला ठोर ॥ ६ ॥
मुरडि मजूरी राप ताणि, किरिया माहि पड ली हाणि ॥ ७ ॥
मुप ता बोल्य मदा कुवाणि, पापी पाप कु माव जाणि ॥ ८ ॥
रूपा तणी न पाल दया, वाढ वनी कु भी भ पया ॥ ९ ॥
लोप वायक मेट आण, पाप कीय म आवै हाण्य ॥ ११ ॥
सुभ्यागता न मेल तार थू ला सरसा हुव पवार ॥ १२ ॥
जाति जण री न करे काण, पापी पाप कु माव जाण ॥ १३ ॥
धासामोम चाल घणो, रूडा न टाल रति आभीटणो ॥ १५ ॥
धाधाधू ल रहै अचेन, ताह पापा ता हुव परेत ॥ १७ ॥
मोष न्या बोल कडकडी, दोर दुय सहिस्य बपडी ॥ १६ ॥-वील्होजी, साखी।

५-जबू दीप मा भमजी, रच्यो परगट दीवाण।
हक साध सेयो साम्य पथ, कै क धूत ओचरया अजाण।
देवजी त जोपस घारया झूठ, मल्या पिन्ता का माण। (शेषांश आगे देखें)

मानी धम पर कोई मुसलमान और हिंदू धम पर कोई हिंदू नही चलता था। लोग लगोट और वचन के पक्के नहा थे। नीच कम करने वाली धूत और 'छिनाल' स्त्रियाँ तो घर-घर म थीं किन्तु पतिव्रता और सती स्त्रियाँ तो कोई कोई ही थी। अपनी जाति के अनुसार काम कम ही लोग करते थे। न एकादशी रखते थे और न रोजा। धम त्याग कर सब अपने अह में रत और मनमुखी थे। चारण, भाट, वनिये और ब्राह्मण-कोई भी अपने-अपने आचार और धर्म पर नही थे। अपनी राह त्याग कर वे अधर्मी हो गए थे' (द्रष्टव्य-तेजोजी, कवि सख्या ५, गीत सख्या ५)।

जाम्भोजी ने ऐसे समाज के सर्वांगीण विकास का प्रयास किया था।

धार्मिक स्थिति

(१) पीठिका-राजस्थान मे विक्रम की ७ वी से ११ वी शताब्दी तक राजपूत जाति के कई वश विशेष रूप से प्रसिद्ध हुए और उन्होंने यहा अपने-अपने पृथक राज्य स्थापित किए। तत्पश्चात भी स्वतन्त्रता प्राप्ति तक यहा विभिन्न राजपूत घरानो का राज्य रहा। १० वी शताब्दी से यहा मुसलमानो के आक्रमण आरम्भ हुए और जो समय-समय पर होते रहे, किन्तु जोधपुर के राव मालदेव के स्वर्गवास (सवत १६१६) समय तक, धार्मिक-सामाजिक दृष्टि स मुसलमानो का प्रभाव यहा बिल्कुल ही नही पडा। इस प्रकार, एक दीर्घ काल तक राजपूतों का शासन रहने से, राजस्थान मे अनेक तत्त्वो के समन्वय, सार-सचयन और मिश्रण से एक विशिष्ट प्रकार की सस्कृति का विकास हुआ जिसे हम मोटे रूप से "राजपूत सस्कृति" कह सकते हैं। धार्मिक सहिष्णुता, प्रत्येक धम को प्रोत्साहन देना, वचन-पालन, स्वामि-भक्ति, आन मान मर्यादा और आदर्शों का पालन, स्वाभिमान, शरणागत और टेक की रक्षा, प्रतिशोध-भावना, युद्ध मे विजय अथवा मृत्यु एक की कामना, भागते हुए, घायल, पराजित, क्षमा-प्रार्थी और असावधान शत्रु पर सामान्यत प्रहार न करना आदि राजपूत सस्कृति की कतिपय उल्लेखनीय विशेषताएँ हैं। यहा की धार्मिक स्थिति का सही निदर्शन राजपूत सस्कृति के सदर्भ म ही किया जा सकता है। यह कहने की आवश्यकता नही कि यहाँ की जनता के जीवन-दर्शन, पद्धति और निर्माण के मूल म धम और राजा-दो तत्त्व प्रधान रहे हैं। राजपूतों के शासन काल मे धम और पूजा-उपासना के क्षेत्र मे सबसे बडी दो बातें थी —(१) धार्मिक सहिष्णुता, प्रत्येक धम मत को प्रोत्साहन और सरक्षण, (२) विभिन्न मदिरो और देव-देवी मूर्तियो का निर्माण और जीर्णोद्धार। राजपूत राजाओ ने सभी धर्मों और मतो को सम्मान की दृष्टि से देखा और उनको पल्लवित-पुष्पित होने का सुअवसर प्रदान किया। एक ही राज-परिवार मे विभिन्न धर्मानुयायी सदस्य भी रहे, तथा पिता और पुत्र की धम-मान्यताओ मे भी अतर रहा किन्तु इस कारण उनके आपसी और जनता के सबधो म कोई फक नही पडा। लोक म भी यही सहिष्णुता रही।

बाजी तो हार्‌या अगियान, देपि पहनि का बुर्‌याण।
धरम नेम जरणा जुगति, ब्रह्मचार उतिम क्रिया।
सुरग सुपय वितना रल्या, कुगर कुपाल दोर गया॥ ४७॥-ऊदोजी नाण।

(२) १६ वीं शताब्दी विश्नोई कवियों के धार्मिक स्थिति विषयक प्रामाणिक कथन जाम्भोजी के बाद और पहले पंथ के सम्बन्ध में सम्प्रदाय के प्रचार प्रमुख और मान्य कवियों के प्रमाणवाक्यात् तत्कालीन धार्मिक स्थिति के विषय में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण जानकारी और सूचनाएं मिलती हैं। इनसे ज्ञात होता है कि सम्प्रदाय में जाम्भोजी के पूर्व चार मत [illegible] हिन्दू, मुसलमान, नाथ (योग) और जैन जिनका उन्होंने खंडन किया था तथा वे सत्पथ से च्युत थे। तद्विषयक कतिपय उदाहरण इस प्रकार है —

१-मुसल कह्या जोग जिनवर स्यार धरम निवारण।
रहे रिष सिष जोग बहु विष सरब ग्यान सधारण ॥ १२ ॥
-जम्भेश्वर स्तोत्र, अज्ञात कवि स० २९।

२-कलिजुग च्यारयो धरम एकठा फुरमाण्या।
मुसल ब्रम्हा जण जोग जुगति दिखाण्या।
जुगति जोगी की बताई गुरति धारा सारथी।
बागद देस मह न धोर्हे, त न पाप ओ पयो।
इवा जोवा हुया कर्म मा, अगम पथ चलाइयो।
सभरायलि गुर आय धाल्यो, च्यारि धरम फुरमाइयो।-साखी, अज्ञात कवि, सख्या २।

३-कथा पुण बर्णो वेद तेरा, ग्यान हिन्दू तुरक बिताइया।
उताइ देहा बसदा कर कवि कवि ग्यान सुणाइया।
कथ्यो ग्यान म्हार ब्रम्ह ग्यानी बुत कोइस न जोवियो।
काजी कतेब वेद ब्रम्हा जुगति जोगी चेतियो ॥-साखी, रायचन्द, कवि स० ४०।

४-गोरष कह्यो सो जोग नियास, दताधी दाख्यो सन्यास।
जन धरम जिनवर की वांणी, महमद कह्यो सो मुसलमांणी।
भागौत कह्यो किसन दोपांणि, सतगुर कह्यो स साच करि जांणि।
सतगुर पायो मुकति न होय, कूड़ कथन जन रोसो कोय ॥ ७ ॥
-कथा औतारपात, वील्होजी

५-कहियो साच सुगुर को सुणी, च्यारि धरम फुरमाया धणी।
दांन सील तप भाव विचारि, सहज संतोष विर्मा दया धारि ॥ १५५ ॥
जोग ध्यान मन मा दिढ रहै, सुष महमद को कलमू कहै।
सुचि ब्रहमांणी लीय सभालि, जन धरम जीव दया पालि ॥ १५६ ॥
-कथा विगतावली, केसोजी।

६-सुरजनजी, (संवत १६४०-१७४८) (कवि सख्या ६९) के निम्नलिखित कथन —
क-निराहारी आप आयो च्यारि धरम चलाइयो।
नव षड षेत किरसांण जिहक, साच षेती कीजियो।
जोग जिनवर साच इल मां ब्रम ग्यांन वितारियो।
सुरजन जन की वीनती, गुर सरणि पारि उतारियो ॥ ४ ॥-साखी स० ८।
ख-ब्रम्हा की किरिया कही, जरणा जुगति बताय।

कलमा दाग कतेब सु णि, जण दया ठहराय ॥ २०० ॥-कथा औतार की।
ग-गुर भेष पाप स काई, भद्र भेष कीज भलाई।
भ्रम भ अण जोगी बुलाणा, मिल मीर काजी मुलाणा ॥ ५२ ॥-कथा परसिध।
घ-भ्रभा सुचि मुसल कलम मया, जोगारभ जरणा जीव दया।
तप, सील, सतोष, खिमा जरणा, सुचील सम्म निहच करणा ॥ १८ ॥-छद।
ङ-सुरजनदास विचारि कहै, गुर च्यारि धरम को पथ चलाई।-सवैया।

इनके अतिरिक्त सबदवाणी तथा विष्णोई साहित्य से विदित होता है कि लोक म अय अनेक इतर देवी-देवताओं, क्षेत्रीय लोक वीरो और देवताओं की पूजा-मान्यता भी बड़े परिमाण म प्रचलित थी। इसे सामान्यत 'पाषण्ड पूजा' (कल्ट वर्शिप) कह सकते हैं। नीचे इस पृष्ठभूमि पर हम तत्कालीन धार्मिक स्थिति का सिंहावलोकन करते हैं।

(३) हिन्दू धर्म-हिन्दू धर्म एक व्यापक नाम है जिसके अन्तर्गत वैदिक, औपनिषदिक और पौराणिक आचार-विचार, साधना, दर्शन और विशिष्ट 'धर्म-मान्यता सम्मिलित हैं। ईश्वरोपासना, यज्ञ करना, वर्ण-व्यवस्था आदि वैदिक धर्म के मुख्य अंग थे। कालान्तर मे यह अनेक शाखाओं म बट गया और उसके स्थान पर पौराणिक धर्म प्रचलित हुआ[१]। राजपूतों के विशेष उत्थान के साथ ही पौराणिक धर्म विशेष रूप मे पनपा। मध्ययुग म पुनर्जीवित हिन्दू धर्म की दो उल्लेखनीय विशेषताएँ थी -(क) शंकर का मायावाद तथा (ख) अन्य वैष्णव आचार्यों का भक्तिमार्ग। मरु-प्रदेश म १६ वी शताब्दी तक इन दोनों का ही प्रभाव लग पड़ा। जाम्भोजी की विचारधारा उपनिषदों और गीता से प्रभावित है।

हिन्दू धर्मानुगत राजस्थान म विष्णु, शिव, शक्ति, सूर्य, गणेश आदि की पूजा और सेवा-उपासना प्रमुख रही है। इनसे सम्बन्धित अनेकों मन्दिर, मूर्तियां और शिलालेख मिलते हैं। सामूहिक रूप से १६ वी शताब्दी तक यहा का लोक धर्म स्मार्त धर्म ही था जिसकी चर्चा आगे की गई है। इससे पहले उपयुक्त विभिन्न देवताओं की व्यापक मान्यता स्वरूप नीचे कतिपय प्रमाण दिए जाते हैं —

(क) विष्णु यहा विक्रम सम्वत पूर्व की दूसरी शताब्दी से भी पूर्व विष्णु-पूजा प्रचलन के प्रमाण मिलते हैं। नगरी (मेवाड) के शिलालेखों से सिद्ध होता है कि विक्रम सवत पूर्व की तीसरी शताब्दी के आसपास विष्णु-पूजा होती थी और उसके मन्दिर भी बनते थे[२]। मेवाड म विष्णु के प्राचीन मंदिर चित्तौड, बाडौली, नागदा, आहाड आदि अनेक स्थानो म विद्यमान हैं, जिनम सबसे प्राचीन बाडोली का शेषशायी विष्णु का मंदिर १० वी शताब्दी से भी पहले का बना हुआ है[३]। विक्रम सवत ७१८ के एक शिलालेख से अपराजित की स्त्री यशोमती द्वारा तथा चीरवे के मंदिर की दीवार मे लगे सवत १३३० के शिलालेख से उद्धरण द्वारा विष्णु-मन्दिर बनाए जाने का पता चलता है[४]। आबू के

१-ओझा उदयपुर राज्य का इतिहास, चतुर्थ खण्ड पृष्ठ १४१३ सन १९३२।
२-ओझा उदयपुर राज्य का इतिहास, प्रथम खण्ड पृष्ठ ५८-५९, सवत १९८२।
३-वही, चतुर्थ खण्ड, पृष्ठ १४१३-१४ सवत् १९८८।
४-वही, प्रथम खण्ड पृष्ठ ४०४ ४७८।

अचलेश्वर मंदिर के पास मठ में लगे संवत् १३४२ के शिलालेख में वेद शर्मा द्वारा विष्णु मंदिर समूह की प्रशस्ति बनाए जाने का उल्लेख है[1]। महाराणा मोकल ने चित्तौड़ में जलाशय सहित विष्णु का मन्दिर बनाया था[2]। बदनोर में बड़े दरवाजे के पास संवत १५८८ का बना लक्ष्मीनारायणजी का मंदिर है[3]। देलवाड़ा के जैन मंदिरों के समूह के पीछे की ओर विष्णु की मूर्ति पर संवत् १४६८ का अभिलेख अंकित है[4]। अचूडला (प्रतापगढ) में १४ वीं शताब्दी के आसपास का बना विष्णु मंदिर है[5]। बडोदा (डूंगरपुर) में एक श्वेत पाषाण के शिवमंदिर के अहाते में विष्णु रूप सूर्य की खड़ी हुई चतुर्भुज मूर्ति है जिसकी लिपि अनुमानतः ११ वीं शताब्दी की है[6]। डूंगरपुर के महारावल सोमदास (विक्रम संवत १५०६-१५३६) के स्वर्गवास के पश्चात उसकी एक राणी हरखमदे ने वरजो गांव में विष्णु-मन्दिर बनवाया था[7]। बांसवाड़ा के तलवाड़ा और चीच (छींछ) में क्रमशः १२ वीं और १६ वीं शताब्दी के आसपास के बने लक्ष्मीनारायणजी के मन्दिर हैं[8]। यहां के कलिंजरा गांव में भी एक विनष्ट विष्णु मंदिर के बाहर संवत् १४४३ का एक शिलालेख है[9]।

बुचकला (बिलाडा, जोधपुर) के बड़े मंदिर को विष्णु के किसी अवतार का मन्दिर बताया गया है। इसके सभामण्डप के एक स्तंभ पर सम्भवतः विक्रम संवत ८७२ का एक लेख खुदा हुआ है। पीपाड़ का विष्णु मंदिर विक्रम की नवीं शताब्दी के लगभग का बना हुआ है[10]। किराडू (मालाणी) के प्राचीन मंदिरों में एक मंदिर विष्णु का है। खेड़ के रणछोड़जी के प्राचीन मंदिर के कितने ही स्तंभ १० वीं और १२ वीं शताब्दी के बने हुए हैं। जोधपुर के राव गांगा, सिरोही से गंगश्यामजी (विष्णु) की मूर्ति लाए थे, जिसके साथ उसका पुजारी भी आया था[11]। मंडोर के किसी विष्णु मंदिर का संवत् ८९४ का एक शिलालेख जोधपुर-कोट में लगा हुआ मिलता है[12]। बूंदी के हीडोली गांव में १० वीं शताब्दी के लगभग की वराह अवतार की मूर्ति है[13]। बीकानेर के राव लूणकरणजी ने जाम्भोजी के शिष्य होते हुए भी लक्ष्मीनारायणजी का मंदिर बनवाया था[14]। लोद्रवा के भग्नावशेषों में भी

१-ओझा उदयपुर राज्य का इतिहास प्रथम खण्ड, पृष्ठ ४८०-८१।
२-(क) वही दूसरा खण्ड, पृष्ठ ५८७, संवत् १९८२।
(ख) गहलोत राजपूताने का इतिहास, पहला भाग, पृष्ठ २०६, सन् १९३७।
३-गोपालसिंह मेड़तिया जयमलवंशप्रकाश, पृष्ठ ७, सन १९३२।
४-गहलोत राजपूताने का इतिहास, द्वितीय भाग,
सिरोही राज्य, पृष्ठ २४, सन १९६०।
५-ओझा प्रतापगढ़ राज्य का इतिहास, पृष्ठ २६, संवत १९९७।
६-ओझा डूंगरपुर राज्य का इतिहास, पृष्ठ १५, संवत १९९२।
७-वही, पृष्ठ ७१।
८-वही, पृष्ठ १४, २१।
९-वही, पृष्ठ २४।
१०-ओझा जोधपुर राज्य का इतिहास, प्रथम खण्ड, पृष्ठ ३१-३२, संवत १९९५।
११-आसोपा मारवाड़ का मूल इतिहास, पृष्ठ १२९, सन् १९३१।
१२-ओझा राजपूताने का इतिहास, जिल्द पहली पृष्ठ १६५-६६ सं० १९९१।
१३-गहलोत राजपूताने का इतिहास, द्वितीय भाग, बूंदी राज्य, पृष्ठ २७, सन १९६०।
१४-ओझा बीकानेर राज्य का इतिहास, प्रथम खण्ड, पृष्ठ ४३, संवत १९९६।

१० वी शताब्दी में विष्णु पूजा प्रचलित थी[1]। जैसलमेर के महारावल लखमणजी ने संवत् १४९४ में मरुता प्रदेश से स्वयं आविर्भूत लक्ष्मीनारायणजी की मूर्ति को नवीन मंदिर बनवाकर प्रतिष्ठित किया था[2]। तब से राज्य के स्वामी श्री लक्ष्मीनारायणजी और महारावल उनके दीवान माने जाने लगे[3]। विष्णु के अवतारों का एक स्थान पर प्रदर्शन तथा उनके अवतार विषयक अनेक पृथक् मूर्तियाँ भी मिलती हैं। यही नहीं, वैष्णव मातृकाओं का भी प्रदर्शन प्राप्त है[4]। राजस्थान में विष्णु के अनेक नाम, रूप और अवतारों की प्रतिमाएँ बनी हुई हैं। अवतारों में नृसिंह, राम और कृष्ण-चरित पर राजस्थानी में सुन्दर काव्यों की रचना हुई है। सामान्यतः अवतार का अभिप्राय विष्णु के किसी विशेष रूप में प्रकट होने से लिया जाता है और वे जगत-पालक माने जाते हैं। विष्णु-पूजा की व्यापकता का एक बड़ा कारण यह भी है।

(ख) शिव—वैदिक देवता रुद्र शिव रूप में लोक पूजित हुए हैं[5]। शिव-पूजा भी राजस्थान में बहुत प्राचीन काल से चली आ रही है और यहां कई प्रकार की शिव मूर्तियाँ मिलती हैं[6]। बाडोली, मूंगथला, कल्याणपुर, हर्ष आदि प्राचीन स्थानों के शिवालय काफी प्रसिद्ध रहे हैं। कल्याणपुर (मेवाड़) नगर के समूह से मिले हुए विक्रम संवत् की ८ वीं शताब्दी की लिपि के एक लेख में कर्दथिदेव द्वारा शिव मंदिर बनवाए जाने का उल्लेख है[7]। माहेश्वर सम्प्रदाय चार हैं —पाशुपत, शैव, कालामुख और कापालिक। इनमें पाशुपत मत का केन्द्र गुजरात और राजस्थान था। पाशुपत मत के ऐतिहासिक संस्थापक का नाम नकुलीश या लकुलीश है[8]। भगवान शंकर के १८[9] अवतारों में लकुलीश आद्य अवतार माने जाते हैं। यहां के मेनाल, तिलिस्मा, बाडोली आदि स्थानों के प्राचीन शिव मंदिर नकुलीश सम्प्रदाय के हैं। कई शैव सम्प्रदाय के मंदिरों के द्वारों पर लकुलीश की मूर्तियाँ बनी हुई हैं जो पद्मासन स्थित और जैन मूर्तियों की भांति सिर पर केशों से आच्छादित हैं। उनके दाहिने हाथ में बिजौरा और बायें में लकुट है। पहले इन मंदिरों के पुजारी

१-डा० कैलाशचन्द्र जैन एन्शियेंट सिटीज आफ राजस्थान, पृष्ठ ३६४,-अप्रकाशित शोध-प्रबन्ध, राजस्थान विश्वविद्यालय पुस्तकालय, जयपुर।
२-हरिदत्त गोविन्द व्यास जैसलमेर का इतिहास, पृष्ठ ८१, सन १९२०।
३-(क) लखमीचन्द तवारीख जैसलमेर (तीनों भाग), पृष्ठ ४६, संख्या १२८, जैसलमेर, सन १८९२।
(ख) नैणसी की ख्यात, द्वितीय खण्ड पृष्ठ ४३७, काशी संवत १९९१।
४-राजस्थान भारती, बीकानेर, भाग ८, अंक ४, सन १९५५, पृष्ठ ३-३९।
५-विशेष द्रष्टव्य-डा० यदुवंशी शैवमत, बिहार रा० भा० प्र०, पटना, तथा भण्डारकर वैष्णविज्म, शैविज्म आदि।
६-ओझा निबन्ध-संग्रह प्रथम भाग, पृष्ठ २१८ उदयपुर, सन् १९५४।
७-ओझा उदयपुर राज्य का इतिहास चतुर्थ खण्ड, पृष्ठ १४१४, संवत् १९८८।
८-बलदेव उपाध्याय भारतीय दर्शन, पृष्ठ ५४७-४८ बनारस सन् १९४८।
९-लकुलीश, कौशिक गार्ग्य, मैत्र्य, कौरुष, ईशान, पारगार्ग्य, कपिलाण्ड मनुष्यक, अपरकुशिक, अत्रि पिंगलाक्ष, पुष्पक बृहदार्य, अगस्ति सन्तान, राशीकर और विद्यागुरु। -वही, पृष्ठ ५४८-४९।

कनफटे साधु होते थे। वे शरीर पर भस्म रमाते और आजन्म ब्रह्मचारी रहते थे। कालान्तर में इस सम्प्रदाय के साधु लकुलीश का नाम तक भूल गए और स्वयं को गोरखनाथ आदि के शिष्य मानने लगे[1]। माहेश्वर सम्प्रदाय की एक शाखा का नाथ पंथ में अन्तर्भुक्त होना इसका यह जीवन्त उदाहरण है। हरनाथ (शेरगाबादी) का शिवालय लकुलीश सम्प्रदाय का ही था जैसा कि वहाँ के शिलालेख में प्रयुक्त 'पद्मासनोत्कुलीभौम' पद से स्पष्ट है[2]। जोधपुर के चाटण गाँव में ११ वीं शताब्दी के आसपास का 'लकुलीश मन्दिर' है[3]। जैसलमेर के रावल विजयराजजी (गद्दी-संवत ११७६) ने विजरासर तालाब और शिव का महालिंग मन्दिर बनाकर बड़ा यश लिया था। इस आशय का एक दोहा भी प्रसिद्ध है[4]। महारावल बरसीजी (गद्दी संवत् १४९६) ने भी रत्नेश्वर महादेवजी का मन्दिर बनवाया था[5]। राजस्थान में राजाओं, ठाकुरों एवं सन्तों के स्मारक स्वरूप बनी हुई बहुसंख्यक छतरियों में भी शिव प्रतीक (लिंग) की ही स्थापना की गई है। अनेक पुराने पंचायतन मन्दिरों में शिव की मूर्तियाँ भी पाई जाती हैं।

लकुलीश, रावल, नाथपंथ-राजस्थान में लकुलीश शिव ही सर्वाधिक प्रसिद्ध रहे हैं। सबदवाणी में अनेक बार रावल जोगियों का उल्लेख आया है। रावल शब्द लाकुल, लकुल का रूपान्तर है। रावल नाम से प्रसिद्ध योगियों की समूची शाखा वस्तुतः लाकुलीश पाशुपत सम्प्रदाय की उत्तराधिकारी है[6]। राजस्थान के कतिपय नरेशों की उपाधि रावल रही है। इससे उनका लकुलीश सम्प्रदायानुयायी होना प्रमाणित होता है। यह रावल माहेश्वर, भागवत आदि के समान सम्प्रदाय का ही सूचक है, जिसकी पुष्टि में निम्नलिखित प्रमाण दिये जा सकते हैं —

१-मेवाड़ में शिवपूजा दीर्घकाल से चली आ रही है। यहाँ के स्वामी शिव को ही अपना उपास्यदेव समझते हैं। सुप्रसिद्ध उपास्य एकलिंगजी और मेनाल, तिलिस्मा, बाडोली आदि स्थानों के प्राचीन शिव मन्दिर लकुलीश सम्प्रदाय के ही हैं[7]। बापा की रावल उपाधि उनको लकुलीश सम्प्रदाय का अनुयायी सिद्ध करती है।

१-(क) ओझा: उदयपुर राज्य का इतिहास, चतुर्थ खण्ड, पृष्ठ १४१५।
(ख) शोध-पत्रिका, उदयपुर, भाग ७, अंक २, में श्री रत्नचन्द्र अग्रवाल का लेख।
२-वरदा, बिसाऊ, श्रावण संवत २००२ अंक में श्री झाबरमल्ल शर्मा के 'शेखावाटी के शिलालेख' निबन्ध की पाद-टिप्पणी।
३-ओझा: जोधपुर राज्य का इतिहास, प्रथम खण्ड, पृष्ठ ४७।
४-(क) लखमीचन्द: तवारीख जैसलमेर (तीनों भाग), पृष्ठ २७-२८, सन् १८९२।
(ख) हरिदत्त गोविन्द व्यास: जैसलमेर का इतिहास, पृष्ठ २३-२४।
यह सह हाल पालता भूप अनेरा भाल।
आयो घणा रचायसी विजड़ासर री पाल॥
५-लखमीचन्द: तवारीख जैसलमेर, पृष्ठ ४७।
६-डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी: नाथ सम्प्रदाय, पृष्ठ १५९, इलाहाबाद, सन १९५०।
७-ओझा: उदयपुर राज्य का इतिहास, प्रथम खण्ड, पृष्ठ ३३७, ३६२, ३६४, ३६६, ४१५-२६, ४२६ तथा चतुर्थ खण्ड, पृष्ठ-१४१४-१५।

२-लुद्रवा (जसलमेर) के भाटी राजा देवराज को योगी रतननाथ ने राजतिलक करके रावल की उपाधि दी थी। वह घटना सवत् ६०६ की बताई जाती है। इससे पहले इन यादव वशी नरेशो की उपाधि राय थी, किन्तु देवराज के पश्चात् वे रावल कहलाने लगे। रावल योगी रतननाथ वालों का मठ जसलमेर के बाहर है जिसको गणेशनाथ ने सवत् १३०७ म बनवाया था। जसलमेर के किले म भी रतननाथ का थान है। देवराज के समय से स्वतत्रता-प्राप्ति तक जसलमेर के नरेश गद्दीनशीनी के समय सबसे पहले जोगी का वेश धारण करते थे तथा उत्सवो और गमी के कार्यों मे नाथों का सत्कार सबसे पहले होता था[1]।

३-रावल मल्लीनाथ जिनके नाम से मालाणी प्रदेश प्रसिद्ध है, सिद्ध जोगी रतन रावल के आशीर्वाद से रावल कहलाए थे। पहले इनका नाम मालो था[2] (इनके विषय मे आगे भी लिखा गया है)।

लकुलीश सप्रदाय के नाथ पथ के अन्तर्भुक्त हो जाने में दो प्रमुख कारण थे -उनकी वेश-भूषा और रहन-सहन तथा साधना और आध्यात्मिक दृष्टिकोण म समानता। हमारा अनुमान है कि कनफटा नाथो ने अपना यह वेश लकुलीश सिद्धो से ही लिया है। यह सर्वविदित है कि गोरखनाथ द्वारा प्रवर्तित और प्रचारित सप्रदायों म कनफटे जोगियो का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण स्थान है। यदि यह सत्य हो, तो गोरखनाथ पश्चिमोत्तर या उत्तरभारत के किसी प्रदेश के मूल निवासी होने चाहिएँ। दूसरे, योगी लोग शिव और गोरख मे कोई भेद नहीं समझते। नाथ परम्परा म आदिनाथ शिव माने जाते हैं[3]। राजस्थानी लोक कथाओ म शिवपार्वती एक कथानक रूढि के रूप मे भी प्रकट हुए हैं। शिव की अनेक प्रतिमाएं अर्धनारीश्वर भाव की हैं[4]। शिव-पार्वती अनेक लोक गीतो मे भी चित्रित हुए हैं। राजस्थान म नाथपथ का जो विशेष जोर रहा उसके मूल म एक प्रधान कारण लकुलीश मतानुयायियो का कालान्तर मे कनफटे योगी समझा जाना था।

रसेश्वर दर्शन-शैव दार्शनिको का एक सप्रदाय रसेश्वर दर्शन का अनुयायी है। इसका मुख्य सिद्धान्त यह है कि जीवन्मुक्ति प्राप्ति का उपाय दिव्य शरीर का पाना है जो पारद की भस्म के सेवन से सम्भव है। पारद का दूसरा नाम रस है और यही रस ईश्वर है[5]। जसलमेर के रावल देवराज को जोगी रतननाथ से एक रसकुप्पी प्राप्त होने का उल्लेख मिलता है[6]। यह इस बात का द्योतक है कि सम्भवत लकुलीश सप्रदाय वाले रसेश्वर मत म भी

१-(क) लखमीचन्द तवारीख जसलमेर, पृष्ठ २२-२३।
(ख) हरिदत्त गोविन्द व्यास जसलमेर का इतिहास पृष्ठ २७-२८।
२-बाँकीदास री ख्यात, पृष्ठ ५ जयपुर, सन १६५६।
३-(क) हठयोग प्रदीपिका पहला श्लोक बम्बई, सवत, १९८१।
(ख) सिद्धसिद्धान्त पद्धति पहला श्लोक और टीकाएँ पूर्णनाथजी बोहर, सवत १९९६।
४-मरुभारती, पिलानी, वर्ष ६, अक २ में श्री रतनचन्द्र अग्रवाल का निबन्ध।
५-बलदेव उपाध्याय भारतीय दर्शन, पृष्ठ ५६५-५६७, बनारस, सन् १९४८।
६-मुहणोत नणसी की ख्यात, द्वितीय खण्ड, पृष्ठ २६४-२७४, काशी, सवत १९९१।

विश्वास रखते थे। चर्पटनाथ को रसायन सिद्धि का अन्वेषक बताया जाता है[1]। वर्णरत्नाकर में चौरासी सिद्धों की सूची में चर्पटि का नाम (पृष्ठ ५७, सप्तम कल्लोल) आने से स्पष्ट है कि वे चौदहवीं शताब्दी के पहले अवश्य हो चुके थे[2]। रसेश्वर मत का प्रचार यहाँ विशेष नहीं रहा। जाम्भोजी के समय तक यह सम्प्रदाय नष्ट प्राय या विलुप्त हो गया लगता है। तत्कालीन साहित्य में इसका विशेष संकेत प्राप्त नहीं होता।

(ग) ब्रह्मा-खेड, वसन्तगढ़ और चीत (चौहू) में ब्रह्मा के तथा पुष्कर और बीठू में सावित्री और ब्रह्मा के पुराने मंदिर हैं। सेवाडी (जोधपुर), किराडू, बिजोलिया, भामिया आदि स्थानों से ब्रह्मा की मूर्तियां मिली हैं[3]। कान्हडदेप्रबन्ध के अनुसार जालोर में ब्रह्मा का मन्दिर था[4]। ब्रह्मा के मंदिर होते हुए भी उसकी पूजा-उपासना और विशिष्ट स्थान का पता नहीं चलता। राजस्थानी काव्यों में ब्रह्मा का 'वेहमाता' के रूप में चित्रण किया गया है (द्रष्टव्य-डेल्हजी (कवि संख्या ३) कृत कथा ग्रहमनी)।

(घ) सूर्य-राजस्थान भर में काफी पुराने समय से सूर्य पूजा प्रचलित रहने के कई प्रमाण मिलते हैं। चित्तौड़गढ़ का प्रसिद्ध कालिका माता का मंदिर सूर्य का ही मन्दिर था। आहाड, नादेसमा आदि स्थानों में प्राचीन समय के सूर्य के मंदिर और मूर्तियां मिली हैं[5]। चौहान राजाओं के समय में सूर्य पूजा पर विदेशी प्रभाव था। तब भिन्नमाल इसका सबसे बड़ा केन्द्र था। ओसिया, पोकरण, किराडू, बीठू और पाली में भी सूर्य की मूर्तियां मिली हैं। राणपुर, बामणेरा (मारवाड), घाटार्सी (प्रतापगढ़), तलवाडा (बांसवाड़ा) वसन्तगढ, वमाण (सिरोही) आदि अनेक स्थानों में प्राचीन सूर्य के मन्दिरों का उल्लेख मिलता है[7]। सूर्य और उनकी पत्नी 'रनादे' (राज्ञी) के विषय में यहां अनेक लोकगीत प्रचलित हैं[8]। लोक में प्रत्यक्ष देव सूर्य के स्तुतिगान में वदिक परम्परा का आभास मिलता है[9]।

(ङ) शक्ति-वीर भूमि राजस्थान के निवासियों का शक्ति के प्रति निष्ठावान होना स्वाभाविक है। शक्ति पूजा प्राचीन समय से प्रचलित है। राजपूत लोग प्रायः देवी के उपासक होते हैं और नवरात्र आदि अवसरों पर भैंसों तथा बकरों का बलिदान करते हैं[10]। मेवाड के भवरमाता के मंदिर में लगे विक्रम संवत् ५४७ के शिलालेख में गौरवंशी क्षत्रिय

१-डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी, नाथ सम्प्रदाय, पृष्ठ १४२, इलाहाबाद, सन १९५०।
२-वर्णरत्नाकर, भूमिका, पृष्ठ १६, कलकत्ता, सन् १९४ ।
३-मरुभारती, पिलानी वर्ष २, अंक ३ में "राजस्थान के प्राचीन ब्रह्मा मंदिर तथा ब्रह्मा मूर्तियाँ" निबन्ध।
४-डा० दशरथ शर्मा अर्ली चौहान डाइनस्टीज, पृष्ठ २२९, दिल्ली, सन १९५९।
५-ओझा उदयपुर राज्य का इतिहास, चतुर्थ खण्ड, पृष्ठ १४१५।
६-डा० दशरथ शर्मा अर्ली चौहान डाइनस्टीज, पृष्ठ २३५।
७-शोधपत्रिका उदयपुर, वर्ष ६ अंक २ ३ 'राजस्थान की सूर्य प्रतिमाएँ तथा कतिपय सूर्य मंदिर' तथा वरदा बिसाऊ अंक ३ ४ में एतद् विषयक निबंध।
८-वरदा, बिसाऊ वर्ष २ अंक १ में "राजस्थानी लोकगीतों में सूर्य भगवान" निबन्ध।
९-भल्लो ऊग्या भाण, भाण लुहारा भामणा।
मरण जियण लग मारा, राखो वासिव राव उत॥
१०-ओझा उदयपुर राज्य का इतिहास, चतुर्थ खण्ड पृष्ठ, पृष्ठ १४१६।

राजा यशगुप्त द्वारा देवी मंदिर बनवाये जाने का उल्लेख है। सामोली गाव के सवत ७०३ के एक शिलालेख से पता चलता है कि वहा के निवासी जेतक मेहतर ने अरण्यवासिनी देवी का मन्दिर बनवाया था। नागौर से २४ मील पूर्वोत्तर मे गोठ और मागलोद गाव की सीमा पर गाठ के निकट दधिमति माता का मंदिर है, जिसके सबध का सवत ६६५ का एक शिला लेख मिला है[1]। हजूरी कवि (सख्या ३७) ऊन्नोजी नाए इसी मंदिर के भोपे थे। ओसिया के सचियामाता के मंदिर मे १२ वी शताब्दी की गदभवाहिनी शीतला की प्रतिमा है[2]। ओसवालो की कुल देवी सचियामाता, महिषमर्दिनी का परिवर्तित रूप है[3]। शेखावाटी की सकराय या शाकम्भरी माता का पूरा नाम शकरा है, जसा कि प्राचीन शिलालेखो से प्रकट होता है। वसतगढ तो शारदा और शक्ति का प्रसिद्ध पीठ रह चुका है। यहा की त्रिपुरा-भारती विख्यात देवी मानी गई है[4]। यहा की शक्ति पूजा के सबध मे यह उल्लेखनीय है कि इसम मूल शक्ति पूजा के विधान का रग गौण और प्रादेशिक रग प्रधान है।

चारण-देवियाँ इस सदर्भ में परम्परागत शक्ति पूजा के अतिरिक्त चारणो म उत्पन्न देवियो का भी महत्त्वपूर्ण स्थान है। चारणो का उल्लेख अनेक स्थानो म प्राप्त है[5]। चारणो की गणना देवयोनि म की गई है और सामान्य चारण को देवी पुत्र कहा जाता है। चारणो म उत्पन्न लडकी को "माताजी की सुवासणी", (देवी की सहोदरा बहन) कहने की प्रथा है। देविया की स्तुति म 'नौलाख लोवडियाल' तथा 'चौरासी चारणी' पद का व्यवहार किया जाता है। तात्पर्य यह है कि देवी के ९ लाख साधारण और ८४ असाधारण अवतार हुए हैं। इन चौरासी चारणियो मे पहली वाकलदेवी हैं। आवड, कामेही, बरवड, चाहणदे, महमाय, चान्दराय, करणी आदि अन्य नाम हैं। इनमे आवड की बहुत मान्यता है, जिनका हिंगु-लाज का अवतार माना जाता है। शक्ति सम्प्रदाय मे देवी के चार सिद्ध पीठ है। पूर्व मे कामाक्षा, उत्तर म ज्वालामुखी, दक्षिण मे मीनाक्षी और पश्चिम मे हिंगुलाज। हिंगुलाज की मान्यता चारणा म बहुत है। शक्ति के विभिन्न नामो पर अनेक चारण अपना नाम भी रखते हैं। राजस्थान मे चारणो की बहुत बडी आबादी है। इन कविया ने अनेक प्रकार से देवी-महिमा-गान किया है। देवी की स्तुतिया मे चरजाओ का विशेष महत्व है। जाम्भाजी के समय म चौरासी चारणियो म करणीजी वर्तमान थी, जिनको आवड का अवतार माना

१-ओझा जोधपुर राज्य का इतिहास, प्रथम खण्ड, पृष्ठ ४३।
२-शोधपत्रिका, उदयपुर वर्ष ६, अक ४, "राजस्थान की प्राचीन मूर्तिकला मे गदभवाहना शीतला" निबन्ध।
३-मरुभारती, पिलानी वर्ष ३, अक २, 'राजस्थान में सच्चिका देवी का वास्तविक स्वरूप' -निबन्ध।
४-मरुभारती, पिलानी वर्ष १ अक ३, म श्री राजेन्द्र शकर भट्ट का निबन्ध।
५-(क) कविराजा सूर्यमल्ल मिश्रण वशभास्कर तृतीय राशि, ६२वा मयूख।
(ख) कविराजा भरवदान चारणोत्पत्ति मीमासामातण्ड पृष्ठ ७८-१८०।
(ग) मवेरचद मेघाणी चारणा अने चारणी साहित्य।
(घ) कविराजा श्यामलदास वीरविनोद।
(ङ) कालिकारजन कानूनगो स्टडीज इन राजपूत हिस्ट्री पृष्ठ ३९-५० दिल्ली सन् १९६०।

जाता है। इन देवियों में अनेक की बहुत ही प्रतिष्ठा हुई और चारण की तो तत्कालीन चार राजवंशों की कुलदेवियों का प्रतिष्ठित पद प्राप्त हुआ[१]। करणीजी का समय संवत् १४१४ १५९५ है। इनके पश्चात् भी आज पर्यन्त चारणों में अनेक देवियों के होने का उल्लेख मिलता है। राजस्थानी साहित्य का काफी अंश चारणों द्वारा रचित शक्ति काव्य के रूप में है। शक्ति पीठ में शक्ति के साथ भैरव का होना प्रकट किया गया है। भैरव पर भी रचनाएँ मिलती हैं। लोक में सात नारी मूर्तियाँ, जिनका शिशुओं पर विशेष प्रभाव माना जाता है, "महामाया", "जोगण्यां", "मावलियां" आदि के नाम से पूजी जाती हैं और इनके निमित्त टोने आदि भी किए जाते हैं।

(च) गणेश-प्रत्येक कार्य के आरम्भ में गणेश को स्मरण करने अथवा उनकी पूजा करने की परम्परा दीर्घ काल से चली आ रही है। प्राचीन हस्तलिखित प्रतियों के आदि में "श्री गणेशायनमः" लिखा मिलता है। ये विघ्नविनाशक, ऋद्धि सिद्धि दाता और विद्या बुद्धि के विधायक माने जाते हैं। राजस्थान में गणेश की अनेक प्राचीन प्रतिमाएँ भी मिलती हैं[२]। राजस्थान की मूर्ति-कला में गणेश का सर्वप्रथम अंकन ईसा की ५वीं-६ठी शती से मिलने लगता है। उदयपुर क्षेत्रान्तर्गत तनेसर ग्राम के बाहर पारेवा पत्थर की गणेश प्रतिमा, मारवाड़ का सर्वतोभद्र गणपति स्तम्भ, घटियाला के अम्बिका भवन के स्तम्भ के ऊपर शिलालेख में गणपति की स्तुति (नवीं शती) और सबसे ऊपर गणपति प्रतिमा आदि इस संबंध में उल्लेखनीय हैं[३]।

(४) स्मार्तमत–यद्यपि राजस्थान के राजागण प्रमुखतः शैव या वैष्णव माने जाते हैं, तथापि वस्तुतः वे स्मार्त मतानुयायी ही थे। तीर्थ व्रत उपवास प्रधान, जाति वर्ण विश्वासी, सर्वदेवोपासक मत को एक शब्द में स्मार्तमत कहते हैं। स्मार्तमत अर्थात् स्मृति निर्दिष्ट धर्म व्यवस्था को पालन करने में कल्याण मानने वाला मत। पुराण और महाभारत को भी स्मृतियों में गिना गया है[४]। राजस्थान के अनेक पंचायतन मंदिर इसी स्मार्तमत की व्यापकता और प्रचलन का परिचय देते हैं। विष्णु, शिव, सूर्य, शक्ति और गणेश की पूजा पंचायतन नाम से प्रसिद्ध है, और उसके उपासक स्मार्त कहलाते हैं। स्मार्त लोग पंचदेवोपासक हैं, वे शंकर को भी मानते हैं। इनमें नृसिंह और वराह की पूजा भी प्रचलित थी[५]। जावर, सीसारमा आदि स्थानों में विष्णु और शिव के पंचायतन मंदिर बने हुए हैं। ऐसे मंदिरों में जिस देवता का मंदिर मुख्य हो उसकी मूर्ति मध्य के एक बड़े मंदिर में और अन्य मूर्तियाँ बाहर के भाग में परिक्रमा के चारों कोनों पर बने हुए छोटे मंदिरों में स्थापित की जाती हैं[६]। ओसिया

१–आवड तूठी भाटियां कामेही गोडाह।
श्री बरवड सीसोदिया करणी राठौडाह॥

२–द्रष्टव्य–वरदा, बिसाऊ तीसरा और चौथा अंक।

३–मरुभारती, पिलानी, वर्ष १५, अंक ३, अक्टूबर, १९६७, "राजस्थानी प्राचीन मूर्तिकला में गणेश" –निबंध।

४–डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी मध्यकालीन धर्म साधना पृष्ठ ६०, इलाहाबाद, सन् १९५६।

५–वही, पृष्ठ ३२, ४२।

६–ओझा उदयपुर राज्य का इतिहास, चतुर्थ खण्ड, पृष्ठ १४१६–१७।

के मन्दिरों में हरिहर और ब्रह्मा, विष्णु, महेश के भाव व्यक्त किए गए हैं। किराडू, ओसिया, रायपुर, झालरापाटन और कामा की मूर्तियों में ब्रह्मा, विष्णु, महेश और सूर्य का सम्मिश्रण है। रामगढ़ से प्राप्त एक आसन्न मूर्ति में विष्णु, शिव तथा शिव का सम्मिलित रूप है[1]। १६वीं शताब्दी में इसका चरम प्रतीक महाराणा कुम्भा का अपने इष्टदेव विष्णु के निमित्त संवत १५०५ में बनाया गया विशाल कीर्तिस्तम्भ है। यह हिन्दुओं के पौराणिक देवी-देवताओं का अमूल्य कोष है। कुम्भा विष्णु भक्त था। यह इसी से प्रकट है कि उसने कीर्ति स्तम्भ के अतिरिक्त कुम्भस्वामी और आदि वराह के जो दोनों ही विष्णु मंदिर हैं, बनवाए। उसके इष्टदेव एकलिंगजी होने पर भी वह विष्णु का परम भक्त था। उसकी प्रजा ने भी उसके समय में कई जैन, शिव और विष्णु आदि के मंदिर बनाए। वह सब मतों को समदृष्टि से देखता था[2]।

धार्मिक सहिष्णुता-निष्कर्ष —विभिन्न मत-मतान्तरों के अनुयायी भी एक दूसरे के इष्ट देव और पूजा-पद्धति के प्रति आदर भावना रखते थे। इस सम्बन्ध में मेवाड के धूलेव कस्बे के केसरियानाथजी का उदाहरण अनुपम है, जहाँ सभी धर्ममतानुयायी स्नान कर समान रूप से मूर्ति का पूजन करते हैं[3]। इसी प्रकार डीडवाणा तहसील से प्राप्त ९-१०वीं शताब्दी की योगनारायण मूर्ति द्वारा एक नूतन भाव व्यक्त किया गया है जिसमें धार्मिक सहिष्णुता और समन्वय भावना का पता चलता है[4]। हिंगुलाज की यात्रा और उसकी कामना शक्ति उपासक तो करते ही हैं, नाथपंथी योगी भी उसी भाव से करते हैं[5]। इन हिन्दू देवी देवताओं के मंदिरों, मूर्तियों और शिलालेखों आदि का उल्लेख यह तो सिद्ध करता है कि राजस्थान में उस समय में उनकी पूजा प्रचलित थी, एक शब्द में स्मार्तमत प्रचलित था किन्तु देवता-विशेष की विशिष्ट पूजा उपासना पद्धति तथा दर्शन और धर्म के स्वरूप का इनसे पता नहीं चलता।

(५) जैन धर्म—जैन धर्म के दो मुख्य भेद हैं—दिगम्बर और श्वेताम्बर। विद्वानों ने लक्ष्य किया है कि इनकी बाह्य क्रियाओं में तो कुछ भेद है किन्तु तात्त्विक भेद नहीं है[6]। राजस्थान के नरेशों ने जैन धर्म को प्रश्रय दिया था। इसका उत्कर्ष यहाँ चित्तौड के हरिभद्र सूरि (सं० ८२७) द्वारा विशेष रूप से हुआ। उद्योतन सूरि और सिद्धान्त सूरि इनके शिष्य थे। प्रसिद्ध है कि उद्योतन सूरि ने किसी समय अपने पास में रहे हुए ८४ शिष्यों को एक ही समय में आचार्य-पद दे दिया। उन ८४ आचार्यों से ८४ गच्छों की स्थापना हुई। इनमें से किसी न किसी गच्छ के आचार्य को प्रत्येक जैन अपना कुलगुरु मानता है। गुजरात और

१–राजस्थान भारती, बीकानेर, भाग ४, अंक ४, "राजस्थान में विष्णु पूजा" निबन्ध।
२–ओझा उदयपुर राज्य का इतिहास, खण्ड १, पृष्ठ ३५५,
खण्ड २ पृष्ठ ६२१–२२, ६३६।
३–वही, खण्ड १, पृष्ठ ३४४–४५।
४–राजस्थान भारती, वर्ष ४, अंक ४ तथा राजस्थानी लोक संस्कृति की रूपरेखा, पृष्ठ २०-२१, विसाऊ, सन १९५९।
५–जी० एस० घुरये इंडियन साधुज, पृष्ठ १३६, बम्बई, सन १९६४।
६–डा० उमेश मिश्र भारतीय दर्शन, पृष्ठ १०२–१०४, लखनऊ, सन् १९५७।

पश्चिमी भारत में तपागच्छ और राजस्थान में खरतर गच्छ के साधुओं का विशेष प्रचार रहा। अणहिलपुर पत्तन में चत्यवासियों के साथ संवत् १०८० में शास्त्रार्थ में जिनेश्वर सूरि के विजयी होने पर उनका सम्प्रदाय खरतर गच्छ नाम से प्रसिद्ध हुआ। उनके पश्चात् इस गच्छ में अनेक आचार्य हुए। जाम्भोजी के समय में सं० १५८२ में इस आचार्य परम्परा में जिन माणिक्य सूरि (सं० १५४९-१६१९) पट्ट पर स्थापित हुए थे। उस समय इस गच्छ के साधुओं में शिथिलाचार बढ़ गया था[1]। राजपूत राजाओं द्वारा जैन मत को प्रोत्साहन देने के अनेक उल्लेख मिलते हैं[2]। विद्वानों ने लक्ष्य किया है कि ब्राह्मण धर्म तथा संस्कृति के क्षेत्रों में जैन धर्म पर ब्राह्मण मत का प्रभाव स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होने लगा था[3]।

ध्यातव्य है कि विक्रम की १४ वीं शताब्दी से जैन धर्म केवल वंश परम्परागत ही रह गया था और उसमें निश्चित रूप से वैश्य जाति की प्रधानता थी[4]। वैश्यों में भी यह ओसवालों और कुछ अग्रवालों तक ही सीमित रहा। यद्यपि राजस्थान में जैन धर्म को फलने फूलने का पर्याप्त अवसर मिला तथापि उसका क्षेत्र अत्यन्त सीमित प्रधानतः ओसवाल और व्यापारी वर्ग में ही रहा। लोक व्यापी धरातल पर वह कभी नहीं उतरा। जैन कवि लोक प्रचलित कथा कहानियों और देशी रागों को अपने रंग में रंग कर जैन दृष्टिकोण के अनुसार जैन समाज के समक्ष रखते रहे। कतिपय अपवादों की बात दूसरी है। जाम्भोजी ने प्रसंग वश उस समय में प्रचलित अनेक मत मतान्तरों का उल्लेख-संकेत किया है, किन्तु स्पष्ट रूप से जैन धर्म का नहीं। इससे इस धर्म की सीमित मान्यता और प्रचलन का भी पता चलता है। सत्रहवीं शताब्दी में स्वामी हरिदास निरंजनी ने जैन धर्म की कटु आलोचना की थी[5]।

(६) मुसलमान धर्म—जाम्भोजी के समय में मुसलमानों के दो केन्द्र थे—अजमेर और नागौर, जिनका उल्लेख अन्यत्र कर आए हैं। इनके सूबेदारों-क्रमशः मल्लूखां और मुहम्मद खां नागौरी से जाम्भोजी के सम्पर्क-सम्बन्ध की चर्चा 'जीवन-वृत्त' के प्रसंग में हो चुकी है। इन केन्द्रों को छोड़कर राजस्थान में संवत् १६१५ (सन् १५५८) तक अन्यत्र न तो मुसलमानों की बस्ती ही थी और न ही उनके साथ विशेष सम्पर्क ही होता था। राजस्थान या उसके पड़ोस के मुसलमानों की संस्कृति में ऐसा कोई बल या नूतनता नहीं रह गये थे कि उनसे तत्कालीन राजस्थानी संस्कृति पर कोई उल्लेखनीय प्रभाव पड़ सकता[6]। दर्शन के क्षेत्र में इस्लाम की स्वतंत्र सत्ता नहीं ठहर सकती। इस्लाम में दर्शन का जो कुछ थोड़ा

१-(क) नाहटा बन्धु : युगप्रधान श्री जिनचन्द्र सूरि, पृष्ठ १-१८, तथा प्रस्तावना—पृष्ठ ७० कलकत्ता।
(ख) डा० दशरथ शर्मा : अर्ली चौहान डाइनस्टीज पृष्ठ २२१-२२६।

२-श्रीमद् राजेन्द्र सूरि स्मारक ग्रंथ, खुडाला (मारवाड़), संवत् २०१३, पृष्ठ ५४५ से ५६३, डा० वासुदेव उपाध्याय और श्री कलाशचन्द जैन के निबंध।

३-वही, पृष्ठ ५४७, डा० वासुदेव उपाध्याय, -राजपूताना में जैन धर्म।

४-डा० दशरथ शर्मा : अर्ली चौहान डाइनस्टीज पृष्ठ २२८।

५-श्री महाराज हरिदासजी की वाणी, सबद परीक्षा जोग ग्रंथ भरम विधूंसण को अंग आदि।

६-डा० रघुवीरसिंह : पूर्व आधुनिक राजस्थान पृष्ठ १९-२०, ३७ उदयपुर सन् १९५१।

बहुत प्रचार हुआ, उसका अधिकाश श्रेय सूफियो को ही है[1]। दूसरी ओर मुसलमानो के अजमेर और नागोर पर अधिकार होने के बाद से प्राचीन मदिरादि नष्ट किए जाने लगे[2]। उनका जीवन-दृष्टि, पद्धति, मान-मूल्य, आदर्श और साधन राजपूत सस्कृति से नितात भिन्न थे। मुसलिम विजेताओ ने लूट मार तथा युद्धो द्वारा देश को उजाडा और मन्दिरो तथा राजकोषो से अपार धन लूटा। इस धन को उन्होंने बडी बडी सेनाएँ एकत्र करने और अपनी राजधानियो मे भोग विलास मय जीवन बिताने मे व्यय किया। वे अवस्था अथवा लिंग का भी कोई ध्यान न रखते और पुरुषो, स्त्रियो तथा बच्चो का समान रूप से सहार करते, उन्हे दास बनाते और इसलाम अगीकार करने पर बाध्य करते थे[3]। इसलाम वास्तव मे शासन चाहता है, हृदय का अनुशासन नही[4]। उनकी युद्ध नीति भी राजपूतो के आदर्शों से भिन्न थी। ऐसी दशा मे यहा उनका विरोध होना स्वाभाविक था। वे यहा की कमजोरिया से लाभ उठा कर लूटमार और साम्राज्य स्थापित करने मे भी सफल हो जाते थे। मुहम्मद गोरी को भारत मे लाने वाले व्यक्तियो मे चिश्ती सम्प्रदाय के ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती का अभिशाप भी था जिन्होंने उससे पहले राजस्थान मे भ्रमण किया था और उसकी राजधानी अजमेर मे अपना अड्डा भी जमा लिया था। कहना न होगा कि सूफियो के शाप का अर्थ उस समय इसलाम का आक्रमण ही होता था[5]। भारत मे चार सूफी सम्प्रदाय विशेष प्रसिद्ध रहे चिश्तिया, कादिरिया, सुहरवर्दिया और नक्शबदिया[6]। इनमे चिश्ती सम्प्रदाय का स्थान विशेष महत्त्व का है। सूफी मत के अध्येताओ का निष्कर्ष है कि भारत मे इस मत का स्थूल स्थापन १२ वी शताब्दी से हुआ और मुगल शासन काल मे इसका अत्यधिक प्रचार, प्रसार हुआ। इसका पूर्ण उत्थान मुगल शासन काल मे ही हुआ[7]। इस प्रकार, जाम्भोजी के समय तक राजस्थान मे यद्यपि मुसलमानो के दो केन्द्र थे और चिश्तिया सम्प्रदाय स्थापित भी हो चुका था, तथापि न तो मुसलमानो का और न ही सूफियो का कुछ भी प्रभाव यहा पडा। उलटे, भारत मे मुसलमानों के अधिकार के कुछ दिनो बाद से ही हिंदू आचार-विचार, धार्मिक साधना आदि का प्रभाव मुसलमानो पर पडने लगा[8]। यहा के वातावरण का सूफी कवियो पर ऐसा प्रभाव पडा कि भावो के मिश्रण के साथ उन्होंने

१-चन्द्रबली पाण्डे तसव्वुफ अथवा सूफीमत, पृष्ठ २१४-१५ बनारस, सन १९४८।
२-ओझा जोधपुर राज्य का इतिहास, खण्ड १, पृष्ठ ४१।
३-एस० आर० शर्मा भारत मे मुस्लिम शासन का इतिहास, पृष्ठ १९९, आगरा, सन १९६१।
४-चन्द्रबली पाण्डे तसव्वुफ अथवा सूफीमत, पृष्ठ ८१।
५-चन्द्रबली पाण्डे तसव्वुफ अथवा सूफीमत, पृष्ठ २०९।
६-(क) रामपूजन तिवारी सूफीमत साधना और साहित्य, पृष्ठ ४३९, ४४३, बनारस, स० २०१३।
(ख) जोन ए० सुभान सूफीज्म इटस सेन्टस एण्ड श्राइन्स, पृष्ठ १९३-२०८, लखनऊ, सन १९३८।
७-डा० विमलकुमार जैन सूफी मत और हिन्दी साहित्य, पृष्ठ ८७-८८, दिल्ली, सन १९५५।
८-रामपूजन तिवारी सूफीमत साधना और साहित्य, पृष्ठ ४३३।

भाषा को भी अपनाया[1]।

जाम्भोजी के समय में यहां मुसलमानों में सर्वत्र पाखण्ड और आडम्बर का प्रचलन और अत्याचारों का बोलबाला था। कुरान के आदर्शों को भी उन्होंने स्वेच्छा और स्वार्थ के अनुसार समझा और कार्य रूप में परिणत किया। धर्म के सामान्य लक्षणों में विभेद समझ कर ही जाम्भोजी ने मुसलमानों को फटकारा था।

(७) नाथ सम्प्रदाय विष्णोई साहित्य के आधार पर निष्कर्ष-जाम्भोजी के समय तक हिन्दू धर्म के पश्चात् राजस्थान में नाथ सम्प्रदाय विशेष प्रचलित था। जाम्भोजी के जीवन प्रसंग में लोहापांगल, लक्ष्मणनाथ तथा अन्य नाथ जोगियों का उल्लेख किया गया है। सबदवाणी के २१ सबद तो नाथों के प्रति ही कहे गए हैं। जाम्भाणी साहित्य और विशेषत केसोजी और सुरजनजी की रचनाओं से नाथों के सम्बन्ध में निम्नलिखित बातों का पता चलता है—

१-नाथ जोगी गोदावरी तट पर 'जात' के लिए एकत्र होते थे जहां उनसे सबंधित अनेक मामलों और प्रश्नों का निपटारा होता था। ऐसे ही एक अवसर पर लोहापांगल ने जाम्भोजी को परास्त करने का बीड़ा लिया था, क्योंकि राजस्थान में नाथों की प्रतिद्वन्द्विता में विष्णोई सम्प्रदाय विशेष रूप से फल रहा था। उसके साथ अनेक जोगी भी यहां आये थे।

२-वहां पर अनेक प्रकार के जोगी एकत्र हुए थे। उनकी साधना-पद्धति, क्रिया-कलाप और वेशभूषा में भी अन्तर था।

३-सामान्यत वे और विशेषत राजस्थान के नाथ कनफटे जोगी थे। कई मोनी भी थे।

४-गृहस्थ और विशेषत नारी के प्रति उनकी घृणा भावना थी। राजस्थान में नाथ सम्प्रदाय के प्रचार-प्रसार को समझने के लिए ये संकेत महत्त्वपूर्ण हैं।

दक्षिणकुण्डी पात्रदेवयात्रा-ख्यातव्य है कि पूर्ण कुम्भ के महापर्व पर अवधूत योगी भेष बारह पंथ की प्रति द्वादशवर्षीय पात्रदेव यात्रा गोदावरी तट पर त्र्यम्बक योगी मठ से आरम्भ होकर कद्री पहुंचती है। कद्री मठ की यह मर्यादा युग-युग से प्रति बारह वर्ष के कुंभ मेले में त्र्यम्बक में सुव्यवस्थित होकर चली आ रही है। इसमें १२-१८ के अवधूत योगी भाग लेते हैं। १२-१८ के शिव-गोरक्ष योगियों में यह यात्रा पात्रयात्रा पत्र यात्रा, दक्षिणकुण्डी या कजलीकुण्डी नाम से प्रसिद्ध है[2]।

पंथ-संख्या अनुश्रुतियां-नाथ पंथ के योगी १२ शाखाओं में विभक्त हैं जिनको बारह पंथ कहने की प्रथा है। इनके संबंध में कई अनुश्रुतियां प्रचलित हैं—

१-स्वयं गोरखनाथ ने परस्पर विच्छिन्न नाथ पंथियों का संगठन करके उन्हें बारह शाखाओं में विभक्त कर दिया था[3]।

२ शिव और गोरख दोनों ने ही १२-१२ पंथ चलाए थे। गोरख ने ६ अपने और

१-डा० विमलकुमार जैन सूफीमत और हिन्दी साहित्य, पृष्ठ ९०।
२-राजा चमेलीनाथ योगी श्रीपात्रदेव कदली यात्रा, पृष्ठ २१, १२, काशी, सं० २०१३।
३-डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी नाथ सम्प्रदाय, पृष्ठ १०।

६ शिव के पथा को तोड कर वतमान की बारह पथी शाखा की स्थापना की[१]।

३-शिव के १८ और गोरख के १२ पथ थे। पहले के १२ और दूसरे के ६ पथो को तोड कर गोरख ने आधुनिक बारह पथी शाखा रखी[२]।

४-१८ पथ शिव के और १२ पथ गोरख के थे। कालान्तर मे १८ के योगी अन्तर्हित हो गए और १२ के ६ पथी योगियो ने उन १८ का स्थान ग्रहण किया। इस प्रकार गोरख क १२ पथ के ६ शाखा वाले योगी ही शिव के १८ पथी कहे जान लगे[३]। इस प्रकार योगियो की ३० शाखाएँ थी, जिसका प्रमाण दक्षिणकुण्डी योगी-प्रणाली म पाया जाता है।

बारह पथ नो नाथ-विष्णोई साहित्य के विशेष सदभ म तथा अन्य उल्लेखो के आधार पर अन्तिम अनुश्रुति अपेक्षाकृत अधिक सगत जान पडती है। इन १२ पथो का विवरण इस प्रकार है[४] —

	नाम	मूल पुरुष	स्थान
१	सत्यनाथी	ब्रह्मा	भुवनेश्वर
२	रामनाथी	विष्णु	गोरखपुर
३	पाक्लनाथी	ईश्वर	रोहितासगढ
४	पावपथी	जालन्धर	जालौर
५	धमनाथी	धमराज	सिरमाथा
६	मन्नाथी	महाराज रमालू	टाइया
७	कपिलानी (कपिलपथी)	कपिल	गोरखबसी
८	गगानाथी	कपिल	गगासागर
९	नटेश्वरी	लक्ष्मण	गोरखटिल्ला
१०	आईपथी	विमला	विमलादेवी
११	वराग्यपथी	भतृहरि	रातादुडा
१२	रावलपथी	हम्मीरदेव (गला रावल)	बादरवाडा

अन्यत्र भी १२ पथो की यही सूची दी गई है[५]। इनमे से प्रथम ६ शिव योगी अर्थात् १८ के और शेष ६ गोरखयोगी अर्थात् १२ के कहे जाते हैं। इनके अतिरिक्त कन्थड, धन, गोपाल, दर्या, इत्यादि पथ के नाथयोगी मिलते हैं किन्तु दक्षिणकुण्डी मे गणना उपर्युक्त १२ पथो की ही होती है। १२ पथो की सूची भिन्न भिन्न रूपो मे मिलती है[६], जिनक।

१-डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी नाथ सम्प्रदाय, पृष्ठ १२।
२-जाज वस्टन ब्रिग्स गोरखनाथ एण्ड दि कनफटा योगीज, पृष्ठ ६३, कलकत्ता, सन १९३८।
३-राजा चमेलीनाथ योगी श्रीपात्रदेव कदली यात्रा, पृष्ठ २२।
४-वही, पृष्ठ २३-२४।
५-पजाब डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, वाल्यूम यड ए, रोहतक डिस्ट्रिक्ट, पृष्ठ ६४, सन १९१०।
६-विश्वभारती पत्रिका, शान्तिनिकेतन, अक्टूबर-दिसम्बर, १९६६, श्री परशुराम चतुर्वेदी का "नाथयोगी सम्प्रदाय के द्वादश पथ" निबन्ध।

एक प्रमुख कारण तो उल्लिखित सूची से पृथक १२-१८ की कही हुई शाखाओं की गणना करना है और दूसरा, इन पंथों के लिए पर्यायवाची नामों का प्रचलित हो जाना है। माई, गुप्तमाई, मुण्डाई एक ही पंथ के नाम हैं। लक्ष्मणनाथ, नाटेश्वरी, टिल्ला के, हेतपंथ, गरिबनाथी भी बालनाथ टिल्ला के नाथों के पर्याय हैं। उल्लिखित सूची अपेक्षाकृत अधिक प्रामाणिक प्रतीत होती है जिसकी पुष्टि कदलीवनकुण्डी के मर्यादा महोत्सव में पद, प्रधान सदस्यगणों आदि के निर्वाचन से भी होती है। इसमें प्रत्येक पद तथा पात्रदेव के लिये यह पूर्व परम्परा नियत है कि वह उक्त १२ शाखाओं में से किस शाखा का होना या हो सकता है। इसका कुछ विवरण इस प्रकार है[1] —

	पद	शाखा
१	कदली मठ के पात्रदेव और राजा	गंगानाथी, वैराग्यपंथी, नटेश्वरी, कपिलपंथी
२	त्र्यम्बक योगी मठ के पात्रदेव और पीर	सत्यनाथी
३	सोनहरी भैरव पीठ के पात्रदेव	नटेश्वरी, कपिलानी, गंगानाथी, वैराग्यपंथी
४	पात्रदेव के महन्त	आई पंथ[2]
५	बारह पंथ का कारबारी	धर्मनाथी
६	कोठारी और दो पंच	सत्यनाथी
७	भंडारी	वैराग्यपंथी
८	पात्रदेव का पुजारी	नटेश्वरी
९	रोट का भंडारी	रामपंथी

इनके अतिरिक्त १२-१८ के ६-६ पंच एक-एक रमतों के महन्त, १२ पंथों के १२ भंडारी और १ औघड़ का महन्त निर्वाचित होता है।

नाथ ९ प्रसिद्ध हैं, पर इसकी भी कोई सर्वसम्मत परम्परा बची नहीं है। इनकी विभिन्न सूचियों में अन्तर है[3]

राजस्थान में नाथ पंथ

(क) बालनाथ कपिलानी पंथ-दक्षिणकुण्डी के यात्रा-विवरण के साथ राजस्थान में प्रचलित परम्परा और पुराने उल्लेखों के आधार पर हम कतिपय पंथों और नाथों का विशेष प्रभाव यहाँ लक्ष्य कर सकते हैं। इस यात्रा में त्र्यम्बक समेत ७३ मुकाम पड़ते हैं जो समयानुकूल घटते-बढ़ते भी रहते हैं। इनमें वालेबाडी मठ बालनाथ का है जिसमें उनका

१-राजा चमेलीनाथ योगी : श्रीपात्रदेव कदली यात्रा, पृष्ठ ५१-५२।

२-सदानाथ योगी : गोरक्ष विकास, पृष्ठ १२८, ९०, जालंधर, जून, १९३५।

३-द्रष्टव्य-(क) डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी : नाथ सम्प्रदाय, पृष्ठ २४-३७।

(ख) डा० शशिभूषण दासगुप्त : ऑब्स्क्योर रिलिजियस कल्टस, पृष्ठ २०६-२०९।

(ग) डा० कल्याणी मल्लिक : नाथ सम्प्रदायेर इतिहास, दर्शन ओ साधन प्रणाली, परिच्छेद ३-७, कलकत्ता, सन १९५० तथा सिद्धसिद्धान्त पद्धति आदि-इन्ट्रोडक्शन।

और वाल भरवनाथ का मदिर है। यहा का मठाधीश कपिलानी पथ का योगी होता है। ये बालनाथ प्रसिद्ध सिद्ध योगी थे और मारवाड के पोकरण मे १६ वी शताब्दी के प्रारम्भिक वर्षों म रहे थे। पच पीग म दो–रामदेवजी तँवर और हडबूजी साँखला इन्ही के शिष्य थे। पोकरण के ठाकुर राठौड खीवा की ठकुराणी ईदी भी बालनाथ की परम भक्त थी[1]।

(ख) हाडीभड ग पावपथी, सत्यनाथी–भुण्डी की पात्रदेव सवारी सिद्ध हाडीभड ग-नाथ मठ म भी पधारती है। प्राचीन परम्परानुसार यहा का मठाधिपति पावपथ का योगी होता है किन्तु सत्यनाथपथ के योगी को पीठाधिष्ठ करते हैं। हाडीभड ग नियानुरूप नाम है, गुरुप्रदत्त नाम मृतकनाथ बताया जाता है। प्रसिद्ध है कि ये बलख–बुखारा के सुलतान थे। गोरखनाथ–प्राप्ति हेतु इन्होने तप करते हुए देह त्याग दी। ज्ञात होने पर गोरख ने पुनर्जीवित करके योग–दीक्षा दी तथा मृतकनाथ नाम रख कर एक मनोवाछित फलप्रद हाँडी दी। वह हाडा इस स्थान मे फूट गई। हाडीभड ग राजस्थान मे भी बहुत वर्षों तक घूमते रहे थे। राजस्थानी साहित्य मे इनका अनेक जगह उल्लेख मिलता है। विष्णोई कवियो म इन पर लिखा अल्लूजी कविया का डिगल गीत और नानिगदास की नीसाणी बहुत प्रसिद्ध है (कवि स० ३८ ३६)।

(ग) घूघलीमल, गरीबनाथ सत्यनाथी नाथो में प्रसिद्ध है कि पहले पहवा मठ (कुरुक्षेत्र) पर १२–१८ के योगियो का सम्मेलन और पात्र स्थापना विधि होती थी। यह सत्यनाथ ब्रह्मा का स्थान माना जाता है। इसके महन्त सत्यनाथी पथ के योगी होते थे। कालान्तर मे इस मठ की लुप्त ख्याति को गरीबनाथ ने पुन प्रकट किया। पुष्कर भी ब्रह्मा का स्थान है और वहा भी पात्रदेव की पूजा होती थी[2]। ये गरीबनाथ घूँधलीमल के शिष्य थे और समवत सत्यनाथी शाखा के थे। घूँधलीमल का आश्रम धीणोद मे था और गरीबनाथ का लाखडी म। गरीबनाथ घूँधलीमल के शिष्य थे। उस समय लाखडी का राजा घोघाकरण था। गरीबनाथ के शाप से घोघाग्रा का नाश हुआ और घूँधलीमल के आशीर्वाद स जाडेचा भीम लाखडी का राजा हुआ। प्रभासपाटन के शिलालेख स इनका समय सवत १४४२ ठहरता है[3]।

(घ) जालधरनाथ पावपथी–पावपथ के प्रवत्तक जालधरनाथ का भी राजस्थानी साहित्य म नामोल्लेख मिलता है। जालौर के किले मे जालधरनाथ का मदिर था[4]। वीर-मायण म गोगादेव को जालधरनाथ के दर्शन और वरदान–प्राप्ति का वर्णन मिलता है[5]। अन्यत्र गोरख द्वारा उसकी जघाएँ जोडे जाने का उल्लेख है[6]। जालधरपाद का पूरा का

१–मुहणोत नणसी की ख्यात, द्वितीय खण्ड, पृष्ठ १३७,१४०।
२–राजा चमेलीनाथ योगी श्री पात्रदेव कदली यात्रा, पृष्ठ १२४–१२५।
३–(क) डा० पीताम्बरदत्त बडथ्वाल योग–प्रवाह, पृष्ठ ७३–७४।
(ग) मुहणोत नणसी की ख्यात, द्वितीय खण्ड, पृष्ठ २१५–१७।
४–श्यामलदास वीरविनोद, पृष्ठ ८६०।
५–डा० हीरालाल माहेश्वरी राजस्थानी भाषा और साहित्य, पृष्ठ ७४ ८३, सन् १९६०।
६–मुहणोत नणसी की ख्यात, द्वितीय खण्ड, पृष्ठ ६६।

पूरा सम्प्रदाय बौद्ध बतलाया गया था[1]। राजस्थानी साहित्य में जो कदाचित्-कदाचित् बौद्ध-परम्पराओं का क्षीण सा आभास मिल जाता है, उसका कारण जालंधर और उनके सम्प्रदाय का अवशिष्ट प्रभाव है। (विशेष द्रष्टव्य-गुरजाजी, कवि संख्या ६६)।

(ङ) हम्मीरदेव रावलपंथी-इन्होंने संवत् १३८३ के आसपास चित्तौड़ को हस्तगत कर सारे मेवाड़ पर अपना प्रभुत्व जमाया और गुहिलवंश की सीसोदिया शाखा का राज्य स्थापित किया। लकुलीश मतानुयायी होने के कारण इनका पद रावल कहलाया[2]।

(च) गोपीचंद, भरथरी, चपट, बालगुदाई, लक्ष्मणनाथ, पृथ्वीनाथ पावपंथी, दरियापंथी-गोरख की भांति गोपीचंद और भरथरी बहुत अतिपरिचित नाम हैं। गोपीचंद जालंधर (हाडिपा) के शिष्य बताये जाते हैं[3] किन्तु बिश्नोई कवियों ने इन दोनों को ही गोरख का शिष्य माना है। सबदवाणी के प्रसंग में दोनों का साथ-साथ रहना वर्णित है। चपटनाथ को रज्जबजी ने चारणी के गर्भ से उत्पन्न होना बताया है। यदि यह सत्य हो तो चपटनाथ राजस्थान ही के निवासी सिद्ध होते हैं। ये बाह्य वेश के विरोधी थे और इन्होंने सम्प्रदाय में रहकर भी उसकी बाह्य प्रक्रियाओं को नहीं माना था। विद्वानों ने बाल गुदाई और लक्ष्मणनाथ को एक माना है[4] जो ठीक नहीं प्रतीत होता। सबदवाणी से वे पृथक् पृथक् व्यक्ति जान पड़ते हैं। सम्भावना यह है कि ये एक ही पंथ के दो व्यक्ति थे। सुप्रसिद्ध नाथ योगी पृथ्वीनाथ कुछ वर्षों तक जाम्भोजी के समकालीन थे। उन्होंने प्रकारान्तर से जाम्भोजी का उल्लेख भी किया है[5]।

(छ) गोरखनाथ-नाथों में गोरखनाथ का व्यक्तित्व सर्वाधिक प्रभावक है। स्वयं जाम्भोजी ने उनको श्रद्धापूर्वक स्मरण किया है। अनेक प्रसिद्ध सिद्ध-संतों ने उनको अपना भावगुरु माना है। विद्वानों का विचार है कि यद्यपि नाथ मत गोरखनाथ के पूर्व भी था, तथापि उसको एक व्यवस्थित और संगठित रूप देने का कार्य गोरखनाथ ने ही सर्व प्रथम किया और बाद का विकास प्राय: उन्हीं की खींची हुई रेखाओं पर होता रहा। गोरखनाथ की दृष्टि योग और कायसिद्धि पर थी[6]।

कई पंथों की गणना उल्लिखित १२ सम्प्रदायों में नहीं की गई है। इसका प्रमुख मठ मारवाड़ के सोजत परगने में है। इस मठ के पीठाधिपति को सोना नरेश का पद प्राप्त है।

१-डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी नाथ सिद्धों की बानियाँ, भूमिका, पृष्ठ १८, संवत २०१४।

२-ओझा उदयपुर राज्य का इतिहास, प्रथम खण्ड पृष्ठ ५०५-५०६ और टिप्पणी, द्वितीय खण्ड पृष्ठ ५४५-५५ वीरविनोद, भाग १, पृष्ठ २९०-३००।

३-डा० शशिभूषण दासगुप्त ओब्स्क्योर रिलिजियस् कल्टस् पृष्ठ २१२-२१६, सन् १९६२।

४-डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी नाथ सिद्धों की बानियाँ, पृष्ठ २३।

५-डा० हीरालाल माहेश्वरी पृथ्वीनाथ और उनकी रचनाएँ शीर्षक निबन्ध, (द्रष्टव्य-अध्याय २ (२), सदर्भ-८२)।

६-डा० नागेन्द्रनाथ उपाध्याय नाथ और संत साहित्य, पृष्ठ ५७,८७, सन १९६५।

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि विक्रम की १६ वीं शताब्दी में राजस्थान में नाथों के द्वादश पंथों में से पाँच (क्रम संख्या १, ४, ७, ११ और १२) का यहाँ विशेष प्रचलन रहा तथा प्रसिद्ध नौ नाथों में ५ नाथों (गोरख, जालन्धर, गोपीचंद, भरथरी, चर्पट) का। शैव सम्प्रदाय की लकुलीश शाखा भी कालान्तर में कनफटे नाथों के अन्तर्भुक्त हो गई थी। इस कारण नाथपंथ और भी अधिक व्यापक दिखाई देन लगा।

इनके अतिरिक्त राजस्थान में नाथों से संबंधित अनेक उल्लेख मिलते हैं। आरम्भ में हरिनाथ राजा पृथ्वीराज (संवत् १५५६-१५८४ आमेर, जयपुर) के गुरु कनफटा योगी थे[1]। बूँदी से १६ मील पूर्व खटखड की पहाड़ी पर राव शत्रुशाल हाड़ा (संवत् १६८८-१७१५) ने धूंधला जोगी का (जो गोरख के शिष्य कहे जाते हैं) मंदिर बनवाया था। मंदिर में धूंधला की मूर्ति है और उस पर विक्रम संवत् १७०३ अगहन शुक्ला ३ का लेख उत्कीर्ण है[2]। राव जोधा ने विक्रम संवत् १५१६ में चिड़िया टूंक स्थान पर जोधपुर का किला बनवाया था। यह स्थान योगी चिड़ियानाथ के रहने का था[3] जो राव जोधा से यहाँ आकर रहने लगा था। यहाँ से उठाये जाने पर वह पालासनी चला गया वहाँ उसकी समाधि बनी हुई है[4]। नोहर (श्रीगंगानगर) से एक मील उत्तर में गोरख टीला है। प्रसिद्ध है कि यहाँ पहले सिद्ध गोरख रहे थे[5]। अरावली में लखमीनाथ जोगी ने तप किया था। उनकी कृपा से सिद्धराज जन्मे थे[6]। राव सलखा के पुत्र रावल मल्लीनाथ, जोगी रतननाथ के आशीर्वाद से हुए थे[7]। रावल जोगियों की चर्चा पहले कर आए हैं।

इस प्रकार, जाम्भोजी के समय में राजस्थान में नाथपंथी जोगियों का काफी विस्तार था। उनमें अनेक आडम्बर आ गए थे। जाम्भोजी ने अनेक सबदों में उनके विभिन्न आडम्बरों की भर्त्सना की है। सबदवाणी में घोड़ाचोली, बालगुदाई और लक्ष्मणनाथ का उल्लेख है। इनमें प्रथम दो तो जाम्भोजी से पूर्व हो चुके थे, लक्ष्मणनाथ उनके समकालीन थे।

यह विष्णोई कवियों द्वारा कथित यहाँ के चार प्रमुख 'धर्मों' का संक्षिप्त परिचय है। इनके अतिरिक्त लोक में व्यापक रूप में पाषंडपूजा (कल्ट वर्शिप) प्रचलित थी।

(८) पाषंड पूजा (कल्ट वर्शिप)

पाखण्ड पूजा किसी भी धार्मिक सम्प्रदाय से नितान्त भिन्न है। धार्मिक सम्प्रदाय में सिद्धान्त, साधना और व्यवहार–तीनों पक्षों का होना अनिवार्य है, जबकि इस पूजा के पीछे ऐसा न होकर पूज्य इष्ट की चमत्कार शक्ति और केवल उससे प्राप्त सम्भाव्य लौकिक लाभ की कामना ही रहती है। सबदवाणी और विष्णोई साहित्य में अनेक स्थलों पर

१–श्यामलदास वीरविनोद, पृष्ठ १२८३।
२–गहलोत राजपूताने का इतिहास, द्वितीय भाग बूंदी राज्य, पृष्ठ २८६६।
३–आसोपा मारवाड़ का संक्षिप्त इतिहास, पृष्ठ १८२–१८३।
४–नाहिया राजस्थान की जातियां, पृष्ठ १०३।
५–(क) मुंशी सोहनलाल तवारीख राज श्री बीकानेर, पृष्ठ ३६, संवत् १९४७।
(ख) ओझा बीकानेर राज्य का इतिहास, प्रथम खण्ड, पृष्ठ ६४।
६–बांकीदास री ख्यात, पृष्ठ १३३।
७–मुंहणोत नैणसी की ख्यात, द्वितीय खण्ड, पृष्ठ ६७, काशी।

इसका बड़ा अच्छा स्पष्टीकरण किया गया है।

वर्तमान में प्रसिद्ध पाँच पीर, सुप्रसिद्ध राजपूत वीर ही थे। इनमें से रामदेवजी तँवर, और हड़बूजी साँखला तो समय विशेष के लिये जाम्भोजी के समकालीन थे। शेष तीन गोगाजी चौहान, मेहोजी मांगलिया और पाबूजी राठौड़ उनसे पूर्व हो चुके थे। साहबरामजी की रचनाओं के अतिरिक्त जाम्भाणी साहित्य में इनका नामोल्लेख नहीं मिलता, जिसका कारण स्पष्ट है किन्तु ध्वनित होता है कि लोक में शनैः शनैः इनकी मान्यता भी फैलने लगी थी। इसकी पुष्टि राजस्थानी की कविताओं, प्राचीन वातों और लोक गीतों से होती है। इनके अतिरिक्त जाम्भोजी से पूर्व तेजोजी जाट और मल्लीनाथजी भी हो चुके थे और जो क्षेत्र-विशेष में सिद्ध-पुरुष माने जाकर लोक-पूज्य होने लगे थे। इनका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है —

✓ १-गोगोजी-ये ददरवा (नोहर) के निवासी, चौहान जाति के राजपूत और महमूद गजनवी (११ वीं शताब्दी) के समकालीन थे[1]। ये असाधारण वीर, गाय-रक्षक और साँपों के सिद्ध देवता के रूप में प्रसिद्ध हैं। नोहर के पास गोगामेड़ी इनका मुख्य स्थान है, जहाँ प्रति वर्ष भादवा बदि ९ को मेला लगता है। मुहणोत नैणसी की ख्यात और राजस्थानी वातों में गोगोजी और पाबूजी राठौड़ को समकालीन बताया गया है जो परवर्ती कल्पना ही है[2]। इनके अनुसार, पाबूजी के बड़े भाई बूड़ोजी की लड़की केलमदे से गोगोजी का विवाह हुआ था किन्तु राठौड़ों के वंशवृक्ष से यह कथन गलत साबित होता है। राजस्थानी में लोक-गीतों के अतिरिक्त मेहोजी, आसोजी बारहट आदि पुराने कवियों ने भी गोगाजी पर रचनाएँ की हैं[3]। गोगोजी पर डा० सत्येन्द्र द्वारा किया गया कार्य विशेष महत्त्वपूर्ण है जिसमें तद्विषयक पूर्ववर्ती कार्यों का उल्लेख भी है[4]।

२-तेजोजी-ये नागौर के गाँव खिड़वाल के धोल्या जाति के जाट ताहरजी के पुत्र थे। उस समय नाग जाति के लोगों से इनके गोत्र के लोगों का झगड़ा था। इनका ससुराल पनेर (जयपुर) में बनास नदी के किनारे वहीं पर था। ससुर का नाम बन्नाजी और पत्नी का बोदल था। किसी समय ससुराल में गाएँ छुड़ाते समय ये बहुत घायल हो गये। वापिस आते

१-(क) डा० सत्यकेतु विद्यालंकार अग्रवाल जाति का प्राचीन इतिहास, पृष्ठ २६१-६६, सन् १९३८।
(ख) डा० दशरथ शर्मा अर्ली चौहान डाइनस्टीज, पृष्ठ ३२७-२८।
२-(क) ख्यात द्वितीय खण्ड, पृष्ठ १६७-१८१, काशी।
(ख) राजस्थानी वातां, पृष्ठ १७६-१०५ २०९-२११, सम्पादक-सूर्यकरण पारीक, सन् १९३४।
३-(क) राजस्थानी लोकगीत दूसरा भाग पृष्ठ ५२७-५३२, सम्पादक-रामसिंह, पारीक और स्वामी।
(ख) डा० हीरालाल माहेश्वरी राजस्थानी भाषा और साहित्य, पृष्ठ १०४-१०५ ११४-११५।
४-(क) जाहरपीर गुरु गुग्गा आगरा, सन् १९५६।
(ख) राजस्थान भारती, बीकानेर भाग ९ अंक ३ दिसम्बर १९६६, 'राजस्थान के लोक साहित्य पर कुछ दृष्टियाँ'।

समय बालू नामक एक नाग ने उनका रास्ता घेर लिया जिससे युद्ध करते हुए ये मारे गए। हल इनकी पूजा इनकी जाति और ससुराल मे प्रारम्भ हुई, बाद मे धीरे धीरे समस्त राजस्थान म फल गई और ये नागों के सिद्ध देवता के रूप में माने जाने लगे। जोधपुर के पर्वत र म भागों म इनका सबसे बडा मेला लगता है[1]। अन्यत्र[2] कहा गया है कि ये सवत् २७६ में विद्यमान थे। इनका विवाह किशनगढ़ के रूपनगर मे हुआ था। एक साँप से वचनबद्ध होने के कारण गाएँ छुडाने मे घायल होने पर उससे अपनी जीभ कटवा कर स्वर्गवासी हुए। जाटों म विश्वास है कि तेजोजी की 'तात' बाधने पर साँप काटे का असर नही ता। अनुमान है कि जाम्भोजी के समय कृषक वर्ग मे इस रूप म इनकी मान्यता हो ई होगी।

३-रावल मल्लीनाथ-ये राव सलखाजी के ज्येष्ठ पुत्र और पिता की मृत्यु के बाद पने चाचा राव कान्हडदेव के पास रहने लगे थे[3]। सवत १४३१ म ये महेवा के स्वामी ए। प्रसिद्ध है कि ये सिद्ध जोगी रतननाथ के आशीर्वाद से हुए थे और रावल कहलाए तथा नी ने इनको साक्षात् दर्शन दिया था। लोग इनको सिद्ध-पुरुष मानते थे। तलवाडा म लूणी नदी के तट पर इनका मदिर है, जहा प्रति वर्ष चैत मे मेला भरता है। इनका स्वर्गवास सवत् ४५६ म हुआ था[4]। इनके समकालीन उगमसी भाटी ने देवी-कृपा से एक पथ चलाया । मल्लीनाथ और उनकी स्त्री इसी पथ मे थे[5]। यह कोई शाक्त पथ होना चाहिए सकी पुष्टि अन्यत्र भी होती है[6]। बम्बई प्रेसिडेन्सी गजेटियर (वॉल्यूम ९, पार्ट फर्स्ट) लिखा है कि "उगमसी ने ५०० वर्ष पूर्व बनारस मे बीजपथ या मार्गपथ चलाया था। ये ग एक घोडे की मूर्ति या दीपक की ज्योति की पूजा करते हैं जो रामदेव पीर कहलाता ।" इसमे ऐतिहासिक असगति है, क्योकि रामदेवजी तो रावल मल्लीनाथ के भी बाद मे उत्पन्न हुए थे। इसी प्रकार मल्लीनाथ और रूपादे का हरजी भाटी के माध्यम से रामदेवजी से सम्बन्ध बताया जाता है, वह भी परवर्ती कल्पना मात्र है।

४-**पाबूजी राठौड़**-ये मारवाड के राव आसथानजी के दूसरे पुत्र धाधलजी के छोटे त्र थे। ये बडे वीर और वचन-पालक थे। इनकी बहन पेमाबाई जायल के खीची जीदराव ो ब्याही गई थी। इन्ही जीदराव से देवल चारणी की गाएँ छुडाने म इनके और इनके बडे ाई बूडोजी के प्राण गए। इसका बदला बूडोजी के लडके झरडा ने लिया था[7]। पाबूजी

१-महाराज जघीना जाट इतिहास, पृष्ठ ६२३-६२६।
२-ए राजपूताना गजेटियर, वाल्यूम सकिंड, सन् १८७९
लीजेंड आफ तेजाजी, पृष्ठ ३७।
३-रेउ मारवाड का इतिहास प्रथम भाग पृष्ठ ५३-५४।
४-आसोपा मारवाड का मूल इतिहास पृष्ठ ८३-८४।
५-आसोपा-मारवाड का सक्षिप्त इतिहास, पृष्ठ ८२-८३ पादटिप्पणी।
६-राजस्थान साहित्य उदयपुर वर्ष १ अक ४ मई सन १९५४,
'आदर्श भक्तिनिष्ठ रानी रूपादे' -लेख।
७-(क) रेउ मारवाड का इतिहास, प्रथम भाग, पृष्ठ ४५ पादटिप्पणी।
(ख) ओझा जोधपुर राज्य का इतिहास प्रथम खण्ड पृष्ठ १६३ ६४, पादटिप्पणी।
(ग) मु हणोत नैणसी की ख्यात, द्वितीय खण्ड, १६७-१९१।

का समय संवत् १३८२ के आसपास है[१]। फलोदी के कोलू गांव में पाबूजी का देवरा है। डा० टसीटरी ने कोलू गांव के तीन शिलालेखों का परिचय दिया है जिनमें सबसे प्राचीन संवत् १४१५ के भादवा सुदि ११, रविवार का है। इसमें धांधल गोत्र के पुत्र सोहड़ द्वारा पाबूजी के मंदिर बनाए जाने का उल्लेख है[२] पाबूजी पर अनेक रचनाएँ मिलती हैं और 'पवाड़' तो प्रसिद्ध हैं ही। झरडे पर भी डिंगल गीत लिखे गए हैं[३]। ये लक्ष्मण के अवतार माने जाते हैं। प्रसिद्ध है कि पाबूजी के साथ ७ थोरी रहा करते थे। अब भी इनके पुजारी थोरी हैं।

✓ ५-रामदेवजी तँवर-ये अजमलजी के दूसरे पुत्र थे। इनके बड़े भाई का नाम वीरमदेव था। प्रसिद्ध है कि संवत् १५१५ के भादवा सुदि ११ को ४० साल की आयु में इन्होंने रुणेचा में जीवित समाधि ली थी। इस हिसाब से इनका प्राकट्य काल संवत् १४७१ अनुमित होता है। ये सुप्रसिद्ध नाथ जोगी बालनाथ के शिष्य थे जो उस समय पोकरण में रहते थे। इनकी पत्नी का नाम नीतल और पुत्री का दाहलदेवी बताया गया है[४]। श्रद्धालुओं में ये कृष्ण के अवतार माने जाते हैं। रुणेचा इनका प्रसिद्ध स्थान है, जहाँ प्रति वर्ष भादों में मेला भरता है। इसमें देश के दूर दूर भागों से लोग आते हैं। रामदेवजी के नाम से 'वाणी' भी प्रचलित है[५] किन्तु उसकी प्रामाणिकता नितांत संदिग्ध है।

६-मेहोजी-ये मांगलिया शाखा के राजपूत थे। यह शाखा चित्तौड़ के गहिलवंशी राजपूतों से निकली हुई है[६]। नैणसी ने गुहिलवंश की २४ शाखाओं में इसका नाम गिनाया है[७]। ये जैसलमेर के राव राणगदेव भाटी के साथ युद्ध में जूझ कर वीरगति को प्राप्त हुए थे[८]। हड़बूजी के पिता साँखले महराज को भाटी राणगदेव ने मार दिया था इसका बदला लेने के लिए राव चूँडाजी ने उसका पीछा किया और जैसलमेर राज्य के सिरड़ गाँव के पास उसको मार डाला। यह घटना संवत् १४६२ की है[९]। इस प्रकार, मेहोजी के जीवन की ऊपरी सीमा संवत् १४६२ सिद्ध होती है। विक्रम पंद्रहवीं शताब्दी पूर्वार्द्ध में मांगलियों का शासन पोकरण फलोदी और उसके आसपास के प्रदेश में था, जिस कारण वह मांगलियावाटी कहलाता था। फलोदी उसकी राजधानी थी। इन मेहोजी ने चारण देवी

१-डा० दशरथ शर्मा अर्ली चौहान डाइनस्टीज, पृष्ठ ३२८, पादटिप्पणी।
२-जर्नल आफ एशियाटिक सोसाइटी आफ बंगाल (न्यू सिरीज), संख्या १२, सन १९१६ पृ० १०६-१४।
३-(क) टसीटरी डिस्क्रिप्टिव कैटालाग सेक्शन सेकिंड, पार्ट-फर्स्ट, पृष्ठ ८-९।
(ख) डा० हीरालाल माहेश्वरी राजस्थानी भाषा और साहित्य, पृष्ठ ११२-११४।
(ग) राजस्थानी वीर गीत, भाग १ पृष्ठ १०-१५ बीकानेर सन १९४५, आदि।
४-बम्बई प्रेसिडेन्सी गजेटियर वाल्यूम ९, पार्ट-फर्स्ट, पृष्ठ १९०।
५-मान-पद्य-संग्रह तीसरा भाग, पृष्ठ ९३-१०६ रामगोपाल मोहता बीकानेर, सं० २००७।
६-ओझा उदयपुर राज्य का इतिहास प्रथम खण्ड, पृष्ठ ३९० तथा जोधपुर राज्य का इतिहास प्रथम खंड, पृष्ठ २६, पादटिप्पणी।
७-ख्यात प्रथम भाग पृष्ठ ७७, काशी।
८-डा० मनोहर शर्मा राजस्थानी संस्कृति की रूपरेखा, पृष्ठ ३८।
९ रेउ मारवाड़ का इतिहास, प्रथम भाग पृष्ठ ६७ पादटिप्पणी।

करणीजी के पिता मेहोजी चारण को सुवाप नामक गाव प्रदान किया था। मेहोजी चारण का विवाह सवत १४३८ के आसपास आढा गाव के स्वामी चकू आढा की पुत्री देवलबाई के साथ हुआ था[1]। मेहोजी मागलिया अत्यन्त दानी, परोपकारी, शूरवीर और वचन सिद्ध महात्मा थे। कुछ विद्वानो ने हडबूजी सांखला के पिता महराज और इनको अभिन्न माना है[2] जो भूल है। सांखला और मागलिया दो भिन्न शाखाएँ हैं।

७-हडबूजी सांखला-ये नागौर के भूडेल गाव के निवासी महराज सांखला के पुत्र थे। इन्होंने सवत् १५१० के आसपास राव जोधाजी को एक कटार दी थी[3] जो बीकानेर राजघराने की पूजनीक वस्तुओ म एक है[4]। ये अतिथि सत्कार करने म एक ही थे, इनके यहा से कोई भूखा नही जाता था। ये बडे शकुनी, वचनसिद्ध और करामाती माने जाते थे[5]। अपने पिता की मृत्यु (सवत् १४६२) के बाद ये फलोदी के गाव हरभमजाल म आ गए। वहा रामदेवजी तँवर से साक्षात्कार होने पर इन्होंने अस्त्र-शस्त्र त्याग दिए और बालनाथ को अपना गुरु बना कर साधु हो गये। तब से ये लालटे गाव मे रहने लगे। सवत १५१५ म रामदेवजी के जीवित समाधि लेने के ८ दिन बाद इन्होंने भी उनके पास ही जीवित समाधि ले ली। राव जोधाजी ने बगटी गाव हडबूजी को प्रदान किया था[6]।

८-निष्कर्ष विश्णोई सम्प्रदाय प्रवर्तन की भूमिका-ऊपर के विवरण का सारांश यह है कि जाम्भोजी के समय तक राजस्थान म मोटे रूप से चार 'धर्म' प्रचलित थे। पूर्व लिखित उद्धरणो से यह भी स्पष्ट है कि जाम्भोजी ने इनको चेताया था। इनके अतिरिक्त अनेक इतर देवी-देवताओं की मान्यता और 'पाषण'-पूजा भी प्रचलित थी। लोग अधिकांश में धर्म के असली तत्व को न जान कर चमत्कार को मानते थे। भौतिक लाभ-प्राप्ति उनका मुख्य प्रयोजन था, अध्यात्म लाभ के इच्छुक कम ही थे। सोलहवी शताब्दी मे राजस्थान मे प्रचलित सभी धर्म मत या तो केवल बाह्य साधना-विधि मे चिपटे हुए थे या केवल कथनी प्रधान हो गए थे। कथनी और करनी मे बडा अन्तर था। जाम्भोजी ने सम्यक प्रकार से इसको लक्ष्य किया था। एक सबद (८३) मे उन्होंने व्यापक रूप से प्रचलित इस भावना का बडा स्पष्ट और सारगर्भित वर्णन किया है। उन्होंने किसी भी 'धर्म', सम्प्रदाय या मत का बुरा नही बताया और न ही वेद, पुराण, शास्त्र और कुरान की निंदा की। उन्होंने तो धर्म के नाम पर प्रचलित और प्रचारित पाखण्ड बाह्य वेश और लोक दिखावे की निन्दा की है। धर्म के असली तत्व को जानने और आचार-विचार की पवित्रता पर बारम्बार जोर दिया है। सबदवाणी म पता चलता है कि उस समय इन चारो धर्मों से किसी न किसी प्रकार सबधित अनेक प्रकार के लोग थे। बिना तत्व जाने वे स्वय भ्रम म थे और दूसरो को भ्रमाते थे। वेद और

१-किशोरसिंह बार्हस्पत्य करनी-चरित्र पृष्ठ १७-१८, कलकत्ता, सन १९३८।
२-डा० मनोहर शर्मा राजस्थानी लोक संस्कृति की रूपरेखा पृष्ठ ३८।
३-ओझा जोधपुर राज्य का इतिहास प्रथम खण्ड पृष्ठ २३८-३९।
४-बीकानेर गोल्डन जुबली (सन १८८७ १९३७) (अंग्रेजी म) बीकानेर राज्य प्रकाशन।
५-आसोपा मारवाड का मूल इतिहास पृष्ठ १०६, पादटिप्पणी।
६-महणोत नणसी की ख्यात प्रथम भाग, पृष्ठ २४२ ४३ तथा
द्वितीय भाग पृ० १२९ १३०।

कुरान के नाम पर जाल फैला हुआ था (७२ १) और अनेक दन्तकथाओं का प्रचार था (६७ ३)। हिन्दू और मुसलमानों में ऐसों में जोगी, जंगम, सींगी बजाने वाले, दिगम्बरी, सन्यासी, ब्रह्मचारी, सूफी, दरवेश, पीर, जती, तपस्वी, तकिये में रहने वाले, जपिया, मुंडिया, आयस, ऋषि, फकीर पंडित, पुरोहित, मिश्र, व्यास, ज्योतिषी, काजी, मुल्ला आदि थे[1], सिद्धि का मार्ग और आचार-विचार जानने वाले साधु विरले ही थे। तत्कालीन समाज में कर्म, धर्म और सिद्धि के नाम पर अनेक प्रकार के पाखण्ड प्रचलित थे। लोग जटा तपस्वी खेचर, भूचर, क्षेत्रपाल नाथ, चौसठ योगिनी, बावन वीर, यक्ष, 'डाकणी-साकणी', वैताल, भूत-प्रेत, पितर और देवी की पूजा करते थे। तंत्र-मंत्र और जड़ी-बूटी का प्रयोग होता था। हिन्दुओं में मूर्तिपूजा बहुत प्रचलित था तथा मुसलमान मुहम्मद के नाम पर अबाध रूप से निराह जीवों की हत्या करते थे। सन्यासियों और जोगियों में भी अनेक फिरके थे किन्तु उनमें लोक दिखावा मात्र रह गया था[2]।

जाम्भोजी के अतिरिक्त तजोजी ऊदोजी, वील्होजी आदि कवियों की रचनाओं से तत्कालीन समाज में धर्म के नाम पर फैले पाखण्ड का भली-भांति चित्र सामने आता है। इस समय में जाम्भोजी ने विष्णोई सम्प्रदाय-प्रवर्त्तन के द्वारा एक निश्चित मार्ग लोगों को दिखाया। यह मार्ग जीवन-पद्धति भी है और 'धर्म' तो है ही।

१-शब्द-सबद संख्या ८४, ४, ५५ ५६ ६६ ६७ ६८ ८२ ८६, ११८ आदि।
२-शब्द-सबद संख्या ४, १०, ११, २६ २७, ६६ ७१, ६६ ११४ आदि।

पनरास अवतार लियौ, आठमि सोम अठानर।
× × ×
कातिग वदि हरि कळस थाप्यौ, पथ वयाळ परगट्या।
—सुरजनदासजी कृत "साखी"।

साथरी गुरु की वन समरथळि, जहा खेल पसारिया।
तिराएव की साध्य पूगी, दे हरि सीख सिधारिया।
—रायचन्द कृत "साखी"।

वरस सात ससारि वाळलीला निरहारी।
वरस पाच वावीस, पाळ एता गिनि चारा।
ग्यार और चाळीस, सवद कथिया अवनासी।
वाळ गुवाळ गुर ग्यान, मास तीन व्रस पच्यासी।
पनरास 'र तिराएव वदि मगसर नुवि आगळे।
पालटे रूप रह्यौ रिघू, इडग जोति समराथळे॥
—वील्होजी कृत "छप्पय"।

खण्ड २

प्रवर्त्तक, वाणी और सम्प्रदाय

जाम्भोजी का जीवन-वृत्त

पूर्वज रोलोजी, लोहटजी जाम्भोजी के पूर्वजो के इतिहास का विशेष पता नही चलता। नागौर से १५-१६ कोस उत्तर मे स्थित पीपासर गाव मे रोलोजी पवार हुए। प्रसिद्ध है कि रोलोजी महाराजा विक्रमादित्य की चालीसवी पीढी मे थे[1]। महलाणा गाव (जोधपुर) के विश्णोई भाटो की बहियो के अनुसार विक्रमादित्य के २६ वें वशधर प्रसिद्ध राजा भोज थे और उनकी ६ वी पुश्त पर पीपासर म रावलजी नामक परमार क्षत्रिय हुए। यहा रोल्होजी ३८ वी पीढी पर आते हैं। रोलोजी के पुत्र लोहटजी थे जो जाम्भोजी के पिता थे। 'साधु-परम्परा' (द्रष्टव्य-परिशिष्ट) मे 'आदि विष्णु' से लेकर जाम्भोजी और उनकी शिष्य-परम्परा मिलती है। साहबरामजी कृत प्रकाशित जम्भसार (प्रथम खण्ड, पृष्ठ ५-६) में दी हुई 'प्राचीन महात्माओ की वशावली' की सूची भी ऐसी ही है। इन दोनो सूचियों मे 'भोजपुत्र' को यदि सुप्रसिद्ध राजा भोज माना जाय, तो रोल्होजी उनकी १३ वी पुश्त पर आते हैं। इस प्रकार भाटो की वशावली और उक्त 'परम्परा' मे मेल नही है। परमारो की वशावली अन्य विद्वानो न भी दी है किन्तु परस्पर मिलान करने पर इन सबमे कोई समानता नही पाई जाती[2]। रोल्होजी ऊमट शाखा के पवार थे। इन पीढियो के सत्यासत्य निर्णय करने का साधन हमारे पास नही है। हा लोहटजी के पिता रोलोजी से हम एक निश्चित और प्रामाणिक परम्परा पात हैं। भाट लोग रोल्होजी को रावल्जी कहते हैं। वस्तुतः दोनो नाम एक ही हैं। रोल्होजी का विवाह मोहिल राणा के यहा हुआ था। उनकी मोहिलाणी धमपत्नी राजाधिदेवी से लोहटजी और पूल्होजी का जन्म हुआ। उनके एक कन्या 'तांतू' भी हुई। प्रसिद्ध है कि ये तीना सगे भाई-बहन थे और लोहटजी इन सबमे बडे थे[3]। ऐसा प्रतीत होता है कि लोहटजी पवार का घराना अत्यन्त प्रतिष्ठित और प्रसिद्ध था। सम्प्रदाय के उपलब्ध साहित्य से लोहटजी की सम्पन्नता का भली-भाति पता चलता है[4]।

पूल्होजी जाम्भोजी के जीवन-चरित विषयक प्रसगो म अनेक स्थलो पर पूल्होजी

१-(क) स्वामी ब्रह्मानदजी जम्भदेव चरित्र भानु, पृष्ठ १।
(ख) मोहनलाल वश्य विश्णोई मत व्याख्या, पृष्ठ ६।
२-(क) नणसी की ख्यात, प्रथम भाग, पृष्ठ २३०-३१, काशी, सवत, १९८२।
(ख) सूर्यमल्ल मिश्रण वशभास्कर, प्रथम भाग, पृष्ठ ४७३-५०१।
(ग) सिन्धायच दयालदास पवार वश दपण, बीकानेर, सन् १९६०।
(घ) बांकीदास री ख्यात, पृष्ठ १३६-१४१, जयपुर, सन १९५६।
३-महलाणा गाव के विश्णोई भाटो की बहियो मे भी ऐसा उल्लेख है।
४-लोहट हल वाहे खेती कर, कोहर सीचण जाय।
भाग वडो पुवार को, घर वित छाली गाय ॥ २३ ॥
वित निरतो घरि छाली गाय, गाठी गरथ निरतो थाय।
बरसा बरसी निपज अन, भली टबाई घर जोगो धन ॥ २४ ॥
—वील्होजी कृत कथा औतारपात।

और तांतू का उल्लेख हुआ है। साहबरामजी के अनुसार पूल्होजी लाडणू गांव में रहते थे। अकाल पड़ने पर द्रोणपुर जाते हुए लोहटजी अपने आदमियों और पशुओं के साथ सन्ध्या के समय लाडणू पहुंच गए। पूल्होजी उनसे मिलने आए और गोठ हुई[1]। संवत १५४२ में अकाल के पश्चात् जाम्भोजी का धर्मोपदेश सुन कर सर्व प्रथम पूल्होजी ने ही शंका प्रकट की थी। विश्वास होने पर सबसे पहले सम्प्रदाय में भी वे ही दीक्षित हुए तथा उनके साक्ष्य पर अन्य लोग भी सम्प्रदाय में आए (द्रष्टव्य–वील्हाजी कृत पूल्होजी की कथा)। इस प्रकार पूल्होजी तत्कालीन समाज के अगुआ के रूप में दिखाई देते हैं। इससे उनकी तथा उनके घराने की प्रसिद्धि एवं प्रतिष्ठा का पता चलता है। जाम्भोजी के वैकुण्ठवास का समाचार सुनकर उन्होंने रिणसीसर में स्वेच्छा से प्राण त्यागे थे (द्रष्टव्य–अध्याय ७, १३ व शीर्षक के अन्तर्गत–'रिणसीसर')।

तांतू जाम्भोजी की भूआ तांतू का उल्लेख भी सम्प्रदाय के साहित्य में कई बार मिलता है। तांतू का ससुराल जैसलमेर के ननऊ गांव में था[2]। साहबरामजी ने लिखा है कि पलने पर लेटे हुए जाम्भोजी को उनकी भूआ तांतू नहीं उठा सकी थी, न हांसा लोहट और हांसा उठा सके किन्तु दासी ने उठा लिया था[3]। सम्प्रदाय में मान्य 'नवण मंत्र' (वह्नवण) जाम्भोजी ने तांतू के प्रति कहा था। प्रसिद्ध है कि उन्होंने जाम्भोजी से अत्यन्त सम्पर्क में मुक्ति का उपाय पूछा तब जाम्भोजी ने इसके द्वारा यह उपाय बताया था। 'सबदवाणी' के गद्य तथा पद्य प्रसंगों में इसका उल्लेख मिलता है[4]। तांतू ने जाम्भोजी के वैकुण्ठवास के पश्चात ननऊ गांव में देह-त्याग की थी[5]। '२७ लुगाइयों का पुन्न' (द्रष्टव्य–अध्याय ७) तथा हीरानंद (कवि संख्या ८६) के 'हिंडोलणा' में तांतू का नाम है।

लोहट-हांसा जाम्भोजी का जन्म-लोहटजी का विवाह यादव वंशी भाटियों से निसृत खिलहरी कुल में उत्पन्न हांसा देवी (अपर नाम केसर, से हुआ था। वे छापर

१–प्रति संख्या १०३ जम्भसार, चौथा प्रकरण लोहट केसर की कथा, पत्र ३–६।
२–ननऊ तांतू वसै नगरी सरस सुघाट।
  थटवाळौ तांतू तणौ थला चराव थाट ॥ ४५ ॥–केसोजी कृत कथा जती तलाव की।
३–प्रति संख्या १९३ जम्भसार प्रकरण ६ पलणे परचो पत्र–५।
४–(क) प्रति संख्या ११२ २२७।
  (ख) ईश्वरानंदजी गिरि– 'शब्दवाणी' पृष्ठ १२३, संवत १९५५।
५–(क) सात से मुकटि सीवा ननेऊ। साथ तांतू तणा अंते मेऊ।
  दोयस पंच साथै दुरगी। सुरमती निकट सीवा सुरगी ॥ १७० ॥
  –सुरजनजी कृत कथा परसिध।
  (ख) पहलि मुंहि तांतू पडी उरयो उतारी आपि।
  एक सहस अर च्यारिस, पड या सवीरी साथि ॥ ८ ॥–केसोजी कृत साखी।
६–(क) भाटी जादम वंसावली, ताहू निका खिलहरी कुली।
  तह वंस उपनी हांसा माय, भाग वडो सुकुलीणी थाय ॥ २१ ॥
  –वील्होजी कृत कथा औतारपात।
  (ख) खिलहरा कुल वंस निवास, हांसा नाव धरे सुखवास।
  साई लोहट घरि वर नारि, सुकुलीणी सोभा समारि ॥ २ ॥
  –सुरजनजी कृत कथा औतार की।

गाव के मोहकमसिहजी की पुत्री थी[१]। लोहटजी अत्यत सम्पन्न व्यक्ति थे। जाम्भोजी उनके एक मात्र पुत्र थे और सम्भवत दम्पत्ति की अधेडावस्था म उत्पन्न हुए थे। इनके जन्म के सम्बन्ध म कई बात प्रचलित हैं किन्तु सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण उल्लेख वील्होजी का है। उनके अनुसार, लोहटजी एक दिन गायें चराने वन मे गए। वहा उनको 'अगम पुरुष" एक योगी के रूप म मिले और कहा कि तेरे घर म 'देवजी' अवतार लेगे, तू शका मत करना, उनके 'इचरज' (आश्चर्यजनक कार्यो) को देखकर 'ओदरणा' (शकित, उदास) मत और न ही मन म कोई अन्देशा करना, दृढ मन रहना। कृष्णजी 'चिरत' करेंगे, वे बारह कोटि जीवो के उद्धारार्थ आएँगे[२]। इसकी पुष्टि सुरजनजी के कथन से भी होती है[३]। उस जोगी ने हासा को भी घर के दरवाजे पर दर्शन दिए। उस समय, ऋतुकाल के पश्चात व कपडे धो रही थी। उनके पास अडौस-पडौस की अन्य स्त्रिया भी बैठी थी। जोगी ने आशीर्वाद दिया कि तेरे पुत्र होगा जो महान योगी और अवधूत होगा[४]। सुरजनजी के अनुसार, उस समय जोगी ने 'आदेस' किया, जिसको सुनकर हासा भिक्षा का थाल भर कर लाई किन्तु बाहर उनको उसका 'छाया-खोज' भी दिखाई नही दी। हासा ने मन म विचार किया कि 'आप' अवतार लेगे[५]। कई दिन बीतने पर हासा को गर्भ का आभास हुआ, उनको लेश मात्र भी

१-(क) स्वामी ब्रह्मानन्दजी श्री जम्भदेव चरित्र भानु पृष्ठ १।
(ख) प्रति सख्या १६३, जम्भसार प्रकरण ४, लोहट केसर की कथा।
(ग) महलाणा गाव के विश्नोई भाटो की बहिया।

२-सुभ दिन एक सुकयारथ भयौ। लोहट गऊ चरावण गयौ।
पुरिष एक मिल्यौ वन माय। दरसण दीठौ सनमुष जाय ॥ २५ ॥
जोग रूप बोले सुर वाणि। लोहट न समभाव जाणि।
पुरष तेरे लेसी अवतार। सक न मानी करी करार ॥ २६ ॥
किसन चिरत एक होयसी सही। बीह न मानी दढ मनि रही।
इचरज देषि मत ओदर। मन अन्देसो मत कोई कर ॥ २७ ॥
समझायौ लोहट न, आगम हुई अवाज।
देवजी आवे जग मही, बारा मेल्ण काज ॥ २८ ॥-कथा औतारपात।

३ लोहट हासा न कहै मन मा करो करार।
वन मा महा पुरिष भटिया, तह की वाचा सार ॥ १९ ॥
महा पुरिष जागिदर वसि। सबद रूप कीयो आदेसि।
सबद रूप बोले हित लाय। इह बालक का चिरत सुणाय ॥ २० ॥
लोहट तेरे बालक होय। दुनिया की गति नाही सोय।
उदबुद रूप होयसी अवतार। दरसण देख अर करी करार ॥ २१ ॥-कथा औतार की।

४-माता हासा हुई जवत। कपडा धोव माझ तत।
आसि पासि ता आय बठी नारि। जोगिदर दीठो एक वारि ॥ २६ ॥
दीठो जोगी नारी हसी। मुष ता वाच कही एक असी।
हासा तेरे होयसी पुत्र। वड जोगी होयसी अवधूत ॥ ३० ॥ वील्होजी, कथा औतारपात

५-सन्ज मीत सभार समन्द सुप सताप धरे आणद।
रनिवह वार हुवे सनमान, कपडा धोय कर मानान ॥ ३ ॥
महा पुरिय जोगिदर वेस, सबद रूप कीयो आदेस।
भाछ्या थाल छाल्य जनि लेह छाया षोज न दीस देह ॥ ४ ॥
गयो गयो मगन होय, मन मा कियो विचार।

(शेषाश आगे देखें)

दुख का अनुभव नहीं हुआ[1]। गर्भ में बालक न हिलता-डुलता था और न पार्श्व-परिवर्तन करता था। हांसा सबके सामने यह भी कहने लगी कि मुझे तो यह अदेखा है कि गर्भ में जीव निर्जीव है। महीने पूरे होने पर 'परम गुरु' प्रकट हुए, उन्होंने माता को जरा भी दुख नहीं दिया। पता लगने पर आसपास की स्त्रियां आगईं। वे बालक को नहलाती-धुलाती कहने लगीं-हांसा तो कहती थी कि गर्भ निर्जीव रूप में है, किन्तु यह बालक तो चैतन्य और 'सकल सरूप' है[2]। अन्यत्र भी ऐसा ही उल्लेख है। दस मास बीतने पर, एक दिन रात्रि में हांसा घर में सोई हुई थी। स्वप्न में उन्होंने देखा कि वे पुत्र-हेतु घर में जा रही हैं। जगने पर उन्होंने अपने सम्मुख बालक देखा[3]। इस कथन का तात्पर्य यही है कि प्रसव-काल में हांसा को किंचित भी कष्ट नहीं हुआ। रात्रि बीतने पर लोहटजी ने पंडित को बुलाकर बालक के जन्म-मुहूर्त के विषय में पूछा। उसने 'पतड़ा' (पंचांग) देखकर बताया कि संवत १५०८ के भादों वदि अष्टमी, सोमवार को कृत्तिका नक्षत्र में बालक उत्पन्न हुआ है। यह कुल-तारक होगा। "निसरावणा" (मुहूर्त आदि देखने के रुपए) लेकर पंडित गया[4]। लोहटजी और हांसा को जोगी द्वारा पुत्रोत्पत्ति के आशीर्वाद प्राप्त होने का उल्लेख अनेक कवियों और लेखकों ने किया है। परवर्ती रचयिताओं ने सम्भावनाओं का बढ़ावा देकर इस कथा में थोड़ा सा अंतर कर दिया है। साहबरामजी के अनुसार, वह जोगी लोहटजी को द्रोणपुर के जंगल में मिलता है, जब वे अकाल काटने के लिए वहां गए हुए थे तथा जोधो जाट द्वारा उनके 'निपूतेपन'

माता अंतरि ऊपजी, आप लीय अवतार ॥ ५ ॥-कथा औतार की।

१-केतक दिन हुवा परवाण्य, आसा अभ उपनी जाण।
दुष अहुष नहीं बौहार, पाक देह घटि प्राण अधार ॥ ६ ॥-वील्होजी, कथा औतारपात।

२-माता ओदरे उपनी आस। फुर फुरक फोर पास।
माता भए न देही दुष। भार नहीं अंग आछो सुष ॥ ३१ ॥
साथ आगी हांसा कहै। मन मां एक अदेसो रहै।
ओदर आदेक उपनू जीव। जीव नहीं जाण नजीव ॥ ३२ ॥
माहीना पूरा हुवा। माय न दीहो दुष।
परगट हुवो परम गुर। जा जाण्या ताह सुष ॥ ३३ ॥
आसि पासि ता आई नारि। हाव धोव कर विचारि।
हांसा कहता नीरजीव रूप। जीव जाग सकल सरूप ॥ ३४ ॥
-वील्होजी, कथा औतारपात।

३-दस मास जदि पूरा हाय माता घरि सुप सूती साय।
अगम बात कुण जाण अंतरा होयसी किसन चिलत परवाण ॥ ६ ॥
माता सुपन रीण क पुत्र हन पईठ।
हांसा जागी वाली वीगसि, सनमुष बालक दीठ ॥ १० ॥-सुरजनजी, कथा औतार की।

४-रीण घटी दिन प्रगटयो आय। लोहट पाडे न बुलाय ॥ १२ ॥
पाइ पतड़ो देषि निवारि। कुण महूरति आयो बाल ॥१३॥
पनरा समत अठौतर किरत उपत परवाण्य।
सोमवार भादव वद, आठम तिथि परवाण्य ॥१४॥
पाडे पतड़ो बाच जोय, ओह बालक कुल तारक होय।
पाडे नीसरावण्य ले जाय, मात पिता सोच मन माहि ॥ १५ ॥
-सुरजनजी, कथा औतार की।

का अपशकुन मानने और उन पर व्यग्य किए जाने पर, मन म ग्लानि का अनुभव करते हुए जगल म देह्–त्याग का सकल्प करते हैं। लोहटजी से बछडी का दूध निकलवा कर वह अपनी अलौकिक सिद्धि का परिचय भी देता है[1]। हिसार डिस्टिक्ट (सन् १९०७) गजेटियर म भी ऐसा ही उल्लेख है किन्तु वहा द्रोणपुर का नाम नही है और यह घटना लोहटजी की ६० वष की आयु म घटती है (अध्याय २ म (२) के अन्तगत–सदभ–सख्या (२७)। जाम्भोजी की जम–तिथि और सवत के सम्बन्ध म सभी लोग एक मत है[2]।

जाम्भोजी का जीवन कालक्रमानुसार महत्त्वपूण आयाम–जाम्भोजी के जीवन की विभिन्न कालो से सबधित प्रमुख बाता का उल्लेख वील्होजी न एक कवित्त (छप्पय) म किया है। यह छद उनके जीवन–वृत्त के लिए अत्यन्त ही महत्त्वपूण है —

बरस सात ससारि, बाल लीला निरहारी।
बरस पाच बावीस, पाल एता दिन चारी।
ग्यार और चालीस, सबद कथिया अवनासी।
बाल गुवाल गुर ग्यान, मास तीन बस पच्यासी।

१–प्रति सख्या १६३, जम्भसार, प्रकरण–४।

२–(१) (क) पदरास र अठोतर गुर आयो करि भाव।
कुपरि पलटण परे करण थापरा निरति नियाव ॥ ५० ॥
–वील्होजी, कथा धडाबध।

(२) (क) पनरा समत अठोतर, भादव वदि अवतार।
अठव तिथि अचभ गति, आवे सिरजण हार ॥ १ ॥
–सुरजनजी, कथा परसिध।

(ख) पनरास अवतार लियो आठमि सोम अठोतर।
छापर नीबी द्रूणपुर, आसा तीसना न कर।–सुरजनजी कृत साखी।

(३)–(क) पनरास अठोतर, आठम सोम सुवार।
हरि काया धर आवियो, सिर पर सोवन धार ॥ १२ ॥
–केसोजी, प्रति सख्या १६।

(ख) पनरास परवेस, आए अलप अठोतर।
सतगुर दीय सदेस, सुरग बताव साम्यजी ॥ ३ ॥
वदि भादव विचारि, तिथि आठम्य दिन अवतर्यो।
दुख भजण दातारि, समरि आयो साम्यजी ॥ ४ ॥
–केसोजी, प्रति सख्या २०१।

(ग) पनरास र अठोतरे इळा, काय म ले परगटियो कला।
वदि भादव्य आठवि अवतार, करि किरपा आयो करतार ॥ ८८ ॥
–केसोजी कृत कथा विगतावली।

(४) 'कलजुग मा अवे ध म बधे हुवो। पाछ समत १५०८ प्रपे मीती भादवा वदे ८ वार सोमवार अतका नपत श्री बिसनजी गाव पीपासर मधे लोहट पु वार रै धरे चरित रूपी प्रगट हूवा। पार कणी पायो नहीं'।
–परमानदजी लिखित 'साखा', प्र० सख्या २०१।

पनरास 'र तिरांणव वदि मगसर नु वि आगल ।
पालटे रूप रहियो रिधू, इडग जोति सभरायले[1] ॥ -प्रति सख्या ३८ स ।

इसके अनुसार, जाम्भोजी ने ७ वष बाललीला म बिताये, २७ वष (५ + २२) तक पशु चराए, ५१ वष (११ + ४०) तक सबद-कथन किया। इस प्रकार तीनों रूपों म पचासी वष तीन महीने बीते। सवत् १५९३ के मागशीष वदि नवमी को वकुण्ठवास हुआ। साहबरामजी ने भी 'धूपमत्र' के ५ कवित्तो (छप्पयो) म से एक में अपने ढग से ऐसा ही उल्लेख किया है[2]। इस आधार पर जाम्भोजी के जीवनकाल को इस प्रकार से समझा जा सकता है —

१–जन्म स लेकर ७ वष तक 'बाललीला' काल, ७ वष (स० १५०८ से १५१५)।

२–८ वष से ३४ वष तक–'पाल–चारण' काल, २७ वष (स० १५१५ से १५४२)।

३–३४ वष की आयु मे–सवत १५४२ मे, विष्णोई सम्प्रदाय-प्रवत्तन तथा

४–उस समय से सवत १५९३ (वकुण्ठवास) तक पानोपदेश काल–५१ वष (स० १५४२ से १५९३)। आगे इसके अनुसार प्रामाणिक साम्प्रदायिक साहित्य के आधार पर उनका जीवनवृत्त दिया गया है।

१–बाललीला-काल (सवत १५०८–१५१५)-सम्प्रदाय के बहुत से कवियों ने जाम्भोजी की बाल्यावस्था से सम्बन्धित अनेक रचनाएँ की हैं। इनमे यद्यपि उनकी अलौकिक सिद्धि और चमत्कार-शक्ति के उल्लेख विशेष हैं तथापि उनसे अनेक महत्त्वपूर्ण बातों का पता चलता है। ऐसी कतिपय घटनाओं का उल्लेख नीचे किया जाता है —

(क) जाम्भोजी ने उत्पन्न होने के पश्चात अनेक प्रयत्न किये जाने पर भी जन्म घूटी

१–प्रति सख्या २०१ म इसकी तीसरी और चौथी पक्ति का पाठ इस प्रकार है -
दस ऊपरि चालीस सबद कथिया अवेणासी ।
बाल गुवाल गुर ग्यान, सकल पूगा चवरासी ॥
इसम भूल स ज्ञान-कथन काल ५० (१० + ४०) वष और आयु ८४ वष बताई गई है। प्रतीत होता है सवत १८०० के लगभग यह छद इस रूप म भी प्रचलित था क्योंकि इस प्रति में सबदवाणी के पुष्पिका रूप एक दोहे म परमानदजी ने 'चौरासी वरस सुरवाण्य' लिखा है। पश्चात इस छप्पय के 'ग्यारह और चालीस' पाठ प्राप्त होने पर उन्होंने भी अपने उल्लिखित दोहे को सुधार कर या लिखा (प्रति सख्या २२७ म) -
अनत सबद सतगुर कह्या पच्यासी वरस परवाण्य ।
नायव कठि रहिया अता सेइ सीप्या श्रीरह सुजाण्य ॥
इस बात का उल्लेख प्रति सख्या २४० म भी मिलता है।
२–महाजोत गुर जभ भक्त हित लीला धारी ।
सप्त मौन रहे बाळ सप्तवीसौं गौचारी ।
इक्यावन वय ज्ञान नाद अगम अधिकारी ।
पच्यासी त्रिय मास तज तप लाई तारी ।
श्राजम सोम अठोतर पनराग अवतार ।
त्रिराणव मिगश्र वदि नौमी साहब पहुच पार ॥
-प्रति सख्या १६३ जम्भसार, प्रकरण-२४, पत्र २९।

गहा ली[1]।

(ख) उनको पीढ़े पर लेटाया गया किन्तु वे घूम कर 'ईस' (पलंग की पटिया) के बल लेट गए। पृथ्वी पर उन्होंने पीठ नहीं लगाई[2]।

(ग) एक बार वे पीढ़े पर सोये हुए थे। पास ही लेटी हुई माता हासा को नींद की झपकी आगई। जगने पर वहां उनको बालक नहीं मिला। लोहटजी के आने पर वह वहीं मिल गया किन्तु सिर पूर्व से पश्चिम की ओर था[3]।

(घ) वे स्तन-पान नहीं करते थे। हासा ने 'सयाने' आदमियों से इसका कारण पुछवाया। मूल लोग 'आखा लेकर' भोपा के पास गए। उन्होंने अनेक पाखण्ड रचे, 'टोने-टटदम' किए किन्तु कुछ उपाय न कर सके[4]।

१-(क) रोग माद दीस नही, दीस सकल सपोस।
गडसूती पीव नही, कहो कुण रो दोस ॥ ३८ ॥
-वील्होजी, कथा औतारपात।

(ख) नारि उचार विचार कर आय नीरमल नीर न्हुवाव।
घूटी क काज्य कहै मुख को रुप मोहन क मुखि हाथ न आव।
गाल्य क नाक टिक कर थोडी गोम्यद की गति नारि न पाव।
केसौदास उदास भई महरी धरती धरणीधर पीठ न लाव ॥-केसौजी, सवया।

२-पाढ पोढायो सुख वासाणि, फीरि हुवो इसकी क ताणि।
पामो भोम्य न देई देव, कुण जाण सतगुर को भेव ॥ ३९ ॥
-वील्होजी कथा औतारपात।

३-(क) पीढ ऊपरि बालक थाय। पास पोढी हासा माय ॥ ४१ ॥
ढुणको एक नीद को लियो। जागी वेग सभाल्यो कियो।
पीढ उपरि फेर हाथ। बाल नही मन धसक्यो मात ॥ ४२ ॥
निरख पीट को आसपास। बाल न लाधो घात सास।
मुखि बोल वरागी वण। मूझ नही अ धारी रण ॥ ४४ ॥
साद करि लोहट न कह्यो। बालक कोई स्यावज ले गयो।
भल पल करि उठियो पुकार। वग करि आयो तिणि वार ॥ ४५ ॥
लाधो बालक पूगी रली। सूझ नाही तू आधळी।
हासा मुख ता बोल भाखि। साधी नही दिराऊ साखि ॥ ४६ ॥
पीढ उपरि पोढावियो, सीस कवल पूरव दिस कियो ॥ ४७ ॥
इह बालक ओडो बल काह। पछिम सीस पुरब दिस पाय ॥ ४८ ॥
-वील्होजी, कथा औतारपात।

(ख) पीढ तो पोढायो आय तन इसकी क ताय कहत पुरत मात अ ति अ नराई है।
झक तक करत अजारि परयो जीवरो पल सू लागी पलक नेक नीद आई है।
सोवत डर सरीर इधक भई अधीर चूक चूक चीतवत मोहि मन भाई है।
कवि कहैं केसौदास नारि हू भई निरास, पीढ तो न पायो बाल मात मुरझाई है।
आवत धावत है जदि लोहट ढू ढत ढाढत है ज गली।
मइया मुरझाय पुकारि परी तन तेज घटयो डिग नाहि छली।
पीढ इढ लह्यो जब लोहट पुकार भन नारि तू अ धळी।
आय उठाए उचाय केस भन रग होत रली ॥-केसौजी, 'सवए'।

४-मात मुखि लेहचल देह। चूख नही अचभो एह ॥ ५२ ॥
उरि उपरे पहुचो फेराय। पहुंचू आव औ हरि जाय। (शेषांश आगे देखें)

(ङ) एक बार वे हिंडोले में थे। घर में और कोई नहीं था। 'हारे' में 'कढावणी' में दूध गर्म हो रहा था। जब दूध उफनने लगा तो उन्होंने 'कढावणी' उतार कर पृथ्वी पर रख दी। हासा ने हिंडोले और 'हारे' के बीच जाम्भोजी के पैर के निशान देख कर उनको लोहे के तसले से ढाप दिया और लोहटजी को दिखाया। यह देख कर लोहटजी को वन में योगी से मिलने और पुत्रोत्पत्ति के आशीर्वाद की बात याद आई[1]।

(च) लोग जाम्भोजी को 'गहला-गहला' कहते थे। वे न दूध पीते और न भोजन करते थे। इस कारण मूर्ख लोग लोहटजी को भ्रमाते और बालक के सम्बन्ध में भोपा और ब्राह्मणों से उपाय पूछने का आग्रह किया करते थे। वे उनको भोपों के पास ले गए। भोपों ने १३ बकरे-बकरियों की हत्या इस निमित्त की। जाम्भोजी ने उनसे पूछा-तुमने आज कितने जीव मारे हैं और उनको मार कर कौनसा काम पूरा किया? उन्होंने उत्तर दिया ११ जीव मारे हैं और इनसे भूत-दोष-मोचन किया है। जाम्भोजी ने तब कहा-तुमने एक गर्भवती बकरी भी मारी थी, जिसके २ जीवित बच्चे निकले किन्तु बिना सहारे के वे भी मर गए। इस प्रकार, तुमने १३ जीवों की हत्या की है। यह अदृश्य कथन सुन कर भोपे स्तब्ध रह गये। जब जाम्भोजी ने 'पंथ प्रकट किया तो ये लोग भी उनके अनुयायी बन गये[2]।

माता पूत पेयारो होय ढाहो स्याणो पूछो कोय।
मुंछ लाग भरमा बसि पया, आपा ले भोपा कै गया॥
माथा धूणी भोपणा, कूडा करै उपाय।
अग्यानी अद्यावणा मुष बोल अनिग्राव॥ ५४।
सेवग हूंता भोपा तणा, दूणा टटवस किया घणा।
वारा भूता रह्या मनाय, भोपा तणी न सरही काय॥ ५६॥
-वील्होजी, कथा औतारपात।

१-बालक हीड हिंडोलणा, धूणा दूध कढ काढगा।
हासा गई ज कारज कही, देव पपो घर कोई नही॥ ६२॥
झटक बालक लियो समाहि, कर गहि ढकण लियो उचाय।
दूध रीढ ली राख्यो ठारि, मुंय मल्ह्यो काढणी उतारि।
हिंडोल थूणा बीच चोग निरषे हासा दीठो पाज।
निरषे तसटो लीयो ताकि, गोज जतन करि राख्यो ढाकि॥ ६६॥
ह गऊ चरावण गयो वन माहि एक पुरिष भेंट्यो उण ठाय॥ ७३॥
पुरिष पास हूं का दा रह्यो यह बालक को आवण कह्यो॥
-बीहासा, कथा औतारपात।

२-गाहट हासा कै ताकिय दव वासो नियो थाय।
गहलो गहलो ज्यो कह्यो, अलप न लपणो जाय॥ ७८॥
मुंध लोग भरमाव घणा पूछ भोपा अर बामणा॥ ८४॥
लाम्ब चाल्यो माता जाय बालको लियो आगली विस्माय॥ ८५॥
माय बाल्क दपो निरपाय बालक गति न जाणी जाय।
पाव उन्क न ... महार बालक तण न नाभ पार॥ ८६॥
वा... ... बोल सुर वालि भोपा न पूछ छ जाणि।
किता जाव मारिया आज मार्या जीव कुंण मारयो काज॥ ८६॥
भोपा कै ... किया ... दोष करता रावया।
गूभर छाला तारा ताहि जीवन बकरी निकली दोय॥ ९५॥   (... भाग ...)

जाम्भोजी को 'भोपो' के पास ले जाने के यही कारण सुरजनजी ने बताए हैं। उनके अनुसार, जाम्भोजी की पलक नही पडती थी, वे पीठ के बल सोते नही थे, खाते-पीते नही थे, निराहारी थे[1]। इस कारण उनके उपचार हेतु लोहटजी भोपा के पास गए थे। उनके शेष कथन वील्होजी के समान ही हैं[2]।

(ख) एक श्मशान-सेवी तान्त्रिक ब्राह्मण अपनी सिद्धि दिखाया करता था। लोग उसको लाये। लोहटजी बोले-यदि इस बालक के आराम हो जाए, पाँच वक्त भोजन करने लगे, जैसे हम बोलते हैं, वैसे बोलने लगे, तो तुझे बधाई में एक गाय दूंगा। उसने अनेक प्रपंच रचे, ६४ छिद्रों वाला एक घडा और १०८ चौमुखे दीपक कुम्हार से बनवाए। शनि बीतने पर रवि की रात्रि को दीपकों में तेल-बत्ती डालकर जलाना आरम्भ किया किन्तु वे न जले। तब उसने बालक को नहलाना चाहा। इस पर जाम्भोजी ने कहा-झूठ क्यों बोलते हो? अभी कुछ देर पहले तो नहलाया था! स्वयं झूठ बोलते हो, तो 'गहल' को क्या आराम करोगे? इस प्रतिवाद की शिकायत लोहटजी से करते हुए 'पाडे' ने कहा-यदि दीपक जल जाएँ, तो मेरे तंत्र-मंत्र सब सिद्ध होंगे, अन्यथा नहीं। इस पर जाम्भोजी बोले-यदि तू मेरा उपचार कर सके तो दीपक जल जाएँगे। उन्होंने चौमुखे दीपक और घडा अलग किया। मिट्टी का घडा बनाया, चौमुखे दीपकों में पानी डाला और दीपक प्रज्वलित हो उठे। यह देख कर, 'पाडे' हक्का-बक्का रह गया, उसका गर्व-गुमान मिट गया। उसने इस 'अगम पुरुष' की महत्ता लोहट-हांसा को बताई। जाम्भोजी ने पाडे को लोहटजी से एक गाय दिल-

---

माभळ्य भोपा गया ओभाय, ई वाल्क सू बोलणौ न जाय ॥
परगट पथ कियो जनि धणी, गुर दिवाण्य मिली गति घणी ॥ १०० ॥
—वील्होजी कथा औतारपात।

१-(क) पलक न फुरक पूठि धर, उन्क न नींद अहार।
नर गुर भेद न जाणई नर दही निरहार ॥ ३ ॥—कथा परसिध।

(ख) सोव नही पूठि धर जोय, धरती अग न लाव सोय।
नीर पीरि नहि ल्हे अहार भूप नीद नहीं वौहार ॥ १६ ॥—कथा औतार की।

२-(क) लोहट पुत्र हेत करि, लीयौ अग्य लगाय।
भोपा का टकसाल्य गया दुष आपणौं सुणाय ॥ २४ ॥
जदि ता वाल्क की अवतार तिल समाय न लियौ अहार।
फमो दूध न थानक धार जीव जाग कव गा विचार ॥ २६ ॥
दोस दूरि करा जे वीर थानक चुघ पीव पीरि।
पुत्र सारौ करि द्या तोहि कहा वधाई पावा मोहि ॥ २७ ॥
तदि सतगुर बोल सुर वाणि भोपा न समभाव जाणि।
पट काजि क्यौं किया अकाज तरा जीव हत्या क्यौं आज ॥ ३० ।
सूभर छाली मारी तोहि गरभ्यौ जीव निकाल्या दोय।
सतगुर ल्पे सभ ही जीव मगला जीव पीछाण सीव ॥ ३२ ॥—कथा औतार का।

(ख) पुछ भोपा बाभणा विरमोहीं वीर तत।
विदियाधर वीरोटिया, चेला होय चालत ॥ ४ ॥
भरम तणी वमावली जागर कर अजाग।
तेर हति ग्यार कहैं, गुर बोल सुर वाण्य ॥ ६ ॥—कथा परसिध।

बाई[1] और प्रथम सबद कहा[2]। सम्प्रदाय में यह कथा अत्यन्त प्रसिद्ध और प्रचलित है, जिसके कई कारण हैं —

१-बाभण एक बसै जांगल, जाति मन मोकली थरलग।
बस जाय मुगाणा सीर बीरोटियो गमाय पीर ॥ १०९ ॥
पीर टाक जे जीम मत तो र पसीजे म्हारी मत।
ज्यों म्हे बोलां ऊ बोलाय, पाट लियो बधाई गाय ॥ ११२ ॥
चोसठि नाला एक वाल्हो, कियो गु भारि पहायो मनो।
घटीकरिणी चोपड्डी, कीयो गु भारि पहार्ण घडी ॥ ११६ ॥
बसदर तल रूई म एाय, म पलि धाण्य मरहा उ ग टोय।
पावर वरति भाई दिय राति पान तन मगावे पानि ॥ ११७ ॥
तल टयो चोपीहिए पाति चोपडी नाला मडि पानि।
याति याति बगन्र देव दीवा न जग कर द्गा पय ॥ ११८ ॥
देव कहे गु लि बामग मूढ मतरो गांव बालान कूड।
थोडी सी दा नुहायो थयो सीह न दहु ग्याल्हो कह्यो ॥ १२० ॥
कूडो बोल मुपि यावर, गहला मारो किणि विधि कर ॥ १२१ ॥
देव कहे तू गुणि पाडिया तल र रूई न जगे गीया।
तत न लाग मत्र न फुर गहला गारो रिणि विधि कर ॥ १२५ ॥
पाडे लोहट न पूछाय मोर वाच्य ऊ क्यों बोलाय।
आपर कहू अपूठो दीय तिह आपर को उत्तर दीय ॥ १२६ ॥
लोहट कहे म्हा भारति घणी, विथा न साभ बाल्य तणी ॥
तिह कारणि तू आण्यो जाय तो मू पांडि गरी न थाय ॥ १२७ ॥
पाडे कहै जे दीवा जग, तत मत्र मोह म्हारा लग।
दीवा जग न दीस लाय म्हारो मत्र न लाग काय ॥ १२८ ॥
देव कहे दीवा जग मारो धरिस्य मोहि।
दीवा सजल जगायस्यों पाड वमप न होय ॥ १२९ ॥
चोपडी नाला मेल्हा दूरि मल्य माटी आणी हजूरि।
आणी माटी माडयो घाट, चोपडी नाला पाणी घाति ॥ १३० ॥
वसन्र न दीहू दुवो जग्य दीवा सचदग हुवो।
दीठो किसन चिल्त परवाण गरब गल्या पडे का माण ॥ १३१ ॥
लोहट धोपो मन निवारि मिनप न पूछी इण ससारि।
हासा मन्य उ णी मत जाह अगम पुरिप अवतरियो आय ॥ १३३ ॥
देवजी लोहट न कहे कियो बोल सभालि।
सवलपि उदकि न राखिय हेव गाय दियो थे टालि ॥ १३४ ॥
पाच टाक तोहि अन जीमाय तो बाभण न दीज गाय ॥ १३५ ॥
कारी तो क म सारी होय पाडे दोस न जेज कोय ॥
इह पाडे का भाव विचारा जाण्यों वालक होयसी सारा ॥ १३६ ॥
असो भाव करि आवे आस सो क्यो करि मल्हिय निरास ? । १३७ ॥
—वील्होजी कथा औतारपात।

२-(क) धेन विपर घरि धारणो सिध मेटियो समाध।
गुर कहै गति सभली सतगुर सबद अग्याध ॥ १३ ॥ सुरजनजी, कथा परसिध ॥
(ख) सतगुर पिडत न समभाय, मसकति तेरी दियो मगाय।
तदि हरि लोहट नवट ह्वारि, दया रूप होय सबद उचारि ॥ ५० ॥
—सुरजनजी कथा औतार की।

१-'बाललीला'-काल की यह अन्तिम महत्त्वपूर्ण घटना है।

२-जाम्भोजी ने प्रथम 'सबद' इसी अवसर पर कहा।

३-इसके पश्चात् वे जंगल में पशु चराने लगे थे और

४-उनके उपचार के सब प्रयास इसके पश्चात् छोड़ दिए गए थे।

जाम्भोजी के जीवन के विषय में लिखने वाले प्रायः सभी लेखकों ने प्रकारान्तर से इस घटना का उल्लेख किया है। सुरजनजी इसकी पुष्टि करते हैं। उनके अनुसार यह पण्डित नागोर का है[1]। "सबदवाणी" के गद्य और पद्य प्रसंगों में भी इसका उल्लेख है[2]।

जाम्भोजी की बाल्यावस्था विषयक गलत धारणाओं का निरसन उपर्युक्त बातों और घटनाओं का विशेष महत्त्व इसलिए है कि इनसे जाम्भोजी के सम्बन्ध में प्रचलित कति-

---

१-(क) नगरे बाम बारोटियो, लोहट ल्यावण जाय।
भरम्या भेद न जाणई, दइय न आवे दाय ॥ ७ ॥
आवे रिजक उमंद करि, तल बाति करि त्यार।
विपर जगावे बासदे, वरज सिरजण हार ॥ ८ ॥
काची माटी कारवो, छलिया जल्हर छाण्य।
विष्य बसन्तरि बादिणो, जगिया जेह परवाण्य ॥ ११ ॥-कथा परसिध

(ख) पिंडत एक बस नागौर, तिस कूं पिंडत पूछ और।
नान्हा सु ण सुणावे लोय, बालक मारो करिसी सोय ॥ ३४ ॥
अठोतरि दीवा उतराय, करवे चौमटि नाल कराय।
बसन्तर मा परा कराय, दीतवार को नाव धराय ॥ ३६ ॥
करव जल पुरायो सोय पाडे मन्त्र पढे सजोय।
मा दा सतगुर न छुवाय दीवा दीजे बाति चडाय ॥ ३७ ॥
तन बाति ता जोति न होय, एमो अचभो सुण्यों न कोय।
जब लग दीवा जोति न होय तो लग मन्त्र न लागे कोय ॥ ४० ॥
जदि सतगुर बोल सुरजाण्य पाडे धोखो मन न आण्य ॥ ४२ ॥
काची माटी लई मगाय अठोतरि करवा टहराय ॥ ४५ ॥
ता मा जल पुरायो जास त सतगुर की व दू आस।
बाक हुकम कियौ तिणि वार जग्य वसंदर हुवौ तयार ॥ ४६ ॥
वीरोटिया लोहट ममभाय, अगम पुरिष अवतरियौ आय।
देह ता न्याणौ नाही कोय जिह की वाच नीरोतरि होय ॥ ४८ ॥
-कथा औतार की।

२-(क) 'काच करव नीर राषौ। काची माटी का दीवटीया कराय जा जा हि पाणी घतायो। हुकम सु दीया जगाया। जगाय बाभण नै परचो दीषाल्यौ। आदि सबदवाणी सतगुर की थी सतगुर वाच। गुरचीह्न "। —

(ख) चौमुपा बनाय करि पलीतो दियो सवार।
वो जगाव व बुझ बुझत न लागे बार ॥ ४ ॥
सिरै धून फू फू कर बहुता कर परयान।
मभ गए तब बोलिया सुण रे मूढ अजान ॥ ५ ॥
काच करव जल राख्यो सबद जगाया दीप।
बाभण को परचो दियो ऐसो अचरज कीप ॥ ६ ॥
जो बूझ्यो सोई कह्यो अपप लपायो भेव।
धायो सब गमाय के जद सबद कह्यो भभ देव ॥ ७ ॥ -प्रति सख्या ११२।

पर गलत धारणाओं का निराकरण होता है। वे ये हैं —

१-जाम्भोजी हांसा के गर्भ से उत्पन्न नहीं हुए थे, वे उनको कहीं पड़े मिले थे।

२- वे प्रारम्भिक ३४ साल तक (कई लेखकों के अनुसार ७ साल तक) एक शब्द भी नहीं बोले, वे गूंगे थे।

३-उन्होंने प्रथम "शब्द" ३४ वर्ष की आयु में कहा था तथा

४-अचम्भे के और कार्य करने के कारण उनका नाम अचम्भ या अचम्भा से 'जम्भ', जम्भा, जाम्भोजी' पड़ा। इन बातों का उल्लेख अधिकांश विभिन्न लेखकों और गजेटियरों में किया गया है[1]। परवर्ती लेखकों ने तो पूर्ववर्ती कथनों का अनुकरण मात्र किया है।

पहली बात के सम्बन्ध में वील्होजी, ऊदोजी, सुरजनजी आदि कवियों और वर्तमान लेखकों के उल्लेख ही पर्याप्त हैं[2] कि जाम्भोजी माता के गर्भ से उत्पन्न हुए थे। ३४ या ७ वर्षों तक मौन रहने वाली बात भी गलत प्रमाणित होती है। किसी भी हजूरी कवि ने ऐसा उल्लेख नहीं किया। वील्होजी की 'कथा औतारपात" से यह विदित होता है कि जाम्भोजी के कार्य आचार-व्यवहार आदि अन्य समवयस्क बालकों से नितान्त भिन्न कोटि के थे तथा वे सर्वथा निराहारी थे। लोग इस कारण उनको "गहला" कहने लगे थे। इस सम्बन्ध में ध्यातव्य है कि —

(क) लोग उनको 'गहला' कहते थे गूंगा नहीं। वहां के आसपास के लोगों की दृष्टि में ही जो अन्ध-विश्वासी, आचार-विचार हीन और मूर्ख थे[3], वे "गहले" थे। कालान्तर में सम्भावनाओं को बढ़ावा देकर उनको "गहले" से 'गूंगा' बना दिया गया।

(ख) वील्होजी की 'कथा औतारपात" के अनुसार, लोहटजी श्मशान-सेवी ब्राह्मण को कहते हैं कि यदि बालक पांच वचन भोजन करने लगे और "ज्यों म्हे बोलां ऊ बोलाय" अर्थात जैसे हम बोलते हैं वैसे यह बोलने लगे, तो बधाई में एक गाय दूंगा। तात्पर्य यह है कि बालक बोलता तो था, किन्तु वैसी बातें नहीं करता था जैसी अन्य लोग करते थे। कदाचित् उनकी बात दूसरों की बातों से भिन्न प्रकार की, आत्मज्ञान युक्त होती थी और वे मित-भाषी थे। स्पष्ट है कि वे बोलते थे, मौन नहीं रहते थे और गूंगे तो थे ही नहीं। 'लोग समझते थे कि ये गूंगे हैं, परन्तु वास्तव में ये गूंगे नहीं थे। ये जन्म से ही योगी थे और अपनी अलौकिक स्थिति में मस्त रहते थे'[4]।

(ग) इसी "कथा' में भोपों तथा श्मशान-सेवी ब्राह्मण के प्रसंग में जाम्भोजी के बोलने का उल्लेख है। अतः ३४ वर्षों तक मौन रहने की बात तो अलग, वे सात वर्ष तक

१-द्रष्टव्य-अध्याय २ में (२) के अन्तर्गत संख्या ३, १६, २७। सेवादास (कवि संख्या ८०,-"इंदव छंद') के अनुसार हांसा को जाम्भोजी गायों के धाड़े में रोते मिले थे -
नव मास बीता जंबू दीप में उजारो भयो, गवन के वार माहे, बाल रोव आय के।
दुनिया सकल कहे, बाळ प्रभु दीनो तम, हासल्दे माय गोद ले गई उठाय कै॥ ४॥

२-द्रष्टव्य-अध्याय २ में (१) के अन्तर्गत-संदर्भ संख्या १, ५, ८, ९, ३३, ४०, ५०, तथा (२) के-संदर्भ संख्या ४४, ५६, ५७ आदि।

३-द्रष्टव्य-वील्होजी कृत "कथा गुग्गलिये की" तथा अध्याय ३, -सामाजिक स्थिति।

४-योगांक, कल्याण, गोरखपुर, पृष्ठ ८१७, वर्ष १०, संख्या २, आश्विन, संवत १९९२।

भी मौन नही रहे थे। ३४ वर्ष की आयु (संवत १५४२) मे तो उन्होंने विष्णोई सम्प्रदाय की स्थापना की थी, मौन-भग नही किया था, जसा कि "गजेटियर" और "रिपोर्ट" लेखकों ने लिखा है।

"अचम्भे" से "जम्भ", "जाम्भा" नाम पडने की कल्पना भी निराधार है। विशेषण रूप म उनके अनेक कार्यों के लिए "उदवुद" (अद्भुत), "इचरज", "अचभ" आदि शब्दो का प्रयोग साम्प्रदायिक कवियो ने किया है। जहा तक "अचम्भ" शब्द का प्रश्न है, यह विशेषण रूप म उनके नाम जम्भ के साथ प्रयुक्त हुआ है। "अचम्भ जम्भ" के अनेक विशेषण-विशेष्य प्रयोग हुजूरी और परवर्ती कवियो के मिलते है जिनसे स्पष्ट है कि उनका वास्तविक नाम "जम्भ" (जाम्भोजी) ही था[1]।

२-"पाल-चारण"- काल (सवत १५१५ से १५२२)- श्मशान-सेवी ब्राह्मण वाली घटना के पश्चात जाम्भोजी जगल म "पाल" (पशु) चरान लगे। "धारे" (टीले) पर बठे हुए वे अपनी आज्ञा से ही पशु चराया करते थे। पशु सहज भाव से आते-जाते, खाते-पीते और जाम्भोजी की आज्ञा मानते थे[2]।

(क) धाडवियों से 'साढें' (ऊ टनिया) छुडाना-सबदवाणी के 'प्रसगो' से विदित होता है कि वन म इस प्रकार पशु चराते समय कभी जाम्भोजी ने ग्वालो के कहने पर किसी राव (सम्भवत ऊधरण का हावत) की साढें (ऊ टनियाँ) "धाडविया" (डाकुओ) से छुडवाई थी। यह देख कर ऊधरण का हावत न जाम्भोजी से चार प्रश्न किए जिनका उत्तर उन्होंने चार "सबद" कह कर दिया[3] (स्वीकृत सबद संख्या २, ३, ४, ५)। ऊधरण का हावत शाखा

१-अध्याय-२ मे (२) के अन्तगत, सदभ सख्या ८२, इन पक्तियो के लेखक का 'पृथ्वीनाथ और उनकी रचनाएँ' निबध।

२-(क) विणि रोटी विणि लाकडी, विणि पाणी विणि पाल।
परचो पसु पखेरा, थल्य बठो प्रतपाळ ॥ १७ ॥
हुकमे आव हुकम ज्य हुकम्य चराव बाल।
जगल्य थलि जीवा धणी, लपियो लील भुवाल ॥ १८ ॥
-सुरजनजी, कथा परसिध।

(ख) गाय भस्य छाली सलवार, बन मा चर कर निति सार।
भूपा न अन दीय अहार प्यास्या न जल कर तयार ॥ ५६ ॥
घरि हुकमैं हुव चुध जदि आय, नाहर चोर सताव नाहि।
हुकमे आव हुक्मे जाय, वाल गुवाल रहैं सग्य आय ॥ ५७ ॥
-सुरजनजी, कथा- औतार की।

(ग) हरि ओलख्यो जीवा मन माहि। सहजे आव सहजे जाय।
सहजै पीव सहजे चर। करताजी रो कहियौ कर ॥ २१ ॥ -कथा बाळलीला।

३-एक सम देवजी थल्यिा राज कर। राव रा वरग धाडविये लीया। देवजी सू सलबा आय नीसरया। देव वन पाल रखे छा जका कह्यो-रावजी की साढि छुडाव तो तू सति दव। देवजी कहै-थे गेडी कावा सगला असवार हुवो। असवार हुवा। देवजी कहि सगला ललकार कीवी। धाडविया की नजरि कटक आयो। साढे छोडे न्हाठा। ग्वारी साढ्या लार छा तका वाहर घाती। वाहरुवे टोला चरता दीठा। गुवालिया न कहै-रे मरदा साढ्या क छुडाई? "म्हार साथे भी दवजी छ अ णि छुटाई। और उमराव

(शेषांश आगे देखें)

राठोड राजपूत थे जो मडोर के राव काहाजी से चली थी। इस घटना का उल्लेख केसोजी ने भी किया है[1]।

(ख) **राठोड राव दूदा जोधावत का मिलना**–केसोजी के अनुसार, इस घटना के पश्चात वे पीपासर गए, जहा के कुएँ पर जोधावत राव दूदा ने भी डेरा कर रखा था। वहा वे अपनी आज्ञा से ही पशुओ को पानी पिलाने लगे। उन्होने बकरियो को पानी पीने का आदेश दिया, जिसे सुनकर वे तो पानी पीने के लिए उठी किन्तु बकरे बठे रहे। यह देखकर राव दूदा ने उनको 'आदेश' किया और अपनी इच्छा-पूर्ति की प्रार्थना की। वे मेडते से निकाल दिए गए थे और उसे पुन हस्तगत करना चाहते थे। जाम्भोजी ने उनको काठ-मूठ का तलवार और मेडता-प्राप्ति का आशीर्वाद दिया[2]। इसका उल्लेख (क) ऊदोजी नण, (ख) सुरजनजी, (ग) मुकनजी, (घ) परमानदजी, (ड) सेवादास, (च) गोकलजी आदि विष्णोई कवियो[3] के अतिरिक्त राजपूताना रिपोट और जोधपुर स्टेट गजेटियर म भी सविस्तर

चढ्या ऊभा, के उतरया। उधरण काहावत कर जोड अरज कीवी–"देवजी! थाहर पेट पूठि दीस नही, छाया दीस नही आप कुण बालक छो? श्री भाभाजी उवाच–"मोर छाया न माया" उधरण काहावत कहै–'राजि री उमरि थोडी दीस छ, वात घणा दीनी करो छो' 'भाभाजी! थे जाप कुण रो करो छो'? –प्रति सख्या २०१ से। (प्रति सख्या ११२ म यही प्रसग पद्य मे है)।

१–झोका ता टोला लिया, वन मा पुहुता जाय।
बाल्क कहै बुद्धर सुणो, सतगुर ल्योह छुडाय ॥३७॥
कर हाक कर ललकार, गेडा काम हुवा असवार।
जाण ? पाव कह्यो सुणाय, हजार लाप दल पुहुता जाय ॥ ३८ ॥
छाडया अग गया से हास, बाल्क ऊभा दीस पास।
वाहरू मन रलियाला थया, काठी नर लीवी साढ छुडाय ॥ ४० ॥
बाल्क कहै सुणो एक बात झम्भेसर कीवी एक घात।
वाहरू आय विलग्गा पाय वा जाण्यो तिहु लोकां राय ॥ ४१ ॥–कथा बाललीला।

२–पसुवा पाव पाल्ता, रामत रम ज रीत।
पीपासर गोमद गया, पाल्तिया सू प्रीत ॥ ५० ॥
मिरजणहार कह्यो सुणाय, अजिया उठो पीवो जाय।
अ नि छाली हुती एकठी, अपरम्पर र कहिय उठी ॥ ५४ ॥
पसव विमन पिछाणियो, भगवत भगव वेस।
बठया रहिया बाकरा, दूदो कर आदेस ॥ ५५ ॥
कर जोड दूदाजी कही, दूदेजी ओळखिया दई ॥ ५७ ॥
मो अपरम्पर पूरी आस, पारब्रह्म कीज परगास।
जाम्भ कहै करी पाछो मतो, मया करि दीनो मेडतो ॥ ५८ ॥
जम्भसर दगा जुगति, हरखो न आव हार।
काठ मू ठि करता कर त सूपी तरवार ॥ ६० ॥–केसोजी, कथा बाललीला।

३–(क) दूसरी आरता पीपासर मायं, दूदो न प्रभु परचो दिखाए ॥ २ ॥
(ख) दूदा न गर मेल्तो परच पम लहन।
मावा बीज मयक ज्यू दिन दिन कला चढ त ॥ २१ ॥–कथा परगिध।
(ग) दूदा मन मान कवल जान, निरन्तरी न भाय नुयो।
पीपासर पामी मनव लपायो उनरि पुबग अरज कियो। (शेषाश आगे देखे)

किया गया है[1]। "जोधपुर गजेटियर" में पीपासर के स्थान पर "हरसर" गाव भूल से लिखा गया है। "रिपोट" म मुसलमानो द्वारा मेंडता लिए जाने पर, सवत् १५४२ मे राव दूदा का वहा स भागना और इसी सवत मे उनका पीपासर के कुएँ पर जाम्भोजी से प्रथम बार मिलना लिखा है, जो गलत है। इस सवत् मे मडता पर मुसलमानो के किसी आक्रमण का उल्लेख इतिहास-ग्रथो मे नहीं मिलता। वस्तुस्थिति यह है कि इस समय तक तो राठौडो न मरुभूमि के विभिन्न प्रदेशो पर अपना शासन पूर्णरूपेण जमा लिया था। जोधपुर मे जोधाजी, बीकानेर म बीकाजी, छापर द्रोणपुर म बीदाजी तथा मेडता मे राव दूदाजी ने अपना-अपना शासन स्थापित कर रखा था। राव दूदा के दो युद्ध मुसलमानो के साथ हुए थे-सिरियाखान और मल्लूखान के साथ और दोनो ही इस सवत के बाद हुए थे। दूसरी ओर, इस सवत म तो सम्भरायल पर जाम्भोजी ने सम्प्रदाय का प्रवत्तन किया था तथा इससे पूव ही वे इस "थल" पर रहने लगे थे (विशेष द्रष्टव्य-वील्होजी कृत "कथा गुगलिय की")। इस घटना का समय विक्रम सवत १५१६ होना चाहिए। हरिनन्द (कवि सख्या-७६) नामक विश्णोई कवि ने एक "हरजस" मे लिखा है कि वरसिंह द्वारा दिए गए "देसौटे" (देश-निकाल) के समय राव दूदा को पीपासर मे जाम्भोजी ने उक्त आशीर्वाद दिया था —

प्रथम प्रवाड दूदो मेडतियो, पीपासर परचायो।
वरसग जु देसौटो दीन्हौ, सतगुर पाछौ पठायो॥ १॥

हीरानन्द (कवि सख्या-८६) ने अपने "हिंडोलणो" (परिशिष्ट मे उद्धृत) मे भी इसका उल्लेख किया है। बाँकीदास ने इस बात की पुष्टि की है कि वरसिंह ने दूदा को 'देसौटा' दिया था[2]। यह "देसौटा" सवत १५१८[3] के पश्चात और सवत् १५२५ (सन् १४६८)[4]

रूक करारे दान मुरारे रिध दीनी हरि राज दियो॥ ६॥-छद रोमकद।

(घ) हुक्म चराव पाल, हुक्मे पाँणी पीजिय।
बाला सगि जग बाप, कहियो बाला कीजिय।
कहियो बाला कीजिय, न कियो खेल करतार।
लोहटजी न चिरत दिखायो, मेह अखडी धार।
खेत निपायो साफ पहलू, उधरण परचो सार।
दूद न गढ मेडतो, हुक्म चराव पाल॥ ४॥-साखी।

(ङ) पीपासर वाम कुव जल उपरा आन दूदजी की फौज परी है॥ ११॥
दूदोजी आप तुरग चढे जब चावका मार कर धोरो पर है।
पाडो वगस जद मेडतो दीनो दूदो जभेसर नावे धर है॥ १२॥-इन्दव छद।

(च) सुपेख्यो स्वामी सोवनधार। नमो निजनाथ जको निराकार।
नरापति निरख नर मन राव। पिछाण्यो दूद परस्या पाव॥ १॥-परची।

१-द्रष्टव्य-अध्याय २ मे (२) के अन्तर्गत-सदर्भ सख्या ३ तथा ३१।
२-बाँकीदास री ख्यात, पृष्ठ ५७, वार्ता-६३६ सन १९५६।
३-आसोपा मारवाड का मूल इतिहास पृष्ठ १०७।
४-डा० कलाचन्द जैन एन्मियन्ट सिटीज आफ राजस्थान, मेहता-'दिस प्लेस वाज टेकन अवे इन १४६८ ए० डी० बाई दूनाजा, दि सन आफ राव जोधाजी' अप्रकाशित शोध, प्रबन्ध, राज० विश्वविद्यालय पुस्त०, जयपुर।

के बीच ही होना चाहिए। महलाणा गाव के श्री नारायणजी के पुत्र श्री जोगीराज भाट की वही मे, "सवत् १५१९ मे दूदाजी न परचो दियो" लिखा है, जो ठीक प्रतीत होता है। सम्प्रदाय मे भी यह बात प्रसिद्ध है कि ११ वष की आयु म (१५०८+११) जाम्भोजी ने दूदाजी को "परचा" दिया था। स्वामी ब्रह्मानन्दजी भी इसका अनुमोदन करते हैं[1]।

(ग) गुरु–जाम्भोजी की शिक्षा–दीक्षा और गुरु के सम्बन्ध म विशेष पता नही चलता। 'सबदवाणी' म एक स्थल पर 'गोरख गरू अपारा" (६३ १६) कह कर उन्होंने ससम्मान गोरखनाथ का उल्लेख किया है किन्तु इससे यह प्रकट नहीं होता कि वे गोरख को गुरु मानते ह। पुराने साम्प्रदायिक साहित्य म एतद् विषयक कोई सकेत नही मिलते। वतमान लेखकों म स्वामी ईश्वरानन्दजी[2], ब्रह्मानन्दजी[3], श्रीरामदासजी[4], मु शी रामलाल[5], कामता प्रसाद गुप्त[6], स्वामी सच्चिदानन्दजी[7] आदि के अनुसार जाम्भोजी को १६ वष की आयु म जगल म गोरखनाथ ने गुरु–दीक्षा दी थी। ऐतिहासिक दृष्टि से यह बात प्रमाणित नही की जा सकती क्योंकि सुप्रसिद्ध गोरखनाथ तो जाम्भोजी से कई सौ वष पूव हुए थे। सम्भवत गोरखनाथ उनके मनसा गुरु रहे हो। वे बहुश्रुत और अनुभव–ज्ञानी थे।

(घ) राव जोधाजी को बरीसाल नगाडा देना–सवत् १५२६ म जाम्भोजी ने राठौड राव जोधाजी को वरीसाल नगाडा दिया था। दुरगदास (सवत् १६००–१६८०, द्रष्टव्य–कवि सख्या ६३) ने एक हरजस म "कमधज राजा कारण, बरस अठारा देवि" कह कर इसका सकेत किया है। राव जोधाजी और उनके पुत्र बीकाजी जाम्भोजी क सम्पक म आए थ[8]। इतिहास–ग्रन्थो से पता चलता है कि सवत १५४४ मे राव जोधाजी न राव

१–विश्नाई धम विवेक पृष्ठ २४ सवत १६७१।
२–जम्भसागर,–'विज्ञापन' पृष्ठ ४३६, सवत् १९४६।
३–श्री जम्भदेव चरित्र भानु, पृष्ठ ३, पाद टिप्पणी पृष्ठ ४०
तथा विश्नोई धम विवेक, पृष्ठ २४।
४–जम्भदेव लघु चरित्र, पृष्ठ २६–३०, सवत १९६६।
५–विश्नोई धम वेदोक्त, पृष्ठ १८० सवत १६७५।
६–श्री विष्णु धम प्रकाश, पृष्ठ ७२–७३, कालपी, सन् १९२०।
७–श्री जम्भगीता, भूमिका, पृष्ठ ३, सवत् १९८५।
८–(क) इसकदर मौल्पे, परचि लागो पहली परि।
सप सन्तो मारिया, किया सुर भाभेसरि।
मक्मीरा काजिया, हुवा राजी गुर अग।
तिमर लिग वासरा, प्राग छन्द पग लग।
मातिन जोध दून मेल्त, माग राग मिधारिया।
जतमी भेट जगत गुर, जीव सीधार उधारिया॥ १२३॥–सुरजनजी, छप्पय।
(ख) परमान जा (कवि सख्या ८८) के ये कथन–
(१) जाधो बीको पून जननी, बीकम प्रगट ताम।
थापन अक्षर थरपिया, मान्यो धाम मुकाम॥ ४॥–साखी।
(२) रायमल वरसल मामाम्या न दून्यो मातिन राव।
वाको वाको हमेर वाघो जोघ दवाम्ण जाव॥ ३॥–साखी।
(३) 'राजस्था मेन्वाल' का सूची म भी दोनों के नाम हैं,
–प्रति सख्या २०१, पानियो २९९–३०१।

बीकाजी से एक तो लाडणू का परगना मागा था और दूसरे जोधपुर के भाइयां से राज्य के लिए दावा न करने का वचन। बीकाजी ने इन बातों को स्वीकार करते हुए बदले में तख्त, छत्र आदि पूजनीक वस्तुएँ मागी जिनको जोधाजी ने जोधपुर पहुच कर भेजने का वचन दिया था। जोधाजी की मृत्यु के पश्चात् ये वस्तुएँ बीकाजी को जोधपुर पर चढाई करके प्राप्त करनी पड़ी थी[1]। इनमें जाम्भोजी का दिया हुआ वरीसाल नगाडा भी एक है। वर्ष में दो बार–दशहरे और दीवाली के दिन बीकानेर नरेश स्वयं इनका पूजन करते रहे हैं[2]। इस सदर्भ में पाउलेट ने (बीकानेर स्टेट गजेटियर, पृष्ठ ९, पादटिप्पणी, बीकानेर, सन् १९३२) जाम्भोजी को 'थापन' बताया है, जो गलत है। वर्तमान में यह नगाडा बीकानेर के जूनागढ में सुरक्षित है। दुरगदास ने "कमधज राजा" निस्सदेह राव जोधोजी के लिए लिखा है, जिनके लिए १८ साल की आयु (सवत् १५२६) में गुरु ने "प्रवाडा" किया। "प्रवाडा" का तात्पर्य यहा विशिष्ट कार्य से है। अनेक साम्प्रदायिक उल्लेखों और वार्ता विशेषत राव दूदा वाली घटना के सदर्भ में विचार करने से यह "प्रवाडा" उक्त नगाडा प्रदान करना ही प्रतीत होता है। इससे जाम्भोजी की प्रसिद्धि, सिद्धि और राठौड–राजघरानों में मान्यता का भलीभाति पता चलता है।

जाम्भोजी और उनके पश्चात् भी यह मान्यता बढती ही गई जिसकी पुष्टि एक अन्य बात से भी होती है। सम्प्रदाय में खेजडा अत्यन्त पवित्र माना जाता है और उसकी रक्षा की जाती है। इसके अतिरिक्त हरे वृक्ष काटने की मनाही है। यह सम्प्रदाय के २९ धर्मनियमों में से एक है। जाम्भोजी के एतद् विषयक भाव को हजूरी कवि ऊदोजी नैण (देखें–कवि सख्या ३७) ने धर्म–नियम सम्बन्धी कवित्त में इस प्रकार व्यक्त किया है —

(क) करं रूख प्रतिपाल, खेजडा रखत रखावै।
(ख) जीव दया पालणी, रूख लीलो नहीं घावै।

इसको गुरुआज्ञा मान कर धर्म–रक्षा भाव से अनेक विष्णोई स्त्री–पुरुषों ने खेजडों और हरे वृक्षों के काटे जाने पर प्रतिवाद स्वरूप स्वेच्छा से प्राण दिए हैं जिसके अनेक उदाहरण मिलते हैं (द्रष्टव्य–'विष्णोई सम्प्रदाय' तथा 'विष्णोई–साहित्य' नामक अध्याय)। बीकानेर के राजकीय झण्डे में 'मोटो' (मूलमन्त्र) के सिर पर खेजडे का वृक्ष रखा गया है[3]। यह बीकानेर के राजघराने में कालान्तर में हुई जाम्भोजी और विष्णोई सम्प्रदाय की मान्यता का भी सूचक है।

१–(क) दि हाउस आफ बीकानेर, परा २१३, पृष्ठ ११०, बीकानेर, सन् १९०३।
(ख) बीकानेर गोल्डन जुबली (सन १८८७–१९३७) (अग्रेजी), बीकानेर राज्य प्रकाशन।
२–ओझा बीकानेर राज्य का इतिहास, प्रथम खण्ड, पृष्ठ १०६, पादटिप्पणी।
३–(क) श्री जगदीशसिंह गहलोत मारवाड राज्य का इतिहास, पृष्ठ ५४६, जोधपुर, सन १९२५।
(ख) मुन्शी देवीप्रसाद रजवाडो के झडे और राजचिह्न। विद्याभूषण-ग्रन्थ-सग्रह सूची, पृष्ठ १२२, क्रमाक २९१ सन १९६१।

(ङ) जाम्भोजी का ब्रह्मचारी रहने का सकल्प लोहट हांसा का स्वर्गवास—

विवाह की बात उठने पर जाम्भोजी ने माता पिता को आजीवन ब्रह्मचारी रहने का अपना पूर्व निश्चय बताया। उनके इस दृढ सकल्प को देख कर कालान्तर में वे भी मान गए। सवत १५४० के चैत सुदि नवमी को लोहटजी का तथा इसके पाँच मास पश्चात् इसी सवत् के भादो की पूर्णिमा को हांसा का स्वर्गवास हुआ[1]। जाम्भोजी अपनी समस्त सम्पत्ति त्याग कर समराथल पर रहने लगे।

३ सम्प्रदाय-प्रवर्तन (सवत १५४२)-सवत् १५४२ में राजस्थान में भीषण अकाल पड़ा। विष्णोई कवियों[2] के अतिरिक्त इसका उल्लेख कविराजा सूर्यमल्ल मिश्रण और चारण रामनाथ रत्नू ने भी किया[3] है। जाम्भोजी इससे पूर्व ही समराथल पर रहने लगे[4] थे। उन्होंने अकाल-ग्रस्त लोगों की अन्न-धन प्राप्ति अनेक प्रकार से सहायता की। इसी साल में कार्तिक वदि अष्टमी को समराथल पर, स्नान कर हाथ में माला और मुख से जप करते हुए[5] उन्होंने कलश-स्थापन कर विष्णोई सम्प्रदाय का प्रवर्तन किया और लोगों को ज्ञानोप देश दिया[6]। इसको सुनकर पूल्होजी के मन में उत्पन्न शंका का समाधान जाम्भोजी ने

१-स्वामी ब्रह्मानन्दजी श्री जम्भदेव चरित्र भानु, पृष्ठ ४१ से ४३।

२-(क) समत कहाव पनरासयो, कुसमू सबल बयाले पयो।
जीवा जू णि सताई भूप, गउवा मिनया इधको दुप ॥
-वील्होजी, कथा गुगलिय की।

(ख) काल बयालो करम गति, परच हीरा पकान।
साह परचा भजिसी, पति राप प्रतपाल ॥ २२ ॥
-सुरजनजी, कथा परसिध आदि।

३-(क) वंशभास्कर तीसरा भाग, पृष्ठ १९६४-६५ छद ३१ ,७,
जोधपुर, सवत १९५६।

(ख) इतिहास राजस्थान, छठा अध्याय पृष्ठ २६१ सवत १९४८।

४-जगत गरू जगल वस वासो मभि वणाह।
भेद प्रगास भाव करि गुर तारिसी घणाह ॥ १ ॥
जगल थल्य देवजी रहै जै को पूछ तो गुर कहै।
पूछ नही लोग गिंवार, सतगुर तणी न जाणै सार ॥ ६ ॥-वील्होजी कथा गुगलिय की।

५-करि माला मुप जाप करि सोह मेटियो कुघान।
पहली कळस परठियो, सब्य ब्रहमाण सिनान ॥ ४८ ॥-सुरजनजी, कथा परसिध।

६-गुर उपन्देस दीय ते सुण्या। गर परगट आप गु ए घणा।
पहली परि फुरमाव दया। बिसन नाव जपौ सुचि कया ॥ ८२ ॥
क्रोध माण माया क्लोम। गुर वरज्या पाप का थोभ।
सतगुर फरमाया ध्रम च्यारि। दान सील तप भाव विचारि ॥ ८३ ॥
अ नहट प्रत मानियो परो। भापियो साच भूठ परहरो।
वरज्या गरु कुसग कुपात। जा त जीवगो दोजकि जात ॥ ८४ ॥
काया निरमल जल्य भाजणै। वाचा नमल मति बोलणै।
मन निरमलो ग्यान सू होय। पाचू इद्री रहै समोय ॥ ८५ ॥
गुर निरमळ निकलक गुर पर उपगार करत।
वील्ह कहै गुर दाषव्यो, मुकति खत को पथ ॥ ८६ ॥-वील्होजी, कथा गुगलिय की।

किया। तब सर्वप्रथम वे ही सम्प्रदाय में दीक्षित हुए[1]। लोगों को बिश्णोई बनाने का कार्य इस अष्टमी से अमावस्या तक निरंतर चलता रहा। सम्प्रदाय-प्रवर्त्तन और उसकी पृष्ठभूमि के सम्यक परिचय के लिये वील्होजी कृत "कथा गुगलिये की", "कथा पूल्होजी की", सुरजनजी का "कथा औतार की" आदि रचनाएँ अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं जिनमें एतद् विषयक घटनाओं का सविस्तर वर्णन किया गया है। संवत् १५४२ में सम्प्रदाय-प्रवर्त्तन का उल्लेख अनेक कवियों ने किया है[2], केवल परमानन्दजी का कथन कुछ भिन्न है। उनके अनुसार, संवत १५४२ में जाम्भोजी ने अकाल पीड़ितों की सहायता की और संवत १५४३ के कार्तिक वदि अष्टमी को "विसनपंथ" प्रकट किया[3]। इसका स्पष्टीकरण आवश्यक है। वील्होजी ने लिखा है कि चार महीने सर्दी के बीतने के बाद ग्रीष्मऋतु आई। फिर सावन को निकट आता जान कर लोगों ने सिन्ध से 'बीज लाने का विचार किया[4]। सुरजनजी का कथन है कि जाम्भोजी ने आठ मास-नवें महीने आषाढ लगने तक अन्न दिया, उसके बाद दुष्काल दूर

१-(क) भाभेसर वाचा भूठ न होय। गुर का कह्यो करो सोह कोय।
पूल्हे दीन्ही साषि बताय। सोहुं को लागो गुर क पाय॥
पहराजा की परतीत ता। जाग्यो पूरव अंक।
पूल्है की परतीत ता। अब पथ चल्यो निसंक॥ ९५॥
गिणती कोय न जाणही। चाल्यो पथ अपार।
पूल्है की परतीत त सतगुर वाचा सार॥ ९६।-सुरजनजी, कथा औतार की।
(ग) मैं मुरलोके सभली हुवं मिरजणहार॥
पहली पूल्ह परचियो, हरि पथ चालणहार॥ ४७॥-सुरजनजी, कथा परमिध।
२-(क) वा बयाळो वरत सही, अन्न दे जीव उवारिया।
कातिग वदि हरि कल्स थाप्यो, सतगुर जुगि जुगि तारिया।
सतगुर जुगि तरण तारण, घ्रम धारा कलिजुगे।
सुरताण राण वर्पाणि सुर नर परचि गुर लागा पगे।
अंधियार घर मा सूर ऊगो तीनि तत तावर घटयो।
कातिग वदि हरि कल्स थाप्यो, पथ बयाले परगटयो॥ २॥ सुरजनजी, साखी।
(घ) समत बयाले माह काती वद कळस थप्यो,
मुकति को व्हार कीनो साचो गुर जानिय॥ १८॥-सेवादास।
(ग) प्रति संख्या १६३, जम्भसार, प्रकरण ८,-साहबरामजी कृत।
३-(क)-परगट कीयो पंथ, बयाळ मा अन्न अपियो।
तयाळ कातिक मास, थिरनामी कलस थरपियो।
थिरनामी कल्स थरपियो, त प्रचिया सुरग देपि।
पहली पूल्ह परचियो, आलप्यो अलेषि।
ज्यों मनी माह घ्रत काढ्यो, सत्र सागर मथि।
परमाणद पूर धणी, प्रगट कीयो पथ॥ त्यारे चक परचाविया॥५॥३॥-साखी।
(ग) "समत १५४३ काती वदे आठम्य पहर दीन चडता कल्स थपना कीवी। त्यारे चक मा परमोध कीवी। वीसन पथ कायम कीयो'।-'साका' प्रति संख्या २०१।
४-च्यारि महीना सियाले गयो। ताती रति उन्हाली आयो।
दम मतो कीयो लोकाह। नादो ऊठ बोसाही जाह॥ ३१॥
मतो उपायो सिंघ को। किराक लियावा मोलि।
आव सावण ढूकडो। करां हला को सूत॥ ३२॥-कथा गुगलिय की।

हो गया[1]। तात्पर्य यह है कि कार्तिक से ज्येष्ठ मास तक अन्न दिया गया। आषाढ के पश्चात् कार्तिक वदि में कलश-स्थापना की गई और संवत् १५४२ का था। स्पष्ट है कि ये दोनों कवि संवत् की गणना कार्तिक सुदि से करते हैं और परमानन्दजी चत्रादि से। राजस्थान में संवत का आरम्भ श्रावण, भाद्रपद, कार्तिक और चत्रादि से माना जाता रहा है[2]। वील्हाजी ने ' बरस पांच बावीस पाल एता दिन चारी" कह कर संवत् १५४२ का ही संकेत किया है। आधुनिक काल के सभी लेखक इसका समर्थन करते ही हैं।

सम्प्रदाय-प्रवर्त्तन के पश्चात जाम्भोजी की कीर्ति दूर-दूर तक फैल गई। छोटी बड़ी सभी जातियां, वर्गों और पेशों के लोग अनेक कारणों से उनके पास आने लगे।

४-ज्ञानोपदेश-काल (संवत १५४२-१५९३)-संवत् १५४२ के बाद जाम्भोजी के जीवन संबंधी घटनाओं का क्रमबद्ध उल्लेख तो नहीं मिलता किन्तु साम्प्रदायिक साहित्य से इस सम्बन्ध में पर्याप्त प्रकाश पड़ता है। उनके सम्पर्क में अनेक प्रकार के लोगों के आने के कतिपय प्रधान कारण ये थे —(१) उनका महिमामय व्यक्तित्व, (२) परोपकारी वृत्ति, (३) ज्ञानोपदेश सुन कर, (४) जिज्ञासा और शंका-समाधान हेतु, (५) सिद्धिपरिचय के लिये, (६) अन्य लोगों को अनुयायी बनते देख कर, (७) सम्प्रदाय को श्रेष्ठ समझकर, (८) कार्य विशेष की सिद्धि के निमित्त आदि। "सबदवाणी"-कथन तथा सम्प्रदाय के प्रचार-प्रसार और स्वयं की दृष्टि से जाम्भोजी का यह समय अत्यन्त महत्त्वपूर्ण था।

कालक्रम की दृष्टि से दो पक्ष जिन इतिहास या सम्प्रदाय प्रसिद्ध व्यक्तियों से जाम्भोजी या उनके अनुयायियों का सम्पर्क या मिलना रहा, उनसे सम्बन्धित बातों और घटनाओं का काल निर्धारण किया जा सकता है। इनके अतिरिक्त अनेक अन्य प्रसिद्ध और सामान्य व्यक्ति भी किसी न किसी कारणवश उनसे प्रभावित होकर सम्प्रदाय में दीक्षित हुए थे। उनमें सम्बन्धित जाम्भोजी की-जीवन-घटनाओं का विवरण कालक्रम से दिया जाना सम्भव नहीं है। मोटे रूप से ऐसे व्यक्तियों के सम्बन्ध में यही कहा जा सकता है कि वे इस दीर्घ काल में किसी न किसी समय उनके सम्पर्क में आए थे। इस प्रकार ऐतिहासिक दृष्टि से जाम्भोजी के इस जीवनकाल के दो पक्ष दिखाई देते हैं —

(क) वह-जिससे सम्बन्धित घटनाओं के काल का निश्चय या अनुमान किया जा सकता है,

(ख) वह-जिससे सम्बन्धित अनेक स्त्री-पुरुषों और घटनाओं का काल निर्धारण नहीं किया जा सकता।

आगे इस आधार से जाम्भोजी का जीवनवृत्त दिया जा रहा है।

(क) घटनाएँ या बातें जिनका काल लगभग निश्चित है -

(१)-ऊदोजी नण और कुलचन्दराय अग्रवाल (कवि संख्या ३७, ४१)-सबदवाणी के

१-(क) आठ मास इकातर। आणे अन अभग ॥ ३० ॥
वीतो जेठ अषाढ पष। इंद मया आदेस ॥ ३३ ॥-कथा परसिध ॥
(ख) मेरी वाचा भंग न होय। देस्यौं अन नव लग तोहि ॥ ६२ ॥
जदि आग आयो बरसाल। वूठो मेह घट्यो जदि काल ॥ ७२ ॥-कथा औतार की।
२-श्यामलदास वीरविनोद, प्रथम भाग, पृष्ठ ११९ तथा द्वितीय भाग "भूमिका" आदि।

"प्रसगो"[1] तथा अन्य रचनाओ मे ऊदोजी नण का उल्लेख आया है। कुलचदजी की जमात के साथ सम्भराथळ पर जाकर वे जाम्भोजी के शिष्य हुए थे। प्रधान कारण यह था कि जिस देवी के वे भोपे थे वह मोक्ष प्रदान करने मे असमर्थ थी। जाम्भोजी ने एक "सवद" (सख्या ६६) कह कर उनको ज्ञानोपदेश दिया था। ऊदोजी नण बहुत बडे और प्रसिद्ध कवि हुए हैं। तजोजी के पश्चात सम्प्रदाय के व्याख्याता व ही विशेष रूप से माने गये थे। दोना सवत १५४५-५० के आसपास जाम्भोजी से मिले थे। (विशेष द्रष्टव्य—कवि सख्या ३७ और ४१)।

२-नेतसी सोलकी, मल्लूखा, राव सातल—केसोजी की "कथा मेडते की" तथा सवद-वाणी क गद्य-पद्य "प्रसगा" म अजमेर के सूबेदार मल्लूखा से नेतसी सोल्की को जाम्भोजी द्वारा छुड्वाये जाने का सविस्तर वर्णन है[2]। इस अवसर पर मल्लूखा को समझाने के निमित्त कतिपय "सवद" कहने का भी उल्लेख मिलता है (सवद सख्या ६४, ६७, ६८ और

१- 'मागळोद जमाती आया। ऊदो नण देवी को भोपो कहै—जमातिया, इह महमाई देवी न पूजि, पाछा जावौ। देव कर छ सो देवी करसि। वीमनाई कहै—देवी सुरग देसी? देवी ऊद क घटि आय बोली—सुरगा मा क्योइ नही। सुरगा मा सुरग मटामटि छ, पणि मेर नही। जमातिया साथी ऊदो देवजी क हजूरि आयो। विसनोइ हुवो। ऊनै कहै—देवजी, कहौ तो देवी का गीत गाऊ। श्री भाभोजी सवद कहैं "वीसन वीमन"। —प्रति सख्या २०१।

—पद्य-प्रसग के लिए द्रष्टव्य—प्रति सख्या ११२, पत्र १६, १७।

२-"तोड सोल्पी राज कर नेतसी। जिण नू चारण गीत कह्या। कूडा बिडदाव घणा दाहा। महलूपान निवाब अजमेर क थाण। जिणि सुण्या। मन मा अहकार कियो। चढि अर तोन्हे मार्यो। बद कीवी। नेतसी न पकड्यो। अजमेर आण्यों। चारण कना सौं उलटा गीत कहाया। नेतसी राठोडा ने ओठी मेल्ह्या। मामा कागद बाच्या। जोधपुर टीक सातलि साथ भेळो कियो। चौंडावत रिडमलोत जोधावत भेला हुवा। वार राव जोधपुर थी वार अ णी करि अड्या"—(प्रति स० २६, फोलियो २८ से)। "पीहियावल थी नेडो काकोल्राव तलाव डेरा किया। दूद जोधावत न भाभोजी मिल्या। थावलै भाभोजी प्रगट। सातेल राव द्रबार कियो। सातेल कहै—सतगुर मिल त सासो भाज। उमराव कह—रावजी क्यों? सातेल कहै—रे भाई, सळे काई आव नही, लडाई करण रो तो बूता नहो। टका दिया तो आपणी काची हुवै। दूदो कह—भाभजी रे पाए हालो, सोह भला होयसी। "हमैं भाभोजी कठ रह्या?' दूदो कहै—अठ थावल छै। छडी असवारी कण पाण भाभजी रे पाए आया। सातेल मन मा अटकल—ऊभा ऊभा कारज सवार तो सतगुर। राठोड प्रदेपणा दे पगे लागा। जेस पान की असवारी आई। राठोडा क साथ का को क्योई को क्योंई कहण लागा। सतगुर कहैं—डेरो पासाऊ करो। चता मत करो। पान साथ पातसाही फोज। पान माय कदम पोसी कीवी। श्री भाभोजी सबन्वाणी कहै—उमाज गुमाज (सवद सख्या ६४)। —पान कहै—नेता क्या है जान कबुन है। पीरजी, दहू गा पीछ, छोडू गा पहला। ऊभाऊभ मगायो। हथणी चाडि अर ल्याया। भाभेजी क हजूरि आण्य बेडी काटी। महलूपान कहै—बे नेता, यों जाएगा, मामा का जोर करिक छुटोहू। सो नहो। पीर न छुडाया है। नेतसी मामा सौं मिल्यो। मामा कहै—किण तर छुटो? नेतसी कहै—भाभेजी छुडायो। राठोड पुसी हूवा'—प्रति सख्या २६ २०१। पद्य प्रसग के लिए द्रष्टव्य—प्रति ११२।

६६) जिनको सुन कर उसने गो-हत्या बन्द करवाई[1] और मांस खाना छोड दिया। इसी अवसर पर जोधपुर के राव सातल ने अपने राज्य के विष्णोइयों को सर्वथा कर-मुक्त करना चाहा किन्तु जाम्भोजी के अनुरोध पर उनकी आमदनी का पाँचवां हिस्सा लेना स्वीकार किया[2]। रावजी ने जाम्भोजी से ज्ञान-चर्चा भी की। फलस्वरूप उन्होंने कई "सबद" कहे (संख्या ७० ७१)। राठोडा के पुरोहित मूला के प्रति भी उन्होंने एक "सबद" (स्वीकृत संख्या ७२) कहा। राठौडों ने जाम्भोजी के उपदेशो पर चलने का संकल्प किया।

ध्यातव्य है कि केसोजी की "कथा मेडत की" तथा सबदवाणी के "प्रसगो" म अद्भुत साम्य है। इतिहास ग्रन्थो म ऐसी किसी घटना का संकेत नही मिलता किन्तु साम्प्रदायिक साहित्य म इसके अनेक उल्लेख मिलते हैं।

टोडारायसिंह पर संवत १५३० के लगभग सोलकी राव सुरताण का शासन था[3] किन्तु नेतसी सोलकी के राज करने का उल्लेख नही मिलता। इस घटना का समय संवत १५४५ और १५४८ के बीच है क्योकि इससे सम्बन्धित सभी व्यक्तियों का इस बीच वर्तमान-रहना प्रमाणित[4] है।

३-द्रोणपुर के राठोड राव बीदा से मोती मेघवाल को छुड़वाना-इसका विस्तृत विवरण वील्होजी ने "कथा दुणपुर की" म दिया है। सुरजनजी[5], दुरगदास (द्रष्टव्य-कवि

१-(क) "महलूपान गउ हतावणी वरजाई। गोसत पाणी छोड्यो। पीर कही सो मानी। चढि अजमेर चाल्यो"। -प्रति संख्या २०१।
(ख) पान अरज कर ऊ आय, बदा न करणी फुरमाय।
यौं मुख ता बोल्यो सुरराय, मोजा मत मरावौ गाय ॥ ८९ ॥
दूजा पीर नही तु म तूल, पीर कह्या सो किया कबूल।
होती वेढि जका अब रही, पेड वपेड हुई अब सही ॥ ९० ॥
फौज अपूठी चाली फेरि, पान पड्या चाल्या अजमेरि।
करताजी री कहियो कियो, पान पुसी होय घरा दिस गयो ॥ ९१ ॥
-केसोजी कृत कथा मेडत की।

२-वल्य राठोडा ऊ कही, सामलय बुधर भेद।
विसनोई करिस्या अकर, हुकम करो हरिदेव ॥ १०२ ॥
सतगुर कहै सातिल करि चीत विसनोइया सू पाळौ प्रीति।
देव कहै राठौड़ा सुणौं, विसनोई गुरभाई गिणौं ॥ १०३ ॥
अकर किया तो अवगण होय, करम कहै सासंलियो सोय।
दव कहै थे ताणो मानू, पाचवों वाटो ल्यो अा कनू ॥ १०४ ॥
हक दीज हक लीज जाण्य, सिरजणहार कह्यो सुबाण्य।
सातिल सू करता ऊ कही, सातिल हू शिप हुवौ सही ॥ १०५ ॥
-केसोजी, कथा मेडत की।

३-डा० कैलाशचन्द्र जैन एन्सियन्ट सिटीज आफ राजस्थान,-'टोडा रायसिंह'-पृ० २१६।

४-(क) रामकरण आसोपा मारवाड का मूल इतिहास, पृ० ११४, ११७।
(ख) ओझा जोधपुर राज्य का इतिहास, प्रथम खण्ड, पृ० २६१।
(ग) हरविलास सारडा अजमेर-हिस्टोरिकल एण्ड डिस्क्रिप्टिव, पृ० १५०।
(घ) श्यामलदास वीरविनोद, दूसरा भाग, पृ० ३३३।

५-(क) सहर द्रूणपुरि विसराम साघ एक मोतियो नाम।   (शेषांश आगे देखें)

सख्या ६३), परमानन्दजी,[1] हीरानन्द (द्रष्टव्य-'परिशिष्ट' मे हिंडोलणो) आदि अन्य अनेक कवियो की रचनाओ तथा सबदवाणी के 'प्रसगो'[2] से इसकी पुष्टि होती है। इस अवसर पर "सुकळ हस" सबद (सख्या ६३) कहने का उल्लेख मिलता है। घटना का समय सवत १५४२ और १५७० के बीच किसी समय-अनुमानत सवत् १५५०-१५५५ के आसपास होना चाहिए। प्रथम कारण तो यह है कि इस समय तक सम्प्रदाय की जडें काफी मजबूत हो गई लगती हैं जिसम कुछ समय भी लगा होगा। द्वितीय, सवत् १५७० तक इस घटना के काफी प्रसिद्ध हो जाने का प्रमाण मिलता है। इस सवत् मे जाम्भोजी "जत-समद" की प्रतिष्ठा कराने जसलमेर गए थे। वीलहोजी की "कथा जतलमेर की" म रावल जतसी के कथन मे इसका सकेत मिलता है[3]। तृतीय, यह घटना राव बीदा के बीदासर बसान से पूव, द्रोणपुर म रहत समय घटी थी। बीदासर उसने सवत १५६८ मे बसाया था[4]। इन पर विचार करन स प्रस्तुत घटना का समय उपयुक्त अनुमित है।

४-सवत १५५३-५४ के अकाल मे सहायता करना-इस समय पडे अकाल म जाम्भोजी ने लोगा की, विशेष रूप से पशुओ की रक्षा की थी[5]। इस अकाल की पुष्टि वीठू सूजा रचित "छद राव जैतसी रो" से भी होती है (छद सख्या ५४)।

५-अन्य मतानुयायी और विष्णोई सम्प्रदाय-जाम्भोजी की फलती हुई प्रसिद्धि के कारण दूसरे सम्प्रदायो के लोग भी विष्णोई सम्प्रदाय म आने लगे। सबदवाणी के "प्रसगो" म इसके अनेक उदाहरण मिलते हैं।

नागौर का रामू सुराणा विष्णोइयो को "करनी-क्रिया" से रोकता था। किसी समय सम्भरायल पर एक सबद (सख्या ३०) सुन कर उसने जाम्भोजी से जीव के जन्म-

---

विसनोई के धरम्य आचारि, किरिया साभ सुचील ससारि ॥ १८० ॥
नीच जाति क्यों उतिम सारि पठव दूत लिया हकारि।
कहै राव करो कुल काम, क गरन्य मारू काढू चाम ॥ १८२ ॥
अटक्यौ साध कियो अहकार, सतगुर जोय छुडावण हार ॥ १८४ ॥
—कथा औतार की।

(ख) मोतियो साध अग्याध मत्त, रग फाभेसर ग्यान रत।
सामळी वात बीद सकारी, थापि का जाति नियानि थारी ॥ ६५ ॥
राति एक बिच दूणराया, आप ले थाट जमाति आया।
सामळी वात बीद सकारा, आवियो मेछ पूछ अकारी ॥ ६७ ॥
वदिहू कढियो ठढि वाही, सपदा साध अग्याध साई ॥ १०८ ॥-कथा परसिध।

१-मोतिय की परलग्या रापी परचा दिया अपार।
हासिम कासिम साध उबार्या इसकदर की वार ॥ ५ ॥-साखी।

२-"मोतिय मेघ न रोकयौ, त सम देवजी द्रुणपुरे आया।"-प्रति सख्या २०१।
पद्य-प्रसग के लिए द्रष्टव्य-प्रति सख्या ११२।

३-मीठ मिल्य पालटिय पारा गुर मिलिय रा अ उपगारा।
गुर पाणी हुंतो दूध पियाव, नीबडिया नाळेर निपाव ॥ ६५ ॥

४-राजस्थानी वाता, पृ० २०६ सम्पादक-सूयकरण पारीक, दिल्ली, सन् १९३४।

५-तेपन घात पूगी त काई उतरे जैठ असाढ आई ॥ १०८ ॥
जागियो काल असाल जात, धास तुट थळे पाळ घात ॥ १०९ ॥

मरण और विष्णु-जप विषयक कई प्रश्न किये। इनका उत्तर उन्होंने दो सबद (३१, ३२) कह कर दिया। उस समय एक 'जोगी' भी वहाँ उपस्थित था। उसने पूछा-"क्या वेद-कतेब में कोई बात झूठी भी है?" जाम्भोजी ने इस पर पाँच सबद (संख्या ३३ से ३७) कहे, जिनको सुनकर वह विष्णोई हो गया। पश्चात् वह एक टीले पर गया जहाँ "बाला जोगी" लखमणनाथ के भंडारे पर अनेक "जोगी" एकत्र थे। उसने "जोगियों" के प्रसाद लेने से इन्कार कर दिया। "प्रसंगों" में इसके फलस्वरूप "जोगियों" की प्रतिक्रिया और उभय पक्ष में परस्पर प्रतिवाद एवं सिद्धि-प्रदर्शन का विस्तार से वर्णन किया गया है[1]। लोहापांगळ के विष्णोई सम्प्रदायानुयायी होने के अनेक उल्लेखों से भी इसकी पुष्टि होती है। लोहापांगळ

१-रामदास कै परतीति आई। सतगुर कही साच करि मानी। देवजी कै दीवाण एक जोगी आयो। रामदास पूछया, देवजी कह्या। जोगी सबद सुण्या। जोगी कहै-गुरू कोई वेद कतेब मां बोल भूठा बी है? सबद सुणि जोगी वीसनोई हुवो। वीसनोई हुवा पछै टील गयो। टील जोगी बालो लषमण रहै। जहं कै भंडारो छो। भंडार जोगी भेला हुवा। वीसनोई नै कहै-भुगति करि। वीसनोई भुगति नाकारी। जोगी रीसाणा। जोगी कहै-कुण तेरा पीर? कुण तेरा राह? तै नाथ कै घर की भुगति नाकारी। वीसनोई कहै-मेरै भाभोजी पीर। सतपंथ की राह। जोगी कहै-तेरै पीर की और हमारी बात। जोगा किते एक दिन भाभजी कै हजूरि आया। जोगिये एक जोगी भाभजी कनै मेल्हयो। जोगी कहै-भाभाजी, इहां बाळा लषमण आवता है, तम साम्है चलि कै आदेस करि कै पाउ लगो। देवजी कहै-बाळ लषमण मां कै आसति इधकार छै? जोगी कहै-परभात तो बाळो वेस करै दोपरे तो जवान वेस करै, सांझ ब्रध वेस करै, ज्यौं बाळो लषमण कहावै। वीसनोई कहैं-घणा वेस तो वेस्या करै। श्री देवजी कहै- 'लषमण (सबद ३८)। जोगी कहै-बाला लषमण है सो तया का भुष दष नाही। छोति नाहि। जोगियै सबद मान्यो नही। देवजी नाल्हिय बागडव नू मेल्ह्यो। नाल्हियो जोगियां कनै गयो। कुलाछ मारि कूदयो। ताल एक आसणि माडि रह्यौ। लषमण है सो मेरै पास आसण माडो। जोगी हारया। आदेस आदेस करि उठि चाल्या। का दूरि गया। कहै-भाभोजी निरहारी पुरिष कहावै है। आ बात भूठी। कै काहाई जाय जीमै आवै, कै काई आण्य जिमावै। चलो-या ठीक करगे। भाभजी दोला गाढी पाली जोडि बैठा। तीन्य राति तीन्य दिन कही न नडो आवण दीन्हो नही। देवजी की कला चडदी दीसी। जोगी भूष भागा। कै तो वसतिया न उठि चाल्या, कै बैठा। जोगी कहै-भाभाजी-अतीतूं कूं भूष लगी है तीन्य दिन हुए कुछि दया भी आवै है? देवजी कहै-जै ही क्यौं न कह्यौ? नफरा कनियो भुगति मगाई। जोगिया का पतर पुराया। जोगी कहै-"आगै अनंत सिध हुवा तिणां भुगति जीमी। भुगति बिना कोई न रह्या। तम भी हमारै पासे बैठि कै भुगति जीमू। काहे कै वासते भुषे रहो हो"? जोगी कहैं-तम निरहारी तो हम भी निरहारी। रे जोगियो! भूठ पडिस्यौ। भूषो होयसी सो आप ही नहोरा करिसी। थे जीमू। जोगिये भुगति जीमी। देवजी नै कहै-तुम्हारै कोई वैरी दुसमण होय तो हमकूं फुरमावो। हम पालै। देवजी कहै-तू तेरा वैरी पाळि। जोगी कहै-म्हारै वैरी कुण? देवजी कहै-तेरै वरण पृथ्या, तिसना, नींद दस-काम, क्रोध लाभ, मोह, राग मान। जोगी उठि गया। गोदावरी जाय भेळा हुवा। भेष आगी फिरियादि कावी। पांचसै चेला को गरु लोहापागळ बीडो भाभजी ऊपरि लियो। जोगी भेळा होय चाल्या चाल्या हिमटसरि आया।"-प्रति संख्या २०१ से।

पद्य-प्रसंगों के लिए द्रष्टव्य-प्रति संख्या ११२।

का उल्लेख अनेक कवियों ने किया है[1]। केसोजी की 'कथा लोहापांगळ की' तो इसी से सम्बन्धित है। "प्रसंग" के अनुसार, जाम्भोजी ने उनके प्रति १२ सबद (संख्या ४२ से ५३) कहे थे।

इन सबका निष्कर्ष यह है कि उस समय राजस्थान में नाथ पंथी योगियों का व्यापक प्रभाव और प्रसार था तथा उन्होंने समय-समय पर अनेक प्रकार से जाम्भोजी और बिश्नोई सम्प्रदाय का बड़ा विरोध किया था। उनका विशेष सम्पर्क गोदावरी तट पर समय-समय पर एकत्र हुए विभिन्न नाथपंथी योगियों से रहता था। गोदावरी तट के त्र्यम्बक योगी मठ पर बारह पंथी नाथयोगी कुम्भ पर्व के समय प्रति द्वादशवर्षीय पात्रदेव-यात्रा हेतु एकत्र हुआ करते थे (विशेष द्रष्टव्य-अध्याय ३,-'धार्मिक स्थिति')। यदि रामू गुराणे के प्रश्नोत्तर के समय उपस्थित योगी के प्रश्न से लेकर लोहापांगल तक सब घटनाओं को सम्बन्धित करके देखें तो विदित होता है कि २१ सबद (संख्या ३३ से ५३) जाम्भोजी ने कनफटे नाथयोगियों के प्रति प्रायः एक जैसे प्रसंग में ही कहे थे। उपर्युक्त घटनाओं का समय संवत् १५६३ या इससे किंचित् पूर्व होना चाहिए। जनश्रुति लोहापांगल का सम्बन्ध सिद्ध जसनाथजी से भी जोड़ती है, जिनका स्वर्गवास २४ साल की आयु में संवत् १५६३ में हुआ था[2]। अतः यह घटना इससे पूर्व ही होनी चाहिए। महलाणा गांव के बिश्नोई भाटों की बहियों में भी इस घटना का समय संवत् १५६३ बताया गया है।

६-मुहम्मदखां नागौरी-लोहापांगल संबंधी वृत्तांत जान कर नागौर का शासक मुहम्मदखां अपने काजियों के साथ जाम्भोजी से मिलने आया था। उसने उनसे ज्ञान-चर्चा भी

१-(क) जोगी एक जटा उतराय, लागो वद्ध चरावण गाय।
दरसणिय मन कियो विचार जोगी कुण मूंड ससार॥ १४३॥
लोहापांगळ कियो अहंकार, चेला साथे अरध हजार।
नाटिक चटक वीतर भूत सींगी नाद जटा अवधूत॥ १४४॥
—सुरजनजी, कथा औतार की।

(ख) जोग्यद एक उतराय जटा कोडि वध छाडे कपटा।
सुणी बात प्रापति सार, चेते हम मगति पाल चार॥ ६४॥
जोग्यद मुंडि कुण मात जाया सोइ जोगिया महत भाग सुणायो।
पांगलीलोह विपाय पडिया च्यारिस दूण चेटक चडिया॥ ६५॥
—सुरजनजी, कथा परसिध।

(ग) मंहि मंडण पडे पोज लहो, नरनाथ विरता वात कहो।
जुडिया गोदावरि जात जके, चडिया चोलाडी चाड तके॥ २६॥
उलटी गत आयस एक तम, सप पूरया नाद परात सम।
हिमटसर आया हाव तके, जुडिया गोदावरी जात जके॥ २७॥
करता कहियो कुण घाट घडयो, कहै काछ किसी विध लोह जडयो।
जन्यो जिण वात विचार कही, भडमी लोह भेद्या आप दई॥ ३२॥
अत आयस औसर आय अडयो करता कर भटयो लोह भडयो।
जन भूला जाता घेर लिया, सिर मूंड जटा सह जेर किया॥ ३३॥
—गोकलजी, परची।

२-सिद्ध रामनाथ यशोनाथ पुराण, पृष्ठ ८८।

की थी[1]। सबदवाणी के 'प्रसगा' मे विदित होता है कि एक बार तो वह स्वय उनसे मिलने गया था और एक बार उसने अपने काजी उनके पास शका-समाधानार्थ भेजे थे। काजियो के साथ राव लूणकरण के पडित भी गये थे। उनके भेजे जाने का कारण जाम्भोजी के विषय मे यह जानना था कि वे हिन्दुओ के देव थे अथवा मुसलमानो के पीर। काजियो और पडितो को दृष्टान्त देते हुए जाम्भोजी ने बताया कि वे दोनो मे किसी के नही थे,–वे तो सच्चे हिन्दू के देव और सच्चे मुसलमान के पीर थे। केसोजी ने लिखा है कि मुहम्मदखा जाम्भोजी को मानता था और उनके उपदेशो पर चलने लगा था[2]। गोकलजी के अनुसार भी वह जाम्भोजी से मिला था[3]। '६ राजविया की विगत' (अध्याय ७, शीर्षक-११) तथा 'हिंडोलणो' मे अन्य मतानुयायियो के साथ मुहम्मदखा का नाम है। 'कथा परसिध', 'कथा औतार की' (सुरजनजी कृत) तथा 'प्रसगो' आदि से पता चलता है कि जाम्भोजी ने सात सबद (६ से १० २३ और २५) एक प्रकार से उसके प्रति ही कहे थे। इनसे यह ज्ञात होता है कि मुहम्मदखा जाम्भोजी के सम्पर्क मे आया था। साथ ही इनसे जाम्भोजी के एक विशिष्ट गुण का भी पता चलता है। यह घटना सवत १५६३ या इससे कुछ पूर्व की होनी चाहिए। इसमे मुहम्मदखा और बीकानेर के राव लूणकरण के मेल-मिलाप का भी सकेत है जो सवत १५७० मे हुई दोनों की लडाई[4] से पूर्व ही सम्भव था। सुरजनजी ने लिखा है कि उक्त बात सुनकर बादशाह सिकन्दर लोदी बहुत खीझा था[5]। जाम्भोजी ने दिल्ली मे उसको प्रतिबोध कराया था। महलाणा गाव के जोगीराज भाट की बही मे 'सवत् १५६३ मे सिकन्दर लोदी ने परचो दीनो' लिखा है जिससे भी उक्त सवत की पुष्टि होती है।

७-बादशाह सिकन्दर लोदी–केसोजी ने 'कथा इसकन्दर की' मे जाम्भोजी और

१-(क) पागळीलोह नाव पटे घटहू चेटकी पाप घटे।
महमदखान नागोर मठी साभली वात लीळग सठी ॥ ७६ ॥
आवियो भेट पेटा अकारी साथि दे वात पूछ सकारी।
माहिलो ग्यान भीगो महले, चेतियो हेत ले साथ चले ॥ ७७ ॥
अपनी मन पूछ अकारी मन री वात लाधी मुरारी।
भज्यसी भोल भोपाल भेला, पान नै तडय ले आव थला ॥ ७८ ॥
–सुरजनजी, कथा परसिध।

(ख) महमदषान जाति को पठाण, हुवा हकीकत पीर पिछाण्य।
वेद कतेब किया जिण्य थाट, जीव वड नासिका वाट ॥ १९१ ॥
जद्य सतगुर बोल्यो समभाय, इ ड जीव किसी पर थाय।
हारया वेद कतेब ज दोय अ परचा सतगुर का जोय ॥ १९२ ॥
–सुरजनजी, कथा औतार की।

२-(क) अरोडी मान अर और महमदखा मान नागौरि ॥ २१ ॥–कथा चित्तौड की।

(ख) महमदखा नागौरि परच्यो, चाल्यो गुर फुरमाई।–साखी करणा की।

३-जको जग पेख्यो जोति समान। मिल्यो मदसून्न महमदषान ॥३॥–'परची'।

४-(क) ओझा बीकानेर राज्य का इतिहास, प्रथम खण्ड, पृष्ठ ११४।

(ख) बीठू सूजा कृत छन्द राव जैतसी रो, छन्द सख्या–५७ से ६१।

५-दिलीसुर साभळी वात दिले, पीजियो षान अग्यान पेल।
जीव सू घात अघात जत, रोकियो साध अग्याध रत ॥८२॥–कथा परसिध।

सिकन्दर लोदी के सम्बन्धों का विस्तार से वर्णन किया है। बादशाह द्वारा कैद किए गए हासिम और कासिम नामक दो मुसलमान विश्नोइयों को जाम्भोजी ने रणधीरजी के साथ दिल्ली जाकर छुड़वाया था। वहां उन्होंने बादशाह को 'चेताया' था। वील्होजी[1], केसोजी[2], सुरजनजी[3], गोकलजी[4], परमानन्दजी[5], मुकनजी[6], दुरगदास (द्रष्टव्य कवि संख्या ६३), सवाईदास[7], हीरानन्द (द्रष्टव्य-'हिंडोलणो'), हरिनन्द (द्रष्टव्य-कवि संख्या ७६), साहबरामजी,[8] स्वामी ब्रह्मानन्दजी[9] आदि के अनेकश कथनों से इसकी पुष्टि होती है। '६ राजवियां का विगत' में सिकन्दर का नाम है। स्वयं जाम्भोजी ने सबदवाणी (सबद संख्या २७ १५-१८) में सिकन्दर को 'चेताने' और नानोपदेश देने का उल्लेख किया है। इसके औचित्य में सन्देह करने का कोई कारण नहीं है क्योंकि सबदवाणी की सभी प्रतियों में यही पाठ मिलता है। प्रसगवश यह कहा जा सकता है कि फरिश्ता तथा अन्य विद्वानों के जिन साक्ष्यों पर कबीर और बादशाह सिकन्दर लोदी का जो सम्बन्ध बताया जाता है[10], वह

१-(क) दिल्ली सिकदर साह दे परचो परचायो।
महमदषा नागौरि, परचि गुर पाए आयो ॥१८॥-कथा जसलमेर की।
(ख) इसकंदर परमोधियो, परच्यो महमदखान।
राव राणा नवि चालिया, सभलि केवल ग्यान ॥-'उमाहो'।

२-इसकंदर कीवी आ करणी, दुनिया फिरी दुहाई ॥ ६ ॥
महमन्दखा नागौरी परच्यौ, चाल्यौ गुर फुरमाई ॥ ६ ॥-साखी ॥

३-(क) दिल्ली री वात प्रगास देय आविया आप आपे अलेप।
भेन्यियो गुर भाभेसर भदा दिलीसुर साथ हुवो सयदा ॥ ८५ ॥
विल सिकंदर एक अरज सुणाय, देह छूटी कू मिल पुदाय।
पोर मुरीद मिली परतीत, इसकंदर चेतायो चीति ॥ १७७ ॥-कथा परसिघ।
(ख) अकरयवत क परचो एक, दुनिया पूछ वात अनेक।
इसकंदर उठि लागो पाय, परचौ पायौ मिल्यौ पुदाय ॥ १७५ ॥
-कथा औतार की।
(ग) इसकदर औल्ये परचि लागो पहली परि।
सेप सदो सारिया किया गुर भाभेसर ॥-छप्पय' की पंक्तियाँ।

४-मया कर दव छुडाया दाम, मिल्यौ असकदर पूरी आस ॥ ३ ॥-परची।

५-जैमाण रावल जैतसी, अजमेर क्रमसी पवार।
महमदषा हारणषा सेप सदो, इसकंदर बाबर पतिसाह ॥ ३ ॥-साखी।

६-समराथलि सामी अंतरजामी, इला महन करि आरभियौ ॥
पतिसाह पक्कर दिनो सिकदर परच लाध पोह लहियौ।
साचो देव दुनी सति मान, मान तजे हरि जाप हुयौ।
बुधर आयो भगता भायो नवषड जोति निरत कियौ ॥ ३ ॥-रोम छन्द।

७-बरहो वरक चौर पाछा ता आवाज सुनी, इसकंदर परचो पायो कामठी उठाय क।
दरजी निकस्या बार, पाछा ता मिलाप कीनो, हासम कासम का मिप भया चरणा म आय क। -इन्दव छन्द।

८-प्रति संख्या १९३-जम्भसार, प्रकरण-७।

९-जम्भदेव चरित्र भानु पृ० १६१-१७०।

१०-डा० पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल योगप्रवाह, पृ० ६८-१०३।

जाम्भोजी और सिकन्दर का होना चाहिए[1]। यह संवत १५६३ की बात है। इससे जाम्भोजी और विष्णोई सम्प्रदाय के व्यापक प्रभाव और प्रसार का निसन्दिग्ध रूप से पता चलता है।

८–कर्नाटक का नवाब शेख सद्दो और मुल्तान का सधारी मुल्ला सबदवाणी के 'प्रसंगों'[2] से ज्ञात होता है कि जाम्भोजी ने शेख सद्दो से गो-हत्या बन्द करवाई थी। सधारी मुल्ला भी उनसे ज्ञान-चर्चा कर प्रभावित हुआ था। दो सबद (प्रसंग संख्या १०२, १०३) इनको लक्ष्य कर कहे बताये जाते हैं। 'पंथ-प्रसंग' के अनुसार मुल्ला सधारी के प्रति जाम्भोजी ने दो भिन्न सबद (संख्या ११३, ११५) कहे थे[3]। इन दोनों का उल्लेख केसोजी[4], सुरजनजी[5], परमानन्दजी (द्रष्टव्य–पिछला पृष्ठ की पादटिप्पणी, संख्या ५) और हीरानन्द (हिंडोलणों में) ने किया है। हरिनन्द[6] के भजन में शेख सद्दो का नाम सकेतित है।

९–जसलमेर के रावळ जनमी–रावळजी ने 'जत समद' की प्रतिष्ठा पर जाम्भोजी को बुलाया था। उन्होंने जीव-दया और पशुओं से सम्बन्धित चार बातें मानने का वचन भी जाम्भोजी को दिया था। उनके अनुरोध पर लखमण और पाण्डू नामक दो विष्णोई वहां के खरीगा गांव में बसाये गये थे। वील्होजी ने 'कथा जसलमेर की' में इसका विस्तृत वर्णन किया है। सिकन्दर लोदी की कथा की भांति यह कथा भी सम्प्रदाय में बहु-प्रचलित

१–द्रष्टव्य–अध्याय २ में (२) के अन्तर्गत सदभ–संख्या–८२।

२–'सेष सदो करणाटक देसा को धणी, सात गाय मराय वरायत करतो। देवजी के हजूरि आयो। गाय छुटाई, त सम को सबद-'सुण रे काजी ' सधारी मुला मुलताण ता चाल्य, देवजी के हजूरि आयो। देवजी आगी कुराण मल्ह्यो। दवजी कुराण वन्यो। सधारी मुला पारसी मा कहे–'हवेन्दारी लुलत ना दुरराह क'। श्री जाम्भोजी पारसी कहै–'हरेत दारी' "। सधारी मुला पाए लागो। परचो साचो आयो"।
–प्रति संख्या २०१।

३–मुला सधारी आइया आय र बूझयो जुवाब।
सर बिना महजन है झूठ सगा पुवाब ॥ १ ॥
–शब्द– जके पथ का भाजणा' –(११२)।
मुला सधारी यों कहै महमद फुरमान।
रोजे कर निवाज पढ, बन्गी कर सावत ईमान ॥–शब्द–ईमा मोमणि (११३)।
–प्रति संख्या ११२, पत्र १८।

४–(क) सेष सदो परचे पहि आण्या, मरती गऊ छुडाई ॥ ८ ॥–साखी।
(ख) सेष सदो नोवाज्योजी, करतो पाप अघार ॥ ८ ॥–साखी।

५–(क) सेष सदो सारिषा कीया सुर भाभेसर ॥
मकमीरा काजिया हुवा राजी गुर अग ॥–छप्पय, पंक्ति २–३।
(ख) सेष सदो करणाटक माहि, परचो दे बकसाई गाय ॥ १९० ॥
–कथा ओतार की ॥
आराव जीदो राख्यो, रतो कह्यो मुल्ताणि।
गारय ब्र भ गीयान मा, सो भाभसर जाण्य ॥ १६४ ॥–वही।
(ग) मन्ताणी पीर अनेक मता, रापि लाज अवसाण रता।
वेद वादेत पठाण वीता वादिया आण्य दिली चगता ॥ ८ ॥–कथा परसिध।

६–'मति परणाम कह्या गुर मेर, मरती गऊ छुडाई' ॥ ३ ॥

है और केसोजी[1], सुरजनजी[2], मुकनजी[3], परमानन्दजी[4] आदि कवियो ने अनेक रचनाओ मे प्रकारान्तर से इसका उल्लेख किया है। '६ राजवियो की विगत' और 'हिंडोलणो' में रावळ जतसी का नाम है। सबदवाणी के 'प्रसगो' मे उक्त अवसर पर एक सबद (सख्या ८८) कहने का उल्लेख भी मिलता है[5]। रावल जतसी के राजत्वकाल के सम्बन्ध में इतिहासकारो मे कुछ मतभेद है[6] किन्तु सवत् १५३० से १५८३ तक यह काल सभी

१-अजमेर पुंवार मान करमसी, जसळमेर रावल जतसी ॥ २१ ॥
-कथा चित्तौड की।

२-(क) जतसी राण जैसाण जग, लाप सोभा लीघ पाय लग।
बोलदे वुधे जै बाह पाऊ, आप दे भेट दीदारि आऊ ॥ ८६ ॥
हू कहू वात सा करो हाथे, सदा जीग पुज्य आसान्य साथे।
मानीया राव जादम राया, आप ले साथ अनेक आया ॥ ९१ ॥
भले गुर जतसी किन्हे मेला, माडिया वाघ सूं रीघ मेला।
आप से सीप अलेप आया, रीव लग राज जादम राया ॥ ९४ ॥-कथा परसिध।

(ख) जादम वसी जसळमेर, झम बुलायौ जिगन सवेर।
रावल न सतगुर समझाय, जिग ता दीन्हा जीव छुडाय ॥ १९३ ॥
-कथा औतार की।

(ग) रावल्जी गण्या रूडा, कुवचन कहे न को किया।
विसनोई सुण्या विसन, रावल रोपा रोपिया ॥ ३३७ ॥
-छप्पय की अन्तिम दो पक्तियाँ।

(घ) जगि आयो जीवा धणी, आज उजवणी उजल।
जत सरोवर जत, फेरियो सूत लहे फल।
चोक्स वरा चियारि जीभ जग मोहण जप्या।
दापविया जगदीस, साघ ले सेई समप्या।
वरा समप्या जतसी, सीप सुणी सुगुर तणी।
आज उजवणी उजल, जक जिग्य आयो जीवा धणी ॥ ३३९ ॥-छप्पय।

(ङ) अन्न जिग तीन्य हुवा जुगे, लछ परचे लाहो लियो।
धन्य धन्य रावल जतसी, कलिजुग कन्या हल कियो ॥ ३४० ॥
-छप्पय अन्तिम दो पक्तियाँ।

३-जसळमेर जतसी जादम, करता किरिया करि कुभ दियो।
काट अगज अरियण सोह कप, अपरपर आराधवियो।
रूप रपाय अपा छाया, जीव छुडाया जिग कियो ॥ ८ ॥-रोम छन्द।

४-जमाण रावळ जतसी, अजमेर कमसी पवार।"-साखी' तथा हरजस।

५-रावल जतसी जसलमेर उजवणौ कीयो। च्यारे वरा गुर मुषे दीन्हा। त समै देवजी सबद कहै "गो रपलो "। मेल वीपरी रावल सुयान सिधायो। देवजी सभरायले आया"। -प्रति सख्या २०१ से।

६-(क) मुहणोत नणसी की ख्यात, भाग २, पृ० ४४१, ना० प्र० स०, काशी।
(ख) रामनाथ रत्नू इतिहास राजस्थान, पाँचवा अध्याय, इतिहास जैसलमेर, पृ० २५०, सवत् १९४८।
(ग) ओझा बीकानेर राज्य का इतिहास, प्रथम खण्ड, पृ० ११६, पादटिप्पणी।
(घ) श्यामलदास वीरविनोद, "जयसलमेर की तवारीख', पृ० १७६२।
(ङ) जगदीशसिंह गहलोत राजपूताने का इतिहास, प्रथम भाग, पृ० ६६८।

जाता है। 'जैत समंद' का निर्माण उन्होंने संवत् १५७० में करवाया था[1]। स्पष्ट है कि इसी संवत् में जाम्भोजी जैसलमेर गए थे।

१०-मेवाड़ के राणा सांगा, झाली रानी-मीरांजी की 'कथा चित्तौड़ की' से पता चलता है कि संवत् १५७२ के आसपास जाम्भोजी और बिश्नोई सम्प्रदाय का परिचय इन लोगों को भी मिला था। इसका कारण यह था कि बिश्नोइयों का चित्तौड़ में आना-जाना था। किसी पर कृपा दृष्टि से उद्धार करता था। कथा' के अनुसार इस प्रसंग में वे लोग उन राजाओं का नामोल्लेख करते हैं[2] जो जाम्भोजी को मानते थे। इनमें बादशाह सिकन्दर लोदी, राव दूदा (स्वर्गवास संवत् १५७२[3]) राव हमीर[4] और रावल जैतसी के नाम होने से उपर्युक्त संवत् का अनुमान होता है।

११-बीकानेर के राव लूणकरण और कुंवर जैतसी-सबदवाणी के "प्रसंग"[5] से पता चलता है कि नारनौल के युद्ध पर जाते समय इन दोनों का जाम्भोजी से सम्पर्क हुआ था।

१-(क) वीरविनोद, 'जैसलमेर की तवारीख' पृ० १७६२।
(ख) रामनाथ रत्नू : इतिहास राजस्थान, पाँचवां अध्याय, इतिहास जैसलमेर पृष्ठ २५०।

२-बिसनोई रो नामो कथ, राण कहै इसे सुणियो नहीं।
बिसनोई यों कहै बिचारि, यो नामो परगट संसारि॥ २०॥
जैसलमेर पुकार मान करमसी जैसलमेर रावल जैतसी।
अरोड़ो मान अर और, महम्मदखां मान नागोरि॥ २१॥
पाना पोजा मिलक मीर, और पातोधी राव हमीर।
दूदो मेड़तियो सांतिल राव, जम्भ तणो पाल परिमाह॥ २२॥

३-गोपालसिंह राठोड़ : जयमलवंशप्रकाश, पृ० ७०।

४-डा० टैसीटोरी-जर्नल एशियाटिक सोसाइटी, बंगाल, (न्यू सिरीज) संख्या १२, पृष्ठ ८९, सन १९१६, कलकत्ता।

५- राव लूणकरण पण्डियां सिंहता न पूछ महूरत र नारनोल ऊपर कटक करे चड्यो। बीकानेर का सिवा काण्योत की तलाइयां डेरा किया। उतरीताइ देवजी राव नू वोळावो देण गया। राव कहे-इण भरडं न न पूछो। मो परज छै। थइ दव नू घड़ावो करण द्य नहीं कोई गढ देस ल्यण द्य नहीं। मालो बीजावत कहे-दयजी, रावजी कह्यो छ-माहरा देवा रो क्यों छ? श्री भाभोजी सबद कहैं-"जह का' -(सबद ८५)। मालो सबद सुण रावजी धन गयो। रावजी! भाभोजी घणो बुरा कहै छ-वे भाजम्य के रिण मा रहिस्य। राव रीस करि कहै-हू पाछो आयस्यूं तरां इण रा मोडिया माहे जो एजका करू। राव चडि नारनोल ऊपर पहुंच्या। देवजी समरायळि आया। राव लूण-करण की खबर प्रतापसी घोडो नचाव। कणी एक कह्यो-घोड कना सू पुरा नचाव है। श्री भाभोजी सबद कहैं- व कवराई '। राव जतसी भाभजी क हजूरि आयो। आपरी अरज करण लागो-भाभाजी, एकण बाप रा बेटा। मैं एक घोडा मांगियो रावजी, मोनू एक घोडो दीज आपर साथे हालू। रावजी मुन रासाय न कह्यो-तीन भाठा। श्री भाभोजी कहै-"मत्रि "। राव कहै-देवजी, आपर सबद माहं को समधा को नही समधा। रावजी कह्यो-म्हानू तिणर विचार लाधो नहीं। देवजी कहे-तीन भाठा दीन्हा। व पाछा आव नही। राव जतसी कहै-देवजी, बाहर जावतो घणो। छल बल घणो। देवजी सबद कहै- 'तउवा-"। रजपूत कह-रावजी, क्यो सबद माहे समधा?

(शेषांश आगे देखें)

युद्ध म जाने स रोकने पर लूणकरणजी जाम्भोजी पर क्रुद्ध भी हुए थे । कुवर जतसी के मागने पर भी रावजी ने उनको घोडा नहा दिया था और न ही युद्ध म साथ ले गये थे । उनके दूसरे पुत्र प्रतापसी के पास घोडा था और वह युद्ध मे गया था । पीछे स जाम्भोजी न कुवर जतसी को समभाते हुए बीकानेर-राज्य प्राप्ति का आशीर्वाद दिया । इस अवसर पर कतिपय सबद कहे जान का उल्लेख भी मिलता है (सख्या ८५, ८६, ८७ और ६५) । यह घटना सवत् १५८३ का[1] है । राव लूणकरण (कवि सख्या ४२) के कवित्तो से सिद्ध है कि वे जाम्भोजी के शिष्य थे । ऊदोजी नैण (कवि सख्या ३७) न नारनौल के युद्ध मे काम आने वाले राठौड यद्धाओ का नामोल्लेख किया है । "रावजी भटवाला" की सूची मे परमानन्दजी ने रावजी का नाम गिनाया है (प्रति सख्या २०१, फोलियो २६६-३०१) । "प्रसगो" से अनेक महत्त्व-पूर्ण ऐतिहासिक बातो का पता चलता है । रावजी का नामोल्लेख मुहम्मदखा नागौरी के प्रसग म भी हुआ है ।

१२-मूला पुरोहित-इसका नामोल्लेख मल्लूखा और राव सातल के सन्दभ म कर आये हैं । "प्रसगा" के अनुसार, इन्होने अपनी पत्नी और भानजे को व्यभिचार-रत देख दुखी हो जाम्भोजी से जाम्भोळाव पर भेंट की । उन्होने इसको भली भाति समभाया (सबद सख्या १२) । पश्चात पुरोहित ने जोधपुर के राव गागा के दरबार मे जाम्भोजी की महिमा का बखान किया । यह सुनकर कुवर मालदेव न लोहावट म जाम्भोजी से साक्षात्कार किया । कुवर के कतिपय प्रश्नो का उत्तर भी उन्होने दिया (सबद ६३, ६४, ६५) । सुरजनजी ने "कथा परसिध"[2] मे इस घटना का समय सवत् १५८४ बताया है जो ठीक प्रतीत होता है। "राजवी भेंटवाळा" तथा 'हिंडोलणो" म मालदव का नाम है । मुहणोत नणसी ने भी मालदव के प्रसग म मूला पुरोहित का उल्लेख किया है (ख्यात, द्वितीय खण्ड, पृ० १५६-५७, ना प्र स काशी, सवत १६६१) ।

(ख) घटनाएँ या बातें जिनका काल अनिश्चित है -

१-सौत गाव के रावण गोयद ओरड-इन्होने जाम्भोजी का शिष्यत्व तो स्वीकार कर लिया किन्तु उनकी सिद्धि का परिचय अपने पशु-चोरी करके पाया (द्रष्टव्य-वील्होजी कृत 'कथा ओरन्ह की') । केसोजा की साखिया,[3] "चोईमा को लूरी' (द्रष्टव्य-अध्याय ७, सख्या सख्या १९) 'हिंडोलणो' आदि मे इनका नामोल्लेख ह ।

जतसी कह-भाभोजी साच कह छ । ई घर उपरि कोई राज रह्यो नही । माहर तो रूडा छ । राव लूणकरण र घर नू वा ही छ । म्हान तो कोट दीन्हो । राव जैतसी बीकानेर मा राज कियो । सुधि जाभाणी चलावा" ।-प्रति सख्या २०१ ।

पद्यप्रसग के लिए द्रष्टव्य प्रति सख्या ११२ ।

१-ओभा बीकानेर राज्य का इतिहास प्रथम खण्ड, पृष्ठ ११७-१२३ ।

२-मामहा साथ मारू सूसगी । जोधाण राण देमाल जगी ।
बाल गुवाल सू बध्य बेला । चोरासिय वास उगास अकेला ॥१२०॥-कथा परसिध ।

३-(क) रावण सा सेऊ राह आण्या, गोयद सा गुर माई ॥ ५ ॥
(ख) दोय रावण गोयदजी, साम्य किया मुचियार ॥ ११ ॥

२-माधूसर का सैंसो जोखाणी-इसको भीभालो गाव में जाम्भोजी ने निष्काम भाव से दान देने और दान देकर अहंकार न करने का उपदेश दिया था। केसोजी की "कथा सैंस जोखाणी की" इसी से सम्बन्धित है। सबदवाणी के "प्रसंगों" से पता चलता है कि उक्त अवसर पर उसके प्रति तीन सबद कहे गए थे (सबद संख्या ५४, ५५,५६)। "३५ पुहं" (अध्याय ७, सन्दर्भ संख्या १८) तथा "हिंडोलणो" में इसका नाम है।

३-मेडतावाटी के पडवाळो गाव के ऊदो और अतली-केसोजी कृत "कथा ऊद अतली की" में शुद्ध भाव से अतिथि-सेवा करने सम्बन्धी इनके प्रति जाम्भोजी के उपदेश का वर्णन है। "२७ लुगाइयां की पुहं" में अतली का नाम है।

४-रिणसीसर का मगोवल और उसकी पत्नी लाहणी-केसोजी की "कथा मेडत की" में इनका जाम्भोजी की महिमा सुनकर विष्णोई होना वर्णित है।

५-जागळू का वरसिंह वणियाल-"प्रसंगों" से विदित होता है कि ये जाम्भोजी के परम अनुयायी थे। इनकी सन्तति के सन्दर्भ में एक सबद (संख्या २०) कहने का उल्लेख भी मिलता है (अध्याय ७, संदर्भ संख्या १३ (४), 'जागळू' भी द्रष्टव्य)।

इनके अतिरिक्त अन्य अनेक प्रसिद्ध व्यक्ति और कवि-अल्लूजी चारण, कान्होजी चारण, रिणसीसर का रावल आदि भी जाम्भोजी के सम्पर्क में आये थे जिनका उल्लेख यथा स्थान किया गया है।

वैकुण्ठवास-जाम्भोजी का वैकुण्ठवास संवत १५९३ के मार्गशीर्ष वदि ९ को हुआ था। उनके देहत्याग-स्थान के सम्बन्ध में दो प्रकार के उल्लेख मिलते हैं। एक के अनुसार, यह स्थान सम्भरायळ[1] है और दूसरे के अनुसार लालासर[2]। सम्प्रदाय में दूसरी बात ही

१-(क) साम्य सिधार्‌यो चिल्त कियो, पनराम र तिराणव।
गु रा ग्र दफ मु निमर साय्य चत्या, परगट पेल पसारियो।
परगट पेल म्हार साम्य पसार्‌यो, साथ चाल्यो मोमिण।
क्यों रहू तेर वाज दरसणि गोवन्य मू ना विन क्‍हा।
सायरी गुर की वन सभरथलि, जहा पेल पसारियो।
तिराणव की साध्य पूगी द हरि साप सिधारियो ॥ १ ॥-रायचद कृत साखी।

(ख) कल जुग देवजी की चिरत वपाणि पनरास र तिरतणव।
वदि मगसरि नु वि न्नि जाणि, सभरायलि परवाणियो।
सभरायलि परवाण कीयो, चिल्त सुरा दिपाइयो।
सब मोमिण जीव काज साह चोर चिताइयो।
केई चाल पडग धारा हीव केई हुकमे।
समार आयो भम पायो चिल्त कियो कल्यजुगे ॥ १ ॥
धर जाका हुवा कदि मा अगम पथ चलाइयो।
समरायलि गुर आय चात्यो च्यारि ध्र न फुरमाइयो ॥ ३ ॥
-साखी अज्ञात कवि, सख्या-२५।

(ग) गजटियर-बीकानेर डिस्ट्रिक्ट, पी० एम० विग सन् १९०७ म भी ऐसा उल्लेख है।

२-(क) पनराम रि तिरा णव वदि मगसरि वमप।
तिथि नु जि निरधि निरमलो, ग्रोहै हुवा अन्प ॥ २ ॥
नाल्हासर की साथरी, पाहूचि कियो परवांण। (शेषांश आगे देखें)

प्रसिद्ध और प्रचलित है किन्तु प्रारम्भिक हुजूरी कवियो और वील्होजी आदि की रचनाओ से पहली बात की पुष्टि होती है। इस पर से हमारा अनुमान है कि सम्भराथळ पर ही जाम्भोजी ने देह त्यागी थी। "साथरियो" (अनुयायियो) ने उनके शव को जाम्भोलाव ले जाने के इरादे से दशमी के दिन ताळवा गाव के पास "मुकाम" किया। इसका पता लगने पर बीकानेर के राव जतसी लूणकरणोत ने वहा नही ले जाने दिया और एकादशी के दिन शव को उसी गाव के पास ही समाधिस्थ किया गया[१]। कालान्तर मे उस पर मदिर बनाया गया। जाम्भोजी का अतिम ऐहिक "मुकाम" होने से यह मदिर और उसके पास बसा गाव भी मुकाम कहलाया। जाम्भोजी के वकुण्ठवास की बात जान कर उनके अनेक अनुयायियो ने भी स्वच्छा से प्राण त्यागे थे। केसोजी (साखी सख्या १६), सुरजनजी (कथा परसिध), परमानदजी (वड्थारी विगत), साहबरामजी (जम्भसार) आदि कवियो ने इसका उल्लेख किया है।

प्रभाव और महत्त्व–उपयुक्त वृत्त से जाम्भोजी के व्यापक प्रभाव और मान्यता-महत्ता का पता चलता है। राजस्थान मे सवत १५८४ तक जसलमेर के भाटी, बीकानेर, जोधपुर, छापर-द्रोणपुर, मेडता और फलौदी के राठौड, चित्तौड के सीसोदिया, नागौर का खान, अजमेर का सूबेदार आदि किसी न किसी रूप मे उनके सम्पर्क मे आये और प्रभावित हुए थे। राजस्थान के बाहर भी उनके अनेक अनुयायी बने, यहा तक कि दिल्ली के बादशाह सिकन्दर लोदी को भी उन्होने ज्ञानोपदेश द्वारा सुपथ पर चलने की प्रेरणा दी थी।

जीवन म सच्चाई, ईमानदारी, सादगी, पवित्रता और कमठता उनके आदर्श थे। किसी का हक मारना उनको इष्ट नही था। वे कथनी और करनी म एकरूपता चाहते थे। व आडम्बरो से दूर और जातिगत बधनों से परे थे। उन्होंने कममय जीवन का उपदेश देते हुए आत्मज्ञान और लोकमगल का भाव दृढ किया। तत्कालीन मरु-प्रदेश म उन्होने साम्कृतिक, वचारिक, सामाजिक और धार्मिक दृष्टि से क्राति की थी। अतत मनुष्य ही उनका लक्ष्य था। उनको लेकर लिखी गई अनेकश रचनाएँ उनके महामहिम व्यक्तित्व का किंचित् परिचय देती हैं। उनकी वाणी का प्रभाव शोधक और स्थायी सिद्ध हुआ है।

इल मा अधियारो हुवो, जाणि भोम्य वरत्यो भाण ॥ ३ ॥
–केसोजी गोदारा, साखो।

(ख) नाल्हासर की साथरी, चिरत कियो मुरारी।
दास मीठु वल्य जात है, छकि आई सारी ॥ ४ ॥–मीठुदास, हरजस।

(ग) सवत १५९३ मगसर वद नुय साम्ही अलोप हुवा। वासे लोक दीपाव न पुतेळो मेल्ह गया। ८५ बरस ३ माहीना १ दीन ३ घडी नीरहारी पुरस प्रगट रह्या। नाल्हासर थी तालव्य ल्याया।–परमानदजी वणियाळ, साका"। प्रति सख्या २०१।

१–साथरीया भाभोलाव रो मतो करि १० दसुय र दीन मुकाम कीयो। पछ राव जतसी लूणकरणोत आडो फिर्‌यो। माहर देस रो देव बीज देस ले जाण द्यो नही। सवत १५९३ मगसर वद ११ मुगट री नीय थरपी।–परमानदजी वणियाळ, "साका"।
–प्रति सख्या २०१।

वाणी (सबदवाणी) जाम्भोजी की वाणी "सबदवाणी" नाम से प्रसिद्ध है (विशेष द्रष्टव्य-विश्नोई सम्प्रदाय नामक अध्याय)। "सबदवाणी" का प्रधान प्रतिपाद्य ज्ञानात्मक ही है। उसमें यत्र-तत्र उत्कृष्ट काव्य के लक्षण भी मिल जाते हैं किन्तु वह उसका मुख्य स्वर नहीं है। उसका लक्ष्य आत्मज्ञान और लोकमंगल है। अद्यावधि जाम्भोजी के १२३ "सबद" और कतिपय मंत्र ही प्राप्त हुए हैं। राजस्थानी साहित्य सामान्यतः और विश्नोई साहित्य विशेषतः सबदवाणी से किसी न किसी प्रकार से प्रभावित है। साहित्य, धर्म, संस्कृति और विचारों के क्षेत्र में यह नये आयाम, मानदण्ड और भूमिका प्रस्तुत करती है। १६वीं शताब्दी के मरुप्रदेश की लोक-भाषा की धारणा उसमें सुरक्षित है। विश्नोई सम्प्रदाय उत्तरी भारत का पहला धार्मिक (संत) सम्प्रदाय है और सबदवाणी उसका मूलाधार है। पूर्ववर्ती और परवर्ती वैचारिक परम्पराओं को समझने का यह महत्वपूर्ण साधन है। इन्हीं सब कारणों से आगे सबदवाणी का सम्पादन और उसके आधार पर जाम्भोजी के दर्शन और अध्यात्म विषयक विचारों को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। मंत्र परिशिष्ट में उद्धृत किये गये हैं।

म्हे खोजी था विड होजी नाही, खोज लहा धुर खोजू ॥ ५ ३, ४ ।
रतनक्या साच की ढोळी, गुर प्रसादे केवळ ग्याने, २१ १६, २० ।
भ्रम आचारे मीले भजमे, सतगुर तूठै पाइय ॥ २१ २१ २२ ।
उतिम कुळी का उतिम न कहिवा, कारण किरिया सारू ॥ २४ ४ ।
पहलू किरिया आप कमाइय, तो अवरा नै फुरमाइयै ॥ २८ ३१, ३२ ।
विसन विसन तू भणि रे प्राणी, वळि वळि वारोवारू ॥ ३१ १३, १४ ।
सुकरत करता हरकति भाव, तो ना पछतावो करियो ॥ ३२ ७ ।
करण विणि कूकम रस विणि वाकस, विणि किरिया परवारू ॥ ७५ ७ ।
घर आगी अत गोकळवासो, कडी आघोचारी ॥ ८४ १५ ।
भाग परापति करमा रेखा, दरग जु वळा जु वळा मागू ॥ ८६ ३१ ।
हेक हक पावत अनोपात मागू, अनव भाग पाळि लै ॥ ९१ ६ ।
दरिद नाव विसन को जपो, हाये करो दवाई ॥ ९९ ५ ।

—जम्भवाणी (सबदवाणी) से ।

अध्याय ५

जाम्भोजी दर्शन और अध्यात्म

अध्याय ५

जाम्भोजी : दर्शन और अध्यात्म

इस अध्याय मे स्व-सम्पादित जम्भवाणी (सबदवाणी, द्रष्टव्य-अध्याय ६) के आधार पर जाम्भोजी के दार्शनिक और आध्यात्मिक विचारो को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है।

१-स्वयम्भू विष्णु-अनेक नाम -स्वयम्भू के सहस्र नाम* हैं[1]। जाम्भोजी ने सबदवाणी तथा मन्त्रों में परमसत्ता को द्योतित करने के लिये अनेक नामों का प्रयोग किया है। इनमे से कुछ निम्नलिखित हैं —

विसन[2] (विष्णु), स्वयम्भू[3], सारंगधर[4], सुरराय[5], मुरारी[6], विसमला, रहमान, रहीम, करीम[7], खुदावन्द[8], खुदा[9], अल्लाह[10], 'ओम्'[11], गुरु[12], सतगुरु[13], राम[14], कृष्ण[15], हरि[16], श्याम[17], पारब्रह्म[18], लक्ष्मण[19], लक्ष्मीनारायण, मोहन, गोपाल[20],

---

* आगे उदाहरण जम्भवाणी (सबदवाणी) से दिए गए हैं। सदर्भ संख्या के पश्चात् इनका क्रम इस प्रकार है —
पहले सबद-संख्या, विसर्ग ( ) के पश्चात् उसकी पंक्ति-संख्या, अल्पविराम (,) के पश्चात उसी सबद की अन्य पंक्ति-संख्या तथा अर्द्धविराम (,) के पश्चात पुन सबद-संख्या है।

१-९३।

२-बाळक मन्त्र ६ २०, ११ १९, २९ १० ३१ । १३, ३२ ८, ३६ ६ ५५ ५, ६३ २५ ६६ १६, ३०, ७६ ३, ८६ ३६, ६३ १८, १११ ६, ११९ १२०, १२१, १२२।

३-३ २१, ४ ६, ६३ १, ९५ १ १०४ १।

४-६५ ८।

५-६ १३, २३।

६-९३ १।

७-६७।

८-२९ ७ ७५ ६।

९-८ ५।

१०-६८ १०।

११-बाळक मन्त्र, पाहळ मन्त्र, ६४ १।

१२-१ ७२ ६, १०५ १, १०६ १३।

१३-१०७ ४।

१४-७६ ६।

१५-१ २१ १२, १४ ४, ३० ६ ४५ ४, ७० १, ९२ ३ १०५ ३।

१६-बाळक मन्त्र, ७५ ८ ९६ ९, १२० ३।

१७-११३ २।

१८-६ २४।

१९-३८।

२०-वहनवण मन्त्र।

परमेसर[1], नारायण[2], परमराम[3] आदि। इनके अतिरिक्त परमसत्ता के विशेषण रूप में स्वयम्भू[4], अलख[5], अपरम्पर[6], निरह[7], अलील[8], निरालम्ब[9], अलाह, अलेख, अडाळ, अजानी[10] आदि शब्द कहे हैं।

सम्प्रदाय में जाम्भोजी और निराकार विष्णु एक ही माने जाते हैं। उन्होंने भी स्वयं को परमसत्ता स्वयम्भू मानते हुए अनेक प्रकार से अपनी विभूतियों और शक्तियों का उल्लेख किया है[11]। इनसे अद्वैत भावना स्वयं सिद्ध है। अपने लिए निराहारी[12], शून्यमण्डल का राजा[13], कैवल्य-ज्ञानी[14] सतगुरु[15] आदि शब्द कहे हैं।

जाम्भोजी परमसत्ता के अवतार में विश्वास रखते हैं। वे विष्णु के दसावतार मानते हैं जिनमें नौ तो पहले हो चुके हैं और भविष्य में दसवें—कल्कि की बारी है[16]। दसावतार के नाम ये हैं—मत्स्य, कूर्म, वराह, वामन, नृसिंह, परशुराम, राम-लक्ष्मण, कृष्ण, बुद्ध[17] और कल्कि[18]।

२-विष्णु नाम -

विष्णु का नाम उतना ही शक्तिमान है जितने कि स्वयं विष्णु या स्वयम्भू। जैसे विष्णु सृष्टि का मूल तत्त्व है वैसे ही विष्णु का जप भी मूल तत्त्व है[19]। वेहमवण मन्त्र में सात उपमाओं के द्वारा इसकी महत्ता प्रतिपादित की गई है। विष्णु नाम तो सदा ही निर्मल है[20]। इससे आत्मतत्त्व की उपलब्धि[21], जरा-मरण से छुटकारा और वैकुण्ठ-वास

मिलता है[1]। जप मे अनन्त गुण हैं क्योंकि इससे मृत्योपरान्त क्षण-मात्र मे मोक्ष प्राप्ति होती[2] तथा अनन्त पुण्य मिलता है[3]। अत आत्मोद्धार के निमित्त अपरम्पर विष्णु का जप करना चाहिए[4]।

३-स्वयम्भू विष्णु की विभूतियाँ स्वरूप-वर्णन –

निरजन स्वयम्भू अनादि है। जब पवन, पानी, पृथ्वी, आकाश, सूर्य, चन्द्र आदि कुछ भी नही थे तब शून्य मे केवल निरंजन ही थे[5]। परमतत्व सबका सृजनकर्ता है, उसका रहस्य नही पाया जा सकता, वह ताप और शीत से परे, तन, रक्त, धातु[6], रूपरेखा, चिह्न और वर्ण रहित, गहन, अथाह और केवल अनुभव का विषय है[7]। उसके स्वरूप का वर्णन अमृत के स्वाद की भाति वाणी से नही किया जा सकता और सागर मे मछली के मार्ग की भाति उसका भेद नही पाया जा सकता[8]। वेदव्यास और ज्ञानी व्यक्ति इस कारण उसके सम्बन्ध म नेति-नेति ही कहते हैं[9]। उसके स्वरूप का वर्णन कर सकने का दम्भ भरने वाले लोग केवल झूठ-कथन ही करते हैं[10]। उसके विषय मे जो व्यक्ति कुछ जानने की बात कहते हैं वे तो कुछ भी नही जानते किन्तु जो यह कहते हैं कि वे उसके विषय म कुछ भी नही जानते वे किंचित-मात्र अवश्य जानते हैं[11]।

४-विष्णु की व्यापकता –

विष्णु चारों योनियो मे, अनन्त रूपों म, पवन की भाति सर्वत्र निरन्तर रूप से व्याप्त है। नदियो मे नीर रूप म और सागर मे रत्न रूप मे[12]। सात पाताल, तीन लोक, चौदह भुवन, बाहर-भीतर सर्वत्र वही विराजमान है[13]। दूध मे पानी[14] और फूलों म पराग के समान[15] वह भिन्न-भिन्न रूपों म प्रकट होता है और सबके दिलो म मौजूद है[16]। वह सबका साक्षी है इसलिये सबको कृष्ण-मय ही देखना चाहि

१-१०५ ५ १२१, १२२।
२-१२१।
३-६५ ८, ९।
४-६ १ ३१ १३, ६६ ३७ ८६ १३, १५।
५-३।
६-४ १२।
७-१३ १०-१०।
८-२६।
९-३३ १-४।
१०-३३ ८, ३४ ६, ३५ ६ ३६ ८।
११-१६ १-४।
१२-११७ ५ ६।
१३-४३ ६३ ३३, ३४।
१४-१५।
१५-६४ ११।
१६-६७ १-५, १७।
१७-७२ ३।

करने वाला ही मोक्षलाभ करता है[१]।

५-विष्णु मूल तत्व है -

वृक्ष के मूल की भांति आवागमन से मुक्ति का साधन विष्णु-जप है[२]। परलोक सुधारने के लिये विष्णु की ही खोज करनी चाहिए[३]।

६-अवतार धारण -

परमसत्ता विष्णु शुभ कर्म करने वालों के निस्तार और धर्म-रक्षार्थ अवतार धारण करता है[४]। जब-जब शैतान अहंकार के वशीभूत होकर अन्याय करते हैं[५], दुष्ट अनुचित काम करते और भगवद्-प्रेम रत साधु पुरुषों को दुःख देते हैं, तब-तब महान् आत्मा का प्रादुर्भाव[६] और भगवद्-महिमा फलीभूत होती है[७]।

७-मूर्तिपूजा की निन्दा -

जाम्भोजी यद्यपि भगवान् के अवतार में विश्वास रखते हैं तथापि किसी भी रूप में उनको मूर्तिपूजा स्वीकार्य नहीं है, वे इसकी घोर निन्दा करते हैं[८]। इसी प्रकार तीर्थाटन भी बाह्य दिखावा मात्र है। अड़सठ तीर्थ तो हृदय में ही हैं[९] किन्तु कोई "गुरुमुखी" व्यक्ति ही इस तीर्थ में स्नान करता है[१०]।

जाम्भोजी शास्त्र और पुस्तक ज्ञान की महत्ता स्वीकार करते हैं। उनके अनुसार वेद, शास्त्र थोथे नहीं हैं किन्तु उनका सार-ग्रहण किया जाना चाहिए। पढ़ लिख कर उनका मर्म समझना चाहिए किन्तु निगुरे व्यक्ति काठ और पाषाण की मूर्तियों की पूजा में ही लगे रहने के कारण ऐसा नहीं कर पाते हैं[११]।

८-सद्गुरु — सद्गुरु-प्राप्ति आवश्यक है, वह संसार-सागर से पार लगा सकता है[१२]। बिना गुरु के मुक्ति सम्भव नहीं है[१३]। उसको जाने बिना सुपथ नहीं मिलता और जन्म व्यर्थ जाता है[१४]। परमार्थ-मार्ग में गुरु मूल तत्त्व है। "निगुरों" के मन में अज्ञानान्धकार छाया रहता है, ज्ञान-सूर्य तो "सुगरों" के हृदय में ही प्रकाशित होता है[१५]। सद्गुरु ही

१-१८ १३।
२-२६ २।
३-६६ ३८, ४३।
४-पाहळ मन्त्र।
५-८७ ३७, ३८।
६-६४ ७, ११।
७-८७ ३७, ३८।
८-६६ ६ ७, १०५ १०।
९-१७ ९, ६२ ५।
१०-१७ १०।
११-२५ १-४।
१२-१३ ७।
१३-९९ ७।
१४-११ ४, ५।
१५-६८ ३, ४।

ऐसा तत्त्व बता सकता है जिससे पूर्ण योग की स्थिति और आवागमन के बन्धन से छुटकारा मिल सकता है[1]। कथन मात्र से गुरु का महत्त्व नहीं बताया जा सकता। व्यक्ति दुख-सुख अपनी करनी से पाता है[2] जिसका कारण आत्मतत्त्व की उपलब्धि न होना है। गुरु-कृपा से आत्मोपलब्धि सम्भव है[3]। गुरु-उपदेश से अनेक राजाओं, भोगी पुरुषों, साधु-सन्तों और नाथों ने आत्मतत्त्व प्राप्त किया था[4]। सन्त सहजावस्था में रहना, शील और नाद-बिन्दु धारण करना गुरु के लक्षण हैं[5]। गुरु जीवन-मुक्त, कैवल्य-ज्ञानी और अनन्तगुण युक्त तथा "मेवों का मेवा" होता है[6]।

अन्यत्र जाम्भोजी ने गुरु (सद्गुरु) को परमतत्त्व का पर्याय भी माना है[7]।

९-जाम्भोजी विष्णु हैं—कहा जा चुका है कि जाम्भोजी स्वयं को विष्णु मानते हैं। अनेक स्थलों पर उन्होंने अपनी सर्वशक्तिमत्ता का अनेक प्रकार से उल्लेख किया है। कतिपय उदाहरण द्रष्टव्य हैं—

मैं स्वयंभू सृजनकर्ता, निरंजन, बाल ब्रह्मचारी हूँ[8]। घट-घट में मैं सूक्ष्म रूप से व्याप्त हूँ[9]। मेरे आदि मूल का भेद कोई नहीं जानता[10]। अपनी काया का निर्माण मैंने स्वयं ही किया है[11]। यदि मैं चाहूँ तो एक शरीर से कोटि शरीरों की रचना कर सकता हूँ[12]। समस्त जीव-योनियों की संभाल में क्षण-मात्र में ही लेता हूँ[13]। मुझ पर माया की छाया नहीं पड़ सकती। दृश्य और अदृश्य रूप से मैं त्रिलोक में व्याप्त हूँ[14]। प्रत्येक भुवन में मैं समरूप से प्रकाशित हूँ[15]। जीते जी मैं किसी की रोजी नहीं मारता किन्तु मरने पर आत्मा की सम्भाल लेता हूँ। यदि कोई मुझसे मिले तो मैं उसका काम सँवार सकता हूँ[16]। मैं निराहारी हूँ, केवल वायु-भक्षण करता हूँ[17] और अपने ही

१-१०७ २०।
२-८५ ५, ६।
३-२१ ३, ६।
४-६१ ३४।
५-१।
६-१३ ६-१६।
७-१, ३९ १५, ५१ १-१३, १०५ १, ३।
८-२।
९-१।
१०-८८ ४।
११-९३।
१२-२७।
१३-६२ ६, ६३।
१४-२, १७।
१५-५ १।
१६-८१ ५, ६।
१७-१०१।

आधार पर स्थित हूँ[१]। मैं सर्वशक्तिमान हूँ[२]। सत्ययुग में सृष्टि का सृजन मैंने ही किया था, मैं विष्णु "अपरम्पर" हूँ[३]। इससे पूर्व मैंने नौ अवतार धारण करके दानवों को नष्ट किया था[४], भविष्य में दसवें अवतार-कल्कि की बारी है[५]। मैं किसी "जायै-जीव" का जप नहीं करता, निरालम्ब, स्वयम्भू, स्वात्म रूप का ही जप करता हूँ[६]।

१०-जाम्भोजी के यहाँ आने का कारण–सत्ययुग में भक्त प्रह्लाद के उद्धार के लिए भगवान ने नृसिंह रूप धारण किया था। उस समय तेतीस कोटि जीव प्रह्लाद के अनुयायी थे। इनमें से हिरण्यकशिपु ने पाँच कोटि अनुयायियों की हत्या की थी। हिरण्यकशिपु के मरणोपरान्त प्रह्लाद ने इन तेतीस कोटि अनुयायियों के उद्धार का वचन भगवान से मांगा। उन्होंने सत्य, त्रेता, द्वापर और कलि–चारों युगों में ऐसा करने का वचन दिया। फलस्वरूप, क्रमशः पाँच कोटि जीव प्रह्लाद के साथ, सात कोटि जीव सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र के साथ तथा नौ कोटि जीव धर्मराज युधिष्ठिर के साथ– कुल २१ कोटि जीव मुक्ति के अधिकारी हो गये। बाकी बारह कोटि जीवों के उद्धारार्थ कलियुग में जाम्भोजी का आना हुआ। जाम्भोजी के यहाँ अवतरित होने सम्बन्धी यह मान्यता नवीन है और प्रायः प्रत्येक विष्णोई कवि ने यथावसर इसका सोल्लास उल्लेख किया है। सबदवाणी में प्रकारान्तर से इसको अनेक बार कहा गया है[७]।

जाम्भोजी ने अपने निवासस्थल 'सभराथळ' और कार्यों का उल्लेख भी यत्र-तत्र किया है।

नागौरगढ के अन्तर्गत (पीपासर में) जन्म पानी अत्यन्त गहरा निकलता है मैंने अवतार लिया है[८]। भक्तों के उद्धार के लिये भगवी टोपी धारण करके 'थळी' पर आया हूँ, जहाँ हरे ककहड़ी वृक्षों का मंडप है[९]। निगरे व्यक्ति मुझे गालियाँ देते हैं[१] किन्तु मैं सभराथळ पर हीरा का व्यापार करता हूँ। जिनको अन्तर्दृष्टि प्राप्त है वे ही ग्रहण करेंगे[११]। मैं पाखण्डी हूँ और मैंने पाखण्ड रचाया है। पाखंडी इसलिये कि पूर्ण योगी हूँ, पाखंड यह कि लोगों के संचित पापों को खंडित करता हूँ। जो ऐसे पाखण्डी को पहचानता है उसकी सहज में ही मुक्ति हो जायगी[१२]। मैं अपने 'सुगणे' शिष्यों का दास हूँ, ऐसे

१-६२ १, ४।
२-४२।
३-८३।
४-६३।
५-८२ ३६।
६-४।
७-१० ३, ११२ ४-६ ९९ ८-१२ ५६ ६१ ९-२० १०४ ८१, २७।
८-६३ १ २।
९-२७ ९ ७३ १ २ ८२ ३, ४ ३९ ८, १४ ६८ ६ ७।
१०-६१ १०।
११-७२ ११-१५।
१२-७६।

व्यक्ति ही स्वर्ग जाएँगे, "निगुणे" व्यक्ति तो निराश ही रहेंगे[1]। मेरी बात पुस्तकों और शास्त्रों में न लिखी होकर अनुभव की है[2]। मैं वेद-तत्त्व का बखान करता हूँ[3]। संसार में भटकते हुए अनेक लोग गुरु के बताये मार्ग पर चल कर और सच्ची करनी से पार उतर गये हैं। ऐसे पुरुष तो मुझसे आ मिलेंगे किन्तु अहंकारी लोग दुःख भोगते हुए नरक में जाएँगे[4]।

जाम्भोजी ने अधिकतर जाटों को ही सम्प्रदाय में दीक्षित किया था। अपने शिष्यों को चेतावनी देते हुए उनका कथन है कि गुरु-बाट भूल कर, ज्ञान प्रकाश त्याग कर अज्ञाना-धकार में क्यों चल रहे हो ? पानी के होते हुये घड़ा खाली क्यों रखते हो ? हीरा को हाथ में क्यों फेंकते हो[5] ? काजी, मुल्ले और पंडित मेरी निन्दा करते हैं किन्तु यदि स्वर्ग चाहते हो तो मेरी आज्ञा मानो[6], क्योंकि बिना गुरु-ध्यान के मुक्ति संभव नहीं है[7]। यह एक विडम्बना है कि लोग मुझसे आत्मज्ञान की बात न पूछ कर भौतिक सुख-समृद्धि की बातें ही पूछते हैं[8] किन्तु तुम लोग मूल में न चल कर तत्त्व पर विचार करो[9]।

११-आत्मा -

जाम्भोजी ने जीव तथा आत्मा को जीवड़ा, हंस[10] और 'रतनकया'[11] कहा है। जैसे तिल में तेल और पुष्प में वास है वैसे ही पाँच तत्त्वों से निर्मित देह में आत्मज्योति का प्रकाश है[12]। जैसे ऋतुएँ बदलती हैं वैसे ही आत्मा शरीर बदलती है[13]। जीवात्मा शरीर के माध्यम से प्रकाशित होती है। अतः शरीर खेत की भली भांति रखवाली करनी[14] तथा प्रत्येक जीव में आत्म-ज्योति का दर्शन करना चाहिए[15]। आत्मोपलब्धि गुरु-कृपा से प्राप्त होती है, संसार और आवागमन के चक्कर से वह परे की वस्तु है। आत्मा स्वभाव से ही सुंदर और निर्मल है। उसकी प्राप्ति कैवल्य-ज्ञान, गुरु-कृपा और धर्माचरण से होती है[16]। इस जन्म में ही ऐसा होना चाहिए[17]।

१-७३ १-४।
२-१२ १-३।
३-२४ ७।
४-८१ ४।
५-११६।
६-९३ २०-२२।
७-९९ ७।
८-८३।
-११७।
९८ ८ ६।
-२१ ५, १४, १९, २८, ४१, ५१ २२, १२२ २
-१०७ १४।
-२५ ६-१०।
१४-७०।
१५-१८ ५, ६।
१६-२१।
१७-५१ ३५, ३६।

१२-माया -

(क)-जगत की नश्वरता -जाम्भोजी ने ससार को 'गोवळवास'[1] बताया है। यहाँ का 'माधोवार' झूठा है। पवन में भोका सा जैसा 'धवर' बिखर जाती है वैसे ही यह ससार नश्वर है[2]। जैसे बिना दानों के भूसी, बिना रस के गन्ना और बिना क्रिया-कर्म के परिवार व्यर्थ है वैसे ही ससार की उलझन में पड़ना भी व्यर्थ है[3]।

(ख) पार्थिव वस्तुएँ मिथ्या हैं —पार्थिव वस्तुएँ मिथ्या हैं, इनसे पृथक रहना चाहिए[4]। दुनिया 'गाजे-बाजे' में रत है किन्तु यह बाजरे की भूसी के समान थोथा है। दुनिया के रंग में न रंग कर, स्वयं को धर्म के रंग में रंगना चाहिए। कांच के समान दिखाई देने वाली सांसारिक वस्तुओं में नहीं रमना चाहिए[5]।

(ग) नाते-रिश्तों की असारता —माता पिता, भाई-बहन, परिवार जीव के वास्तविक साथी नहीं हैं। लोग भ्रम से इनको अपना समझते हैं[6]।

(घ) सांसारिक मोह माया-जाल है ससार का 'मीठा झूठा' मोह माया-जाल है जो नष्ट हो जायगा। इसलिये पार्थिव वस्तुओं की प्राप्ति का अहंकार नहीं करना चाहिए[7]। ससार माया जाल की श्रृंखला से बंधा है, वेद और कुरान के नाम पर जाल फैला हुआ है। वास्तविक ज्ञान के स्थान पर यहां केवल दन्तकथाएँ ही चल रही हैं[8]।

(ङ) दुनिया का स्वरूप —जाम्भोजी ने अनेक बार तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक तथा धार्मिक स्थिति के सम्बन्ध में महत्त्वपूर्ण बातें कही हैं। ऐसा करने में उनका उद्देश्य वस्तुस्थिति से अवगत कराते हुए चेतावनी देना और समझाना था। उनके अनुसार, दुनिया वाद विवाद में रत है किन्तु इससे दानवों की भांति लोग नष्ट हो जाएँगे[9]। वेद और कुरान के नाम पर लोगों ने ढोंग फैला रखा है जिससे दूर रहना चाहिए[10]। लोगों को प्रशंसा भरी मनभावनी बातें तो अच्छी लगती हैं किन्तु खरी बातों का कोई विश्वास नहीं करता[11]। ब्राह्मण वेदों को, काजी कुरान को और जोगी जोग को भुला बैठे हैं। मुण्डियों में तो अवल ही नहीं है। कलियुग में तत्त्व न जानने के कारण सभी भ्रम में हैं। माता पिता व्यर्थ ही अपने

१—मरु प्रदेश में अकाल पड़ने पर कृषक लोग अपने पशु लेकर प्राण रक्षार्थ अन्य स्थानों में चले जाते हैं और इनमें तब तक रहते हैं जब तक कि इनके मूल स्थानों में सुकाल न हो जाय। दूसरे स्थानों में इस अस्थायी रूप से रहने को 'गोवळवास' कहा जाता है। ५१ ३४ ८४ १४।

२–२३ १, ४।

३–७५ ७८।

४–११४ १–४।

५–६६ १२, १६।

६–३१ ९–२३, ९९ १३, १४।

७–२९ २३, २४ २३ १–४, ६६ १–३।

८–९७ १–३।

९–१९ १५, १६।

१०–७२ १–५।

११–६ १४, १५।

पुत्र-नम्व धा अनेक प्रकार की कामनाएँ करते हैं[१]। भ्रमी लोग वाद विवाद मे रत, आचार-विचार हीन, कीर्ति के लोमी[२] और मनभावनी वातो से प्रसन्न होने वाले हैं इसलिए यह इनकी बालक बुद्धि[३] ही है।

(च) मानव माया-जाल मे है —ससार म प्रत्येक प्राणी किसी न किसी कारण स दुखी है[४]। ऐसे लोग हीरा के बदले पत्थर तोल रहे हैं[५]। ध्यान रखना चाहिए कि फल प्राप्ति कर्मानुसार ही होती है[६]। विचित्र बात है कि मनुष्य जगत को जीतने का तो उपाय करता है किन्तु उनसे अपनी देह तक भी नही जीती जाती[७]। वह भ्रम मे पड कर व्यर्थ ही वीरान जगल में भटक रहा है[८]। उसको अव और अधिक भूल मे नही रहना चाहिए[९]। किसी भी क्षण उसे ससार छोडना पड सकता है, इसलिए अपने शत्रुओ को छिपाना व्यथ है[१०]। शरीर नश्वर है ससार म अनेक झझट हैं और अन्त समय म किसी की आशा नही, इसलिए गफलत म कदापि समय नही बिताना चाहिए[११]।

(छ) मत्यु की अनिवायता —मृत्यु तो सबकी होगी, जडी-बूटी से उसको टाला नही जा सकता[१२]। अनेक बलशाली व्यक्ति यहा आकर चले गये[१३], फिर कलियुग के मनुष्य का तो विचार ही क्या किया जाय ? मृत्यु का माग एक ही है और सबके लिये है। 'रिणछाणो' के समान मानव-देह नष्टप्राय ह और रक्तधातु के नाते-रिश्ते शाक के समान कुम्हलाने वाले हैं[१४]।

१३-शरीर, मन, इन्द्रियाँ —

(क) शरीर —मायामय ससार की असारता की उपपत्ति है-शरीर की क्षणभगुरता किन्तु इस शरीर का महत्त्व बहुत ज्यादा है क्योकि परमतत्त्व इस पिंड म ही प्राप्त किया जा सकता है, आवश्यकता केवल साधना की है[१५]। मानव देह पूवजन्म के पुण्य से प्राप्त होती है जो अहर्निश क्षीण होती जाती है[१६]। माली जसे वाडी को सीचता है वसे ही शुद्धाचरण

१-८३ १५-१६।
२-२८ ६६-६९।
३-६१ १-३।
४-१९।
५-४६।
६-३१ १५, १६।
७-६६ १-३।
८-५१ २६-३४।
९-७५ १।
१०-८४ १, २।
११-९९ १३, १४।
१२-१६ १३, १४।
१३-६६ ८६ १०-१३, ८७ ३९-४४ २३ ११, ६६
१४-८६ २३, २५।
१५-४० १०६।
१६-११ १२, १३ ५७ ३ ४।

से शरीर की रक्षा करनी चाहिए[१]। जब तक शरीर ठीक है तभी तक उपाय कर लेना चाहिए। मृत्यु के समय तो कुछ करत धरत नहीं बनगा[२]।

शरीर की क्षणभंगुरता को बार-बार बताते हुए अनेक उपमाओं से जाम्भोजी ने समय रहते चेतने पर बल दिया है[३]। काया-रूपी अस्थिरगढ का राजा मन है[४]। काया कोट में पवन की 'कोटवाली' है और पाप का ताला लगा हुआ है[५]। गुरु-कृपा से काया-गढ की खोज करनी और काम, क्रोधादि चोरों को रोकना चाहिए[६]। ससार में आते समय क्षण भर तो लगा था किन्तु जाते समय उतना भी नहीं लगेगा[७]। काया को नष्ट होता देख कर "झूरना" नहीं चाहिए क्योंकि पिंड तो नष्ट होगा ही। मन की वासनाओं के साथ जीवात्मा स्वर्ग में जाती है[८]। इसलिए आयु, कुल और पद का विचार न करके अपने कर्मों को सुधारना चाहिए[९]।

(ख) मन, इन्द्रियाँ—मन को यदि वश में कर लिया जाय तो मुक्ति का मार्ग खुल सकता है क्योंकि "कायानगरी" का राजा मन बहुत ही शक्तिशाली है। यदि उसको वश में और इन्द्रियों को विषयों से पृथक कर लिया जाय, तो जरा-मरण का भय दूर हो सकता है[१०]। जोगी को लक्ष्य कर वे कहते हैं—तुम मूंड तो मुंडाते हो किन्तु मन नहीं मुंडवाते[११]। मन डोलना,-ध्यान हटना नहीं चाहिए, ब्रह्माग्नि दिन-रात प्रज्वलित रहनी चाहिए[१२]। वासनाओं और सासारिक आकर्षण में मन को लिप्त नहीं होने देना चाहिए[१३]। दुविधा-वृत्ति को सर्वथा त्याग कर मन को निश्चल और एकाग्र रखना चाहिए क्योंकि एकाग्र मन से ही कोई कार्य सम्भव है तथा ऐसे व्यक्ति ही अमृत-तत्त्व को पाते हैं[१४]।

अन्तःकरण शुद्ध होना चाहिए। यदि दिल साफ है तो अडसठ तीर्थ और काबा उसी में हैं[१५]। ससार की देखादेखी और मनमानी नहीं करनी चाहिए[१६]।

१-८४ ५-९।
२-६ १६-१६ ११ ६-६ २६ २९-३२।
३-२६ २७, २८, ५१ २४, २५, ५२ ६, ७, ७३ ८-१२ ८४ ५-९, ६८ ५-१०, ६६ १५ १६ ४४ ५, ६,
४-७७।
५-६७ १-३।
६-८३ १ २।
७-८६ २६-३०।
८-६१ १४, १८।
६-७४।
१०-९१।
११-५२ १-४।
१२-९१ ४, ५।
१३-५० २।
१४-४८ १-१४, २५ २३, ६ २।
१५-६ १।
१६-११०।

पाँचों इन्द्रियों और नवद्वारों को वश में करना चाहिए[1]। स्वार्थ-भावना से दूर रहना, भोग खाना-पीना और पहनना, सदा सादगी और सदाचरण पूर्वक रहना मनुष्य का परम कर्त्तव्य है[2]।

१४ सृष्टि क्रम –

सृष्टि के आदि में केवल "धन्धूकार"[3] या शून्य था। जाम्भोजी ने अनेक वस्तुओं के न होने का उल्लेख करके इसी स्थिति को दर्शाया है[4]। "धन्धूकार" स्थिति में जब छत्तीस युग बीत गये[5] तो निरंजन[6] स्वयंभू ने मन में सृजन का संकल्प किया, जिससे आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी-पाँच तत्त्व बने। इन तत्त्वों से समस्त सृष्टि का निर्माण हुआ। आदि में एक अण्डा बना, फूटने पर वह धरती के रूप में स्थिर हुआ, उसमें जल की उत्पत्ति हुई, जल में विष्णु और उनके नाभि-कमल से ब्रह्माजी उत्पन्न हुए। हरि की इच्छा और विष्णु की माया से सृष्टि की उत्पत्ति हुई और शरीर भी उनकी कृपा से मिला[7]। अन्यत्र इसी बात को किंचित् अन्तर के साथ कहा है। सृष्टि से पूर्व केवल एक 'ओंकार' था[8]। जब चौदह भुवनों में पानी ही पानी था तब केवल "ओम्" शब्द ही गुंजायमान था। उस पानी में अण्डा उत्पन्न हुआ तथा ब्रह्मा और शिव प्रादुर्भूत हुए[9]। स्वयंभू ने सत्ययुग में समस्त सृष्टि का सृजन किया, ब्रह्मा, विष्णु और महारुद्र की स्थापना की, चन्द्रमा और सूर्य-दोनों को साक्षी बनाया तथा आकाश, पवन और पानी का निर्माण किया। वराह अवतार धारण करके दाढ पर चढ़ा कर पृथ्वी का उद्धार किया[10]। इस भांति सृष्टि की स्थापना भगवान ने की है[11]।

१५-पुनर्जन्म और कर्म सिद्धान्त –

जाम्भोजी पुनर्जन्म और कर्म-सिद्धान्त पर अटल विश्वास रखते हैं। चौरासी लाख योनियों का उन्होंने मान्यता पूर्वक उल्लेख किया है[12]। फल-प्राप्ति अपनी-अपनी करनी के अनुसार होती है, इसमें विष्णु का कोई दोष नहीं[13] है। जैसी खेती की जायगी फसल भी वैसी ही मिलेगी[14]। इन्द्र वर्षा करता है किन्तु धरती पर खेत और बीज के अनुसार ही पौधे, फसल

१-५४ ७, ८।
२-८६ ७, ८ ७४ ७१ १५-१७।
३-३ २२, ९५ २।
४-६५।
५-९३ १-४।
६-३।
७-बालक मन्त्र तथा कळशपूजा मन्त्र।
८-पाहळ मन्त्र।
९-६४।
१०-६३ १-८।
११-१ ६।
१२-३ १०।
१३-११ ३१, ३२।
१४-२८ १४-१८।

और फल पदा होते हैं। पात्र और उसकी करनी के अनुसार फल मिलता है, पानी का इसम कोई दोष नहीं है। यहाँ जाम्भोजी ने कर्मों की दोहरी महत्ता बताई है। अच्छा जन्म और जीवन पूर्वजन्म के पुण्य-कर्मों के कारण मिलता है और इस जन्म में किये गये सत्कार्य आगे अच्छा फल देते हैं। बीज की भांति जीव भी अच्छे-बुरे होते हैं[1]। व्यक्ति कर्मों से ही ऊंच और नीच माना जाता है, कुल और आयु से नहीं[2]। स्वर्गप्राप्ति के भिन्न-भिन्न मार्ग हैं[3]। बुरा कर्म करने वाला यदि जन्म से नहीं तो कर्म से अवश्य चाण्डाल है[4]। जाम्भोजी ने कतिपय उदाहरणों के द्वारा भी इसका स्पष्टीकरण किया है[5]।

आवागमन - ओछी करनी करने वाले आवागमन के चक्र में उलझे रहते हैं, उनकी मुक्ति-कामना सूखे ठूंठ पर पान की भांति दुराशा मात्र है[6]। सृष्टि क्रम तो चलता रहता है किन्तु भ्रम में भटकने हुये लोगों का अनुसरण नहीं करना[7] और जन्म-मरण के बंधन से छुटकारा पाने का सतत प्रयास करना चाहिए[8]।

१६-स्वर्ग-नरक -

जाम्भोजी ने कैवल्यप्राप्ति या मोक्ष के अर्थ में स्वर्ग का प्रयोग किया है। महकारी और दुष्ट व्यक्ति नरक में जाता है, वहां यमराज उसको दण्ड देते हैं। उसकी पुकार वहां कोई भी नहीं सुनता[9]। एक 'सबद' में जाम्भोजी ने मृत्यु के पश्चात यम के सामने होने वाली जीव की करुणाजनक स्थिति का चित्रण किया है। सार रूप में उनका कथन है कि साथ तो केवल सुकृत ही चलते हैं[10]। जब करनी का हिसाब लिया जायगा तो मां, बाप, बहन, भाई, मित्र आदि कोई भी गवाह रूप में नहीं बोलेगा[11]। यमपुर और यमदूतों का भी सविस्तर वर्णन एक 'सबद' में किया है[12]। मृत्यु-समय तो कुछ भी करते-धरते नहीं बनेगा और बिना सत्कार्यों के पछताना ही पड़ेगा[13]।

१७-मुक्ति -

मुक्ति का तात्पर्य है सदा-सर्वदा के लिए आवागमन से छुटकारा। इसको जाम्भोजी ने स्वर्ग पाना, सुरों की पनाह पाना[14], सुर-सभा में समाना[15], देवों से मिलाप होना,

१-२०।
२-२४ ३-५।
३-८६ ३१।
४-११३।
५-२५ १४, १५, १११।
६-७५ ६६ ३४, ३५।
७-८६ ३१-३५।
८-२६ १-३, ६८ ३८, ५२ १०-१५।
९-११३।
१०-२८।
११-६५ १०-१८।
१२-६६।
१३-६८ ५-१० ११३।
१४-५१ १६।
१५-२८ ६३।

पार पहुंचना, वकुण्ठ पाना, उद्धार होना[1], 'भिसत' (बहिश्त) पाना[2] आदि शब्दों से द्योतित किया है। मनुष्य का चरम प्राप्तव्य मुक्ति ही है। विष्णु-नाम-जप, सदगुरु प्राप्ति[3], निष्काम-कर्म[4], अहंकार-त्याग[5], सदाचरण, इसके प्रधान उपाय हैं। यह आवश्यक नहीं है कि मरने के बाद ही मुक्ति हो, जीते जी मुक्ति, जीवन-मुक्ति प्राप्त करना श्रेयस्कर है और यह सम्भव भी है[6]। एक बार की मुक्ति सदा की मुक्ति है। जो हक और हलाल की कमाई खाता, सत्य को प्रमाण मानता[7] और जीने की विधि जानता है वही जीवन-मुक्ति प्राप्त कर सकता है[8]।

सुकृत के अन्तगत उन सभी कार्यों की गणना है जो किसी न किसी प्रकार आत्म-दर्शन और मोक्ष-प्राप्ति में सहायक होते हैं। सुकृत व्यर्थ नहीं जाते[9] किन्तु सदैव निष्काम भाव से ही कर्म करने चाहिएं। "सकाम कर्मों" से आवागमन का चक्कर जारी रहता है। जाम्भोजी ने कर्ण और विदुर के दृष्टांतों द्वारा इसको स्पष्ट किया है[10]। मुक्ति के लिए हरि-कृपा आवश्यक है[11]।

१८-ज्ञान, भक्ति और प्रेम -

ज्ञान के मुख्यत दो अर्थ हैं—एक विद्वत्ता, दूसरा तत्त्व-ज्ञान। जाम्भोजी दोनों का ही महत्त्व स्वीकार करते हैं। उन्होंने शास्त्रीय ज्ञान की भर्त्सना नहीं की है किन्तु उनका सही आशय समझने पर जोर दिया है। बिना ग्रंथ पढ़े भी व्यक्ति अनुभव से ज्ञान प्राप्त कर सकता है। अनुभव-ज्ञान एक-दो दिन में अर्जित नहीं किया जा सकता उसके लिए सतत सचेष्ट रहना पड़ता है। उन्होंने अनेक 'सबदों' में चेतावनी देते हुए अज्ञानांधकार से दूर रहने और ज्ञान-प्राप्ति हेतु प्रयास करते रहने का आग्रह किया है।

भगवन्नाम जप और सत्संग भक्ति मार्ग के सभी वर्गों में श्रेष्ठ माने जाते हैं। नाम भजन के दो प्रकार हैं - एक सस्वर नामोच्चारण तथा दूसरा अजपाजप। जाम्भोजी पात्र भेद से दोनों का ही उपदेश देते हैं। विष्णु नाम जप को वे मुक्ति का मूल मंत्र मानते हैं। इसी प्रकार सत्संगति अवश्य करनी चाहिए। इससे आदमी सुधरता और उन्नति करता है। लुहार भले कारीगर की संगति से लोहा घड़ते-घड़ते सोना भी घड़ने लगता है और बेड़े के संयोग से लोहा पानी पर तैरने लगता है[12]। जैसे अच्छा रंग चढ़ने पर कपड़े की कीमत बढ़ जाती

१-५६।
२-६७ १६।
३-९९ ७।
४-२८।
५-५६ १६।
६-९७ ४।
७-६७।
८-१०५ ६।
९-९७ ७।
१०-२८।
११-७५ ४५ ३-५।
१२-१४।

है, प्रेम ही सत्सग से पदोन्नति होती है। साधु लोग स्वच्छ सफेद रुई की भाति सब प्रकार के रग ग्रहण करने वाले होते हैं किन्तु काली ऊन के समान दुष्ट पुरुषों पर दूसरा रग हो नही चढता[1]। साधु पुरुषों की सगति से चचल मन भी शात हो जाता है[2]। भगवद्-प्रेम के बिना भौतिक वस्तुओ का सग्रह-नाग-रहित भूसी के समान है[3]। सबके दिलो में भगवान का वास है, इसलिए क्रोध-नीर और "छोत" की भावना निस्सार है[4]। सुकृत करते हुए सदा भगवद्-प्रेम मे रत रहना चाहिए[5]।

अध्यात्म-क्षेत्र मे भगवद्-कृपा होना परमावश्यक है, यह कह आये है[6]। ध्यातव्य है कि जाम्भोजी को प्रेमाभक्ति या गलदश्रु भावुकता बिल्कुल ही स्वीकार्य नही है।

१६-साधना, योग, दिव्य दृष्टि —

आत्मतत्त्व-प्राप्ति के लिए सबदवाणी मे हठयोग साधना का उल्लेख मिलता है किन्तु सर्वाधिक बल उन्होने मन्त्र-योग या जप-योग पर दिया है। विष्णु नाम जप आत्मोपलब्धि का सर्वश्रेष्ठ साधन है। पात्र-भेद से हठयोग साधना के सकेत भी यत्र-तत्र मिलते हैं जिनके कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं —प्राणवायु निरोध से परमात्मा पिंड मे ही प्राप्त किया जा सकता है। इससे गगन-मण्डल से झरता हुआ अमृत-पान सभव है, जिससे भूख प्यास मिट जाती जाता है[7]। शरीर मे प्राणायाम से सूर्य-चन्द्रमा का सयोग कराना चाहिए[8]। सूर्य-चन्द्रमा घट मे हैं और अनाहतनाद हो रहा है, इसको समझना चाहिए[9]। पवन, पानी (रक्त), दस इन्द्रियाँ नव द्वार, वश मे करने चाहिएँ। "वकनाल" साध कर त्रिकुटि पर ध्यान लगाना, माया के बधन तोड कर सत्य की साधना करने वाला ही पूर्ण योगी है और वही "शून्य मडल" मे खेलता है[10]। ऋद्धि-सिद्धि पिंड मे प्राप्त की जा सकती है[11] किन्तु इसके लिए योगाग्नि से विषय-वासनाओ को भस्म करना आवश्यक है[12]।

जाम्भोजी ने सहज-मार्ग पर ही चलने का आदेश दिया है। इसके लिए उन्होने बौद्ध-सिद्धो द्वारा प्रयुक्त शब्द "ओजू की वाट"[13] का उल्लेख किया है। तत्वप्राप्ति के मार्ग पर विरले ही चलते हैं क्योकि इसके लिए अपने आप को मारना पडता है, अत 'निगुरे'

१-२५।
२-पाहल मन्त्र।
३-७६ ६।
४-३६ १-७।
५-३७।
६-१२ १४ ३, ४, १, ३० ८, ६।
७-४०।
८-६६।
६-५७ ५-११, ८६।
१०-१०६।
११-१०९।
१२-६६।
१३-२२ ३, ११४ ४।

व्यक्ति यह "झूठ" नही रचाते[1] । इसके लिए वाह्य वेश व्यर्थ है । तत्त्व सद्गुरु बता सकते हैं[2] और साधक उसको जान कर पूर्ण योगी बन सकता है[3] ।

२०-आचार-व्यवहार, आत्मानुशासन के मुख्य नियम —

जाम्भोजी ने व्यावहारिक जीवन मे कतिपय नियमो का पालन विशेष रूप से आवश्यक बताया है । सदाचरण पर वे बहुत ही जोर देते हैं, आचार-विचार सम्बन्धी शथिल्य उनको कदापि मान्य नही है[4] । मुक्ति-हेतु भी इनका पालन परमावश्यक है । सम्प्रदाय मे स्वीकृत २९ धर्म-नियमो का पालन इसी कारण है । आगे उन प्रधान नियमो का उल्लेख किया जाता है जिनका प्रतिपादन जाम्भोजी ने अनेक बार किया है । चार प्रकार से ऐसा किया गया है - एक तो सीधे विधि-निषेधात्मक रूप मे, दूसरे किसी प्रसग-विशेष के सन्दर्भ मे, तीसरे प्रति-बोध रूप मे और चौथे मुक्ति-प्राप्ति के आवश्यक अग के रूप मे । कहना न होगा कि २९ धर्म-नियमो की आधार-भित्ति ऐसे कथन ही हैं ।

विष्णु मूल तत्त्व है इसलिए निरन्तर विष्णु का जप जपना चाहिए[5] । वाद-विवाद[6], अहकार[7], झूठ[8], निन्दा[9], द्वैत भावना[10], चोरी[11], क्रोध[12], मोह[13] और जीवहत्या[14] का सर्वथा त्याग करना चाहिए । बैल[15], गाय[16], भेड-बकरी[17] आदि निरीह जानवरो की हत्या नही करनी चाहिए । इस सम्बन्ध में जाम्भोजी ने बडे सबल तर्क दिए हैं । कमाई का दसवां हिस्सा तो दान[18] मे अवश्य देना चाहिए किन्तु सुपात्र[19] को

१-८५ ।
२-१०७ ।
३-५२ १२-१५, ४९ १-८ ।
४-२८ ६७ ३० ७, ५२ १२ ।
५-११, १३ ७, २१ ८-१२, २३ ५, २५, १६, २ १२, २९ १०, १९, ३१ १३, १४, ३२ ८ ६३ ३०, ६६-१९, ७६ ३, ८६ ३६, ९९ ५, १०५ ४ ११९ १, १२०, १२१ १२२, वहनवणमन्त्र, पाहळमन्त्र, बाळकमन्त्र ।
६-१५ १३, १९ १४-१६, २८ ६६, ३० ८ ३२, १०, ३८ १०, ३९ ५, ८७ ७, ५१ २२, २३ ९८ १, २ ।
७-१८ १५, ३० ८, ५१ २२, २३, ५६ १५, १६ ६३ १८, ६६ ९, १९ ८३ १० ८६ ५, ९८ २ १०६ ४ ।
८-६ १० ११, १३ २ २८ ४२, ५२ ४, ६४ ८ ।
९-५१ ९ ८२ ३, ४ ९३, १२० ।
१०-१८ १३ १४ ।
११-८२ ४ ११२ २ ।
१२-६२ ९ १० ।
१३-२३ १ ।
१४-८ २३, २४, ९ ८, ९, ३६ २, ४६ ८, ८६ ७, १०९ ३४, ११३ ७८ ।
१५-८ ३, ४ ।
१६-८ १५, १६, ९ ११, १२, ६८ ३ ।
१७-७ २ ।
१८-२५ १५ ९० ५ २, ५२-५१ ५४ १-४, ९२ १-४ ।
१९-५४ ५ ।

और निष्काम भाव[1] से। ऐसा दान ही अमृत फल देता है। विनम्रता (नवणी)[2] क्षमा[3], सत्य[4], शील[5], तप[6], सन्तोष[7], दया[8] आदि धर्मों का पालन करना चाहिए। मन एकाग्र रखना[9] और "जरणा" (काम क्रोधादि) "जरनी" चाहिए[10]। अच्छी कमाई करना[11] और इस की कमाई ही खानी चाहिए[12]। अन्याय का त्याग[13] तथा संयम[14] और ईमान[15] रखना चाहिए। सत्संगति[16], परोपकार[17] और तन-मन दोनों की पवित्रता[18] रखनी और स्नान सदैव करना[19] चाहिए। निर्मल वाणी[20] बोलनी और होम करना[21] चाहिए। हरे वृक्ष नहीं काटने चाहिएँ, सोमवती अमावस्या और रविवार को तो बिल्कुल ही नहीं[22]। रजस्वला स्त्री के साथ समागम नहीं करना चाहिए, ग्रहण "कुभौं बसत" और निर्जला एकादशी को तो कदापि नहीं[23]। मांस आदि अखाद्य पदार्थों[24] तथा भांग[25] का सर्वथा त्याग करना चाहिए। गुरुमुख करना[26], गुरुवाणी को मानना[27], सहज भाव से रहना[28] और सुपथ पर चलना[29] चाहिए। संसार और क्षति में लोभ में नहीं

१-२८ ६१-६३ ५४ ११, ६२ ३ ४।
२-२१ १६, २८ ५३, ८४ १२ १०५ ८।
३-२१ १६, २८ ५३ ८४ १२, १०५ ८।
४-२७ ६१, ६७ ११ ७० १०, ७२ ९, १०, १०१ ४।
५-१८, २१ २१ २७ १७, १८, २८ ३९, ४०, ३० ५ ३६ १५, ५२ १२-१३।
६-६ ८, ११ ३।
७-१०६ ३।
८-२ १२, १८ ७ ८ ४७ ७, ८२ ३।
९-६ २ २५ २३ ४८।
१०-१३ ७, २१ १६, १७ २८ ५३-५५, ५४ ८, १२० १।
११-६५ १२।
१२-९ १० ४ २७ १८ ७० १, ८३ २७।
१३-१५ १३, ३२ १०, ३९ ५।
१४-२१ २१, २२ ३९ १५ ५२ १३ ६६ १, ८४ ११।
१५-११५, १०१ ४।
१६-१४, ३७।
१७-६४ १०, ११।
१८-६९ ८४ ११, १०० ७ १०५।
१९-२८ ३५-३८, ३० ५ ५५ १, ८१ ७, ८।
२०-१५ १ ७६ ३।
२१-६ ८, ११ ३, ६३ ७।
२२-६ ३, ४।
२३-६।
२४-७ ४, १४ १२, ८६ ८, ११४ १०।
२५-१४ ११।
२६-१८, २१, २८ ५, ६४ ६, ७० १ ६७ ७ ६८ १०।
२७-१२ १-२ १५ ६, १६ २५, २७ १ ८४ १२ ९६ ८, ९।
२८-१०५ ७।
२९-३७, ६८ ६।

न्ना चाहिए। मोटा पहनना, रूखा-सूखा जो प्राप्त हो जाय उसे खा लेना, शुद्ध पानी पीना, पने हाथ से काम करना और अपने खेत की ही कमाई खानी चाहिए[2]। मन-हठ[3] और र्यों से दूर रहना चाहिए[4]। बुरी चीज देख कर अनदेखी और बुरी बात सुन कर अनसुनी रनी चाहिए[5]। सदा प्रसन्न[6] रहना चाहिए और आवश्यकता पड़ने पर मुक्ति और भग- ान के निमित्त अपने प्राण भी त्याग देने चाहिएँ[7]। ओछे काय न करके[8] सदा उत्तम ाचार-विचार-व्यवहार और करणीय कृत्य ही करने चाहिएँ[9]। पहले कोई काय स्वय ही रके दिखाना चाहिए तब दूसरा को उसे करने के लिए कहना चाहिए। कोई काम स्वय करके दूसरो को उसके लिए कहना अनुचित और बुरी बात है[10]। इनके अतिरिक्त दो बदों[11] म राम-लक्ष्मण के प्रश्नोत्तर रूप म भी अठारह दोष गिनाये गये हैं।

२१-पाखड —

जाम्भाजी ने तत्कालीन समाज म प्रचलित अनेक प्रकार के पाखडो की कडी भर्त्सना और निन्दा की है। ये पाखड साधना, सिद्धि, योग, अध्यात्म और धम के नाम पर जोगियो, मुसलमानो और हिन्दुओ में बहु-प्रचलित थे। इनका उल्लेख प्रधानत तीन प्रकार से किया गया है —१ (क) जोगियो, (ख) मुसलमानों और (ग) हिन्दुओ मे प्रचलित विभिन्न पाखडो का पृथक्-पृथक् उल्लेख, (२) अनेक प्रकार के प्रचलित पाखडो का सामान्य रूप से सामू- हिक वणन—जिनम मूर्ति-पूजा, तीर्थ-यात्रा, बडप्पन-भावना, कर्म-काण्ड, ऊपरी- दिखावा और कथित सिद्धि या/और "करामातियाँ" सम्मिलित है तथा (३) भविष्य मे होने वाले सम्भावित पाखडों स चेतावनी। इनका उल्लेख नीचे किया जाता है —

१-(क) "जोग-पाखड" —

नगे रहने से जोग-प्राप्ति नही होती[12]। ऐसे व्यक्ति और भगेडी जीवहत्या करते हैं, इसलिये वे भूल मे हैं[13]। जोगासन पर बैठकर कूड, कपट का आश्रय लेने वाला जोगी नहीं हो सकता। सहज मार्ग को तो कोई विरला ही जानता है[14]। सिद्धि-प्रदशन, बाह्य वेश भूषा और बनावट म भी जोग नहीं है[15]। कान-फडाना, "खिरघट" पहनना, जटा बढ़ाये रखना और जीवहत्या करना निरा पाखड है[16]। बिना जोग-मार्ग जाने घर-बार छोड़ना किन्तु घर-बारी की भाति सूई-धागे से "करड" और 'मेखला" की सिलाई करना, झोली-कथा लेकर कधे पर बोझ ढोना, बीर-बतालो का जप करना, मूड मुडाना किन्तु माया और मोह का त्याग नही करना केवल लोक दिखावा ही है[17]। इसी प्रकार लोह- शृखला धारण करना, नगा रहना चतुर्दिक भटकते रहना भी व्यर्थ है। मूल बात परब्रह्म की सुधि लेना और तद् हेतु शुद्धाचरण जोगी का कर्त्तव्य है[18]। यह न समझ कर जो मूड मुडा लेते हैं वे गुरु और चेले दोनो ही पागल कुत्ते के समान हैं[19]। सबदवाणी के अनेकश

१-२८ ६८ ६९ ३०। २-६६ ५, ११२ १, २। ३-२८ ६८ ९८ २। ४-६१। ५-९२। ६-६६। ७-६ २६ ३२ ५। ८-७५ ५। ९-६ १८, २१ २७ ६ २८ ६२ १०५। १०-२८। ११-५९ ६०। १२-६ २५। १३-१४ ११, १२। १४-२२। १५-४५ ६-११। १६ ४६ ७, ८। १७-४७ १-६। १८-४८। १९-११८।

सबद नाथपंथी जोगियों, उनकी साधना, वेश-भूषा और कार्यों पर कहे गये हैं जिनसे इस सम्बन्ध में सम्यक जानकारी मिलती है।

(ख) "मुसलमान पाखण्ड" —जो खुदा को जानता नहीं, गाफिल है, मनमानी करता है, गायों को मारता किन्तु उनका दूध-दही-घी खाता है, पश्चिम की ओर मुँह कर 'उळबग' खो देता किन्तु जिसके मन में दया-भाव नहीं, वह कैसा मुसलमान है[1]? यदि दिल साफ है तो काबा इसी में है, "उळबग" देने की आवश्यकता नहीं[2]। पशु का दूध पीना तो जायज है परन्तु उसको मारना और हीन कर्म करके नमाज पढ़ना व्यर्थ है क्योंकि ऐसे मुसलमान ने नमाज के तत्त्वार्थ पर ध्यान नहीं दिया है[3]। सुन्नत कराने से कोई लाभ नहीं, बिना अलख को लखे[4] 'मोहम्मद-मोहम्मद' कहना बेकार है क्योंकि 'मोहम्मद' तो हलाली पुरुष था, मुर्दा खाने वाले तो तुम्हीं लोग हो[5]।

(ग) हिन्दू-पाखण्ड —विष्णु के अतिरिक्त कोई भी पूजनीय नहीं है, अतः देवी देवताओं और पत्थर की पूजा निस्सार है[6]। मूर्ति-पूजा और तद् हेतु किये गये पाखंडों में भगवान नहीं है। ऐसी पूजा करने वाले ब्राह्मणों से तो कुत्ते कहीं अच्छे हैं क्योंकि वे चोरों के आने पर घर वालों को भौंक कर जगा तो देते हैं। इसी प्रकार भूत-प्रेत और यक्ष-पूजा और इस हेतु साधना करना, 'कालर' जमीन में बीज बोने के समान निरर्थक है। श्मशान में, नदी तट पर और अन्यत्र भी इतर देव-पूजा करने से कोई सिद्धि प्राप्त नहीं हो सकती[7]।

(२) पाखंडों का सामान्य रूप से सामूहिक वर्णन —

हिन्दू होकर मूर्ति या तीर्थ, मुसलमान होकर काबा, जोगी होकर मूंड मुंडाना और 'गोरषहटडी' धोकना सब पाखंड हैं। ऐसे लोग अज्ञानी हैं[8]। बिना गुरु-ज्ञान के तत्त्व प्राप्ति हेतु जोगी, जंगम, सीगी बजाने वाले, दिगम्बरी, सन्यासी ब्राह्मण, ब्रह्मचारी और पढ़े-लिखे पंडित आदि के प्रयास व्यर्थ हैं। ऐसे लोग मनहठी हैं[9]। तीर्थों पर भटकना केवल लोक-दिखावा है[10]। इतर देवों, यक्षों और भूत-प्रेतादि की साधना-उपासना पाखंड का सबसे बड़ा प्रमाण है[11]। दिखावा करके किये जाने वाले सभी कर्म और आचरण-हीनता किसी भी प्रकार मोक्ष-मार्ग में सहायता नहीं करते[12]।

(३) सम्भावित पाखंड —एक 'सबद' में जाम्भोजी ने अपने अनुयायियों को भविष्य में होने वाले अनेक प्रकार के पाखंडियों और उनके द्वारा किये जाने वाले पाखंडों से सावधान और सजग किया है[13]। इसमें संदेह नहीं कि उनके समय में इसमें वर्णित पाखण्ड किसी न किसी रूप में प्रचलित थे। जाम्भोजी की ऐसी चेतावनी और आदेश का फल है कि विष्णोई समाज में साधना, अध्यात्म और धर्म के क्षेत्र में वर्तमान में भी किसी प्रकार का पाखण्ड या पाखण्ड-पूजा प्रचलित नहीं है। पाखंड और ढोंग के विरुद्ध कथित गुरुवाणी पर, उनके अनुयायियों का इतनी दृढ़तापूर्वक और आस्था से चलने का दूसरा उदाहरण शायद ही किसी मध्यकालीन उत्तरी भारत के संत सम्प्रदाय में मिले। जम्भवाणी की सच्चाई और ओज का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है।

१-८। २-७ १ ६ ११। ३-६ १०। ४-६ २५ २६। ५-१०। ६-६६ ६, ७। ७-७१। ८-३६ १०-१३। ९-४१ ६-११। १०-६२ ५। ११-६६ ३३। १२-५५ २, ११४। १३-९०।

अनत सबद सतगुर कह्या पच्यासी वरस परवाण।
नाथ कठि रहिया अता, सीख्या वील्ह सुजाण ॥ १ ॥
वड पोथी गिरा वील्ह की, दूजी सुरजनदास।
तीज मुक्नू मुझ गुरू, सुरताण पिता मुझ आस ॥ २ ॥
वै वात सुणो साधा कना, वे पोथ्या मा परवाण।
परमाणद सुरताण र, लिखिया सवद सुजाण ॥ ३ ॥
मैं तो माड्या मोह करि, पुसतक देखि विचार।
सबदा अरथ अनत है, जाण सिरजणहार ॥ ४ ॥
चिरमी सोन एक तोल, रग मोल बराबरि नाहि।
भेष बराबरि एक सा, भेद बराबरि नाहि ॥ ५ ॥

—परमानदजी वणियाळ, प्रति सख्या २०१, २२७ से।

ग्यान दगधी गुर निंदणा, पाखियळ आन उपास।
एता सवद न दीजिय, दाखै वीटळदास ॥ १ ॥
गुर निरमळ निकळक गुर, पर उपगार करत।
वील्ह कहै गुर दाखयो, मुक्ति खेत को पथ ॥ २ ॥

—वील्होजी, प्रति सख्या २०१, २२७ से।

अध्याय ६

जम्भवाणी : पाठ–सम्पादन

[illegible]

[illegible]

[illegible]

अ[illegible]

[illegible]

भत [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

सकत [illegible]

रहा [illegible]

[illegible]

हैं। दिवर [illegible]

कौरविप्यात [illegible]

से "[illegible]" का हा [illegible]

गा का देखा [illegible]

[illegible] । मगर [illegible]

रात बन में जाय [illegible]

श्री सिलिद। [illegible]

[illegible] ॥ म[illegible]

कृष्ण गए ॥ वा[illegible]

रहो ॥ मगर लगा[illegible]

रंड़ी और बादि सिरो[illegible]

में याद हुआ की [illegible]

अध्याय ६

जम्भवाणी : पाठ-सम्पादन

भूमिका

(१) प्रतियाँ प्रतियों की बहिरंग परीक्षा

"सबदवाणी" की ४८ प्रतियाँ उपलब्ध हुई हैं। "वाणी" के पाठ-सम्पादन में इनमें से चुनी हुई सात प्रतियों का उपयोग किया गया है। इनका परिचय नीचे दिया जाता है -

१-जा० प्रति। प्राप्तिस्थान-महन्त रणछोड़दासजी, आथूणी जागा, जाम्भा। सबद संख्या-१२३, गद्य प्रसंग सहित। पत्र संख्या-३६। अपेक्षाकृत पतला बादामी रंग का देशी कागज। आकार-६×४ इंच। हाशिया-दायें, बायें-१ इंच। पंक्ति-प्रति पृष्ठ-१३। अक्षर-प्रति पंक्ति-३४-३७। लिपि-पाठ्य। परसराम द्वारा संवत् १८७९ के मार्गशीर्ष वदि १२ को लिपिबद्ध। प्रथम पत्र पर हाशियों में और द्वितीय के बीच में अलंकरण हेतु रंगीन चक्र बनाये गए हैं।

आदि-॥ श्री बिसनजी सत्यहो ॥ लिषते सबद श्री भाभजी रा वायक ॥ काचै करब नीर राख्यौ ॥ काची माटी का दीवटीया कराया ॥ जा माहि पाणी घतायौ ॥ हुक्म सूं दीया जगाया। बामण न परचौ दिपाल्यौ आदि सबदवाणी सतगुर की ॥ श्री वायक कहै ॥ गुर चीन्हों गुर चीन्है पिरोहित ॥ गुर मुषि धरम बपाणी ॥

अंत-॥ विमा विमन तु भणि र प्राणी ॥ प क लाप उपाजूं ॥ रतन क्या बैकूंठ बासौ ॥ जुरा मरण भव भाजूं ॥ १२३ ॥ इति श्री सबद श्री वायक सपूरणम् ॥ भवेत ॥ अनंत शब्द सतगुर कह्या ॥ भ्रम चौरासी वाणि ॥ नाथेजी व कंठ रह्या अता लिषीया बील्ह सुजाण ॥ लिषते साध श्री हरिकिसनजी रा सिष्य परसराम ॥ संवत १८७९ मिती मृगसिर वदि १२ वार बुधवार ॥ गाव लोहावट मधे ॥ श्री ॥ श्री ॥

२-रा० प्रति। प्राप्तिस्थान-पीपासर साथरी, पीपासर। सबद संख्या-१२०, बिना प्रसंग। केवल प्रथम "सबद" का ही प्रसंग पद्य में दिया है। पत्र संख्या-३६। किनारे यत्र-तत्र खण्डित। बादामी रंग का देशी कागज। आकार-६×४ इंच। हाशिया-दायें, बायें-१ इंच। पंक्ति-प्रति पृष्ठ-११। अक्षर-प्रति पंक्ति ३१-३३। लिपि प्रायः स्पष्ट और पाठ्य किन्तु स्याही फीकी पड़ जाने से बीच के कई पत्र किंचित अस्पष्ट। रामदास द्वारा संवत १८८६ के सावन वदि २ को लिपिबद्ध।

आदि-॥ श्री जंभेस्वरायनम ॥ अथ लिषते शबद जाभजी का ॥ काच करब जल राख्यौ ॥ शबद जगाया दीप ॥ बाभण कौं परचौ दीयौ ॥ असो अचरज कीप ॥ जा बूमयौ सोई कह्यौ ॥ अलप लपायौ भेव। धोयो सब समाय क ॥ जद शबद कह्यौ भमदव ॥ गुर चीन्हों गुर चीन्हि पिरोहित ॥ गुर मुप धरम बपाणी ॥

अन्त-ज्यौं ज्यौं लाज दुनी की लाज ॥ त्यौं त्यौं दाव्यौ दाव। भलीयौ होय तौ। भल वुद्धि

आव ॥ बुरीयौ बुरी कमाव ॥ १२० ॥ इति श्री शबद वाणी श्री भामजी की सपूरणम् समाप्तम् ॥ १ ॥ समत ॥ १८ ॥ ८६ रा व्रिषे मितो श्रावण वदि २ वार थावरवार ॥ लिपते साध श्री १०८ कनीरामजी रो सिष्य रामदासजी । श्री गणेशायनम ॥ श्री रामजी श्री जभेश्वरायनम ।

३-गो० प्रति । प्राप्तिस्थान-जागलू साथरी, जागलू (बीकानेर) । सबद सख्या-१२०, बिना प्रसग । पत्र सख्या-२९ । देशी कागज । आकार-६$\frac{3}{4}$×४$\frac{3}{4}$ इच । हाशिया-दायें, बायें-आधा इच । पक्ति-प्रति पृष्ठ-१३ । अक्षर प्रति पक्ति-३१ ३५ । लिपि-स्पष्ट और सुवाच्य । साधु गोविददास द्वारा सवत १८०७ के मागशीर्ष सुदि ७ को लिपिबद्ध ।

आदि-॥ श्री विष्णवे नम ॥ श्रो गुर चीन्हों गुर चीन्हि पिरोहित ॥ गुर मुप धरम वषाणी ॥ जो गुर हैवा सहजे सीले शब्दे नाद वदं । तिहिं गुर का आलोकार विद्याणी ॥

अत-विष्ण विष्ण तू भणि रे प्राणी प च लाष उपाजो रतन काया वकु ठे वासो तरा जरा मरण भव भाजौ १२० इति श्री शब्द वाणी श्री जाभजी की सपूरणम् १ सवत १८०७ रा वषे मिती मिगसर सुदि ७ लिपीकृत साध गोविंदराम ।

४-म० प्रति । प्रति सख्या ६५ (ग) । पोथी । प्राप्तिस्थान-श्री मनूराम थापन मुकाम । सबद सख्या-११७ पद्य प्रसग सहित । विवरण के लिए द्रष्टव्य-अध्याय १, अध्ययन सामग्री, प्रति सख्या ६५ ।

५-ला० प्रति । प्रति सख्या २०१ । पोथा । लालासर साथरी की प्रति । प्राप्तिस्थान श्री महत रामनारायणजी, रामडावास (जोधपुर) । सबद सख्या-१२१, गद्य प्रसग सहित । विवरण के लिए द्रष्टव्य-अध्याय १, अध्ययन-सामग्री, प्रति सख्या २०१ ।

६-पी० प्रति । प्राप्तिस्थान-पीपासर साथरी, पीपासर (नागौर) । सबद सख्या-१२१, गद्य प्रसग सहित । पत्र सख्या-३६ । पतला बादामी रग का देशी कागज । आकार-६×४ इच । हाशिया-दाय बायें-लगभग पौन इच । पक्ति प्रति पृष्ठ-१३ । अक्षर प्रति पक्ति ३३ ३५ । लिपि-स्पष्ट और सुपाठ्य । पीताम्बरदास द्वारा सवत १८७८ के जेठ सुदि १२ को लिपिबद्ध । प्रथम पत्र पर अलकरण हेतु एक रगीन चक्र बनाया हुआ है ।

आदि ॥ श्री भामोजी रा वायक प्रारभ ॥ वाव करव जल राख्यौ ॥ काचो माटा का दीव टीया कराया । जा मा पाणी घताया । हुक्म सौं दीवा जगाया । बाभण न प्रचो दिपायो । आदि शबद वाणी सतगुर की श्री वायक कहे ॥ गुर चीन्हों गुर चीन्हि पिरोहित । गुर मुषि धरम वषाणा । जो गुर होयवा सहजे सील नाद वद ॥ तिहि गुर का आलागार विद्याणी ॥

अन्त-विसन विसन तू भणि रे प्राणी ॥ प च लाष उपाजों । रतन काया वकु ठे वासो ॥ तरा जरा मरण भो भागा ॥ १२१ ॥ इति श्री शबद श्री वायक सपूरण ॥ अनत शबद सतगुर कह्या ॥ वरण चारामा वाण ॥ नाथजी क कठ रह्या सता । लिपाया शब्द सुजाण ॥ १ ॥ समतोब्धन भूपागिर सिधु नागरा लिपार्थ मासातम मास तार्थ लिमासे गुरुन पषे द्राम्या लिपीकृत पीताम्बरदास श्री विसनु दासजी रा सिष्य मगल मस्तु कल्याण मस्तु ॥ पत्र ३६ ॥

७-ब० प्रति। प्रति सख्या ८१ (त)। पोथी। प्राप्तिस्थान-श्री बदरीराम थापन, मुकाम, (बीकानेर)। सबद सख्या-११७, पद्य प्रसग सहित। विवरण के लिए द्रष्टव्य-अध्याय १, अध्ययन सामग्री, प्रति सख्या ८१।

(२) अन्य प्रतियाँ

निम्नलिखित शेष ४१ प्रतियो का उपयोग सम्पादन म उसी शाखा की अन्य प्रति/प्रतियाँ प्रयुक्त होने के कारण नही किया गया है –

अध्याय १, अध्ययन-सामग्री, प्रति सख्या–१६, २६, ८२, ८३, ८४, ८६, ९६, १११, ११३, ११४, १२४, १२५, १२६, १२७, १२८ १२९, १३०, १३१, १३२, १३३, १३४, १३५, १३६, १५३, २०२, २०४, २०९ २१३, २१४, २२०, २२५, २२६, २२७, २३१, २९९, ३१५, ३२६, ३३४, ३९२, ३९३, ३९५।

इनमे-(क) प्रति सख्या ११३, १३४, म ब प्रतियो की शाखा की ओर
(ख) शेष सब प्रतियाँ रा गो पी तथा जा प्रति की शाखा की हैं।

इनमे पाठ-मिश्रण और स्वतत्र पाठ-विकृतियो के उदाहरण भी मिलते हैं।

(३) प्रतियों की अ तरग परीक्षा

(क) जा० रा० गो० पी० म० ब० प्रतियाँ

१– २४ ७ स्वीकृत पाठ है

सतगुर मिलियो सत पथ बतायो वेद गरथ उदगारू।

इन प्रतियो म मोटे अक्षरो म छपे अ शो के स्थान पर ' विदगारा त उदगागारू " पाठ है। प्रतीत होता है इस स्थल पर जा रा गो पी म ब प्रतियो के आदर्श किंचित त्रुटित रहे हैं। ' वद" के स्थान पर ' विद", ' गरथ" के स्थान पर "गारा त" अनुमान स लिखा गया। "उदगागारू" म स्पष्ट ही दृष्टिभ्रम से "गा" प्रक्षेप है। श्रुतिदोष से भी ऐसा सभव है। स्वीकृत रेखाकित पाठ का अर्थ है -(म) वेद-तत्त्व का बखान करता हू। अर्थ की दृष्टि से ' विदगारा त उदगागारू " पाठ निरर्थक है।

२– २५ १७ स्वीकृत पाठ है

कफ विवरजत रूदयो।
सेतू मातू बोह रग लेणा सब रग लेणा रूइयो।

जा रा गो पी ब प्रतियो म "कफ" के स्थान पर ' काफर और म प्रति मे 'काफ" पाठ है। प्रतीत होता है 'कफ' के अर्थ को ठीक से न समझने के कारण अथवा दृष्टिभ्रम से "काफर' और काफ" लिखे गए। 'कफ' अरबी शब्द है (द्रष्टव्य-मु० मुस्तफाखा मद्दाह उर्दू-हिन्दी शब्दकोष, पृष्ठ ९७ सन् १९५९) जिसका अर्थ है- सूखी हुई घास। स्वीकृत पाठ का अर्थ है- सूखी हुई घास से रहित स्वच्छ, सफेद रूई बहुत प्रकार के रग ग्रहण कर लेती है। "काफर" और ' काफ' दोनो ही इस प्रसग मे निरर्थक हैं अत ये विकृत पाठ हैं। यह भी सम्भव है कि ' काफर" शब्द अधिक प्रचलित होने के कारण ग्रहण कर

लिया गया हो ।

३- ६३ २, ३ स्वीकृत पाठ है

तनि म्हे रह्या निरालभ होय करि उतपति यजूरारी ।
ना मेर बस न बाप न माई, अपणी काया आप सवारी ।

जा रा गो पी प्रतियां म "बस न" के स्थान पर "दाव" और म व प्रतियों म "दावन" पाठ है । प्रथम पंक्ति म रचयिता अपनी उत्पत्ति की बात बताते हुए द्वितीय पंक्ति म कहता है-मेर न वश है, न बाप है और न मां है, मैंने अपनी काया का निर्माण स्वय ही किया है । दावन (दावण) का अर्थ है-बंधन, सहारा, लिए, बदले म, सम्बन्ध या राह जो जाम्भोजी के आजीवन ब्रह्मचारी होने के कारण उनके "बस" चलन की बात को अनुचित समझ कर साम्प्रदायिक दृष्टिकोण से ' दस" पाठ के बदल रखा गया है । वस्तुत यहां रचयिता अपने स्वयभूत्व के संदभ म अपने वश मा बाप आदि के न होने का उल्लेख करता है जो सवथा संगत है । सबदवाणी म अन्यत्र अनेक बार ऐसा उल्लेख किया गया है । अत "बस न" पाठ मूल का है ।

४- ३१ ७-१० स्वीकृत पाठ है

जो जित हुता सो तित नांहीं, भल खोटा ससारू ।
कह का पित माई बहण र भाई कह का पख परवारू ।

जा रा गो पी म व प्रतियों म मोटे अक्षरो म छपे अश के स्थान पर "जो चित हुता सो चित नाही" पाठ है । आरम्भ की चार पंक्तियों म ससार की नश्वरता बताता हुआ रचयिता पांचवीं छठी पंक्तियों मे कहता है —

"अनेक अनेक चलता दीठा, कलि का माणस कवण विचारू '। फिर प्रस्तुत पाठ है जिसका अर्थ है -जो (पहले) जहां था, वह (अब) वहां (स्थिर) नहा है। इस भले-बुरे ससार म माता, पिता, बहन और भाई किसके हैं ? ' जित" और "तित" के स्थान पर "चित" पाठ स्वीकार करने से अर्थ होगा-जो चित्त (पहले) था वह चित्त (अब) नहा है, जो अप्रासंगिक है। असगत होने से "चित" पाठ विकृत है ।

५- ३० ४, ५ स्वीकृत पाठ है

गज हसतो दानू श्रति कलि दानू ।
साध सभ सौरि सील सिनांनू ।

जा प्रति म मोटे अक्षरा म छपे अ श के स्थान पर "सब सानानु" पाठ है। रा गो पी म व प्रतिया म यह अ श त्रुटित है । प्रतीत होता है इनकी आदर्श प्रतियों म यह अ श अस्पष्ट या अ शत त्रुटित था । जा प्रति म इस कारण स्वीकृत पाठ के केवल दो शब्द आ पाये—"सभ" के स्थान पर "सब" और "सिनानु" । शेष सब प्रतियों म यह अ श त्रुटित रहा । इस सबद मे, प्रस्तुत पंक्तियां तक अनेक प्रकार के दान का उल्लेख करते हुए उन सब से बढ़कर "शील स्नान" को माना गया है । शील और स्नान की महत्ता बताई गई है न कि केवल स्नान की । सम्प्रदाय म मान्य २६ धर्मनियमो म तीसरा स्नान और चौथा शील-पालन करना है । अन्यत्र भी प्रकारान्तर से यही बात कही गई है —

"तन मन धोइये, संजम होइये (६९ १)। स्पष्ट है कि जा प्रति में स्वीकृत पाठ अशात और रा गो पी म व प्रतियों में पूर्ण त्रुटित है।

६-४२ १०-१३ स्वीकृत पाठ है

जाह बाणा म्ह रावण मारयौ (१०)
मतू त कोवड सोखा हाथे साह (११)
कर पांडव जादम जोधा (१२)
मतू त गढ हथणापुरि आणि वसाऊ (१३)

जा रा गो पी म व प्रतिया में दृष्टिभ्रम के कारण मोटे अक्षरो मे छपा अश त्रुटित है। ग्यारहवी पक्ति के "मतू त" पाठ के पश्चात् लिपिकार मोटे अक्षरो मे छपा अश लिखना भूल गया क्योकि तेरहवी पक्ति म भी यही पाठ है। प्रस्तुत पक्तियो म राम-रूप सम्बन्धी अपनी सर्वशक्तिमत्ता के कथन के पश्चात् कौरव-पाण्डवों का उल्लेख है जो सगत है। अर्थ है- जिन बाणा से मैंने रावण को मारा था, यदि मैं चाहू तो हाथ मे धनुष लेकर (उन्हा बाणो से) (सागर) सुखा सकता हू। यदि मैं चाहू तो कौरव-पाण्डव और यादव-योद्धाओ को लाकर गढ हस्तिनापुर मे पुन बसा सकता हू। त्रुटित अश को यदि मूल पाठ न माना जाय तो अर्थ होगा-जिन बाणो से मने रावण को मारा था, यदि (मैं) चाहू तो लाकर गढ हस्तिनापुर म बसा सकता हू या आकर गढ हस्तिनापुर बसा सकता हूँ। स्पष्ट ह यह उल्लेख प्रसग के विरुद्ध और असगत है क्योकि इसमे एक तो राम और कौरव-पाण्डव दोनों से सम्बन्धित उल्लेख अपूर्ण हैं, दूसरे राम का सम्बन्ध हस्तिनापुर से स्थापित होता है जो असगत है। इस प्रकार, इन प्रतिया मे मोटे अक्षरो म छपा अश मूल से त्रुटित है।

७-४६ ७ ८ स्वीकृत पाठ है

ये कान विरावो चिरघट पहरो, पापड पोह न काई।
जटा वधारो जीव सिधारो, आयसां ! इहा पापडे जोग न होई।

दोनों मोटे अक्षरों में छपी अर्द्ध पक्तिया के स्थान पर विभिन्न प्रतियो मे क्रमश इस प्रकार पाठ है -

१-जा -ईह पापड तो जोग न होई।
ईह पापड तो जोग न होई।
२-रा गो पी -आयसा इह पापड तो जोग न कोई।
(रा मे "कोई" के स्थान पर "होई" पाठ है)।
इहि पापड तो जोग न कोई।
३-म व -इण पापड प जोग न कोई।
इण पापड प जोग न होई।

स्पष्ट है कि जा रा गो पी म व प्रतियों म जो पाठ मोटे अक्षरों मे छपी प्रथम अर्द्ध-पक्ति के स्थान पर है, वही दूसरी अर्द्धपक्ति मे भी है। दृष्टिभ्रम से स्वीकृत पाठ की प्रथम अर्द्ध पक्ति "पापड पोह न कोई" के स्थान पर स्वीकृत द्वितीय अर्द्ध पक्ति का पाठ प्रकारा-

न्तर से लिखा गया। अर्थ की दृष्टि से देखें तो मोटे अक्षरों में छपी स्वीकृत दोनों पंक्तियों के अर्थ क्रमशः इस प्रकार हैं—(१) पाखंड में कोई भी मार्ग (धर्ममार्ग) नहीं है या पाखंड कोई मार्ग (धर्ममार्ग) नहीं है। (२) हे आयसो! ऐसे पाखंडों में जोग नहीं होता या योग-मार्ग पाखंड में नहीं है, जो प्रसंगानुकूल और संगत हैं। इस प्रकार, इन सब प्रतियों में "पाखंड पोह न कोई" अंश त्रुटित है।

८-३२ १,२ स्वीकृत पाठ है

फुरण फुहार किसनी माया घण बरसता

छलिया सरवर नीर।

जा रा गा पी म ब प्रतियों में "छलिया" शब्द त्रुटित है। (छलिया=भरा हुआ, भरे हुए, भर गया, भर गए)। स्वीकृत पाठ का अर्थ है —कृष्ण की माया में फुहारों के रूप में जल प्रकट होता है और जब वह अधिक बरसता है तो सरोवर पानी से भर जाता है। यदि "छलिया" मूल पाठ का न समझा जाय तो 'घण बरसता सरवर नीर' अंश निरर्थक होगा। अतः प्रसंग और अर्थ की दृष्टि से "छलिया" शब्द मूल पाठ का ही है। "छलिया" का इस अर्थ में प्रयोग अन्यत्र भी अनेक स्थानों पर हुआ है –

१-रतनकया द सू ष्या छलत भंडारा (५६ । १)

२-करो मजूरी पेट छलाई (८३ । २७)

३-पवण वधारण क्या छ काची, नीर छली ज्यों पारी (८४ । ६)

४-चवद भुवण रह्या छलि पाणी (९४ । २)

९-१६ ८-१४ स्वीकृत पाठ है

अवर भी खचत बांणों (८)

जती तपी तक पीर रषेसर (९) सांयत सुर बांणालों (१०)

जोधा महारथी बळाक मी जोयवा (११), तोलि रह्या सह पाणी (१२)

तऊ विणि खचि न सकी (१३), सिभू तणी कबाणी (१४)।

जा रा गो पी म ब प्रतियों में मोटे अक्षरों में छपा अंश (आठवीं पंक्ति के "बांणों" शब्द के अतिरिक्त) दृष्टिभ्रम से त्रुटित है। जती तपी तक पीर रषेसर" के पश्चात् "तोलि रह्या सह पाणी' अंश लिखा गया किन्तु मोटे अक्षरों में छपा अंश छूट गया। आठवीं पंक्ति के "बांणों" शब्द के ध्यान में रहने के कारण भी दसवीं पंक्ति पुनरुक्ति भय से लिखि यारा न छोड़ दी क्योंकि इसके बांणालों शब्द के कारण दृष्टिभ्रम हो गया। प्रसंग और अर्थ की दृष्टि से मोटे अक्षरों में छपे अंश का होना आवश्यक है। प्रसंग सीता के स्वयंवर से संबंधित है। अर्थ है-(सीता स्वयंवर के समय) यतियों, तपस्वियों, पीरों, और ऋषीश्वरों के सम्मुख (समक्ष) सामन्तों, शूरों, धनुर्धारियों, योद्धाओं और महारथियों ने (शिव-धनुष पर) अपने अपने बल को आजमाया किन्तु उनमें से किसी से भी शिव-धनुष खींचा नहीं जा सका। मोटे अक्षरों में छपा अंश स्वीकार्य न होने पर "जती तपी तक पीर रषेसर, तोलि रह्या सह पाणी' का अर्थ होगा—यतियों, तपस्वियों, पीरों और ऋषीश्वरों-सबने अपने-अपने बल को आजमाया जो अस्पष्ट और असंगत है।

१०-२ १२ स्वीकृत पाठ है

दया धर्म थापिल निरजण सो बाळो ब्रह्मचारी ।

का, रा गो पी म व प्रतियों में मोटे अक्षरांश के स्थान पर "निज वाळा" पाठ है। सम्भवतः इनका आदर्श इस स्थल पर किंचित अपठ था, इस कारण "निरजण" के स्थान पर 'निज' और "बाळो" के स्थान पर 'वाळा' लिखा गया, शेष 'र,' 'ण' और "सो" अक्षर छूट गए। स्वीकृत पाठ का अर्थ है —(जो) दया और धर्म की स्थापना करता है, ऐसा बालब्रह्मचारी (मैं) निरंजन स्वरूप हूँ। केवल 'निज वाळा' पाठ निरर्थक है। इस सबद में जाम्भोजी अपनी शक्तिमत्ता का उल्लेख करते हुए अन्त में उपर्युक्त बात कहते हैं जो समग्र सबदवाणी और विश्नोई साहित्य में आए तद् विषयक कथनों के सर्वथा अनुरूप है।

११-४२ १, २ स्वीकृत पाठ है

आयसा ! अगछाळा पावडी काय फिरावौ ?

मतू त का दा उगवता माण ठमाऊ ।

जा प्रति में 'का दा' त्रुटित और रा गो पी म व प्रतियों में इसके स्थान पर "आयसा" पाठ प्रक्षेप है। ४२ वें सबद के अंत में ये दो पंक्तियां पुनः आई हैं वहां जा प्रति में 'का दा' पाठ है और रा गो पी म व प्रतियों में "का दा" त्रुटित है। इस प्रकार, स्पष्ट है कि रा गो पी म व प्रतियों में 'का दा' के स्थान पर 'आयसा' प्रक्षेप है जो प्रथम पंक्ति में सम्बोधन रूप में होने के कारण सम्भवतः दूसरी पंक्ति में "का दा" के स्थान पर रख लिया गया है और जा प्रति में पदान्त में "का दा" आया ही है, अतः प्रस्तुत पाठ में यह त्रुटित माना जायगा। निष्कर्षतः स्वीकृत पाठ 'का दा' जा प्रति में त्रुटित है और रा गो पी म व प्रतियों में इसके स्थान पर "आयसा" प्रक्षेप है। का दा=काई+दाळ (ताळ)=कुछ देर तक अर्थात् काफी देर तक। ये शब्द सबदवाणी में अन्यत्र भी इसी रूप में प्रयुक्त हुए हैं –

(१) ईन्द्र कोट उजीणी नगरी, का दा सिंघ पुरी बिसराम लियो (६३ १७)

(२) कोट लंकागढ विषमा हूंता, का दा वसियो रावण राणो (९६ ६)

अन्य अनेक विश्नोई कवियों की रचनाओं में भी इसी अर्थ में इसका प्रयोग मिलता है –

पुरिप पास हू का दा रह्यौ, इह वाळक को आवण्य कह्यौ ।। ७४ ।।

थोड़ी सी दार नायो थयो, तौह न देहु न वाह्यौ कह्यौ ।। १२० ।।

–वील्होजी, कथा औतारपात

का दा सतगुर न न्हवाय दीवा दीज बाति चडाय ।। ३७ ।।

–सुरजनजी, कथा औतार की ।

१०-३२ ७ स्वीकृत पाठ है

सुकरत करता हरवति आव, तो ना पछतावौ करियौ ।

बिगन जपतां जाभ दु थाव, तो जामदिया विणि गरियौ ।

"सुकरत" के स्थान पर जा रा गो पी म प्रतियों में 'हरि हरि' और व प्रति में "हर हर" पाठ है जो प्रक्षेप है। स्वीकृत पाठ का अर्थ है–सुकृत करते हुए यदि [illegible]

हैं तो पछतावा नहीं करना चाहिए, यदि विष्णु का जप करते हुए जीभ थकती है तो (ऐसी) जीभ के बिना ही काम चल सकता है। "हरि हरि" और "हर हर" पाठ एक दूसरे का पर्याय है। "सुकरत" के स्थान पर यदि "हरि हरि" पाठ स्वीकार किया जाय, तो उसके साथ "हरकति" (बाधाएँ) की संगति नहीं बठती। "हरि" नाम जीभ से जपा जाता है, उसके लिए बाधाओं का आना विशेष मूल्य नहीं रहता। सुकृत करते हुए बाधाएँ आ सकती हैं क्योंकि सुकृत या तो बाह्य जगत से सम्बन्धित होते हैं अथवा उनका प्रभाव किसी न किसी रूप में बाह्य जगत पर पड़ता है। इसलिए "सुकृत" के लिए "हरकति" प्रसंग और अर्थ की दृष्टि से ठीक है। फिर, विष्णु या हरि जप की बात दूसरी पंक्ति में आती ही है जिसके लिए "जीभ जु थाक" पाठ युक्ति-युक्त है। इस कारण भी "सुकरत" के स्थान पर "हरि हरि" पाठ निरर्थक है। हरि जप की इस प्रकार महत्ता बताना अत्यधिक साम्प्रदायिक प्रभाव के कारण सम्भव है।

नीचे पाठ-विपर्यय के कतिपय उदाहरण दिये जाते हैं, यद्यपि इनसे अर्थ की असंगति नहीं होती —

१३- ११ २२-२५ स्वीकृत पाठ है

जा जन मंतर विसन न जप्यौ, ग न वामो मोनी वन ढूक सूर सवारू।

जा जन मंतर विसन न जप्यौ, आडा क घरि पोहण होयसी पीठ सहै दुख भारू।

जा रा गो पी म व प्रतियों में प्रथम पंक्ति के स्थान पर द्वितीय और द्वितीय के स्थान पर प्रथम पंक्ति लिखी गई है।

१४- ६३ २२, २३ स्वीकृत पाठ है

दहसिर ने जदि वाचा दीन्ही, तदि म्हे मेल्ही अनन छळू।

दहसिर का दस मसतक छेद्या, ताणों बाणों लळू कळू।

जा रा गो पा म व प्रतियों में प्रथम के स्थान पर द्वितीय और द्वितीय के स्थान पर प्रथम पंक्ति लिखी गई है।

१५- ६३ ३३ स्वीकृत पाठ है

तिहूं तिलोक, चवदा भवण, सपत पयाले, जंबू दीपे।

जा, रा गा पी म व प्रतियों में शब्द के विपर्यय से प्रस्तुत पंक्ति का पाठ इस प्रकार है- चवदा भवणे, तिहूं तिलोक, जांबू दीप, सपत पयाळे।

१६- ६५ ३ स्वीकृत पाठ है घई ऊंध मोह बरसत मेहा।

जा रा गो पी म व प्रतियों में "मोह बरसत" के स्थान पर "बरसत मोह" पाठ है।

१७- ७६ २ स्वीकृत पाठ है

रे बनमाळी कांयौ सींच, ईह वाडी तो भेळ पडी।

जा रा गो पा म व प्रतियों में मोटे अक्षरों में छपे पाठ के स्थान पर "कांह रे सींचौ बनमाळी" पाठ-विपर्यय है। इनमें प्रयुक्त "कांहे" शब्द "कायौ" का पर्याय है।

१८- ९७ ६ स्वीकृत पाठ है केवळ ग्यांनी ग्र म गियानी सहज सिनांनी

चा रा गा पी म व प्रतियों म इस पक्ति का पाठ शब्दो के विपर्यय से इस प्रकार मिलता है—सन्त सिनानी, केवळ यानी ब्र म गियानी।

(ख) रा गो पी म व प्रतियाँ

१-८४ ६ स्वीकृत पाठ है

पवरा बधारा कया छ काची, नीर छनी ज्यों पारी।

रा गो पी म व प्रतियो म "छ" के स्थान पर "गढ" पाठ मिलता है। "काची' स्त्रीलिंग क्रिया "क्या" (काया) स्त्रीलिंग सज्ञा के लिए प्रयुक्त हुई है। अत "कया छै काची" पाठ ठीक है। "गढ' पुल्लिंग सज्ञा शब्द है। इसलिए यदि "कया गढ काची" पाठ स्वीकार किया जाय, तो "काची" क्रिया अशुद्ध सिद्ध होती है। "गढ" पाठ स्वीकार करने पर इन दो पाठों म से कोई एक पाठ मूल का होना चाहिए —"कया गढी काची" अथवा ' कया गढ काचा'। रा गो पी म व. प्रतियो मे न "गढी" पाठ है और न "काचा"। स्पष्ट है कि "गढ" पाठ विकृत और निरर्थक है। इससे पूर्व के सवद म "कया" के साथ "गढ" पाठ आया है- "गर परमादि कया गढ खोजो, दिल भीतरि चोर न जाई (८३ २), अत हो सकता है कि लिपिकारो ने इस कारण भी यहा "गढ" शब्द लिख दिया हो।

२-३६ ४ स्वीकृत पाठ है घडी स' घड।

इसके स्थान पर विभिन्न प्रतियो मे भिन्न-भिन्न पाठ है —

रा, गो पी म-घडीय स'धमडू

म व म घगड स घडौं।

रा गो पी प्रतियो म "घड" के स्थान पर "घमडू" है स्पष्ट ही "म" प्रक्षिप्त है। म व प्रतियों म लिपिजन्य भूल के कारण "घ' को "ध' समझा गया है, साथ ही सचेष्ट विकृति अनुकरणात्मक शब्दो को लाकर की गई है। इन प्रतियो में "स" के प्रयोग को गलत समझने के कारण भी यह भूल सम्भव है। इसे "जीव' सज्ञा के बदले प्रयुक्त सर्वनाम भी माना जा सकता है। यह 'स' अव्यय न होकर स' है, जिसका अर्थ है—सब। नागरी लिपि म मारवाडी की इस उदात्त ध्वनि के लिए कोई चिह्न न होने के कारण स को अव्यय "स' समझा गया। कदाचित इसी कारण "घड का अर्थ लिपिकारो के लिए अस्पष्ट रहा। स्वीकृत पाठ का अर्थ है —(जसे तेरी देह) घडी है (वसे) सबकी घडी है। म व प्रतियों के लिपिकार भी स' को भूल से अव्यय ही समझने प्रतीत होत हैं। स्पष्ट है कि "घडीय स धमडू' या 'घगड' स घडौं" पाठ निरर्थक है। अन्यत्र भी स' का प्रयोग इसी अर्थ (सब) म हुआ है—निरति सुरति सा' जाणी (५ ८)।

३-४२ १,२ स्वीकृत पाठ है

घायसा म्रिगछाळा पावडी काय फिरावौ

मदू त का दा उगवतो मारा ठभाऊ।

'का दा" के स्थान पर रा गो पी म व प्रतियो में 'घायसा विकृत पाठ है। विस्तार के लिए द्रष्टव्य-(क) ११।

४-२८ ५ स्वीकृत पाठ है सुकरत साथि सखाई चाल ।
जा रा गो पी म प्रतियों म "सगाई" के स्थान पर "सगाई" पाठ है किन्तु व प्रति म "सखाई" पाठ ही मिलता है । स्वीकृत पाठ का अथ है-(केवल) पुण्य-कम ही साक्षी के रूप म साथ चलते हैं । अथ की दृष्टि से "सगाई" पाठ प्रसग-असगत है ।
५- १६ २६-२८ स्वीकृत पाठ है

दूरया हा त दूरि गु गाज
सो सबद गुणाकारू गु णापारू
गुणामारू वर अपारू ।

रा गो पी म व प्रतियो म मोटे अक्षरो म छपा पाठ दृष्टिभ्रम स त्रुटित है । इसका अथ है-(जो) सबद दूर स भी दूर सुनाई दे वह गुणकारी, गुणातीत, गुणो का सार और अपार शक्तिशाली है । शब्दब्रह्म की महत्ता बतात हुए "गुणापारू" द्वारा उसके एक गुण का उल्लेख किया गया है, इसलिये यह पाठ सगत ह ।
६ -४२ १४-१७ स्वीकृत पाठ ह

अति अनेरा वाग स वाया, मतू त मोवन मिगा वरि चराऊ ।
अति अनेरा पावस पाणी, मतू त घण पाहण बरसाऊ ।

रा गो पी म व प्रतियो मोटे अक्षरो म छपी पक्तियाँ त्रुटित हैं । स्वीकृत पाठ का अथ ह-यदि (मैं) चाहूँ तो अन्य बहुत से बाग लगा कर स्वर्ग-मृग का निर्माण कर उनम चरा सकता हूँ । वर्षाऋतु मे बादलो से पानी बरसता ह किन्तु यदि (मैं) चाहूँ, तो उनस पत्थरो की वर्षा करवा सकता हूँ । मोटे अक्षरो म छपी पक्तियो के बिना शेष पक्तियो की अथ-असगति स्पष्ट ह । फिर इस सबद म लोक-मान्य या लोक-प्रचलित एक बात कह कर फिर "मतू त (यदि चाहूँ तो) से रचयिता ने स्वय की महत्ता और करनी का उल्लेख किया ह । इस दृष्टि से भी "मतू त' स पूव मोटे अक्षरो म छपी दो पक्तियाँ सगत हैं ।
७- ७८ ५ स्वीकृत पाठ ह

असट कुळी गिरवर पणि लाम लाज बणी अढार भारू ।

रा गा पी म व प्रतियो म मोटे अक्षरो म छपा अ । दृष्टिभ्रम से त्रुटित ह । इन प्रतियो म अढार के स्थान पर "अठार" पाठ है जो मारवाडी की अपेक्षाकृत नवीन प्रवृत्ति का सूचक है । 'ढ' को "ठ" समझने की लिपिजन्य भूल भी हो सकती है । "अष्ट कुली गिरवर' का उल्लेख विष्णोई कवियो की रचनाओ म अनेक बार हुआ है ।
८-१०२ स्वीकृत सबद है हरचे दारी सरफ कु (न) दर राह कु (न) । (१)

लुक्रन ना लुळ वेरह तात तुलफ कु (न) (२)

रा गा पी म व प्रतियो म यह पूरा सबद त्रुटित है । प्रतीत होता है समस्त सबद अरबी, फारसी मिश्रित होने एव तद्जन्य अथ की दुरूहता के कारण नहीं लिया गया। दूसरा कारण यह भी हो सकता है कि साम्प्रदायिक दृष्टिकोण से भाषा म मुसलमानी प्रभाव लक्ष्य कर, अनुचित समझ, न लिया गया हो । एक सम्भावना यह भी है कि इनके आन्तों मे यह सबद हाशिये म रहा हो और इस प्रक्षिप्त समझ कर न लिया गया हो । प्रति सख्या

६६ में यह सबद १०३ वी सख्या का है। इसका भावार्थ है-जो कुछ भी तेरे पास है उसको रास्ते म (जीवन म) खर्च कर। भुराव की ओर मत मुड़ (ससार का जिस ओर भुराव है, उस ओर मत मुड़, ससार म लिप्त मत हो)। (सांसारिक) सुधि और वियोग के दुख को नष्ट कर। हरच, हरचह (फा०)=हरचीज, जो कुछ। दार (फा०)=रखने वाला, दारी= रखता है तू। सरफ, सर्फ (फा०)=खर्च। र राह (फा०)=रास्ते म। कुन (फा०)=कर। लुळन=भुराव। लुळना=झुकना, पक्ष म होना आदि (मारवाड़ी म बहु प्रयुक्त है)। लुळ= मुड़। वरह=विरह=वियोग का दुख। तान=सुध, देखरेख, चिन्ता, कष्ट, पीडा, रटन। तरफ (अ०)=नष्ट।

९- १०३ रा गो पी म व प्रतियो म यह पूरा सबद त्रुटित है। सम्पूर्ण सबद प्रश्नोत्तर रूप म है। पहली चार पक्तियो म पाँच प्रश्न और शेष चारो म उनके उत्तर है। अन्तिम प्रश्न और उत्तर यह है -मुसलमाणी कहा थी आई ?

महमद थी मुसलमाणी आई। इससे साम्प्रदायिक मनोवृत्ति के कारण सम्भवत मुसलमानी प्रभाव या मुसलमानो की प्रशसा समझ कर यह सबद ग्रहण नहीं किया गया। यह भी हो सकता है कि इन प्रतियो के आदर्शों मे यह सबद हाशिये मे रहा हो और इसे प्रक्षिप्त समझ कर न लिखा गया हो।

१०- ६५ १ स्वीकृत पाठ है व कवराई पार गिराई, अनत वधाई। रा गो पी म व प्रतियो म मोटे अक्षरों म छपा अ श दृष्टिभ्रम से त्रुटित है। स्वीकृत पाठ का अर्थ है- कवराई तो वह है (जिससे ससार-सागर स) पार उतरा जाय और जो (इस कारण) अपार आनन्ददायक हो अथवा जो अनन्त रूप से बढती ही जाय। 'पार गिराई' पाठ न होने से, 'कवराई' की महत्ता किस कारण से है, इसका पता नही चलता। अत मोटे अक्षरो म छपा पाठ मूल का है।

११- ७८ ७ स्वीकृत पाठ है

सिध साधक सुरनर मुनियर लाज, लाज सिरजण हारु।

रा गो पी म व प्रतियों म 'सुरनर" पाठ त्रुटित है। इस सबद मे रचयिता का कहना है कि उसकी निद्रावस्था मे यदि दिन भर बीत जाय, तो समस्त जगत की मर्यादा का लोप हो जाय। इसस जगत की अनेक वस्तुएँ अभाव रूप हो जाएँगी। उसी सम्बन्ध म प्रस्तुत पंक्ति है जिसका अर्थ है-सिद्ध, साधक, देवगण (या लोग) मुनि और सृजनकर्ता सब लया वस्था को प्राप्त हो जाएँगे। प्रसग और प्रयोग की दृष्टि से "सुरनर" शब्द मूल पाठ का है। "सुर' के साथ "नर" का प्रयोग बहुवचन, लोग या श्रेष्ठ अर्थ मे हुआ है। सबदवाणी मे ऐसे अन्यान्य प्रसगो म 'सुरनर' शब्द का प्रयोग बहुत बार किया गया है। इसलिये यहा भी यही सगत है। अन्य उदाहरण ये हैं-

१-म्हा देखता देव दाणो सुरनर खीणा (२३ ६)।
२-सुरनर तणो सवेरु (५२ ५)।
३-न तू सुरनर न तू सकर (६२ ११)।
४-कुण जाण म्हे सुरनर देऊ (६३ ४२)।

५-सुरनर संकर को न उगाई (६५ १४)।
६-पषा गुरवां सुरनर दवां (८६ १७)।
७-माग सुरनर एतो मांग (६८ ६)।
८-सुरनर देव ज वदी गान (११२ ३)।
९-सुरनर तणा सनेगा माया (११६ १)।

१२- ७ ३ स्वीकृत पाठ है थांह मार्गे बरक टहेली, जायो जाव न घाई।
रा गो पी म व प्रतियों म 'टहेली' के पश्चात् 'तो हे है' पाठ भरना था है। साम्प्रदायिक प्रभाव के कारण अपभ्रष्ट अधिक मूलायुक्त भावाभिव्यक्ति के लिए यह प्रयोग हुआ प्रतीत होता है। एक कारण और भी हो सकता है। अन्यत्र यह पाठ है—न्य हय जायो जीव न घाई (८३ २८)। सम्भवत इसी साम्य पर प्रस्तुत पाठ म भी प्रयोग कर लिया गया हो।

१३- २४ ७ स्वीकृत पाठ है सतगुर मिलियो, सतपथ बतायो, वद गरथ उदगार।
रा गो पी म व प्रतियों म "बतायो" के पश्चात् "भ्राति चुकाई" पाठ प्रक्षेप है। अन्यत्र भिन्न प्रसग म "सतपथ बतायो" के पश्चात् "भ्राति चुकाई" पाठ आया है-सतगुर मिलियो सतपथ बतायो भ्राति चुकाई (४३ ५)। इस कारण यहां भी प्रक्षेप हुआ है। प्रस्तुत प्रसग म "भ्राति चुकाई" पाठ निरर्थक है क्योंकि रचयिता "सतपथ" और "वद गरथ" के सन्दर्भ म "भ्राति चुकान"--भ्रम मिटाने की बात कहना है, न कि यह कि उसने ऐसा कर दिया है।

१४- ३६ १० स्वीकृत पाठ है हिन्दू होय क तीरथ धोक भूला रह्या इवाणी।
रा गो पी म व प्रतियों म "धोक" के पश्चात् "पिंड छताव" पाठ प्रक्षेप है। प्रतीत होता है साम्प्रदायिक प्रभाव के कारण "तीर्थ-पूजा" के अतिरिक्त हिन्दुओं के धार्मिक कर्मकाण्ड "पिंड भरने" को भी हेय बताया गया है। रचयिता ने सम्पूर्ण वाणी म तत्कालीन हिन्दू-समाज म प्रचलित धर्म के सामान्य बाह्याडम्बरों का तो यत्र-तत्र उल्लेख किया है किन्तु उनसे सम्बन्धित विशिष्ट क्रियाओं का नहीं।

१५- २ ५,६ स्वीकृत पाठ है लोई अलोई त्यौंह तिरलोई ऐसा न कोई
मोरी आदि न जाणत महियळ धूवा बखाणत।

रा गो पी म व प्रतियों म प्रथम पक्ति के पश्चात "जपा भी सोई जिहि जपिए आवागवण न होई" पक्ति प्रक्षेप है। स्वीकृत पाठ का अर्थ है- (मैं) दृष्ट भी हूँ और अदृष्ट भी हूँ और वसे ही त्रिलोक म (व्याप्त) हूँ, (मेरे) समान (और) कोई भी नहीं है। मेरी आदि को कोई नहीं जानता। (जिस प्रकार) पर्वत म धुएँ को देख कर अग्नि का अनुमान होता है (उसी प्रकार मेरी रचना देख कर मेरा अनुमान किया जाता है)। प्रक्षिप्त पक्ति का अर्थ होगा-हम उसका भी जप करते हैं जिसके जप से आवागमन नहीं होता। प्रस्तुत प्रसग म तो रचयिता स्वय को ब्रह्म मान कर, अपनी सर्व शक्तिमत्ता का बखान कर रहा है। अत यहां किसी दूसरी सत्ता के जप की बात असगत है।

१६- ६३ ३५-३८ स्वीकृत पाठ है

मइ दमाणों पाट परवाणों, अइया लइया, निरजत निरजत
न्हीं मोग जावा जू गी, एती नान फुरत माम्ह ।

"इमाणों के पश्चात (क) रा गो पी प्रतियों म "तत समाणों गुर फुरमाणों एव (ख) म व प्रतियों में "गुर फुरमाणों पाठ प्रवेश है। स्वीकृत पाठ का अर्थ है-हे लालो ! जो इस प्रकार से (ऊपर बताए गए प्रकार से) जानता है, वह निश्चित रूप से (सत्) पथ पर है। यहा से वहा तक (सर्वत्र) जड-चेतन, छोटी-मोटी (जितनी भी जीव-योनियां हैं, उन सबको समान मैं क्षण-मात्र में देता हूं। "इमाणों के पश्चात यदि "तत समाणों गुर फुरमाणों अथवा 'गुर फुरमाणों' पाठ स्वीकार किया जाय, तो अर्थ की कोई सगति नही बठती। अत ये दोनों पाठ प्रक्षिप्त हैं।

(ग) रा गो पी प्रतिया

१- ६३ ६२-६४ स्वीकृत पाठ है रौद रूप करि राकस झडिया
वाण म हाक्वहि वनचर जुडिया
तदि पणि राखी कवण पती ?

रा गो पा प्रतियों म "रौद" के स्थान पर "राम और "झडिया के स्थान पर "हडिया करके "राम रूप करि राकस हडिया पाठ किया गया है जो अर्थ की दृष्टि से असगत है। स्वीकृत पाठ का अर्थ है-(रामावतार के समय जब) रौद्र रूप धारण करके (लका म) राक्षस युद्ध के लिए अडे, तब मेरी हाक पर, बाणा के आगे वनचर जुडे थे। उस समय पत किसने रखी ? यदि प्रथम पक्ति का पाठ "राम रूप करि राकस हडिया" मानें, तो अर्थ होगा, राम रूप करके (मैंने) राक्षसो का वध किया। इससे द्वितीय पक्ति निरर्थक हो जाती है। वास्तव म यहा रचयिता का मन्तव्य एक ओर राक्षसो और दूसरी ओर वनचरो के आपस म युद्ध करने का सकेत देते हुए राम की महिमा प्रदर्शित करना है। अत प्रसग और अर्थ की दृष्टि म "राम और "हडिया" विकृत पाठ हैं।

२- ३६ ४ स्वीकृत पाठ है घडी म' घड ।

रा गो पी प्रतियो मे "घड' के स्थान पर "घमड' पाठ है। स्वीकृत पाठ का अर्थ है-(जब तेरा देह) घडी है (वसे ही) सबकी घडी हुई है। "घड म "म' का प्रक्षेप करके "घमड पाठ किया गया है जो अर्थ की दृष्टि मे असगत है। (ख) (२) मे द्रष्टव्य।

३- २ ९ १० स्वीकृत पाठ है भणी न भणिवा, गुणि न गुणिवा ।
सुणी न सुणिवा, कही न कहिवा खडी न खडिवा ।

रा गो पी प्रतिया म मोटे अक्षरों म छपा अश दृष्टिभ्रम से त्रुटित है। स्वीकृत पाठ का अर्थ है-(तूने) पढने योग्य को पढा नहीं, मनन करने योग्य बातों पर मनन नहीं किया, सुनने योग्य बातों को सुना नही, कहने योग्य बातों को कहा नहा (और) जोतने योग्य (भूमि को) जोता नहा। "भणनो और "गुणनो के भिन्न अर्थ हैं किन्तु प्रयोग दोनों का प्रायः एक साथ ही होता है। "भणने' की सार्थकता "गुणने' मे ही है, केवल "भणना' ही नहीं बल्कि "गुणना भी चाहिए। अन्यत्र भी ऐसे प्रयोग हैं -

ये पढि गुणि रहिया खाली। (७ ६ तथा ८ १४)

घायसो जोयगो भएतो गुंगतो (६६ ३१)
अत "गु गी न गु गिवा" पाठ सगत है।
४- ११ १६ स्वीकृत पाठ है जा जन मतर विसा न जप्यो नगरे मोर महार ।
रा गो पी प्रतियो म "जप्यो" के पश्चात् "त" प्रक्षिप्त है। अथ की दृष्टि स यह अनावश्यक है। इस सबद म अन्यत्र भी इसका प्रयोग नहीं है।
५- ६० १० स्वीकृत पाठ है मा मैं चर विरोध घण हट सोड्या ।
रा गो पी प्रतियो म "हट" शब्द त्रुटित है। प्रस्तुत सबद म लक्ष्मण ने उन प्रश्नों के क्रमश उत्तर दिए हैं जो इससे पूव के ५६ वें सबद म श्री राम न उनस पूछे है। वहां पाठ है- क त वर विरोध घण हट साड्या ? (५६ १०) और उसम "हट" शब्द रा गो पी प्रतियो म त्रुटित नहीं है। अत स्पष्ट है कि "हट" शब्द प्रस्तुत पाठ म सगत है।
६- ७६ ३,४ स्वीकृत पाठ है जिह क नादे विदे वाजत पूरण ।
निह पासडी न चीन्हत कूण ।
रा गो पी प्रतियो म "जिह" के स्थान पर "जा पासडी" प्रतिलिपिकार द्वारा सचेष्ट रूप से किया गया प्रक्षेप है। "जिह मे साथ "तिह" का प्रयोग सवथा उचित है। ऊपर की पक्ति में यदि "जा पासडी पाठ स्वीकार किया जाय तो ' पासडी" शब्द पुनरुक्ति के कारण व्यथ है, तथा दूसरी पक्ति म फिर "तिह ' के स्थान पर "ता" पाठ होना चाहिए, जो नहीं है। अत स्पष्ट है कि 'जा पासडी ' पाठ प्रक्षिप्त है।
७- ९३ ३५ स्वीकृत पाठ है मइ दमाणों, पोह परवाणों।
रा गो पी प्रतियो मे "दमाणों ' के पश्चात् "तत समाणो गुर फुरमाणों ' पाठ प्रक्षेप है। प्रसग और अथ की दृष्टि से यह प्रक्षेप असगत है। विशेष द्रष्टव्य-(ग) (१८)।
८- ९३ २७ स्वीकृत पाठ है
गुडक गाज से क्यों बीहै, जैभळ भागी सहस फणों।
रा गो पी प्रतियो म " गुडक गाज' के स्थान पर "गाज गुडक" पाठ-विपर्यय है।

(घ) म व प्रतियाँ

१- १८ ९,१० स्वीकृत पाठ है जा जा पाल्या न सील ।
ता तां भ्रम कुचील ।
म व प्रतियो मे दृष्टि-भ्रम से ' पाल्या" शब्द के स्थान पर "दया" पाठ है। इससे पूव पहली और सातवी पक्ति म जो "जा जा " से आरम्भ होती हैं, "दया" शब्द आ चुका है। प्रतीत होता है इस कारण "दया" पुन मूल मे लिखा गया। स्वीकृत पाठ म शील-पालन पर बल दिया गया है। अथ है-जो शील का पालन नहीं करत, उनके (सभी) कर्म उलटे हैं। अत यहां "दया शब्द प्रसग और अथ की दृष्टि से असगत है।
२- २४ ४ स्वीकृत पाठ है
उतिम कुळी का उतिम न कहिबा, कारण किरिया सारू ।
म व प्रतियो म "किरिया" के स्थान पर "करतव" पाठ-पर्याय है। अन्यत्र "कारण" के साथ सवत्र "किरिया' ही आया है, "करतव" नहीं -

१-क त कारण किरिया चूक्यौ (५९ १)
२-ना हू कारण किरिया चूक्यौ (६० १)
३-म्है आप गरीबी तन गूदडियो, कारण किरिया देखा (११७ १)

त यहा भी "किरिया" पाठ अपक्षाकृत अधिक सगत है।

४- १५ १४,२५ स्वीकृत पाठ है असध पुरष विपळीपति नारी
विण परच पार गिराय न जाई।

म व प्रतिया मे "असध" के स्थान पर "असिध" पाठ है। स्वीकृत पाठ का अर्थ है–दुष्ट पुरुष और व्यभिचारिणी स्त्री का बिना (गुरु-) परिचय के उद्धार नही हो सकता। (असध, असाधु=दुष्ट)। "असिध का अर्थ है जो सिद्ध नही है अथवा जिसे सिद्धि प्राप्त नही है। सिद्ध होना या न होना अथवा सिद्धि प्राप्त करना या न करना मनुष्य का सहज स्वाभाविक गुण या दोष नही कहा जा सकता। भले ही कोई "सिद्ध" अथवा सिद्धि प्राप्त न हो किन्तु यदि भला काम और विष्णु-जप करता है, तो जाम्भोजी के अनुसार उसका उद्धार हो जाता है। प्रस्तुत 'असध' पाठ के अनुसार यदि गुरु-कृपा हो तो दुष्ट पुरुष का भी उद्धार समव है। अत "असिध" पाठ असगत है।

४- ३४ ३ स्वीकृत पाठ है काफर थूळ भयाणौं।

'भयाणौं' के स्थान पर म प्रति म "अपाणौं" और व प्रति मे 'अयाणौ' पाठ है। प्रतीत होता ह इनके आदर्श इन स्थल पर सुपाठ्य न होने से "अपाणौ' और 'अयाणौं' पाठ लिखे गये। लिपिजन्य भूल के कारण भी 'भ' का "प' लिखा जा सकता ह। स्वीकृत पाठ का अर्थ ह -(वह) काफिर भयभीत रहा।

५- ३६ ४ स्वीकृत पाठ ह घडी स' घड।

म व प्रतिया म इस पक्ति के स्थान पर "धगड स घडो" पाठ ह जो प्रसग और अर्थ की दृष्टि से निरथक ह। विशेष द्रष्टव्य-(ख)(२)।

६- ५६ ४६ स्वीकृत पाठ ह खाफरखानो बुध भराडो।

म व प्रतियो म अश्लीलत्व दूर करने के लिए "भराडो' के स्थान पर "विदारण" पाठ ह। स्वीकृत पाठ का अर्थ ह -बडे बडे नास्तिक और बुद्धि भ्रष्ट पुरुष। "बुध विदारण' का अर्थ होगा-बुद्धि को विदीर्ण करने वाले जो प्रसग और अर्थ की दृष्टि से असगत ह।

७- ६२ १,२ स्वीकृत पाठ ह
मोर अग न अळसी तेल न मलियौ, न परमल पीसायौ।

म व प्रतिया म "अळसी" के स्थान पर "आलस' पाठ ह। स्वीकृत पाठ का अर्थ ह-मेरे शरीर म न तो अलसी का (और) न ही (किसी प्रकार का अन्य) तेल मला हुआ ह और न ही उबटन लगा हुआ ह। स्पष्ट ह कि "आलस पाठ निरथक ह।

८- ६३ १७ स्वीकृत पाठ ह
पथ चलाया राह बताया, नव विरियां विज हमारी।

म व प्रतिया म मोटे अक्षरो मे छपे अश के स्थान पर "नां बोलो बजगारी" पाठ ह। म व प्रतिया म मोटे अक्षरो मे छपे अश के स्थान पर "नां बोलो बजगारी" पाठ ह। नवों ही इस सबद म प्रस्तुत पक्ति से ऊपर नौ अवतारों से सम्बन्धित प्रासगिक उल्लेख हैं। नवों ही

चार अवतार रूप की विजय हुई है, यह दिखाना रचयिता का मन्तव्य है। अतः प्रसंग और अर्थ की दृष्टि से "नां चोनो वजगारी" पाठ असंगत है।

९– ५६ १० स्वीकृत पाठ है कं तै मर विरोध पण हट लोइया ?

इस पंक्ति के स्थान पर म प्रति में "कै विसूध पण म हिल्योया" और व प्रति में "वर विलूध पन क ही लोइया" पाठ है। इस ग्रन्थ में श्री राम १८ दोष गिनाते हुए लक्ष्मण से उनके घायल होने का कारण पूछते हैं। स्वीकृत पाठ का अर्थ है – क्या कि तूने बर विरोध (अथवा) जबरदस्ती (हठपूर्वक) किसी के धन को हरण किया? म प्रति में "बर" शब्द का "र" अक्षर स्पष्ट ही त्रुटित है। 'विरोध" के स्थान पर म व प्रतियों में "विसूध", "विलूध" पाठ हैं जिनका अर्थ है–विशुद्ध। इसी प्रकार 'हट" के स्थान पर "हि', "ही' पाठ है, जो निरर्थक है। अतः म और व दोनों प्रतियों के ही पाठ असंगत हैं।

१०– २ १०–१२ स्वीकृत पाठ है

ग्यानी कं ध्यानी कं निज कं म धारी
सोली कं पोली कं जळ बिम्ब धारी
दया धम म थापिल निरजण सो बाळो ब्रह्मचारी।

म व प्रतियों में मोटे अक्षरों में छपी पंक्ति दृष्टि–भ्रम से त्रुटित है। सम्भवतः प्रथम पंक्ति के अन्तिम शब्द 'धारी' को द्वितीय पंक्ति का "धारी" समझ लिया गया और यह पंक्ति गिर जाने से रह गई। इनमें रचयिता अपना वैशिष्ट्य प्रकट करता है।

११– ११ ८, ९ स्वीकृत पाठ है

विवे वळा विसन न जप्यो ताथ वोहत भई कमवारू।

म व प्रतियों में 'ताथ' शब्द त्रुटित है। ताथ का अर्थ है –इसलिए, इस कारण। अर्थ की दृष्टि से प्रस्तुत पंक्ति में 'ताथ" पाठ आवश्यक है।

१२– ११ १८ स्वीकृत पाठ है

जां जन मतर विसन न जप्यो ते घण तण करै अहार।

म व प्रतियों में यह पूरी पंक्ति त्रुटित है। इससे पूर्व १४ वीं पंक्ति से प्रत्येक पंक्ति "जां जन मतर विसन न जप्यो" पाठ से आरम्भ होती है और आगे २८ वीं पंक्ति तक, १५ पंक्तियों में यही क्रम चलता है। इस कारण दृष्टिभ्रम से यह पंक्ति त्रुटित रह गई प्रतीत होती है। केवल अपना ही पेट भरने वाले लोगों की भर्त्सना जाम्भोजी ने प्रकारान्तर से अन्यत्र भी की है –टूका जीम्या मगर मचाया, ज्यों हडियाया कुत्ता (११८ १)। अतः प्रस्तुत प्रसंग में यह पंक्ति मूल पाठ की है।

१३– २० ११ स्वीकृत पाठ है

क्यों क्या भु य भाग ऊ रणा, क्यों क्यों क म विहू णा।

म व प्रतियों में "भुय" शब्द त्रुटित है। स्वीकृत पाठ का अर्थ है –अनेक अज्ञानी पुरुष तो संसार में यों ही भटकते (भागते) रहते हैं और अनेक तो (सत) कर्महीन ही रहते हैं। भुय = भूमि, संसार। अतः अर्थ की दृष्टि से "भुय" पाठ आवश्यक है।

१४– ३७ २ स्वीकृत पाठ है उतिम संग सु संगू, उतिम रंग सु रंगू

उतिम लग सु लगू, उतिम ढग सु ढगू

म व प्रतिया म मोटे ग्रक्षरों म छपा ग्र श दृष्टिभ्रम से त्रुटित है। भावार्थ है—उत्तम की सगति ही सगति है, हरि या गुरु प्रेम का रग ही रग है, ससार—सागर को पार लांघना ही लांघना है तथा मुक्ति का उपाय ही उपाय है। इस 'सबद' की भांति ससार-सागर से पार होने—"पार गिराय" का उल्लेख अनेक शब्दों म हुआ है।

१५- ४६ ७, ८ स्वीकृत पाठ है

नाभी पवणी जीवा जूणी निरजत सिरजत
फिरि फिरि पूठा आव।

म व प्रतिया म "निरजत सिरजत" पाठ त्रुटित है। स्वीकृत पाठ का अर्थ है –(पाखंडी लोग) ढोंग-मोनी, जड-चेतन, अनेक योनियो मे वार-वार वापिस आते रहते हैं। निरजत= जड। सिरजत=चेतन। अन्यत्र भी ये शब्द इस ग्रथ म आए हैं –

१–अइया उइया, निरजत सिरजत (६३ ३६)

२–काठ का घोडा निरजीत ता सरजीत करिस्य (९० ९)

१६- ६७ १५, १६ स्वीकृत पाठ है

एते मसले चालो मीया, तो पावो भिसत ईमानू।

म व प्रतियो म 'भिसत' शब्द त्रुटित है। 'भिसत' (बहिश्त) पाने की वात सवदवाणी में अनेक जगह कही गई है, विशेषत जीवन्मुक्त पुरुषो के लिए। इस सबद में भी १० वी पक्ति म जीवन्मुक्ति का उल्लेख है – "जे जीवता खाकी होयस्य'। बहिश्त पाने के लिए जीवन्मुक्ति आवश्यक है ईमान के लिए नहीं। अत 'भिसत पाठ इस प्रसग म सर्वथा सगत है।

१७- ७१ ७ स्वीकृत पाठ है

भूत परेती जाखा खाणी, अं पाखड परवाणों।
वलि वलि कूकस काय दळोज जिह मा कणों न दाणों।

म व प्रतियों म मोटे अक्षरों म छपा अ श त्रुटित है। स्वीकृत पाठ का अर्थ है – 'भूत, प्रेत, यक्ष आदि की पूजा करना पाखण्ड का प्रमाण है। म व प्रतियों के त्रुटित पाठ—"भूत परेती जाखा खाणी" का अर्थ अपूर्ण ही रहता है और न ही इसकी सगति इसके ऊपर की या नीचे की पक्ति से किसी प्रकार बैठती है। अत "अ पाखड परवाणों' पाठ सगत है।

१८- ७८ ४ स्वीकृत पाठ है

नवस नदी निवासी नाळा लाजे, लाज सागर खारू।

म व प्रतिया म यह पूरी पक्ति दृष्टिभ्रम से त्रुटित है। इससे पूर्व दूसरी और तीसरी—तीनो पक्तियो का अन्तिम अर्द्धांश क्रमश इस प्रकार है –' लाज घर गणारू, "लाज नव-लाख तारू'। प्रस्तुत पक्ति के पश्चात भी सातवी पक्ति तक, सब पक्तियों म उनका अन्तिम अर्द्धांश "लाज" शब्द से प्रारम्भ होता है। प्रसग की दृष्टि से प्रस्तुत पक्ति सगत है।

१९- स्वीकृत सबद १०३ तथा १०४।

म० व० प्रतिया म ये दोनो सबद पूरे के पूरे त्रुटित हैं। ये दो सबद प्रश्नोत्तर रूप मे हैं, अतः

सम्भव है कि प्रतिलिपिकारों ने इसे प्रक्षिप्त समझ कर छोड़ दिया हो। १०३ वाँ सबद साम्प्रदायिक दृष्टिकोण के कारण भी सम्भवतः न लिखा गया हो।

२०– सबद १२२।–विसन विसन तू भणि रे प्राणी, प च लाख उपाजू।

रतन काया पड़ पासो, पुरा मरण भोव भाजू।

म व प्रतियों में यह पूरा सबद त्रुटित है। इससे पूर्व "विसन विसन" शब्दों से आरम्भ होने वाले तीन सबद लगातार आये हैं—११९ १, १२० १, १२१ १। इनमें से अन्तिम दो सबद तो दो दो पंक्तियों के ही हैं। सम्भवतः इस कारण दृष्टिभ्रम से प्रस्तुत सबद त्रुटित रह गया है।

२१– १५ ६ स्वीकृत पाठ है भूला प्राणी कहै स करणी।

म व प्रतियों में "स" के पश्चात "कीन" प्रक्षेप है जो अर्थ की दृष्टि से अनावश्यक है।

२२– २५ १३ स्वीकृत पाठ है

ध्याने ध्यानें नादे विंद ज नर लगां सन भी साही लीयो।

'ध्यान' शब्द के पश्चात म प्रति में "सील सजम भम" तथा व प्रति में "साल सजम" पाठ प्रक्षेप है जो साम्प्रदायिक प्रभाव के कारण हुआ प्रतीत होता है। सम्प्रदाय के २९ धर्म नियमों में शील, शौच, संतोष की भी गणना है। अतः यहां भी "सीले", "सजम" (शील, संयम) पाठ का प्रक्षेप किया गया है जो प्रसंग की दृष्टि से अनावश्यक है।

नीचे पाठ-विपर्यय के कतिपय उदाहरण दिये जाते हैं यद्यपि इनसे अर्थ की असंगति नहीं होती –

२३– १४ ११ स्वीकृत पाठ है नागड भागड भूला महियळ

"भूला महियळ" के स्थान पर म प्रति में "महियळ भूला", और व प्रति में "महिल भूला" पाठ-विपर्यय है। व प्रति के पाठ में "य" त्रुटित है।

२४– १६ १४ स्वीकृत पाठ है दुनियां राती वाद विवादू।

"दुनिया राती" के स्थान पर म प्रति में 'राती दुनिया', और व प्रति में "रीती दुनिया" पाठ-विपर्यय है। व प्रति में "रा" के स्थान पर "रीती" का "री" नागरी-लिपिजन्य भूल का परिणाम है।

२५– ५७ ३ स्वीकृत पाठ है अहनिस आव घटती जाय।

म व प्रतियों में "घटती जाव" के स्थान पर 'जाइ घटती" पाठ-विपर्यय है।

२६–८६ १२ स्वीकृत पाठ है विणि ढोलां डू मां लाकड़ियों।

म व प्रतियों में 'ढोलां डू मा' के स्थान पर "डू मा ढोला" पाठ-विपर्यय है।

२७– १०७ १५–१८ स्वीकृत पाठ है

विजळी क चमक आव जाय, सहज सुन्य मा रहे समाय (१५,१६)

न वो गाव न र गवाव, सुरगे जाता वार न लाव (१७, १८)।

म व प्रतियों में प्रथम पंक्ति के स्थान पर दूसरी और दूसरी के स्थान पर पहली पंक्ति का विपर्यय है।

२८– ४९ १० स्वीकृत पाठ है हम राजा के रायो

म व प्रतियो म "राजा" के स्थान पर लेखन-प्रमाद से "रजा" पाठ मिलता है।

(ङ) ला म व प्रतियां

१-२७ २२ स्वीकृत पाठ है

मोर धरती ध्यान वणासपति वासो, उजूमडळ छायो।

'वणासपति" शब्द के स्थान पर ला प्रति में "वणासति" और म व प्रतियो मे "वणासत" निरथक पाठ है। "वणासपति" के स्थान पर "वणासति" या "वणासत" रचयिता द्वारा रूपान्तर नहा हो सकता, क्योंकि अन्यत्र भी "वणासपति" प्रयोग ही मिलता है — रावण मना त पडन्ई राखा, ज्यों राखा पान वणासपती (६३ ७२, ७३)।

२-२७ ६३ स्वीकृत पाठ है जोग मारग सहु डा'यों।

ला म व प्रतिया म "मारग" के स्थान पर "जुगति" पाठ है। स्वीकृत पाठ का अथ है-सभी योग मार्गों म प्रवीण हूं। डा'यौ=चतुर, प्रवीण। यहा "जुगति" पाठ भी ठीक है किन्तु इसमे अपेक्षाकृत सीमित अथ का द्योतन होने से "मारग" पाठ अधिक सगत है।

३-३७ ३,४ स्वीकृत पाठ है

खार समद पर पर रे चौखड खारू, पहला अ त न पारू।

ला म व प्रतियों म मोटे अक्षरो म छपा पाठ त्रुटित है, जिसका अथ है-(जिसके) आदि-अन्त का पार नहीं है। इसम "खार समद" की विशेषता बताई गई है, जो प्रसग की दृष्टि से सगत ह।

४-२८ ९,१० स्वीकृत पाठ ह ई ह खाव्यो जम्मतर सांमी।
इह निस तेरो नाव जपतो।

ला म व प्रतिया म सम्बोधन रूप "सामी" शब्द त्रुटित है। लय की दृष्टि से भी 'सामी' पाठ आवश्यक ह।

५-२८ ६५ स्वीकृत पाठ ह जाए गीत विवाहे गाइय।

ला म व प्रतियो म "गीत' शब्द त्रुटित ह। "गाइय" क्रिया "गीत" सज्ञा के लिए है, अत "गीत" शब्द सगत ह।

(च) जा म व प्रतियाँ

१-२९ ८ स्वीकृत पाठ ह

रे मसवासो तीरथवासी किणि घटि पठा जीयो ?

जा म व प्रतिया म "ममवासी" (=मासवासी) के स्थान पर "मिसवासी" पाठ ह जो अथ की दृष्टि से असगत ह।

२-४९ ७ स्वीकृत पाठ ह ना'ही पवणी जीवा जूणी निरजत सिरजत

जा म व प्रतिया म "पवणी के स्थान पर 'मोटो पाठ-पर्याय ह किन्तु अपभ्रशाद्दत प्राचीन प्रयोग की दृष्टि से "पवणी पाठ स्वीकाय ह। या "वाणी" मे "मोटी शब्द भी आया ह।

३-२९ १५ स्वीकृत पाठ ह
तारादे रोहितास हरीचद वाचा दसवध बोमो।

"दीयो ' दा॰ के पश्चात जा प्रति म "घरि मरण त्रिया ताप गुरा धन द दामव कीयो" तथा म व प्रतिया म "धा जो॰ मन कीया ' पाठ-प्रभेद है। मध की दृष्टि म ये पाठ मसगत हैं। फिर, षण पा उल्लेख इगग पूव १४ या पक्ति म हो हा चुका ह, मत यहा मनावश्यक ह।

(४) सबद प्रतीक तुलनात्मक सख्या-सूची

क्रम-सख्या	सबद-प्रतीक	स्वीकृत पाठ-सख्या	प्रतियाँ ला	ब	म	पा	जा	रा	गो
१	मति वळ दानो सभ गिनाना	५५	५५	५७	५७	५६	५५	५७	५७
२	भइया लो अपरपर वाणी	४	४	५	५	५	४	५	५
३	मरण विहांणे, र रिव माणा	५२	५२	५४	५४	५३	५२	५४	५४
४	मरयू गरयू साहुण याद्ग	११४	११४	१००	१००	११२	११५	१००	१००
५	मरघव चद्दा निरघक सूरू	८९	८९	८९	८९	८९	८९	८९	८९
६	मलख मलप तू मलख लख	८०	८०	८२	८२	८०	८०	८२	८२
७	मातरि पातरि राही रपमणि	६१	६१	६३	६३	६२	६१	६३	६३
८	माप मलप उपनो सिभू	९५	९५	१०५	१०५	९५	९५	१०५	१०५
९	मायसा काहे वाज खेह भकल्डो	४५	४५	४२	४२	४६	४५	४२	४२
१०	मायसा अगछाळा पावजी वाय	४२	४२	११६	११६	४३	४२	११६	११६
११	मायो हकारो जीवडो बुलायो	२८	२८	३०	३०	२९	२८	३०	३०
१२	मासण वसण कूड कपट	२२	२२	२४	२४	२३	२२	२४	२४
१३	ईमा मोमिण चीमा गायम	११५	११५	११३	११३	११३	११६	११३	११३
१४	उतिम सग सु सगू उतिम रग	३७	३७	३९	३९	३८	३७	३९	३
१५	उमाज गमाज पज गज यारी	६४	६४	६६	६६	६४	६४	६६	६
१६	एक दुख लक्ष्मण बधू हण्यो	५८	५८	६०	६०	५९	५८	६०	६
१७	श्रा आदि सबद अनाहद वाणी	९४	९४	९३	९३	९४	९४	९३	९
१८	कचण दानू कछू न मानू	१००	१००	१०४	१०४	१००	१००	१०४	१०
१९	कवण न हुवा कव ण न होयसी	३१	३१	३३	३३	३२	३१	३३	३३
२०	कवण स मोमिण कवण स माण	१०३	१०३	—	—	—	१०३ १०४	—	—
२१	काहे रे मुरिखा त जळम गु मायो	११	११	१३	१३	१२	११	१३	१३
२२	काजी कथ मुल्लाणी	३४	३४	३६	३६	३५	३४	३६	३६
२३	काया त कथा मन जोगू टो	५०	५०	४७	४७	५१	५०	४७	४७
२४	काया कोट पवन कोटवाळी	९७	९७	९२	९२	९७	९७	९२	९२
२५	कुपाता न दान ज दीयो	५४	५४	५६	५६	५५	५४	५६	५६

६१-गोर सिर मोर सर मानो	४८	४८	४५	४	४६	४८	४	४५
६२-सबला धूने गानल धूने	७१	७१	७१	७१	७१	७१	७१	७१
६३-नवे गोलि सर नगावा	७६	७६	७८	७८	७६	७६	७८	७८
६४-सो हूँ वारन सिरिया धूवो	६०	६०	६२	६२	६१	६०	६२	६२
६५-सिर हो मारग सिर गवगायो	१०७	१०७	१०९	१०९	१०५	१०८	१०९	१०९
६६-नदि वारद वना गागदर-नदि	२०	[illegible]	२२	७	२१	५	[illegible]	[illegible]
६७-नदि वारक गदू गागदर-धूवा	५७	५७	५०	५०	५८	५७	५९	५९
६८-धुरण धु सार सिग ॥ माग गल	३२	३२	३४	३४	३३	३२	३४	३४
६९-गारा गालि गव नर गारा	७७	७७	७९	७९	७७	७७	७९	७९
७०-मर धूर गानो न दा गा	२९	[illegible]	३१	३१	३०	२९	३१	३१
७१-मरगि मवलि नारे नरा जोगी	५	५	६	६	६	५	६	६
७२-धूरा मा मळ धूना तो	७५	७५	७७	७७	७५	७५	७७	७७
७३-मोमि मना सिरगोल भी मनो	८३	८३	८५	८५	८३	८३	८५	८५
७४-गाया मत सिर जउ भागरि	२६	२६	२८	२८	२७	२६	२८	२८
७५-मवि धूरा माइ सिरा गा	८६	८६	६४	६४	८६	८६	६४	६४
७६-धुधर गगर का रागी हुगो	१११	१११	११०	११०	१०९	११२	११०	११०
७७-मागम मगम र वरि वाजो	१०	१०	१२	१२	११	१०	१	१२
७८-मू द मु दावो मा न मु दावो	८२	८२	८४	८४	८३	८२	८४	८४
७९-मोरा उपस्थान यदू गाग तन	१२	१२	१४	१४	१३	१२	१४	१४
८०-मोर म ग न पळगी तन र	६२	६२	३	३	३	६२	३	३
८१-मोर छाया र माया लोही	२	२	२	२	२	२	२	२
८२-मोर सहजे सु दरि लोनर वाणी	१५	१५	१७	१७	१६	१५	१७	१७
८३-मोह मडप थापि थापन	४१	४१	५२	५२	४२	४१	५२	५२
८४-म्हे आप गरावा तन गूगडियो	११७	११७	११५	११५	११५	११८	११५	११५
८५-म्हे भग पारसो पागड मङ्पा	७९	७९	८१	८१	७९	७९	८१	८१
८६-राज गय राजिंदर भुरव	४६	४६	४३	४३	४७	४६	४३	४३
८७-राज न भूली लो राजिंदर	२३	२३	२५	२५	२४	२३	२५	२५
८८-रिणघटिय क खोज फिरता	५३	५३	५५	५५	५४	५३	५५	५५
८९-रूप अरूप रमू प्यड ब्रह्मडप	१७	१७	१९	१९	१८	१७	१९	१९
९०-रे रे पिड स पिड	३६	३६	३८	३८	३७	३६	३८	३८
९१-लखमण नखमण न कहि मायमा	३८	३८	४८	४८	३९	३८	४८	४८
९२-लो लो रे राज्यदर रायो	२०	२०	२२	२२	२१	२०	२२	२२
९३-लोटो ल्ग लुहारु	३५	३५	३७	३७	३६	३५	३७	३७
९४-लोहे हुता कचण घडियो	१४	१४	१६	१६	१५	१४	१६	१६
९५-वळि वळि भणत वियासू	३३	३३	३५	३५	३४	३३	३५	३५

९६-शेर विगन किन्ना करि प्रायौ	९८	९८	९५	९५	९८	९८	९५	९५
९७-विसन विसन मगि ग्रजर	१२०	११९	१०२	१०२	११६	१२१	१०२	१०२
९८ विसन विसन तू मनि—ईह	११६	११८	११७	११७	११८	१२०	१२०	११७
९९-विसन विसन तू मनि—जै मन	९९	९९	९७	९७	९९	९९	९७	९७
१००-विसन विसन तू मणि प के नाम	१२२	१२१	—	—	१२१	१२३	११९	१२०
१०१-विसन विसन तू मनि विन नराजा	१२१	१२१	—	—	१२०	१२२	—	—
१०२-विसनल्ला रहमान रहीम	६७	६७	१०	१०	६७	६७	१०	१०
१० —र कुरान कुमाया जाळू	७२	७२	७२	७२	७२	७२	७२	७२
१०४-रे करार पार गिराई ग्रनत	६५	६५	६८	६८	६५	६५	६८	६८
१० नेत पाळ रहौं विरलोवै	४३	४३	४०	४०	४४	४३	४०	४०
१०५-नेत पमाळे नुप ग्र वरि	४०	४०	५१	५१	४१	४०	५१	५१
१०७-नेत्र साल महल रवाइ ला	१०८	१०८	१०७	१०७	१०६	१०९	१०७	१०७
१०८-नेत्र नात साइ मल सिमू	९३	९३	९४	९४	९३	९३	९४	९४
१०९-पोत मही म्ह कू न कहिवा	१०६	१०६	९९	९९	१०४	१०७	९९	९९
११०-साहिया हुआ मरल मन भागा	२१	२१	२३	२३	२२	२१	२३	२३
१११-मुनि गुणवता मुनि बु विवता	९६	९६	९६	९६	९६	९६	९६	९६
११ -मुनि राजिन्र मुनि आगिदर	४४	४४	४१	४१	४५	४४	४१	४१
११ -मुनि रे काजा मुनि —कर कसाइ	७	७	८	८	८	७	८	८
११४-मुनि र काजा मुनि मुनियौ लोग	१०१	१०१	१०६	१०६	१०१	१०१	१०६	१०६
११ -मुरा हुवौ मिनू भायो	१०४	१०४	—	—	१०२	१०५	११८	११९
११६-मुनर तगा सनेना ग्राया	११६	११६	११४	११४	११४	११७	११४	११४
११७-मुर मा नीरा भीणा सवदू	१३	१३	१५	१५	१४	१२	१५	१५
११८-रूक न्यालू हक माच किमनू	७०	७०	७०	७०	७०	७०	७०	७०
११९ गाना ला मन पानी नो	१०९	१०९	१ ८	१०८	१०७	११०	१०८	१०८
१ ०-या कगरूले मन्य मनो	७३	७३	७३	७३	७३	७३	७३	७३
१२१-रख गारी मरफ बु दर	१०२	—	—	—	—	१०२	—	—
१ -हिंदू नाप क हरि वधू न जम्यौ	६	६	७	७	७	६	७	७
१ -हिंदू मजरा जारि ले ममरा	१२३	—	४९	४९	११६	—	४९	४९

(५) प्रतियों का प्रतिलिपि-सम्बन्ध —

इस विवचन के ग्राधार पर प्रतियों का परस्पर सम्बन्ध इस प्रकार स्थिर होता है —

१- ग्रा ग गा पो म व प्रतियाँ एक समूह का निमाण करती हैं।

१– इस समूह के सदस्य रा गो पी म व प्रतियाँ एक उप-समूह की प्रतियाँ हैं। जा और ल इस समूह की प्रतियों से स्वतन्त्र पाठ-विकृतियाँ भी मिलती हैं, अतः इन प्रतियों का [illegible] इस समूह से स्वतन्त्र हुआ है।

३– इस उप-समूह में रा गो पी तथा म व प्रतियों का अपना अपना पृथक पाठ-विकृतियों के कारण, इनके भी अलग-अलग समूह [illegible] [illegible] निर्मित होते हैं। [illegible] रा गो पी तथा म व में [illegible] अपनी-अपनी [illegible] पाठ-विकृतियाँ मिलती हैं [illegible] एक दूसरे का प्रतिनिधि या प्रतिलिपियों के [illegible] समान [illegible] प्रतिलिपियाँ हैं।

४– ला प्रति तथा म व प्रतियों का पूर्व [illegible] में कहीं परस्पर पाठ की तुलना करने के कारण पाठ-मिश्रण हुआ है। इसी प्रकार जा तथा म व प्रतियों में भी परस्पर पाठ का मिलान करने के कारण पाठ-मिश्रण के उदाहरण मिलते हैं।

प्रतियों के इस सम्बन्ध को रेखाओं में इस प्रकार स्पष्ट कर सकते हैं —

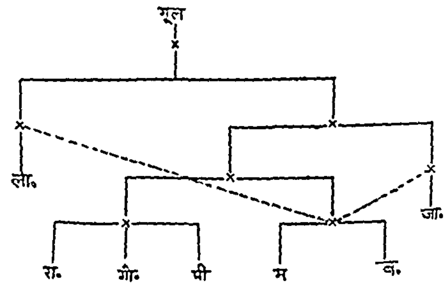

(६) सम्पादन-सिद्धान्त

१–सभी प्रतियों में प्राप्त सगत पाठ,   १२

२–ला और जा प्रतियों में प्राप्त सगत पाठ,

३–ला तथा रा गो पी प्रतियों के समूह में प्राप्त सगत पाठ,

४–ला तथा म व प्रतियों के समूह में, पाठ-मिश्रण के उदाहरणों के अतिरिक्त प्राप्त सगत पाठ

–मूल प्रति का माना गया है।

(७) अपवाद

स्तक निम्नलिखित अपवाद हैं —

१-सबद ११ स्वीकृत पाठ है —जा जन मतर विसन न जप्यो।

इस पक्ति की पुनरावृत्ति इस सबद मे अनेक बार हुई है। ला ज प्रतियो म "जन" के स्थान पर श्रुतिदोष स "न" की ध्वनि का "ल" मे परिवर्तित कर "जल" पाठ दिया गया है। इससे अर्थभ्रम होने के कारण यहा शेष प्रतिया म प्राप्त "जन" पाठ स्वीकाय है।

२-३३ ८, ३४ ६, ३५ ६, ३६ ८ स्वीकृत पाठ है को को **बोलक थूळू** ।

जा रा गा पी म प्रतियो म "बोलक' के स्थान पर "बोल्त" पाठ है। 'बोलक" (बोलने वाला, कहने वाला) पाठ अपेक्षाकृत अधिक सगत और प्रसगानुकूल होने से ग्रहण किया गया है।। व प्रति म ३३, ३४, ३५, सबद म तो "वोल्त" पाठ है किन्तु ३६ ८ म "बोलक' होने से इसकी पुष्टि होता है। ऐसा प्रयोग अन्यत्र भी मिलता है —

गुर ध्याय रे ग्यानी तोडिक मोहा (१ १६)।

३-६० २४ स्वीकृत पाठ है जदि को दोस त **दोको होइयो।**

ला जा प्रतियों म मात्र अक्षरा म छप अ श के स्थान पर "अदोसा दइयो" पाठ है। ५९,६० सबद एक-दूसरे स सम्बन्धित हैं। पहले मे राम के प्रश्न और दूसरे मे लक्ष्मण द्वारा उनके क्रमश उत्तर दिए गये हैं। प्रसगानुसार 'अदोसा दइयो" पाठ विकृत होन से स्वीकाय नहीं ह।

४-६३ १० स्वीकृत पाठ ह अजमे हू ता नागोवाड

ला जा रा गो पी व प्रतिया म "अजमे ' के स्थान पर "अज म्हे" पाठ ह। पाठ-प्रवाह के कारण "र" का लोप होने से "अजमेर' को "अजमे लिखा गया ह। मरुभापा म "र' का लोप और आगम बहुधा होता ह। इस सबद की आठवी पक्ति से विभि न स्थानो की नाम-गणना आरम्भ होती ह अत प्रसगानुकूल होने से "अजमे' (अजमेर से तात्पय ह) पाठ सगत ह। "अज म्हे' का अथ है—"आज हम" जो यहाँ असगत ह।

५-७८ ३ स्वीकृत पाठ ह जिह क नादे **विदे** वाजत पू रा।

सातों प्रतिया म "विद' के स्थान पर "वेदे' पाठ ह जो प्रसगानुकूल न होने स ग्रहण नही किया गया। प्रथम सबद की भाँति प्रकारान्तर से इस सबद मे भी गुरु की विशेषताएँ बताई गई हैं। अन्तर इतना ही ह कि वहा सामान्य रूप से 'गुरु की विशेषताएँ वर्णित है और यहा व स्वय के सदभ मे हैं। कहना न होगा कि जाम्भोजी स्वय को 'गुरु', परम गुरु विष्णु' मानते हैं। प्रथम सबद म स्वीकृत पाठ ह -जो गुर होयबा सहजे सीले नादे विद (१ ३)। अत यहा भी 'विद पाठ होना चाहिए। श्रुतिदोष मे भी इकारान्त रूप का एकारान्त लिया जाना सम्भव है, क्योकि इसके अनेक उदाहरण इन सभी प्रतिया म मिलते हैं।

६-९३ ७ ८ स्वीकृत पाठ ह

तदि मैं रूप कियो मगावतियो, **सतवन्त को ज्ञान उचारो।**

तदि म्हे रूप रच्यो कामठियो, तेतासू कोड हकारी।

ला जा गो पी म व प्रतियो म भोट अक्षरो म छपा म दा दृष्टिभ्रम स भ्रष्ट है। इस सबद म रचयिता न पूव म हुए ६ अवतारो का उल्लेख किया है जिसकी पुष्टि आगे १०वीं

पंक्ति में वह स्वयं ही करता है—पंथ चलाया राह बताया, नव विरियां विज हमारा। यहां यदि 'कामठ' (कमठ, कच्छप) अवतार का नामोल्लेख मूल का न माना जाय तो ८ अवतारों का उल्लेख ही रहता है जो अपूर्ण है।

७-८४ ८ स्वीकृत पाठ है ल काया कामदर होमू ला, दोष चढ़लो भारी।
जा रा गो पी प्रतियों में मोटे अक्षरों में छपे अंश के स्थान पर 'ज्यों ई घण का भारा' पाठ है। म व प्रतियों में यह पूरी पंक्ति त्रुटित है। विष्णोइयों में शव को भूमि में गाड़ने की परम्परागत प्रथा है जिसकी पुष्टि उपर्युक्त कथन में होती है। अर्थ है—शव को यदि अग्नि में जलाओगे, तो भारी दोष लगेगा। परवर्ती लिपिकारों ने सम्भवतः साम्प्रदायिक आग्रह के कारण इसमें मुसलमानी प्रभाव की कल्पना कर यह पाठ-प्रक्षेप किया है जो अर्थ की दृष्टि से भी असंगत है। यह मूल साम्प्रदायिक परम्परा को न समझने के फलस्वरूप किये जाने के कारण अनुचित है। विशेष द्रष्टव्य-अध्याय ७ विष्णोई सम्प्रदाय-शीर्षक-६ (क)।

८-११२ २ स्वीकृत पाठ है

किरत खेत की सींव मैं लीज, पीज ऊंडा नीरूं।

"ऊंडा के स्थान पर ला प्रति में "उंडा' और रा गो पी म व प्रतियों में 'ऊंडा" पाठ है। सम्प्रदाय के मान्य २९ धर्मनियमों में दसवां नियम पानी ईंधन और दूध को छान-बीन कर व्यवहार में लाना है। "ऊंडा का अर्थ है—छानने का वस्त्र। यहां "ऊंडा नीरू" का भावार्थ वस्त्र से छाने हुए और साफ जल से है। "ऊंडा नीरू का तात्पर्य "गहरे पानी से है जो कुएँ के पानी का द्योतक है। सीमित अर्थ का बोधक होने से "ऊंडा' शब्द ग्राह्य नहीं है। पानी कुएँ का हो चाहे तालाब का, मान्य नियम के अनुसार छान कर ही व्यवहार में लाना चाहिए। अतः 'ऊंडा' पाठ मूल का है।

९-सबद १२३ अवधू अजरा जारिले अमरा राखिले ।
ला जा प्रतियों में यह सबद त्रुटित है। प्रतिदिन हवन के समय इसका पाठ किया जाना परमावश्यक है। परम्परा से ऐसा होता आया है और अन्य प्रतियों में मिलता है। अतः यह मूल का है। विशेष द्रष्टव्य-अध्याय ७, विष्णोई सम्प्रदाय, १२वें शीर्षक के अन्तर्गत। सम्भवतः अत्यधिक प्रचलित होने के कारण भी यह इन प्रतियों में न लिखा गया हो।

नागरी-लिपिजन्य विकृतियों का उल्लेख यथास्थान कर दिया गया है।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर आगे सबदवाणी का पाठ-सम्पादन किया गया है। विभिन्न पाठान्तर और महत्वपूर्ण रूपान्तर यथास्थान दिये गये हैं।

(१)

गुर[1] चीहू[2] गुर चीहृ[3] पिरोहित,
गुर मुखि ध्रम[4] वखाणी।
जो गुर होयबा[5] सहजे[6] सीले नादे विदे[7]
तिह[8] गुर का आळिगार[9] पिछाणो[10] ।
छह[11] दरसण जिहक[12] रोपणि[13] थापणि[14]
समार[15] वरतणि[16] निज[17] करि[18] थरप्या
सो गुर परतकि[19] जाणी।
जिहक[20] खरतरि गोठि निरोतरि[21] वाचा
रहिया रुद्र समाणी।
गुर आप सतोषी अवरा[22] पोषी,

१-गो —गुर स पूव ऊ ।
२-जा रा गो पी म व —चीहा।
३-रा गा पा —चीहि।
४-जा रा गो पी म ब —धरम।
५-गा —ह्वा व —हेइवा।
६-गो —सहज सील क मध्य न दे प्रक्षिप्त।
७-जा रा गो पा म —वेदे, व —वेदे।
८-रा —जिहि गो पी म व —तिहि।
९-जा गो —आलीवार।
१०-म —पिछाणा।
११-जा रा गा पी व —छव।
१२-गा —जहव, गा पी — जिहिव म व —गुरक।
१३-रा गो म —रोपरा, पी —रोपिए।
१४-ला —थुन्ति है।
१५-जा —महमार रा —ससार।
१६-रा गो पी म व —वरतए।
१७-म —निभ।
१८-जा रा गो पी —वर।
१९-रा —प्रनिग गो पी —परतव, म —प्रत्यग, व —प्रतवि।
२०-ला —जहव गो पी म ब —जिहिव।
२१-रा —निरत्र पो —निरोतर, म —नरंतिर, व —निरोत।
२२-म ब —मौरा।

सत[1] महारस[2] पांणी । (११)
थे थे अळिया पासण होत होतासण[3] (१२)
तांहां मां[4] सीरि[5] बुहाज[6] (१३)
रस[7] न गोरस[8] घीय न लियो (१४)
तांहां[9] दूध न पांणा । (१५)
गुर ध्याय[10] र ग्यांनी[11] तोडिय[12] मोहा (१६)
अति पुरसांणी छीजत लोहा (१७)
पांणी[13] छलि[14] तेरी खाल पखाला[15], (१८)
सतगुर तोड मन का साला । (१९)
सतगुर होई[16] सहज पिछांणी (२०)
किसन चिरत विणि काच करव[17] (२१)
रह्यो[18] न रहिसी पाणी ॥ १ ॥ (२२)

(२)

मोर[19] छाया न माया लोही न मास[20] । (१)
रगत[21] न धात[22] मोरे[23] माई न बाप[24] । (२)

१–रा गो म —सत ।
२–रा —माहारस ।
३–म —हुतासण ।
४–जा –जाहामा रा गो —तामैं, म —तिहामा, व —तिहिमा, पी —जामा ।
५–जा रा पी म व —पीर, गो क्षीर ।
६–जा रा पी —दुहीजू गो —दुहीजौं ।
७–रा —रसुव, म व —रसौ ।
८–ला —गुरसु ।
९–रा गो पी व —तहा म —त्याका, ला —ताका ।
१०–जा धाय ।
११–गा म व —ग्यानी ।
१२–जा गो पी म व —तोत रा – ताडित ।
१३–ला —पणी ।
१४–रा पी —छल ।
१५–गा म व —पपाला ।
१६–जा गो पी व —हैतू रा —है तो, म —है तौं ।
१७–ला —मे इस पंक्ति के स्थान पर काच करव किसन चिरत विणि पाठ है ।
१८–म —रह्या ।
१९–रा गो —मोर से पूर्व था है ।
२०–जा रा गो पी म व —मासौं ।
२१–रा म व —रगता, गा —रक्तू ।
२२–रा म व —धाता ।
२३–म —मेरे ।
२४ रा गो म व बापौं ।

आपेणि[1] आप[2] रह्यो[3] न राप[4] । (३)
कोप[5] न कळाप[6] दुख[7] न सराप[8] । (४)
लोई अलोई त्योंह तिरलोई[9], ऐसा न कोई[10] (५)
मोरी आदि न जाणत, महियळ घूवा वपाणत (६)
उरध[11] ढाकिल तिसूळ[12], आदि अनादि तो हम स्वीलो (७)
हमें[13] सिरजीलो स कवण[14] ? (८)
रहु जोगी क भोगी क अळप अहारी । (९)
ग्यानी क ध्यानी क निज क्रम[15] धारी[16] । (१०)
सोशी क पोषी क जळ बिब धारी[17] । (११)
दया धरम[18] थापिल निरजण सो बाळो[19] ब्रंभचारी[20] ॥ २ ॥ (१२)

(३)

जदि[21] पवण[22] न हुता[23] पाणी न हुता, (१)
न हुता धर गणारू[24] । (२)

१-म —आपरा ।
२-रा म व —आपों ।
३-गो म व —रोही, ना —रह्यीयो ।
४-रा गो म व —रापों ।
५-रा व —कापो, गो म —कोप ।
६-रा गो म व—कळापों ।
७-जा रा गो पी व —दुप, म –दुपों ।
८-रा म व —सरापों ।
९-गो पा —त्यूह, म —त्योंहि । रा गो पी म व —तिलोई ।
१०-इस पंक्ति के पश्चात् रा गो पी म व —में यह पंक्ति अतिरिक्त है —'जपा भी सोई जिहि जपिये आवागवण न होई' ।
११ जा —उरधदि ।
१२-रा म व —त्रिसूलों, गो पी —तिसूलो, ला —तिसुळ ।
१३-जा रा गो म व – हम ।
१४-रा पी म —कौणा, गो –कुण, व —कौण ।
१५-रा गो पी म —कम ।
१६-व —म यह पूरी पंक्ति त्रुटित है ।
१७-म व —म यह पूरी पंक्ति त्रुटित है ।
१८-जा व —धरम रा गो पी म —धम ।
१९-जा रा गो पी म व —मे 'निरजण वाळो' के स्थान पर 'निज वाला' ।
२०-जा रा गो पी म व —ब्रह्मचारी ।
२१-जा —यो जद ।
२२-जा —पुवण ।
२३-जा —होता (जा प्रति मे आगे 'हुंता' के स्थान पर 'होता' है, अतएव यहां बारबार यह रूपान्तर नहीं दिया गया है) ।
२४-रा गो पी म व —गणारों । (इन प्रतियों म स्वीकृत अन्तिम शब्दों के ऊकारान्त पाठ (शेषांश आगे देखें)

घर न हुता धुर न हुता, (३)
न[1] हुता गिगनदर[2] सार । (४)
गऊ[3] न गोर माया जाळ न हुता, (५)
न हुता हेत पियार । (६)
माय न बाप न बहण न[4] भाई (७)
साखि न सैण न[5] हुता, (८)
न हुता पख परवार । (९)
लख चवरासी[6] जीया[7] जूणि न हुती, (१०)
न हुती वणी अठारा भार । (११)
सपत पताळ[8] फुणिंद न हुता, (१२)
न हुता सागर खार । (१३)
अजिया सजिया जीया[9] जूणि न हुती, (१४)
न हुती कुडी[10] भतारू[11] । (१५)
अरथ न गरथ न प्रब[12] न हुंता, (१६)
न तेजी[13] तुरग तुखारू । (१७)
हाट पटण बाजार न हुता, (१८)
न हुता राज दवारू[14] । (१९)
चाव न चोह[15] न कोहक[16] बाण न हुता, (२०)
तदि हुता एक निरंजण[17] सिभू[18], (२१)

के स्थान पर ओकारान्त या औकारान्त हैं जैसे पियारू —पियारो, भारू —भारौ, आदि । अत बारबार ये रूपान्तर नहीं दिए गए हैं) ।
१–जा —'न हुता' त्रुटित ।
२–जा —गिगर, गो —गगनर, पी —गगदर, म —गिगनरू ।
३–ला —गउव ।
४–जा —म त्रुटित ।
५–न —मे त्रुटित ।
६–जा रा गो पी म ब —चौरासी ।
७–जा रा गो पी —जीया ।
८–जा ब —पयाळ ।
९–जा रा गो पी —जीया ।
१०–ना —कुलीय ।
११–जा रा गो पी म —भरतारू ।
१२–ना —'प्रब न' के स्थान पर 'द्रब ने प्रब ने गोरू न' है ।
१३–रा गा —तेजी से पूर्व 'होता' ।
१४–गो पी म —द्वारौ ।
१५–जा रा पी ब —चहन, गा —चेहन, म —चह ।
१६–जा रा गो पी —कोह का, म ब —कोहकन ।
१७–जा पी —निरालभ ।
१८–[illegible]

क हुता धधूकारू । (२२)
वान[1] कदो[2] की पूछ लोई, (२३)
कुा छत्तीस विचारू । (२४)
ताहि परे र अवर[3] छतोसा[4], (२५)
पल्ला अत न पार । (२६)
म्ह तदि पणि हुता, अब पणि अछा[5], (२७)
वळि वळि[6] हुयस्या[7], (२८)
कहि कन्[8] कदि का कहू विचारू ॥ ३ ॥ (२९)

(४)

अइया लो अरपरपर वाणी, (१)
म्हे[9] जपा[10] न जाया जीयों[11] । (२)
नव अवतार[12] नमो[13] नारायण, (३)
त पणि[14] रूप हमारा थीयों । (४)
जता तपी तक पीर रधेसर,
काय जपीज, ते पणि जाया जीयों[15] । (५)
खचर भूचर खेतरपाळा परगट गुपता,
काय जपीज, ते पणि जाया जीयों । (६)
यामिग[16] सेस गुणिद फुणिदा,
कांय जपीज, ते पणि जाया जीयों[17] । (७)

१-गा — वात स पूव वारो ।
२-म — कदे ।
३-जा — अव रा म व — और ।
४-ब गा पा — छतीसों ।
५-ज म — आछा, रा गो पी व — आछें ।
६-ला — वल्य ।
७-ना — हुयस्या के वाद 'लाई अतिरिक्त ।
८-,९-ना — म नुप्ति ।
१०-म — जप ।
११-रा गा पा — जीऊ, ला — जीव ।
१२-रा पा म व — औनार ।
१३-ना — नमो से पूव उ अतिरिक्त, जा — निमो ।
१४-जा — पण ।
१५-रा गा पा — जीऊ ला — जीव ।
१६-पा — यागग म — यासगि ।
१७-सा — में य" समस्त पक्ति लुप्त है ।

चौसठि[1] जोगणि[2] बावन बीरू[3],
मांय जपीज, ते[4] पणि जाया जीयों । (८)
जपां त एक निरालभ[5] सिम्भू[6],
जिहके[7] माई न पीयो[8] । (९)
न तनि रगत न तनि धातू,
न तनि ताव न सीयों । (१०)
सरब सिरजत[9] मरत[10] वियरजत, (११)
तास न मूळि न लोणा[11] कीयों । (१२)
अइया लो अपरपर वांणी, (१३)
म्हे जपां न जाया जीयों ॥ ४ ॥ (१४)

(५)

भवणि भवणि[12] म्हार[13] एका जोती । (१)
चुणि चुणि लीया[14] रतनां मोती । (२)
म्हे खोजी छां[15] विद्द होजो नांहीं, (३)
खोज लहां[16] धुरि[17] खोजू । (४)
अलाह अलेख अडाल अजोनी सिम्भू[18], (५)
जिहका[19] किसा[20] विनांणो[21] ? (६)

१–रा गो पी म व —चौसठि ।
२–पी —जोगिए ।
३–रा गो पी म व —बीरों ।
४–ला —म इसके बाद 'सतेए गावे सहसेई ठावेससे नावे । ते पणि जाया जीव' प्रक्षिप्त है
५–गो —निरार ला —निराळव ।
६–ला म व —सभू ।
७–ला —जह, रा गो पी —जिहि, म —भिहि ।
८–रा गो पी व —पीऊ, ला —पीव (आगे की पक्तियो के 'सीयों', जीयों' शब्दों भी इन प्रति समूहा मे क्रमश सीऊ, सीव जीऊ, जीव पाठ है।
९–पी —रिज म —सिरभत ।
१०–गो —मरजत म ब —मत ।
११–जा रा गो पी म ब —लणां ।
१२–ला —भुवण भुव ।
१३–रा पी – म्हे, गो —म्हारी, व —म्हा ।
१४–म व —ल्स्या ।
१५–ला जा रा गो पी व —था ।
१६–ला —लीया ।
१७–रा गो पी म —धुर ।
१८–ला म व —समू ।
१९–ला —अ हका, म —इ हका ।
२०–ला —असा ।
२१–ला —वीनाए, म व —विनाणो ।

म्हे सर न बठा सीख न पूछी[1] , (७)
निरति सुरति सा[2] जाणी[3] । (८)
उनिपुनि[4] हिंदू जरणा[5] जोगी, (९)
क्रिया[6] ब्राहमण दिल दरवेसा, (१०)
उनमन[7] मुल्ला अकलि मिसलिमाणी ॥ ५॥ (११)

(६)

हिंदू होय[8] क[9] हरि[10] वयू[11] न जप्यौ[12], (१)
कांय[13] दह दिस दिल[14] पसरायो ? (२)
सोम अमावस आदितवारी, (३)
काय काटे बणरायो ? (४)
गहण गहत वहणि वहत, (५)
निरजळ[15] ग्यारसि[16] मूळि वहतै । (६)
काय रे मुरिखा[17] पालग सेज[18] बिछायौ[19] ? (७)
जा[20] दिन तेर[21] होम न जाप न तप न[22] क्रीया (८)
जाणि क[23] भागी कपिला गायौ[24] । (९)

१-जा०—बूझी ।
२-जा रा गो पो म व —सब ।
३-ना —जाग, म व —नाणीं ।
४-रा गा पा म व —उतपनी ।
५-, ६-ना —म 'जरणा' के बाद 'ते' एव 'क्रीया' के बाद 'ते' ।
७-ञा —उनमुन ।
८-रा व —ह्व ।
९-जा०—करि ।
१०-ला —हरप ।
११-ला —म त्रुटित ।
१२-ना —मानी, म व —जपो ।
१३-ना —कायो दोह ।
१४-ना —मन ।
१५-रा —निरज ।
१६-म व —ग्यारसि ।
१७-ला —म त्रुटित ।
१८-ला —सेम ।
१९-रा गो पो म व —विछाई ।
२०-ना जा —ता ।
२१-ना म —म त्रुटित ।
२२-म —न 'न क्रीया' के बीच 'कार' अतिरिक्त ।
२३-म —म ।
२४-ला —गयो, रा गो पो म व —गाई ।

धूड़ तांणि[1] ज[2] घतय कीयो,
ना त लाय न ता'यो ।
मूल[3] प्रांणी आळ वतांणी,
न जप्यो सुर रायो ।
छव कहां त[4] बोहता[5] भाय,
परतर को[6] पतियायो ।
हिय की वेळां हिय न[7] झाग्यो[8],
सकि रह्यो ववरायो ।
{ठाडी वेळां ठार न झाग्यो[9]
{ताती वेळां तायो ।
विय वेळां विसन[10] न जप्यो,
ताय[11] काची[12] निश्च[13] कमायो ।
अ ति आळस भोळाव मूला
न[14] चीन्हों सुररायो ।
पारब्र म[15] की सुधि न जांणी
ताय[16] नागे जोग न पायो ।
परसरांम क जरयि[17] न मूया,
ताह[18] की निहच सरी[19] न कायो ॥ ६ ॥

१–जा रा गो ब —तणौं, पी —तण ।
२–जा रा गो पी ब —जै, म – झ ।
३–म —भूला ।
४–जा —वहुता, रा गो पी म ब —वहा तो ।
५–रा गो पी ब —बहुता, ला —बोहत ।
६–जा —को को म —कोइक को ।
७–पी म त्रुटित, म – बल ।
८–म ब —भागी ।
९–ला म ब —झागी ।
१०–गो म —विष्णु ।
११–ला जा रा गो पी म —ताछ, ब —तात ।
१२– १३–जा रा पी —का चीहो कछु ब —काची कुछ न, म —काची निकुछ, गो —
का चीहो कछु कछु ।
१४–जा —ना ।
१५–जा रा गो पी म ब – पारब्रह्म ।
१६–जा रा गो पी म ब—तो ।
१७–जा —हुकमि ।
१८–जा रा गो पी म ब —ता की ।
१९–ला —परीय ।

(७)

सु नि रे काजी सु नि रे मुल्ला सुनि रे बक्र कसाई । (१)
किप रो थरपी छाळी[१] रोसा किप[२] री गाडर गाई । (२)
का[३] भाग करक दुहेली[४] जायौ[५] जीव न धाई । (३)
य तुरका छुरकी भिसतो दावौं[६] खायबा खाज अखानु । (४)
चरि फिरि आव सहजि दुहाव तिह[७] का खीर हलाली । (५)
तिहक[८] गळ करद क्यों सा'रो ?
ये पनि गु नि रहिया खाली ॥ ७ ॥ (६)

(८)

ग्ल सावनि हज कावो नेडो[९], (१)
क्या उळवग पुकारो ? (२)
भाई नाऊ बळद पियारो, (३)
तिह[१०] क गळ करद क्यों सा'रो ? (४)
विनि चीह[११] खुदाई तरस[१२] विवरजत (५)
कहा मुसल्माणों ? (६)
काफर मुक्कर[१३] होय[१४] क[१५] राह गु माई[१६], (७)
जो'य जो'य[१७] गाफिल करं धिगाणों । (८)
ज्यों ये पछिम[१८] दिसा उळवग पुकारो, (९)
नळ म ऊ चीन्ह[१९] रहिमाणों । (१०)

१-म —छेना छेना व —छेनी छोना ।
-गा प. —किगि ।
३-आ रा —काट, गो—मुलि, पी व —मूल, म —सली ।
४-दुना' क पश्चात् आ —म हय हय', रा गो पी म व—मे 'तो है है' ।
५-म व —जाया ।
६-रा —गाव ।
७-आ —जिहका रा गो पी म व —तिसका ।
८ रा गा —जिहक, म —तिमक, व —जिमक ।
९-रा गो पी म व —नह ।
१०-रा पी —ताक ।
११ आ रा गो पी म व —चीन्हा ।
१२-आ रा गा पी म त्रुटित ।
१३-म व —मुकर ।
१४-रा गा पी —हा ।
१५-आ रा गा पी —करि ।
१६-आ रा गा पी व —गुमानो ।
१७ मा —जरवौं ।
१८-मा —पछम ।
१९-आ रा गा पी म द —यो चीन्हों ।

तो एह चलत पिंड[1] पड़त,
आय मिलत[2] वियाणों।
घड़ि घड़ि भीते मढी[3] मसीते,
क्यू[4] उळवग[5] पुकारो ?
काहे काज गऊ[6] विणासौ
तो करीम[7] गऊ क्यौं चारी ?
कांही लीयो दूध दहिय ?
कांही लीयो घीयौं महिय ?
कांही लीयो हाड मांग ?
कांही लीयो रगतू[8] दहियू ?
सुणि[9] रे काजी सुणि रे मुल्ला
या मां कूण[10] भया मुरदारो[11] ?
जीयां ऊपरि जोर करीज
अति काळ हुयसी[12] भारी[13] ॥ ८ ॥

(९)

दिल साबति हज काबो नेड़ौ[14]
क्या उळवग पुकारो ?
सीने सरवर करो बदगी,
हक[15] निवाज गुजारो[16]।
ईह हील[17] हर दिन की रोजी

१-ला —पड।
२-ला —विसत।
३-ला – मइय म —मढी।
४-ना रा गो पी म ब —क्या।
५-म —लवग।
६-ला – गउव।
७-ला —कीम।
८-ला – रगतु म —रतौं।
९-ला —म 'सुणि' से पूर्व 'ताछ' अतिरिक्त।
१०-आ —कवण।
११-ला —मुरदार, म —मुरदारौ।
१२-रा गो पी —हुसी।
१३-ला—भार।
१४-रा गो पी म ब —नेड।
१५-म —हद।
१६-आ रा गो पी म ब —गुदारो।
१७-म ब -जिस रा गो पी —हैड।

तो इमहो[1] रोजो सारो ।
आप कुनायवद लेखो[2] माग ।
रे तिनहीं[3] गुहें[4] जीव क्यू मारो[5] ?
प तर्कि जाणों तकि पीड न जाणों,
तिनि परव वाद निवाज गुजारो[6] ।
घरि सिरि[7] आव सहजि दुहावै,
तिहका[8] खीर हलाली[9] ।
तिहक[10] गळ करद[11] क्यों सारो ?
प पनि गुणि रहिया खाली ।
चढि[12] चढि भींत मढी[13] मसीत
क्या[14] उळवग पुकारो ?
कारण खोन करतब[15] हीणा[16],
यारा खाली पडी निवाजू ।
किह[17] ओजू[18] तम[19] धोवो आप ?
किह ओजू[20] तम[21] खडो पाप ?
किह[22] ओजू[23] तम[24] धरो धियान ?

---

१ जा म व —साइ ।
२-म —ज्मा ।
३ म —व गुनगी ।
४ म —न गुगित ।
५ ला —म यह पूरा पक्ति त्रुटित है ।
६ म —गगारो ।
७-म —गरि ।
८-जा —जिह्वा, रा गो पी व —तिसका, म —तिहिका
९ मा —ीर ।
१०-द —निम ।
११-ग —रर ।
१२-रा गा पी —म 'चडि' स पूव 'धे' अतिरिक्त ।
१३-मा —मइ व —मही ।
१४-ना —क्यों ।
१५ द —करत ।
१६-मा —म कारण॰॰॰ हीणा तक त्रुटित है ।
१७-ना —क ।
१८ न व —उजू ।
१९ रा —य, पा म व —तुम ।
२०-न व —उजू ।
२१-जा —प म व —तुम ।
२२-ना —म व —किम ।
२३-न व —उजू ।
२४ र —प, म व —तुम ।

पिर[1] ओजू[2] पीगू[3] रहमान ? (२२)
रे मुल्ला मन मांहीं मसीत निवाज गुजारिये[4] । (२३)
सुणता नांहीं[5] क्या खर पुकारिये[6] । (२४)
अलह न छलियो सहर पिछांण्यो[7], (२५)
चांम[8] कट्या[9] क्या हुवो[10] ? (२६)
हक हलाल पिछांण्यो[11] नांहीं[12], (२७)
निहच दिन[13] गाफिल वो'र[14] खोयो[15] ॥ ९ ॥ (२८)

(१०)

महमद महमद न करि काजी महमद का तो विषम विचारू । (१)
महमद हाथि करद जो होती लोहे घड़ी[16] न सारू । (२)
महमद साथि[17] पयंबर[18] सीधा एक[19] लख असी[20] हजारू । (३)
महमद मरद हलाली होता तमे[21] भया मुरदारू ॥ १० ॥ (४)

(११)

काहे[22] रे रिला[23] त[24] जळम[25] गुमायो, (१)

१–ला —व ।
२–म व —उजू ।
३–जा रा गो पी म व —पीर्हों ।
४–जा पी व –गुजरीये, रा गो म —गुदरीये ।
५–जा रा गो पी म व —ना ।
६–जा म —पुकरिये, रा गो पी व —पुकरीये ।
७–गो —पिछाणों ।
८–रा गो व —चाव ।
९–जा रा गो पी म व —कटे ।
१०–ला —हुवा, म०—हुवो ।
११–ला —पिछाणों, पी —पीण्यों ।
१२–गो म व म 'नाही' के पश्चात् 'तो' अतिरिक्त ।
१३–जा रा गो पी म व —म त्रुटित ।
१४–म —गोरह ।
१५–ला —गोया ।
१६–ला —घडीय ।
१७–ला म व —सगि ।
१८–म —पइबर ।
१९–रा गो पी म व —इक ।
२०–ला —असीय
२१–म -तुमे ।
२२–रा गो —काय ।
२३–म व —भनिपा ।
२४–ला —रय ।
२५–जा —जल, रा गो पी म व —जनम ।

मुव[1] मारी ले भारू । (२)
जा न्नि तेर[2] होम न जाप न[3] तप न[4] किरिया । (३)
गुरु[5] न चीन्हू[6] पथ न पायो, (४)
अहल गई जमवारू । (५)
ताता वेळा ताव न झाग्यो, (६)
ठारी[7] वेळा ठारू । (७)
बिब वेळां विसन न जप्यौ, (८)
ताय[8] बोहुत भई कसवारू[9] । (९)
लडिय[10] न खाटी देह विणाठी[11], (१०)
थिरि न पवणा[12] पारू । (११)
अहनिस आवा[13] जाय[14] घटती (१२)
तेरी[15] साम ही[16] कसवारू । (१३)
जां जन मतर[17] विसन न जप्यौ, (१४)
त नर[18] कुवरन काल् । (१५)
जां जन मतर विसन न जप्यौ[19],
मगरे कीर बहारू । (१६)
जां जन मतर विसन न जप्यौ[20],
काय सहै दुख भारू । (१७)

१-ब —मुइ ।
२-ना म —म त्रुटित ।
३-ब —म त्रुटित ।
४-म ब — न' के पश्चात 'कारण' प्रक्षेप ।
५-ना —गुरु ।
६-आ रा गो पी म ब —चीन्हा ।
७-म —ठाढे ।
८-म ब —म त्रुटित ।
९-ना बुमवार ।
१०-आ —पराय रा —पडी गो पी —परी, ब —पारी ।
११-ब —विएटी ।
१ -ना —पुवर्णा ।
१३-गो —भायु पी —भाव ।
१४-पी —म त्रुटित ।
१५-आ रा गो पी —नरे म ब —म त्रुटित ।
१६-आ रा गो पी म ब —सबी ।
१७-आ —जनमनर ना —जां जलमन (इसमे 'जन मनर' के यही पाठान्तर इन
प्रतियो म आगे मिलत हैं, पर बारबार उनका उल्लेख यहां नहीं किया गया है) ।
१८-ब —न ।
१९-रा गो पी —म जप्यौ' के पश्चात् 'ते प्रक्षेप ।
२०-म ब — म 'जप्यो' के पश्चात् 'ते' प्रक्षेप ।

जां जन मतर विसन न जप्यौ,
ते घण तण कर अहार[1] ।   (१८)
जा जन मतर विसन न जप्यौ,
तांह[2] का लोहो मास विकार ।   (१९)
जा जन मतर विसन न जप्यौ[3] ,
गाव गाडर[4] सहरे[5] सूवर ।   (२०)
जळम जळम अवतार ।   (२१)
जा जन मतर विसन न जप्यौ,
रा न वासो माती बसे   (२२)
ढूकें सूर सवार[6] ।   (२३)
जा जन मतर विसन न जप्यौ[7],
ओडा क घरि पोहण होयसी,   (२४)
पीठ सह दुख भारू[8] ।   (२५)
जां जन मतर विसन न जप्यौ,[9]
ज्यळ उठावत भार[10] ।   (२६)
जां जन मतर विसन न जप्यौ[11],
ते नर[12] दो'र घुप अधारू ।   (२७)
जा जन मतर विसन न जप्यौ,
ते[13] ना ऊतरिबा पारू[14] ।   (२८)
ताय[15] तत न मत न जडी[16] न बूटी,   (२९)

१-म व—न यह पूरी पंक्ति त्रुटित है।
२-जा रा गो म व—ताका, पी—ते का।
३-व—म जप्यौ के पश्चात 'ते' अतिरिक्त।
४-ला—गडर।
५-ला—सहरे।
६-ला—सुवार रा गो पी म व—म 'जा सवारू' पंक्ति से पूर्व 'जा' पंक्ति है।
७-गो—म 'जप्यौ' के पश्चात 'ते' अतिरिक्त।
८-ला—म 'ओडा भारू' पंक्ति त्रुटित है।
९-रा गो पी—म 'जप्यौ' के पश्चात 'ते'।
१०-ला—म 'जा भारू' पंक्ति त्रुटित है।
११-ला—में 'जा जप्यौ' तक त्रुटित है।
१२-ला—ताह न
१३-जा—म त्रुटित।
१४-ला—म 'ना पारू' पंक्ति त्रुटित है।
१५-जा व—म त्रुटित।
१६-ला—जडीय।

ऊडी पडो[1] पहारू ।
विसन न दोस किसी[2] रे प्राणी,
तेरी करणी का[3] उपगारू ॥ ११ ॥

(१२)

मोरा[4] उपख्यान वेदू[5] कण तत भेदू[6]
सामने पसतके लिखणा न जाई ।
मोरा[7] सबद खोजो[8] ज्यू[9] सबदे सबद समाई ।
हिरणा दोह[10] क्यों हिरण हतीलों, किसन चिरत[11] विणि,
क्यों बाघ विडारत गाई ।
सुणहीं[12] सुणहा का जाया मुडदा[13]
बघेरी बघेरा न होयबा[14] किसन चिरत विणि,
सींचाण[15] कबही न[16] सुजीऊ ।
खर का सबद न मधुरी[17] बाणी, किसन चिरत विणि,
स्वान न कबही गहीरू ।
मुडी का जाया मुडा न होयबा[18] किसन चिरत विणि,
राछा कबही न सुचीलू ।
बिली की इद्री सतोप[19] न होयबा किसन चिरत विणि,
कास्रा न होयबा[20] लीलू ।

१-ला —पाय ।
२-म —किसा ।
३-ला —क ।
४-म व —मरा ।
५-रा गो पी म व —वेदौं ।
६-रा गा पी म व—भेदौं ।
७-रा गो पी —मेरा ।
८-रा व —सबद पोजो सबद पोजो ।
९-ला म —'ज्यू' के पश्चात 'सु' ।
१०-रा गा —द्रोह ।
११-ला —चीळत ।
१२-जा —सुणाही ।
१३-रा गो पी —मुरदा ।
१४-रा गो पी —ह्वबा म व —पक ।
१५-गो —सीचाणा ।
१६-ला —म प टित ।
१७-जा म व —मधरी ।
१८-रा गो पी —ह्वबा ।
१९-गो —नोप ।
२०-गो पी —ह्वरा ।

मुरगो का जाया मोरा[1] न होयबा[2] किसन चिरत विणि,
भाक्ला न होयबा चीए ।
दत वियाई जळम[3] न आई किसन चिरत विणि,
लोहे पडो न काठ की सूलू ।
नींवडिय नाळेर[4] न होयबा[5] किसन चिरत विणि,
छीलरे न होयबा हीरू ।
तू बणि नागर वेलि न होयबा किसन चिरत विणि,
थांवळी न केळा[6] फेळू ।
गऊ का जाया खगा[7] न होयबा किसन चिरत विणि,
दया न पाळत भीलू ।
सूरी[8] का जाया हसती न होयबा किसन चिरत विणि,
औछा कबही न[9] पूरू ।
कागणि का जाया कोकिला न होयबा किसन चिरत विणि,
बुगली[10] न जणिवा हसु ।
ग्यांनी के हिरद परमोधि आव ।
अग्यानी लागत डासु ॥ १२ ॥

(१३)

सुर मा लीणा[11] झीणा सबदू,
मूलि न भायखा मूळू ।
सेपंति[12] विरधा सींचि पिराणीं,
जिहका मीठा मूळ समूळू ।
पाते भूला मूळ न खोजो[13],
सींचो काय कमूळू ?

१–ब —मोर न त्रुटित है।
२–गो —हु ।
३–रा गो पी म व —जनम ।
४–रा गो पी म ब —नारेळ ।
५–रा गो पी —हुवा (इन प्रतियों में आगे भी 'होयबा' के लिए 'हुवा' है)।
६–जा रा गो पी म व —केली ।
७–ला —गधा ।
८–ला म —सूवरी ।
९–म व —में 'कबही न' के स्थान पर न कबही ।
१०–म —बगली, व —बवली ।
११–रा गो पी म व —लगा ।
१२–रा पी म गो व —सोपति ।
१३–ला —पोवो ।

विमन विमन भणि अजर जरीलो[1],
अ जीवण का मूळू ।
खोजि पिराणी अमा विनाणी,
कवळ[2] यानी ग्यान गहीरू ।
जिह क गुण[3] न लाभत छेहू
व गहर[4] गरवा सीतळ नारू ।
मेवा ही अति[5] मेऊ ।
हिरद मुक्ता कवळ सतोषी ।
टेवा ही अति[6] टेऊ ।
घड़ि करि बोहिय[7] भय[8] जळ पारि[9] लघावै
से[10] गुर खेवट[11] छेहा छेहू[12] ॥ १३ ॥

(१४)

लोहे[13] हुता कचण घड़िया[14],
घड़िया[15] ठांव सुठाऊ[16] ।
जाटा हूत[17] पात करीलो,
अ किसन चिरत[18] परवाणों[19] ।
बेडो काठ सजोगे[20] मिळिया ।

१-पी —जरीज ।
२-ला —म केवळ से पूव की को ।
३-ना —गुणेंय ।
४-जा रा गो पी म व —म व गुहर के स्थान पर गुर गवर ।
५,६-रा गा पी म व —अति ।
७-जा —बोहिथो, रा म व —बोहिता, पी —वहुता ।
८-रा पी व —भ, गो —भव म —भो ।
९-ला —म 'भय जळ त्रुटित है ।
१०-जा रा गा पी म वँ —सो ।
११-ला —म 'गुर खेवट के स्थान पर विट' ।
१२-ला —छेव ।
१३-म —मोह ।
१४-जा रा गो पी म व —घड़ियो ।
१५-जा रा पी म व —घड़ियों ।
१६-ला —गुठांव ।
१७-जा —हुता ।
१८-ला —चीनत ।
१९-ला —परवांग ।
२०-म —सांजोगे ।

लेवट[1] लेवा[2] लेवू ।
लोहो[3] नीर[4] किसी परि[5] तरिवा,
उतिम सग सनेहू ।
विणि श्रीया रवि बसला,
ज्यू[6] काठ सगोणी लोहो[7] नीर तरीलो ।
नागड भागड[8] मूला महियळ[9],
जीव हत मड लाईलो ॥ १४ ॥

(१५)

मोर सहने सुदरि लोतर[10] बाणी ।
असा भया मन ग्यानू[11] ।
तइया सासू तइया मासू ।
रगतू रुहियू खीरू[12] नीरू ।
ज्यों करि देखू, ग्यान[13] अदेसू[14],
भूला प्राणी कहैं स[15] करणों[16] ।
अई अमाणा[17] तत समाणों ।
पुरष[18] न लेणा नारी
सोदत सागर सो सुभियागत,
भुवणि भुवणि[19] भिखियारी[20] ।

१-म —पेव ।
२-रा गो —पेहा, व —पेव ।
३-रा गो पी —लोहा म०—लोहै ।
४-म —नाव ।
५-म व —विधि ।
६-ला —ज्यों ।
७-जा रा गो पी व —लोहा, म —लोहै ।
८-व —भ्रगड ।
९- भूला महियळ' के स्थान पर म —म 'महियल मूला ' तथा व —म 'महिल भूला' ।
१०-रा गो पी म —लात्र ।
११-जा रा गो पी म व —ग्यानों ।
१२-गो —क्षीरु ।
१३-जा रा गो पी —ग्यान म —नान ।
१४-व —प्रनेसो ।
१५-गो —सो ।
१६-म व —कीज करणो ।
१७-ज —प्रमणों ।
१८-'पुरष से पूव गो०—म 'मईयालो म्हे,' म व —म 'मईयालो म भनिरिव' ।
१९- जा रा गो पी म व —भवणि भवणि ।
२०-रा गो —त्रिपियारी, पी —विपिया । [—

माया सो निरिणारो मो (११)
मादि[1] परम तत सायो। (१२)
जद भार विराम विरासो[2] सायो[3] सरतो,[4] (१३)
दूध वद्रमी सारह्या[5] सायो॥ १५॥ (१४)

(१६)

नां कुछि नां कुछि तां[6] कुछि[7] न आणी। (१)
नां कुछि नां कुछि तां[8] कुछि[9] आणी[10]। (२)
नां कुछि नां कुछि अवरप वहांणी। (३)
नां कुछि नां कुछि इमत[11] बांणी। (४)
प्यांनी सो[12] तो प्यांन रोयत, (५)
पंग्या रोवन गाहे। (६)
वळ वरना मोरो मोरा रोवन, (७)
जाय जोय पणो दिसांहो[13]। (८)
जरपव[14] पणों[15] उ नमन[16] रोवत, (९)
मुरिया[17] रोवन घांहो[18]। (१०)
मरण त माय सधार स सेत[19], (११)
दह अवतारी रोवत राहो[20]। (१२)

१-जा रा गो पी म व—म 'मादि' स पूव 'ओ' अतिरिक्त।
२ ला—वाग्मी।
३-ला व—म त्रुटित।
४ रा गो पा म—म त्रुटित।
५-जा रा गो पी म व—साल्हीया।
६-जा रा गो पा म व—जा।
७-रा गा—कुछू, म व-कुछ, ला पी—वछू।
८ जा—ना।
९-ला—वजु एन।
१०-व—म यह तथा इसस आगे वाली दो पंक्तियाँ त्रुटित हैं।
११-रा गो पी म—अमृत।
१२-ला—म 'सो त्रुटित म—म 'सो तो त्रुटित।
१३-म—मागो व—दिसाहे।
१४-जा रा गो पी म व—म 'ज त्रुटित।
१५-म र—पग रा गो व—म 'पणों के पश्चात् मन अतिरिक्त।
१६-व—ग्न।
१७-ला—मुरणो।
१८-व—धाह।
१९-जा रा गो पी म व—पेती।
२०-व—राह।

जड़िया बूटी जे जग[1] जीवै।
तो बदा क्यों मरि जांहीं[2] ?
खोजि पिराणी असा विनाणी,
निगुरा[3] खोजत नांही।
जा कुछि हुता[4] नां[5] छि होयसी,[6]
यठि कुछि होयसी तांही ॥ १६ ॥

(१७)

रूप अरूप रमू[7] प्यंड ब्रहमंड्य
घटि घटि अघट रहायो।
अनत जुगां मा[8] अमर भणीजूं,
ना मेरे पिता न मायों।
ना मेरे माया न[9] छाया रूप न रेखा
बाहरि भीतरि अगम अलेखा।
लेखा आप[10] निरंजण[11] लेखी
जां[12] चीन्हो तां[13] पायो।
अठसठि तीरथ हिरद भीतरि,
को को[14] गुर मुखि विरळा न्हायो ॥ १७ ॥

(१८)

जां जा दया न मया
ता ता बिक्रम कया[15]।

१–जा —जुग।
२–व —जाये।
३–ला —निगरा।
४–जा रा गो पी —होता, म ब —होता।
५–ला —नौ।
६–ला —होयस्य।
७–म ब —रमा।
८–पी म मैं।
९–म ब —ना मेर।
१०–रा गो पी म ब —एक।
११–पा म ब —नुग्यबद।
१२–जा —जिण, रा गो पी ब —जहा
१३–पी ब —तहां।
१४–ला —कोइ कोइ।
१५–म —किया।

जां जां साव न बसी[1]
तां तां सुरग न अगी[2]
जां जां[3] ओव म ओनो
तां तां मोल म मुरनो[4] ।
जां जां दगा न परमू
तां तां विक्रम करमू ।
जां जां पाउपा[5] न सीनू
तां तां कम कुचीळू
जां जा सोगरा न मूळू
तां तां प्रतहि[6] पूळू ।
जा जां मेदा न[7] मेदू
तो मुरपे रिसो[8] उमेदू ।
जां जां घमड[9] स मडयो
ताक ताय न छायो ।
मून मास ममायो ॥ १८ ॥

(१९)

जिह क सार ससार पार अपार[10]
पाप भयापू उमग्या स मापू
त सरवर रित[11] नीर ?
वाजाली भल वाजाली
वाजा दोय वहीर ।
एक[12] वाज नीर वरम
दूज महो विरोळत[13] सीर ।

१-जा रा गो म व —त्रमा, पी —वसू
२-जा रा गो पी म व —जमा ।
३-म —मा ।
४-पा०—मुगती ।
५-रा गो पी —पारे, म व —दया ।
६-पी —प्रथक, म —प्ररयत्य ।
७-म —नि ।
८-ला —मुरगा बीसय ।
९-गो -घमड स घमडू ' म —घडमड स मडों ।
१०-व —म पार अपार त्रुटित ।
११-जा —तती ला —वय ।
१२-रा गो पी म व —एकरा ।
१३-गो —त्रिरोल ।

जिह क सार असार पार अपार (८)
थाघ अथाघू [1] उमग्या [2] स माघू, (९)
गहर गभीर । (१०)
गिगन पयाळे वा‍रत नादू । (११)
माणिक पायो [3] फेरि लुकायो [4] (१२)
नहीं लखायो [5] (१३)
दुनिया राती [6] वाद विवादू । (१४)
वाद विवादे दाणों खींणा (१५)
ज्यों पोहपे खींणां भवरी भवरा [7] । (१६)
भाव [8] जाणि म जाणि पिराणी [9] (१७)
जोल का रिप जवरा । (१८)
भेर वाजा तो एक जोजनू, (१९)
अथवा [1] तो दोय जोजनू । (२०)
मेघ वाजा तो पच जोजनू, (२१)
अथवा [11] तो दस जोजनू । (२२)
सो [12] उतिम लेह [13] पिराणी । (२३)
जुगा जुगाणी [14] सति करि जाणो [15], (२४)
गुर का सबद ज [16] बोलो [17] झींणी बाणी (२५)
दूरया [18] हीं त [19] दूरि सु णीज, (२६)

१-रा —ग्रथों ।
२-म —उमगगि ।
३-ला म —पाया ।
४-ला —लुकाया, म —लुवाया ।
५-ला म —लपाया ।
६-दुनिया राती के स्थान पर म —म राती दुनिया, व —मे रीतो दुनिया ।
७-ला —भु वरी भु वरा ।
८-ला —भावगि ।
९-म व —म 'पिराणी के पश्चात इम' अतिरिक्त ।
१०- १५-ना —अथवाय ।
११-जा —मोई ।
१२-ला —न्हे, व —लहि रा गो पी म व —म 'लेह' के पश्चात 'रे' अतिरिक्त ।
१३-म ज —म 'जुगा जुगाणी' त्रुटित ।
१४-जा —न 'सति जाणी' त्रुटित ।
१६-रा —जु ।
१७- ला —म त्रुटित, व —वोल ।
१८-जा रा गो पी म व —म 'दूरया' से पूर्व 'जिह्वा' अतिरिक्त ।
१९-रा गो पी म व —दूत, ला —हीता ।

सो[1] समद गुणा कारु[2] गुणापारु[3] (२७)
गणा[4] सारु, बळे[5] अपारु[6] ॥ १९ ॥ (२८)

(२०)

लो लो रे राज्यदर[7] रायौं । (१)
वाज वाव सुवायो[8] आभ अमीं झुरायो । (२)
कालरि करसण[9] कीया[10] नेप कछू न कायो । (३)
अइया उतिम खती को को इमृत रा'यो (४)
को को दाख दिखायो[11] को[12] को ईख उपायो (५)
को को नींव निबाळी को को ढाक ढकोळी (६)
को को[13] तुमणि तु बणि वेलो को को अक[14] अबायो (७)
को को कळू कमायो ताका मूळ कमूळ (८)
डाळ कुडाळू ताका[15] पात कुपातु (९)
ताका[16] फळ बीज कुबीजू तो मीर दोस किसायो ? (१०)
क्यों क्यों भुय[17] भाग ऊणा वर्यों[18] क्यों[19] क्रम विहूणां । (११)
को को विडी चमेडी[20] को ओळू आयो । (१२)
तारा पान न जोती मोख न[21] मुकती । (१३)
याका[22] क्रम असायो तो नीरे दोस किसायो ? ॥ २० ॥ (१४)

१–जा —मु ।
२–जा —गुणाक्रम, म —म गुणाकारी गुणाकारो ।
३–रा गा पी म व —मे 'गुणा पारू' त्रुटित ।
४ व —म त्रुटित ।
५,–६–जा —म त्रुटित ।
७ म —राजिदरा ।
८–जा —सवायो ।
९–म व —क्रिसण ।
१०–व —वाय ।
११–रा गो पी म —लिपायों, जा —म 'नेप कछू दाख दखायो' अंश मूल से दुबारा लिखा गया है ।
१२–जा —म 'को को ईख ढकोली' अंश त्रुटित है ।
१३–जा —का का ।
१४–जा रा गो पा म व —आक ।
१५–गो म व —म त्रुटित, पी —म 'ताका कुपातू' त्रुटित ।
१६–जा —म त्रुटित व —ता ।
१७–म व —म त्रुटित, जा —भव ।
१८-१९-म —म त्रुटित ।
२०–म —चमेडी ।
२१–म —म त्रुटित ।
२२–रा गो पा —यावे, म व —वांका ।

(२१)

साल्हिया हुया मरण[1] भव[2] भागा (१)
गाफिल मरण घणों डर । (२)
सतगुर मिलियो[3] सत पथ ज[4] पायो[5] (३)
मरण[6] बोह उपगार करै । (४)
रतन कया[7] सोभती लाभ (५)
पार गिराय जीव तर[8] । (६)
पार गिराय त[9] नेही करणी, (७)
जपो विसन न दोय दिल करणी । (८)
जपो विसन न निंद्या करणी (९)
माडो काघ विसन की सरणी[10] । (१०)
अतरा[11] बोल करो ने[12] साचा, (११)
तो पार गिराय गङ्ग की वाचा । (१२)
रवणा ठवणा चवदा भवणा (१३)
ताहि[13] परे र रतन कया[14] छ (१४)
लाभ किस[15] विचार[16] ? (१५)
जे नविय नवणी खु'विय[17] खु यणी, (१६)
जरिय जरणी[18] करिय करणी (१७)
सीख[19] हुई[20] घरि जाइय । (१८)

१–म —मर ।
२–गो म —भय ।
३–म —मिलिया ।
४–जा रा गो पी म व —म त्रुटित ।
५–जा रा गो पी व —बतायो, म –बताया, 'पायो' के पश्चात जा रा गो पी म व – म भ्रात बताइ अतिरिक्त ।
६–म —मरणह 'बोह' त्रुटित ।
७–रा गो म —काया ।
८–पी —म 'पार तर' पंक्ति त्रुटित ।
९–जा रा गो पी म —म ।
१०–जा रा गो पी म व —मरण ।
११–ला —अतना ।
१२–म —ने ।
१३–ला —ना है ।
१४–रा गो पी म —काया ।
१५,–१६–म —किसी विचारी ।
१७–जा —म 'खु विय खु वणी' त्रुटित ।
१८–म —मरणी ।
१९–रा पा —म 'सीख' से पूर्व तो' अतिरिक्त ।
२०–रा गो पी म व —हुवा ।

रतन क्या[1] साच[2] को ढोळी,
गुर प्रसादे[3] केवळ ग्याने,
ध्रम आचारे[4] सीले सजमे,
सतगुर तूठ[5] पाइय ॥ २१ ॥

(२२)

आमण वसण कूड कपट[6],
को को[7] को चीन्हत[8] अवजु वाट[9] ।
अवजू वाटे जे नर भया,
काचो काया छोडि कवळासे[10] गया ॥ २२ ॥

(२३)

राज न[11] भूली लो राजिंदर दुनी न बधो[12] मेरु,
पुवणा[13] झोल वीखरिजला धुंवरि[14] तणा ज लोरु[15] ।
ओल[16] स आभ तणा लहिलोरु ।
आडाडबर[17] केती वार विळवण ओ ससार अनेहू,
भूला प्राणी विसन जपो रे मरण विसारो केहू ?
म्हा देखता देव दाणों[18] सुर नर खींणां ।
जन्तू मझे राचि न रहिबा थेहू[19] ।

१-रा गो पी म —काया ।
२-रा पी व —सच ।
३-व —परसादे ।
४-जा रा गो पी व —अचारे ।
५-म —तूठे ।
६-रा गो —कपटग, पी—कपट्ट, म व —कपटों ।
७-म व —के के ।
८-म व —ची हैं ।
९-रा गो पी —वाटे, म व —वाटों ।
१०-जा व —किवलासे ।
११-गो —नि ।
१२-रा —बध, गो पी —बधी, व —बांधो ।
१३-जा रा गो पी म व —पवणा ।
१४-जा —धवर ।
१५-ला —भिनोरू, व —लहलोरो ।
१६-म व —ऊल्हमि, ला —उलम ।
१७-म - आडीडबर ।
१८-ला —मे दाणो के पश्चात 'नर' अतिरिक्त ।
१९-म व —थीरों ।

नदियां[1] नीर न छीलरि[2] पांणी पु बरि तणा ज[3] मेहू । (८)
इण उडाणों पथ विलखो आसा सासा निरास भईलो। (९)
ताय[4] होयसी रह[5] निरडी वेहू । (१०)
पुवणा डोल धोतारिजला गण विलखी[6] सहू ॥ २३ ॥ (११)

(२४)

घण तण जीम्यां[7] को गुण नांहीं, मळ भरिया भडार । (१)
आग पाछ[8] माटी मूल, मूला भय[9] ज[10] भार (२)
घणां दिनां का वडा न कहिवा वडा न लधिवा पार । (३)
उतिम कुळी का उतिम न कहिवा[11] कारण[12] किरिया[13] सार । (४)
गोरख दीठ[14] सिध[15] न होयवा पोहू[16] उतरिया पार । (५)
कळि जुग वरत चेतो लोई, चेतो[17] चेतण हार । (६)
सतगुर मिलियो सतपथ बतायो[18], वेद गरथ उदगार[19] ॥ २४ ॥ (७)

(२५)

पढि कागळ वेदां सासतर[20] सबदा, (१)
पढि गुणि रहिया कछू न लहिया। (२)
निगुरा उमग्या[21] काठ पर्षाणो (३)
कागळ पोथा नां कुछि थोथा नां कुछि गा'या गीयो (४)

१-रा ब —नदीय।
२-ज —छील।
३-गा —जे।
४-सभी प्रतियां म —'ताछ' है।
५-ला म —राह।
६-म ब —विलगी।
७-ब —जाम्यें।
८-म —पीछ।
९-ला —भुव, रा गो पी ब —नह।
१०-म —क।
११ जा —ल्हहिवा, रा गो पी —होयवा, म —हवा।
१२-ला —करणी।
१३-म ब —करतब।
१४-जा रा गा पी ब —दीप म —दीप
१५-म —सिधि।
१६-ला म ब —पह।
१७-म —वेतो।
१८-रा गो पी म ब —म 'भ्रांति चुकाइ' अतिरिक्त।
१९-जा रा गो पी म ब —म 'वेद उदगार' के स्थान पर 'विदगारा त उदगागार"
२०-जा रा गो पी म ब —सासत्र ला —मासन।
२१-ला —उमग, म —उमग।

किणि दिस आव किणि दिस जाय माई लर्ल न[1] पीयो (५)
इ डे मध जीव[2] उपनों[3] किणि दिस पठा जीयो[4] ? (६)
सुणि रे काजी सुणि रे मुल्ला पीर रवेसर (७)
रे मसवासी[5] तीरथवासी किणि[6] घटि पठा जीयो ? (८)
कना सबदे कस[7] लुकाई बाहरि गई[8] न रीवों[9] । (९)
खिणि आव खिणि बाहरि[10] जाव रति करि वरस त सीयों[11] । (१०)
सोवन[12]लक मदोवरि[13] काज जोय जोय भेद भवीपण[14] दीयो । (११)
तेल लियो खळि चोप जोगी जिहको[15] मोल थोडेरो कीयो । (१२)
ध्यान[16]ध्याने[17] नादे विदे जे नर लणा[18] तत भी ताही लीयो । (१३)
करण दधीच[19] सिव[20] र बळि राजा हूई को फळ लीयो । (१४)
तारादे रोहितास हरीचद काया दस वध दीयो[21] (१५)
विसन अजप्यां जळम[22] इक्यारथ[23] आके डोडा खींवे फळियो । (१६)

१-म —म 'न पश्चात 'पन' अतिरिक्त ।
२-आ रा गो पी म व —पिंड ।
३ उपनों के पश्चात जा रा गा —म 'पिंडे मधे विव उपना । पिंड मधे जीव उपनो', तथा पी म न —म 'पिंडे मधे विव उपनो' अतिरिक्त ।
४ म व —म 'किणि जीयो' त्रुटित तथा पी —मे 'जीयो के पश्चात इडा मधे जीव उपना अतिरिक्त ।
५-आ म व —मिसवासी ।
६-ना —इग ।
७-ला —घुम ।
८-ला —गइय ।
९-आ गा म —रीया ।
१० ला —बाहडि ।
११ म —मी ।
१२-म —सान ।
१३ ब —मनोवर ।
१४ गा —बिभीश्न ।
१५ रा गो पी म व —तिहिको ।
१६-म —जाने ।
१७ ध्यान क पश्चात म —म सीले सजमे भमे तथा ब —म सीले सजम अतिरिक्त ।
१८-पी —लोणा ।
१९-म —दधीच ।
२०-म —समरि, ना —सेवरि ।
२१-म व —मे 'काया दायो त्रुटित 'दीयो' के पश्चात अतिरिक्त आ ग —जा —म धनि कारण किया तप सूरा । धन दे दासव कीयो, म ब —मे धन जोदा सव कीयों ।
२२-जा रा गो पी म ब —जनम ।
२३-[illegible]

धफ[1] विवरजत रुइयो[2] ।
राटू भांटू योह रग लेणां[3] रा ग लणां रूइयो[4] ।
नन रे योह रग न राव[5] धाळी कन दुजीयो ।
धाहै[6] लाल मजीठ[7] राता[8] मोल[9] न जाको[10] रूइयो ।
धयहो औग्रह[11]ऊ धिरि धाव सतांगो[12] साय लीयो ।
ठाठ गए विषळीपति नारी जदि[13] धक[14] जदि[15] धीयो ।
इमत[16] या फळ एर मन रालिया[17] मेवा[18]मीठ[19] समायो[20] ।
असध[21] परय विषळीपति नारी,
विण परव पार गिरांय न जाई ।
देखत अ धा सुणता बहरा ।
तासू का[22] न बसाई ॥ २५ ॥

(२६)

मछी मछ[23] फिर जळ ातरि
तिह का माघ न जोयबा ।
परम तत अ सा

१-जा रा गो पी व —वाफर, म —वाफ ।
२-जा — रुहीयों । भागे भी जा —म 'रूइयो' के स्यान पर 'रुहीयो' है ।
३-ला —लेए ।
४-पी —रुई ।
५-ला —राता ।
६-ला —पाहो ।
७-जा —मजीठी ।
८-म व —रातो ।
९-म व —मूल ।
१०-जा — जसका, रा गो पी म —जिहिका, ब —जहिका ।
११-ला —औग्र ।
१२-ला —सताने ।
१३-म —झदि ।
१४-जा रा गा पी म ब —वक ।
१५-पी —तन्हि, व —तव ।
१६-गो म व —अमृत ।
१७-रा गा पी —रहिवा, व —रपवा ।
१८-जा —म त्रुटित ।
१९-जा रा गा पी ब —मिष्ट ।
२०-रा स व —सुमायो ।
२१-गो — असुद्ध, म व —असिध ।
२२-जा —कछु, गा —काहा, म ब —कुछ ।
२३-म —मछा ।

माठ उरवार[1] न ताप[2] पाह
कौवड[3] धवड कोइय[4] न धोपो
नि्‌ का[5] अ त ल्होवा कता ।
अ मा सो भल अ सा लो
कहो[7] न कहा गहीह
परम तत क रूप न रेखा
माइ न लेहू सोज न सेहू ।
वरत विवरजत
थे सोजा वागन थीह ।
मान का पथ मीन ही जाणत[9]
नार[11] स रग[12] मे रहियो
मिथ का पथ को[13] को साधु जांणत[14]
बाबा वरतण यहियो ॥ २६ ॥

(२७)

गार क मवदि अमणि[15] परमोयी,
पार समद परोलो ।
सार समद पर[16] पर रै[17] चोरांड लाह,
परन्ना[18] अत न पाह ।

१–रा —म 'उर' अनि ।
२–मन, प्रतियां म 'ताह्' है ।
३ म —ावर, य —वोनड ।
४ रा ना पा म व —रोई ।
५–म —म अगि
६–ना —रा रा गो —म 'सो के पश्चात् 'मत' अतिरिक्त ।
७–म —बाह ।
८–रा रा मा पी म व —माय ।
९–र —म पथ के पश्चात 'तो' अतिरिक्त ।
१०–र —ार ।
११–र व —रग ।
१२–र रा रा पी म व —गु ।
१३ रा रा रो पी —रो, व —नो ।
१४–म —अन आन ।
१ र ा —सागर ।
१६–र — । ।
१७ र व —री । नी त ।
१८ अ म व —म प्ना ा ।

अनत कोडि गुर क[1] दांवणि विलग्या[2], (५)
करणी साच तरीलो। (६)
साझ[3] जमू सवेर[4] थापणि[5], (७)
गुर की नाथ[6] डरीलो। (८)
भगवीं टोपी थळ सिरि[7] आयो, (९)
हेत मेल्हाण करीलो। (१०)
अवाराय बधाई[8] वाज[9], (११)
हिरद हरि सिवरीलो[10]। (१२)
विसन[11] मया चौसड किरसाणी (१३)
जवू दीप चरीलो[12]। (१४)
जवू दीप असो चरि आयो, (१५)
इसकदर[13] चेतायो। (१६)
मार्यो सील हकीकत[14] माग्यो, (१७)
हक की रोजो धा'यो। (१८)
ऊनय नाथि कुपह का पोह मां[15] आंण्यां[16], (१९)
पोह का घुरि पोहचायो। (२०)
मोर धरती ध्यान वणासपति[17] वासो (२१)
उजू[18] मडळ छायो। (२२)
गींदू मेर पगाण परवत, (२३)
मनसा सौडि[19] तुलायो। (२४)

१-पी —जी।
२-जा रा गो पी व —विलवी म —जिलगी।
३-ला —म साझ' से पूर्व 'जीत'।
४-ला —सवेरइ।
५-ला —म थापणि' के पश्चात 'व गुर अतिरिक्त।
६-जा —नादि।
७-ला —रिरि।
८-ला —अधइ।
९-म —वाझं।
१०-म व —सुमरीलो।
११-रा गो पी म —किसन व —किसनी।
१२-पी —'जवू चरीलो' त्रुटित।
१३-ला —मीकदर।
१४-म व —हकाकत।
१५-व —म्हे।
१६-म —आण्यों।
१७-ला —वणासति, म व —वणासन।
१८-जा रा गो पी —मोजू।
१९-ला —सौवडि।

म[1] जुग च्यारि छत्तीसां अवर[2] छत्तीसां[3],
अमरां वहै अधारी
म्हां तो सदा विहायो।
तनोमां की बरग[4] यहां म्हे[5],
बांरा[6] काज आयो।
बांगा[7] बाजि[8] घणा न ठाहर
मनां त डाल्हे डीलहे कोडि रचायो।
म्है उजू[9] मडळ का रायो।
समर विरोळमो वासिग[10] नेतै,[11]
मर नियाणो पायो।
समा[12] अरजन मारयो, कारज सारयो
जरि म्है रहसि[13] दमांमां वांयो।
केरी सान लई जदि लंका,
तरि[14] म्है ओप[15] थायो।
रहमिर का दम मसतग[16] छेदया,
बांन मना[17] निरतायो।
म्हे खोजो छां[18] चिड होजो नाहीं[19]
ऐंहि सं'हि खेलत डायो।
कमासुर मू लूब रमियां,
सहस न[20] हरायो।

१-ग —म।
२-१-ग —युगिन।
४-ग —गासां।
५-म व —हां म्हु।
६-न —बार।
७-न —बार व —बारह।
८ ग मा ग —पारि।
९ मा ग मा पा म व —ऊव।
१०-मा द —वासकि।
११-क ग ग म व —नतो।
१२ -न —समा।
१३-ग —रसि।
१४-क म —अरि।
१५ क ग ग म व —पदे।
१६-क, ग, गा पी म व —मसतक।
१७ क —नो।
१८ क ग ग गी व —छां।
२० -न —अरि दे।

की प्रबन्ध किया जाता था। रोट्र म ऐसा अब भी है।

विष्णोई लोग बल को "वधिया" (खस्सी) नही कराते। पहले इनम अपने पशुओ पर पहचान हेतु "जाम्भाणी दाग" लगाने की प्रथा थी। दायें पुट्ठे पर त्रिशूल का और बायें, पर सात किरण वाला गोल सूरज जाम्भाणी दाग कहलाता है। बकरे-बकरियां के कान बींध कर "मुरकी" पहनाई जाती थी। बहुधा पुण्यार्थ, मनौती स्वरूप या मृतक के निमित्त बछडे को जाम्भाणी दाग लगाकर मुक्त छोड देते थे। छोडने के बाद भी विष्णोई-समाज उसकी सुरक्षा का ध्यान रखता था। अब भी ऐसा कहीं-कहीं होता है। इसको 'सागड दागना', 'सूरजजी का' या 'जाम्भोजी का साड' छोडना कहा जाता है। इस बात को न समझने अथवा गलत समझने के कारण "रिपोर्ट मर्दुमशुमारी राज मारवाड, बाबत सन १८९१ ई०" मे सर्वप्रथम "एक आदमी को जाम्भोजी का साडिया" बनाने की, लोगो से सुनी हुई बात का उल्लेख किया गया है। यह कथन सर्वथा असगत, निराधार, अज्ञता का द्योतक तथा विष्णोइयो की अपने नियम पालन सम्बन्धी दृढता के सदर्भ मे ईर्ष्या द्वेष वश कहा गया प्रतीत होता है जिसकी पुष्टि "रिपोर्ट" मे दिए गये अन्य विवरणों से भी होती है। उल्लेखनीय है कि स्वय इसके लेखक को भी "यह बात उनके (विष्णोइयों के) मजहब से भी खिलाफ मालूम होती है" (पृष्ठ ९६)।

केवल बछडा ही नही, गाय भी "देई" या 'जाम्भोजी की' गाय मान कर रखी जाती है। ऐसी गाय का दूध कभी बिलोया नही जाता, उसको केवल पीने या पीने के लिए बाटने के काम मे ही लिया जाता है। वील्होजी कृत "कथा जसलमेर की" मे जीव दया और जाम्भाणी पशुओ सम्बन्धी जाम्भोजी द्वारा रावल जतसीजी के आग्रह पर मागे गये चार वरो मे एतद् विषयक सकेत मिलते हैं।

२१- मत्र

सम्प्रदाय के नौ प्रमुख मत्र हैं जो भिन्न-भिन्न अवसरो पर प्रयुक्त होते हैं। ये निम्न लिखित[1] हैं —

(१) नवण ('बडी नवण', 'ब्रह्मनवण'), (२) कळस पूजा मत्र, (३) पाहळ मत्र, (४) विष्णु या गुरु मत्र, (५) तारक या गुरु मत्र, (६) बाळक मत्र, (७) धूप मत्र, (८) सुजीवण मत्र तथा (९) ध्यान मत्र।

सम्प्रदाय म 'नवण' का बहुत महत्त्व है। तांतूदेवी द्वारा मुक्ति प्राप्ति हेतु सक्षप मे कोई जप या मत्र पूछने पर जाम्भोजी ने 'नवण मत्र'[2] बताया था। नवण का ही दूसरा नाम 'सन्ध्या पाठ' है। प्रत्येक सस्कार और विशिष्ट अवसरो पर "पाहळ" बनाने से पूर्व कलश-स्थापना के समय 'कलश पूजा" मत्र बोला जाता है। "पाहळ" कलश के अभिमन्त्रित जल को कहते हैं। पाहळ शब्द "पायल' से बना है। (पाथ+ल। पाथ=जल, ल मृदुता,

१—अध्ययन-सामग्री, प्रति सख्या २६, ५५ ६५, ६६, ६८, ८१, १४६, १५०, १६३, १६९, १७२, २०१, २१८, २२७, २२८, २४२, २५६, ३१७, ३२५, ३३३, ३५०।
२—अध्ययन-सामग्री, प्रति सख्या १६१, १६६, २०१, २२३, २५३, २५७, २६०, ३०४, ३२५।

कोमलता का वाचक प्रत्यय)। पाहळ लेने को "चळू लेना" भी कहते हैं जिसका तात्पर्य पवित्र या अभिमंत्रित जल लेने से है। चौथे व पाँचवें दोनों ही मंत्रों को कभी-कभी गुरु मंत्र कहते हैं जो साधु-दीक्षा और गृहस्थ को शिष्य बनाते समय दिये जाते हैं। वर्तमान में दोनों में यह भेद प्रायः नहीं रखा जाता। विष्णोई माता पिता का बच्चा जन्म से विष्णोई नहीं होता, उसे ऐसा बनाया जाता है। जन्म के ३१ वें दिन हवन करके बच्चे के मुँह में पाहळ दिया जाता और कानों से छुवाया जाता है। ऐसा करते समय बाळक मंत्र पढ़ा जाता है। 'सुजीवण मंत्र' मृत्यु समय सुनाया जाता है। इसके साथ पृथक रूप में कभी कभी "कूँची का सबद" (संख्या २८) का पाठ भी किया जाता है। उल्लेखनीय है कि हवन की ज्योति में ही जाम्भोजी के दर्शन माने जाते हैं। परम्परागत विश्वासानुसार ज्योति में जाम्भोजी वर्तमान हैं। हवन-ज्योति विलयन के समय धूप मंत्र बोले जाते हैं। अधिकांश घरों में स्त्रियाँ हवन करती हैं। हवन समाप्ति पर वे तथा पुरुष भी "ध्यान" मंत्र स्मरण कर ध्यान करते हैं। मूल रूप में तो यह मंत्र कुछ बड़ा है किन्तु वर्तमान में इस रूप में प्रचलित है —

"भले हूँ भेंटा देई कुमाणस हूँ पासे टाळी।
आई बलाय दफा करो और सुख स्याति राखो।"

२२-समाज

विष्णोई समाज में दो प्रकार के लोग हैं—गृहस्थ और साधु। गृहस्थ के अन्तर्गत सामान्य गृहस्थ, थापन और गायणों की गणना है।

(क) थापन संस्कार का काम थापन का है। कलश-स्थापन इनके द्वारा किए जाने के कारण ये थापन कहलाते हैं। सम्प्रदाय-प्रवर्त्तन के समय जाम्भोजी ने इनको यह काम सौंपा था[1]। थापनों की प्रमुख जातियाँ निम्नलिखित हैं —गोदारा, वणियाळ, लोळ, माझू, बैरवाळ, पवार, खोखर, दोकसिया, जाणी, ततरवाळ।

(ख) गायणे-गायणों का मूल काम वंशावली लिखना और "जम्मे"-जागरण आदि में गाने-बजाने का था। मृत्योपरान्त दिया गया दान भी ये ग्रहण करते थे। कालान्तर में इन्होंने वंशावली लिखना छोड़ दिया और थापनों की प्रतिस्पर्धा करने लगे। ऐसा बीसवीं शताब्दी के आरम्भ से हुआ। एक अज्ञात कवि (संख्या ११६) ने गायणों की इस प्रवृत्ति पर रोष भी प्रकट किया है। गायणों के अनुसार उनकी ग्यारह जातियाँ ये हैं —सीवळ, वागड़िया, चवारा, लटियाळ, गूजर, बावरा, अगरवाल, दडक, तंवर, पवार और सोनी। इनमें तंवर के स्थान पर सीवर और गूजर के स्थान पर गूजर गौड नाम भी

1-(क) धूळय द लार मतान थाया, अमर गति सिवरि करि सिद्ध आया।
थापना साव गुर झभ थापे आपहि आप सेवत आपे ॥१८२॥
—सुरजनजी, कथा परसिध।
(ख) बाळक का महलु करि माळ, घर लीपरो कर सभाळ।
थापन हुकम करि जदि आय, पच लोग जदि लीय बुलाय ॥२०४॥
—सुरजनजी, कथा औतार की।

बताए जाते हैं तथा सींवर को सॅवर और बागडिया को बागड्व या बांगड्वा भी कहा जाता है।

(ग) भाट-वंशावली लिखने का काम भाट करते हैं जिनका परम्परागत मुख्य गांव महलाणा (जोधपुर) है। प्रसिद्ध है कि जाम्भोजी के हजूरी शिष्यों में गायणें तो मुख्यतः आलमजी और साल्होजी के और भाट भाखनोजी के वंशज हैं।

(घ) सामान्य गृहस्थ-सामान्य गृहस्थ विष्णोई के विवाह चार जातियों (मां, बाप, नानी, दादी की) को छोड़कर आपस में गृहस्थ विष्णोइयों में ही होते हैं। इसी प्रकार थापनों के विवाह थापनों में तथा गायणों के विवाह गायणों में होते हैं। अब इन नियमों में शिथिलता भी आ गई है। जाटों की भांति विष्णोइयों में भी नाता (पुनर्विवाह) होता है। इसके भी दो रूप हैं-"नाता करना" तथा "चूड़ी पहराना"। नाते में विधवा का पुनर्विवाह होता है और "चूड़ी पहरने" में सगे देवर से।

(ङ) साधु-साधु दो प्रकार के हैं —रमत साधु और महन्त। महन्त स्थान विशेष की परम्परागत गद्दी के अधिकारी होते हैं। नाथोजी के दो शिष्यों-गिदरोजी और वील्हाजी से विष्णोई साधुओं की दो परम्पराएँ चली थीं (द्रष्टव्य-परिशिष्ट में-साधु-परम्परा)। साधुओं में कान तक आने वाली तीखी "जाम्भाणी टोपी" और चपटे मनकों की आबनूस की काली माला का व्यवहार प्रसिद्ध रहा है। महन्त प्रायः धोती, कमीज और सिर पर भगवा साफा रखते हैं।

(च) अभिवादन प्रणाली-परस्पर मिलने पर अभिवादन में 'नवण प्रणाम' और प्रतिवचन में 'विष्णु न', 'जाम्भोजी न' (विष्णु को, जाम्भोजी को) कहा जाता है।

(छ) जातियाँ-विष्णोई समाज में अधिकतर जाट, क्षत्रिय, और वैश्य जाति के लोग हैं। इनमें भी सर्वाधिक संख्या जाटों से बने विष्णोइयों की है। जाम्भोजी ने भी ऐसा उल्लेख किया है (१४ ३,४)। जाम्भोजी के समय इनके अतिरिक्त ब्राह्मण, चारण, शूद्र और मुसलमानों ने भी विष्णोई धर्म अंगीकार किया था। हजूरी भक्तों में अलीजी, लालोजी और ऊदोजी ब्राह्मण, तजाजी, अल्लूजी, कान्हाजी चारण, समसदीन, अमियादीन, दीन महमद, रहमतजी मुसलमान तथा मोती मेघवाळ (चमार) था। सुरजनजी,[1] गोकुलजी[2] आदि कवियों ने ऐसी कतिपय जातियों का उल्लेख किया है।

विष्णोई होने के पश्चात् भिन्न-भिन्न जाति के लोगों के भोजन और आपसी व्यवहार में कोई भेद नहीं रहता। सम्प्रदाय के नाते से वे समान और एक ही कुल के समझे जाते

१-जाट, भाट जोगी सन्यास, बांभण सुदर करें गुर आस।
खान पीर परच्या सुरताण, राज वंस महाजन जाण ॥ ९६
चारण कायथ परच्या जांण, ऊंच नीच मह जात बखांण ॥९७॥
—कथा औतार की।
२-परच्या पात सुपात, परच्या छ बांभण बाणियाँ।
मोध्या जीव सुजीव, दे सुमति सुमारग आणियाँ। —साखी।

हैं। कालांतर में सम्प्रदाय के सम्बन्ध से विष्णोइयों को जाति के रूप में भी अन्य लोग समझने लगे। वस्तुत विष्णोई शब्द सम्प्रदाय का ही बोधक है, जाति का नहीं।

२३-आबादी

विष्णोइयों की अधिकांश आबादी राजस्थान, मध्य प्रदेश, पंजाब, हरियाणा और उत्तर प्रदेश में है। बिहार[1] और नेपाल[2] में भी विष्णोइयों के होने का पता चला है। इनमें राजस्थान की पुरानी रियासतों–बीकानेर, जोधपुर, जैसलमेर और उदयपुर में इनकी सर्वाधिक पुरानी आबादी है। उदयपुर के जिला भीलवाड़ा में पुर, दरीबा और समेला इनके तीन पुराने गांव हैं। यहां के अधिकांश विष्णोई राजपूतों से बने हुए हैं। उत्तर प्रदेश में मुरादाबाद, बिजनौर, मेरठ, मुजफ्फरनगर, देहरादून, कानपुर, जालौन, कालपी, कन्नौज, फर्रुखाबाद, औरैया, अजीतमल, काट, खेरी, लखनऊ आदि स्थानों और क्षेत्रों में विष्णोई बसे हुए हैं। इलाहाबाद और बुंदेलखण्ड के आसपास के विष्णोई पुरवार और अवध के औधिया कहलाते हैं। दोनों को जाम्भोजी का मतानुयायी होने के कारण 'पुरवार भमया और 'औधिया-भमया' भी कहते हैं। यहां अग्रवाल वैश्य विष्णोई बड़ी संख्या में हैं। इनके अतिरिक्त जाट और दूसरी जातियों के भी हैं। मूलत जाम्भोजी के समय में ही यहां के लोग विष्णोई हुए थे। पुरवार और औधिया नाम तभी से चले आ रहे हैं। केसोजी ने 'कथा चित्तौड़ की" में इस क्षेत्र के विष्णोइयों का उल्लेख किया है[3]।

मध्य प्रदेश में मालवा के हरदा, होशंगाबाद क्षेत्र में इनकी सर्वाधिक आबादी है। यहां के अधिकांश लोग मारवाड़ से आकर बसे थे।

हरियाणा में जिला हिसार में और पंजाब में जिला फ़ीरोजपुर में इनकी बहुत बड़ी संख्या है। स्वतंत्रता से पूर्व भावलपुर रियासत में भी ये बड़ी संख्या में थे और उसके बाद सुविधानुसार देश के अनेक भागों में यत्रतत्र बस गये। इन स्थानों के अधिकांश लोग मूलत राजस्थान-वासी हैं।

२४-विष्णोई गांवों की संख्या :

लगभग ४० साल पहले उपर्युक्त प्रांतों के उन गांवों की संख्या अनुमित की गई थी जिनके निवासी अधिकांश में विष्णोई थे[4]। इसका विवरण इस प्रकार है:—

१-विष्णोई महासभा के पांचवें अधिवेशन के सभापति श्री रामनारायणसिंह का भाषण, फागुन वदि १४, संवत १९८३।

२-अमर ज्योति (मासिक पत्रिका) हिसार, दिसम्बर, १९५१, पृष्ठ ५, "कानपुर जिले के विश्नोई' लेख में।

३-लोक महाजन वणिया याति, पुरवार औधिया उमरा जाति।
बिसणोइ लोक हुवा जण तर, लोक लदणिया सोदो कर ॥५॥

४-(क) विष्णोई महासभा के चतुर्थ अधिवेशन के सभापति बाबू नन्दलाल का भाषण, पृष्ठ ६, नीमगांव, २६ दिसम्बर, सन १९२५।

(शेषांश आगे देखें)

(१) राजस्थान-६५३ गाव। बीकानेर मे १५०, जोधपुर म ४००, जयनमेर में १००, और उदयपुर मे ३।

(२) पजाब-१७६ गाव। फीरोजपुर म १६, भावलपुर म २५, लायलपुर म ४, सरगा-र १ और हिसार म १३०।

(३) उत्तर प्रदेश-गांट (मुरादाबाद) म १५, कानपुर म १० (उस समय की उत्तर प्रदेश के शेष क्षेत्रो की सूची उपलब्ध नही है)।

(४) सिंध-हैदराबाद की मीरपुर तहसील म ५ गाव।

(५) मध्य प्रदेश-नरसिंहपुर म १५, भूपाल म १, उज्जन म १०, होशगावाद म ३० गाव। नागपुर म २० घर, बिलासपुर म २० घर, जबलपुर म २० घर, खडगपुर म १५ घर और सागर म ५ घर थे।

इसके अलावा पटना म १०० गावों के होने का पता विष्णोई महासभा ने लगाया था। सभा का प्राप्त सूचनानुसार कराची, नेपाल, रगून, काबुल, कधार, गजनी और लका म भी ये लोग बसे हुए थे। सुरजनजी, साहबरामजी आदि कवियो की रचनाओ से जाम्भोजी का भारत के बाहर इन देशो म जान का उल्लेख मिलता है।

वतमान मे गावो की उल्लिखित सख्या मे बडी मात्रा मे बढ़ोतरी हुई है जिसके कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं —

बीकानेर डिवीजन के श्रीगगानगर जिले म १४५ गाव,[१] मुरादाबाद जिल म ९० गाव[२] और भीलवाडा म ५ गाव[३]। कानपुर जिले के १८ गावो म भी विष्णोई बसे हुए हैं[४]।

२५-जनगणना

विभिन्न जनगणना रिपोर्टों मे सन् १९३१ तक[५] ही विष्णोइयो की जनसख्या का उल्लेख किया गया था। यह तालिका इस प्रकार है —

(ख) विष्णोई महासभा के पाचवे अधिवेशन के सभापति श्री रामनारायण सिंह का भाषण।

(ग) विश्नोई समाचार (मासिक पत्र), नगीना, वष ३, अक ५, नवम्बर, १९४५।

१-अमर ज्योति (मासिक पत्रिका) हिसार, नवम्बर, सन १९६३, पृष्ठ १३ १५।

२-वही, दिसम्बर, सन १९६४, पृष्ठ १२।

३-वही, जनवरी, सन् १९६४, पृष्ठ २।

४-वही दिसम्बर, १९५१, 'कानपुर जिले के विश्नोई,' पृष्ठ २६।

५-"इन १९३१ सेंसस एण्ड अर्लियर सैन्ससेज हिन्दूज वर क्लासिफाइड अण्डर सम वन हैण्ड्रेड फिफ्टी डिफरेन्ट कास्टस। इट इज इनडीड ए हैपी पोरटेन्ट फार इंडिया आफ दि फ्यूचर दट फार १९४१ इट वाज डिसाइडिड टु अबण्डन दिस सिस्टम"- "दीज टन ईयरस्' बाई ऐ० डब्ल्यू० टा० वब, (ए शाट एकाउन्ट आफ दि सन्सस ओपरेशन इन राजपूताना एण्ड अजमेर- मेरवाडा) —राजपूताना सन्सस् वाल्यूम-२४, पाट-फस्ट पृष्ठ ७३, १७ फरवरी, सन १९४१।

सन	जनसंख्या	विभिन्न प्रान्तो की विष्णोई जनसंख्या			विशेष विवरण *
		राजपूताना	पजाब	अन्यत्र	
१८८१-	८,५७६[1]	—	—	—	ब्रिटिश भारत मे
१८९१-	—	५७,०६४*[2]	—	—	केवल पश्चिमी प्रदेश मे पाए जाते हैं।
१९०१-	६८,९६६[3]	४९,३०२[4]	१६,१४०[5]	१,६०८ यू० पी०, सी०पी०	यू० पी०, पजाब और राजपूताना मे पाए जाते हैं।
१९११-	७३,३९२[6]	५२,८७९[7]	१९,४१६[8]	१,०९७ ३-अजमेर-मेरवाडा	
१९२१-	—	५२,८४३[9] + १६,७८०[10]		१४ (अजमेर-मेरवाडा)	समस्त खेतिहर लोगो मे विष्णोई ३ प्रतिशत हैं। मारवाड, बीकानेर और जसलमेर में बडी सख्या में पाये जाते हैं।
१९३१-	७०,४६१[11]	६६,८७३[12]	—	५८८सी०पी०	बीकानेर, जसलमेर और मारवाड में ही अधिकाशत पाए जाते हैं।

१-रिपोट आन दि सन्सस आफ ब्रिटिश इडिया, १८८१, वाल्यूम फस्ट, पृष्ठ ३२१ ।
२-सन्सस आफ इडिया, १८९१, वाल्यूम २६, राजपूताना, पाट फस्ट, पृष्ठ ६९ ।
*(रिपोट आन दि सन्सस आफ १८९१, वाल्यूम सकिड (दि कास्टम आफ मारवाड), जोधपुर, सन १८९४, पृष्ठ १४ पर मारवाड राज्य के विष्णोइयो की सख्या ४०,०२३ बताई गई है) ।
३-वही, १९०१, वाल्यूम फस्ट-ए, पार्ट-सैकिड, पृष्ठ ५४७ ।
४-वही, १९०१, वाल्यूम-२५ ए, राजपूताना, पाट-सकिड पृष्ठ २४६ ।
५-वही, १९०१, वाल्यूम-१७ ए, पाट-सकिड, पृष्ठ ३४ ।
६-वही, १९११, वाल्यूम-फस्ट, पाट-सकिड, पृष्ठ १८६ ।
७-वही, १९११, वाल्यूम-२२, राजपूताना एण्ड अजमेर मेरवाडा, पाट-फस्ट, पृष्ठ २५२ ।
८-वही, १९११, वाल्यूम-१४, पाट-सकिड पजाब, पृष्ठ २४१ ।
९-वही, १९२१ वाल्यूम-२४, पाट फस्ट, राजपूताना और अजमेर मेरवाडा, पृष्ठ २१८ ।
+(सन्सेस आफ इडिया बीकानेर स्टेट (रायबहादुर जयगोपाल पुरी), पृ० २८ के अनुसार, बीकानेर में-१०, ९२१) ।
१०-वही, १९२१, वाल्यूम-१५, पाट-सकिड पजाब, पृष्ठ २०५ ।
११-वही, १९३१, वाल्यूम-फस्ट, पाट-सकिड, पृष्ठ १२ ।
१२-वही, १९३१ वाल्यूम-२७, पृष्ठ १२४, १२६ ।

२६–विभिन्न संस्कार, मान्य त्योहार, तिथियाँ, 'सूत, पधेवड़ी' फिराना और वेशभूषा आदि

(क) संस्कार—विष्णोई समाज में तीन मुख्य संस्कार हैं—जन्म, विवाह और अन्त्येष्टि। हवन, कलश–स्थापना और पाहल प्रत्येक संस्कार में होता है। जन्म-सूतक ३० दिन तक रहता है। ३१ वें दिन बच्चे का सिर मुंडवा कर नहलाते और पाहल करके बालक-मन से संस्कारित कर लेते हैं। बच्चे की माँ उसके पश्चात् ही कोई गृह–कार्य कर सकती है, पहले नहीं। विष्णोई बेटी का पहला 'जापा' पीहर में होता है।

विवाह बड़ी सादी रीति से होते हैं। सम्बन्ध तय होने पर वधु पक्ष की ओर से कच्चे सूत का एक डोरा भेजा जाता है। जितने दिन बाद विवाह होने को होता है, डोरे में उतनी ही गाँठें लगा दी जाती हैं। इसके लिए कोई मुहूर्त या महीना नहीं देखा जाता। विवाह में वर-वधु 'पीढ़ी' बदलते हैं, फेरे नहीं होते। दोनों का उत्तर की ओर मुँह करवा कर पीढ़ों पर बठाया जाता है और थापन या साधु (कहीं कहीं गायणे भी) विवाह-पद्धति का पाठ करते हैं। कुछ समय पश्चात् दोनों के पीढ़ (या आसन) बदलवा दिए जाते हैं। विवाह-पद्धति बड़ी सरल और संक्षिप्त है[1]। भीलवाड़ा और उत्तर-प्रदेश के विष्णोइयों में विवाह सनातनधर्मी हिन्दुओं की भांति फेरों से होते हैं।

शव को उत्तर-दक्षिण करके गाड़ा जाता है। इसका सूतक तीसरे, बारहवें या तरहवें दिन उतरता है। मृतक–भोज करने की परिपाटी है। उत्तर-प्रदेश में शव को जलाने और मध्य-प्रदेश में जल में प्रवाहित करने की पद्धति है। साधुओं का अन्त्येष्टि संस्कार साधु ही करते हैं और उस समय सिवदास (कवि संख्या ८) कृत साखी गाई जाती है।

(ख) त्योहार—होली के अतिरिक्त शेष सभी हिन्दू-त्योहार उनकी भांति धूमधाम और उत्साह से मनाए जाते हैं। होली का दिन विष्णोइयों के लिए प्रसन्नता का नहीं, शोक का है क्योंकि इसी दिन प्रह्लाद को आग में जला मारने का उपक्रम किया गया था। इस दिन सूर्यास्त से पूर्व ही दलिया, "पळेवड़ी" (मेथी की कढ़ी) आदि खा लेते हैं। सूर्यास्त के पश्चात सूतक लगना मानते हैं। दूसरे दिन प्रह्लाद के जीवित होने का समाचार जान कर आनंदित होते और 'प्रह्लाद बाचत' हैं। पहले केसोजी कृत "प्रह्लाद चिरत बाचते" की प्रथा थी। बाद में ऊदोजी अडींग, हरजी दुकिया, की ऐसी रचनाएँ भी संक्षिप्त होने के कारण प्रसिद्ध हुई। वर्तमान में ऊदोजी का "पहलाद" विशेष प्रचलित है। पश्चात गाव के एक निर्धारित स्थान पर हवन करते और पाहळ लेते हैं। यह पाहळ लेना सबके लिए अनिवार्य है। अन्य लोगों की तरह होली के दूसरे—"धूलेंडी" के दिन रंग नहीं खेलते।

१–विवाह-पद्धति और गोत्राचार आदि की अनेक प्रतियाँ उपलब्ध हुई हैं जिनकी सूची इस प्रकार है –अध्ययन-सामग्री, प्रति संख्या ६३, ६५, ६६, ६७, ६८, ७५, ७६, ७८, ८१, १०९, १५२, २०३, २१३, २२७, २२८, २३५, २५६, ३१३, ३१७, ३२४, ३३३, ३४६, ३७१, ३८७।

(ग) तिथियाँ-प्रति अमावस्या को गाव मे सामूहिक रूप से हवन करते हैं और प्राय व्रत रखते हैं, कोई व्यावसायिक काय नही करते। इसी प्रकार "चिरत नवमी" (मार्गशीर्ष वदि ६, जाम्भोजी की वकुण्ठवास-तिथि) और सूय, चन्द्र ग्रहण के दिन भी करते हैं। भादवा वदि अष्टमी (जाम्भोजी की जन्म-तिथि) की भी खूब मान्यता है।

(घ) "सूत, पछेवड़ी"-जाम्भोळाव और मुकाम पर पुण्याथ "सूत" (प्रति स० ३५८) 'पछेवड़ी' (प्रति सख्या ३५७) और "सोळती फिराने" की प्रथा रही है। जम्भ-तालाब या मुकाम-मन्दिर के चारो ओर डेढ़ हाथ चौड़ी सूत की वनी जितनी "डोवटी" आए, उसे साधुओ का दान म देना सूत फिराना कहलाता है। इतनी ही चौडी किंतु पाँच हाथ या सोलह हाथ लम्बी 'डोवटी' दान म दने को क्रमश 'पछेवडी' और 'सोळती' फिराना कहते हैं। प्रत्येक दान के पश्चात साधुओ को भोजन करवाया जाता है।

(ङ) वेशभूषा-वतमान मे अन्य स्थानो पर तो नही किन्तु फलोदी और मारवाड क्षेत्र म विष्णोई स्त्रिया का पहनावा अन्य स्त्रिया से किंचित भिन्न है। यहा विष्णोई पुरुष सिर पर सफेद वटदार गोल पगडी (साफा) वाधते हैं। इसकी लम्बाई अपेक्षाकृत अधिक होती है। इन क्षेत्रो म ही अब पहनावे का वशिष्टय शेष रह गया है। सिर के बाल अब भी ज्यादा बडे नही रखे जाते। सामान्यत सफेद कपडे पहने और पसन्द किए जाते हैं। सफाई का विशेष ध्यान रखते हैं। विष्णोई साधु सफेद धोती, कुरता (कमीज) और सिर पर भगवी पगडी (साफा) वाधते हैं। कई साधु कमीज (झुग्गा) भी भगवें रग का रखते हैं।

२७-लोकगीत और हरजस

लोक म सामान्य रूप से प्रचलित गीत और हरजस विष्णोई-समाज मे भी प्रसिद्ध हैं। इनके अतिरिक्त इसमे अनेक ऐसे भावभरे गीत भी प्रचलित हैं जिनका इतर समाज मे विशेष चलन नहा है। ऐसे गीत मुख्यत तीन अवसरो पर गाये जाते हैं-(क) विभिन्न सस्कारो के समय (ख) सतसग और (ग) जाम्भाणी मेलो पर। उदाहरण स्वरूप परिशिष्ट मे-(१) "हिंडोळो" (हर रो हिंडोळा), (२) "हालो सहियां ए", (३) "मुरली" और (४) "मिन्दर" गीत दिए जा रहे हैं। पहला वद्ध व्यक्ति के स्वगवास तथा शेष तीनो-सतसग, और मुकाम-मेलो पर समवेत स्वरो मे तन्मयता पूवक गाए जाते जाते हैं। वस्तुत विष्णोई लोकगीत" अध्ययन का एक पृथक् विषय है।

२८-कतिपय प्रमुख सामाजिक सस्थाएँ

विभिन्न पचायतो के अतिरिक्त विष्णोई समाज की कुछ सस्थाओ का उल्लेख नीचे किया जाता है।

(क) भारतवर्षीय विष्णोई महासभा[१] (वतमान कार्यालय विष्णोई मंदिर, हिसार) :

१-ता० २२-४-१९३६ को सोसाइटीज रजिस्ट्रेशन एक्ट २१ (१८६०) के अन्तर्गत यह सभा "भारतवर्षीय विश्नोई महासभा' के नाम से लखनऊ मे पजीकृत हुई थी। कालान्तर में इसका कार्यालय हिसार मे लाया गया जो अब वहीं है।

दिसम्बर सन १६१६ (सवत् १९७६) मे "सामूहिक शक्ति के सगठन, और जाति को उन्नत दशा म लाने के लिए जाति के विचारशीलो ने" एक सभा "विश्नोई (वष्णव) सभा" नाम से नगीना मे स्थापित की थी जिसके सभापति श्री हरप्रसाद वकील और मत्री रामस्वरूप कोठीवाल[1] थे। फरवरी सन् १९२१ मे प्रचारित एक परिपत्र के अनुसार इसी सन् मे, "अखिल भारतवर्षीय विष्णोई सम्प्रदाय" का पहला अधिवेशन नगीना म हुआ। तब से अब तक महासभा के ८ अधिवेशन हुए हैं, जिनका विवरण अधोलिखित है —

क्रम	स्थान	तिथि	सभापति
१	नगीना	२६-२८ मार्च, सन् १९२१ (सवत् १६७७)	रायबहादुर हरप्रसाद, वकील
२	फलावदा	—	चण्डीप्रसाद सिंह
३	कानपुर	सन १६२४ (सवत १६८१)	स्वामी ब्रह्मानन्दजी महाराज, काट
४	हरला	सन १६२५ (सवत् १६८२)	बाबू नन्दलाल इजीनियर
५	मुकाम	२-४ मार्च, सन् १६२७ (सवत् १९८३)	चौ० रामनारायण सिंह, सीलोगूनो (इनकी अनुपस्थिति म तत्कालीन अध्यक्षता ढाबां के जैलदार मामराज धारणिया न की थी)।
६	अबोहर	७-८ फरवरी, सन् १६४४ (सवत् २००१)	बाबू हरप्रसादजी
७	हिसार	१८ मार्च, सन् १६४५ (सवत् २००२)	चौ० हरिराम बोला, बिसनपुरा (श्रीगगानगर)।
८	मुकाम	२१-२३ फरवरी, सन् १६५५ (सवत २०१२)	चौ० हरिराम बोला, बिसनपुरा (श्रीगगानगर)।

सन १९५५ के पश्चात् अब तक सभा का कोई अधिवेशन नहीं हुआ है।

१-(क) मार्च-अप्रेल सन् १९२१ म होने वाले महासभा के बृहत अधिवेशन म सम्मिलित होने के लिए प्रतिनिधि भेजन सबधी परिपत्र।
(ख) फरवरी, सन् १६२१ के प्रथम अधिवेशन सम्बन्धी परिपत्र।

(ख) क्षेत्रीय संस्थाएँ क्षेत्रीय संस्थाओं में चार उल्लेखनीय हैं —

(१) अखिल भारतीय जम्भेश्वर सेवक दल (रजिस्टर्ड, पंजाब-कार्यालय-विष्णोई मंदिर, अबोहर)। महासभा के अबोहर वाले छठे अधिवेशन के समय इसकी स्थापना हुई थी। दल ने समाज सुधार सम्बन्धी अच्छा काय किया है। सीमा-कमीशन को एक ममोरेंडम भी दल ने दिया था[1]।

(२) विष्णोई सभा, जिला फीरोजपुर (कार्यालय विष्णोई मन्दिर, अबोहर)। इसका विधान इस जिले के विष्णोइयों द्वारा ता० १५ जुलाई १९५० को विष्णोई मंदिर, अबोहर में स्वीकार किया गया था। इसी समय से संस्था की स्थापना माननी चाहिए[2]।

(३) विष्णोई सभा, हिसार (कार्यालय-विष्णोई मंदिर, हिसार)। यह सभा ८ फरवरी, सन १९४७ को "सोसाइटीज रजिस्ट्रेशन एक्ट, २१ आफ १८६०" के अन्तगत लाहौर में पंजीकृत हुई थी[3]। स्थापना-समय से लेकर अब तक यह सभा परोपकारार्थ अनेक प्रकार के समाज-उत्थान, सुधार और लोकहित विषयक काय करती आ रही है।

(४) श्री विश्नोई सेवा समिति (रजिस्टर्ड-कार्यालय-७४/२५६ लच्छो का बगीचा, धनकुट्टी, कानपुर)। इसका पंजीयन ३१, माच, १९६१ को हुआ था[4]।

इनके अतिरिक्त समय-समय पर क्षेत्र-विशेष में सभा-सम्मेलन भी होते रहे हैं।

२९-जम्भेश्वरीय संवत

सम्प्रदाय में "जम्भेश्वरीय" संवत् भी प्रचलित है। इसका आरम्भ जाम्भोजी की वैकुण्ठवास तिथि-मागशीष वदि नवमी के दिन के तीसरे पहर से माना जाता है और शेष सब गणना विक्रम संवत् के अनुसार होती है। संवत १५९३ के इस दिन जाम्भोजी का वैकुण्ठवास हुआ था। प्रचलित विक्रम संवत में से १५९३ निकाल देने पर जम्भेश्वरीय 'गत' संवत आता है। स्वामी ईश्वरानन्दजी गिरि, साहबरामजी, स्वामी ब्रह्मानन्दजी, श्रीरामदासजी, रामानन्दजी गिरि आदि की पुस्तकों और परिपत्रों पर "जम्भेश्वरीय गताब्दी लिखा मिलता है।

ऊपर विष्णोई सम्प्रदाय के सांस्कृतिक, दार्शनिक, धार्मिक और सामाजिक स्वरूप को सार रूप में स्पष्ट किया गया है।

१-(क) विष्णोई मन्दिर अबोहर का प्रथम विवरण, ता० २० जनवरी, १९४९।
(ख) विष्णोई मंदिर अबोहर और विष्णोई पंचायत का दूसरा विवरण, ३१ अगस्त, सन १९५०।
(ग) ममोरेंडम टू दि आनरेबल प्रेसीडेंट एण्ड मेम्बस बाउन्ड्री कमीशन, इंडिया, (कम्प रोहतक) आन १९-४-५५।

२-विधान, विष्णोई सभा, जिला-फीरोजपुर, जम्भेश्वर संवत ४१५।

३-रजिस्ट्रार, ज्वाइंट स्टॉक कम्पनीज, पंजाब का 'रजिस्ट्रेशन सर्टिफिकेट', ता० ८-२-१९४७।

४-समिति की वार्षिक रिपोर्ट एवम् आय-व्यय का लेखा, वर्ष १९६०-६१।

युग-परिवर्तन के साथ सम्प्रदाय में भी यत्र-तत्र सामाजिक परिवर्तन के लक्षण दिखाई देते हैं किन्तु परम्परागत मान्यताओं तथा संस्कारों के प्रति पूर्ववत् आस्था और निष्ठा बनी हुई है।

पूर्व पृष्ठों में इस जिल्द के दो खण्डों—(१) पृष्ठभूमि तथा (२) प्रवर्तक, वाणी और सम्प्रदाय के अन्तर्गत सात अध्यायों में एतद् विषयक प्रामाणिक विवेचन, प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

प्रस्तुत अध्ययन के शेषांश—विष्णोई साहित्य का विवेचन, महत्त्व, देन और मूल्यांकन दूसरी जिल्द में तीसरे खण्ड के अन्तर्गत प्रस्तुत किया जा रहा है।

परिशिष्ट १

चित्र-सूची

(कुल चित्र संख्या ११२)

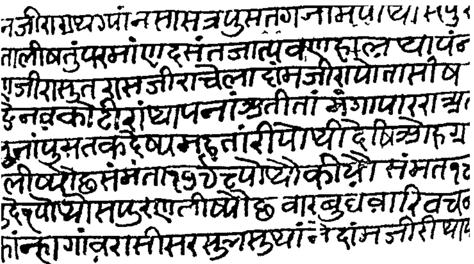

५। प्रति संख्या २०१। अन्तिम पृष्ठ पुष्पिका। (फोलियो ५६५)।

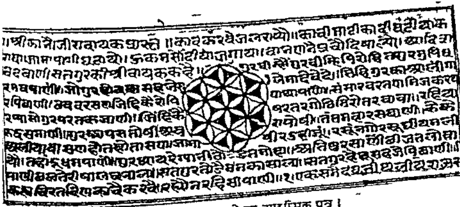

१३। पी० प्रति। सबदवाणी का आरम्भिक पत्र।